

ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह



शंकरदानजी नाहटा

(ग्रन्थ प्रकाशक)



परम सहृदय, उदार एव धर्मनिष्ठ
पूज्य ज्येष्ठ भ्राताजी

श्रीमान् दानमलजी नाहटा

की

स्वर्गस्थ आत्माको

सादर समर्पित ।

—शङ्करदान नाहटा

(प्रथम प्रकाशक)

ऐतिहासिक जैन कवच संग्रह



खरतरगच्छ पट्टावली

(१ मूलमेर भाग्यगारीय सं० ११७१
लि० ताडवरीय प्रतिष्ठा त्रितीय मूठ)

ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह

प्रकाशक

—

जैनो का प्राचीन इतिहास अस्तव्यस्त विरत हुआ है। ताम्र पत्र और गिलाखेलोक अतिरिक्त मस्कृत, ब्राह्मण और लोकभाषा काव्यो में भी प्रचुर इतिहासमामग्री उपलब्ध होती है, उन सप्तको संग्रहकर प्रकाशित करना नितान्त आवश्यक है। आर्यसंस्कृति में गुरु का पत्र बहुत ऊचा माना गया है उनकी भक्ति का महात्म्य अनि वि गल है। धर्माचार्यों का इतिवृत्ति या जीवनचरित्र उनके भक्त शिष्यगुणानुवादरूप काव्यो में लिखा करत हैं, ऐसे काव्य जैन-साहित्य में हजारों की संख्या में हैं परन्तु खेद है कि जोधके अभावसे अधिकांश (अमुद्रित काव्य) प्राचीन ज्ञानभण्डारो में पडे-पडे नष्ट हो रहे हैं और अद्यावधि जैसा चाहिए वैसा हम दिना में प्रयत्न हुआ ज्ञात नहीं होता।

अद्यावधि प्रकाशित ऐ० काव्यसंग्रह

ऐतिहासिक भाषा काव्यो में संग्रह रूपसे अद्यावधि प्रकाशित ग्रन्थ हमारे समक्ष केवल ७ ही हैं। जिनमें “ऐतिहासिक रासमंग्रह” नामक ४ भाग और “ऐतिहासिक सज्ञायमाला भा १” श्रीविजय-धर्मसूरिजी और उनके शिष्य श्री विद्याविजयजी सम्पादित एवं श्री जिनविजयजी सम्पादित “जैन ऐतिहासिक गूर्जर काव्य सचय” और मोहनलालदलीचददेसाई B A L L B सशोधित “जैन ऐतिहासिक रासमाला” नामसे प्रकाशित हुए है।

जेसलमेरु थुंभ जाणियइ, प्रगट प्रभाव पुह्वि माणीयइ ।

दरसन दीठइ अति उल्लाह, समरणि सवि टालइ दुखदाह ॥६॥

खास सास जर पमुहज रोग, नाम लियइ नवि आए सोग ।

अधिक प्रताप सलहियइ आज, जो प्रणमइ तसुसारइ काज ॥१०॥

थाल विसाल थापना करी, निरमल नेवज आगलि धरी ।

केसरि चन्दन पूज रसाल, विरची चाढइ कुसमह माल ॥११॥

मृगमद मेलि अगर घनसार, भोग ऊगाहउ अतिहि उदार ।

करि साथियउ अखंड तंदु लइ, सुगुणगान कीजइ तिह वलइ ॥१२॥

चित्त तपी सहि चिंता टलइ, मनह मनोरथ ततखिण फलइ ।

खरतरगणगथिणिहि ससि समउ, भाविकलोक करिजोडी नमउ ॥१३॥

गुरु श्रीदेवतिलक उवझाय, प्रणम्यइ बाधइ सुह समवाय ।

अरि करि केसरि विसहर चोर, समर्यउ असिव निवारइ घोर ॥१४॥

ए चउपई सदा जे गुणइ, उठि प्रभाति सुगुरु गुण थुणइ ।

कहइ “पदममंदिर” मनशुद्धि, तसुथाए सुख संपति रिद्धि ॥१५॥



इनके अतिरिक्त कई ऐतिहासिक काव्य मन्वन्त्र-ग्रन्थ १ रूपमें २ मासिकपत्रोंमें और कतिपय उराम-ग्रन्थोंमें भी प्रकाशित हुए हैं।

ऐसे रास अभी तक बहुत अल्प प्रमाणमें अप्रकाशित हैं उन्हें शीघ्र प्रकाशित करना आवश्यक है जिनमें ऐतिहासिक क्षेत्रमें नया प्रकाश पड़े। आचार्यों एवं विद्वानोंके अतिरिक्त कतिपय सुश्रावकोंके ऐ० काव्य भी उपरोक्त संग्रहमें प्रकाशित हुए हैं। तीर्थोंके सम्बन्धमें भी ऐसे अनेकों काव्य उपलब्ध हैं जिनका संग्रह भी मुनिराज श्रीविद्या-विजयजी सरपादित “प्राचीन तीर्थमाला” और “पाटणचैत्य परिपाटी” आदि पुस्तकोंमें छपा है एवं “जैनयुग” के अंकोंमें भी कई स्थानोंको चैत्यपरिपाटियाँ और तीर्थमालाएं प्रकाशित हुई हैं। हमारे संग्रहमें भी ऐसे अप्रकाशित अनेकों ऐतिहासिक काव्य हैं जिन्हें यथावकाश प्रकाशित किया जायगा।

अविद्यकीय स्वष्टीकरण

प्रस्तुत संग्रहमें अधिकांश काव्य खरतरगच्छीय ही हैं, इससे कोई यह समझनेको भूल न कर बैठे कि सम्पादकोंको अन्यगच्छीय काव्य प्रकाशित करना इष्ट नहीं था। हमने तपगच्छीय खोज-शोधप्रेमी विद्वान् मुनिवर्योंको तपगच्छीय अप्रकाशित काव्य भेजनेको विज्ञप्ति भी की थी, पर खेद है कि किसीकी ओरसे कोई सामग्री नहीं मिली। तब यथोपलब्ध सामग्रीको ही प्रकाशित करना पड़ा।

१ यशोविजयरस, कल्याणसागरसूरिरस, देवविलास । २ जैनयुगके अङ्कोंमें । ३ प्राचीन गूर्जरकाव्यसंग्रहमें, रास संग्रहमें ।

राजपूताना प्रान्त वीकानरमे विजेपकर खरतरगच्छका ही नचार और प्रभाव रहा है। अतएव हमे अधिकाग काव्य इसी गच्छन प्राप्त हुए हैं। तथागच्छीय काय एकमात्र “श्रीविजय सिंह सूरि विजयनकारा रास” उपलब्ध हुआ या वह और तत्पश्चात् उपाध्यायजी श्रीसुरमागारजी महाराजने पालीतानेसे “जिनचूला गणिनी विज्ञप्तिगीत” भेजा था उन दोनोको भी प्रस्तुत ग्रन्थमे नकागित कर दिया है। हमार सनहमे कतिपय पार्श्वचन्द्रगच्छीय ऐं काव्य हैं, जिन्हे नकागनार्य मुनिवर्ण जगन्चन्द्रजी कनकचन्द्रजीने नकल करली है अत हमने इस सनहमे दना अनान्यक समझा।

प्रस्तुत ग्रन्थमे अधिकाग खरतरगच्छीय भिन्न-भिन्नशाखाओक काव्योका सनह है, एकही ग्रन्थमे एक विषयकी प्रचुर सामनी मिलनेसे इतिहास लेखकको सामनी जुटानेमे समय और परिश्रमकी बडी भारी बचत होती है। इस विशेषताकी ओर लक्ष्य देकर हमन अचाववि उपलब्ध मार खरतरगच्छीय ऐं काव्य प्रस्तुत सग्रहमे नकागित कर दिये हैं, जिनसे प्रत्युत विषयमे यह ग्रन्थ पूर्ण सहायक हो गया है। मूल पुस्तक छप जानेक पश्चात् श्रीजिनचूलासूरि कृत श्रीजिनचन्द्रसूरि चतु सप्ततिका और श्रीसूरचन्द्रगणि कृत श्रीजिनसिंहसूरिरास उपलब्ध हुए हैं, ग्रन्थक बडे हो जानेके कारण उनको मूल प्रकाशित न करके ऐतिहासिकसार यथास्थान दे दिया है। सनहकी दृष्टिमे और शुद्ध रतिये मिल जानेसे पाठान्तर भेद सहित कतिपय अन्यत्र नकाशित काव्य भी इस ग्रन्थमे प्रकाशित किये हैं।—

* देखें प्रति परिचय।

ढाल १ (पुरन्दरनी चौपाइनी)

‘मरुधर’ देसि मझार ‘मेडतो’ सहर भलोरी ।

‘आसकरण’ ‘ओसवाल’, ‘चोपड़ा’ वंश तिलोरी ॥ १ ॥

पद ठवणो करि पूज्य, अवसर एह लही री ।

खरचे द्रव्य अनेक, सुकृत ठाम सही री ॥ २ ॥

सूरि मंत्र लह्यो शुद्ध, सहगुरु तेणि समे री ।

श्री ‘जिनसागर सूरि’ इन्द्रिय पाच दमे री ॥ ३ ॥

मोटो साधु महन्त, करणी कठिन करे री ।

श्री ‘जिनसिंह’ के पाट, खरतर गच्छ खरेरी ॥ ४ ॥

पालि पंच आचार, तारण तरण तरी री ।

पंच सुमति प्रतिपाल, खप संथम की खरी री ॥ ५ ॥

पृथिवी करिय पवित्र, साथि साधु भला री ।

अप्रतिबद्ध विहार, दिन दिन अधिक कला री ॥ ६ ॥

‘चौरासी गच्छ’ माहि, जाकी शोभ भली री ।

चतुर्विध संव सनूर, संपद गच्छ मिली री ॥ ७ ॥

ढाल २ (मनड़ो भान्यो रे गौड़ी पासजी रे)

मनडुं रे मोहयु माहरुं पूजजी रे, श्री ‘जिनसागर सूरि’ ।

वड़ भागी भट्टारक ए भला जी, दिन दिन गच्छ पडूरि ॥ १ ॥

सखर गीतारथ साधु भला भलाजी, मानइ मानइ पूज्य नी आण ।

‘समयसुन्दर’ जी, पाठक परगड़ाजी, पाठक ‘पुण्य प्रधान’ रे ॥ २ ॥

कई महत्वपूर्ण त्रुटक और अपूर्ण कृतिं १ थी जो हमें उपलब्ध हुईं प्रकाशित कर दी गई हैं, यदि किसी मजानको उनकी पूर्ण प्रतियां मिले तो हमें अवश्य सूचित करें।

ऐ० काव्योंकी प्रस्तुतियां:

जैसलमेर भण्डारकी सूची २ से जात होता है कि वहां भी एक त्रु० प्रति ३ में श्रीजिनपतिस्वरि, जिनवल्लभस्वरिके अपभ्रंश गाथा में वर्णन, जिनप्रबोध मुनिवर्णन, जिनकुशलस्वरि वर्णन (प्रति नं० ५२२ में) शेष श्रीजिनपतिस्वरि स्तूपकला (नं० ३५८ के अन्तमें) और श्रीजिनलब्धिस्वरि गुरुगीत (पत्र २ नं० १५८६ में) विद्यमान हैं, परन्तु अद्यावधि हमें ये उपलब्ध नहीं हुए, सम्भव है कि कुछ कृतिं वेही हों जो इस ग्रन्थमें प्रकाशित हैं*।

खरतरगच्छका काव्य साहित्य बहुत विगाल है। अपनी-अपनी शाखाका साहित्य उनके श्रीपूज्योंके पास है आद्यपश्चीय

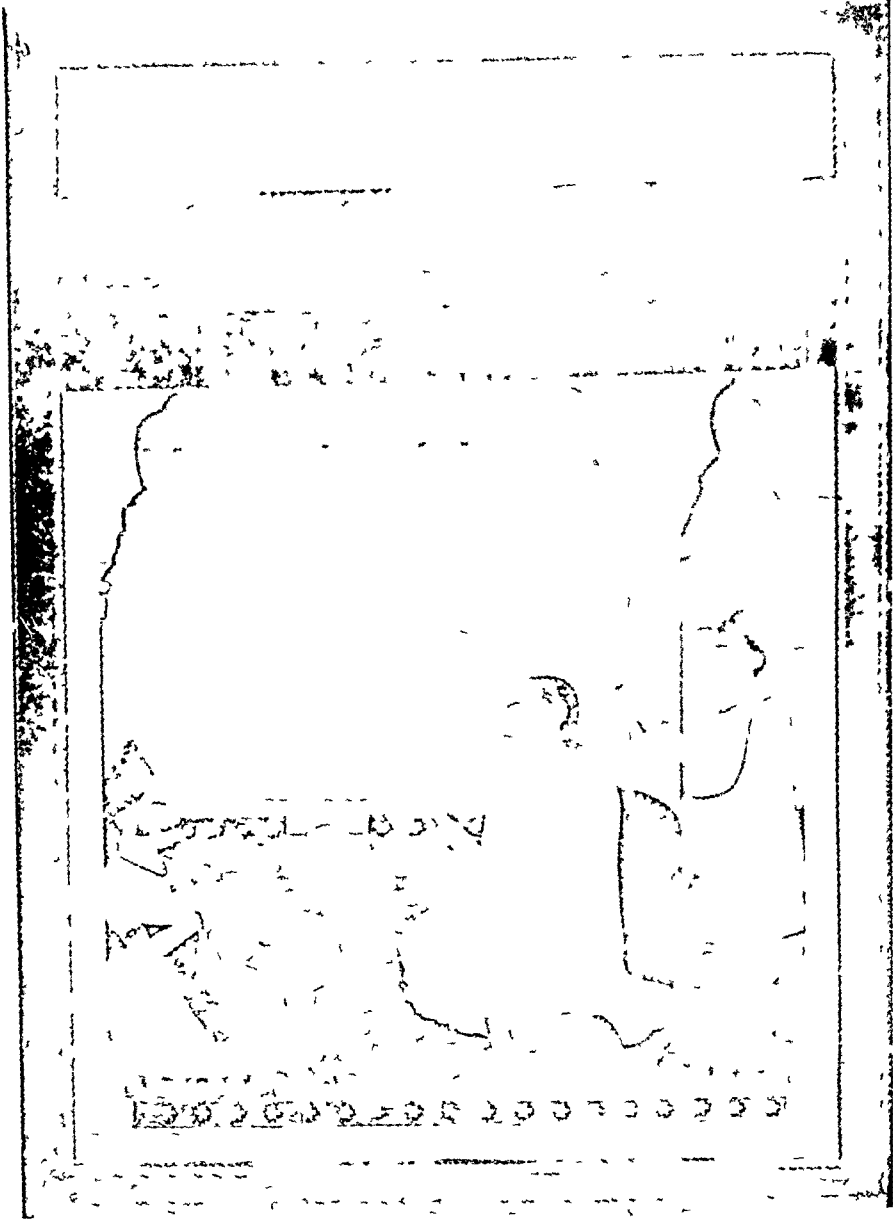
१ श्रीजिनराजस्वरिगाल आदिकी गा० ९ (पृ० १५०), श्रीजिनदत्तस्वरि छप्पय आदि अन्त विहोन (पृ० ३७३), श्रीकीर्तिरत्नस्वरिकाग आदिकी गा० २७ (पृ० ४०१), श्रीजिनचन्द्रस्वरिगीत अपूर्ण (पृ० १०१), विद्यासिद्धिगीत आदि त्रुटक (पृ० २१४)।

२ जैसलमेरके यतिवर्य लक्ष्मीचंदजो प्रेषित।

३ खरतरगच्छके आचार्योंके ऐतिहासिक गुण वर्णनात्मक काव्योंकी अन्ध एक महत्वपूर्ण प्रति अजीमगंजके भंडारमें थी, पर खेद है कि बहुत खोजनेपर भी वह उपलब्ध नहीं हुई।

* देखे "जैन साहित्यनो संक्षिप्त इतिहास" पृ० ९३७ से ९४६।

ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह



श्री जिनसुखसूरिजी

(बाबू विजय सिंहजी नाहरके सौजन्यसे)

(पाली), लघु आचार्य, भावहर्षी और लखनऊ वालेके पास खर-तरंगचक्रा बहुतसा ऐतिहासिक साहित्य प्राप्त होनेकी सम्भावना है।

हमारे सग्रहमे इधरमे और भी कई ऐतिहासिक काव्य उपलब्ध हुए हैं जो यथावकाश प्रकट किये जायेंगे।

प्रस्तुत ग्रन्थकी उपयोगिता।

यह ग्रन्थ ऋषिकोणद्वयसे विशेष उपयोगी है। एक तो ऐतिहासिक और दूसरा भाषासाहित्य। कतिपय साधारण काव्योक अतिरिक्त प्रायः सभी काव्य ऐतिहासिक दृष्टिसे समग्र किये हैं, गुण वर्णनात्मक अनक गीत, गहूलियें, अष्टक प्रभृति हमारे सग्रहमे है, परन्तु उनमेसे ऐतिहासिक काव्योको ही चुन चुनकर प्रस्तुत सग्रहमे स्थान दिया गया है। अद्यावधि प्राकृत सग्रहोसे भाषा साहित्यकी दृष्टिसे यह सग्रह सर्वाधिक उपयोगी है, न्योकि इसमे बारहवीं शताब्दीसे लेकर बीसवीं शताब्दी तक लगभग ८०० वर्षोंके, प्रत्येक शताब्दीके थोड़े बहुत काव्य अवश्य सन्नीत हैं। जिनसे भाषा-विज्ञानके अभ्यासियोंको शताब्दीवार भाषाओके अतिरिक्त कई प्रांतीय भाषाओका भी अच्छा ज्ञान हो सकता है। कतिपय काव्य हिन्दी, कई राजस्थानी और कुछ गुजराती प्रभृति हैं। अपभ्रंश भाषाके लिये तो यह सग्रह विशेष महत्वका ही है, किन्तु नमूने तौरपर कुछ संस्कृत और प्राकृतके काव्य भी दे दिये गये हैं।

काव्यकी दृष्टिसे जिनैरवरसूरि, जिनोदयसूरि, जिनकुशलसूरि, जिनपतिसूरि, जिनराजसूरि, विजयसिंहसूरि आदिक रास, विनाहल

* शताब्दीवार काव्योंका सक्षिप्त वर्गीकरण अथ स्थानमें मुद्रित है।

चउदसमइ 'जिनपद्म सूरिस', 'लब्धि सूरि' 'जिनचंद' मुणीश ।
सतर(स)मइ 'जिनोदय' सूरि, श्री 'जिनराज सूरि' गुण भूरि ॥११॥
पाटि प्रभाकर मुकुट समान, श्री 'जिनवर्द्धन सूरि' मुजाण ।

शीलइ सुदरसण जंवू कुमार, जसु महिमा नवि लाभइ पार ॥१२॥
श्री 'जिनचंद सूरि' वीसमइ, समता समर (स) इंद्रो दमइ ।

वंदो श्री 'जिनसागर सूरि', जास पसाइ विवन सवि दूरि ॥१३॥
चउरासी प्रतिष्ठा कीद्ध, 'अहमदावाद' थूम सुप्रसिद्ध ।

तासु पदइ 'जिनसुंदर सूरि', श्री 'जिनहर्ष सूरि' मुय पूरि ॥१४॥
पंचवीस मइ 'जिनचंद्र सूरिंद', तेज करि नइ जाणइ चंड ।

श्री 'जिनशील सूरि' भावइ नमो, संकट विकट थकी उपसमउ ॥१५॥

श्री 'जिनकीर्त्ति' सूरि सुरीश, जग थलउ जसु करइ प्रशंस ।

श्री 'जिनसिंह' सूरि तसु पट्टइ भणुं, धन आवइ समरंता वणुं ॥१६॥

वर्त्तमान वंदो गुरुपाय, श्री 'जिनचंद' सूरिसर राय ।

जिन शासन उदयउ ए भाण, वादी भंजण सिंह समाण ॥१७॥

ए खरतर गुरु पट्टावली, कोधी चउपइ मन नी रली ।

ओगणत्रीश ए गुरुना नाम, लेतो मनवंछित थाये काम ॥१८॥
प्रह उठी नरनारी जेह, भणइ गुणइ रिद्धि पाभइ तेह ।

'राजसुंदर' सुनिवर इम भणइ, संघ सहु नइ आणंद करइ ॥१९॥

इति श्री गुरु पट्टावली चउपइ समाप्त ॥ आ० कीलाइ पठनार्थे ॥
मो० द० दे० ॥

यह पट्टावली श्री जिनचंदके शिष्य पं० राजसुंदरने देवकुल
पाटनमे सं० १६६६ वैशाख वदि ६ सोम आ० थोभणदे के लिये
लिखी है । (देवकुलपाटक तृतीयावृत्ति पृ० १६)

बड़े सुन्दर और अलङ्कारिक भाषामें है। जिनको पढ़नेसे प्राचीन काव्योंके सृजन, सौष्ठव, सुन्दर शब्द-विन्यास और फवती हुई उपमाओंके साथ साथ अनेक शब्दोंका अनुभव होता है।

इस संग्रहमें प्रकाशित प्रायः सभी काव्य समसामयिक लिपिवद्ध प्रतियोंसे ही सम्पादित किये गये हैं। इसका विशेष स्पष्टीकरण प्रति-परिचयमें कर दिया गया है।

शृङ्खलासे अव्यवस्थाका कारण

लगभग २॥ वर्ष पूर्व जब इस ग्रन्थको छपाना प्रारम्भ किया था तब जितने काव्य हमारे पास थे, सबको रचनाकालकी शृङ्खलानुसार ही प्रकाशित करना प्रारम्भ किया था, परन्तु उसके पश्चात् ज्यों-ज्यों नवीन सामग्री मिलती गई त्यों-त्यों इसमें शामिल करते गये। अतः जैसा चाहिये काव्योंका अनुक्रम ठीक न रह सका। फिर भी हमने पीछेसे ग्रन्थको चार विभागोंमें विभक्त कर चतुर्थ विभागमें अवशेष प्राचीन काव्योंको दे दिया है। रचना समयकी अपेक्षासे काव्य जिस शृङ्खलासे सम्पादन होने चाहिये उनकी स्वतन्त्र तालिका दे दी है, ताकि पाठकोंको शताब्दीवार भाषाओंका अभ्यास करनेमें सुगमता और अनुकूलता मिले। ऐतिहासिक सार-लेखन (गारखा वार) क्रमिक पद्धतिसे ही हुआ है।

प्रस्तुत ग्रन्थको सर्वाङ्ग सुन्दर और विशेष उपयोगी बनानेका भरसक प्रयत्न किया गया है। जो लोग प्राचीन राजस्थानी और अपभ्रंश भाषासे अनभिज्ञ हों उनके लिये “कठिन शब्दकोश” और शृङ्खलावद्ध ऐतिहासिकसार दे दिया है। इसके अतिरिक्त स्थान-

‘शुण विजय’ कहत ओ‘निहगिरि’, ध्यान धरन नन पाप ।

फलवनन बडठो जिता भणी, ‘वात्त्रलि’ नु जाप ॥ २६ ॥

जे नर धरि बडठा करत, श्रीजत्रुंजय जाप ।

‘शुणविजय’ कहत तेठना दलत, नदस पन्थोपम पाप ॥ ३० ॥

‘शुणविजय’ कहत जत्रुंज तणी, आत्पटी मोटो भर्म ।

लाख पल्योपम संचिया, दलत निकाचित कर्म ॥ ३१ ॥

‘शुणविजय’ कहत ‘धिमलानलि’, पंचकोडि परिवार ।

चेत्री दिन केवल लण्ड, ‘पुण्डरीक’ गगवार ॥३२॥

‘शुणविजय’ कहत जग मा बडा, ‘जत्रुंजय’ ‘गिरिनारि’ ।

उक गिरि ‘आदिमर’ चलयत, उक गिरि ‘नेमि’ कुमार ॥ ३३ ॥

ढाल राग सामेरी

‘शत्रुंजय’ जिनवर वंडत, गुन्जी निज पाप निकंडत ।

दुड ‘दीव’ करी चोमास, पूरी ‘सोरठनी’ आस ॥ ३४ ॥

‘हीरजी’ नी परि पूजाणो, तिहा ‘तप गच्छ’ करो राणत ।

‘गिरिनार’ देखी(दु.ख) मेदत, राजलि (धि?) राजा जिन भेटइ ॥३५॥

बलि ‘नवड नगरि’ गुरु आवड, सामहिआं संघ करावड ।

जामी दुड सहस वखाणी, इक सामहेलि खरचाणी ॥ ३६ ॥

तिहा थी ववि (चलि?) पूज्य पवारड, ‘शत्रुंजय’ देव जुहारड ।

‘खंभाडति’ अति उल्लासि, तिहा थी आन्धा चडमासड ॥ ३७ ॥

तिहा त्रिण प्रतिष्ठा सार, रुपइआ चउद हजार ।

खरच्या ‘खंभाडत’ भाहि, श्रीसंघ अधिक उल्लाहि ॥ ३८ ॥

स्थानपर प्राचीन सुन्दर चित्र, विशेष नाम सूची, अनेक आवृत्तियाँ आतींका स्पष्टीकरण (प्रति परिचय, कवि परिचय, चित्र परिचय आदि) कर दिया गया है।

अशुद्धियोंका आधिक्य

काव्योको यथाशक्ति सजोधन पूर्वक प्रकाशित करनेपर भी इस ग्रन्थमें अशुद्धियोंका आधिक्य है। इसका प्रधान कारण अधिकांश काव्योंकी एक-एक श्रुतिका ही उपलब्ध होना है। जिनकी एतसे अधिक श्रुतिने प्राप्त हुई हैं वे पाठान्तर भेदोंके साथ साथ प्रायः शुद्ध ही छप हैं। रोद है कि कतिपय अशुद्धियाँ प्रेस दोष और दृष्टि दोषसे भी रह गयी हैं। शुद्धिपर पीछे दे दिया गया है, पाठकोसे अनुरोध है कि उनसे सुधारकर पढ़े। अधिकांश शुद्धिपर जालौरसे पुरातरन-वेत्ता मुनिराज श्री कल्याणविजयजीन बनाकर भेजा था। अतएव हम पूज्यश्रीन प्रति कृतज्ञता प्रकट करत ह।

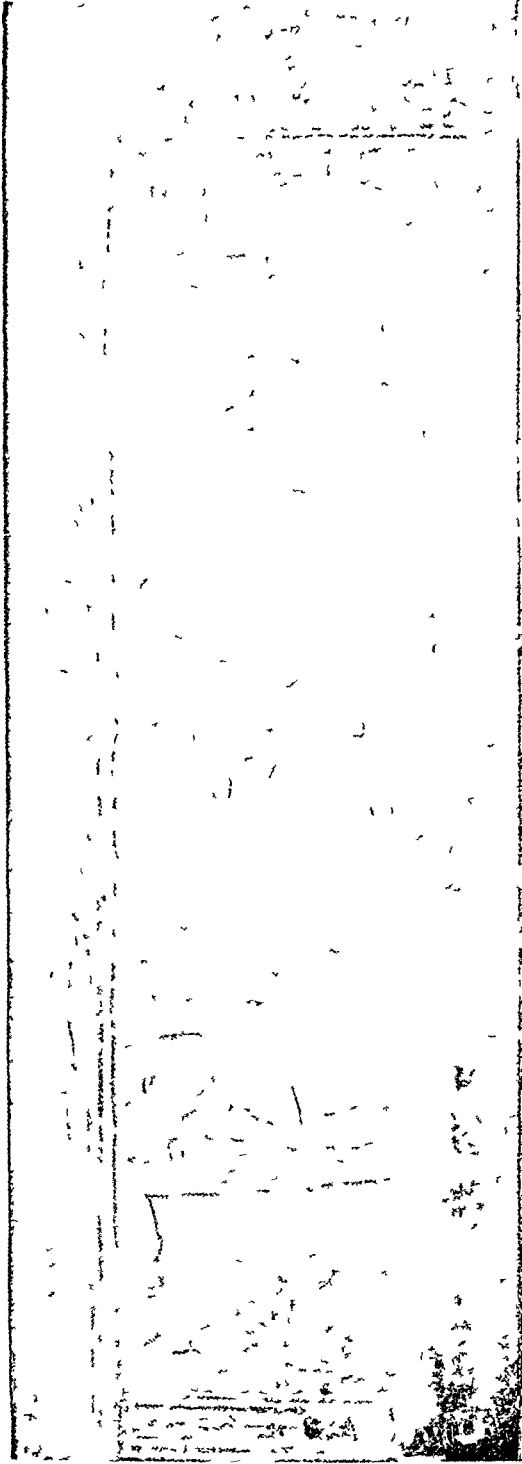
रास सार

काव्योका ऐतिहासिक सार अति सक्षिप्त और सारगर्भित लिखा गया है। पहले हमारा यह विचार था कि काव्याक अतिरिक्त इतर सामग्रीका सम्पूर्ण उपयोग कर सार-परिचय निस्तृत लिखा जाय, परन्तु ग्रन्थ बहुत बड़ा हो जानेके कारण ऐसा न करके सशेषसे ही लिखना पडा।

अयोग्यता

यह ग्रन्थ किसी विद्वानके सम्पादकत्वमें प्रकट होता तो विशेष

ऐतिहासिक जैन कठ्य संग्रह



वेदवत् शैरोर्मणि जिन बल्लभसुरेजी

(जैसलमेर भाण्डागारीय प्राचीन ताड-
पत्रीग प्रतिके काष्टफलक पर चित्रित)

सुन्दर होता, क्योंकि हमारेमें एतद् विषयक ज्ञान और अनुभवका अभाव है, परन्तु अनुभवी विद्वानका सहयोग प्राप्त न होनेपर हमने अपनी अत्यधिक साहित्यरुचि और अदम्य उत्साहमें प्रेरित हो यथासाध्य सम्पादन किया है। इस कार्यमें हमें कहां तक नफलना मिली है, यह निर्णय विद्वान पाठको पर ही निर्भर है। हम विद्वान नहीं है, अस्थासी हैं, अतः भूलोंका होना अनिवार्य है। अतएव अनुभवी विद्वानोंसे योग्य सूचना चाहते हुए क्षमा प्रार्थना करते हैं।

प्रकाशनमें विलम्ब

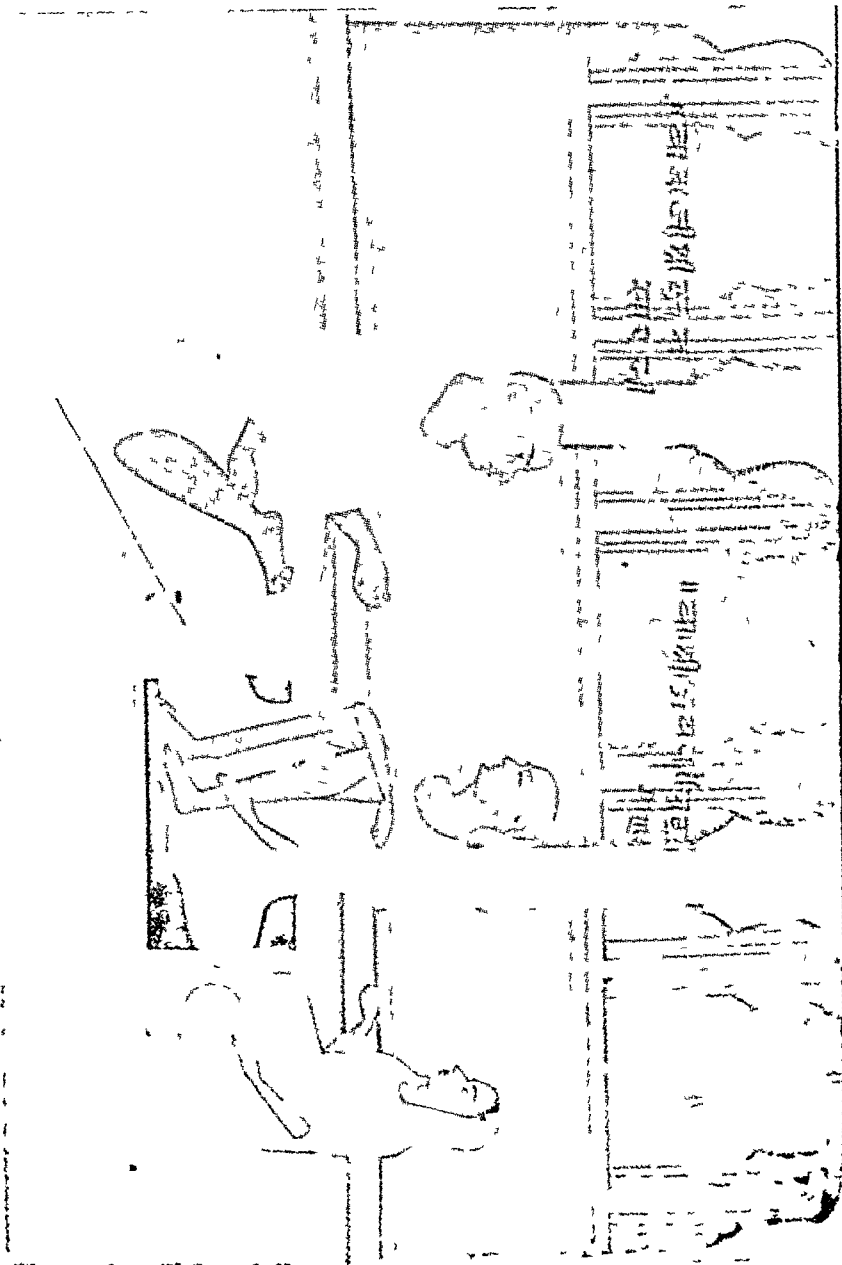
प्रस्तुत ग्रंथका “युगप्रधान निनचंद्रमूरि” ग्रंथके साथ ही मुद्रण प्रारम्भ हुआ था परन्तु हमारे व्यापारिक कार्योंमें व्यस्त रहने व अन्यान्य असुविधाओंके कारण प्रकाशनमें विलम्ब हुआ है। अपने व्यवसायिक कार्योंसे समय कम मिलनेसे हम इसका सम्पादन मनोज और सुचारु नहीं कर सके। यदि इसकी द्वितीयावृत्तिका अवसर मिला तो ग्रंथकी सुसम्पादित व्यवस्थित आवृत्ति की जायगी।

आभार प्रदर्शन

इसकी प्रस्तावना श्रीयुक्त हीरालालजी जैन M. A L L B (प्रोफेसर एडवर्ड कालेज, अमरावती) महोदयने लिख भेजनेकी कृपा की है, अतएव हम आपके विशेष आभारी हैं।

इस ग्रन्थके “कठिन शब्द कोष” का निर्माण करनेमें माननीय ठीकुर साहेब रामसिंहजी M A विशारद और स्वामी नरोत्तम दासजी M A विशारदसे पूर्ण सहायता मिली है। सोलहवीं गताब्दीके पहलेके काव्योंका अन्तिम प्रूप संशोधन श्रीमान् पं० हरगोविन्द

ऐतिहासिक जन काव्य सभए



मरुतयोगी ज्ञानभारजी व वाचक जयकीर्तजी
(मूल चित्र—श्रीजिन कृपाचन्द्रसुरि ज्ञान भंडार-बीकानेर)

दासजी सेठ “न्याय व्याकरणतीर्थ” ने कर देनेकी कृपा की है।
 त्रीयुक्त मिश्रीलालजी पालरचा महोदयसे भी हमे सगोधनमेपूर्णसहा-
 यता मिली है। त्रीयुक्त मोहनलाल दलीचन्द दसाई B A L L B
 (वकील हाईकोर्ट, बम्बई) न भी समय समयपर सत्परामर्श द्वारा
 सहायता पहुचाई है। इसी प्रकार कतिपय काव्य उ० सुखसागर-
 जी, मुनिवर्य रत्नमुनिजी, लब्धिमुनिजी एत जैसलमेरवाले यतिवर्य
 लक्ष्मीचन्दजीन ओर कतिपय चित्र-ब्लॉक विजयमिहजी नाहर,
 साराभाइ नवान, मुनि पुण्यविजयजी आदिकी कृपासे प्राप्त हुए हैं,
 एतदर्थ उन सभी, जिनन द्वारा यत्किञ्चित भी सहायता मिली हो,
 सहायक पृष्ठो व मित्रोक चिर कृतज्ञ है।

निवेदक—

अगरचन्द नाट्टा,

भवरलाल नाट्टा ।



छटा	३७७	छटा, छांटा	जाल-इण	११३	जलाना
छपटा	३५२	पटपट, छप्पय	जालवीजठ	३९३	भुगक्षित
छयल	१५०, ३५०	रमिक			रसना ममा-
छलियठ	३७९	छटना			लना
छविठ	२४	छ प्रकार	जाठ	३७०	जिभके
छातिया	१०४	छानी, चक्र-यल	जिगवर	३६५	जिनवर
		ज	जिगवय	२५	जिनपति
जइणा	२४	यतना	जिणिठु	३६६	जिनेध्वर देव
जईवर	३१२	यतीध्वर	जीपठ	३५२	जीतता है
जईसू	१६	यतीश	जीठ	२५८	जिद्धा
जउख	८२	आनंद, विध्राम	जुग पवर	३	युग प्रवर
जगत्र	३१८	जगत	जुग पठाणु	२२	युगप्रधान
जगीश	८२, १०७, ४१०	डच्छा	जुगवर	२४	युगमंत्रोच्छुत्तम
जत्य	२४	जहां	जेत्र	९७	जय सूचक
जमाडि	२८९	जिमाक	जोडणि	२	योगिनी
जम्पइ	१६३, ३३९	कहता है	जोडली	३६२	युगल, जोड़ी
जम्बुय	३४	गोदड			झ
जम्भकखणि	३४	जन्मक्षण	जानावरणी	३२३	कर्मका नाम,
जम्भु	२३	जन्म			ज्ञानको आ-
जयतसिरी	१०५	रागका नाम			वरण करनेवाले-
जयपतु	२	जयपत्र	झड्डड	३६५	गिरना झडना
जसु	३६९	जिसका	झाहो	३३०	झांकी, आभास
जाइगा	३७६	जगठ	झाक्षेडा	१२०, ३२६	अधिक, विशेष
जागरि	१५३	जागरण	झाडाया (ला)	१००	छुड़ाया
जान	४१२	बरात	झाण	१	ध्यान
जानउत्र	३८०	बरात	झायहु	३८५	ध्यावो
जानह	३८०	बरातकी	झालर	३११	झालर, बस्त्र
जामणहि	३१	यामिनी			विशेष
		(रात्रि) में	झाला	३०२	जाति विशेष

काव्यरचनाकालका संक्षिप्त शताब्दी अनुक्रम *

१२ वींका शेषार्द्ध ।

कवि पालह कृत खरतर पट्टावली (पृष्ठ ३६५ से ३६८) ।

१३ वींका शेषार्द्ध ।

जिनवल्लभसूरिगुणवर्णन (पृष्ठ ३६६ से ३७२),

जिनपतिसूरिधवल गीतादि (पृष्ठ ६ से १०) ।

१४ वींका पूर्वार्द्ध ।

जिनेश्वरसूरिरास (पृष्ठ ३७७ से ३८३), गुरुगुणपट्टपद (पृष्ठ १ से ३) ।

शेषार्द्ध :

जिनकुशलसूरिरास (पृष्ठ १५ से १८), जिनपद्मसूरिरास (पृष्ठ २० से २३), जिनप्रभसूरि जिनदेवसूरिगीत (पृष्ठ ११ से १४) ।

१५ वींका पूर्वार्द्ध ।

जिनोदयसूरिगुणवर्णन (पृष्ठ ३६ से ४०), जिनोदयसूरि रासद्वय (पृ० ३८४ से ३८६), जिनप्रभसूरि गुर्वावली (पृ० ४१-४२) ।

शेषार्द्ध :

खरतरगुरुगुणछप्पय (पृ० २४ से ३८), खरतरगच्छगुर्वावली (पृ० ४३ से ४८), कोर्तिरवसूरि फाग (पृ० ४०१-२), भाव-

* कई कृतियोंका रचनाकाल अनुमानिक है ।

प्रभसूरिगीत (पृ० ४६ ५०), शिवचूला विज्रप्ति (पृ० ३३६),
वेगडपट्टावली (पृ० ३१२) ।

१६ वीं का पूर्वाद्ध^१ ।

क्षेमराजगीत (पृ० १३४) ।

१६ वीं का शेषाद्ध^१—

जिनदत्त स्तुति (पृ० ४), जिनचंद्र अष्टक (पृ० ५), कीर्ति-
रत्नसूरि चौ० (पृ० ५१), जिनहंससूरि गीत (पृ० ५३),
क्षेमहंस कृत गुर्वावली (पृ० २१५ से २१७)

१७ वीं का पूर्वाद्ध^१—

देवतिलकोपाध्याय चौ० (पृ० ५५), भावहर्ष गीत (पृ०
१३५), पुण्यमाग गीत (पृ० ६७), पूज्यवाहन गीतादि
(पृ० ८६, ६४ ११० से ११७), जयतपदवेलि आदि साधु-
कीर्ति गीत (पृ० ३७ से ४५), सरतर गुर्वावलि (पृ० २१८ से
२७), कीर्तिरत्न सूरि गीत (पृ० ४०३), दयातिलक (पृ०
४१६), योगकुराल, करमसी गीतादि (पृ० १४६, २०४), आदि ।

शेषाद्ध^१—

जिनचंद्रसूरि, जिनसिंह, जिनराज, जिनसागर सूरि गीत
रासादि (पृ० ५८ से १३२, १५० से २३०, ३३४, ४१७),
सरतर गुर्वावलि (पृ० २२८), पि० सर० पट्टावली (पृ०
३१६), गुणप्रभ सूरि ग्रन्थ (पृ० ४२३), विजयसिंह सूरि
रास (पृ० ३४१), पद्महेम (पृ० ४२), समयसुन्द गीत
(पृ० १४६), छप्पय (पृ० ३७३ आदि ।

१८ वीं का पूर्वाद्ध -

जिनरंग (पृ० २३१), जिनरत्नसूत्र (पृ० २३५, ५१८),
जिनचन्द्रसूरि गीत (पृ० २५५), जिनजा गीत (पृ० ३१४),
कीर्तिरत्न सूरि छन्द (पृ० ४०५), जिनचन्द्र (पृ० ५३०),
जिनधर्म (पृ० ३३५), भावप्रमोद (पृ० २५८), नृपगागर
(पृ० २५३), समसुन्दर गीत (पृ० १४८) आदि ।

शेषाद्ध

जिनसुख-जिनहर्षसूरि (पृ० २६१ से २६३), जिनचन्द्रसूरि
वास (पृ० ३२१), जिनचन्द्र (पृ० ३३५), कीर्तिरत्न सूरि
(पृ० ४१३) आदि ।

१६ वीं का पूर्वाद्ध

देवविलास (पृ० २६४ से २६२), जिनलक्ष्म-जिनचन्द्र (पृ०
२६३ से २६६ तथा ४१४ से ४१६) जयमाणिन्य छन्द (पृ०
३१०) आदि ।

शेषाद्ध

जिनहर्ष, जिनसौभाग्य, जिनमहेन्द्रसूरि गीत (पृ० ३०० से
३०४), ज्ञानसार (पृ० ४३३) आदि ।



ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह

—की—

प्रस्तावना

जैन-धर्म भारतवर्षका एक प्राचीनतम धर्म है। इस धर्मक अनु-
यायिमान दृजन ज्ञान-विज्ञान, समाज, कला-कौशल आदि वैशिष्ट्य-
क विकासमें बड़ा भाग लिया है। मनुष्यमात्र, नहीं-नहीं प्राणीमात्र
में परमात्मत्वकी योग्यता रखनेवाला जीव विद्यमान है। और
अत्येक प्राणी, गिरत-उठने उम्मी परमात्मत्वकी ओर अग्रसर हो
रहा है। इन उभार सिद्धान्तपर इस धर्मका विन्यय और विश्व-
वन्द्युत्तर स्थिर है। भिन्न-भिन्न धर्मक विरोधी मतों और सिद्धांतों-
क बीच यह धर्म अपने स्याद्वाद नयन द्वारा सामञ्जस्य उपस्थित
कर देता है। यह भौतिक और आध्यात्मिक उन्नतिमें सब जीवोंक
समान अधिकारका पक्षपाती है तथा सामारिक लाभोंक लिये कलह
और विद्वेषको उभने पारलौकिक सुखकी श्रेष्ठता द्वारा मिटानेका
प्रयत्न किया है।

जैन-धर्मकी यह विशेषता केवल सिद्धान्तोंमें ही सीमित नहीं
रही। जैन आचार्या न उच्च-नीच, जाति-पातक भेद न करके
अपना उभार उपदेश सब मनुष्योंको सुनाया और 'अहिंसा परमो

धर्मः' के मन्त्र द्वारा उन्हें इतर प्राणियोंकी भी रक्षाके लिये तत्पर बना दिया। स्याद्वाद नयकी उदारता द्वारा जैनियोंने सभीकी सहानुभूति प्राप्त कर ली। अनेक राजाओं और सम्राटोंने इस धर्मको स्वीकार किया और उसकी उदार नीतिको व्यवहारसे उतारकर चरितार्थ कर दिखाया। इन्हीं कारणोंसे अनेक संकट आनेपर भी यह धर्म आज भी प्रतिष्ठित है।

किन्तु दुखकी बात है कि धार्मिक विचारोंमें उदारता और धर्म प्रचारमें तत्परताके लिये जैनी कभी इतने प्रसिद्ध थे, वे ही आज इन बातोंमें सबसे अधिक पिछड़े हुए हैं। विश्वभरमें वन्द्युत्व और प्रेम स्थापित करनेका दावा रखनेवाले जैनी आज अपने ही समाजके भीतर प्रेम और मेल नहीं रख सकते। मनुष्यमात्रको अपनेमें मिलाकर मोक्षका मार्ग दिखानेवाले जैनी आज जात-पातकी तंग कोठरियोंमें अलग-अलग बैठ गये हैं, एक दूसरेको अपना पाप समझते हैं। अन्य धर्मोंके विरोधोंको भी दूर कर उनमें सामञ्जस्य उपस्थित करनेवाले आज एक ही सिद्धान्तको मानते हुए भी छोटी-छोटी-सी बातोंमें परस्पर लड़-भिड़कर अपनी अपरिमित हानि करा रहे हैं।

ऐसी परिस्थितिमें यह स्वाभाविक है कि जैन-धर्मकी कुछ अनुपम निधिया भी दृष्टिके ओझल हो जावे और उनपर किसीका ध्यान न जावे। जैनियोंका प्राचीन साहित्य बहुत विशाल, अनेकांग-पूर्ण और उत्तम है। दर्शन और सदाचारके अतिरिक्त, इतिहासकी दृष्टिसे भी जैन-साहित्य कम महत्वका नहीं है। भारतके न जाने

कितने अन्धकारपूर्ण ऐतिहासिक कालोंपर जैन-कथा साहित्य, पट्टावलियों आदि द्वारा प्रकाश पड़ता है। लोक-प्रचारकी दृष्टिसे जैन-साहित्य कभी किसी एक ही भाषामे सीमित नहीं रहा। भिन्न-भिन्न समयकी, भिन्न-भिन्न प्रान्तकी भिन्न-भिन्न भाषाओं-मे यह साहित्य सूत्र प्रचुर प्रमाणमे मिलता है। अर्धमागधी, शौर-सेनी, महाराष्ट्री आदि प्राकृत भाषाओंका जैसा सजीव और विशाल रूप जैन-साहित्यमें मिलता है वैसा अन्यत्र नहीं। किन्तु आज स्वयं जैनो भी इस बातको अच्छी तरह नहीं जानते कि उनका साहित्य कितना महत्वपूर्ण है। उसका पठन-पाठन व परिशीलन जतना नहीं हो रहा है, जितना होना चाहिये। इस अज्ञान और उपश्लेष्के फलस्वरूप उसका अधिकांश भाग अभीतक प्रकाशमे ही नहीं आया।

वर्तमान सग्रह जैन-गीति काव्यका है। इसमे सैकड़ों गीत-सग्रह हैं, जो किसी समय कहीं-कहीं अवश्य लोकप्रिय रहे हों और आस-पास घर-घरमे या तीर्थ-यात्राओंके समय गाये जाते रहे हों। विशेषता यह है कि इन गीतोंका विषय-वृत्तार्थ नहीं, भक्ति है, प्रिय-प्रेयसी-चिन्तन नहीं, महापुरुष-कीर्ति-स्मरण है और इसलिये पाप-बन्धका कारण नहीं, पुण्य-निबन्ध हेतु है। ये गीत भिन्न-भिन्न सरस मनोहर राग-रागणियोंके रसास्वात्के साथ-साथ परमार्थ और सदाचारमे मनकी गतिको ले जानेवाले हैं। इस सग्रहको सम्पादकोंने 'ऐतिहासिक जैन-काव्य सग्रह' नाम दिया है, जो सर्वथा सार्थक है, क्योंकि इन गीतोंमे जिन सत्पुरुषोंका स्मरण किया गया

हैं, वे सब ऐतिहासिक हैं। जो धटनाय वर्णन की गयी हैं, वे सत्य हैं और हमारी ऐतिहासिक दृष्टिके भीतर की हैं। इन गुणों और मुनियोने समय-समयपर जो धर्म प्रभावना की, राजाओं-मंत्रा-राजाओं और सम्राटोंपर अपने धर्मकी जगमगाती भाव बढायी और समाजके लिये अनेक धार्मिक अधिकार प्राप्त किये उनके उल्लेख इन गीतोंमें पद-पदपर मिलते हैं। विशेष ध्यान देने योग्य वे उल्लेख हैं, जिनमें मुसलमानी वादग्रहोंपर प्रभाव पडनेकी बात कही गयी है। उदाहरणार्थ

जिनप्रससूरिके विषयमें कहा गया है कि उन्होंने अव्वपति (असपति) कुतुबुदीनके चित्तको प्रसन्न किया था। कुतुबुदीनने उनसे जद-गासनके विषयमें अनेक प्रश्न किये थे और फिर मन्तुष्ट होकर सुल्तानने गाव और हाथियोंकी भेट देकर उनका सम्मान करना चाहा था, पर सूरिजीने इन्हे स्वीकार नहीं किया। (पृष्ठ १२, पद्य १, ५)।

इन्हीं सूरीश्वरने संवत् १३८५ (ईस्वी सन् १३२८) की पौष सुदी ८ शनिवारको दिल्लीमें अव्वपति मुहम्मद ग़ाहसे भेट की थी। सुल्तानने इन्हे अपने समीप आसन दिया और नमस्कार किया। इन्होंने अपने व्याख्यान द्वारा सुल्तानका मन मोह लिया। सुल्तानने भी ग्राम, हाथी, घोड़े व धन तथा यथेच्छ वस्तु देकर सूरीश्वरका सम्मान करना चाहा, पर उन्होंने स्वीकार नहीं किया। सुल्तानने उनको बड़ी भक्ति की, फरमान निकाला और जलूस निकाला तथा 'वसति' निर्माण कराई। (पृ० १३, पद्य २-६) ऐसे ही उल्लेख पृ० १४ पद्य २, व पृ० १६ पद्य ६, ७ में भी हैं।

उपर्युक्त दोनों वादशाह खिलजी वंशका कुतुबुद्दीन मुबारिकशाह और तुगलक वंशका मुहम्मद तुगलक होना चाहिये। जो नमज सन् १३१६ और १३२५ ईस्वीमें गद्दीपर बैठे थे। इसी समयक बीच खिलजी वंशका पतन और तुगलक वंशका उत्थान हुआ था। सूरीश्वरक प्रभावसे दोनों राजवंशोंमें जैन-धर्मकी प्रभावना रही।

एक दूसरे गीतमें उल्लेख है कि जिनदत्तसूरिने वादशाह मिर्न्दरशाहको अपनी करामात दिखाई और ५०० वन्दियोंको मुक्त कराया (पृ० ५४, पद्य ११ आदि)। ये सम्भवत वहलोल लोधीक उत्तराधिकारी पुत्र सिकन्दरशाह लोधी थे, जो सन् १४८६ ईस्वीमें दिल्लीके तरतपर बैठे और जिन्होंने पहले-पहल आगराको राजधानी बनाया।

श्री जिनचद्रसूरिने दर्गनकी सुनसिद्ध मुगल-सम्राट् अकबरकी बड़ी अभिलाषा हुई। उन्होंने सूरीश्वरको गुजरातसे बड़े आनह और सन्मानसे बुलाया। सूरीजीने आकर उन्हें उपदेश दिया और सम्राट्ने उनकी बड़ी आव भगत की। (पृ० ५८) यह राम सवत १६२८ में अहमदाबादमें लिखा गया।

वादशाह सलेमशाह 'दरसणिया' दीवानपर बहुत कुपित हो गये थे, तत्र फिर इन्हीं सूरीश्वरने गुजरातसे आकर वादशाहका क्रोध शान्त कराया और धर्मकी महिमा बढ़ाई। (पृ० ८१-८२) ये सूरीश्वर मुलतान भी गये और वहाँक खान मलिकने उनका बड़ा सत्कार किया (पृ० ६६, पद्य ४)

इस प्रकारके अनेक उल्लेख इन गीतोंमें पाये जाते हैं, जो इतिहासके लिये बहुत ही उपयोगी हैं।

पर इससे भी अधिक महत्व इस संग्रहका भाषाकी दृष्टिसे है। इन कविताओंसे हिन्दीकी उत्पत्ति और क्रमविकासके इतिहासमें बहुत बड़ी सहायता मिल सकती है। इसमें बारहवीं-तेरहवीं शताब्दिसे लगाकर उन्नीसवीं सदीतक अर्थात् सात-आठ सौ वर्ष की रचनाये है, जो भिन्न-भिन्न समयके व्याकरणके रूपोंपर प्रकाश डालती है। प्राचीन हिन्दी साहित्य अभीतक बहुत कम प्रकाशित हुआ है। हिन्दीकी उत्पत्ति अपभ्रंश भाषासे मानी जाती है। इस अपभ्रंश भाषाका अबसे बीस वर्ष पूर्व कोई साहित्य ही उपलब्ध नहीं था। जब सन् १६१४ में जर्मनीके सुप्रसिद्ध विद्वान् डा० हर्मन याकोबी इस देशमें आये, तब उन्होंने इस भाषाके ग्रंथ प्राप्त करनेका बहुत प्रयत्न किया। सुदेवसे उन्हें एक पूर्ण स्वतन्त्र ग्रन्थ मिल गया। वह था 'अविसत्कहा' (अविष्यदत कथा), जिसको उन्होंने बड़े परिश्रमसे सन्पादित करके १६१६ में जर्मनीमें ही छपाया। उसके पठन-पाठनसे हिन्दी और गुजराती आदि प्रचलित भाषाओंके पूर्व इतिहासपर बहुत कुछ प्रकाश पड़ा। यही एक स्वतंत्र और पूर्ण ग्रन्थ इस भाषाके प्रचारमें आ सका था। सन् १६२४ में मुझे मध्यप्रान्तीय संस्कृत प्राकृत और हस्तलिखित ग्रन्थोंकी सूची तैयार करनेके सम्बन्धमें वरार प्रांतान्तर्गत कारंजाके दिगम्बर जैनशास्त्र भण्डारोंको देखनेका अवसर मिला। यहा मुझे अपभ्रंश भाषा के लगभग एक दर्जन ग्रंथ बड़े और छोटे देखने

को मिले, जिनका सविस्तर वर्णन अवतरणों सहित मैंने उस सूची में दिया जो Catalogue of Sanskrit and Prakrit MSS in C P & Berar के नाम से सन् १९२६ में मध्य प्रान्तीय सरकार द्वारा प्रकाशित हुई। उस परिचय से विद्वत् ससार को दृष्टि इस साहित्य की ओर विशेष रूपसे आकर्षित हुई। इससे प्रोत्साहित होकर मैंने इस साहित्यको प्रकाशित करने तथा और साहित्यकी सोज लगानका खूब प्रयत्न किया। इसका विषय है कि उस प्रयत्नके फलस्वरूप कारजा जैन सीरीज द्वारा इस साहित्यके अब तक पांच ग्रंथ दशवीं शताब्दी के बने हुए उत्तम रीतिसे प्रकाशित हो चुके हैं। तथा जयपुर, दिल्ली, आगरा, जसवतनगर आदि स्थानोंके शास्त्र-भण्डारोंसे इसी अपभ्रंश भाषाके कोड़े ४०-५० अन्य ग्रंथोंका पता चल गया है। यह साहित्य उसकी धार्मिक व ऐतिहासिक सामग्रीके अतिरिक्त भाषाकी दृष्टिसे बहुत ही महत्वपूर्ण है। यह भाषा प्राचीन मागधी, अर्द्धमागधी, शौरसेनी आदि प्राकृतों तथा आधुनिक हिन्दी, गुजराती, मराठी, बंगाली आदि प्राचीन भाषाओंके बीचकी कड़ी है। यह साहित्य जैनियोंके शास्त्र-भण्डारोंमें बहुत संगृहीत है। यथार्थमें यह जैनियोंकी एक अनुपम निधि है, क्योंकि जैन साहित्यके अतिरिक्त अन्यत्र इस भाषाके ग्रंथ बहुत ही कम पाये जाते हैं। भाषा विज्ञानके अध्येताओंको इन ग्रंथोंका अवलोकन अनिवार्य है। पर जैनियोंका इस ओर अभी तक भी दुर्लक्ष्य है। यह साहित्य गुजरात, राज-

पूताना और मालवाभे विंगेप रूपसे पाया जाता है। उनमें हिन्दी और गुजराती दोनों भाषाओंका पदरूप गुंथा हुआ है। उन भाषाके अध्ययनसे पता चल जाता है कि ये दोनों भाषाये तो मूलतः एक ही हैं।

प्रस्तुत संग्रहमे अपभ्रंशका और भी विकसित रूप पाया जाता है और उसका सिलसिला प्रायः वर्तमान कालकी भाषाने आ जुड़ता है। ये उदाहरण डिगल भाषाके विकसित पर बहुत प्रकार डालते हैं। भाषाकी दृष्टिसे इन अवतरणोंका सङ्गोचन और भी अधिक सावधानीसे हो सकता तो अच्छा था। किन्तु अधिकतर संग्रह गायद एक-एक ही मूल प्रति परसे किये गये हैं। अब उन ग्रंथकी ऐतिहासिक व भाषा सम्बन्धी सामग्रीका विंगेप रूपमें अध्ययन किये जानेकी आवश्यकता है। आशा है नाहटाजीका यह संग्रह एक नये पथ-प्रदर्शकका काम देगा। ऐसे ऐसे अनेक संग्रह अब प्रकाशमें आवेगे और उनके द्वारा देशके इतिहास और भाषा विकासका मुख उज्ज्वल होगा। यह प्रयत्न अत्यन्त मूल्य है।

किंग एडवर्ड कालेज,

अमरावती ।

२१-४-३७

हीरालाल जैन

एम० ए०, एल० एल० बी०,

प्रोफेसर आफ संस्कृत ।

प्रति परिचय

प्रस्तुत ग्रन्थमे प्रकाशित पात्रोंकी मूल प्रतियां बनकी लिखी हुई और कहापर हैं ? इसका जल्लेख कई कृतियोंमें अन्तमें यथा स्थान मुद्रित हो चुका है । अवगोप का योके प्रतियोंका परिचय इस प्रकार है —

(अ) १ गुरुगुण पदपत्र, २ जिनपति सूरि धवलगीत, ३ जिनपति-सूरि स्तूप कलना, ४ जिनकुरालसूरि पट्टाभिषेकराम, ५ जिन-पद्मसूरिपट्टाभिषेकराम, ६ सरतर गुरुगुण वर्णन ज्यपय, ७ जिनेवरसूरि विवाहलो, ८ जिनोदयसूरि विवाहलो, ९ जिनोदयसूरि पट्टाभिषेक राम, १० जिनोदयसूरि गुण वर्णन ज्यपय, ये कृतियां हमार सनहकी स० १४६३ लि० जिन-कुञ्जरके स्वाध्याय पुस्तक - (पत्र ५०१) की प्रतिसे नकल की गयी हैं ।

(आ) १ जिनपति सरिणाम् गीतम्, २ भानमसूरि गीत, ये दो कृतियें हमार सनहकी १६ वीं गताब्दीके पूर्वार्द्धकी लिखित प्रतिसे नकल की गयी हैं ।

(इ) जिनमसूरि गीत न० १, २, ३, जिनदेवसूरि गीत और

* ॥९०॥ संवत् १४९३ धर्षे वेत्ताय मासे प्रथम पक्षे ८ त्तिन सोमे श्री वृहत् सरतर गच्छे श्रीजिनमद्रसूरि गुरौ विजयमाने श्रीकीर्तिरत्नसूरीणा रिप्राण शिवकुजर मुनिना निज पुण्यार्थं स्वाध्याय पुस्तिका लिखिता चिरम दत्तात् ॥ श्री योगिनीपुरे ॥ श्री ॥

जिनप्रभसूरि परस्परा गुर्वावलीकी मूल प्रति बीकानेर वृहत् ज्ञानमण्डारमें (१५ वीं शताब्दीके पूर्वार्धकी लि०) है ।

- (ई) खरतर-गुरु-गुण-वर्णन-छप्पयकी द्वितीय प्रति, १७ वीं शताब्दी लि० हमारे संग्रहमें है ।
- (उ) पृ० ४३ मे मुद्रित खरतरगच्छ पट्टावलीकी मूलप्रति तत्कालीन लि०, पत्र १ हमारे संग्रहमें है । यह पत्र कहीं कहीं उर्दू भक्षित है, अतः कहीं कहीं पाठ त्रुटकथा, उसे जिनकृपाचन्द्र-सूरि ज्ञानमण्डारस्थ गुटकाकार प्रतिसे पूर्ण किया गया है । हमारे संग्रहका पत्र, सुन्दर और शुद्ध लिखा हुआ है ।
- (ऊ) देवतिलकोपाध्याय चौ०, क्षेमराजगीत, राजसोम, अमृत धर्म क्षमाकल्याण अष्टक-स्तव, जिनरंगसूरि युगप्रधान पद प्राप्ति गीतकी प्रतिये तत्कालीन लि० बीकानेर वृहत् ज्ञानमण्डारमें विद्यमान है ।
- (ए) अकवर प्रतिबोध रासकी प्रति जयचन्द्रजीके मण्डारमें सुरक्षित है ।
- (ऐ) कीर्तिरत्नसूरि गीत नं० २ से ६, कृपाचन्द्रसूरि ज्ञान मण्डारस्थ गुटकाकार प्रतिसे नकल किये गये हैं ।
- (ओ) अन्य प्रेषित प्रतियोंकी नकलें :
- (a) गुणप्रभसूरि प्रबन्ध, जिनचन्द्रसूरि, जिनसमुद्रसूरि गीत (४२३ से ४३२), जैसलमेरके मण्डारसे नकल-कर यतिवर्य लक्ष्मीचन्द्रजीने भेजी है ।
- (b) जिनहंससूरिगीत, समयसुन्दर कृत ३६ रागिणी गर्भित

जिनचन्द्रसूरिगीत, जिनमहेन्द्रसूरि और गणिनी जिव-
चूला विश्वप्रिगीतकी नकल पालीताणेसे उ० सुखसागर
जीन भेजी थी ।

- (c) जिनवल्लभसूरि गुणवर्णनकी नकल रत्नमुनिजी,
जिवचन्द्र सूरिरासकी प्रति लब्धि मुनिजी (यह प्रति
अभी हमार सप्रहमे है), रत्ननिधान कृत जिनचन्द्र-
सूरि गीतकी नकल (पृ० १०२), सूरत भण्डारसे प०
वजर मुनिजीने भेजो है ।
- (d) जिनहर्ष गीतद्वय, पाटणसे साहित्य प्रेमी मुनि यज्ञ-
विजयजीसे प्राप्त हुए हैं ।

(ओ) नीचे लिखी हुई कृतियोंके सम्पादनमे भुद्रित ग्रन्थोकी सहा-
यता ली गयी है ।

- (a) दशविलास तो अध्यात्म ज्ञानप्रसारक मण्डलकी ओर
से प्रकाशित ग्रन्थसे ही सम्पादन किया गया है ।
- (b) पल्ल कृत जिनदत्तसूरि स्तुति, अपभ्रश काव्यप्रयी
और गणधर साद्वैशतक भगवान्तर ग्रन्थ द्वयसे पाठा-
न्तर नाधकर प्रकाशित की गई है ।
- (c) वेगड गुर्वावली आदि (पृ० ३१२ से ३१८) की जैन
ज्वताम्बर कॉन्फरेन्स हेरलडसे नकल की गई है ।
- (d) पिप्पलक सरतर पट्टानली, जै० गु० क० भा० २ और
दशकुल पाठक दोनो ग्रन्थोसे मिलान कर प्रकाशित
की गई है ।

(अं) “श्रीजिनोदयसूरि वीवाहलड” की ४ प्रतिया प्राप्त हुई हैं ।

जिनके समस्त पाठान्तर नीचे लिखे संकेतोंसे लिखे गये हैं ।

(a) प्रति जैन ऐतिहासिक गूर्जर काव्य सञ्चय (पृ० २३३)

(b) प्रति प्राचीन प्रति (सं० १४६३ लि० गिवसुज्जर
स्वाध्याय पुस्तकान्) हमारे संग्रहमें ।

(c) प्रति वीकानेर स्टेड लाइब्रेरी सं० ४६८७ पत्र ३,
प्राचीन प्रति

(d) प्रति ऐतिहासिक राम संग्रह भा० ३ + (पृ० ७६)

(e) प्रति के अन्तमें निम्नोक्त श्लोक लिखा है -

वर्षे वाण मुनि त्रिचन्द्र गणिते, येषां प्रभूणां जति,
पक्षाष्टे प्रमिते व्रतं गुरूपदं पंचैक वेदककं

स्वर्ग श्री चरणं च नेत्र गिवदक् संख्ये वसुधाद्भुतं ।

ते श्री सूरि जिनोदया सुगुरव कुर्वतु मे मङ्गलम् ॥१॥

श्रीजिनोदयसूरि पट्टाभिषेक रासकी २ प्रतिया

(a) प्रति उपरोक्त (सं० १४६३ लि०)

(b) प्रति जैन ऐतिहासिक गूर्जर काव्य सञ्चय (पृ० २२८)

श्रीजिनेश्वरसूरि वीवाहलड की ३ प्रते

(a) प्रति उपरोक्त (सं० १४६३ लि०)

(b) प्रति प्राचीन प्रति (हमारे संग्रहमें)

(c) प्रति जैन ऐतिहासिक गूर्जर काव्य सञ्चय (पृ० २२४)

(अः) इनके अतिरिक्त और सभी काव्योंकी प्रतियां जिनके अन्तमें
अन्य स्थानका उल्लेख नहीं है, वे सब प्रतियां हमारे
संग्रहमें (तत्कालीन लिखित) है ।

चित्र परिचय

- १—ग्रन्थ अनाजक श्री अकरदानजी नाहटा—सम्पादन
पितामह हैं।
- २—सरतरपट्टावली —इसी मद्र-मे पृ० ३६५से ६८मे स० ११७०-
७१ व लि० अतिसे मुद्रित की गई है। इसमे स० ११७१ लि०
अतिक फोटु बडावस उ० सुगममागरजीन भिजवान व उसमे
सरतर विर- प्राप्ति सम्बन्धी ज्ञेसत्राले पत्रका ब्लोक बनना-
कर अस्तुत मद्रहमे दिया गया है। सरतर विर- प्राप्तिन पत्रपर
यह पट्टावली बहुत महत्वपूर्ण प्रकारा डालती है।
- ३-४-जिन बल्मसूरी ओर जिन-तसूरीजीक अस्तुत चित्र, जैसलमर
भडारन प्राचीन ताडपत्रीय अतिन पाष्टफलक पर चित्रित थे,
उसका ब्लोक बनवाकर (अपभ्रंश का यत्रथामे मुद्रित) दिये
गय है।
- ५—जिन-तरसूरीजीका चित्र शमातन जातिनाथ भडारकी ताड-
पत्रीय पर्युभणानल्प (पत्र ८७) की प्रति, जोकि लिपि आदिक
दरसनसे १३ वीं शताब्दी लि० प्रतीत होती है, व आधारसे जैन
चित्र नल्पद्रुम (चित्र न० १०४) मे मुद्रित हुआ है। श्री सारा
भाड नवानन सौजन्यसे हमे इसको प्रकाशित करनकासुअवसर
मिला एतत्तर्थ उनके आभारी हैं। उक्त ग्रथमे इस चित्रका परि-
चय पृ० १४३ मे इस प्रकार दिया है —

“प्रस्तुत चित्रसे बीजा जिनेन्द्रसूरिके जेओ श्री जिनपति सूरिना शिष्य हता, तेओनो होय एम लागे छे । श्रीजिनेन्द्रसूरि सिहासन उपर वेठेलाछे तेओना जमणा हाथ मा मुहपति छे अने डावो हाथ अभय मुद्राए छे । जमणी वाजुनो तेओश्रीनो स्वभो खुलो छे । ऊपरना छतनां भागमा चंद्रबो चावेलो छे सिहासन नी पाछल एक शिष्य उभो छे अने तेओनी मन्मुख एक शिष्य वाचना लेतो वेठो छे । चित्रनी जमणीवाजुए एक अक्त आवक वे हाथनी अंजलि जोड़ीने गुरुमहाराननो उपदेश सामिलतो होय एम लागे छे ।

६ योगविधि पत्र १३ की प्रति (सं० १५११ लि०)के अन्तिम पत्रसे ब्लक बनाया गया है । प्रशरित इस प्रकार हैं. “सु० वत् १५११ वर्ष अषाढ वदी १४ चतुर्दश्या बुधे श्री खरतर गच्छेग श्री श्री जिनभद्र सूरिभिलिखितमिदं ॥१॥ वा० सावुतिलक गणि-
श्यो वाचनाय प्रसादी कृतेयं प्रति ।

७ - जिनचन्द्रसूरि मूर्ति: श्रीकानेरके ऋषभ जिनालयसे युगप्रधान आचार्यश्रीकी सं० १६८६ जिनराजसूरि प्रतिष्ठित मूर्ति है उसीका यह ब्लोक है, लेख नकल देखे युग प्रधान जिन चन्द्रसूरि पृ० १५७५८ ।

८ जिनचंद्रसूरि हस्तलिपि : स्व० वावू पूरणचन्द्रजी नाहरके संग्रह (गुलाब कुमारी लाइब्रेरी) की न. ११८ कर्मरत्नवृत्तिकी प्रतिसे ब्लक बनवाया गया है, पुरिजका लेख इस प्रकार है:

संवत् १६११ वर्षे श्री जेसलमेरु महादुर्गे । राजल श्री

मालदेवे विजयिनि । श्री बृहत्सरतर गच्छे । श्रीजिनमान्धिसूरि
पुरदराणा विनेय सुमतिधीरण लेरि स्ववाचनाय ॥ त्रावण सुदि
त्रयोदरया । शनिवार ॥ श्रीस्तात् ॥ ॥ कल्याणमोभोतु ॥ छ० ॥

६—जिनराज मूरि-जिनराजसूरि—यतिवर्य्य श्री मूर्यमलजीने
सग्रह (कल + तो)मे शालिभद्र चौपई पत्र २४ की सचित्र त्रितये
अन्तिम पत्रमे यह चित्र है । लिपिलेखक की प्रशस्ति इस प्रकार है—

स० १८५२ मि० फाल्गुण कृष्ण १० रविवार श्री बृहत्सर-
तर गच्छे उपाध्यायजी श्री विद्याधीरजी गणि शिष्य मुरा वा०
मति कुमार ग० । गिष्य लि । प० किस्तूरचन्द मु ।

प्रति यद्यपि समकालीन नहीं है तोभो इसकी मूल आधार
भूत त्रितिका समकालीन होना विशेष संभव है ।

१०--जिनहर्ष हस्तलिपि—पाटण भडारमे कविवर्य रचित एव
स्वय लि० स्तवनादिको पत्र ८० की प्रतिक फोटु मुनिवय पुण्य
विजयजीने भेजे थे उमीसे ब्लाक बनवाकर मुद्रित की गई है ।
मुनिजीने हमे उक्त त्रितिकी नकल करा भेजनेकी भी कृपा की है ।

११--ज्ञानसार हस्तलिपि—हमारे संग्रहक एक पत्रना ब्लाक बन-
वाकर दिया गया है ।

सरतर गच्छक आचार्यो एव विद्वानोश्च और भी बहुत
चित्र उपलब्ध हैं, जिन्हें हो सका तो सरतरगच्छ इतिहासमे
प्रकट करनेकी इच्छा है ।

* आचार्य पद प्रासिक पूष मुनि अवस्थाका नाम । दखे यु० जिन
चद्रसूरि पृ० २३ ।

ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह

रास सार सूची ।



नाम	पृष्ठ	नाम	पृष्ठ
सरतगच्छ गुवावलिये	१	जिनराज सूरि	१८
षट्मान सूरि	३	जिनभद्र सूरि	१८
जिनेश्वर सूरि	३	जिनचन्द्र सूरि	१८
अमयदेव सूरि	४	जिनसमुद्र सूरि	१८
जिनप्रथम सूरि	४	गुरुगुणपटपद	१९
जिनदत्त सूरि	४	जिनहंस सूरि	२०
जिनचन्द्र सूरि	८	जिनभाणिक्य सूरि	२१
जिनपति सूरि	९	यु० जिनचन्द्र सूरि	२१
जिनधर सूरि	१०	जिनपिह सूरि	२१
जिनप्रवाध सूरि	११	जिनराज सूरि	२२
जिनचन्द्र सूरि	११	जिनरत्न सूरि	२७
जिनकुण्डल सूरि	१२	जिनचन्द्र सूरि	२९
जिनपद्म सूरि	१४	जिनलक्ष्मि सूरि	३०
जिनचन्द्र सूरि	१५	जिनभक्ति सूरि	३१
जिनोदय सूरि	१५	जिनलाभ सूरि	३१

नाम	पृष्ठ	नाम	पृष्ठ
जिनचन्द्र सूरि	३३	चन्द्र कीर्ति	६१
जिनदर्प सूरि	३४	कविप्रबन्ध जिनदर्प	६१
जिनसौभाग्य सूरि	३४	कवि अमरप्रियात्र	६३
मंडलाचार्य व मुनिमण्डल		सुगुण वंशावली	६४
भावप्रभ सूरि	३६	श्रीमद् द्रेवचन्द्रजी	६४
कीर्तिरत्न सूरि	३६	मठो० राजमोमा	६३
उ० जयसागर	४०	वा० अमृतार्भ	६३
क्षेमराजोपाध्याय	४१	उ० क्षमाकल्याण	६४
देवतिलकोपाध्याय	४३	जयमागिन्य	६६
दयातिलक	४४	श्रीमद् ज्ञानमारजी	६६
मठो० पुण्यसागर	४४	स्वरतरंगच्छ आर्यामण्डल	
उ० साधुकीर्ति	४४	लावन्यसिद्धि	६६
मठो० समयछन्दर	४६	सोमसिद्धि	६६
यशकुशल	४७	विमलसिद्धि	६७
करमसी	४७	गुणगीत	६८
सुखनिधान	४८	जिनप्रभ सूरि परम्परा	
वा० पद्महेम	४८	जिनप्रभ सूरि	६८
लब्धिकलोल	४९	जिनद्रेवसूरि	७०
विमलकीर्ति	४९	वेगड़ स्वरतर शाखा	
वा० सुखसागर	६०	जिनेश्वर सूरि	७१
वा० हीरकीर्ति	६०	गुणप्रभसूरि	७२
उ० भावप्रभोद	६१	जिनचन्द्र सरि	७४

III

नाम	पृष्ठ	नाम	पृष्ठ
जिनसमुद्र सूरि	७५	जिनचंद्र सूरि	९०
पिप्पलक शाखा	७५	जिनचंद्र सूरि	९०
जिनशिष्यचंद्र सूरि	७६	रगाविजय शाखा	
आशुपत्रीय शाखा		नितरग सूरि	९१
नितहर्ष सूरि	८१	मंडोवरा शाखा	
भावहर्षीय शाखा		जिनमहेन्द्र सूरि	९२
भावहर्ष	८२	तपामाचारीय काव्यसार	
जिनसागर सूरि शाखा		शिवचूला गणिनी	९३
जिनसागर सूरि	८३	विजयसिंह सूरि	९३
जिनधम सूरि	९०	संक्षिप्त कविपरिचय	१०१

—

चित्र सूची ।

	पृ०		पृ०
शंकरदानजी नादटा	१	जिनचन्द्र सूरि	२०
खरतराञ्छ पट्टावलि	३	जिनचन्द्र सूरि-दस्तलिपि	२१
जिनबल्लभ सूरि	४	} जिनराज सूरि	२२
जिनदत्त सूरि	५		
जिनेश्वर सूरि	१०	उ० क्षमाकल्याण	६४
जिनभद्र सूरि-दस्तलिपि	१८	ज्ञानसार-दस्तलिपि	६५

चित्र-सूचीमें परिवर्तन

चित्रोंको प्रथम रास सारमें देनेका विचार था, पर फिर मूलमें दना उचित समझ वैसा किया गया है, तथा चित्रोंकी सख्या पूव १२ थी पर फिर कई अन्य आवश्यक चित्र प्राप्त हो जानेसे ६ ओर बढा दिये गये हैं । कुल १८ चित्रोंकी सूची इस प्रकार है —

१	राङ्गरदानजी नाइटा—समपण पत्रके सामने	
२	परतरगच्छ पद्मावली—रास सारके प्रारम्भमें	
३	श्री जिनदत्तसूरि	मूल पृ० १
४	जिनभद्रसूरि हस्तलिपि	३६
५	जिनचंद्रसूरि और सम्राट अकबर	५८
६	जिनचन्द्रसूरिजीकी हस्तलिपि	५९
७	जिनचंद्रसूरि मूर्ति	७९
८	जिनराजसूरि जिनरगसूरि	१५०
९	जिनधुपसूरि	२४९
१०	जिनभक्तिमूरि	२५२
११	कविवर जिनहप हस्तलिपि	२६१
१२	जि लामसूरि	२९३
१३	जिनहपसूरि	३००
१४	धर्माकल्याण	३०८
१५	जिनधुमसूरि	३६९
१६	जिनेवरसूरि	३७७
१७	नानसारजी हस्तलिपि	४३२
१८	नानसारजी और वा० जयकीर्ति	४३३

छ चित्रोंके बढ जानेसे मूल्यमें भी १। के स्थानमें १।। करना पडा पुस्तकके अन्तमें भी दो नीचे लिखी बातें ओर जोड दी गई है —

- १ सम्पादकोंकी साहित्य प्रगति पृष्ठ ४९९
- २ अभयजैन ग्रन्थमालाकी प्रकाशित पुस्तकें ५०३

मूल काव्य-अनुक्रमणिका ।

- 11 -

	गाथा	कता	पृष्ठ
१ श्री गुरुगुणपदपद	८	x	१
२ श्री जिणदत्त सूरि स्तुति	९	x	४
३ श्री जिनचंद्र सूरि अष्टकम्	९	पुण्यसागर	५
४ श्री जिनपति सूरि धवल गीतम्	२०	शाह रयण	६
५ श्रीमज्जिनपति छरीणा गीतम्	२०	कवि भत्तड	९
६ श्री चिनपति सूरि स्तूपकलश	४	x	१०
७ श्री जिनप्रभ सूरि (परम्परा)			
गीतम्	६	x	११
८ श्री जिनप्रभ सूरि गीतम्	६	x	१२
९ श्री जिनप्रभ सूरिणा गीतम्	१०	x	१३
१० श्री जिनदेव सूरिगीतम्	८	x	१४
११ जिनकुशल सरि पट्टाभिषेकरास	३८	धमकलश	१५
१२ जिनपद्म सूरि पट्टाभिषेकरास	२९	सारभूति	२०
१३ परतरगुरु गुणवर्णन छप्पय	३२ १६	अभयतिक यती	२४
१४ जिनोदय सूरि गुणवर्णन	६	पद्मराज	३९
१५ जिनप्रभ सूरि परम्परा गुवा-			
घली, छप्पय	१४ १		४१

VI

	गाथा	कर्त्ता		पृ०
१६ खरतरगच्छ पट्टावली	३०		सोमकुंजर	४३
१७ श्री भावप्रभ सूरि गीतम्	१५	x		४९
१८ श्री कोर्त्तिरत्न सूरि चौपड्	१८		कल्याणचन्द्र	५१
१९ जिनहससूरि गुरुगीतम्	१८		भक्तिलाभ	५३
२० श्री देवतिलकोपाध्याय चौपड्	१५		पद्ममंदिर	५५
२१ महो० श्री पुण्यसागर गुरुगीतम्	६		द्वर्षकुल	५७
२२ श्री जिनचन्द्र सूरि अकबर प्रति- बोध रास	१३६		लब्धिवकलोल रचना सं० १६५८ जे० व० १३ अह- मदावाद	५८
२३ श्री युगप्रधान निर्वाण रास	६९		समयप्रमोद	७९
२४ युगप्रधान आलजागीतम्	१०		समयसुन्दर	८७
२५ श्री जिनचन्द्र सूरि गीतानि	नं० १ ११		कनकसोम सं० १६२८ लि० स्वयं	८९
२६ " " "	२ ५		श्री सुन्दर	९०
२७ " " "	३ ४		साधुकीर्त्ति	९१
२८ " " "	४ ५		गुणविनय	९२
२९ " " "	५ ११		श्री सुन्दर	९३
३० " " "	६ ३		सुमतिकलोल	९४
३१ " " "	७ ५		समयप्रमोद सं० १६४९ चैत्र ९	९४
३२ " " "	८ १५		पद्मभराज	९७
(पंचनदी साधन)				
३३ श्री जिनचन्द्र सूरि गीत नं० ९	३		साधुकीर्त्ति	९७

VII

	गाथा	कर्ता		पृष्ठ
३४	श्रीजिनच दसूरि गीत नं० १०	९	७डिप्रशेखर	९८
३५	” ” ” ११	८	गुणविनय	९८
३६	” ” ” १२	४	” स्वयं लि०	९९
३७	” ” ” १३	८	कल्याणकमल	१००
३८	” ” ” १४ १३॥		अपूर्ण	१०१
३९	जिनचन्द सूरि गीतानि न० १५	१७	रत्ननिधान	१०२
४०	” ” ” ” १६	१५	समनउन्दर	१०४
(६ राग ३६ रागिणी गीतम्)				
४१	श्रीजिनच दसूरिगीतानि न० १७	३	”	१०७
४२	” ” ” ” १८	३	”	११७
४३	” ” ” ” १९	३	”	१०७
४४	” ” ” ” २०	४	”	१०८
४५	” ” (मालजा) ” २१	१०	”	१०८
४६	श्रीपूज्य धादण गीतम् नं० २२	६७	कुशललाभ	११०
४७	श्री जिनचन्द सूरि गीत न० २२	४	जयसोम	११८
४८	” ” ” ” न० २४	९		११८
४९	विधि स्थानक चोपह नं० २५	१७		११९
५०	श्रीजिनच दसूरि गीतम् न० २६	३	लब्धि मुनि	१२१
५१	” ” ” ” न० २७	४	”	१२१
५२	” ” ” ” न० २८	३	”	१२२
५३	” ” ” ” न० २९	२	लब्धि कलकौल	१२२
५४	” ” ” ” न० ३०	३	रत्ननिधान	१२३

IX

	गाथा	कृता	पृष्ठ
७७ धीममय उन्दरोपाध्यायगोतम् १	७	हृष नन्दन	१४६
७८ " " " २	७	द्वीदास	१४७
७९ " " " ३	१२	राजसोम	१४८
८० श्री यशकुनाळ गीतम्	५	सुखरतन	१४९
८१ श्री जिनराज सूरि रास	२५४	श्रीसार	१५०
८२ " " " गीतम् (१)	८	गुण विनय	१७२
८३ " " " सवैया (२)	४		१७३
८४ " " " गीतम् (३)	९	सहजकीर्ति	१७४
८५ " " " " (४)	९	"	१७५
८६ " " " " (५)	७	आनन्द	१७६
८७ " " " " (६)	६	सुमति विजय	१७७
८८ श्रीजिनसागर सूरि रास	१०२	वसकोर्ति	१७८
८९ " " " सवैया	५		१८९
९० " " " निर्या रास	८	सुमति बलुभ	१९१
		टाल गाथा	
९१ " " " अष्टकम् (१)	८	समयसु दस	१९९
९२ " " " अवदात	५	हर्षन दन	२०१
		गीत (२)	
९३ " " " गीत (३)	५	"	२०१
९४ " " " गीत (४)	५	"	२०२
९५ " " " गीत (५)	६	"	२०३
९६ श्री करमसी सथागा गीतम्	६	सोम मुनि (१)	२०४

	गाथा	कर्ता	पृ. ५
९७ लब्धिकलोल उग्रु गीतम्	१२	ललित कीर्ति	२०६
९८ उग्रु वंशावली	२	कुसुमवीर	२०७
९९ श्रीविमल कीर्ति गुरु गीतम् (१)	८	विमलरत्न	२०८
१०० " " " (२)	६	आनन्द विजय	२०९
१०१ लावण्यसिद्धि पदुत्तणो गीतम्	१८	शेभमिद्धि	२१०
१०२ लोमसिद्धि साधवीनिर्वाणगीतम्	१८	"	२१२
१०३ गुरुणी गीतम्	७	विद्यासिद्धी	२१४
१०४ श्री गुर्वावली फारा	१६	खेमहंम	२१८
१०५ " (२)	२१	चारित्र मिह	२१८
१०६ " (३)	४	नयरंग	२२६
१०७ खरतर गुरु पट्टावली (४)	८	समयसुन्दर	२२७
१०८ खरतर गच्छ गुर्वावली (५)	३१	गुणविनय	२२८
१०९ श्रीजिनरंग सूरि गीतम् (१)	७	राजहंस	२३१
११० " " (२)	५	ज्ञानकुशल	२३२
१११ " " युगप्रधान गीतम् (३)	१२	कमल रत्न	२३२
११२ श्री जिनरत्न सूरि निर्वाणरास	२५	कमल हर्ष	२३४
११३ श्रीजिनरत्नसूरि गीतानि (१)	७	रूपहर्ष	२४१
११४ " " " (२)	७	क्षेमहर्ष	२४१
११५ " " " (३)	९	"	२४२
११६ " " " (४)	७	कनक सिंह	२४३
११७ " " निर्वाण (५)	९	विमलरत्न	२४४

	गाथा	कता	पृष्ठ
११८ श्रीजिनचंद्रसूरिगीतानि (१)	७	विजाविलास	२४०
११९ " " " (२)	९	द्वर्षचंद्र	२४५
१२० " " " (३)	७	धरमसो	२४६
१२१ " " " (४)	५	कराणहप	२४७
१२२ " " पचनदीमा (५)	१		२४८
१२३ वाचक अमरविषय कवित्त	१		२४८
१२४ श्रीजिनसुखसूरिगीतम् (१)	९	सुमतिविमल	२४९
१२५ " " " (२)	७	धरमसो	२५०
१२६ " " निर्वाण (३)	९	वैलजी	२५१
१२७ श्रीजिनभक्तिसूरिगीतम्	६	धरमसो	२५२
१२८ धाचनाचायसुगमागरगीतम्	९	सनयहप	२५३
१२९ वा० हीरकीर्तिपरम्परा	२	राजराज	२५५
१३० " स्वगगमनगीतम्	१७	"	२५६
१३१ उ० भावप्रमोद , ,	१२		२५८
१३२ जैनपतिगुणघणन	१	सेतसो	२६०
१३३ कविवरजिनहपगीतम्	२	कवियण	२६१
१३४ देवविलास		"	२६४
१३५ श्रीजिनलामसूरिगीतानि (१)	११	सुनिमाणक	२९३
१३६ " " (२)	८	देवचन्द्र	२९४
१३७ " " (३)	१०	वसतो	२९५
१३८ " " निर्वाण (४)	८	क्षमाकल्याण	२९६

XII

	भाथा	कर्त्ता	पृष्ठ
१३९ जिनलामसूरि पट्टे० जिनचन्द्र सूरि गीत (१)	९	चारित्रनन्दन १८५० वै० घ० ८	२९७
१४० " " (२)	१६	कनकधर्म	२९८
१४१ जिनद्वर्ष सूरि गीतम्	११	महिमा हंस	३००
१४२ श्रीजिन सौभाग्य सूरि भास	१७		३०१
१४३ श्रीजिनमहेन्द्र सूरि भास (१)	१३	राजकरण	३०२
१४४ " " (२)	११	राज	३०३
१४५ महोपाध्याय राजसोमाष्टकम्	९	क्षमाकल्याण	३०५
१४६ वाचनाचार्य अमृतधर्माष्टकम्	८	"	३०७
१४७ उपाध्याय क्षमाकल्याणाष्टकम्	९		३०८
१४८ " " निर्वागस्तवः	६		३०९
१४९ " जयमाणिक्यजीरोछन्द	९	सेवागसरूपचन्द्र	३१०
१५० जैन न्यायग्रन्थ पठन सम्बन्धी सर्वैया	१		३११

ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह (द्वितीय विभाग)

	गाथा	कता	पृष्ठ
१५१ षण्ड खरवग्यञ्ज गुणावली	७		१२
१५२ श्री निनरव्य सूरि गीतम्	२०		३१४
१५३ श्री निनच द्व सूरि गीतम्	७	श्री जिन समुद्र सूरि	३१६
१५४ श्री जिनममुद्र सूरि गीतम्	८	माङ्गलम्	३१७
१५५ पिप्पलक खरवग्य पदावली	१९	राजधे वर	३१९
१५६ श्री निन शिष्य द्व सूरि रास		शाहलाया (१७९५)	३२१
१५७ आद्यपक्षीय जिनचन्द्र पट्टे जिन हय सूरि गीत	६	कीरतिवद्धन	३३३
१५८ श्री जिनसागर सूरि गीतम्	८	जयकारति	३३४
१५९ श्री जिनधम सूरि गीतम् (१)	९	ज्ञानदर्प	३३५
१६० " " (२)	७	"	३३६
१६१ " पट्टे जिनच द्व सूरिगीतम्	७	पुण्य	३३७
१६२ जिनयुक्ति सूरि पट्टे " "		भालम	३३७

ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह (तृतीय विभाग)

१६३ शिवचूलागिनी विनसि	२०	राजलच्छि	३३९
१६४ विनयमिह सूरि विजय	२१३	गुणध्वज	३४१

ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह (चतुर्थ विभाग)

	गाथा	कर्ता	पृ०
१६५ श्री जिनदत्त सूरि स्तुतिः	१०	कविप० (११७०लि०)	
		ताड़पत्रीय	३६५
१६६ श्री जिनबल्लभ सूरि गुणवर्णन	३५	नेमिचन्द्र भांडारी	३६९
१६७ श्री जिनदत्त सूरि अवदात छप्पय (अपूर्ण)	२१-३४	ज्ञानद्वर्ष	३७३
१६८ श्री जिनेश्वर सूरि संयम श्री विवाह वर्णन रास	३३	सोमसूर्ति	३७७
१६९ श्री जिनोदय सूरि पट्टाभिषेक रास	३७	ज्ञानकलस	३८४
१७० ,, विवाहलड	४४	मेहनन्दन	३९०
१७१ श्रीजयसागरोपाध्याय प्रशस्ति	४		४००
१७२ श्री कीर्तिरत्नसूरि फागु (त्रुटक	२८।३६		४०१
१७३ ,, गीतम् (२)	१४	साधुकीर्ति	४०३
१७४ ,, ,, (३)	९	ललितकीर्ति	४०४
१७५ ,, ,, (४)	१२	चन्द्रकीर्ति	४०५
१७६ ,, उत्पत्तिछंद (५)		सुमतिरंग	४०७
१७७ ,, ,, (६)	७	जयकीर्ति	४११
१७८ ,, ,, (७)	१२	,,	४११
१७९ ,, ,, (८)	१५	अभयविलास	४१२
१८० ,, ,, (९)	१		४१३
१८१ श्रीजिनलामसूरि विहारानुक्रम	३४		४१४

XV

	गाथा	कत्ता	पृष्ठ
१८२ श्रीजिनराज सूरि गीतम्	९	हृषबल्लभ	४१७
१८३ जिनरत्न सूरि गीतम्	११	जिनचन्द सरि	४१८
१८४ दयाविलक गुर गीतम्	७		४१९
१८५ बा० पद्मेम गीतम्	१३	सेधकमुन्दर	४२०
१८६ च द्रकीर्त्ति कवित्त	२	समतिरग	४२१
१८७ विमलसिद्धि गुर गीतम्	११	विमलसिद्धि	४२२
१८८ श्री गु । प्रम सूरि प्रबन्ध	६१	जिनरवर सूरि	४२३
१८९ जिनचन्द सूरि गीतम्	७	महिमसमुद्र	४३०
१९० " " न० २	१३	"	४३१
१९१ जिनसमुद्र सूरि गीतम्	३	महिमाहप	४३२
१९२ ज्ञानसार अथदात दोहा	९		४३३

परिशिष्ट

१९३ कठिन शब्दकोष	१		४३५
१९४ विशेष नामोंकी सूची			४६१
१९५ शुद्धाशुद्धि पत्रक			४९०

सिंहगिरि	२३	मानतुंग	नार्गाजुन	३०	रविप्रभ
वयर स्वामी	२४	वीर मृगि	गोविन्दवानक	३४	यशोभद्र
आर्य रक्षित	२५	जयदेव मृगि	संगृनिदिन्न	३५	जिनभद्र
दुर्बलिकापुत्र	२६	देवानन्द	लोकहित	३६	हरिभद्र
आर्य नदि	२७	विक्रममृगि	दृष्यगणि	३७	देवचन्द्र
नाराहस्ति	२८	नरसिंहमृगि	उमास्वति	३८	नेमिचंद्र
रेवंत	२९	समुद्र मृगि	जिनभद्र	३९	ज्योतन
ब्रह्मदीपी	३०	मानदेव	हरिभद्र		
संडिल	३१	विद्युधप्रभ	देवाचार्य		
हेमवंत	३२	जयानन्द	नेमिचन्द्र		
			ज्योतन -		

* यहाँतकका क्रम भिन्न २ पद्यावलिओंमें भिन्न भिन्न प्रकारसे पाया जाता है। पर इसके पदचातुर्य क्रम सभी खरतर गच्छकी पद्यावलिओंमें एक समान है। नं० ९ की पद्यावलीका (संशोधित) क्रम वज्रसेन तरुका नंदिसूत्र स्थिरावली आदि प्राचीन प्रमाणोंसे प्रमाणित है, पीछेके क्रमको ऐतिहासिक दृष्टिसे परीक्षा करना परमावश्यक है पुगत वविद् विद्वानोंका हम इस ओर ध्यान आकर्षित करते हैं।

x यहाँ तकके आचार्योंका गुर्वावलिओंमें नाममात्र ही उल्लेख है। ऐतिहासिक परिचय नहीं। फिर भी इनके नामोंके साथ जो ऐ० विशेषण दिये गये हैं, वे ये हैं—जम्बूः--९९ कोटिद्रव्य त्याग, सयम ग्रहण। स्थूलिभद्रः--क्रोश्या प्रतिबोधक, महागिरी -- जिन कल्प तुलना कारक, सुहस्ति--संप्रति नृपके गुरु, श्याभाचार्यः--पन्नवणा कर्ता, वज्रसेन --१६वर्षायु व्रत ग्रहण, वृद्धदेवः--कुमदचन्द्र विजेता, मानदेवः--शान्ति स्तव कर्ता, मानतुंगः--भक्तामर, भयहर स्त्रोत्रकर्ता, वयर स्वामीः १०पूर्वधर, उमास्वति --९०० प्रकरणकर्ता।

वर्द्धमान सूरि

(पृ० ४४)

उपरोक्त ज्योतन सूरिजी का आप सुरा जिन्य थे। आपन आवू गिरिपरठ महीननकतपन्था करव सूरिमन्त्रकी साधना (शुद्धि) की, पातालनामी धरणन्दव प्रगट हुआ, जसव सूचनानुमार वहाँ आदि-जिनकी वस्त्रमय प्रतिमा प्रगट हुई। इन्ने मत्री नर निमल दण्ड नायक भी अति नर आनन्द हुआ और गुरुश्रीन जपनसे ज्जोन वहा नदीधर प्रभाकर समान, चिरन्मरणीय यश पुञ्ज स्वरूप 'निमल वसही' बनाई। पूज्य श्रीन अतिजय प्रभाजसे मित्रात्मी योगी आदि हतभ्राज हुए और जैन नामनका जयनाम फौज, आपका प्रिय परिचय गणधर साईजगतक वृहद् वृत्ति, पट्टावलियों और युगप्रधान जिनचन्द्र मरि (पृ० ६) में दर्शना चाहिये।

जिनेश्वर सूरि

(पृ० ४४)

श्री वर्द्धमान सूरिजी का आप सुजिन थे। आपन गुजरातन अगाहिलपाटणन भूपति दुर्लभराजन मभाम ८४ मठपति (चैत्यवासी) आचायाको, जो कि मन्दिरोम रहा करत थे, परास्त कर चैत्यनामका उत्थापन और प्रमतिवास-सुविहित मुनिमार्ग का स्थापन किया था। नृपति दुर्लभराज आपन गुणोसे प्रमन्न होकर कदन लगे कि — इम कलिनलमे कठिन आर सर चारित्रधारक मानु आप ही हैं। नृपतिन वचनानुमार तभीसे सरतर निरुद्धनी अभिष्टि हुई।

त्रिनेप चरित्र नाममी ओर ग्रन्थ निर्माणकी सूचि दसे — युग प्रधान जिनचन्द्र मरि पृ० १०

अभय देवसूरि

(पृष्ठ ४२)

आप श्री जिनेश्वर सूरिजीके शिष्य थे । आपने ६ अंग-सूत्रों पर वृत्ति बनाई और जयतिहूअण सूत्रोंकी रचना कर स्तंभन-पार्वनाथजीकी प्रतिमा प्रकट की । श्रीमंथर स्वामीने आपके गुणोंकी प्रशंसा की और धरणेन्द्र, पद्मावती आपकी सेवा करते थे । विशेष देखे: यु० जिनचंद्रसूरि पृ० १२

जिनवल्लभसूरि

पृ० १,४६

आप अभयदेवसूरिजीके पदुधर थे । पिन्डविश्रांठ प्रकरणकी आपने रचना की थी एवं वागड देशमे धर्म प्रचार कर १० हजार (नये) जैनश्रावक बनाये थे । चित्तौडमे चमुंडा देवीको आपने प्रतिबोध दिया था । सं० ११६७ के आपाठ शुक्ला पण्टीको चित्तौडके महावीर चैत्यमे आपको देवभद्र सूरिजीने आचार्य पद प्रदान कर श्रीजिन अभयदेव सूरिके पदपर स्थापित किया ।

विशेष चरित्रके लिये गण० शा० वृत्ति और कृतियोंके लिये युगप्रवान जिनचन्द्र सूरि पृष्ठ १२ देखना चाहिये ।

जिनदत्त सूरि

(पृ० १४, ४६, ३७३)

वाछिग मन्त्री (धुन्धुका वास्तव्य) की धर्मपत्नी बाहड़ देवीकी कुक्षीसे सं० ११३२ मे आपका जन्म हुआ । सं० ११४१ मे दीक्षा ग्रहण की । सं० ११६६ वै० कृ० ६ चित्तौडके वीर जिनालयमें

जिनवदमे सूरिजीन पन्पर दवभ्राचार्यन (पद) स्थापना की । उज्जयन्त पर अभिका दवीन अउड (नाग दन) रावनन आरावन करनपर उसन हावमे स्वणा नर लिख दिये और कहा कि जो इन्हे पढ सकेंगे उन्को युगप्रधान जानना । अउड सूरन पूमा, पर उन अररोको कोड भी आचार्य न पढ सक । आरिख पाठगमे जिनदत्त सूरिजीन अघडन हावपर वामनेपका प्रयेपन कर उन अररोको निव्य द्वारा पढ सुनाये, तभीसे आप युगप्रधान निदसे नसिद्ध हुण ।

आपन चौसठ योगिनी और चावन वीरा (क्षेत्रपाल) को जीता था और भूत-प्रेत आदि तो आपन नामस्मरण मात्रसे पास नहीं आ सकन सूरि मन्त्रने प्रभावसे धरणेश्वरको साधन किया था और एक लाख श्रावक श्राविकाओको प्रतिशोध दिया ग । विनमपुरमे सर्व मधको मारि रोग निवारण कर अभय दान दिया और ऋषभ जिनालयकी प्रतिष्ठा की । त्रिभुवन गिरिने नृपति कुमारपालको प्रतिशोध दिया । ५०० व्यक्तियोंको जैनमुनियोंको दीयादी । उज्जैनीमे योगिनी (६४) चक्रको ध्यानरत्नसे प्रतिशोधा । आज भी आपने चमत्कार प्रत्यक्ष है आर स्मरण मात्रस मन-नाच्छित फल नान करत हैं । साभर (अजमेर) नरग (अर्णाराज) को जैन-धर्मका प्रतिशोध दिया था । आपन हस्त दीम्बित साधुओंकी सर ग १५०० गी (प्र ४६) । इस प्रकार आप-अपने महान व्यक्तित्वसे यशस्वी जीवन द्वारा चिरस्मीरणीय होकर स १२११ क आगठ गुज्जल ११ को अजमेर नगरमे स्वग सिधारे ।

पृ०३७३ में ३७६में प्रकाशित अद्वैत छापखानेके अपूर्ण (आदि अंत त्रु०) होनेके कारण वर्णित विषयका सफाईकरण नहीं हो सकता। अतः अन्य साधनोंके आधारमें उक्त विषयमें जो कुछ जाना गया है, उसका अति संक्षिप्त स्वरूप यहाँ दिया जाता है।

कन्नौजमें सीहोजी+ नामक भूपति राजा राज्य करते थे। एक बार उन्होंने यात्रार्थ द्वारिका जानेका विचार कर राज्यभार अपने छोटे भाईको देकर कुंअर आश्रयान (जो कि उनके यदुवंगी राणीके पुत्र थे) एवं ५०० सैनिकोंके साथ प्रस्थान किया। मिताजी जब मारवाड पधारे तो राणीने एक स्वप्न देखा। X X X

इधर मारवाड प्रान्तके पाली नगरमें ब्राह्मण यजोधर राज्य करते थे। उस समय खेड नगरके गुहलवंगी राजा महेशने पालीपर चढाई कर दी, इसमें भयभ्रान्त हो यजोधर नगर रक्षणका उपाय सोचने लगे कि किसी सिद्ध पुरुषकी शरण ली जाय। परामर्श करनेपर ज्ञात हुआ कि खरतर गच्छ नायक श्री जिनदत्त सूरिजीका यही चतुर्मास है और वे बड़े ही चमत्कारी हैं। उनके मुख्य कार्य कलाप ये है।

Xछप्पियोंकी पूर्ण प्रति किसी सज्जनको कहीं प्राप्त हो तो उसे भेजनेकी कृपा करे। छप्पियोंकी आदि अन्तकी संख्या, सम्बन्ध व प्रतिके पत्रसंख्याके हिसाबसे यह वर्णन बहुत बड़ा होना सम्भव है।

+ आधुनिक इतिहासकारोंके मतसे सीहोजीका जन्म सं० १२०६ कन्नौजसे आना १२६८ और स्वर्ग सं० १३३० है। अतः जिनदत्तसूरिका उनके साथ सम्बन्ध होना कदांतक ठीक है, नहीं कहा जा सकता।

- १ —मुल्तानमे पाच नदीन पाचो पीर आपन सेवक बने । भाणिभद्र यत्र एत्र वाचन गीर भी आपकी सेवामे हाजिर रहा करते थे ।
- २ —मुल्तानमे अजोत्सव समय (भीडम कुचलकर) भूगलपुत्र मर गया था , उसे आपन पुन जीवित कर सकने आश्चर्यान्वित कर लिया ।
- ३ —चोमठ योगनियोज स्त्री रूप धारण कर व्याख्यानमे जलनेको आने पर उन्हे मन्त्रित पाटो पर बैठाकर, कीलित कर दिया । आखिर वे गुरुजीसे प्रार्थना कर मुक्त हो, जाते समय ७ वरदान दे गइ जो इस प्रकार हैं —

- (१) प्रत्येक ग्राम और नगरमे एक श्रावक रुद्धिवत होगा ।
- (२) आपन नाम लेनेवाचेपर त्रिजली नहीं गिरगी ।
- (३) सिन्धु दंगमे आपन श्रावकोको विशेष लाभ होगा ।
- (४) आपन नाम स्मरणसे भूत-प्रेत एवं चौरादिका भय, ज्वरादि रोग दूर होगा । एत्र जाकिनी नहीं उल मन्गी ।
- (५) अरतर आपन प्राय निर्जन न होगा और कुमरणसे नहीं मरगा ।
- (६) आपन स्मरणमे जलसे पार उत्तर जायगा, पानीमे नहीं टूवगा ।
- (७) बालब्रह्मचारिणी साधुकी शत्रुधम नहीं आयगा ।

४ : उज्जैनीके रत्नमंभमेमे ध्यानत्रयमे विद्यामन्त्रकी पुस्तक प्रकण की, उममेमे स्वर्गभिक्षा आदि विद्याये प्रकण कर निचौटके मंडारमे स्थापित की। उम पुस्तकको हेमचन्द्राचार्यके कथनमे कुमारपाल नृपतिने संगठि, पर उमे खोलनेका (ग्रन्थके ऊपर) निषेध लिखा हुआ होनेपर भी हेमचन्द्राचार्यकी वदितिनन्माय्याके पुस्तकके बन्डलको खोलनेपर वे नेत्रहीन हो गयी और पुस्तक उड़कर जेसलमेरके भण्डारमे जा गिरी। वहा चोमठ योगनिया उनकी रक्षा करती हैं।

५ : प्रतिक्रमणके समय पडती हुई विजलीको गोक दी।

६ : विक्रमपुरमे मृगीके उपद्रव होनेपर 'तंजयउ' स्त्रोत्र रचकर शान्ति की। वहा महेश्वरी, डागा, लुणिया आदि १५०० आवाकोंको प्रतिबोध दिया।

इस प्रकार गुरुजीकी प्रशंसा सुनकर उनमे यगोधरने राज्य रक्षण की प्रार्थना की। गुरुजीने उपरोक्त मिहोजीको वहाका राज्य दिलवाकर उम राज्यकी रक्षा की, तभीसे राठोड, खरतर आचार्योंको अपना गुरु मानने लगे।

जिनचन्द्र सूरि

(पृ० ५)

सं० ११६७ भाद्र शुक्ला ८ को रासलकी पत्नी देहलणादेकी कुक्षिसे आप जन्मे थे। सं० १२०३ फाल्गुन शुक्ला ६ को ६ वर्षकी लघुवयमें ही जिनदत्त सूरिके समीप दीक्षा ग्रहण की। सं० १२०५ वैशाख शुक्ला पष्ठीको विक्रमपुरमे श्री जिनदत्त सूरजीने अपने पट्टे-

पर स्थापित किया था। कहा जाता है कि आपका भाल्म्वलपर मणि
थी। अतः नरमणिमण्डित (भाल्म्वल) नाम (सत्ता) से आपकी
सम्बन्ध प्रसिद्धि है।

स० १७७३ भाद्र कृष्ण चतुर्दशी को गिरीम आपका स्वर्गनाम
हुआ।

जिनपति सरि

(पृ० ६ स १०)

भाल्म्वल विनमपुर निवासी माला च गोवर्द्धनकी भाया सुत्व-
देवी पुत्रिमे स० १७१० चैत्र कृष्ण अष्टमी को जिन आपका जन्म
हुआ था। आपका जन्मनाम शुभ नाम 'नरपति' रखा गया। स०
१७१८ फाल्गुन कृष्ण १० को जिनचन्द्र मृगिजीव पास भीम-
पत्नीमें आपका दीक्षा ग्रहण कर सब सिद्धान्तों का अध्ययन किया।

स० १७७३ फाल्गुन शुक्र १३ चन्वरकपुरमें जयवाचानन
श्री जिनचन्द्र मृगिजीव पर स्थापन कर आपका नाम जिनपति सरि
रखा, इस पर पन्था। आपका अपनी अद्वितीय मधा व प्रतिभास ३६
वालोंमें अन्तिम हिन्दू सम्राट् पृथ्वीराज एवं जयसिंह आदि राज्या-
समाम विजय प्राप्त की। वाणी रूपी हस्तियोक विदीणार्थ आप
सिद्ध समान ही आपका बहुतस जिन जोको दीया दी। उनको जिन
विद्या आदिनी प्रतिष्ठायें की। शासन दवी आपका पादपद्मोंकी
सेवा करती थी और जालन्धर दवीको आपका रजित किया था।
सर्वतर गच्छनी मयाग (विधि) आपका ही सुव्यवस्थित की थी।

मरुकोट निवासी भण्डारी नेमचन्द्रजी (पण्डित जनककर्ता) सद्गुरुके शोधमें १२ वर्ष तक पर्यटन करते हुए पाटण पधारे और आपके सद्गुरुओंसे प्रतियोधको प्राप्त हुए। उनका ही नहीं, भण्डारीजीके पुत्रने आपके पास दीक्षा ग्रहण की थी। वाग्म्यमें आप युग-प्रधान आचार्य थे।

इस प्रकार स्वपर कल्याण करते हुए सं० १२७७ आपाठ शुक्ला १० को पाल्हणपुरमें स्वर्ग मिधारे। वहाँ संवने स्तूप बनवाया।

जिनेश्वर सूरि

(पृ० ३७७)

मरुस्थलके गिरोमणि मरोट कोट निवासी भण्डारी नेमचन्द्रकी भार्या लक्ष्मणीकी कुक्षिसे सं० १२४५ मार्गशीर्ष शुक्ला ११ को आपका जन्म हुआ था। अम्बिका देवीके स्वप्नानुसार आपका जन्म नाम 'अम्बड़' रखा गया।

श्री जिनपतिसूरिजीके सदुपदेशसे वैराग्य वासित होकर आपने अपने माता-पितासे प्रवज्या ग्रहण करनेकी आज्ञा मागी, माताश्रीने संयमकी दुर्द्धरता वतलाई पर उत्कट वैराग्यवानको वह असार ज्ञात हुई, क्योंकि आपका ज्ञान-गर्भित वैराग्य संसारके दुखोंसे विलग होनेके लिये ही हुआ था।

सं० १२५८ चैत्र कृष्णा २ खेड नगरके शान्ति जिनालयमें श्री जिनपति सूरिजीने दीक्षित कर आपका नाम धीरप्रभ रखा, आप सर्वसिद्धान्तोंका अवगाहन कर श्री जिनपति सूरिके पदपर सुशो-भित हुए। आचार्य पद प्राप्तिके पश्चात् आप जिनेश्वर सूरि नामसे

प्रसिद्ध हुए। आपन अनक दंगोमे विहार कर बहुतसे भग्नात्माओं-को प्रतिबोध दिया। इस प्रकार धर्म प्रचार करत हुए आप जालोर पधारे ओर अपन आनुष्यका अन्न निकट जानकर अपने सुजिय वाचनाचार्य प्रबोध मूर्तिको अपन पदपर स्थापित कर जिनप्रबोध सूरि नाम स्थापना की और वही अनशन आराधना कर स० १३३१ व आग्निन कृष्णा ६ को स्वर्ग सिधार।

जिन प्रबोध सूरि उल्लेख — गुर्वावलियोमे
जिनचन्द्र सूरि " "

श्री जिन कुशलमूरिजी विरचित 'जिनचन्द्र सूरि चतु सप्ततिका' प्राप्त हुई है। ग्रन्थ विस्तार भयमे उसे प्रगट नहीं की गयी, मात्र उमका मार नीचे दिया जाता है।

मारवाड ग्रान्तम समीपणा (सम्माणथणि) नगरक मन्त्री देवराजकी पत्नी कोमल वनीकी रत्नगर्भा कुम्बिसे स० १३२७ मार्ग-शीर्ष शुक्ला ७ को आपका जन्म हुआ था। आपका जन्म नाम सभराय रखा गया। सभराय नमशे वन साथ-साथ गुणोसे भी बढत हुए जब ६ वर्षक हुए तत्र श्री जिनप्रबोध मूरिकी दजना व्रजका सुअवसर मिला। जनक उपदेशसे प्रतिबोध कर स० १३३२ वै जेठ शुक्ला ३ को गुरुश्रीक समीप व्रजका प्रहण की। पूज्य श्रीन आपका नाम "क्षेमकोर्त्ति" रखा। दीक्षाक अनन्तर आपने न्याकरण, उद, नाटक, सिद्धान्त आदिना अध्ययन कर विद्वता प्राप्त की।

विक्रमपुर स्थित महावीर प्रतिमाके ध्यान चलते अपने आयुष्यका अन्त निकट जानकर श्री जिनप्रबोधमूरिजी जावालपुर पधारे और वहा क्षेमकीर्त्तिजीको स्वहस्त कमलमे सं० १३४१ वै० शु० ३ अक्षय तृतीयाको वीर चैत्यमे बडे महोत्सवपूर्वक आचार्य पद प्रदान कर गच्छभार सौंपकर जिनप्रबोधमूरिजी स्वर्ग सिधारे । आचार्य पदके अनन्तर आपका शुभ नाम जिनचन्द्रमूरि प्रसिद्ध किया गया । आपके रूप लावण्य और गुण सचमुच सराहनीय थे । श्रीकर्णद्विज जैत्रसिंह, और समरसिंहजी भूपति त्रय आपकी सेवा करनेमे अपना अहोभाग्य समझते थे । आपने विन्ध्य प्रतिष्ठा, दीक्षा एवं पद प्रदानादि कर अनेकानेक धर्मप्रभावनाकी । शत्रुंजय, गिरनार आदि तीर्थोंकी यात्रा की । एवं गुजरात, सिन्ध, मारवाड, सवालभ्रदेश, वाराड, दिल्ली आदि देशोंमें विहार कर धर्म प्रचार किया । सं० १३७६ के आपाढ़ शुक्ल ६ को राजेन्द्रचन्द्र सूरिजीको अपने पदपर कुण्डलीकीर्त्तिको स्थापन करने आदिकी शिक्षा देकर अनगन आराधनापूर्वक स्वर्ग सिधारे ।

जिनकुशल सूरि

(पृ० १५ से १६)

अणहिल पटनाधीश दुर्लभराज (की सभामे चैत्यवासियोंको परास्त कर) के समय वसतिमार्गप्रकाशक जिनेश्वर सूरि (प्रथम) के पदपर संवेगरंगशालाके कर्ता जिनचन्द्र सूरि, नवांगीवृत्तिकर्ता अभयदेव सूरि कि जिन्होंने (स्तम्भन) पार्वनाथके प्रसादसे धरणेन्द्र पद्मावती आदि देवोंको साधित किये, उनके पदपर संवेगीशिरोमणि

और चितौटस्य चामुण्डा देवीको प्रतिबोध दनवाले जिनवल्लभसूरि आर उनक पट्टधर योगिराज जिनदत्त सूरि हुए कि जिन्होंने ज्ञानभ्यान प्रभावस योगिनिया आदि द्रुष्ट देवीको किंकर बना लिये । उनक पदपर सकल कला-सम्पन्न जिनचन्द्र सूरि और उनक पट्टधर-वादिओ रूप गजोक् विदारणमे सिंह मात्र (वादी मानमर्तन) जिनपति सूरिजी हुए ।

जिनपति सूरिक जिनश्वर सूरि उनक पट्टधर जिनप्रबोध सूरि और उनक पट्टधर जिनचन्द्र सूरि हुए, जिन्होंने बहुत दंगोमे सुविहित विहारकर त्रिभुवनमे त्रिसिद्धी प्राप्त की एवं सुरताण (सम्राट्) कुन्दुदीनको राजित किया था, उनक पट्टधर जिनकुञ्जल सूरि हुए, जिनक पदस्थापनाका वृत्तान्त इस प्रकार है —

दीनोद्धारक कल्पतरु और महान् राज्य त्रसादप्राप्त मन्त्री दनराजक पुत्र जेल्हेकी पत्नि जयत श्रीक पुत्ररत्न कि जिनका दीक्षित नाम वाचनाचार्य कुञ्जलकीर्ति था, को राजेन्द्रचन्द्र सूरिक पाटणमे जिनचन्द्र सूरिक पदपर स्थापित किया । उस समय दिल्ली वास्तव्य महतीयाण ठस्कर विजय सिंह एवं पाटणक ओसवाल तजपाल व उनका लघुभ्राता रुद्रपालन श्रीराजेन्द्रचन्द्र सूरि और विवकममुद्रोपाध्यायसे पद महोत्सव करनका आदज मागा और उनकी आज्ञा प्राप्तकर सबकुकुम-पत्रीका प्रेषित कर बडा महोत्सव तारम्भ किया । स० १३७७ क ज्येष्ठ कृणा १ कादरीक दिन जिनालयको द्वविमानक सादज सुरोमित कर जिनश्वर प्रभुन समथ राजेन्द्रचन्द्र सूरिके वा० कुञ्जलकीर्तिको जिनचन्द्र सूरिके पदपर स्थापित कर 'जिनकुञ्जल

सूरि' नाम स्थापना की, उस समय अनेक देजा के सर आने थे, वाजिब्रोंके, नादमें आकाशमण्डल व्याप्त हो गया था। मनीषाण विजय मिहने स्वयं गुरुभक्ति की, देज-विमल भिष्यात समलप्रीती वीरदेवने स्वनर्मावात्मत्व किया। उस समय १०० गा०, २५०० साध्वीयोको तेजपाल, रूद्रपालने अपने घर आमंत्रित कर वस्त्र परि- धापन किया। अणहिन्द पाटण की शोभा उस समय बड़ी दर्जनीय और चित्ताकर्षक थी। महोत्सव करनेवाले तेजपालको सभी लोग बड़ी उत्सुकतासे देख रहे थे। इस प्रकार युगप्रधान पद महोत्सव कर सचमुच तेजपालने पडी स्थिति प्राप्त की।

आपका विशेष परिचय खरतरग-छगुर्वावन्धी और पट्टावन्धीमें पाया जाता है। उक्त गुर्वावन्धी यथावसर हमारे औरने मानुषा- प्रकाशित होगी। आपकी रचित "चैत्यवंदन कुटुक वृत्ति" प्रकाशित हो चुकी है।

जिनपद्मसूरि

(पृ० २० से २३)

उपरोक्त श्री जिनकुशल सूरिजी महिमंडलमें विचरने हुए देरावर पधारे। वहा व्रत ग्रहण, मालाग्रहण, पदस्थापन आदि अनेक धर्मकृत्य हुए। सूरिजीने अपना आयुष्यका अन्त निकट ज्ञातकर (तरुणप्रभ) आचार्यको अपने पद (स्थापन) आदि ही समस्त शिक्षा देकर स्वर्ग सिधारे। इसी समय सिन्धु देशके राणु नगर वास्तव्य रीहड थावक पुनचन्दके पुत्र हरिपाल देरावर पधारे और युगप्रधान पद-महोत्सव करनेकी आज्ञाके लिये तहणप्रभाचार्यसे विनोत प्रार्थना की और आज्ञा प्राप्त

कर दजोनिजाओन सघाको कुकुम-परीयो द्वारा आमन्त्रित किये, सघ आये ।

प्रसिद्ध श्रीमड कुञ्ज लक्ष्मीधरक पुत्र आनाराहकी पत्नीकी कुम्भि सरोवरमे उत्पन्न राजहमन सादण पद्मसूरिजी को स०१३८६ ज्येष्ठ शुक्ल पण्ठी सोमवारको ध्वजा पताका, तोरण वदनमालादिसे अलङ्कृत आदीनर जिनालयमे नान्दिस्थापन विधिसह श्री सरस्वती कथाभरण तरुणप्रभाचार्य (पटानरक वालावबोधकर्ता) न जिनकुण्डाल सूरिजीन पदपर स्थापित कर जिनपद्म सूरि नाम प्रसिद्ध किया । उम समय चारो ओर जयजय शब्द हो रहा था । रमणिया हर्षसे नृत्य कर रहीं थीं । लोगो न हृदयमे हर्षका पार न था । शाह हरिपालन सघभक्ति (स्वामिनात्सल्यादि) एवं गुणभक्ति (वन्दनादि) क साथ युगप्रधान पत्र महोत्सव बडे समारोहन साथ किया ।

पाठण समय आपको (वालधरल) कुर्चाल सरस्वती विस्द लिया । (पृ० ४७)

जिनचन्द्र सूरि (३० गुर्वावल्लिम)

जिनोदय सूरि (पृ० ३८४ से ३६४)

चन्द्रगण्डओर वञ्च नामे श्री अभयदवसूरिजी हुण्डनर पट्टानुक्रममे सरस्वती कथाभरण जिनवल्लभ सूरि, विधिमार्ग प्रकाशक जिनदत्तसूरि, कामदेव सादणरपान् जिनचन्द्रसूरि, वादिगज कशरी जिनपति सूरि, भक्तजन कल्पवृक्ष जिनश्वर सूरि, सकलकला सम्पन्न जिनप्रबोध सूरि, भवोदधिपोत जिनचन्द्र सूरि, सिन्धुदामे विहित

विहार कर जिनधर्म प्रचारक जिनकुशल सूरि, सुरगुरु अवतार जिनपद्म सूरि, शासन शृङ्गार जिनलब्ध सूरिके पट्ट प्रभाकर तेजस्वी जिनचन्द्रसूरि ज्ञाननीर वर्षाते हुए खंभाते पधारे और (आयुष्यका अन्त ज्ञान, तरुण प्रभ) आचार्य को गच्छे और पद स्थापनादिकी समस्त शिक्षा देकर स्वर्ग सिधारे ।

इसी समय दिल्ली वास्तव्य श्रीमाल रुद्रपाल, नीचा सधराके पुत्र संधवी रतना पूनिग सदगुरुवर्यको वन्दनार्थ खंभात आये और उन्होंने श्रीतरुणप्रभाचार्यको वन्दनकर पद महोत्सवकी आज्ञा ले ली । सं० १४१५ के आषाढ कृष्ण १३ को हजारों लोगोंके समक्ष अजित-जिनालयमें आचार्यश्रीने वाचनाचार्य सोमप्रभको गच्छनायक पद देकर जिनोदय सूरि नाम स्थापनाकी । संधवी रतना, पूनाने उस समय बड़ा भारी उत्सव किया । लोगोंके जयजयारवसे गगन मण्डल व्याप्त हो गया । वाजित्र बजने लगे, याचक लोग कलरव (शोर) करने लगे, कही सुन्दर रास (खेल) हो रहे थे, कही मृदुभाषिणी कुलाङ्गनाये मङ्गल गीत गा रही थी । इस प्रकार वह उत्सव अतिशय नयनाभिराम था । संधवी रतना पूना और शाह वस्तपालने याचकोंको वाछित दान दिया, चतुर्विध संधकी बड़ी भक्ति और विनयसे पूजाकी, साधमीं वात्सल्यादि सत्कार्योंमें अपनी चपला लक्ष्मीको खुले हाथ व्ययकर जीवनको सार्थक बनाया, उस समय सालिहग और गुणराजने भी याचकोंको बहुत दान दिये । उपरोक्त वर्णन ज्ञानकलश कृत रासके अनुसार लिखा गया है ।

मेरसदन कृत विनाहलेन अनुमार श्रीजिनोदयसूरिका विगेन परिचय इस प्रकार ह—

गूर्जरधरा रूपी सुन्दरीन हृदयपर रत्नोक्त हारक भाति पालहणपुर नगर हे। जन्मे व्यापारी मुख्य मारू शास्त्रान (शाह रतनिग कुल मज्जल) रद्रपाल त्रेष्टि निनास करते थे। स० १३७५ मे उनकी भार्या धारल दवीन कुक्षि सरोवरसे राजहसक सद्य पुत्र उत्पन्न हुआ। माता पितान उसका शुभ नाम समरा रखा। चन्द्रनलक भाति समरा कुमर दिनोदिन वृद्धिको प्राप्त होने लगा।

इधर पालहणपुरमे किसी समय श्री जिनकुशलसूरिजी का शुभागमन हुआ। धर्म-प्रेमी रद्रपालन सपरिवार गुरुजीको वन्दन कर धर्म श्रवण किया। सूरिजीने समरा कुमरक शुभ लक्षणोको देख (आन्वीक्षित होकर) रद्रपालको उसे दीक्षित करनेका उपदेश दकर आप भीमपल्ली पधार। इधर मातान शोलेमे बैठे कुमरन सूरिजीक पास दिक्षा कुमारीसे विनाह करानेकी प्रार्थना की। मानाने समय पालनकी दुष्करता, उसकी लघु अवस्था आदि नतलाकर बहुत समझाया, पर वैरागी समरान अपना दृढ निश्चय प्रगट किया। अत इच्छा नहीं होते हुए भी पुत्रक अत्याग्रहसे रद्रपालने सपरिवार भीमपल्ली जाकर वीर जिनालयमे नादिस्थापन कर जिनकुशलसूरिक हस्तकमलसे समरा कुमरको स० १३८० मे दीक्षा दिलाई। कालिकाचायन माय सरस्वती वहनन दीक्षा ग्रहण की थी उसी प्रकार समराकुमरक साथ उसकी वहिन कीलहूने दीक्षा ग्रहण की। गुरुने समरकुमरका नाम 'सोमत्रम' रखा। सोमत्रम मुनि अब बड़े

मनोयोगसे विद्याध्ययन करने लगे और नमन-नजात्रोंके पारंगत बने। सोमप्रभकी योग्यतासे प्रसन्न हो गुजराती सं० १४०६ में जेम्सब्रैमेरसे 'वाचनाचार्य' पद प्रदान किया। वाचनाचार्यजी सुविहित विहार करते हुए धर्म प्रचार करने लगे।

इस प्रकार धर्मोन्नति करने हुए सोमप्रभजीको सं० १४१५, आपाठ कृष्ण त्रयोदशीको खंभातमें श्री तन्मप्रभाचार्यने जिन चंद्रसूरिके पदपर स्थापित किये। पदस्थापनका विशेष वर्गन ऊपर आ ही चुका है।

आचार्यपद प्राप्तके अनन्तर श्री जिनोदय सूरि जीने सिन्ध, गुजरात, मेवाड़ आदि देशोंमें विहार कर सुविहित मार्गका प्रचार किया। पाच स्थानोंमें बड़ी प्रतिष्ठाये की, २४ ग्राम्यो १४ ग्राम्यणियोंको दीक्षित किये, अनेकोंको संववी, आचार्य, उपाध्याय, वाचनाचार्य महतरा आदि पदसे अलंकृत किये। इस प्रकार धर्म प्रभावना करते हुए सं० १४३२ के भाद्र कृष्ण एकादशीको पाटणमें लोकहिताचार्यको शिक्षा देकर स्वर्ग सिधारे। संवने आपके अन्तक्रिया स्थलपर सुन्दर स्तूप बनाकर भक्ति प्रदर्शित की।

जिनराज सूरि

उ० गुर्वावलियोंमें

जिनभद्र सूरि

”

जिनचन्द्र सूरि पृ० ४८

साहु शाखाके वच्छराजकी भार्या स्याणीके कुक्षिसे आप जन्मे थे।

जिन समुद्रसूरि

उ० गुर्वावलियोंमें

खरतर गुरुगुण उपपद्य और गुरुगुण पदपदका सार

प० १ से ३ पत्र २४ से ४०

नाम	पन्थ्यापनामवन	मिती	स्थान	जिनालय	पददाता
जिनवल्लभ	—स० ११६७	आषाढ शुक्ला ६	चित्तौड़,	महावीर,	द्वभद्रमृरि
जिनदत्त	—स० ११६६	वैशाख कृ ११	६	”	”
जिनचन्द्र	—स० १२०५	वैशाख शुक्ला ६	विक्रमपुर,	”	जिनदत्तमृरि
जिनपति	—स० १२२३	कार्तिक शुक्ला १३	वनरपुर,		जयदवसृरि
जिनेद्वर	—स० १२७८	माह शुक्ला ६	जालौर,		सर्वदवसृरि
जिनप्रबोध	—स० १३३१	आश्विन (४ ग्ना) ५	”		”
जिनचन्द्र	—स० १३८१	द्वैशाख शुक्ला ३	”		”
जिनकुल	—स० १३७७	ज्येष्ठ ४ ग्ना ११	पाटण,		”
जिनपद्ममृरि	—स० १३६०	ज्येष्ठ शु० ६	दरानर,		”
जिनलब्धि	—स० १८००	आषाढ कृष्णा १			”
जिनचन्द्र	—स० १८०६	माह शुक्ला १०	जैमलमर,		”
जिनोदय	—स० १४१५	आषाढ कृ १३	सभात,	अजित	”
जिनराज	—१८३३	फा गुग ४ ग्ना ६	पाटण	जाति,	लोकहिताचार
जिनभद्र	—स० १४७५	माह (शु० १५)	भाणालि,		”
				अजित,	भागरचद्राचार

अन्य महत्वक उल्लेख — (गा २०) स० १०८० पाटण दुलभ सभा
 धोत्यवासी विजय, जिनद्वर सूरिको खरतर विद्व प्राप्ति, (गा० २१) गोतमक
 ६५०० तापसोंका प्रतिबोध, (दि०गा २२) कालिकाचायका चतुर्थीको पयू पण
 करना, (गा २३) में जिनदत्त सूरिका युगप्रधानपत्र, (गा० २०) में दशारणभद्रका

जिनहंससूरि

पृ० ५३

जिनहंससूरिजीका सूरिपद महोत्पन्न करमन्विते एक लोख पीरोजी खरचकर वडे समागोत्तने किया। आचार्य पद प्राप्तिके अनन्तर अनेक देजोंमें विहार करते हुए आप आगरा पधारे। श्रीमाल दुंगरजी और उनके भ्राता पामडत्तने अतिशय हर्षोत्साहमें प्रवेशोत्सव वडे धूमधामसे किया, सजावट बडी दर्शनीय की गई, लोगोकी भीड़से मार्ग संकीर्ण हो गये, पातशाह रवयं हाथीके होठे उच्चर खान, वजीर इत्यादि राज्यके अमलदारोंके साथ नामने आये, वाजित्र वज रहं थे। आविकार्ये मंगलकलत्र मस्तकपर धारण कर गुरुद्वीको मोतियोंसे वधा रही थी। वजत मुद्रा (रूपये) के साथ पान (ताम्बूल) दिये गये, इससे बडा यग फैला और दिल्लीपति सिकन्दर पातशाहको यह जान बडा आश्चर्य उत्पन्न हुआ। उन्होंनेसूरिजीको राजसभा (दीवानखाना) में आमंत्रित कर करामात दिखाने को कहा, क्योंकि सम्राटकें खरतर जिनप्रससूरिजीके करामात (चमत्कार) की बातें, पहिले लोगोसे सुनी हुई थी। पूज्यजीने तपस्याके साथ ध्यान करना प्रारम्भ किया, यथासमय जिनदत्तसूरिजीके प्रसाद एवं ६४ योगिनीयोके सानिव्यसे किसी चमत्कार विशेषसे सिकन्दर वीर वन्दन (गा० २३) पीछेकी १ गाथामे सं० १४१२ फा० व १४ अभयतिलकके रचनाका लेख है, (द्वि० गा० २३) में जिनलड्डि सूरिको नवलक्ष गोत्रीय धणसिंहके भार्या खेताहोके कुक्षिसे उत्पन्न होना और बाल्यवयमें व्रत लेना, लिखा है।

पात ।।हका चित्त चमत्कृत कर ५०० वन्दीजनोको कारावास (वासरमी) मे छुडाकर मगन सुयग प्राप्त किया ।

कवि भक्तिलामन गुरुभक्तिस प्रेरित होकर इस य ।गीतकी रचना की । प्रि० आपन रचित आचाराङ्गदीपिका (म० १५८७ वीकानर) उपलब्ध है ।

जिनमाणिग्रथ सूरि (३० गुनावलियोमे)

युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि (पृ० ५८ से १२५)

जिनसिंह सूरि (पृ० २२५ स १३३)

श्री जिनचन्द्र सूरिजी एव जिनसिंह सूरिजीन सम्बन्धी गीत, रास आदि काव्योका मत्र माराश "युगप्रधान जिनचन्द्र सूरि" मे दिया है । अत यहा दुहराकर ग्रन्थन कल्परको बढाना उचित नहीं समझा गया ।

जिनचन्द्र सूरि सम्बन्धी दो बडे राम हैं, उनमेस "अकनर-प्रतिबोध रामका सार उक्त ग्रन्थन छठें, मातवे प्रकरणमे एव निर्वाण रामका मार ११, १२ वे प्रकरणमे दे दिया गया है ।

श्री जिनसिंह सूरिजीका ऐतिहासिक परिचय उक्त ग्रन्थन प्र० १७४ से १८० तकमे लिखा गया है । आपन सम्बन्धमे हमे सूरचन्द्र कृत एन राम अभी ओर नया उपलब्ध हुआ है, पर उसमे हमान लि० चरित्रन अतिरिक्त कोई विशेष नमीनता नहीं, और ग्रन्थ बहुत बढा हो जानन कारण उसे प्रकाशित नहीं किया गया ।

सूरचन्द्र कृत रासमे नमीन वाते ये हैं —

(१) जिनसिंह सूरिजीके पिता का निवास स्थान 'वीठावान' लिखा है ।

(२) पाटणमें धर्मसागर कृत ग्रन्थको अप्रमाणित सिद्ध किया । संवदी सोमजीके संघ चह अजुंजय यात्रा की ।

(३) इनके पदमहोत्सवपर श्रीमाल-दाक गोत्रीय राजपालने १८०० घोड़े दान किये थे ।

(४) अकबर सभामे ब्राह्मणोंको गंगा नदीके जलकी पवित्रता एवं सूर्यकी मान्यतापर प्रत्युत्तर देकर, विजय किया था ।

जिनराज सूरि

(पृ० १५० से १७७, ४१७)

राजस्थानमें बीकानेर एक सुसमृद्ध नगर है, वहां राजा रायसिंह जी राज्य करते थे, उनके मन्त्री करमचन्दजी वच्छावत थे । जिन्होंने सं० १६३५ के दुष्कालमें सत्रूकार (दानगाला) स्थापित कर डोलती हुई पृथ्वीको (दान देकर) स्थिर कर दी थी, एवं लाहौरमें जिनचन्द सूरिजीके युग प्रधान पद एवं जिनसिंह सूरिजीके आचार्य पदके महोत्सवपर क्रोड द्रव्य और नव ग्राम, नव हाथी आदिका महान दान किया था ।

उस समय बीकानेरमें बोथरा कुलोत्पन्न धर्मगी ग्राह निवास करते थे, उनकी धर्मपत्नीका शुभ नाम धारल देवी था । सांसारिक भोगोंको भोगते हुए दम्पति सुखसे काल निर्गमन करते थे ।

हमारे संग्रहके प्रबन्धमें आपके ७ भाइयोंके नाम इस प्रकार हैं
१ राम, २ मेहा, ३ खेतसी, ४ भैरव, ५ केशव, ६ कपूर, ७ सातड,

इस प्रकार जिन भोगोंको भोगत हुए धारल वंशीकी कुत्रिम सिंह स्वप्न सूचित एक पुण्यवान जीव अवतरित हुआ ।

ज्योतिषियोंको स्वप्न फल पूजनपर उन्होंने मौभाग्यशाली पुत्र उत्पन्न होनेकी सूचना दी । यथा समय (गभ वृद्धि होनेस साथ-साथ अच्छे-अच्छे दोहद उत्पन्न होने लगे, अनुभवमे गर्भ स्थिति परिपूर्ण होनेसे) स० १६२७ वैशाख सुनि ७ बुधवार, छत्र योग व्रजण नक्षत्रमे धारल वंशीने पुत्र जन्मा ।

द्यूतग तमय अनन्तर नवमति शिशुका नामवतमी रखा गया, वृद्धिमान होत हुए सेतमी : कर्मात्मान करने लगा अनुभवसे ६ भाषा, १८ लिपि, १४ विद्या, ७२ कला, ३६ राग और चाणक्यादि शास्त्रोंका अध्ययन कर प्रवीण हो गया । इसी समय अन्तराष्ट्रगाह प्रशमित जिन सिंह सुरिजी नीकानर पधार । लोक उडे हर्षित हुए आर मूरिजीका धर्मापन्ना व्रजगाय सभी लोग आन लगे, (अपन पितास साथ) स्वामी कुमार भी ०वार ज्ञानमे पधार । ओर धम व्रजकर वैराग्यनामित होकर घर आकर अपनी माताजी से दीव्या की अनुमति मागी । परपुत्रका स्नह महज कैसे छूट सकता था । मानान अनक प्रकारस समझाया पर सेतमी कुमार अपन दृढ निश्चयसे प्रचलित नहीं हुए आर स० १६५६ मार्गशीर्ष शुक्ल १३ को जिनसिंह मुरीजीस समीप दीव्या ग्रहण की । इस समय धर्मसी ज्ञान दीव्याका बड़ा उत्सव किया, नव दीव्रन मुनि अत्र सुश्री व प्रदत्त राजसिंह नामसे परिचित होने लगे ।

* एक पटावलीमें लिखा है कि आपके लघु भ्राता भेरवन भी आपके साथ दीक्षा लो ।

दीक्षाके अनन्तर सूरिजी जीव ही अन्यत्र विहार कर गये। राजसिंहके मण्डलतप बहन कर चुकनेके सम्बन्ध पाठ्य श्री जिनचन्द्र सूरिजीने उन्हे बड़ी दीक्षा (छिन्नोप-वापनीय) दी और नाम राजसमुद्र प्रसिद्ध किया।

राजसमुद्र थोडे ही समयमें हुआप्र बुद्धिबलके मंत्रोंको पढकर गीतार्थ हो गये। श्री जिन सिंह सूरिजी स्वयं आपको शिक्षा देते थे, श्री जिनचन्द्र सूरिजीने आपको वाचनाचार्य पदमें अलंकृत किया। आपके प्रबल पुन्योदयसे अम्बिकादेवी प्रत्यक्ष हुई। जिसके प्रत्यक्ष फलस्वरूप घंवाणीके (प्राचीन) लिपीको आपने पढ डाली। जेसलमेरमें राउल भीमके समझ आपने नपागच्छीयोंको परास्त किये थे।

इधर सम्राट जहागीरने मान सिंह (जिन सिंह सूरि) से प्रेम होनेसे उन्हे निमन्त्रणार्थ, अपने बजीरोंको फरमान-पत्रके साथ बीकानेर भेजा। वे बीकानेर आये और फरमान पत्र सूरिजीकी सेवामें रखा। सङ्घने पढा तो सूरिजीको सम्राट्ने आमन्त्रित किया जानकर सभी प्रसन्न हुए।

सम्राटके आमन्त्रणसे सूरिजी विहार कर मेड़ते पधारे। वहाँ एक महीनेकी अवस्थिति की, फिर वहाँसे एक प्रयाण किया पर आयुका अन्त निकट ही आ चुका था, अतः मेड़ते पधारे और वहीं

* हमारे संग्रहके प्रबन्धमें जन्मका वार बुधकी जगह शुक्र और दीक्षा सं० १६५७ मोगसर सुदी १ बीकानेर, लिखा है। वृणारसपद सं० १६६८ आसाउलमें लिखा है।

स्वयं सवारा उच्चारण कर म० १६७४ पोप शुक्ला १३ को प्रथम दवलोक सिधारे ।

सधन पकर हो पट्टधरक योग्य कौन है इमका विचार कर राज-समुद्रजीको योग्य विदित कर उन्हे गच्छनायक और सूरिजीन अन्य जिन्य सिद्धमेत मुनिको आचार्य पन्से विभूषित किये । ये दोना जिनराज सूरि और जिनमागर सूरिजीन नामसे प्रसिद्ध हुए । पदमहोत्सवपर सधवी आमकरण चोपडेन बहुत द्रव्य व्यय निरा । १६७४ फाल्गुन शुक्ला ७ को पन्स्थापना वडे समारोहसे हुई ।

गच्छनायक पन् प्राप्तिन अनन्तर आपन अनेक जगह विचारकर अनेकानेक धर्म प्रभावनायें की, जिनमेसे कुछ ये हैं — (म० १६७५ मिगसर सुती १२ को) जेमलसर (लोद्रव) गढमे (भणमाली याहल-कारित) महस्त्रगापार्जननायकी प्रतिष्ठा की । (म० १६७५ वै० शु० २३ क) शत्रुजय पर (सोमजी पुत्र रूपजीकारित) अन्तमोद्धारक ७०० प्रतिमाओकी प्रतिष्ठा की । भाणरुढमे वाफगा चापजी कारित अमीतरा पार्जननायकीकी प्रति ठाकी, मेडतम चोपडा अमकरण कारित शान्ति जिनालकी (म० १६७७ जे० कृ० ५) प्रतिष्ठाकी । अम्बिका ठवी एत्र ५२ वीर आपन प्रत्यम् त्रे, सिन्धमे विहार तर (पाच नदीव) पाँच पीरोको आपन साधित किये । ठाणाग सूत्रकी विरम पन्थार्थ वृत्ति बनाड ।

* तर धमें उपाध्याय सोमविजयका नाम भी है ।

+ प्रथ वमें द्वितीया लिखा है । सूरिमन्त्र पुनमीया हेमाचयने निया लिखा है ।

इस प्रकार शासनका उचित करनेवाले गच्छ नायकके गुण-कीर्तन रूप यह राम श्रीमान कविने सं० १६८१ अर्थात् कृष्ण १३ को सेत्रावामे रचा। श्रेमजायके चरित्रके जिन्य हेमकीर्तिने यह प्रबन्ध बनवाया। गच्छ नायकके गुणगान करते समय (वर्ष) भी अच्छी हुई। उपरोक्त राम रचनाके पद्यान (सं० १६८६ मार्गशीर्ष कृष्णा ४ रविवारको आंगरेमे सम्राट् जालजहाँसे आप मिले थे और वहा ब्राह्मणोंको वादमे परामन किये एवं दर्जनी लोगोंके विहारका जहा कहीं प्रतिषेध था वह खुदा करवा कर शासनोन्नति की। राजा गजसिंहजी, नूरसिंहजी, अमरपयान, आलमदीवान आदिने आपकी बड़ी प्रशंसा की।

यह सबैये (पृ० १७३) से स्पष्ट है। गीत नं० ५ में लिखा है कि मुकरवखान ने आपके शुद्ध और कठिन भाव्याचारकी बड़ी प्रशंसा की।

आपके रचित १ जालिभद्र चौ० २ गजसुकमाल चौ० ३ चौबीसी ४ बीसी ५ प्रश्नोत्तर-रत्नमाला बीसी ६ कर्म वतीसी ७ गील वतीमी बालावबोध ८ गुणस्थानस्त और अनेक पद उपलब्ध हैं। नैषध-काव्य पर भी आपके ३६ हजारी वृत्ति बनानेका उल्लेख है। डेकन कालेजमे इसकी दो प्रतिया विद्यमान है।

—* हमारे संग्रहके जिनराज सूरि प्रबंधमें विशेष बातें यह हैं :-

आपने ६ मुनियोंको उपाध्याय, ४१ को वाचक पद और १ साध्वीजी को प्रवर्तनी पद दिया, ८ बार शत्रुञ्जयकी यात्रा की, पाटणके संवके साथ गौडीपार्श्वनाथ, गिरनार, आवू, राणकपुरकी यात्रा की, नवानगरके

जिनरतन सूरि

(प्र० २३८ स २४७)

सन् १२ वजन सेर गा प्रामम ओजनाल दुणिया गोत्रीय तिलोकमी जाफनी पती तारा देवीकी कुमिस (स० १६७०) म आपन जन्म हुआ प्रा। आठ वरकी लजुनमे ही आपको वैराग्य उत्पन्न हुआ और जिनराज सूरिक पास अपन बान्धव और मातास माप (स० १६८४) में दोत्रा प्रण की। थोडे दिनोम ही ग्रास्त्राना अध्ययन कर दण-विज्ञान विचार कर भव्य जनोको प्रतिबोध दन लग। आपन गुणास योग्यताका निणय कर जिनराज सूरिजीन महमन्नात पुलानर आपको उपाध्याय पदम अलकित निरा। इम समय जन्मल, तजमीन प्रहृत-सा द्रव्य व्यय कर उत्पव निरा प्रा।

स० १७०० म जिनराजसूरिजीका चतुमास पाठण था। उन्होंने स्वयंसे जिनरतन सूरिजीकी पत्र स्थापना की, और अपाठ शुद्धा ६ को वन्वग निधान।

चतुमासक समयमें दोसी माध्यादि न ३६००० जमसाह व्यय की, आगरमें १६ वषकी अवस्थामें चि तामणि शास्त्रका पूण अध्ययन किया, पालीमें प्रतिष्ठा की, राठल कल्याणदास और राय कुषर मनोहरदासक आमन्त्रित चैसलमर पधार सवरी घाहरन प्रयत्नोत्सव किया। आपके शिष्य प्रक्षिप्या की सख्या ४१ थी।

× १ नाहटा धे (देखो पृ० २४६ में)

× गीत न० ६ म तेजस हैं। देखो पृ० २४७ × गीत नी ४ में सदाभी लिखा है।

पाटणसे विहार कर जिनरतन सूरिजी पालहणपुर पधारे, वहा संघने हर्षित हो उत्सव किया। वहासे स्वर्णगिरिके संघके आग्रहसे वहां पधारे। श्रेष्ठिपीथेने प्रवेशोत्सव किया, वहासे मरुस्थलमें विहार करते संघके आग्रहसे बीकानेर पधारे, नथमल वेणेने बहुत-सा द्रव्य व्यय कर (प्रवेश-) उत्सव किया, वहासे उग्र विहार विचरते वीरमपुरमे (सं० १७०१) में संघाग्रहसे चतुर्मास किया।

चतुर्मास समाप्त होते ही बाहड़मेर (सं० १७०२) मे आये, संघके आग्रहसे चतुर्मास वही किया। वहासे विहार कर कोटडमें (सं० १७०३) चौमासा किया। चौमासा समाप्त होनेपर वहासे जेसलमेरके आग्रहके आग्रहसे जेसलमेर पधारे, शाह गोपाने प्रवेशोत्सव किया एवं याचकों को दान दे अपनी चंचल लक्ष्मीको सार्थक की। जेसलमेरके संघका धर्मानुराग और आग्रह सविशेष देख आचार्य श्रीने चार चतुर्मास (सं० १७०४ से १७०७ तक) वही किये। इसके पश्चात् आगरे संघके अत्याग्रहसे वहां पधारे। संघ बड़ा हर्षित हुआ, मानसिहने वेगमकी आज्ञा प्राप्त कर प्रवेशोत्सव बड़े समारोहसे किया। व्रत-ग्रहणादि धर्मध्यान अधिकाधिक होने लगे। तीन चौमासा (सं० १७०८ से १७१०) करनेके पश्चात् चौथे चतुर्मासको (सं० १७११) भी संघने आग्रह कर वही रखे। वहा अशुभ कर्मोदयसे असमाधि उत्पन्न हुई। अषाढ शुक्ल १० से तो वेदना क्रमशः वृद्धि होनेसे औषधोपचार कराया गया, पर निष्फल देख आपने अपने आयुष्यका अन्त ज्ञात कर अपने मुखसे अनगनोच्चार एवं ८४ लाख जीवयो-नियोंसे क्षमता क्षमणा कर समाधिपूर्वक श्रावण वदी ७ सोमवारको

हपलाभको पन्स्थापन कर स्वर्गवासी हुए । सवम शोक छा गया, पर भावोपर जोर भी नहीं चल सन्ता । आखिर अन्तर्द्वि त्रि या वडी धूमस कर दाहम्वलपर सुन्दर स्तूप निमाग कर आनक सवन गुम्भक्ति का आन । परिचय दिया, भक्ति स्मृतिको चीरजीवन की (निनराज सूरि जिन्) मानविजयन जिन् कमलरूपन भी स० १७१८ आवग शुद्ध ११ गनिवारको आगम यह निवाण राम रचकर गुम्भक्ति द्वारा कवित्त सफल त्रि या ।

जिनचन्द्र सूरि

(प्र० २०५ से २०८)

वीरानन निवासी गणधर-चोपडा गोत्रीय महममल (महमकरण) की पत्नी राजल द (मुपीयार द) क आप पुनरत्न ये । आपन १२ वषकी लघुवयमे वैराग्यवासित होकर जिनरत्न सूरिक हायस जेमलमरमे दीक्षा ग्रहण की । श्रीसघन ज्मव त्रि या, १८ वर्षकी वयम (स० १७११) जिनरत्न सूरिजी आगम ये आर आप राजनगरमे ये, वहा) जिनरत्न सूरिक वचनानुसार पद प्राप्त हुआ और नाहटा जयमल, तजसी (जिनरत्नपन् महोत्सवन्तरी) की माता वस्तूरान पन्ोत्सव किया । (गीत न० २)

न० ५ कवित्तम ज्ञात होता है कि आपन पचनदी साधन की थी । आपन रचित कई स्तवनादि हमार संग्रहमे हैं । स० १७३५ आनाठ जुलाई ८ सम्भातमे आपन २० स्थानक तप करना प्रारम्भ त्रि या था । तत्कालीन गच्छन यतियोमे प्रविष्ट शिथि-

लताको निवारणार्थ सं० १७१८ आसू सुदी १० सोमवार वीकानेरमे (१४ बोलोंकी) व्यवस्था की थी, प्रस्तुत व्यवस्थापत्र हमारे संग्रहमे है।

जिनसुख सूरि

(पृ० २४६ से २५१)

बोहरा गोत्रीय (पीचानख) रूपचन्द शाहकी भार्या रतनादे (सरूप दे) की कुक्षिसे आपका जन्म हुआ था। आपने लघुवयमे दीक्षा ग्रहण की थी। सं० १७६२ आषाढ शुक्ला ११ को सूरतमे जिनचन्द सूरिने आपको स्वहस्तसे श्री संघ समक्ष गच्छनायक पद प्रधान किया था। उस समय पारख सामीदास, सूरदासने पद महोत्सव बडे धूमसे किया था। रात्रिजागरण आवकस्वामीवात्सल्य यति वस्त्र परिधापनादिमे उन्होंने बहुत-सा द्रव्य व्ययकर भक्ति प्रदर्शित की।

सं० १७८० के ज्येष्ठ कृष्णाको अनशन आराधन कर रिणीमे जिनभक्ति सूरजीको अपने हाथसे गच्छनायक पद प्रदानकर स्वर्ग सिधारे। श्री संघने अन्त्येष्टि क्रियाके स्थानपर स्तूप बनाया और उसकी भाव शुक्ला षष्ठीको जिनभक्तिसूरिजीने प्रतिष्ठा की थी। आपके रचित जेसलमेर-चैलपरिपाटी स्तवनादि एवं गद्य (भाषा) मे (सं० १७६७ मे पाटणमे रचित) जेसलमेर आवकोंके प्रश्नोंके उत्तरमय सिद्धान्तीय विचार (पत्र ३५ जय० सं०) नामक ग्रन्थ उपलब्ध है।

जिनमस्तिसूरि

(पृ० २५२)

सेठिया हरचन्दकी पत्नी हरसुसद की कुम्बिसे आपका जन्म हुआ था। आपन छोटी उम्रमे ही चारित्र लेकर मदगुरकी प्रसन्न किया था। जिनसुस सूरिजीन आपको स० १७७६ ज्येष्ठ कृष्ण तृतीयाको रिणीमे स्वहस्तसे गच्छनायक पद प्रदान किया था। उस समय रिणी सयन पद-महोत्सव किया। आपको रचित कई स्तवनादि प्राप्त हैं।

जिनलामसूरि

(पृ० २६३ से २६६ एव ४१४ से ४१६)

विश्वपुरनिवासी चौथरे पचाननकी धर्मपत्नी पद्मा द ने आपको जन्म दिया। आपने लघु वयमे जिनमस्ति सूरिजीक पास दीक्षा ग्रहण की। आपक गुणोसे प्रसन्न होकर सूरिजीने माडवी वनरमे आपको अपन पदपर स्थापन किया था।

स० १८०४ मुज, वहासे गुठ होकर १८०५ मे जैसलमेर पधारे, वहा १८०८-१० तक रहे। उमर पीछे वीकानेरमे (१८१० से १८१५ तक) ५ वर्ष रहकर स० १८१५ को वहासे विहारकर गारवदमेर शहरमे (१८१५) चोमासा किया। वहा ८ महीन विराजनन पञ्चात् (मि० वि० ३) विहारकर यली प्रदजको वदात हुए जैसलमेरमे प्रवेश किया। वहा (१८१६-१७-१८-१९) ४ वर्ष अवस्थितकीकर लोद्वव तीर्यमे महस्त्रफणा पारवनायकीकी यात्रा की। वहासे पश्चिमकी ओर विहारकर गोडीपारवनाथकी यात्रा कर

गुहे (सं० १८२०) में चौमासा किया। चतुर्मासके अनन्तर शीघ्र विहारकर महेवा प्रदेशको वंदाकर महेवेमें नाकोडे पार्श्वनाथकी यात्रा की, वहासे विहारकर जलोल्म (सं० १८२१) में चतुर्मास किया। वहासे खेजडले, खारिया रहकर रोहीठ, मंडोवर, जोधपुर, तिमरी होकर मेडते (१८२३) पधारे। वहा ४ महीने रहकर जैपुर शहर पधारे, वह शहर क्या था मानो स्वर्ग ही पृथ्वीपर उतर आया हो, वहा वर्ष दिनकी भाति और दिन बड़ीकी भाति व्यतीत होते थे। जैपुरके संवका अत्याग्रह होनेपर भी पूज्यश्री वहा नहीं ठहरे और मेवाडकी ओर विहारकर यश प्राप्त किया। उदयपुरसे १८ कोसपर स्थित धूलेवामे ऋषभेशकी यात्राकर उदयपुर (१८२४) पधारे और विशेष विनतीसे पालीवालै (१८२५) पाट विराजे नागौर (का संघ) बीचमे अवश्य आयगा, यह जानते हुए भी साचौर (अपने मनकी तीव्र इच्छासे (१८२६) पधारे। इस समय सूरतके धनाढ्योंने योग्य अवसर जानकर विनती पत्र भेजा और पूज्यश्री भी उस ओर विहार करनेसे अधिक लाभ जान, (१८२७) सूरत पधारे।

वहाके श्रावकोंको प्रसन्न कर आप पैदल विचरते हुए (१८२६) राजनगर पधारे। वहा तालेवरने बहुत उछव किये और २ वर्ष तक रात दिन सेवा की। वहासे श्रावक संवके साथ शत्रुजय गिरनारकी यात्रा कर (१८३०) वेलाडलेके संवको वंदाया। वहासे माडवी (१८३१) पधारे। वहा अनेकों कोट्याधीश और लक्षाधिपति व्यापारी निवास करते थे। समुद्रसे उनका व्यापार चलता मार्गशीर्ष महीनेमें भावगिरिकी यात्रा कर चतुर्मास बीलाडे (१८२३) रहे।

था। उन्होंने १ वर्ष तक सूत्र द्रव्य किया। वहासे अच्छे महर्तमे विहार कर भुज (१८३०) आये। वहाके सधने भी श्रेष्ठ भक्ति की। इस प्रकार १८ वर्ष नवीन नवीन दंगोमे विचर। कवि कृता है कि अत्र तो वीकानेर शीघ्र पधारिये। अन्य साधनोसे ज्ञात होता है, कि भुजसे विहार कर १८३३ का चौमाना मनरा-नन्दर कर स० १८३४ का चौमाना गुढा किया और वही स्वर्ग मिधान (गीत न० ४)।

गहुली न० १ मे पूज्यश्रीके पधारनेपर वीकानेरमे उत्सव हुआ, उसका वर्णन है।

गहुली न० २ मे कवि कृता है कि कच्छसे आप यहा पधारत थे, पर जैमलमेरी सधने बीचमे ही रोक लिया। वहाके लोग बडे मुह मीठे होते हैं, अत पूज्यश्रीको लुभा लिया। पर वीकानेर अव शीघ्र आवें।

आत्म-त्रोध ग्रन्थ आपका रचित कहा जाता है। आपने रचित कई स्तवनादि हमारे सम्रहमे हैं, आर दो चोवीरीये प्रकाशित भी हो चुकी हैं।

जिनचन्द्र सूरि

(पृ० २६७ से २६६)

रूपचन्दकी भार्या वजारदने आप पुत्र व। आपने मरस्यलमे लुपु वयमे ही दीक्षा ली थी और गुढेमे जिनलाम सूरिजीने स्वहस्तसे आपको गच्छनायक पद प्रदान किया था, उस समय श्रीमधने उत्सव किया था।

गहुली सं० १ चिन्तु देव — १८३४ मार्गशीर्ष १५ अश्विनी सं० १८३४ माघ मासमे वर्तते ।

गहुली सं० २ चारित्रचन्द्रमणि सं० १८३४ वैशाख वदी ८ शुक्रवार सो वीकानेरमे वर्तते । उस समय पृथ्वी धर्मसंग्रहमे थे, गहुलीमे उसके पूर्व उनके सम्भोगिन, पातापुरीकी यात्रा करनेका उद्देश्य किया गया है, एवं वीकानेर पत्राचनेके दिने चिन्तामि ती गयी है ।

जिनहर्षि सूरि

(पृ० ३००)

बोहरा गोत्रीय श्रेष्ठि निलोत्पन्नी भार्या नारायणके कुक्षिमे आपका जन्म हुआ था । कवि मणिमालने आपके वीकानेर पत्राचनेके समयके उत्सव वर्णनात्मक यह गहुली रची है । गहुलीमे वीकानेरके प्रसिद्ध देवालय चिन्तामणि और आर्द्राश्वरजीके दर्शन करनेको कहा गया है ।

जिनसौभाग्य सूरि

(पृ० ३०१)

आप कोठारी कर्मचन्द्रकी पत्नी करणदेवीकी कुक्षिमे उत्पन्न हुए थे । सं० १८६२ मार्गशीर्ष शुक्ल ७ गुरुवारको जिनहर्षसूरिजीके पद पर नृपवर्य रतनसिंहजी आदिके प्रयत्नसे विराजमान हुए थे । उस समय खजानची लालचन्दने पद स्थापनाका उत्सव किया था, और याचकोंको दान दिया था ।

हमारे संग्रहके एक पत्रमे लिखा है कि जिनहर्षसूरिजीके स्वर्ग सिधारनेके पश्चात् पद किसको दिया जाय, इसपर विवाद हुआ । जिन-सौभाग्य सूरिजी उनके दीक्षित शिष्य थे और

महेन्द्र सूरिजी अन्य यतीक जिण्य ये, पर जिनहर्षसूरिजीन
 ज्हे अपने पास रख लिया था। अत अन्तमे यह निर्णय किया
 गया कि दोनोका नामकी चिट्ठिया डाल दी जाँय, जिसका
 नामसे चिट्ठी ज्हे उसे ही पद दिया जाय। यह बात निश्चित होन-
 पर मोभाग्य सूरिजी वज्रोद्ध और गच्छन मुख्य यतियोको लेने-
 के लिये वीकानेर आय। पीछेसे चिट्ठी डालनेन निश्चित तिनका
 पूव ही कुछ यतीओ और श्रावकोप पत्रपातसे जिनमहेन्द्र सूरिजीको
 पद दे दिया गया। इधर आप मुख्य यतियोक साथ मडोवर पहुचे
 और वहाका वृत्तान्त ज्ञात कर वीकानेर वापिस पधारे। यहाँ
 यतिव्या श्रावको और राजा रत्नसिंहजोका पहलेसे ही इन्हे पद
 देनेका पत्र था, अत दे दिया गया। इन्हीं बातोक सक्त इस
 गहुलीमे पाये जात हैं।

इनके पञ्चात् पट्टधरोका क्रम इस प्रकार है —

जिनहर्मसूरि—जिनचद्रसूरि—जिनकीर्तिसूरि, इनके पट्टधर
 जिनचारित्रसूरिजी अभी विद्यमान हैं।

भूल सुधार

जिनेश्वरसूरि (प्रथम) के जि० जिनचद्रसूरिजीका नाम छूट
 गया है। उनका रचित 'सवेग-रगजाला' ग्रन्थ प्रकाशित हो
 चुका है।

मंडलाचार्य और विद्वद् मुनि मंडल

भावग्रन्थसूरि

(पृ० ४६)

मालहू शाखाके लुणिग कुलमे सब्ब जातकी भार्या राजलदेके आप पुत्र रत्न थे । श्री जिनराज सूरि (प्रथम) के आप (दीक्षित) सुशिष्य तथा सागरचन्द्रसूरिजीके पट्टधर थे, आप नाव्वाचारका प्रशंसनीय पालन करते थे और अनेक सद्गुणोंके निवासस्थान थे ।

कीर्तिरत्न सूरि

(पृ० ५१-५२, पृ० ४०१-४१३)

ओसवंशके संखवाल गोत्रमे शाह कोचर वड़े प्रसिद्ध पुरुष हो गये हैं, उनके सन्तानीय (वंशज) आपमल्ल और देपा हुए । इनमे देपाके देवलदे नामक धर्मपत्नी थी, जिसकी कुद्विसे लक्ष्मा, भाद्रा, केलहा, देल्हा ये चार पुत्र उत्पन्न हुए । इनमें देल्हा कुंवरका जन्म सं० १४४६ मे हुआ था, १४ वर्षकी लघु वयमें (सं० १४६३ आपाढ़ वदी ११) मे आपने दीक्षा ग्रहण की थी । श्री जिनवर्द्धन सूरिजीने आपका शुभ नाम 'कीर्तिराज' रखा और शास्त्रोंका अध्ययन भी स्वयं आचार्यश्रीने कराया । विद्वान होनेके पश्चात् सं० १४७० में वाचनाचार्य पद (जिनवर्द्धन सूरिजीने) और सं० १४८० मे उपाध्याय पद महेवेमे जिनभद्र सूरिजीने प्रदान किया, अतः माता देवलदेको बड़ा हर्ष हुआ । सिन्धु और पूर्वदेशोंकी तरफ विहार करते

हुए आप जैसलमेर पधारें । वहा गच्छनायक जिनमद्र सूरिजीन योग्य जानकर स० १४६७ माघ शुक्ला १० को आचार्य पद प्रदान किया और “कीर्तिरत्न सूरि” के नामसे प्रसिद्धि की । उस समय आपन भ्राता लम्हा और वेल्हाने विस्तारसे पद महोत्सव किया ।

स० १५२५ वैशाख वदी ५ को २५ तिनकी अनगन आराधना कर नमाधिपूर्वक वीरमपुरमे आप स्वर्ग सिधारे । जिस समय आपका स्वर्गवास हुआ, आपक अतिशयसे वहाक वीर जिनालयमे देवोने दीपक किये और मन्दिरके दरवाजे बन्द हो गये । वहा पूर्व दिशामें सधने स्तूप बनवाया जो अब भी विद्यमान है । वीरमपुर, महेवक अतिरिक्त जोधपुर, आनू आदि स्थानोमे भी आपकी चरणपादुका स्थापित की गयीं । जयकीर्ति और अमैविलास कृत गीत न० ७-८ से ज्ञात होता है कि स० १८७६ वैशाख (आपाढ) कृष्ण १० को गडाले (नाल-वीकानेरसे ४ कोस) में आपका प्रासाद बनवाया गया था ।

गीत न० ५ (सुमतिरग कृत छंद) और न० ८ मे कुठनवीन चाताक साथ विस्तारसे वर्णन हैं जिनका सार यह है —

जालधर दशम ससवाली नगरीमे कौचर शाह निवास करत थ, उनरे दो भायार्ये थीं, जिनमे लघु पत्नीके रोलू नामक पुत्र हुआ, उसे एक दिन अर्द्ध रात्रिक समय काले सर्पने डक मारा । विपसे अचेतन होनेसे कुटम्बीजन उसे दहनार्य, स्मगान छे गये, इमी समय खरतर गच्छनायक जिनेश्वरसूरिजी वही थे उन्होने अपन आत्मजलसे उसे निविप कर दिया । रोलू सचेत हो

धर आया, कुटुम्बसे आनन्द छा गया और कोचर ग्राह तभीने (सं० १३१३) खरतर गच्छानुयायी आवक हो गये और उन्होंने जिनेश्वरसूरिजीके हस्तकमलसे जिनालयकी प्रतिष्ठा करवाई। इसके बाद कोचर ग्राह कोरटेमें जा बसे, वहां उनके कुलसुर (पूर्वके गुरु, अन्य गच्छीय) के पुन. अपने गच्छमें आनेके लिये बहुत अनुरोध करनेपर भी आप विचलित न हुए।

वहां सत्तूकार-दानादि शुभ कृत्य करते हुए आनन्दपूर्वक रहने लगे। रोलूके आपमल्ल और देपमल्ल नामक दो पुत्र हुए। इनमें देपमल्लकी भार्या देवलदेकी कुक्षिसे १ लक्ष्मी, २ भादा, ३ कैलही, ४ देलहा ये ४ पुत्र उत्पन्न हुए। इनमें लक्ष्मीको लक्ष्मीने प्रसन्न हो ७ पीढ़ियोंतक रहनेका वरदान दिया और वे वीसलपुरमें रहने लगे। भादा जैसलमेर, कैलहा भहेवा रहने लगा और चौथे लघु पुत्र देलहेका वृतात यह है: सं० १४४६ में आपका जन्म हुआ, १३ वर्षकी अवस्थामें विवाह करनेके लिये आप वरात लेकर राड्रह जाने लगे। मार्गमें खीमजथलके समीप जान (वरात) ठहरी वहां एक खेजड़ीका वृक्ष था उसे देखकर एक राजपूतने कहा कि इस वृक्षके ऊपरसे जो वरछी निकाल देगा मैं उससे अपनी पुत्रीका पाणिग्रहण कर दूंगा। देलहे कुमारके इशारेसे उनके सेवक (नाई) ने राजपूतके कथनानुसार कर दिखाया पर इस कार्यको करनेमें अधिक परिश्रम लगानेसे उसका प्राणान्त हो गया, इस घटनासे

*अन्य प्रमाणोंमें इसका कारण और ही पाया जाता है पर उन सबका विचार स्वतंत्र निबंधमें करेंगे।

देलह-कुमारको वैराग्य उत्पन्न हो गया और (सरतर) श्री क्षेम-कीर्तिजीको वदनाकर (अपन) दीक्षा ग्रहण करनेके भाव प्रकट किये। एव उनका करनानुसार जिनवर्द्धन सूरिजीके पास स० १४६३ मे दीक्षा ग्रहण की, दीक्षा ग्रहण करनेके अनन्तर आपन शास्त्रोका अध्ययन कर गीतार्थता प्राप्त की। स० १४७० मे आपकी योग्यता देखकर जिनवर्द्धनसूरिजीने आपको वाचक पद प्रदान किया।

इधर जैसलमेरके जिनालक्ष्मणपालन स्थानान्तर करनेके कारण जिनवर्द्धनसूरिजीसे गच्छमेद हुआ और उनकी गाला पीपलिया नामसे प्रसिद्ध हुई, तालहन जिनभद्र सूरिजीको स्थापित किया जिनवर्द्धन सूरिजीन कीर्तिराजजी (देलहकुमार) को अपने पास बुलाया, पर आपको अर्द्धरात्रि समय वीर (देवता) ने कहा कि उनका आत्रुप्य तो मात्र ६ महीनेका ही है और जिनभद्र सूरिजीकी भावी उन्नति होने वाली है। इससे आपने जिनवर्द्धन सूरिजीके पास न जाकर चारचतुमास महेवमे ही किये। इसके पश्चात् जिनभद्र सूरिजीके बुलानेपर आप उनके पास पधारे। उन्होंने स० १४८० मे आपको पाठक पद प्रदान किया। ग्राह लम्सा और केलहा महेवेसे जैसलमेर आये और गच्छनायकको आमन्त्रित कर उन्होंने स० १४६७ मे कीर्तिराजजीको सूरि पद दिलनाया। लम्सा और केलहाने प्रचुर द्रव्य व्यय कर, महोत्सव किया। लम्से नलहेने जलेश्वर, गिरनार, गोडी-पार्वनाय और सोरठ (रानुजय आदि) के चैत्यालयोकी यात्रा की, मन्त्र लाहिन की एव आचार्य श्रीको चातुर्मास कराया। कीर्ति-

रत्न सूरिजीके ५१ शिष्य थे, सं० १५२५ वै० शु० ५ को आपका स्वर्गवास हुआ। आपने अपने कुटुम्बियोंको ७ शिक्षाये दी जो इस प्रकार है: १ मालवा, थरवा, सिध और संखवाली नगरी न जाना, २ गच्छभेदमें शामिल न होना, ३ पाटशक्त होना, ४ दीक्षा न लेना, ५ कोरटे और जैसलमेरमे देहरे बनवाना, ६ जहां बसो, नगरके चौराहेसे दाहिनी ओर बसना ७... .. ।

आपके रचित 'नेमिनाथ काव्य' प्रकाशित है एवं और भी कई स्तवनादि उपलब्ध हैं। आपकी शाखामें अभी जिनकृपाचन्द्र सूरिजी एवं कई यतिगण विद्यमान हैं।

७० जयसागर

(पृ० ४००)

उज्जयंत शिखर पर नरपाल संवपतिने 'लक्ष्मी तिलक' नामक विहार बनाना प्रारम्भ किया, तब अस्वा देवी, श्री देवी आपके प्रत्यक्ष हुई और सरसा पार्श्व जिनालयमे श्रीशेष, पद्मावती सह प्रत्यक्ष हुआ था। मेदपाट-देशवर्ती नागद्रहके नवखण्डा-पार्श्वचैत्यालय में श्री सरस्वती देवी आप पर प्रसन्न हुई थी। श्री जिनकुशल सूरि जी आदि देवता भी आप पर प्रसन्न थे, आपने पूर्वमे राजगृह नगर (उर्दंड) विहारादि, उत्तरमें नगरकोट्टादि, पश्चिममे नागद्रह आदि की राज सभाओंमे वादिवृन्दोंको परास्त कर विजय प्राप्त की थी आपने संदेहदौलावली वृत्ति, पृथ्वीचन्द्र चरित्र, पर्वरत्नावली, ऋषभ स्तव, भावारिवारण वृत्ति एवं संस्कृत प्राकृतके हजारों

स्तवनादि बनाये । अनेको आवकोको सधपति बनाये और अनेक शिष्योको पढाकर विद्वान बनाये ।

वि० आपके शिष्यागुरु श्री जिनराज नूरिजी और विद्यागुरु जिनवर्द्धन सूरिजी थे । स० १४७५ के लगभग जिनमद्र सूरजीन आपको उपाध्याय पद दिया था । आपन अनेको देगोमें विहार किया और अनेको कृतिया रची थीं, जिनमें मुख्य ये हैं —

(१) पर्वरत्नावली कथा (१४७८ पाटण, गा० ३२१) (२) विज्ञप्ति त्रिवेणी (स० १४८४ मिन्यु देग मलिकवाहनपुरसे पाटण सूरिजीको त्रेपित), (३) पृथ्वीचन्द्र चरित्र (स० १५०३ प्रन्हादनपुर शि० सत्यरचिकी प्रार्थनासे रचित), (४) सदहदोलावली लघुवृत्ति स० १४६५, (५-६-७) गुरुपारतन्त्र वृत्ति, उपसर्गहर, भावारिवारणवृत्ति (८) भापामें—वयरस्वामी रास (गा० ३६ स० १४६०) (९), कुल सूरि चौ० (१४८१ मलिकवाहनपुर) और सस्कृत भाषाक स्तवनादि (स० १५०३ लि० पत्र १२ जय० भ०) भी अनेको उपलब्ध हैं । आपक शिष्य परम्परादिने लिये देखें —विज्ञप्ति त्रिवेणी, जैनसाहित्यनोसकितइतिहास और युगप्रधान—जिनचन्द्र मूरि (पृ० २०३), जैनस्त्रोत्रसन्दोह भा० २ । अस्तुत नन्वके पृ० २३ मे सुप्रित सरतर पहावली भी आपक आदजसे रचित है ।

क्षेमराजोपाध्याय

(पृ० १३४)

छाजहड गोत्रीय शाह लीलाकी पत्नी लीलादेवीक आप पुत्र थे ।

सं० १५१६ से गच्छ नायक जिनचन्द्र भूरिजीने आपको दिक्षा दी थी। वा० सोमध्वजके, आप गुरुगिष्य थे और उन्होंने ही आपको विद्याव्ययन कराया था। आपके रचित साहित्यकी संक्षिप्त सूची इस प्रकार है :

(१) उपदेश सप्ततिका (सं० १५४७ हिन्दारकोट वास्तव्य श्रीमाली पट्टु पर्पट दौदाके आप्रहसे रचित, जैनधर्म प्रसारक सभासे प्रकाशित) ।

(२) इक्षुकार चौ० गा० ५० (६५) हमारे संग्रहमें नं० २५०

(३) आवक विधि चौ० गा० ७० (सं० १५४६) हमारे संग्रहमें नं० ७६४ ।

(४) पार्श्वनाथ रास (गा० २५) ५ श्रीमंधरस्तवन, जीरावलास्त०, पार्श्व १०८ नाम स्तोत्र, वरकाणास्त०, ज्ञानपंचमीस्त०, वीरस्त०, समवसरण स्तवन, उत्तराव्ययन सत्यादि उपलब्ध हैं ।

सं० १५६६ आश्विन सु० २ को इनके पास कौटडा वास्तव्य मं० लोला आवकने व्रत ग्रहण किये थे, जिसकी नोंध १ गुटकेमें है। अन्य साधनोंसे आपकी परम्परा इस प्रकार ज्ञात होती है :

(१) जिनकुण्डल सूरि, (२) विनयप्रभ (३) विजय तिलक (४) क्षेमकीर्ति (इन्होंने जीरावला पार्श्वनाथके प्रसाद ११० गिष्य किये) इनके नामसे क्षेम गारवा प्रसिद्ध हुई, (५) क्षेमहंस, (६) सोमध्वजजीके (७) आप गिष्य थे। आपके मुख्य ३ शिष्य थे, जिनमेंसे प्रमोदमाणिक्य शि० जयसोम और उनके शि० गुणविनयके लिये देखे युगप्रधान जिनचन्द्र सूरि (पृ० १६७)

देवतिलकोपाध्याय

[पृ० ५५]

भरतखेत्रने अयोध्या-वाहड गिरि नामक प्रसिद्ध स्थानमे ओरनाल वगीय भणजाली गोत्रने गाह करमचन्द्र निवास करते थे और उनको सुहाणादे नामक पत्नीसे आपका जन्म हुआ था। ज्योतिषीने आपका जन्म नाम 'ददो' रखा। देदा कुमर अनुक्रमसे बडे होन लगे और ८ वर्षकी वयमे स० १५४१ मे दीक्षा ग्रहण की एव सिद्धान्तोका अध्ययन कर स० १५६० मे उपाध्याय पदसे विभूषित हुए।

स० १६०३ मार्गशीर्ष शुक्ला ५ को जैसलमेरमे अनजन आराधनापूर्क आपकी मद्गति हुई। अग्नि-संस्कारके स्थलपर आपका स्तूप बनाया गया, जो कि बडा प्रभावशाली और रोगादि दुःखोको विनाश करनेवाला है।

स० १५८३-८५ मे आपने दो गिलालेख-प्रगस्तियें रची थी, दरे जै० ले० स० न० २१५४।५५

आपके लिखित एव सरोधित अनेको प्रतिधा वीकानेरके कई भण्टारोमे विद्यमान हैं। आपने हस्ताक्षर बडे सुन्दर और सुनाय्य थे।

आपने सुगिन्य हर्षप्रभ शि० हीरकलजकृत कृतियोंके लिये देरे यु० जिनचन्द्र सूरि चरित्र पृ० २०६ एव आपने शि० विजयराज शि० पद्ममन्दिरकृत ग्रन्थनमारोहार वालावोध (स० १६५१) श्री पूज्यजीन मन्त्रमे उपलब्ध है।

श्री देवतिलकोपाध्यायजीकी गुरुपरम्परा उम प्रकार थी। नागर-चन्द्र सूरि (१५ वी) जि० महिमराज जि० दयाभागरजी केजि० ज्ञान-मन्दिरजीके आप गुरुशिष्य थे। महिमराजके जि० मोमसुन्दरकी परम्परामें सुखनिधान हुए, जिनका परिचय आगे लिखा जायगा।

दयातिलकजी

[पृ० ४१६]

आप उपरोक्त क्षेमराजोपाध्यायजीके शिष्य थे। आपके पिताका नाम वच्छागाह और माताका वाल्हादेवी था। आप नव-विघ्न परि-ग्रहके त्यागी और निर्मल पंचमहाव्रतोंके पालनेमें शूरवीर थे।

सहोपाध्याय पुण्यसागर

[पृ० ५७]

उदयसिंहजीकी भार्या उत्तम दे ने आपको जन्म दिया था। श्रीजिनहंस सूरिजीने स्वहस्तकमलसे आपको दीक्षा दी थी।

आप समर्थ विद्वान और गीतार्थ थे। आपके एवं आपके शिष्य पद्मराज कृत कृतियों आदि का परिचय युगप्रधान जिनचंद्र सूरि ग्रन्थके पृष्ठ १८६ में दिया गया है।

उपाध्याय साधुकीर्तिजी

[पृ० १३७]

ओशवाल वंशीय सचिंती गोत्रके शाह वस्तिगकी पत्नी खेमलदेके आप पुत्र थे। दयाकलशजीके शिष्य अमरमाणिक्यजीके आप

सुजिन्य था। आप घड़े निहान था। स० १६२५ मि० व० १२ आगममें अनन्तर तमामें तपागञ्जा। को पोपट्टी पचामे निरंतर किया था और विठानोन आपकी रटी प्रकसाफी थी, मस्कुनमे आपका भाषण घडा मनोहर होता था।

स० १६३२ माघव (विंशात्र) सुस्ता १५ को जिनचन्द्र सूरि नीने आपकी उपाध्याय पत्र न्तान किया था और अनेक स्थानोंमें विहार कर अनन्त भन्वा माआनी आपने नन्भार्गगामी धनाया था।

स० १६४६ म आपका शुभागमन जालीर हुआ, वहा माह कृष्ण पचम आयुष्यनी अल्पतानी शानन्तर अनजन आरण पूर्वन आवाधना फी और चतुर्शीको स्वा मिधार। आपका पुनीत गुणाकी स्तुतिमें वहा स्तूप निमाण कराया गया जसे अननानन्त जन नमुनाय वन्दन करता है।

स० १६२५ क गान्त्राय विजयना वि। र धृतात आपन सतीथ कनक सोम कृत जननपत्थलिमे विस्तारसे है। सरल और विरोधी होनमे इनना मार यहा नहीं किया गया, जिज्ञासुओंको मूल वलि पढ लेनी चाहिये।

आपन एव आपन गिष्य त्रिन्योप कृतियोंकी सूची यु० जिनचन्द्र सूरि प्रन्थन पृ० १६२ म ती गयी है। आपकी परम्परामे कविन्तर धर्मवर्धन अच्छे कवि हो गये हैं, जिनका परिचय "राजस्थान" पत्र (वर्ष २ अक २) मे विस्तारसे दिया गया है।

महोपाध्याय समयसुन्दर

(पृ० १४६ से १४८)

पोरवाड शातीय रूपजी जाहकी भार्या लीलादेकी कुक्षिसे

साचौरसे आपका जन्म हुआ था। नवयौवनावस्थामें यु० जिन-चन्द्र मूरिजीके हस्तकमलसे आप दीक्षित हुए थे। श्री मकलचन्द्रजीके आप शिष्य थे और तर्क व्याकरण एवं जैनशास्त्रोंका उच्चतम अभ्यास कर (गीतार्थता-)पांडित्य प्राप्त किया था। मघाट अकबरको एक पद (राजा नो ददते सौख्यम्) चमत्कृत ८ लाख अर्थ वतलाकर के (रखित) किया था। विद्वद् समान और श्री संवसे आपकी असाधारण ख्याति थी। लाहौरमें जिनचन्द्र मूरिजीने आपको वाचक पद प्रदान किया था। आपके महत्वपूर्ण कार्यकलाप ये हैं।

(१) जैलमरके रावल भीमको प्रसन्न कर मयणों द्वारा मारे जानेवाले साडा-जीवोंको छुड़ाया था।

(२) शीतपुर (सिद्धपुर) में मखनूम महमद गेखको प्रतिबोध देकर पाच नदीके (जलचर) जीवों विशेषतया गायोंकी रक्षाका पद्ध बजवानेका प्रशंसनीय कार्य किया था।

(३) मंडोवराधिपतिको रखित कर मेडतेमें वाजे बजवाने द्वारा शासन प्रभावना की थी।

(४) परोपकारार्थ अनेकों ग्रन्थों भाषा काव्योंकी (वृत्तिये, गीत, छन्द) प्रचुर प्रमाणमें रचना की थी।

(५) गच्छके सभी मुनियोंको (गच्छ) पहिरामणी की थी।

(६) सं० १६६१ में क्रिया-उद्धारकर कठिन साध्वाचार पालनका आदर्श उपस्थित किया था।

(७) आपका शिष्य-परिवार बड़ा विशाल और विद्वान् था। वादी हर्ष नन्दन जैसे आपके उद्भूत विद्वान् शिष्य थे। श्री जिनसिंह

सूरिजीने लखरमे आपको उपाध्याय पद प्रदान किया था। स० १७०२ क चैत्र शुद्ध त्रयोदशीको अहमदाबादमे जनमन आराधना-पूर्वक आप स्वर्ग मिथार। आपन विस्तृत कृति-कलापकी सखिप्त सूची यु० जिनचन्द्र सूरि प्रन्थने पृ० १६८ मे दी गयी है।

यश कुशल

(पृ० १४६)

श्री कनकसोमजीक आप जिप्य यां हमार सनहक (अन्य) गीत द्वयसे ज्ञात होता है कि हाजीखानडेर (सिध) मे आपका स्वर्गवास हुआ था। वहा आपका स्मृति मंदिर है आपक जिप्य मुवनमोम शि० राजसागरक गीतानुसार आप वडे चमत्कारी थे आर आपके परचे (चमत्कार) प्रत्यक्ष और प्रसिद्ध हैं। राजसागरने स० १७५६ फाल्गुन शुद्ध ११ को वहाकी यात्रा की। आपके गुरु कनकसोम-जीका परिचय देखे — युग० जिनचन्द्र सूरि पृ० १६४।

करमसी

(पृ० २०४)

आपकी जन्मभूमि जेसलमर है। आपके पिताका नाम चापा शाह, माताका चापल द और गोत्र चोपडा था। आप वडे तपस्त्री थे। २५० बले (छठ भक्त याने २ उपवास) और निवी आम्बि-लादि तो अनेको किये थे। वैशाख शुद्ध ७ को आपन सयारा किया था और आपका गच्छ सरतर था।

सुखनिधान

(पृ० २३६)

आप हुंजड गोत्रीय और श्री समयकलशजीके सुशिष्य थे। आपके लिखित अनेकों प्रतिधा हमारे संग्रहमे हैं, जिनसे ज्ञात होता है कि आप सागरचन्द्रसूरि-सन्तानीय थे। आपकी परम्पराके नाम ये हैं: (१) सागरचन्द्रसूरि, (२) वा० महिमराज, (३) वा० सोम-सुन्दर, (४) वा० साधुलाभ, (५) वा० चारुधर्म, (६) वा० समय-कलशजीके आप शिष्य थे। आपके शिष्य गुणसेनजीके रचित भी कई स्तवनादि उपलब्ध हैं और उनके शिष्य यशोलामजी तो अच्छे कवि हो गये हैं। उनके लिखित और रचित अनेकों कृतियां हमारे संग्रहमे हैं। विशेष परिचय यथावकाश स्वतन्त्र लेखमे दिया जायगा।

वाचनाचार्य पद्मह्वस

(पृ० ४२०)

आप गोलछा गोत्रीय चोलशाहकी पत्नी चांगादेकी कुक्षिसे अव-तरित हुए थे। आपको लघुवयमे युगप्रधान श्रीजिनचन्द्रसूरिजीने अपने कर-कमलोंसे दीक्षित कर श्री० तिलककमलजीके शिष्य बनाए। ३७ वर्ष पर्यन्त निर्मल चारित्र-रत्नका पालन करते हुए सं० १६६१ मे वालसीसर पधारे, चातुर्मास वहीपर किया। ज्ञानबलसे अपना अन्त समय निकट जानकर विशेष रूपसे आराधना और पञ्च-परमेष्ठिका ध्यान करते हुए छः प्रहरका अनशन व्रत पालनकर मित्ती भाद्रव कृष्णा १५ को मध्याह्नके समय स्वर्गलोकको प्रयाण कर गए।

लघिकल्लोल

(पृ० २०६)

श्रीश्रीनिवाससूरिजी का सार विमलराजजीक आप जिये व । आप श्रीमाली लाडण ॥ श्री पत्नी लाडिमन्थ पुत्र व । स० १६८१ म गच्छपतिर आन्जम आप मुज पधार । वहा कार्तिन कृष्णा पश्रीको जनजन आराधनापूर्वक आपना स्वगानम हुआ । शाह पीया-हाथी-रामसिंह माटण आनि मुज नगरक भण्डारान आवकाय जमसे पूर्व नि ॥ श्री ओर आपनी चरणपादुना मागजीन कृष्णा ७ को स्थापित की गयी ।

आपका विवेकपरिचय यु० जिन चन्द्रसूरि पृ० २०६ मे निया गया है ।

विमल कीर्ति

(पृ० २०८)

हुनड गोत्रीय श्रीचन्द्रजाटका पत्नी गवरादधी आपकी जन्मदात्री थी । आपन स० १६१२ माह सुक्ला ७ को साधुसुन्दरोपाध्यायन पास टीका ग्रहण की । श्रीनिवाससूरिजीन आपको वाचक पत्र अलट्टन निराधा ।

स० १६६० मे (मुल्ताण चतुमास आये) फिरहोर-मिन्धमे आप स्वर्ग मिधार ।

आपकी कृतियाकी सूची युगत्रयान जिनचन्द्रसूरि पृ० १६३ मे दी गई है । स० १६७६ मि० सु० ६ जिनराजसूरिजीक उपदरासे स० विमलकीर्तिजीक पास आविका पमान १० व्रत ग्रहण किये ।

वाचनाचार्यसुखसागर

(पृ० २५३)

वाचनाचार्यजी साध्वाचारकी कठिन क्रियाओंको पालन करनेमें बड़ा यत्न करते थे। सं० १७२५ में गच्छनायकके आदेशसे और स्तम्भ तीर्थकी यात्राके लिये खम्भातमें चतुर्मास किया। चतुर्मास सानन्द पूर्ण हुआ। सर्व नर-नारी आपके वचनकलासे प्रसन्न थे। चतुर्मासके अनन्तर ज्ञानबलसे अपना आयुष्य अल्प ज्ञातकर अनशन आराधना पूर्वक मार्गशीर्ष कृष्णा १४ सोमवारको स्वर्ग सिधारे। उस समय आप सावचेनीके साथ उत्तराध्ययन सूत्रका श्रवण कर रहे थे, श्रावक समुदाय आपके सन्मुख बैठे थे। स्वर्गप्राप्तिके पश्चात् वहां आपकी पादुकाएँ स्थापित की गईं।

वा० हीरकीर्ति

(पृ० २५६)

युग० श्रीजिनचन्द्रमूरिके शिष्य वा० तिलककमल शि०पद्महेमके शिष्य दानराज, निलयसुन्दर, हर्षराजादि थे। इनमें दानराजजीके शिष्य हीरकीर्ति गोलछा गोत्रीय थे। सं० १७२६में जोधपुरमें आपका चतुर्मास था। वही श्रावण शुक्ला १४ को ८४ लाख जीवायोनियोंसे क्षमतक्षामणाकी, दो प्रहरके अणशण आराधनापूर्वक आपका स्वर्गवास हुआ।

आपकी स्मृतिमें इसी संवत्में माघ कृष्णा १३ सोमवारको (१) पद्महेम, (२) दानराज, (३) निलयसुन्दर, (४) हर्षराजकी पादुकाओंके साथ आपकी पादुकाएं भी स्थापित की गईं।

आपकी परम्परादिक विषयमे युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि ग्रन्थ (पृ० १७३) दर्शना चाहिये ।

उ० भावप्रभोट

(पृ० २५८)

श्रीजिनराजसूरि (द्वितीय) क गि० भावविजयने शिष्य भाव-
विनयजीर आप सुशिष्य थे । बाल्यावस्थामे ही आपन चारित्रका
ग्रहण किया था । श्रीजिनरत्नसूरिजीन आपन निमलमतिकी
नगमा की थी और उनर पट्टधर श्रीजिनचन्द्रसूरिजी तो आपको
(विद्वतादि गुणोक् कारण) अपने साथ ही रगत थे । आप बड़े
प्रभावशाली और उपाध्याय पदसे अलंकृत थे । स० १७४४ माघ
कृष्णा ५ सुस्वारर पिच्छे प्रहर, अनगन (भवचरिम-पचकराण)
द्वारा समाधिपूर्वक आप स्वर्ग निधन ।

आपन शि० भावभागर रचित मतपदार्थी वृत्ति (१७३० भा०
सु० वेनातट, पत्र ३७) कृपाचन्द्र सूरि भ० (व० न० ४६ न० ६११)
में उपलब्ध हैं ।

चद्रकीर्ति

(पृ० ४०१)

स० १७०७ पोष कृष्ण १ को निलाडेमे आपका अनगन आरा-
धन सह स्वर्गवाम हुआ । यह कवित्त आपन शि० सुमतिरगने रचा
है , जो कि अच्छे कवि थे । दर्से यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० २०६, ३१५

कविवर जिनहर्ष

(पृ० २६१)

सरस्वर गच्छीय गान्तिहर्षजीने शिष्य कविवर जिनहर्ष अष्टा-

रहवी शताब्दीके सुप्रसिद्ध कवि थे । आपने मंद-वृद्धियोंके लाभार्थं अत्रुंजय-महात्स्य जैसे अनेको विशाल ग्रंथोंकी भाषा चौपाई रचकर बहुत उपगार किया । आप साध्वाचार पालनेमें सदा उत्तम करते रहते थे, और आपके व्रत नियम अन्तिम अवस्था तक उंखंडित थे । आपके अनेकानेक सद्वृत्तियोंमें १ गच्छममत्वका त्याग (जिसके उदाहरण स्वरूप सत्यविजय पन्थास रास प्रकाशित ही है) २ जन समुदाय अनुवृत्तिका त्याग ३ ऋजुता ४ राग द्वेषका उपशम आदि मुख्य हैं । आप रास चौपाई आदि भाषा काव्योंके निर्माण करनेमें अप्रमत्त रह, ज्ञानको बड़ा विस्तार करते रहते थे ।

आपके गच्छममत्व परित्यागके सद्वृत्तियोंसे तपागच्छीय वृद्धि-विजयजीने आपके व्याधि उत्पन्न होनेके समयसे बड़ी सेवा-भक्ति और वैयावचकी थी और अन्तिम आराधना भी उन्होंने ही कराई थी । पाटणमें आप बहुत वर्षों तक रहे थे, आपका स्वर्गवास भी वही हुआ, आवकोंने अंत-क्रिया (माडवी रचनादि) बड़ी भक्तिसे की । आपके विशाल कृतियों नोंघ जै० गु० क० भा० २ में देखनी चाहिये । उसके अतिरिक्त और भी कई रास आदि हमें उपलब्ध है, उनमें मुख्य ये हैं. १ मृगापुत्रचौ० (१७१५ मा० व० १० सत्यपुर) (२) कुसम श्री रास (१७१७ मि० १३) (३) यशोधर रास (१७४७ वै० सु० ८ पाटण) (४) कनकावती रास (अपूर्ण) ५ श्रीमतीरास (१७६१ .मा० सु० १० पाटण, ढाल १४, रामलालजी यतिका संग्रह) और राजवन सज्ञायादि अनेक उपलब्ध हैं ।

कवि अमर विजय

(पृ० २४८)

आप वाचक उदय तिलक (जिनचंद्रसूरिशि०) क जिप्य य ।
आप अच्छे विद्वान और सुकवि थे, आपके रचित कृतियों की सम्पन्न
सूची इस प्रकार है

१ रात्रि भोजन चौ० (स० १७८७ द्वि० भा० सु० १ तु० ना-
पासर, जातिविजय आग्रह)

२ सुमंगलारास (प्रमाद विमल) स० १७७१ रतुराय पूर्णतिथि ।

३ कालाशवेली चौ० (१७६७ आर्यातीज, राजपुर)

४ धर्मदत्त चौ० (१८०३ धनतेरस राहसर, पत्र ६६)

५ सुदर्शनसेठ चौ० (१७६८ भा० सु० ५ नापासर)

६ भेताराज चौ० (१७८६ आ० सु० १३ मरसा) जय० भ०

७ सुकमाल चौ० (बृहत्ज्ञानमंडार-वीकानेर)

८ सम्यक्स ६७ बोलसझाय (स० १८००) जय० भ०

९ अरिहत्त १२ गुणस्तवन (१७६५) गा० १३ जय० भ०

१० मिद्धाचल स्तवन (१७६६) गा० १५ जय० भ०

११ सुनतिष्ठ चौ० (१७६४ मि० मरोट) जौ० गु० कविओ

भा० २ पृ० ५८२

१२ कशी चौ० (१८०६ विजयदरामी गारवदसर) रामलाल-
जी सग्रह ।

१३ मुच्छ नालड कथा पत्र ६ (स० १७७२ विजयदरामी) हमार
सग्रहमे न० २२८ ।

श्री अमर विजयजीके शि० लक्ष्मीचन्द्र कृत मुत्रोधिनीवैद्यकादि ग्रन्थ उपलब्ध है और द्वि० शि० उ० ज्ञानवर्द्धन शि० कुशलकल्याण शि० दयामेरुक्मिन् ब्रह्मसेन चौ० (सं० १८८० जेठ सु० १ बु, भावनगर) उपलब्ध है। आपकी परम्परामे यतिवर्य जयचंद्रजी अभी विद्यमान है।

सुगुरुवंशावली

(पृ० २०७)

जिनभद्र-जिनचन्द्र, जिनसमुद्र-जिनहंससूरिर्जाके पट्टधर जिन-माणिक्यसूरिजी थे। उनके पारखवंगीय वा० कल्याणधीर नामक शिष्य थे। उनके भणशाली गोत्रीय वा० कल्याण लाम और कल्याणलामके उ० कुशललाम नामक विद्वान शिष्य थे। इनका विशेष परिचय यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० १६४ मे देखना चाहिये।

श्रीमद् देवचन्द्रजी

(पृ० २६४)

वीकानेर नगरके समीपवर्ती एक रमणीय ग्राम था, वहा लुणिया शाह तुलसीदासजी निवास करते थे, उनके धनबाइ नामक शीलवती पत्नी थी। एक समय खरतर वा० राजसागरजी वहा पधारे। दम्पतिने भावसे उन्हे वंदना की और धनबाइने जो कि उस समय गर्भवती थी, कहा कि यदि मेरे पुत्र होगा तो आपको वहरा दूंगी। गर्भ दिनों-दिन बढने लगा, उत्तम गर्भके प्रभावसे असाधारण स्वप्न और उत्तम दौहद उत्पन्न होने लगे। इसी समय वहां जिनचन्द्र सूरिजी का शुभागमन हुआ इस समय धन बाइके एक पुत्र तो विद्यमान

था और गर्भवती थी। लक्षणोंसे गुरुश्रीने उनके फिर भी पुत्र होने का निश्चय किया और “इस द्वितीय पुत्रको हमें देना” कहा, पर धनवाइ वाचकश्रीको इससे पूर्व ही वचन द चुकी थी।

स० १७४६ में पुत्र उत्पन्न हुआ, गर्भक समय स्वप्नमें इन्द्र आदि देवों द्वारा मेरु पर्वतपर प्रभुका स्नान महोत्सव किये जानेका दृश्य दृशा था। उसीन स्मृति सूचक नवजात बालकका शुभ नाम ‘दवचन्द्र’ रखा। अनुक्रमसे वृद्धि पात हुए जन वह बालक ८ वर्षका हुआ, उस समय बा० राजसागरजीका फिर वहीं शुभागमन हुआ दम्पति (धनवार) ने अपने वचनानुसार अपने होनहार बालकको गुरु श्रीक समर्पण कर दिया। गुरु श्रीने शुभ मुहूर्त देख स० १७५६ में लज्जु दीक्षा दी। यथासमय जिनचन्द्र सूरिजीक पास बड़ी दीक्षा दिलाई गई, सूरिजीने नव दीक्षित मुनिका नाम ‘राजविमल’ रखा। राजसागरजीने प्रमन्न होकर आपको सरस्वती मन्त्र प्रदान किया, श्रीदवचन्द्रजीने वेनातट (विलाडा) नामके भूमिपदमें रहकर उस का साधन किया, देवी सरस्वती आपपर प्रमन्न हुई जिससे फल स्वरूप थोड़े ही समयमें आप गीतार्थ हो गये।

गुरुश्रीने स्वपरमतक सभी आवश्यक और उपयोगी शास्त्र पढाकर आपके प्रतिभामें अभिवृद्धि की। उन शास्त्रोंमें उल्लेखनीय ये हैं—पदावग्यकादि जैन आगम, व्याकरण, पञ्चकल्प, नैपथ्य, नाटक, ज्योतिष, १८ कोष, कौमुदीमहाभाष्य, मनोरमा, पिङ्गल, स्वरोदय, तत्त्वार्थ आवश्यक वृहद्भृत्ति, हेमचन्द्रसूरि, हरिभद्रसूरि और यशोविजयजी कृत ग्रन्थ समूह, ६ कर्म ग्रन्थ, कर्म ऋति इत्यादि।

सं० १७७४ में वाचक राजसागर और १७७५ में उपाध्याय ज्ञानधर्मजी स्वर्ग सिधारे। मरोटमें देवचन्द्रजीने विमलदासजी की पुत्री माइजी, अमाइजीके लिये 'आगमसार' ग्रन्थ बनाया।

सं० १७७७ में आप गुजरात-पाटण पधारे, वहाँ तत्त्वज्ञानमय स्यादवाद युक्त आपके व्याख्यान श्रवणार्थ अनेकों लोग आने लगे। इसी समय श्रीमाली ज्ञातीय नगरसेठ तेजसी दोसीने जो कि पूर्णिमा गच्छीय आवक थे, अपने गुरु श्रीभावप्रमसूरि (जिनके पास विशाल ग्रन्थ भण्डार था, और अनेकों शिष्य पढ़तं थे) के उपदेशसे सहस्त्रकूट जिनालय निर्माण कराया था। एक वार देवचन्द्र जी उक्त नगरसेठ जीके घर पधारे और उनसे सहस्त्रकूटके १००० जिनोंके नाम आपने अपने गुरुजीसे श्रवण किये होंगे? पूछा। श्रेष्ठिने चमत्कृत होकर प्रत्युत्तर दिया कि भगवन्! नहीं सुने। इसी अवसरपर ज्ञानविमल सूरिजी पधारे। श्रेष्ठिने उन्हें वन्दन कर सहस्त्रकूटके १००० नाम पूछे। उन्होंने नाम व उल्लेख-स्थान फिर कभी वतलानेका कहकर श्रेष्ठिकी जिज्ञासा शान्ति की। अन्यदा पाटण-साहीपोलके चौमुख वाड़ी पार्श्वनाथजीके मन्दिरमे सतरह भेदी पूजा पढ़ाई गई उसमे श्रीदेवचन्द्रजी और ज्ञानविमल सूरिजी भी सम्मिलित हुए। इसी समय सेठ भी दर्शनार्थ वहा पधारे और सूरिजीको देख फिर पूर्व जिज्ञासा जागृत हुई, अतः सूरिजीको सहस्त्रकूट जिन के नामोंकी पृच्छा की, उन्होंने उत्तरमे 'प्रायः सहस्त्रकूट जिन नामोंकी नास्ति (विच्छेद) ज्ञात होती है, सम्भव है कोई शास्त्रमे हो, कहा'। इन वचनोंको श्रवण कर देवचन्द्रजीने उनसे कहा

कि आप तो श्रेष्ठ विद्वान कहलाते हैं फिर ऐसे अयथार्थ कैसे कहते हैं, और ऐसे उचनोसे श्रावकोको प्रतीति भी कैसे हो सकती है।

यह सुनकर ज्ञानविमलसूरिजी कुछ तडककर बोले—तुम महत्त्वलभ ग्रामी हो, शास्त्रन रहस्यको क्या जानो। जिनने शास्त्रोका अभ्यास किया है, वही ज्ञान सकता है। इसी समय श्रेष्ठिने कहा, सूरिजी मुझे इस बातका निर्णय करना है। तब सूरिजीने द्रवचन्द्रजीसे कहा कि तुम्हें व्यर्थका विवाद पसन्द ज्ञात होता है। (मारवाडी फडानत “त्रैवती लडाई मोल लेन”) अन्यथा यदि तुम्हें सहस्रकूटके नाम ज्ञात हो तो बतलाओ। द्रवचन्द्रजीने शिष्यकी ओर देखा, तब विनयी शिष्य मनरूपजीने राजोहरणसे सहस्रकूटके नामोका पत्र निकालकर गुप्तश्रीन हाथमे दिया। ज्ञान विमलसूरिजीने उसे पढ़कर आश्चर्यान्वित हो द्रवचन्द्रजीसे पूछा कि आपन गुप्तश्रीका नाम शुभ नाम क्या है ? उत्तर—उपाध्याय—राजमागरजी। तब सूरिजीने कहा, आपकी परम्परा (धराना) तो विद्वद् परम्परा है, तब भला आप विद्वान कैसे नहीं होग, श्यादि श्रुदुवानयो द्वारा बहुमान किया। श्रेष्ठि तजनीका मनोरथ पूरा हुआ, सहस्रकूट नामोकी द्रवचन्द्रजीने प्रमिद्धि की। प्रतिष्ठादि अनेक उत्सव हुए।

इसने बाद द्रवचन्द्रजीने परित्रहका मवथा परित्याग कर त्रिना-उद्धार किया। स० १७७७ मे आप अहमदाबाद पधार, नागोरी सरानमे अवस्थिति की। आपकी अध्यात्म रसमय दर्शनना श्रवण कर श्रोताओको अपूर्व आल्हाद उत्पन्न हुआ। श्रीमद् देवचन्द्रजी

भगवती सूत्रके गम्भीर रहस्योंको उद्घाटन करने लगे। आपके उपदेशसे माणिकलालजी ढूढियेने मूर्ति प्रजा स्वीकार की, इतना ही नहीं उन्होंने नवीन चैत्य कराके गुरुश्रीके हाथमें प्रतिष्ठा भी करवाई। श्रीमद्रूने गान्तिनाथ पोलके भूमिगृहमें महन्त्रफणादि अनेको विम्बों की प्रतिष्ठा की, इन प्रतिष्ठादि कार्यमें प्रचुर द्रव्य खर्च किया गया और जैन धर्मकी महती महिमा हुई।

सं० १७७६ में आपने स्वभातमें चौमाना कर अनेक भक्तियोंको प्रतिबोध दिया। व्याख्यानमें आपने अत्रुञ्जय तीर्थकी महिमा बतलाई, इससे आवकोंने अत्रुञ्जयपर कारखाना स्थापित कर नवीन चैत्य और जीर्णोद्धार करवाना आरम्भ किया। सं० १७८१-८२-८३ में कारीगरोंने वहाँ चित्रकारी आदिका बड़ा ही सुन्दर काम किया। (वहाँसे विहार कर) राजनगर आये, चातुर्मासके लिये मूरतकी विशेष आग्रहपूर्वक विनती होनेसे आप सूरत पधारे। सं० १७८५-८६-८७ में पालीताने एवं अत्रुञ्जयमें बधुगाह कारित चैत्योकी देवचन्द्रजीने प्रतिष्ठा की और पुनः राजनगर आकर सं० १७८८ का चतुर्मास वहा किया। इस समय वाचक दीपचंदजीके व्याधि उत्पन्न हुई और आपाढ शुक्ला २ को वे स्वर्ग सिधारे। तपागच्छीय विनयी विवेकविजयजीको आप विद्याध्ययन कराने लगे और उन्होंने भी आपकी वैयावच्च-सेवा-भक्ति कर गुरु-कृपा प्राप्त की।

अहमदाबादमें शाह आणन्दरामजी जो कि रतन भंडारीके अग्रेश्वरी थे, गुरुश्रीसे नित्य धर्म-चर्चा किया करते थे और गुरुश्रीके ज्ञानकी गरिमासे चमत्कृत हो उन्होंने रतन भंडारीके आगे आप-

की प्रशंसा की, कि मन्त्रालीक ज्ञानी माधु पद्ये हैं। उनसे वचनोसे स्वर्गिह भी आपको नन्नाई पधार और गुरुश्रीसे ज्ञान सुधाका सेवन कर बड़े प्रमत्त हुए। देवचन्द्रजीने उपदेशसे रतन भटारी नित्य जिन पूजनादि करने लगे, एव वहा तिस्र प्रतिष्ठा, १७ भेनी पूजा आदि अनकानेक धर्मकृत्य हुआ करत, उनमे भी भटारीजी सम्मिलित होने लगे।

एक बार राजनगरमे मृगीका उपद्रव हुआ, तत्र भटारीजीने उसे निवारणार्थ गुरुश्रीसे विनयपूर्वक प्रार्थना की। आपने जामन प्रभातनादि लाभ जानकर जैन मन्त्राश्रयसे उस निवारण कर मनुष्योका कष्ट दूर किया। इस जिन-शासन और देवचन्द्रजीकी सर्वत्र सविभेद प्रशंसा होन लगी।

इसी समय रणकुजी बहुत सेना लेकर स्वभटारीसे युद्ध करने आये। भटारीजी तत्काल गुरुजीके पास आये, क्योंकि उन्हें गुरुश्रीका पूरा विश्वास था व आपने सहायक और सर्वस्व एकमात्र आपको ही मानते थे। अतः गुरुश्रीसे निवेदन किया कि सैन्य बहुत आया है, युद्धमे विजय अब आपकी ही हाथ है। गुरुश्रीने आश्वासन देकर जैनमन्त्राश्रयका प्रयोग किया, अतः युद्धमे रणकुजी हार और भटारीजीकी विजय हुई।

धोलना वास्तव्य श्रेष्ठि जयचन्दन पुरषोत्तम योगीको गुरुश्रीने चरण कमलमे नमन कराया। गुरुश्रीने योगीके मित्रात्वं ज्ञात्यको निवारणकर उसे जैनशासनानुरागी बनाया। स० १७६५ पालीतान और १७६६ ६७ में नवानगरमे चतुर्मास किया। वहा आपने दुहकोके

दोलोंको विजय कर नवानगरके चैत्योकी पूजा, जिसे दुदकोने वन्द्य करा दी थी पुन सञ्चालित की। परधरी ग्रामके ठाकुरको आपने प्रतिबोध दिया और वे गुरु आजामे चलने लगे। फिर पालीताना और पुन नवानगर चतुर्मास कर १८०२-३ में राणात्रावमें पधारे। वहाँके अधिपतिके भंगदर रोगको नष्ट किया, अत वह भी आपका भक्त हो गया।

सं० १८०४ में भावनगर पधारे, वहा भैरवा ठाकुरजी कट्टर दुदकानुयायी थे, उन्हें प्रतिबोध दिया एवं वहाँके ठाकुरको भी जैन-मनानुरागी बनाया। सं० १८०४ में पालीतानेके मृगी उपद्रवको भी आपने नष्ट किया। सं० १८०५ में लीवड़ी पधारे और वहाँके श्रावक डोसो वोहरा, शाह धारजी, शाह जयचन्द्र, जेठा, रहीक-पासी आदिको विद्याध्ययन कराया। लीवड़ी, ध्रागंदा, चूडा इन तीन गावोंमें ३ प्रतिष्ठाएँ की। ध्रागंदामें प्रतिष्ठाके समय मुखानन्दजी आपसे मिले थे।

आपके उपदेशसे सं० १८०८ में गुजरातसे शत्रुजंय सङ्घ निकला। गिरिराजपर बड़े उत्सव हुए। बहुतसे द्रव्यका सद्व्यय हुआ। सं० १८०८-९ का चतुर्मास गुजरातमें किया।

१८१० में कचरागाहने शत्रुजंयका सङ्घ निकाला, श्रीदेवचन्द्रजी भी उसके साथ पधारे थे। शाह मोतीया और लालचन्द्र जैन धर्म में प्रवीण और दानेश्वरी थे। शत्रुजंयपर गुरु श्रीने प्रतिष्ठार्ये की। शाह कचरा, कीकाने ६० हजार रुपये व्यय किये।

सं० १८११ में लीवड़ीमें प्रतिष्ठा की। वड़वाणके दुदक श्रावको

को प्रति-बोध देकर मूर्तिपूजक बनायें। उन्होंने सुन्दर चैत्य निर्माण कराये और उनमें अनेकानेक पूजायें होनी लगीं।

श्री देवचन्द्रजीके पास विचक्षण शिष्य मनरूपजी, वाणी-विजेता विजयचन्द्रजी (एव अन्य गच्छीय साधु भी आपसे पास निःश्राव्ययन करते थे) एव मनरूपजीके वक्तुजी और रायचन्द्रजी नामके शिष्यद्वय रहते थे, एव गुरु आज्ञामें रहकर गुरुश्रीकी सवामक्ति किया करते थे।

स० १८१० में श्रीमद देवचन्द्रजी राजनगर पधारे, वहां गच्छ-नाथके श्रीपूज्यजीको आमन्त्रित कर उनसे द्वारा त्रावक समुदायन बड़े उत्सवसे आपको वाचक पदसे अलङ्कृत किया।

बा० श्री देवचन्द्रजीकी दानना अमृतके समान थी। आप हरि-भद्रमूरि, यज्ञोपनिषद्जीके एव दिगम्बर गोमटसारादि तत्त्व ज्ञानके ग्रन्थोका उपदेश दत्त थे, श्रोताओकी उपस्थित दिनोदिन बढ़ने लगी। श्रीमदने मुलतान, बीकानेर आदि स्थानोंमें चतुर्मास किये एव उनको नये ग्रन्थोंकी रचना की, जिनमें दशनासार, नयचर, ज्ञानसार अष्टक-टीका कर्मग्रन्थ टीका, आदि मर्य हैं।

इस प्रकार शासन ज्योत परते हुए राजनगरके दोसी बाडेमें आप विराज रहे थे, उस समय अकस्मात् वायु कोपसे बमनादिकी व्याधि उत्पन्न हुई। श्रीमदने अपना आयुष्य निकट ज्ञातकर विनयी शिष्य मनरूपजी और उनके विप्रमान सुशिष्य श्री रायचन्द्रजी (रूपचन्द्रजी) एव द्वितीय शिष्य वादी विजयचन्द्रजी उनसे शिष्य द्वय सभाचर और विवेकचन्द्रको योग्य शिक्षा दक उत्तराध्ययन, दशवै-

कालिकादि सूत्र श्रवण करते हुए आत्माराधना कर सं० १८१०
 भाद्र कृष्ण अमावस्याको एक प्रहर रात्रि जानेपर स्वर्गवासी हुए ।
 सभी गच्छके आवकोने मिलकर बडे उत्सवके साथ आपके
 पवित्र देहका अग्नि-संस्कार किया, गुरुभक्तिमे बहुत द्रव्य व्यय किया
 गया । श्रीमद्के कार्य और आत्म-जागृतिको देखकर कवि कहता
 है कि आपको मोक्ष सन्निकट है । ७-८ भवोंके पञ्चान तो
 अवश्य ही सिद्धिगतिको प्राप्त करेगे । आपके स्वर्गगमनके समाचारों
 से देश विदेशमे शोक छा गया । कदिके कथनानुसार आपके मस्तक
 मे मणि थी, वह दहन समय उछल कर पृथ्वीमे समा गई । किसी
 के हाथ नही आई । आवक संघने स्तूप बनाकर आपकी पादुओंकी
 स्थापना की ।

आपके शिष्य मन्तरुपजी भी गुरु विरहसे आकुल हो थोडे ही
 दिनोंमे आपसे स्वर्गमे जा मिले । अभी (रासरचनाके समयमे) भी
 रायचन्द्रजी योग्यतानुसार व्याख्यानादि देकर धर्म प्रचार करते है ।
 उन्होंने अपने गुरुकी प्रशंसा स्वयं करने से अतिशयोक्ति आदिका
 सम्भव देख प्रस्तुत रास रचनेके लिये कविसे कहा और कविने
 सं० १८२५ के आश्विन शुक्ल ८ रविवारको यह 'देवविलास रास'
 बनाया ।

आपकी कृतियों श्रीमद् देवचन्द्र भा० १-२ मे प्रकाशित है ।
 उनके अतिरिक्तके लिये देखे यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० १८६
 और ३११ ।

महोपाध्याय राजसोम

(पृ० ३०५)

१६ वीं जताब्दीय सुप्रसिद्ध विद्वान क्षमाकल्याणजीक आप विद्यागुरु थे, अत उन्होंने आपका गुण गर्भित यह अष्टकवनाया है । प्रस्तुत अष्टकमे गुणोंकी प्रशंसा अतिरिक्त इतिवृत्त कुछ भी नहीं है ।

अन्य साधनोंके आधारसे आपका ज्ञातव्य परिचय इस प्रकार है—आपके रचित (१) ज्ञान पंचमी पूजा म० (२) सिद्धाचलस्तवन म० १७६७ फा० व० ७ (३) नवंबरवाली १०८ गुणस्तवन आदि उपलब्ध हैं, और आपका लि० कई प्रतिभे भी प्राप्त हैं ।

आप क्षेमकीर्ति नामान विद्वान थे, परम्पराका नामानुक्रम इस प्रकार है —

(१) जिन पुराल सूरि (२) विनय प्रभ (३) उ० विजय तिलक (४) उ० क्षेमकीर्ति (५) तपोरत्न (६) तेजराज (७) वा० मुवनकीर्ति (८) हर्ष कुजर (९) वा० लब्धिमडण (१०) उ० लक्ष्मीकीर्ति ११ सोमहर्ष (गुरु भ्राता, प्रसिद्ध विद्वान लक्ष्मीवल्लभ) १२ वा० लक्ष्मी समुद्र (१३) कपूर प्रियजीक १४ शि० आप थे । आपकी परम्परामे (१५) वा० तत्व वल्लभ (१६) प्रीतिविलास (१७) प० धर्म सुन्दर (१८) वा० लाभ समुद्र (१९) मुनिर्सिंह (२०) अमृत रग (अवीरचन्द) हुए, जोकि स० १६७१ मे स्वर्ग निधारे ।

वा० अमृत धर्म

(पृ० ३०७)

उपाध्याय क्षमाकल्याणजीक आप गुरुवर्य थे, अत पाठकजीन

अपने गुरुजीकी भक्ति सूचक इस अष्टककी रचना की है। इसका ऐतिहासिक सार इस प्रकार है .

कच्छ देशमें उपकेश वंशकी वृद्ध शाखामें आपका जन्म हुआ था, श्री जिनभक्तिसूरिजीके शिष्य प्रीतसागरजी (जिनलाभ सूरिके सतीर्थ-गुरु भ्राता) के आप शिष्य थे। आपने शत्रुंजयादितीर्थोंकी यात्रा थी एवं सिद्धातोंका योगोद्भवहन किया था। संवेगेरगसे आपकी आत्मा ओतप्रोत थी (इसीसे आपने परिग्रहका त्याग कर दिया था)। पूर्व देशमें आपके उपदेशसे स्वर्णदंडध्वज कलशवाले जिनालय निर्माण हुए थे। अनेक भव्यात्माओंको प्रतिबोध देते हुए आप जैसलमेर पधारे, और वही सं० १८५१ माघ शुक्ल ८ को समाधिसे आपको मृत्यु हुई। स्थानाग सूत्रके अनुसार आपकी आत्मा मुखसे निर्गत होनेके कारण, आप देवगतिको प्राप्त हुए ज्ञात होते हैं। आप आप वाचनाचार्य पदसे विभूषित थे। विशेष परिचय उ० क्षमा-कल्याणजीके स्वतंत्र चरित्रमें दिया जायगा।

उ० क्षमाकल्याण

(पृ० ३०८)

गुरुभक्त शिष्यने आपके परलोकवासी होनेपर विरहात्मक और गुणवर्णनात्मक इस अष्टक और स्तवको रचा है। स्तवका ऐतिहासिक सार यही है, कि सं० १८७३ पोष कृष्णा १४ को बीकानेरमें आप स्वर्ग सिधारे थे।

१६ वीं गताब्दीके खरतर विद्वानोंमें आप अग्रगण्य थे। आपका ऐ० चरित्र हम स्वतंत्र पुस्तकाकार प्रकाशित करनेवाले हैं, अतः यहाँ विगोप नहीं लिखा गया।

उ० जयमाणिक्य

(पृ० ३१०)

यति हरसचन्द्रजीन गिष्य जीवणदासजीके आप सुगिष्य व ।
१६ वीं गताब्दीय पूर्वार्धम आपकी अच्छी ख्याति थो । सेवक
स्वरूपचन्दन छदम स० १८०५ वैशाखके जुन्हा ६ को आपन (१)
जिनचैत्यकी प्रतिष्ठा करवाइ, उसका उल्लेख किया है । आपन
सुन्दरदास, वस्तपाल, दीपचन्द्र अरजुनादि कई गिष्य व, आपका
वाण्यावस्थाका नाम 'धमडा' था । आप कीर्तिरत्न सूरि जासाय थे ।

हमार सम्रहमे आपन (स० १८५५ मिंगसर वनी ३ वीकानरमे)
जीवरगि क्षमापनाको टीप है । अत यथा मभव इसके कुछ दिने
वाद ही वीकानरमे आपका स्वर्गवास हुआ होगा । आपको न्विये
हुए आदशपत्र ओर अन्य यतियाके द्विय हुए अनको पत्र हमार
सम्रहमे हैं ।

श्रीमद् ज्ञानसार जी

(पृ० ४३३)

जंगलदास वास्तव्य साड ज्ञातीय उदैचन्द्रजीकी पत्नी जीवणदने
स० १८०१ मे आपको जन्म दिया था, स० १८१२ वीकानेरमे श्री
जिनलाम सूरिजीन गिष्य रायचन्द्र (रत्नराज) जीन आप शिष्य
हुए । वीकानर नरेश सूरतमिहजी आपक परम भक्त थ । राजा रत्न-
मिहजी भी आपको बड़ी अट्टाकी दृष्टिसे दरसत थे । आपन सदा-
सुखजी नामक सुशिष्य थे ।

आप मस्तयोगी, उत्तमकवि ओर राजमान्य महापुरुष थे ।
आपक रचित समस्त ग्रन्थोकी हमन नकले कर ली है जिसे विस्तृत
ऐतिहासिक जीवन चरित्रन साथ यथावकार प्रकाशित करेगे ।

स्वर्गारगच्छ आर्यागण्डल

लावण्य सिद्धी

(पृ० २१०)

वीकराज शाहकी पत्नी गुजरदेकी आप पुत्री थी। पहुतणी रत्न-सिद्धिकी आप पट्टधर थी, साध्वाचारको सुचारुरूपसे पालन करती हुई यु० जिनचन्द्रसूरिजीके आदेशसे आप वीकानेर पधारी और वही अनशन आराधना कर सं० १६६२ में स्वर्ग सिधारी। वहा आपके स्मृतिमे थुंभ (स्तूप) बनाया गया। हेमसिद्धि साध्वीने यह गुणगर्भित गीत बनाया है।

सोमसिद्धि

(पृ० २१२)

नाहर गोत्रीय नरपालकी पत्नी सिधादेकी आप पुत्री थी, आपका जन्म नाम 'संगारी' था, यौवनावस्था आनेपर पिताश्रीने बोथरा जेठाशाहके पुत्र राजसीसे आपका पाणिग्रहण कर दिया। १८ वर्षकी अवस्थामें धर्म-उपदेशके श्रवण करते हुए आपको वैराग्य उत्पन्न हुआ और श्रास-श्रसुरसे अनुमति ले दीक्षा ग्रहण की। दीक्षित होनेपर आपका नाम 'सोमसिद्धि' रखा गया, आपने आर्या लावन्यसिद्धिके समीप सूत्र-सिद्धान्तोंका अव्ययन किया था और उनने आपको अपने पदपर स्थापित की थी। शत्रुंजय आदि तीर्थोंकी आपने यात्रा की थी। श्रावण कृष्णा १४ बृहस्पतिवारको अनशनकर आप स्वर्ग

143679



सिधारी । पहचणी (सभवत आपकी पदस्य) हेमसिद्धिने आपकी स्मृतिमे यह गीत बनाया ।

गुरुणी विमलसिद्धि

(पृ० ४००)

आप मुलतान निवासो माल्हू गोत्रीय शाह जयतसीकी पत्नी जुगताडे की पुत्री-रत्न थीं । लखुवामे ऋक्षचर्य प्रतक धारक अपने पितृव्य गोपाशाहक प्रयत्नसे प्रतिबोध पाकर आपने साध्वी श्री लावण्यसिद्धिके समीप प्रत्रज्या स्वीकार की थी । निमल चारित्रको पालन कर अनजन करते हुए वीकानरमे स्वर्ग सिधारी । उपाध्याय श्रीललितकीर्तिजीन स्तूपक अन्दर आपक सुन्दर चरणोंकी स्थापना कर प्रतिष्ठा की । साध्वी विमलसिद्धिने यह गीत रचा ।

गुरुणी गीत

(पृ० २१४)

आदिकी शा गायी नही मिलनेसे आर्याश्रीका नाम अज्ञात है । साउसुता गोत्रीय कर्मचन्दकी ये पुत्री थीं । श्री जिनसिंह सूरिजीन आपको पहचणी पद दिया जा और स० १६६६ भाद्रकृष्ण २ को विद्यासिद्धि साध्वीने यह गुरुणीगीत बनाया है ।



स्वरतर गच्छ शास्त्रार्थे

जिनप्रभसूरि परम्पर।

(पृ० ११, १३, १४, ४१, ४०,)

वीर सुधर्म-जन्म-प्रभव-अभ्यंभद्र यगोभद्र-आर्यसंभूति-भद्र-
वाहु स्थूलिभद्र-आर्यमहागिरि-आर्यसुहृन्ती-शांतिभृगि-हरिभद्रभृगि
संडिलसूरि-आर्यसमुद्र,-आर्यसंगू-आर्यधर्म-भद्रगुप्त-वज्रस्वामी-आर्य-
रक्षित-आर्यनन्दि-आर्यनागहरित-रेवंत-खण्डिल-हिमवन्त नागा-
जुन-गोविन्द-भूतदिन्न लोहदित्य-दृष्यभृगि-उमास्वातिवाचक-जिन-
भद्रसूरि-हरिभद्रसूरि-देवभृगि-नेमिचन्द्रसूरि उद्योतनसूरि-वर्द्धमान-
सूरि-जिनेश्वरसूरि-जिनचन्द्रसूरि-अभयदेवभृगि-जिनवल्लभसूरि-जि-
नदत्तसूरि- जिनचन्द्रसूरि-जिनपतिसूरि-जिनेश्वरसूरि-यहा तक तो
अनुक्रम सादृश ही है ।

इसके पश्चात् जिनेश्वरसूरिके पदधर जिनसिंहसूरि-जिनप्रभसूरि
जिनदेवसूरि-जिनमेरुसूरि(पृ० ११) अनुक्रमसे उनके पदधर जिनहित-
सूरि तकका नाम आता है (पृ० ४२) इनमे जिनप्रभसूरि जिनदेव-
सूरिका विशेष परिचय गीतोंमे इस प्रकार है

जिनप्रभसूरि

जिनप्रभसूरिजीने महागद पतिशाहको दिल्लीमे अपने गुण
समूहसे रंजित किया ।

अड्डाही, अष्टमी चतुर्थीको सम्राट उन्हे सभामे आमन्त्रित करते
थे, कुतुबुदीन भी आपके दर्शनसे बड़े प्रसन्न हुए थे ।

पतिशाह महम्मद शाह आपसे दिल्लीमे सं० १३८५ पौष शुक्ला ८

अनिवारको मिले थे, मुराणन आरमहित नमनकर आपको अपने पास निठाया, और उन मृदु भाषणोंसे प्रमत्त होकर हाथी, घोड़े, राज, धन, दश प्रामाणि जो कुछ इच्छा हो, लेनेके लिये विनती करने लगा। पर साध्याचारके विपरीत होनेसे आपन निमी भी वस्तुके लेनेसङ्गकार कर दिया।

आपन निरीहताकी मुलानन बड़ी प्रजसाकी और वस्त्रादिसे पूजा की। आपन हाथकी निजानी (मोहर छाप) वाला फरमान देकर नवीन वसति-उपाय प्रनत्रा निया और अपने पट्टहस्ति (जिसपर चार गड म्वय बैठता है) पर आरोहन कराके मीर मालि कोस साथ पोषध-शाला बडे उत्सव साथ पहुचाया। वाजिन वाजत और नुनतियां नृत्य करत हुए बडे उत्सवसे पूज्यत्री वसतीमें पधारे। पद्मानती ववीय मानिध्यस आपकी धवल कीर्ति द गीति। व्याप्त हो गई।

आप बडे चमत्कारी आर प्रभावक आचार्य थे। आपन चमत्कारों में १ आकाशसे कुल्ह (टोपी-घडा) को ओचे (रजोहरण) के द्वारा नीचे लाना २ महिन (भर्म) के मुलसे वाद करना ३ पतिगाह्य साथ उड (बट) वृक्षको चलाना ४ शत्रुजयन राजण वृक्षसे दुग्ध नरमाना ५ दोरडेसे मुद्रिका प्रगट करना ६ जिन प्रतिमासे वचन सुलाने आदि मुख्य हैं।

आपन निरुपमे स्वतन्त्र निरन्व (ला० म० गाधी लिखित) प्रनाजित होनवाला है उस, और जैनस्तोत्र मन्दोह भा० प्रस्तावना पृ० १४ से ५० एवं ही० रमिक० सम्पाणित ग्रन्थ देखना चाहिये।

जिनदेवसूरि

(पृ० १४)

जिनप्रभसूरिजीके पट्टपर आप सूर्यके समान तेजस्वी थे। मंडल-दिशिमें आपके वचनामृतमें मंगलद आत्मे कल्याणपुर (कल्यायनीय) मंडण वीर प्रभुको शुभलग्नमें स्थापित किया था। ज्ञान-विज्ञान, कला-कौशलके आप भण्डार थे एवं लक्षण, छन्द, नाटक आदिके आप वेत्ता थे।

कुलवर (शाह) के कुलमें वीरणी नामक नारि-रत्नके कुक्षिमें आपका जन्म हुआ था, जिनमिहसूरिजीके पास आपने दीक्षा ग्रहण की थी। आपके पीछेके आचार्योंकी नामावलीका पता (१६ वीं शताब्दीके पूर्वार्द्ध तकका) हमारे संग्रहके एक पत्र एवं ग्रन्थ प्राम्निियों से लगा है। जिसका विवरण इस प्रकार है -

जिनप्रभसूरि जिनदेवसूरि पट्टवरद्वय १ जिनमेरुसूरि २ जिनचन्द्रसूरि, इनमें जिनमेरुसूरिके पट्टवर जिनहितसूरि जिनसर्वसूरि जिनचन्द्रसूरि जिनसमुद्रसूरि जिनतिलकसूरि (सं० १५११) जिनराजसूरि जिनचंद्रसूरि (सं० १५८५) पट्टवरद्वय १ जिनमेरुसूरि और २ जिनभद्रसूरि (सं० १६००) जिनभानुसूरि (सं० १६४१)



वेगड़ खरतरशाखा

(पृ० ३१७ से ३१८)

गुर्वावलीमे जिनलब्धिसूरि पट्टधर जिनचन्द्रसूरि तक क्रम एक ममान ही है, जिनचन्द्रसूरिव पट्टापर भट्टारक गारजाकी ओर जिन-राजसूरि पट्टधर हुए। वे माल्हु गोत्रीय थे, इसीसे वेगड गन्जवाले जनकी परम्पराको माल्हुगारजा कहते हैं। उधर द्वितीय पट्टधर जिनेश्वरसूरि हुए, जो इस गारजा आदि पुरप हैं। जिनेश्वरसूरिजी आदिका विशेष परिचय गीतोम इस प्रकार है —

जिनेश्वरसूरिजी

छाजहड गोत्रीय झाझणक आप पुत्र थे, आपकी माताका नाम झनकु या, और वेगड विरछसे आपकी त्रसिद्ध थी। माल्हु गोत्रीय गुरु आतान मानको चूर्ण कर अपने गुरु श्री जिनचन्द्र-सूरिका पाट आपने लिया। आपने वाराही त्रिरायको आराधना किया था और धरणेन्द्र भी आपन प्रत्यक्ष था, अणहिल्लाडे (पाटण) मे खानका परचा पूण कर महाजन वन्द (वन्दियो) को छुडाया था। राजनगरमे विहार कर महम्मद बालशाहको प्रतिबोध दिया था और उसन आपका पदस्थापना महोत्सव किया था। आपने आताने ५०० थोडोका (आपन दर्जनपर) दान किया और १ करोड द्रव्य व्यय किया था इससे महम्मद जाहने हर्षित हो “वेगडा” विरछ प्रदान किया था, (या उसने कहा आपन नावक भी वेगड और आप भी वेगड हैं)। एक वार आप साचोर पधार, जगड और थूलग दोनो गोत्र परस्पर मिले, (वहा) राडरहसे लखमीसिंह मन्त्रीने सङ्घ सहित आकर गुरु श्री को वन्दन किया।

लक्ष्मीसिंहने सरम नामक अपने पुत्रको गुरुश्रीको वहराया और चार चौमासे वही रखे । सं० १४३० मे संधारा कर शक्तिपुर (जोधपुर) मे आप स्वर्ग पधारे और वहाँ आपका स्तूप (शुग्ग) बनाया गया, वह बड़ा चमत्कारी है, हजारों मनुष्य वहाँ दर्शनार्थ आते है । स्वर्गगमन पश्चात भी आपने तिलोकसी शाहको ६ पुत्रियोंके ऊपर (पश्चात्) १ पुत्र देकर उसके वंशकी वृद्धि की । पौष शुक्ला १३ को जिनसमुद्रसूरिने स्तूपकी यात्राकर यह गीत बनाया ।

गुणप्रभ सूरि प्रबन्ध

(पृ० ४२३)

गुणप्रभसूरि प्रबन्ध और हमारे संग्रहकी पट्टावलीके अनुसार श्री जिनेश्वरसूरिजीका पट्टानुक्रम इस प्रकार है :

१ श्री जिनशेखरसूरि २ श्री जिनधर्मसूरि ३ श्री जिन-चन्द्रसूरि ४ श्री जिनमेशसूरि ५ श्री गुणप्रभसूरि हुए । इनका विशेष परिचय इस प्रकार है :

सं० १५७२ में श्री जिनमेशसूरिजीका स्वर्गवास हो जानेपर मण्डलाचार्य श्री जयसिंहसूरिने भट्टारक पदपर स्थापित करनेके लिए छाजहड़ गोत्रीय व्यक्तिकी गवेषणा की । अन्तमे जूठिल शाखा के मंत्री भोदेवरुके बुद्धिशाली पुत्र नगराज श्रावककी गृहिणी गणपति शाहकी पुत्री नागिलदेके पुत्र वच्छराजने धर्मका लाभ जानकर अपने पुत्र भोजको समर्पण किया । उनका जन्म सं० १५६५ (शाके १४३१) मिंगसर शुक्ला ४ गुरुवारके रात्रिमें उत्तराषाढा नक्षत्र, ऋपियोग, कर्क लग्न, गण धर्गमे हुआ, सं० १५७५मे सूरिजीने

दीक्षा दी। दीप्ति होने अनन्तर भोजकुमार गुरुश्रीसे विद्याभ्यास करत हुए सधम मार्गमें विशेष रूपसे प्रवृत्त हुए।

इधर जोधपुरमें राठौर राजा गगराज राज्य करते थे, वहां छाजहड गोत्रीय गागावत राजसिंह, सत्ता, पत्ता, नेतागर आदि निवास करत थे। सत्ताक पुत्र दुल्हन और सहजपाल ये, सहजपाल क पुत्र मानसिंह, पृथ्वीराज, सुरताण थे। जिनकी माताका नाम कस्तूरदे था। सुरताणकी भार्या लीलादेकी कुक्षिसे जेत, प्रताप और चापसिंह तीन पुत्र उत्पन्न हुए थे। उपरोक्त कुटुम्बन विचारकर गग नररासे (नेतागरने) प्रार्थना की, कि हम लोगको गुरु महा-राजने मद्दोत्सव करनेके लिए आज्ञा प्रदान करे। नृपवर्चका आदेश पाकर देश-विदेशमें चारो तरफ आमन्त्रण पत्रिका भेजी गई, बहुत जगहका सघ एकत्र हुआ और खूब उत्सवपूर्वक स० १५८० फाल्गुन शु० ४ श्रीजिनमेरूमूरिक पट्टपर श्री जिनगुणप्रभ सूरिजीको स्थापित किया गया। उन्हे बड गच्छीय श्रीपुण्यप्रभ सूरिने सूरि मंत्र दिया सघने गगरायको सन्मानित किया और राजाने भी सघ और पूज्यश्रीको बहुमान दिया।

स० १५८५ में सूरिवर्चने सघन साथ तीर्याधिराज सिद्धाचल जीकी यात्रा की, जोधपुरमें बहुतसे भक्तोंको प्रतिबोध दिया। इस प्रकार क्रमशः १० चतुर्मास होने परचात जैसलमेरक आनक देव-पाल, सदारग, जीया, वस्ता, रायमल, श्रीरग, हुदा, भोजा आदि सघन एकत्र होकर गुरु दानकी उत्कठासे पाच प्रधान पुत्रोंक साथ वीनति-पत्र भेजा, उनक विशेष आनहसे सूरिजी विहारकर जैसलमेर

आये, सं० १५८७ आपाढ वदी १३ को समारोहके साथ पुर प्रवेश कर पौषधालामे पधारे । व्याख्यानादि धर्म कृत्य होने लगे । सं० १५६४ मे राजल श्री लूणकर्णने जलके अभावमे अपनी प्रजाको महान कष्ट पाते देखकर दुष्कालकी सम्भावनामे गच्छनायकको वर्षा होनेके उपाय करनेकी नम्र विज्ञप्ति की । राजलजीकी प्रार्थना से सूरिजीने उपाश्रयमे अष्टम तप पूर्वक मंत्र सावना प्रारम्भ की, उसके प्रभावसे मेवमाली देवने घनचौर वर्षा वर्षाडि, जिससे भाद्रवा सुदि १ को प्रथम प्रहरमे सारे तालाव-जलाशय भर गए । सुकाल हो जानेसे लोगोंके दिलमे परमानंद छा गया, सूरि महाराजकी सर्वत्र भूरि-भूरि प्रशंसा हुई, राजलजीने गुरु महाराजके उपदेशसे वणिक वन्दियोंको मुक्त कर दिया और पंच गब्द, वाजित्र आदिके वजवाते हुए बड़े समारोह पूर्वक उपाश्रयमें पहुंचाये ।

इस प्रकार सूरिजीने शासनकी बड़ी प्रभावनाकी थी, सं० १६५५ मे ज्ञानवलसे अपने आयुष्यका अन्त निकट जानकर राधा (वैशाख) कृष्णा ८ को तीन आहारके त्यागरूप अनशन ग्रहण किया, एकादशीको संवके समक्ष प्रत्याख्यानादि कर डामके संथारेपर संलेखना कर दी, शत्रु और मित्रपर समभाव रखते हुए, अर्हन्तादि पदोंका ध्याय करते हुए, १५ दिनकी संलेखना पूर्णकर वैशाख सुदि ६ को ६० वर्ष ५ मास और ५ दिनका आयुष्य पूर्ण कर स्वर्ग सिधारे । श्री जिनेश्वर सूरिजी ने इनका प्रबन्ध बनाया ।

जिनचन्द्रसूरि

(पृ० ४३०, ३१६)

श्री गुणप्रभसूरिजीके शिष्य श्री जिनेश्वर सूरिजीके पट्टधर श्री जिनचन्द्रसूरि हुए जिनका परिचय इस प्रकार है ।

वीरानेर निवासी वाफणा गोत्रीय रूपजी गाहकी भार्या रूपाढ की कुक्षिसे आपका जन्म हुआ था, आपका जन्म नाम वीरजी था, लघु वयमे समता रसमे लयलीन ढरकर जैमलमरमे श्री जिनवर सूरि जीन आपको दीप्तिकर, वीर विजय अभिधान दिया। आपपढ-लिर खूत्र निद्वान् ओर नतापी हुण, आपको श्रीजिनेरवर सूरिजीन स्वय अपन पटपर स्थापित किये। जैन गासनकी प्रभावनाकरक स० १७१३ पोष मासकी ११ श्रृगुवारको अनशन पूर्वक आपस्वर्ग मिधार। महिमा-समुद्रजीन आपन दो गीत रचे, अन्य एक गीतमे समुद्रसूरिजीने आपन माचोर पधारनपर उत्सव हुआ, उसका सक्षिप्त वर्णन किया है।

जिनसमुद्रसूरि

(पृ० ३१७ ४३०)

आप श्रीश्रीमाल हरराजकी भार्या लखमादवीक पुत्र थे, श्री जिनचन्द्रसूरिजीक पटपर स्थापित होनक पञ्चात आप सूरत ओर मास नगरमे पधार, जिनका वर्णन माइदास ओर महिमाहर्षक गीतमे है। सूरतमे छतराज गाहने महोत्सव आदि किया था।

जिनसमुद्रसूरिक पञ्चात पट्टघरोक नाम ये हैं —जिनसुन्दर सूरि—जिनउदयसूरि—जिनचन्द्रसूरि—जिनेरवरसूरि (स० १८६१) इनक पट्टधरका नाम नहीं मिलता। अन्तिम आचार्य जिनभेमचद्र सूरि स० १६०० मे स्वर्ग मिधार।

पिप्पलक शाखा

(पृ० ३१६)

गुर्वावली - मे जिनराजसूरि (प्रथम) तक तो क्रम एक सा ही

श्रृगुर्वावलीमे नवीन नातव्य यह है कि —जिन चढमान सूरिजीने श्री

है। उनके पट्टधर जिनवर्द्धनसूरिजीसे यह शाखा भिन्न हुई थी, उनके पट्टधर आचार्योंका नामानुक्रम इस प्रकार है

जिनवर्द्धन सूरि--जिनचन्द्रसूरि जिनमागर मृगि- (जिन्होंने ८४ प्रतिष्ठायें की थी और उनका थुंभ अहमदाबादमें प्रसिद्ध है)। जिन सुन्दर सूरि जिनहर्षसूरि जिनचन्द्र मृगि जिनगील सूरि जिनकीर्तिसूरि जिनसिंहसूरि जिनचन्द्रसूरि (सं० १६६६ विद्यमान) तकका राजसुन्दरने उल्लेख किया है हमारे संग्रह की पट्टावली आदिसे इस शाखाके पञ्चानुवर्ती पट्टधरोंका अनुक्रम यह ज्ञात होता है: जिनरत्नसूरि जिनवर्द्धमानसूरि जिनधर्मसूरि जिनचन्द्र सूरि (अपर नाम शिवचन्द्र सूरि) इनमें जिनरत्न सूरिके पीछेके नाम प्रस्तुत शिवचन्द्र सूरि रासमें भी पाये जाते हैं। अब रासके अनुसार जिन (शिव) चन्द्र सूरिजीका विशेष परिचय नीचे दिया जाता है :

जिन शिवचन्द्रसूरि ×

(पृ० ३२१)

मरुधर देशके भिन्नमाल नगरमें अजीतसिंह भूपतिके राज्यमें ओसवाल रांका गोत्रीय शाह पदमसी रहते थे। उनकी धर्मपत्नीका नाम पदमा था। उसके शुभ मुहूर्तमें एक पुत्र उत्पन्न हुआ, और

मंधर स्वामीसे सूरि मंत्र संशोधन कराया। श्रीमंधर स्वामीने आचार्योंके नामकी आदिमें जिन विशेषण लगानेकी सूचना दी, इसीसे पट्टधर आचार्यों ने नामके आगे जिन विशेषण दिया जाता है।

× गृहे १३ साधुपर्याय १३ गच्छ नायक १८ इस प्रकार कुल ४४ वर्ष का आयुष्य पाया।

उमना नाम जिवचन्द्र रसा गया। कुचर निनादिन वृद्धि प्राप्त होन
 लगा और जत्र उमनी अवस्था १३ वर्षकी हुई, उम समय उसी
 नगरम गच्छनायक जिनधर्मसूरिका शुभागमन हुआ। मघन न्न गो-
 त्मत्व किया, और अनक लोग गुप्तरीन व्याख्यानम नित्य आन
 ला। सूरिजीव व्याख्यान श्रवणार्थ पन्मसी आर जिनचन्द्र कुमार
 भी जान ला आर ममारकी अनित्यतार उपनस कुमारको वैराग्य
 उत्पन्न हो गया, यान्न माता पितान पाम आप्त पूर्वक अनुमति
 एनर स० १७६३ मे गुप्तरीनपाल दीना भरण की। मामकल्पन
 परिपूण हो जानस सूरिजी नवनीमित्त जिवचन्द्रक माव विहार कर
 गये। ज्ञानावर्णा कर्मकक्षयोप। मस नवनीक्षित मुनिन व्याकरण, न्याय,
 तर्क और आगम मन्त्रोका शीघ्र अध्ययन कर विद्वता प्राप्त की।

जिनधर्म सूरिजी उदयपुर पधार और वहा गारौरिक वदना
 उत्पन्न होनसे आनु यकी पूणाहुतिका समय ज्ञातकर स० १७७६
 बैसाख शुक्ला ७ का जिवचन्द्रजीनो गच्छनायक पट दपर (वहीं) स्वर्ग
 मिधार। आचार्यपत्का नाम नियमानुसार जिनचन्द्रसूरि रसा गया।
 उम समय (राणा मप्राम राज्ये) उदयपुरक श्रावक दोनी भीरा
 सुन कु। लन पट महोत्सव किया और पहरावणी, याचकोको दान
 आदि कार्रामे बहुतसा द्रव्यका व्यय कर सुय। प्राप्त किया। आचार्य
 पट प्राप्तन पन्चात आपन, जिप्य हरिसागरक आपहस वहीं चतु-
 मास किया, धमप्रभावता अच्छी हुई। चामामा पूण होन पर आपन
 गुजरातनी ओर विहार कर दिया। स० १७७८ म (गच्छनायकन)
 परिमदना त्यागकर प्रियेन वैराग्य भावसे त्रिगोद्वार किया ओर

आत्म गुणोंकी साधना करते हुए भक्त्योंको उपदेश प्रदान आदि द्वारा स्वपर हित साधनमे तत्पर हुए ।

गुजरातमे विचरते हुए शत्रुंजय तीर्थ पधारे और वहा ४ महीने की अवस्थित कर ६६ यात्राएं कीं । वहासे गिरनारमे नेमनाथकी यात्राकर जूनागढ़की यात्रा करते हुए खंभात पधारे, वहाकी यात्रा कर चतुर्मास भी वही किया । वहा धरम-ध्यान सविशेष हुआ । वहासे मारवाड़की ओर विहारकर आवृ तीर्थकी यात्रा करके तीर्थ-धिराज समेतशिखर पधारे । वहा वीर तीर्थकरके निर्वाण स्थानो की यात्रा करके, विचरते हुए वनारसमे पार्वनाथजी की यात्राकी । रास्तेमे पावापुरी, चम्पापुरी, राजग्रही, वैभारगिरिकी भी संवके साथ यात्राकी और हरिनापुरमे शान्ति, कुन्धु और अरिनाथप्रभु की यात्रा कर दिल्ली पधारे, वहा चतुर्मास करके विहार करते हुए पुन-गुजरातमे पदार्पण किया । वहां भणगाली कपूरके पास एक चतुर्मास किया और पंचमाङ्ग भगवतीसूत्रका व्याख्यान देने लगे, इति उपद्रव दूरकर सुयश प्राप्त किया । ज्ञान-भक्ति और धर्म प्रभावना अच्छी हुई, शत्रुंजयतीर्थकी यात्रा की, यात्राकी भावना पुन-उत्पन्न होनेसे राजनगरसे विहारकर शत्रुंजय और गिरनाथतीर्थकी यात्राकर दीववंदरमे चौमासे रहे । वहासे फिर शत्रुंजयकी यात्रा करके धोवा-वंदर, भावनगर आदिकी यात्रा करते हुए भी १७६४ के माह महीनेमे खंभात पधारे । वहाके गुणानुरागी श्रावकोंने आपका अतिशय बहुमान किया, उनके उपकारार्थ आप भी धर्मदेशना देने लगे ।

इसी समय किसी दुष्ट प्रकृति पुरुषने वहाके यवनाधिपके समक्ष

कोई चुगली खाइ, अत उसन अपन सबकाको आचार्यजीन पास भजे । राज्य सबकान पूज्यत्रीको बुलाकर “आपन पास धन है वह हमे दद” कहा, पर सूरिजी तो बहुत पहलेही परिग्रहका सबथा त्याग कर चुफ व, अत स्पष्ट जन्दांम प्रत्युत्तर निया कि भाइ हमार पास तो भगव । नाम स्मरणन अतिरिक्त कोई धन माल नहीं है, पर व अथ लोभी भला फत्र मानन वाले व । जन्दान सूरिजीको तग करना शुरू किया । इतनाही नहीं राज्यसत्तान बलपर अधे होकर यवनाधिपतिन सूरिजीको खाल उतारनकी आज्ञा द दी । सूरिजीन यह सब अपन पृव मचित अगुभ कर्मोव उन्यका ही फल है, निचारकर मरणान्त कष्ट वनवाले दुष्टापर तनिक भी शोध नहीं किया । धन्य है । ऐस समभात्री उय आत्म साधक महापुरुषाको ॥ रात्रि समय दुष्ट यवनन रोधिन होकर बडे दुख दन आरम्भ किय । मामिक स्यानामे बडे जोरासे मारन (टड-बहार करन) लगा और उस पापीप्टन इतनमही न रुककर सूरिजीन हाथ पैरक जीवित नखोको उतार असह्य वदना उत्पन्न की । वदना प्रमरा बढन लगी और मरणान्त अवस्था आ पहुची, पर उन महापुरुषन समभाव व निर्मल सरोवरमे पैठ आत्मरमणताम तलीन्नता कर दी । अपने पून सत्गन्गजसुनमाल-इन्द्रन्त आदि महापुरुषाव चरित्रोका स्मृति चित्र अपन आसोव नामन सडाकर पुद्गल और आत्माव मित्रत्व निचाररूप, भेष्ट ज्ञानसे उम असह्य वदनाका अनुभव करन लग ।

यह घृनात ज्ञात होत ही प्रात काल आवनगण सूरिजीव पाम आये, तत्र यवन भी सरिजीका धैर्य दरु और अपनी सारी दुष्टवृत्ति

की इतिश्री होनेसे उकता गया । और आवकोको उन्हें अपने स्थान ले जानेको कहा । रूपा बोहरा उन्हें अपने घर लाया । नगरमें सर्वत्र हाहाकार मच गया ।

इस समय नाय (न्याय !) सागरजीने सूरिजीका अन्तिम समय ज्ञातकर उत्तराध्ययन आदि सूत्रोंका श्रवण कराके अनगन आराधना करवाई । आवकोंने यथागति चतुर्थ व्रत, हरित त्याग, १२ व्रतादि के यथागति नियम लिये । आचार्यजीने गच्छकी शिक्षा अपने शिष्य हीरसागरको देकर, सं० १७६४ वैशाख ६ कविवार सिद्धयोग के प्रथम प्रहरमें जिनेश्वरका ध्यान करते इस नरवर देहका परित्यागकर (प्रायः) देवके दिव्य रूपको धारण किया । आवकोंने उत्सवके साथ अन्त क्रिया की, और रूपा बोहरेने वहां स्तूप कराया । इसी तरह राजनगरके वहिरामपुरमें भी स्तूप बनवाया गया । हीरसागरके आग्रहसे कडुआमती गाह लाधाने सं० १७६५ के आश्विन शुक्ला ५ बृहस्पतिवारको राजनगरमें इस रासकी रचना की ।



आद्यपक्षीय शाखा

जिनहर्षसूरि

(पृ० ३३३)

आद्य पक्षीय सरतर शाखा (भेद) स० १५६६ में जिनदेव सूरिजीसे निगत हुई थी। हमें प्राप्त पट्टावलीमें अनुसार इन शाखा की पट्ट-परम्परा इस प्रकार है —

जिनवर्द्धनसूरि—जिनचन्द्रसूरि—जिनसमुद्रसूरि—पट्टधर जिन देवसूरि (इस शाखामें आदि पुत्र्य) जिनर्मिहसूरि—जिनचन्द्रसूरि (पचायण भट्टारक) व जिन्य जिनहर्षसूरिजी ये। गीतके अनुसार आप दोसी वजन भानाजीकी भाया भगतादने पुत्र ये।

अन्य साधनसे आपका विरोप वृत्तान्त निम्नोक्त ज्ञात हुआ है — स० १६६३ में जेतारणमें जिनचन्द्रसूरिका स्वर्गवास हुआ। भडारी गोत्रीय नारायणने पद महोत्सवकर आपको उनमें पट्टपर स्थापित किये जेतारणमें आपने हाथीको कीलित किया, जिसका वृत्तान्त इस प्रकार है —स० १७१० वर्षे सरतर गच्छ वृद्धाचार्य क्षेमधाड शाखा पचायण भट्टारक रे पाट सात्रत विजयमान भ० श्रीजिनहर्षसूरि जी सोजत गहरमें हाथी कील्यो, तथा गच्छ हुती बोल उपर आप्यो इण वातरो सोजत गहर भिगलो साक्षीभूत ये। हाथी रे ठिकाने अजे सगिडो पूजीजे छे कोटवाली चोतरा कने माडी निचमे X X X (इनने जिन्य सुमतिहजकृत कालिकाचार्य व्रजा वालावनीध पत्र १४, यतिवर्य सूर्यमलजी के सनहमें)।

१७२५ चैत्र कृष्णा ११ को जेतारणमे आपका स्वर्गवास हुआ । इनके पश्चात्के पट्टधरोंका क्रम यह है: १ जिनलब्धि-जिनमाणिक्य-जिनचन्द्र-जिनोदय-जिनसंभव-जिनवर्म-जिनचन्द्र-जिनकीर्ति-जिनबुद्धिवल्लभ-जिनक्षमारवसूरिके पट्टधर जिनचन्द्रसूरिजी पालीमे अभी विद्यमान है ।

भावहर्षीय शाखा

भावहर्षजी उपाध्याय

(पृ० १३५)

शाह कोड़ाकी पत्नी कोड़मदेके आप पुत्र थे । श्रीकुलतिलकजी के आप सुशिष्य थे । संयमके प्रतिपालनमे आप विगेष सावधान रहा करते थे, और सरस्वती देवीने प्रसन्न होकर आपको शुभागीप दी थी । माह शुक्ला १० को जैसलमेरेमें गच्छनायक जिनमाणिक्य-सूरिजीने (सं० १५६३ और १६१२ के मध्यमे) आपको उपाध्याय पद दिया था ।

अन्य साधनोंसे ज्ञात होता है कि आप सागरचन्द्रसूरि शाखाके वा० साधुचन्द्रके शिष्य कुलतिलकजीके शिष्य थे । आप स्वयं अच्छे कवि थे । आपके रचित स्तवनादि बहुतसे मिलते हैं । सं० १६०६ में आपने उ० कनकतिलकादिके साथ कठिन क्रिया-उद्धार किया था । आपके हेमसार आदि कई विद्वान् और कवि शिष्य थे, आपके द्वारा खरतर गच्छ मे ७ वां गच्छ भेद हुआ । और आपके नामसे वह शाखा भावहर्षीय कहलाई । बालोतरेमे इस शाखाकी गद्दी अब भी विद्यमान है । आपके शाखाकी पट्ट-परम्परा इस प्रकार

हैं —भाद्रहर्षसूरि—जिनतिलक—जिनोदय—जिनचन्द्र—जिनस-
मुद्र—जिनरत्न—जिनत्रमोद—जिनचन्द्र—जिनसुख—जिनक्षमा-
जिनपद्म—जिनचन्द्र—जिनफातन्द्रसूरि हुए, आपकी जासामे अभी
यतिवर्ष नेमिचन्द्रजी बालोत्तरे प्रियमान हैं।—विशेष विचार
सरतर गच्छ इतिहासमें करेग।

जिनसागर सूरि शाखा [लघु आचार्य]

जिनसागरसूरि

(पृ० १७८-२०३-३३४)

मन्धेर जगल दंगल वीकानर नगरमे राजा रायसिंहजी राज्य
करत थे। उम नगरमे वीयरा गोत्रीय शाह बच्चा निवास करत थे,
उनकी भाया भृगादकी कुक्षिसे स० १६५२ कार्तिक शुक्ल १४
रविवारको अश्विन नक्षत्रमे आपका जन्म हुआ था। आप जब
गर्भम अन्तरित हुए थे, तब माताको रक्त चोल रत्नावलीका स्वप्न
आया था, उन्नीक अनुसार आपका नाम “चोला” रक्खा गया, पर
लाड (अतिजय प्रेम) क नाम सामलसे ही आपकी प्रसिद्धि हुई।

एननार श्रीजिनसिंहसूरिजीका वहा शुभागमन हुआ और
उनक जपेजसे सामल कुमारको वैराग्य उत्पन्न हुआ। उसने
अपनी मातुत्रीसे दीथाकी अनुमति मागी। इसपर माताने भी
साथ ही दीथा लेनेका निरचय प्रकट किया। इधर श्री जिनसिंह
सूरिजी विहारकर अमरसर पधारे। तब वहा जाकर सामलकुमार
ने अपने बडे भाइ विक्रम और माताके साथ स० १६६१ माह सुदी

७ को मूरिजीने दीक्षा प्रकण की । उस समय अगस्त्यरथे श्रीमान्दी श्रानसिंहने दीक्षा मदीत्सव किया ।

नवदीक्षित गुनिके साथ जिनसिंहसूरिजी सामानु-प्राग वि । र करते हुए राजनगर पधारे । वन युगप्रधान श्री निमनन्द्रसूरिजी को वंदना की, मूरिजीने नवदीक्षित सामल गुनिको (मांडवके तप वहन कर लिये, जानकर) बडी दीक्षा देकर नाम स्थापना "गिद्धसेन" की । उनके पञ्चान गिद्धसेन गुनि आगमने उपान (तपादि) वहन करने लगे और वीकानेरमे छ मानी तप किया । विनय सहित आगमादिका अव्ययन करने लगे । युगप्रधान पुञ्जव्री आपके गुणोंसे बडे प्रसन्न थे । कविवर समयसुन्दरके सुप्रसिद्ध शिष्य वादी हर्षनन्दनने आपको विद्याव्ययन बडे मनोयोगने कराया ।

इस प्रकार विद्याव्ययन और संयम पालन करने हुए श्री जिनसिंहसूरिजीके साथ संवधी आमकरणके संन सह अत्रुंजयतीर्थकी यात्रा की । वहांसे विहारकर खंभान, अहमदाबाद, पाटण होने हुए वडलीमे जिनदत्तमूरिजीकी यात्रा की । वहांमे विहारकर निरोती पधारे । वहांके राजा राजसिंहने बहुत सम्मान किया और संयने प्रवेशोत्सव किया । वहांसे जालोर, खंडप, दृणाडा होने हुए वंवाणी के प्राचीन जिन विम्बोंके दर्शन कर वीकानेर पधारे । गा० वायमलने प्रवेशोत्सव किया । जिनसिंहसूरिजीने चतुर्मास वही किया । इसी चतुर्मासके समय उन्हें सम्राट् सलेमने सेवडे दृतभेजकर आमन्त्रित

* निर्वाण रासमें भृगादेका दीक्षित नाम साणित्यमाला और वीकेका नाम विवेक कल्याण लिखा ।

किये। सम्राट्की विशतिथ अनुमार वहासे विहार कर वै मेडते पधार, वहा जारौरिक व्याधि उत्पन्न होनेसे आराधना पूर्वक स्वर्ग सिधार।

इम प्रकार जिनसिंहसूरिजीकी अचानक मृत्यु होनसे सघको वडा शोक हुआ। पर कालन आग कर भी क्या मकत व, आसिर शोक निर्मत्तन करक सघने राजसी (राज समुद्र) जी को भटारक (गच्छ नायक) पद और सिद्धसेन (सामल) जीको भूआचार्य पदसे अलकृत किये।

सवपति (चोपडा) आसकरण, अमीपाल, कपूरचन्द, रूपमदास और सूरदासन पद महोत्सव वडे समारोहसे किया। (पूनमीया गच्छीय)हेमसूरिजीन सूरिमत्र देकर स०१६७४ फाल्गुन पुनला षको शुभ मुहूर्तम जिनराजसूरि और जिनमागरसूरि नाम स्थापना की।

आचार्य पद प्राप्तिन अनन्तर आपने मेडतसे निहार कर राणकपुर, वरकाणा, तिमरी (पार्जननायजीकी), ओमिया और धवाणीकी यात्राकर चतुर्मास मडत किया। वहासे जैसलमेर पधारे। वहा राजल कल्याण और श्रीसधन वदन किया और भणसाली जीनराजने (प्रमत्र) उत्सन किया। वहा श्रीसधको ११ अगोका अरण कराया। शाह कु लेने मित्री सहित रपयोकी लाहण की। वहासे सघन साथ लोदत्रा पधार। (भणसाली) ओमल सुत थाहरशाहने स्वामी—वात्सल्यादिमे प्रचुर द्रज्य व्यय किया। वहासे आचार्य जिनसागरसूरि फलवधी पधारे। ज्ञानक मानेन प्रनशोत्सव किया और

* निवाण रास गा० ९ ओर जपकीर्ति कृत गीतके कथनानुसार आपको आचार्य पद, युग प्रधान जिनचन्द्रसूरिजीके वचनानुसार मिला था।

याचकोंको दान दिया । संवने बड़ी भक्ति की । बढासं विहार कर करण-
अडं पधारे, वहा संवने भक्तिसे वंदना की । उस प्रकार विहार करने
हुए वीकानेर पधारे, वहा पामाणीने संधके साथ प्रवेशोत्सव किया एवं
(मंत्रीश्वर कर्मचन्द्रके पुत्र) भागचन्द्रके पुत्र मनोहरदाम आदि
सामहीयेमे पधारे ।

वीकानेरसे विहारकर (लूनकरण) शर चतुर्मास कर जाल्य-
सर पधारे । वहा मंत्री भगवन्नदामने बडे उत्सवके साथ पृथ्वीको
वंदन किया, वहासे डीडवाणेके संधको वंदाते हुए मुरपुर एवं मालपुर
आये, वहा भी धर्म-ध्यान सविशेष हुआ । उस प्रकार विहार करने
हुए वीलाडेमे चौमासा किया । वहाके कटारिये आवक खेतनर ग-छ
के अनन्य अनुरागी थे, उन्होने उत्सव किया ।

वीलाडेसे विहार कर मेड़ते आये वहा गोलछा रायमलके पुत्र
अमीपालके आता नेतसिह आतृपुत्र-राजसिहने बडे समारोहसे
नान्दि स्थापन कर ब्रतोच्चारण किये, श्रीफल नालेरादिके साथ
रूपयोंकी लाहण (प्रभावना) की । वहाके रेखाजत श्रीमल वीरदाम
मांडण, तेजा, रीहड़ दरडाने भी धार्मिक कार्योंमे बहुतसा द्रव्यका सद-
व्यय किया । आचार्य श्री वहासे विहारकर राणपुर और कुम्भलमेरके
जिनालयोंको वंदन कर मेवाड़ प्रदेश होते हुए उदयपुर पधारे । वहां-
के राजा करणने आपका सम्मान किया । और मंत्रीश्वर कर्मचन्द्र
पुत्र लक्ष्मीचन्द्रके पुत्र रामचन्द्र और रुघनाथके साथ अजायवदेने
वंदन किया । वहासे विहार कर स्वर्णगिरि पधारे, वहां संवने
बड़ा उत्सव किया । साचौर संवने एवं हायीशाहने बहुत आग्रह कर
चतुर्मास साचौरमे कराया ।

इस प्रकार उपरोक्त सारे वर्णनात्मक इस रामको कवि धर्मकीर्ति (यु० जिनचन्द्रसूरि उपाध्याय धर्मनिधान + जि०) न म० १६८१ के पौष कृ पा ५ को बनाया ।

उपरोक्त रास रचनके पश्चात् स० १६८६ मे गच्छ नायक जिनराजसूरि और आचार्य जिनसागरसूरिके किसी अज्ञात कारण विरोधसे मनोमालिन्य या वैमनस्य उत्पन्न हुआ ।

फलस्वरूप दोनोंकी शाखायें (जिप्यपरिवार आदि) भिन्न २ हो गई । और तभीसे जिनराजसूरिजीकी परम्परा भट्टारकीया एव जिनसागरसूरिजीकी परम्परा आचारजीया नामसे प्रसिद्ध हुई, जो आज भी उन्हीं नामोंसे प्रख्यात है ।

शाखा भेद होने पर जिनसागरसूरिजी + पथमे कौनसे विद्वान और नहाका सघ आज्ञानुयायी रहा । इसका वर्णन निर्वाण रासमे इस प्रकार है —

श्रीजिनसागरजीके आज्ञानुवर्ती सावु सघमे उपाध्याय समर-सुन्दरजी (की सम्पूर्ण जिप्य परम्परा), पुण्य-प्रधानादि युगप्रधान जिनचन्द्रसूरिजी + समी गि य, और आवक समुदायमे अहमदानाद, वीकानेर, पाटण, सम्भात, मुल्तान, जैसलमरने सघ नायक सरत-वालादि, मडतने गोलडे, आगरके ओगवाल, वीलाडेके सघनी कटारिये एव जयतारण, जालौर, पचियास, पालहनपुर, मुज्ज, सूरत, न्हिी, लाहोर, लुणकरणसर, सिन्ध नान्तोमे मरोट, यट्टा, डेरा, मारवाडमे फलोधी, पोकरण आदिके (ओशवाल-अच्छे २

रजयकीर्तिके गीतके अनुसार यह कारण अहमदाबादमें हुआ था ।

पदाधिकारी) थे। उनमेंसे मुख्य श्रावकोंके धर्मकृत्य उभ प्रकार हैं :

करमनी शाह संवत्सरीको महामनी (मुद्रा) दंते और उनके पुत्र लालचन्द प्रत्येक वर्ष संवत्सरीको संयमे श्रीफलोंकी प्रभावना किया करते थे। लालचन्दकी विद्यमान माता धनादेने पृथिव्येके उपर के खण्डकी पीटणीको समराड (जीर्णाहारित की) और उसकी भार्या कपूरदेने जो कि उग्रसेनकी माता थी, धर्मकार्यमें प्रचुर द्रव्य व्यय किया।

शाह शान्तिदासने भ्राता कपूरचन्दके साथ आचार्यश्रीको स्वर्णके वेलिये दिये थे, एवं २॥ हजार रुपयोंका स्वर्च कर सुयश प्राप्त किया था। उनकी माता मानवाडने उपाग्रयके १ खण्डकी पीटणी करा दी थी और प्रत्येक वर्ष आपाढ़ चतुर्मासीके पोषधोपवासी श्रावकोंको पोषण करनेका वचन दिया था।

शाहमनजीके दीप्तमान कुटुम्बमें शाह उदयकरण, हाथी, जेठमल और सोमजी मुख्य थे। उनमें हाथीशाहने तोरायचन्डी-छोडका विरुद्ध प्राप्त किया था। उनके सुपुत्र पनजी भी सुयशके पात्र थे। मूलजी, संवजी पुत्र वीरजी एवं परीख सोनपाल सूरजीने २४ पाक्षिकोंको भोजन कराया था। आचार्य श्रीकी आज्ञामें परीख चन्द्रमाण, लालू,

*समयछन्दरजी कृत अष्टकमें आपके आज्ञानुयायियोंकी सूची में इनके अतिरिक्त भदनेर, मेवाड़, जोधपुर, नागौर, वीरमपुर, साचोर, किरहोर, सिद्धपुर, महाजन, रिणी, सांगानेर, मालपुर, सरसा, धौगोटक, भरुच, राधनपुर वाराणपुर आदिके संघोंके भी नाम भी आते हैं।

अमरमी शाह, मधवी कचरमल्ल, परीस अला, वाज्डी देवर्ण, शाह गुगराजक पुत्र राजचन्द गुलालचन्द, इस प्रकार राजनगरका नामनीय सब था और धर्मकृत्य करनेमें सभातथ भण्डगाली बधुका पुत्र रूपभदास भी उल्लेखनीय था ।

हर्षनन्दनथ गीतानुमार मुकरवलान (नवान) भी आपको सन्मान दता था । इस प्रकार आचार्य त्रीका परिवार उदयवन्त था, गीताथ गिप्योको आचार्यश्रीने यथायोग्य वाचक उपाध्यायादि पददान किये थे और अपन पदपर स्वहस्तसे अहमदानादमें जिनधर्मसूरिजीको (प्रथम पठेवडी ओढाकर) स्थापन किया । उस समय भगराली बधुकी भार्या विमलाद, भणराली सधुआकी पत्नी सहिजलद (जिसने पूर्व भी गनुजय सब निकाला और बहुतसे धर्मकृत्य किये थे) और आ० दवकीने पदमहोत्सव बडे समारोहसे किया ।

पदस्थापनामें अनन्तर जिनसागरसूरिक रोगोत्पत्तिहोनेके कारण आपन बैजास शुक्ला ३ को गिप्यादिको गच्छकी शिलामण द, गच्छ भार जोडा । बैसास सुदी ८ को अनजन उच्चारण किया । उस समय आपन पास उपाध्याय राजभोम, राजसार, सुमतिगणि, दयाकुगल वाचक, धर्ममदिर, समप्रनिधान, ज्ञानधर्म, सुमतिप्रलभ आदि थे । स०१७१६ जेष्ठकृष्णा ३ गुरुवारको आप स्वर्ग सिधार और हाथीगाहने अग्नि मस्कारादि अन्त-क्रिया धूमसे की । इसने पञ्चात् सथन एकत्र होकर गाये, पाडे वकरीये आदि जीवोकी २००) रुपये खर्च कर रथा की और शान्ति जिनालयम दवन्दन कर शोकका परित्याग किया ।

उपरोक्त (वर्णनवाले) रासकी रचना सुमतिवल्हमने (सुमति-समुद्र गिण्यके साथ) सं १७२० आवण शुक्रा १५ को की । आचार्य श्रीके रचित वीशी एवं स्तवनादि उपलब्ध हैं ।

जिनधर्मसूरि

(पृ० ३३५-३६)

आप भणशाली गोत्रीय (रिणमल्ल) की पत्नी मृगादेके पुत्र थे । पद स्थापनाका उल्लेख ऊपर आही चका है । ज्ञानहर्षके गीतानुमार आप वीकानेर पधारे, उस समय गिरधरगाहने प्रवेशोत्सव बडे समारोहसे किया था । विशेष जातव्य देखे : खरतरगच्छपट्टावली संग्रह ।

जिनचन्द्रसूरि

(पृ० ३३७)

आप जिनधर्मसूरिजीके पट्टधर थे । बुहरा वंगीय सावलगाह आपके पिता और साहिवदे आपकी माता थी । विशेष जातव्य देखे खरतरगच्छपट्टावलीसंग्रह ।

जिनयुक्ति सूरि पट्टधर जिनचन्द्रसूरि

(पृ० ३३७-३८)

उपरोक्त जिनचन्द्रसूरिके (पश्चात् पट्टावलीके अनुसार) पट्टधर जिनविजयसूरिके पट्टधर जिनकीर्तिसूरिके पट्टधर जिनयुक्तिसूरिजी हुए, उनके पट्टधर आप थे । रीहड़ गोत्रीय शा० भागचन्दकी भार्या यशोदाकी कुक्षिसे आप अवतरित हुए । वीलाड़े चतुर्मासके समय कवि आलमने यह गीत रचा था । गीतमे प्रवेशोत्सवके समयकी भक्तिका संक्षिप्त वर्णन है ।

जिनचंद्रसूरिजीन पद्यर जिन - न-जिनहेम-जिनसिद्धसूरिने
पद्यर जिनचंद्रसूरि अभी विद्यमान हैं । विशेष ज्ञातव्य दसे —
(सरतरगच्छपटावलीमग्रह) ।

रगविजयगारवा

जिनरगसूरि

(पृ० २३१-३३)

श्रीजिनराजसूरि (द्वि०) क आप जिप्य ये । श्रीमाली, मिन्धुड
गोत्रीय माकरसिंहकी भाया मिन्दुरदकी कुक्षिसे आपका जन्म
हुआ था । स० १६७८ फाल्गुन वृ० ७ को जैसलमरमे आपने
दीक्षा ली थी, दीक्षितावस्थाका नाम रगविजय रखा गया । श्रीजिन-
राजसूरिजीन आपको उपाध्याय पद निया गा । ज्ञानकुञ्जकृत गीत
आर जिनराजसूरि गीत न० ६ मे आपनो पुनराज पदसे संबोधन
निया गया है जोकि महत्त्वका है ।

कमलरत्न गीतानुसार पानिजाह (जाहजहा !) न आपकी
परीश्याकी वी और ७ सूत्रोमे (इनका) वचन प्रमाण करनेका
करमान दिया था । उनक पादनीपुत्र दारामको सुलतानने आपको
'धुगप्रधान' पदका निसाण दिया था । मिन्धुड नेमीदास-पचायणने
त्रवेशोत्सव (शाही निसाणक साथ) बडे ममारोहसे किया, सर्व
महाजन सकको नालेरकी प्रभावना दी गई । स० १७१० मालपुरमे
महोत्सवने साथ 'धुगप्रधान' पद-स्थापन हुआ था ।

आपने रचित अनेको स्तवनादि उपलब्ध हैं । उनमेसे कई
दिल्लीसे (१ छोटासे ग्रन्थमे) यतिरामपालजीने प्रकाशित किये हैं ।

आपके रचित कृतियोंमें १ मोभाग्यपंचमी चौ०, २ नवतत्ववाली० (श्राविका कनकादेवीके लिये रचित श्रीपूजनी सं० नं० ४११), ३ बहुत्तरी आदि मुख्य हैं। आपके लिये एक प्रति अजीमगंज मंडारमें है।

जिनरंगसूरिजीके पट्टधर आचार्योंकी नामावलीका क्रम इस प्रकार है. जिनरंगसूरि-जिनचंद्रसूरि-जिनविमलसूरि-जिनललित-सूरि-जिनअक्षयसूरि-जिनचंद्रसूरि-जिननन्दिवर्द्धनसूरि-जिनजयशे-खरसूरि-जिनकल्याणसूरि-जिनचंद्रसूरिजीके पट्टधर जिनरत्नसूरि सं० १६६२ वै० व० १५ को लखनऊमें स्वर्ग सिंधारे। इस गाथाकी गद्दी लखनऊमें है।

मंडोवरा शाखा

जिनमहेन्द्रसूरि

(पृ ३०२ से ३०४)

शाह रुधनाथकी पत्नी सुन्दरा देवीकी कुक्षिसे आपका जन्म हुआ था, श्रीजिनहर्षसूरिजीके आप पट्टधर थे। गीतमें कवि राजकरणने पूज्यश्रीके मरुदेश पधारने पर जो हर्ष हुआ और प्रवशोत्सवकी भक्ति की गई, उसका सुन्दर चित्र अंकित किया है। गहुंली नं० १में उदयपुर नरेशने आपको वहां पधारनेके लिये विनती स्वरूप परवाना भेजने और मेड़ते, अम्बेरगढ़, बीकानेर जैसलमेर संघकी भी विज्ञप्तिये जानेका सूचित किया है। एवं कविने अपनी ओरसे एक बार जोध-पुर पधारनेकी विनती की है।

आपके चरित्रके विषयमें विशेष विचार फिर कभी करेंगे। आपके पट्टधर जिनमुक्तिसूरिजीके पट्टधर जिनचंद्रसूरिजी अभी जयपुरमें विद्व मान है। उनके पट्टधर युवराज धरणेन्द्रसूरि विचरते हैं।

तपागच्छीयकाव्यसार

शिवचूला गणिनी

(पृ० ३३६)

पोरवाड गहाकी पत्नी विल्हणदकी कुञ्जिसे जिनकीर्तिमूरि उत्पन्न हुए, उनकी पहिन नर्तिनी राजलक्ष्मी थी ।

स० १४६३ वैशाख शुक्ला १४ को मवाडन दवलनाडेमे जिनचूला माध्वीको महत्तरा पद दिया गया, उस समय महान्न सधवीन महोत्सव किया, सोमसुन्दरसूरिन वासशेष दिया । रत्नोत्तरको वाचक पद दिया गया । और भी पन्चाम गणीज स्थापित किए गए दीया महोत्सव हुए । वाचकोको दान दिया गया, पताकावास नगर मजाया गया और वाजिन बजने लग ।

श्रीविजयसिंहसूरि

(पृ० ३४१ से ३६४)

ऋषि गुणविजयन सब प्रथम सिरोही मण्डण आदिनाथ, ओस-वालोप जिनालयमे श्रीहीरविजयसूरि प्रतिष्ठित श्रीअजितनाथ, त्रिवपुरीन स्वामी ज्ञान्तिनाथ, जीराजला तीर्थपति पार्श्वनाथ, बभण-वाड व वीरवाडन मण्डन श्रीमहानीर एव सरस्वती और गुरु श्रीकमल-विजयन चरणोमे नमस्कार करप श्रीहीरविजयसूरिक पट्टधर जैसिवगी (विजयसेनसूरि) क पट्टाधीन विजयदेवसूरिन शिष्य विजयसिंहसूरिन विजयननाथ रासकी रचना नारम्भकी है, जिन्हें विजयवन्मूरिने अपने पट्टधर स्थापित किया था ।

श्रीआदिनाथके पुत्र मरुदेवके वसाया हुआ मरु नामक देश है जहां ईति, भीति, अनीति, चोरी-चकारी और डकायतीका नामो-निशान भी नहीं है, बड़े-बड़े व्यापारी निवास करते हैं और बेरोक-टोक सत्राकार खोल रखे हैं। राजा लोग भी धर्मिण्ड है, परमेश्वर की पूजा कराते हैं, जीवोंका "अमारि" नियम पलाते हैं एवं शिकार भी नहीं खेलते। वहांके सुभट गूर-वीर, लम्बी मूंछोंवाले हैं उनके हाथमे कृपाणी चमकती है, व्यापारी प्रसन्न वदन रहते हैं और घर-घरमे सुभिक्ष सुकाल है।

जिस प्रकार मारवाड़ मोटा देश है वैसे वहांके कोश भी लम्बे है, निवासी भद्र प्रकृतिके है मनमे रोप नहीं रखते, कमरमे कटारी बांधते है। बणिक लोग भी जवरे योद्धा है हथियार धारण किये रहते है। रणभूमिमे पैर पीछा नहीं फेरते स्वधर्मियोंको धर्ममें स्थिर करते है। निष्कपट वृद्धाएं भी लम्बा घूंघट रखती है, सादगी जीवन और रसोईमें रावकी प्रधानता है, विधवाएं भी हाथमे चूड़िया रखती हैं। वाहणमें ऊंठीकी प्रधानता है, पथिक लोग जहां थकते है वही विश्राम लेते है परन्तु चोरीका भय नहीं है। शत्रुओंसे अभेध मार-वाड़के ये ६ कोट है . १ मण्डोवर (जोधपुर) २ आवू ३ जालोर ४ वाहड़मेर ५ पारकर ६ जैसलमेर ७ कोटड़ा ८ अजमेर ९ पुष्कर या फलौदी ।

धन्य है मंडोवर देश जहां मंडोवर। पार्वनाथ और फलवद्धि पार्वनाथका तीर्थ है, कवि कहता है कि उनके दर्शनोंसे मैं सफल और सनाथ हो गया ।

मह मठले यगन्वी मडता नगर है इसकी उत्पत्ति लिये यह लोककथा त्रिमिद्ध है कि जैसे जैनशासनमे भरतादि चक्रवर्ती हुए वैसे शिवशासनमे मान्धाता नामक प्रथम चक्री हुआ उसकी माताका देहान्त हो जानसे वह इन्द्रकी दररसमे बडा होकर महानतापी चक्रवर्ती हुआ उसका आनुज्य कोडा कोडी वर्षोका था । उसके लिये कृत युगमे इन्द्रने राज्य स्थापना करके मेडता नगर बसाया ।

मडता नगर अति समृद्धिगाली था, सरोवरादिका वर्णन कविने रासमे अच्छा किया है । निकटवर्ती फलत्रिद्धि पाठर्वनाथका तीर्थ महामहिमाराली है, पोष दसमीको मेलेमे जहा एक लाख जनता एकत्र होती है—दूर-दूर देगोसे यात्री आत हैं ।

उस मेडतमे ओमवाल जातिन चोरडिया गोत्रीय ग्राह माडण का पुत्र नयमल निवास करता था, उसकी पत्नीका नाम नायकद था । उनक घरमे लक्ष्मीका निवास था सामग्री भरपूर थी, (उसकी) दादी फूला धर्म कार्या मे धनका अच्छा सदुपयोग किया करती थी । नयमलके १ जेसो २ वसो ३ कर्मचन्द ४ कपूरचन्द और ५ पचायण नामक पांच पुत्र थे, पाचो पुत्रोमे तृतीय कर्मचन्द हमार चरित्र नायक है उनका जन्म वि० स० १६४४ (शक १५०६) फाल्गुन शुक्ला २ रविवारको उत्तरभद्रपदान चतुर्थ चरण और राजयोगमे हुआ था ।

५५५५ रात्रिमे सेठ नयमल सुख शय्यापर सोये हुए थे, जाग्रत होकर ससारक सुखोके मिलनेका कारण विचार करते हुए वैराग्य वासित होकर सुगुरुका सयोग प्राप्त होनेपर कृत पापोकी-आलोचना लेनका विचार किया । दैवयोगसे तपा गच्छके श्रीकमलविजयजी म०

५५ ठाणोंसे विचरते हुए मेड़ता पधारे, उनके समस्त श्रेष्ठिने आत्म आलोचना लेनेकी उच्छा प्रगट करनेपर मुनिवरने गच्छनाथके आलोचना लेनेकी राय दी परन्तु आगिर नथमलजीका अन्यायदंड देखकर २१ अष्टम तप और बहुतसे ब्रह्मे और उपवानोंकी आलोचना दी।

आलोचनाके अनन्तर विशेष वैराग्य वाग्मिने लोक अपनी श्री नायकदे और भ्राता सुरताणको भी महाव्रत लेनेके लिये उपदेश देकर, दीक्षाका परामर्श किया, उनके साथर कर्मचन्द्र आदिपुत्रोंने भी स्वीकृति दी। सेठने गच्छनाथके मिलनेपर दीक्षा लेना निश्चित किया।

इसी अवसरपर लाहोरमें दो चातुर्मास करके विजयसेननूरि मेड़ता पधारे। नाथू शाह पाचो पुत्रोंके साथ गुरुश्रीको वन्दनार्थ आया। शुभ लक्षणवाले कर्मचन्द्रको देखकर गच्छनाथकने सोचा कि अगर यह चरित्र ले, तो बड़ा विचक्षण होगा। गुरुश्रीने नाथू शाहसे कहा कि अभी हम हीरविजयसूरिजीके दर्शनार्थ जा रहे हैं तुम यथा-वसर कर्मचन्द्रादिके साथ आ जाना, ऐसा कहकर मेड़तासे सोझी, पर्युपणाके पारणेपर राणकपुर, बरकाणा तीर्थकी यात्रा करते हुए जालोर पधारे वहा कमलविजयजीने उन्हे वन्दना की, बीजोवाका संघ भी आया। वहासे विहारकर श्री विजयसेनसूरि सिरोही होकर पाटण पधारे और हीरविजयसूरिजीका निर्वाण हुआ जानकर वही ठहरे।

इधर मेड़तेमें कर्मचन्द्र आदि दीक्षाकी तैयारिया करने लगे, बहुतसे धर्मकृत्योंको करते हुए जेसा और पञ्चायणको गृह भार संभलाकर १ नाथू २ सुरताण ३ कर्मचन्द्र ४ केसा ५ कपूरचन्द्र

(६ नावक) ६ व्यक्तियोंने स० १६५२ माघ (जुलाई) २ को पाटणमे विजयसेनसूरिव पास दीक्षा ग्रहण की। उनका दीक्षावे नाम इस प्रकार रते गए—नाथू=नमविजय, सुरताण=सूरविजय, कमचन्द्र=कनकविजय, कशा=कीर्तिविजय, कपूरचन्द्र=कुसर-विजय, इनमे कनकविजयको सुयोग्य समझकर विजयसेनसूरिने स्वजिप्य विजयदेवसूरिको साप दिया, उन्होंने इनको विद्याव्ययन कराया, श्रीविजयसेनसूरिने अहमदाबादमे स० १६७० मे पंडितपद से विभूषित किया। बीसा और बतान महोत्सव किया। स्वभातमे श्रीविजयसेनसूरिका स्वर्गवान्त हो जानसे उनका पट्टधर विजयदेव-सूरि हुए, उन्होंने स० १६७३ मे पाटणमे चौमासा किया, पौष वती ६ को लाली आविकान इनका हाथसे प्रतिष्ठा करवाई, इसी समय कनकविजयको उपाध्याय पद भी दिया गया।

सम्राट जहागीर विजयदेवसूरिसे माण्डवगाढमे मिले और प्रमत्त होकर "महातपा" पद लिया। विजयदेवसूरिने गुर्जर देशमे विहार करत हुए श्री शत्रुजयकी यात्रा की, उसवे पञ्चात् दो चौ-मासे दीर्घमे करके गिरनारकी यात्रा कर नवानगर पधार, वहा सधने २०००) जामी व्ययकर साम्हेला किया। तत्पश्चान् उन्होंने पुन शत्रुजयकी यात्राकर स्वभात चातुमास किया, वहा तीन प्रतिष्ठाओमे चौदह हजार खर्च हुए। वहासे माघ जुलाई ६ को सावली पधार। ३ मास तक मोन रहे, वहा सोनी रतनजीने अमारि पालन कराई, उस समय उ० कनकविजयजी ही व्याख्यान देते थे। गुरुने बहुतसे छठ अठमादि किए और वे आविल करके पूर्वदिशिकी ओर ध्यान

किया करते थे। सूरि मंत्रके आराधनसे वैशाखमें स्वप्नमें देवने कनकविजयजीको पद स्थापनका निर्देश किया, उसके बाद पूज्य सावली और ईडर पधारे। वहां दो चौमासे किये, प्रासाद प्रतिष्ठा हुई। उसके बाद राजनगर चातुर्मास करके एक चातुर्मास वीबीपुरमें किया। चातुर्मासके अनन्तर सीरोहीके पंजावत तेजपाल और राय अखैराजके पोरवाड़-मंत्री तेजपालने गुरु वन्दना की, गुरुश्री पुनः श्री सिद्धाचलजीकी यात्राकर कमीपुर पधारे। तेजपालने पारस्परिक झगड़ा मिटाकर मेल कर लेनेकी विज्ञप्ति की उन्होंने भी स्वीकार कर समझौतेका पत्र लिखा, आचार्य विजयानन्दसूरि उ० नन्दि-विजय वा० धनविजय, धर्मविजय आदिने विजयदेवसूरिकी पुनः आज्ञा शिरोधार्य की, तेजपाल पूज्यश्रीको सिरोही पधारनेकी विज्ञप्तिकर वापिस आ गया। पूज्यश्री राजनगरसे विहारकर ईडर आये, वहां तपागच्छीय संवके आग्रहसे श्री उ० कनकविजयजीको वै० शु० ६ सोमवारको पुष्य नक्षत्रके दिन सूरिपद देकर स्वपट्ट पर स्थापन किया। उस समय ईडर संघ मुख्य सोनपाल, सोमचन्द्र, सूरजीके पुत्र सार्दूल, सहसमल, सुन्दर, सहजू, सोमा, धनजी मन-जी, इन्दुजी और अभीचंद, राजनगरके संववी कमलसिंह, अहमद-पुरके पारख वेलके पुत्र चापसी, पारख देवजी, सूरजी, थानसिंह, रायसिंह, सा०भामा, तोला, चतुर्भुज, सिंह, जागा, जसु, जेठा जो गुरुश्रीके भाई थे, कोठारी वच्छराज, रहीआ, कर्मसिंह, धर्मसी, तेजपाल, अखयराज मंत्री समरथ मं० लखू भीमजी, भामा, भोजा, फड़िया मालजी भाणजी लखा चौथिया, गाधी वीरजी, मेघजी

सा० वीरजी, दवरण, पारस जस्तू, भाणजी, सुरजी, तजपाल
 रत्नादि इडरका मघ सम्मिलित हुआ इसी प्रकार धावड और
 अहिमनगरका मघ एव सावलीका मघ पदमनी, चादसी आदि पुत्र
 हुए, सा० नाकर पुत्र सहजून चतुर्विध मघन साथ पत्र नदानक
 लिये तपागच्छ नायकको एव उ० धर्मविजय वा० लावण्यविजय
 वा० चारित्रविजय प० सु लविजय इन चारको बुलाया गया।
 पत्रस्थापनाय अनन्तर कनकविजयका नाम विजयनिहस्रि रखा
 गया, प० कीर्तिविजय, लावण्यविजयको वाचकपत्र और अन्य ८
 साधुओंको पदित पद दिया गया। इस उत्सवमें सहजून पाच
 हजार महम्मती व्यय किये, इडर नरग कल्याणमल नसन्न हुए।
 ज्येष्ठ मासमें विम्व प्रतिष्ठा हुई, शाह रइयान उत्सव किया, दूसर
 पत्रमें अमराजन सुयग लिया, पारस देवजीके घर पूजन तीन प्रतिष्ठा
 की, इस प्रकार स० १६८१में बडे ही आनन्दोत्सव हुए। राय
 कल्याणन दोनो आचाया को इडरमें चोमासेने लिए रखा।

सीरोहीन शाह तजपालकी विनाहिसे चत्र मासमें सरिजी आरू
 पधार, स० महाजल दोनी, जोधा मन्मुरत आए। आरूकी यात्राकी।
 वभणवाडन वीर प्रमुकी यात्रा कर चातुर्मास्य सीरोही पधार।
 सा० तजपालादिन बहुतस सुकृत किये। इसी समय विजयात्मनी
 स० १६८३ को यह विजयत्रकाग रास कमलविजयन गि य निजा-
 विजयन गि य गुणविजयन रचा।

ऐतिहासिक सझायमाला भा० १ पृ० २७ (सझाय न० २४
 लालकुजलट्टन) में कइ बातोका अन्तर व विरोपताए हैं।

१ पुत्रोंके नाममें ५ वे पंचायणके स्थानमें प्रथम जैठाका नाम है।
 २ पांचही व्यक्तियोंके दीक्षा लेनेका लिखा है, मुरताण-मूरविजय
 का उल्लेख नहीं है। नायकदेका दीक्षा नाम नयत्री लिखा है, एवं
 दीक्षा सं० १६५४ लिखा है।

विशेष सं० १६८४ पौष शुक्ल ६ बुधवार जालोरके मंत्री
 जयमलने गुणानुजाका नन्दिमहोत्सव कराया, उस समय जयसागर
 के शिष्य जयसागरको और विजयसिंहसूरिके भाई कीर्तिविजयको
 वाचक पद दिया। आचार्य विजयसिंहसूरिने राणा जगतसिंहको
 प्रतिबोध दिया, मेडतेमें आगरा निवासी वादशाहके मुख्य व्यवहारी
 हीराचंदकी भार्या मनीने इनके हाथसे प्रतिष्ठा कराई, इसी प्रकार
 किसनगढमें राठौर रूपसिंहके महामन्त्री रायसिंहके आप्तहसे चातु-
 र्मास कर प्रतिष्ठा की। सं० १७०६ असाढ़ सुदि २ अहमदाबादके
 नवीनपुरामें उनका स्वर्गवास हुआ।



संक्षिप्त कविपरिचय

अक्षरानुक्रमसे कवियोंके नामोंकी सूची

अभयतिलक (३०) जिनपतिसूरि पट्टधर जिनेश्वरमूरिके शिष्य थे, आपका रचित १ स० १३१७ पाल्णापुरमे हेमचन्द्रमूर्धित व्याकरण (२० सर्ग) का प्रवृत्ति २ न्यायालङ्कार टिप्पण (पञ्चमस्य न्यायतर्क व्याख्या) ३ वीररास (स० १२१७) विशेष परिचय देखें — जैनयुग वर्ष २ पृ० १५६ ला० भ० का लेख ।

१ अभैविलास (४१३) श्रीपालचरित्र कर्ता जयकीर्त्तिगीने शिष्य प्रतापसौभाग्यजीक आप शिष्य थे । आपकी परम्पराम अभी कृपाचन्द्रसूरि विद्यमान हैं ।

२ आनन्द (१७७) ।

३ आनन्दविजय (२०६) ।

४ आलम (३३८) कविवर समयसुन्दरकी परम्पराम आस-करणजीके शिष्य थे, आप अच्छे कवि थे, आपके रचित १ मोन एकादशी चौ० (१८१४ मकसूदावाद) २ सम्यक्त्वन कोमुदी चौ० ३ जीवविचारस्तवन आदि उपलब्ध हैं ।

५ कनक (१३४) आप सम्भवतः ३० क्षेमराजजीके शिष्य थे, आपका पूरा नाम 'कनकतिलक' होगा।

६ कल्याणकमल (१००) देखे . युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि पृ० १७२ ।

७ कल्याणचंद्र (५२) कीर्तिरत्नसूरिजीके शिष्य थे। सं० १५१७मे सूरिजीसे आपने आचारागकी वाचना ली जिमकी प्रति जे० भं० मे (नं० २) अब भी विद्यमान है।

८ कल्याणहर्ष (२४७)

९ कविदास (१७४)

१० कवीयण (२६३-२६२) ।

११ कनकसिंह (२४३) गिवनिधान शिष्य, देखे यु० जि० सू० पृ० ३१३ ।

१२ कमलरत्न (२३३) देखें यु० जि० सू० पृ० ३१५ ।

१३ कमलहर्ष (२४०) श्रीजिनराजसूरि शिष्य मानविजयजी के आप शिष्य थे, आपके रचित १ पाडवरास (१७२८ आ० व० २ र० मेड़ता) २ घना चौ० (१७२५ आ० सु० ६ सोजत) ३ अंजना चौ० (१७३३ भा० सु० २) ४ रात्रि भोजन चौ० (१७५० मि० लूणकरणसर) ५ आदिनाथ चौड़ा० ६ दशवैकालिक सझाये इत्यादि उपलब्ध है।

१४ कनकधर्म (२६६) ।

१५ कनकसोम (६०-१४४) देखें यु० जिनचंद्रसूरि पृ० १६४

१६ करमसी (२४७)

१७ कीर्तिवर्द्धन (३३३) जिनहर्ष (आचपत्री) मूरिजीव शिष्य दयारत्न (कापरहेडारास कत्ता १६६५) के आप गिष्य थे, आप रचित सदयवल्सावलिगा चौ० (१६६७ विजयदामी) प्राप्त है ।

१८ कुशलधीर (२०७) देखें युगप्रधान जिनचद्रसूरि पृ० १६४ ।

१९ कुशललाम (११७) " " " " १६६ ।

२० सत्पति (१३८)

२१ समहस (२१७) क्षेमकीर्ति (गारसाक आदि पुरुष) जीव गिष्य थे, आपकी रचित मेधतूत दीपिका उपलब्ध है । जयसोम, गुणविनय आपहीकी परम्परामे थे ।

२२ श्वेमहय (२४२-४३) आपके रचित कई स्तवन हमार सनहमे हैं ।

२३ गुणविजय (३६४) आपके रचित १ विजयप्रशस्ति काव्यन अन्तिम ५ सर्गमूल और समनप्रन्यपर टीका २ कल्प, कल्पलता टीका ३ सातसौ बीस जिन स्त० आदि उपलब्ध हैं ।

२४ गुणविनय (६३-६६-१००-१२५-१७०-२३०) देगे यु० जिनचद्रसूरि पृ० २०० ।

२५ गुणसेन (१३६) सागरचद्रसूरि सासाके वा० सुसनिधानजी के आप शिष्य थे आपके रचित कई स्तवन हमार सनहमे हैं । आपने यशोलाम नामक शिष्य थे जो अच्छे कवि थे ।

२६ चारित्रनन्दन (२६७) ।

२७ चारित्रसिंह (२२५) देख यु० जिनचद्रसूरि पृ० १६७ ।

२८ चन्द्रकीर्ति (४०६) देखें यु० जिनचंद्रमूरि पृ० २०८ ।

२९ जयकीर्ति (३३४) कविवर समयसुन्दरजीके शि० वादी हर्षनंदनजीके शिष्य थे ।

३० जयकीर्ति द्वि० (४११-१२) आप कीर्तिरत्नमूरि शास्त्राके अमरविमल शि० असृत सुन्दरजीके शिष्य थे, आपके रचित १ श्रीपाल चारित्र (१८६८ जेसलमेर) २ चैत्रीपूज्य व्याख्यान आदि उपलब्ध हैं ।

३१ जयनिधान (१४५) देखें यु० जिनचंद्रसूरि पृ० २०६ ।

३२ जयसोम (११८) देखें यु० ,, पृ० १६७ ।

३३ जल्ह (१३८) ।

३४ जिनचंद्रसूरि (४१८) उसी ग्रन्थमे राससार पृ० २६६

३५ जिनसमुद्रसूरि (३१५-१६) देखें इसी ग्रन्थमे राससार पृ० ७५

३६ जिनेश्वरसूरि (४३०) वेगड़ गुणप्रमसूरि शि०

३७ देवकमल (१३६) इनका नाम जइतपदवेलिमे आता है

अतः साधुकीर्तिजीके गुरु-भ्राता होना सम्भव है ।

३८ देवचंद्र (२६४) ।

३९ देवीदास (१४७) ।

४० धर्मकलश (१६) ।

४१ धर्मकीर्ति (१८६) देखें यु० जिनचंद्रसूरि पृ० १८३ ।

४२ धर्मसी (२५०-५२) देखें राजस्थान पत्र वर्ष २ अंक २ में

प्र० मेरा लेख ।

४३ नयरंग (२२६) देखें यु० जिनचंद्रसूरि पृ० १६५ ।

४४ नेमिचंद्र भडारी (३७०) पण्डीरातक कर्ता, जिनपति
गिष्य जिनेश्वरसूरिके पिता ।

४५ पुण्यसागर (५) देख यु० जिनचंद्रसूरि पृ० १८८ ।

४६ पुण्य (३३७) यथासम्भव आप समयसुन्दरजीक परम्परामे
(कविवर विनयचंद्रके प्रगुरु) होंगे और पूरा नाम (पुण्यचंद्र शि०)
पुण्यविलास होगा ।

४७ पद्मराज (६७) देखें यु० जिनचंद्रसूरि पृ० १६० ।

४८ पद्ममन्दिर (५६) आपके रचित १ नवचनमारोद्धार
चाला० (१५६३) उपलब्ध है ।

४९ पद्मराज (४०)

५० पल्ल (३६८) इनका नामोल्लेख चर्चरी टीका (अपभ्रंश
काव्यत्रयी पृ० १०) में आता है, आप दिगम्बर भक्त और (जिन
दत्तसूरिके) अभिनवप्रदुष्य श्राद्ध थे, लिखा है ।

५१ भक्तउ (६) ।

५२ भक्तिलाभ (५४) उ० जयसागरजीक शि० रत्नचंद्रजीक आप
सुरिगिष्य थे, आपके रचित १ कल्पातरवाचन २ लघुजातक कारिका-
टीका (१५७१ विक्रमपुर) ३ जीरावला पार्वस्त० संस्कृत स्तोत्र प० ३,
४ सीमधरस्तवनादि उपलब्ध हैं । आपके शि० चारचंद्रजी कृत १ उत्तम
कुमारचरित्र २ रतिसार चौ० ३ हरिवल चौ० (१५८१ आ० सु०
३) ४ नदनमणियारसन्धि (१५८७) आदि उपलब्ध हैं आपकी
परम्परामे श्रीवलभोपाध्याय हो गये हैं, देखे यु० चरित्र पृ० २०३ ।

५३ महिमा समुद्र (४३१-३२) वेगडशाखा

५४ महिमहर्ष (४३२) वेगड शाखा, अच्छे कवि थे ।

५५ महिमाहंस (३००)

५६ माडदास (३१८)

५७ माणक (२६४)

५८ माधव (३३६)

५९ मेरुनन्दन (३६६) जिनोदयसूरि आपके दोब्रागुरु थे ।

आपके रचित अजितगान्तिस्तवनादि उपलब्ध है ।

६० रयणगाह (७)

६१ रत्ननिधान (१०३-१२३) देखे यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० १०४

६२ राजकरण (३०३-३०४)

६३ राजलछी (३४०)

६४ राजलाम (२५५-२५७) देखे यु० जिनचंद्रसूरि पृ० १७३

६५ राजसमुद्र (१३२) आचार्य पदके अनन्तर नाम जिन-
राजसूरि, देखे इसी ग्रन्थमे राससार पृ० २२

६६ राजसुन्दर (३२०) प्रशस्तिसे स्पष्ट है कि आप (जिन-
सिंहपट्टे) पिप्पलक जिनचन्द्रसूरिजीके शिष्य थे ।

६७ राजसोम (१४६) कविवर समयसुन्दरजीके शि० हर्षनन्दन
शि० जयकीर्तिजीके शिष्य थे । आपके रचित आवकाराधना
(भाषा) २ कल्पसूत्र (१४ स्वप्न) व्याख्यान (सं० १७०६ आ०
सु० ६ जेसलमेर, जिनसागरसूरि शि० जसवीर प००) ३ इरियाविही
मिथ्यादुष्कृतस्ता०वाला० ४ फारसी स्त० आदि उपलब्ध है ।

६८ राजहंस (२३१)

६६ रूपहृप (२४१) आप राजविजयजीक शि । व ।
 ७० लब्धि कलोल (७८-१२१ १२२) देखे यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० २०६
 ७१ लब्धिगेसर (६८)
 ७२ ललितकीर्ति (२०७-४०५) देखे यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० २०६
 ७३ लाध गह (३२१) कडुआमती (कडुआ सीमो-वीरो-जीवराज
 तजपाल रतनपाल—जिनदाम-तज-कल्याण-लघुजी योभणशि०)
 ये । आपन रचित, १ जम्बूरस (१७६४ का० सु० २ गुरु सोहीगाम)
 २ सूरत चैत्य परिपाटी (१७६३ मि० व० १० गु० सूरत) ३ पृथ्वी-
 चन्द्रगुप्तसार चरित्रनाला० (१८०७ मि० सु० ५ रवि० राधणपुर)
 प्राप्त है ।

७४ वमतो (२६५) आपक रचित १ लोद्ववास्त० (१८१७ मि०
 व ५ र०) २ वी स्थानक स्त० गा० १६, ३ रात्रिमोजन सक्षाय,
 ४ पार्वनाय स्तवनादि उपलब्ध है ।

७५ विमलरत्न (२०८)

७६ विद्याविलास (२४५) आपने रचित कई संस्कृत अष्टक
 आदि हमार सग्रहमे है ।

७७ विवासिद्धि (२१४)

७८ वेलजी (२५१)

७९ त्रीसार (६१-६४) देखे युगाग्रधान जिनचन्द्रसूरि पृ० २०७

८० त्रीमुन्दर (१७१) " " पृ० १७२

८१ समयत्रमोद (८६-६६) देखे यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० १७२

८२ समयसुन्दर (८८-१०६-७ ८-६-२६-२७-२८-२९-३१-

२००-२२७) देखे उपरोक्त पृ० १६७ और रामसार पृ० ४५।

८३ समयहर्ष (२५४)

८४ सहजकीर्ति (१७५-७६) देखे यु० जिनचन्द्रमूरि पृ० २०६

८५ सारमूर्ति (२३)

८६ साधुकीर्ति(६२-६७-४०४)देखे यु० जिनचन्द्रमूरि पृ० १६२

८७ सुखरत्न (१४६)

८८ सुमतिकालोल (६४)

” पृ० १०५

८९ सुमतिवलभ (१६८)

९० सुमतिविजय (१७७)

९१ सुमति विमल (२५०)

९२ सुमतिरंग (४१०-४२१) देखे यु० जिनचन्द्रमूरि पृ० ३१५

९३ विवेकसिद्धि (४२२)

९४ सोमकुंजर (४८) आप उ० जयसागरजीके विद्वान शिष्य थे। विज्रप्तित्रिवेणी पृ० ६१ से ६३) में आपके रचित कई अलंकारिक पद्य भी पाये जाते है।

९५ सोममूर्ति (३८७) जिनपतिसूरि शि० जिनेश्वरसूरिजीके आप सुशिष्य थे और उ० अभयतिलकजीके आप सतीर्थ थे। देखे जैनयुग वर्ष २ पृ० १६४।

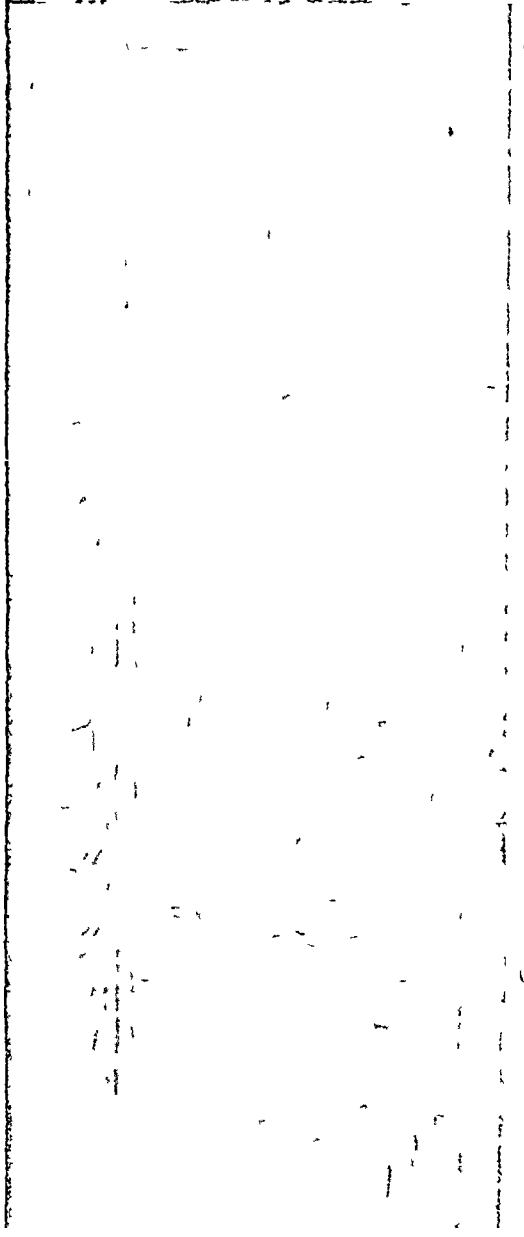
९६ हर्षकुल (५७) महो०-पुण्यसागरजीके शिष्य थे, उल्लेख यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० १६०

९७ हर्षचन्द्र (२४६) रूपहर्ष शि०, आपके रचित अन्य एक गहुंली भी संग्रहमें है।

- ६८ हर्षनन्दन (१०४-३२-३३-१४६-२०१-२०३) देखें यु० पृ० १७१
- ६६ हर्षवल्हभ (४१७) देखें यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० १८५
- १०० सेवकसुन्दर (४२०)
- १०१ हंससिद्धि (२११-१३)
- १०२ क्षमाकल्याण (२६६-३०६-७) देखें इसी ग्रन्थमे रामसार
पृ० ६४
- १०३ ज्ञानवल्लभ (३२६)
- १०४ ज्ञानकुराल (२३२)
- १०५ ज्ञानद्वी (३३५-३७८) देखें यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० ३०५
- कवियोंक नामके आग प्रस्तुत समूह (मूल) कृष्णोकी संग्रही
दी गई है । कई कवि एकही नामसे एकही समयमे कई हों गये हैं
अतः सदिग्ध परिचय देना उचित नहीं ज्ञात हुआ ।



प्रेटिह सिन जैन् वल्ल संग्रह



प्रगट प्रभावी योगीन्द्र युगप्रधानजी जिनदत्त सूरिजी

(जैसलमेर भाण्डागारीयप्राचीन ताडपत्रीय

प्रतिके काष्ठफलरूपर चित्रित)

॥ अहंम ॥

ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह

॥ श्री गुरु गुण फटफट ॥

जिणवल्ह पमुहाण, सुगुरुग जो पटइ वर-रुप ।

मगल देवमि रुप, सो पाउड मगल विमल ॥१॥

अथारह मड मद्रुमत समहिय मरठरि ।

आसाढड सिय ठट्टि चित्तकोटमि पनरपुरि ।

महाप्रीर जिणभवणिद्विय सठिउ जिणवल्ह ।

जिणि उनोरठ चट्टु गट्टु पडिय जिणवल्ह ।

गुरु तथ कव्व नाडय पमुह, विज्जा वास पसिद्ध धर ।

परिहरवि आवि विहि पयड कइ, पुहवि पससिज सुपरपरि ॥१॥

अथारह गुणहतरइ किसण वैसार ठट्टि दिणि ।

चित्तउडह वर नयरि सधु मिलियउ आणदिणि ।

वहमाण निणभवणिभयउ तहि घणउ महोठनु ।

दरभदि सठियउ मुरि जिणदत्त सुनिउधु ।

आयस पुणति सूरि भिउ, जिम ज्ञाण नाण सतुद्ध मण ।

जिणदत्त सरि पहु सुर गुरवि, थुणवि न सधु लुह्ण गुण ॥ २ ॥

अज्जवि जसु जस पसर महि छहलड धरत्तिहि ।

अज्जवि जसु गुण नियरु थुणहि पडिय बहु भत्तिहि ।

अज्जवि सुमरिज्जतु विधरु अवहरइ पवित्तण ।

नाम ग्रहणि कुणति जसु अज्जवि भप्रियण दिण ।

अज्जवि जु देवु लोइ द्वियउ, संघ मणछिउ देइ फलु ।

जिणदत्त सूरि पहु सुरगुरुवि, धम्मु पयासिउ जिण अमलु ॥३॥
अभयदाणु जिणि दिनु सयल संवह विक्रमपुरि ।

किय पयकृ जिण उसम भुवणि बहुविइ उउवु भरि ।
जिणि पडिवोहउ कुमरपालु नरवय तिहुयण गिरि ।

पंचसत्त मुणि नेमि जेणि वारिउ देसण करि ।
उज्जेणी वक्कुकु जोइणि तणउं, जिणि पडिवोहउ ज्ञाण वलि ।

जिणदत्त सूरि पहु सुरगुरवि, हुयउ न होइ सइ इत्थु कलि ॥ ४ ॥
बारह पंचुत्तरइ धवल वैसाख छट्ठि दिणि ।

सइ जिणदत्त मुणिंद ठविउ जिनचंदु पट्टि तहि (? जिणि) ॥
विक्रमपुरि जिण वीर भुवणि वादिय मणु मोहइ ।

गणहरु जेम सुहंम सामि भवियण दिण वोहइ ।
जिणचन्द सूरि जसु चन्दु सम, अज्जवि उज्जोयइउ गयणु जिणि ।

..... ॥ ५ ॥

बारह सइ तेवीस समइ कत्तिय सिय तेरसि ।

बबेरेपुरि ठविउ सूरि जिणपत्ति महा रिसि ॥
मंतुं दिनु जयदेव सूरि सूरहि सुपवित्तिण,

.....

अत्थाणु पहुविरायह तणउ जिणि रंजवि जयपत्तु लियउ ।
खरहरय सद्धि जगि पयडिउ, जुग पहाणु पहुविप्पयउ ॥ ६ ॥
बारअठ्ठहतरइ माह सिय छट्ठि भणिज्जइ ।

जिणोसर सूरि पइसरइ संघु सयलु विविह सज्जइ ।

सूरिमनु सिरि सव्ववसूरहि जसु दिनउ ।

जालउरहि जिणनीर मुवणि बहु उच्छव (की) नउ ॥

कसाल ताल झलरि पडह, वेण वसु रलियामणउ ।

मुपढति भट्ट सुमहि गहिर, जय जय सह सुहावणउ ॥७॥

जिणवल्लह जिणत्त सूरि जिणचडु जु जिणनइ ।

तुय सुवइ आसीस दिति जिणेसरसूरि मुणिवइ ।

प्राहि जाम जलु रहइ गयणि जाम मह दिणेसरु ।

ताम पयासिउ सूरि धमु जुगपवरु जिणेसर ॥

विहि सघु स नदउ दिग्गदिणु, वीर तित्थु थिरु होउ धर ।

पूजन्ति मणोरह सयल तहि, कवठ पढति नारि नर ॥ ८ ॥

[इति पदपदम्]



॥ श्री जिणदत्तसूरि स्तुति ॥

सिरि सुयदेवि पसाड करे, गुरु श्रीजिणदत्त नृरि ।

वन्निसु खरतर गण गयणि, नृरि जेम गुण पूरि ॥ १ ॥

संवत इयारह वरसि, वतीसड जसु जम्म ।

वाछिग मंत्री पिता जणणि, वाह (ड) देवि सुरम्म ॥ २ ॥

इगतालइ जिणवय गहिय, गुणदुत्तरड जसु पाट ।

वडसारइ वदि छट्टि दिणि, पय पणमी सुर वाट ॥ ३ ॥

अंवड सावय कर लिहिय, सोवन अखर अंवि ।

जुग पहाण जगि पयडियउ ए, सिरि सोहम पडिविव ॥४॥

जिण चोसठि जोगिणी जितिय, खित्तवाल वावन्न ।

डाइणि साइणि विभूसीय, पहुवड नाम न अत्र ॥ ५ ॥

सूरि मंत्र वलि कर सहिय, साहिय जिण धरणिद ।

सावय सविय लख इग, पडिवोहिय जण वृन्द ॥ ६ ॥

अरि करि केसरी दुडदल, चउविह देव निकाय ।

आण न लोपि कोइ जगि, जसु पणमइ नरराय ॥ ७ ॥

संवत बारह इयार समइ, अजयमेरुपुर ठाण ।

इयारसि आसाढ सुदि, सगिपत्त सुह झाणि ॥ ८ ॥

श्री जिणवलह सूरि पए, श्रीजिणदत्त मुणिंदु ।

विग्व हरण मङ्गलकरण, करउ पुण्य आणंदु ॥ ९ ॥

श्री पुण्यसागर कृत

॥ श्रीजिनचन्द्रसूरि अष्टकम् ॥

श्रीजिनन्त सुरिन्द्रपय, श्रीजिनचन्द्र मुणिन्द ।

नय (?)र मणि मडित भाल यस्त, कुसल कुमुन् वणचदा ॥१॥

मवन मिव सत्ताणय, सद्वृमि सुदि जम्मु ।

रासल तात सुमातु जसु, वल्हण देवि सुधम्म ॥ २ ॥

सन्त वार तिरोत्तरय, फागुण नवमि विपुद्ध ।

पच महन्नय भरि धरिय, वालत्तणि पडिपुद्ध ॥ ३ ॥

चारह मह पचोतरं ण, वैशाखाह सुदि उट्ठि ।

नापिउ विक्कमपुर नयरि, जिणदत्त सूरि सुपट्टि ॥ ४ ॥

तेविसं भाद्रव फसिणि, चन्दसि सुह परिणामि ।

सुरपुरि पत्तं मुणिपवर, श्री जोयणिपुर ठामि ॥ ५ ॥

सुह गुरु पूजा जह करइ ण, नासय तासु किलेम ।

रोग सोग आरति टलइ ण, मिलइ लच्छि मुनिगेप ॥६॥

ताम मत्र जे सुख जपड ण, मगु तणु सुद्धि तिसस ।

मनवञ्जित मवि तसु हुवइ, फज्जारम अवइ ॥ ७ ॥

जासु सुजसु जगि शिगामिगै ण, चटुज्जल निकलक ।

प्रमु प्रताप गुण जिप्पुरइ हरइ टमर अरि सरु ॥ ८ ॥

इय श्रीजिनचन्द्रसूरि गुरु, सथिणिउ गुणि पुन्न ।

श्री "पुण्यसागर" वीनवर, सहगुरु होउ सुप्रमन्ते ॥ ९ ॥

इति श्रीजिनचन्द्रसूरि महाप्रभावीक अष्टक संपूणम् ।

(गुलाबकुमारी ए. ए. रोरीके गु का न० १२५ से उद्धृत)

शाह रथण कृत

श्रीजिनपतिसूरि धवल भक्तिसू

• • • • •

वीर जिणोसर नमड सुरेसर, तस पह पणमिय पय कमले ।
युगवर जिनपति सूरि गुण गाडसो, भक्तिभर हरसिहि मनिरमले ॥१॥
तिहुअण तारण सिव सुख कारण, वंछिय पूरण कल्पतरो ।
विचन विणासण पाव पणासण, दुरित तिमिर भर सहस करो ॥२॥
पुहवि पसिद्धउ सूरि सूरिश्वर, शम दम संयम सिरि तिलउ ए ।
इणि कलिकालहि एह जो जुगपवर, जिणवइ सूरि महिमा निलउ ए॥३॥
अत्थि मरुमण्डले नयर विक्रमपुरे, जसोवद्धनु जगि जाणिड ए ।
तासुवर गेहिणी सूहव देविय, जासु वर पुत्त वखाणिड ए ॥ ४ ॥
विक (म) संवच्छरे वार दहोतरे, चैत्र धुरि आठमि जो जाईयउ ए ।
नयर नर नारि नय(व?)रंग भरि गायो, जसोवरधनु वधावियउ ए॥५॥
तिणि सुह दिवसहि निय मणि रंगहि, उच्छव करिय नव नविय परे ।
निरुपम “नरपति” नामु तसु किज्जए, क्रमि क्रमि वाधइ तात घरे॥६॥
वार अठार ए वीर जिणालए, फागुण वदि दसमिय पवरे ।
वरीय संजम सिरिय भीमपल्लीपुरे, नन्दि वर ठविय जिणचंदसूरे ॥७॥
अह सयल सार सिद्धांत अवगाहए, सज्जणमण नयण आणंदणउ ए ।
नाण गुण चरण गुण पयासए, चउ विह संघ सोहामणउ ए ॥८॥

वार त्रेवीसए नयरि वनेरए, कातिय सुदी दिन तरसीए ।
 श्री जिणचन्दसूरि पाटि सठाविउ, श्रीजयन्ध सूरि आयरीए ॥६॥
 गुरय नामेग जिनपति सूरि उन्धउ, चन्द्र कुलनर चन्दलउ ए ।
 विहरए सयल दसमि गुण भरिउ, समइ सरोरह (१ वर) हसलउए ॥१०॥
 पसि किरि रूत्र लावन गुण आथार, जण जण जपण मनि धरी ए ।
 सिरि माल्हून कुन्ने कमल दिवानर, वादीय गय घड वसरी ए ॥११॥
 पामी जेनु छनीस विवादिहि, जयसिह पहविय परपः (इ) ए ।
 रोहिय पुहत्रिय पमुह नरिन्दह जासु वयणि जिण आदर (इ) ए ॥१२॥
 दीरिय बहु मीस पयडिय बहु भिन्न, यापिय रीति सरतर तणी ए ।
 जासु पय पणमा सामणा दवि, दवि जालवरारजिवी ए ॥१३॥
 अह मरुकोटि नमुचन्द निवमए, (गुरु) गुरु दरि मनु नविगम (इ) ए ।
 जासु मनि निवसए सरउ जिण धम्मु, सरउ आचारि गुरु
 मनि गम (इ) ए ॥१४॥
 तायणु सोपुरि (पुर) नयरि गामागर, गुरु चि (वि?) रिय जोवइ अपारे
 भमियउ वारह वरिस भण्डारिय, सुगुरु दरतउ समय सारे ॥१५॥
 अह अवर वामरे पट्टण पुरवर, श्रीजिनपतिसूरि पेरि करे ।
 तउ मनि मानिय सत्रणजण आणिय, आदिरी उ गुरु हरिस भरे ॥१६॥
 तासु अगोल मुनियपय जोगि, जाणिय सयहतिय दीसि कर ।
 तयण जिण सासण पभाव पयडतउ, पहुतउ पाहणपुर नयरे ॥१७॥
 सुललित वाणि वराणु करतउ, भविय बोहतउ विविह परे ।
 साह (हू) सावन जण जस्स सेना करइ, सेव सारइ सुर सुपरि परे ॥१८॥
 अन्न दिगतर वार सतहोतरे, मास असाढि जिण अणसरी ए ।
 मन्न सुह झाणहि सिय दसमी दिवसहि, पहुतउ सूरि अमरापुरी ए ॥१९॥
 एहु श्री जिणपति सूरि गुरु जुगपवर साह "रयण" इम सधुणइ ए ।
 ममरइ जे नर नारि निरतर, तहा घर नविनिधि सपज (इ) ए ॥२०॥

कवि अतः कृत

श्रीशक्तिप्रतिभृतीणां मतिम्

वीर जिणेंसर नमीउ मुंगेंसर, नम पह पणमिय पय कमले ।
 युगावर जिनपतिभृति गुण मंडन, गुण गग गाडनो मनि रमले ।१।
 तिहुअण तारण सिव मुह कारण, वेंछिय पूरण कलपनरो ।
 विवन विणागत पाव पणागत, दुरित तिमिर न(भ)र नहम करो ।२।
 काम धेनोत्तम काम कुम्भोपम, पूरण जेम चिन्नारयण ।
 श्रीय जिण शासणि नव नव रंगिहि, अतुल प्रभाव प्रगटीयकरण ।३।
 तिहुअण रंजण भव दुह भंजण, दंसण नाण चारित्तजुतो ।
 सकल जिणागम सोढग सुन्दर, अभितवउ गोयम उदयवंतो ।४।
 पुहवि प्रसिद्धउ सूरि सूरिसर, चन्द्र कुलंवर चन्दलउ ए ।
 कमल नयण मगल कुल कारण, गङ्गजल तामु जमु निरमलउ ए ।५।
 इणि कलिकालिहि अवरु नवि सुणीडए, सिरि माल्हूय कुलेभिर तिलउ ए
 सोहम वेंसिहि वयरह साखिहि, जिणवडए सूरि महिमा निलउ ए ।६।
 अवर वर वासुरि पुन्य भर भासुरे, मूल नक्षत्रि चउयइ जु सारो ।
 थुणइं सुर नमडं नर चरण चूडामणि, जायउ पुत्रु नरवय कुमारो ।७।
 नर वर नारिय घरि वरे गायउ, जसोवरद्धनु वधावीउ ए ।
 तत्त घरणीय माणव मन हरणीय, उछव गरुअ करावीउ ए । ८।
 देसि मुरमुण्डले नयरि विकम पुरे, जसो वरद्धनु जगि जाणीउ ए ।
 सूहवदेविय उयरि ऊपन्नउ, तिहूयण सयलि वखाणीउ ए । ९।
 विकम संवत्सरे वार दहोतरे, चैत्र बहुल आठमि (आठमि !) पवरे ।

नल्लोय जय "नरपति" इणि नाभिहि, क्रमिन्नमि वाधइ ए तातवर ॥१०॥
 नार अटारह ए वोर जिगालण, फागुण धुरि दसमीय पय ॥
 वरीय मजमनिग् भीमपलीय पुग्, नाट्टि ठविय जिणचन्दसूर ॥११॥
 पडय जिणागम पमुद् मिजावलीय, दरसणि त्रिमुवनु मोहीऊ ए ॥
 नमल दलायल दह सुकोमल, गुणमणि मन्डिर मोहीऊ ए ॥१२॥
 रूय फला गण गुण रचगायर, तिहुअण नयण आणदयतो ॥
 मतीयले मोहइ ए भविक्क जन मोहइ ए, चालइ ए मोह तिमर हरतो ॥१३॥
 नार तेवीमइ ए नयरि वरइ ए, कात्तिक्क सुत्ति टिण तरमी ए ॥
 नाणीय जयन्तेव सूरिहिं रापिय, तिहुअण जण मण च्चहसी ए ॥१४॥
 सिरि जिणचन्दह तणय सुपादिहिं, उयसम रम भर पूरोय ॥ ए ॥
 सुवहीय चारु विहार कातड, अजयमर नयरि मम्मोसरिउ ए ॥१५॥
 पामी ॥ नेतु उयोम विवादिहिं, जयसिह पुहवीय परपडइ ए ॥
 वोहिय पुविय पमुह नरिन्ड, त्रिमुणीय वयणि जिण धम्मसु करइ ए ॥१६॥
 तीरिय बहुणीम पयट्टिय च्चट्टिहिं त्रिय, थापीय रीति परतर तणीए ॥
 प्रभ पय वयण ए निसि दिन सेयइ ए, दयी जालवर च्चिजी ए ॥१७॥
 सुललित वागि वसाण करंतड, धयल असाड मत्तहत्तरइ ए ॥
 मन सुह झाणिहिं दसमिय दिवसिहिं, पहत्तड सूरि अमरा पुरी ए ॥१८॥
 चरण नमल नरवर सुर मेवण, मङ्गल कलि निवास हु ए ॥
 वृभह रचण पालणपुर नयरिहिं, तिहुअण पुरइ ए आस हु ए ॥१९॥
 लीणउ कमलेहि भमर जिम "भत्तउ", पाय कमल पणमिय कहइ ॥
 समरइ ए जे नर नारि निरतर, तिहा घरे रिद्धि नवनिहि ल्हइ ए ॥२०॥
 इति श्रीमज्जिनपति सूरिणा गीतम् ॥

श्रीजिनपति सूरि स्तूप कलशः

० . . . ३८ . . . ०

जनितसुवनतोषं रम्यसम्यक्त्वपोषं,

यदितकलुषमोषं रगात्रमत्यस्तदोषम् ।

प्रभुजिनपतिसुरैः प्रीणितप्राज्यसुरै-

र्व्यपगतमलगात्रैः सूत्रयते पुण्यपात्रैः ॥ १ ॥

कनककलशपूरैः कान्तिनिर्धूतसूरैः

कलकमलपिधानैः पुष्पमालाप्रधानैः ।

जिनपतियतिमूले मज्जनं सज्जनाना,

जनयति भवनोदं विश्वविश्वप्रमोदम् ॥ २ ॥

श्रीमत्प्रह्लादनपुरवरे प्रोन्नतस्तूपरत्ने,

स्फूर्जन्मूर्तिं जिनपतिगुरुं रत्नसानोजनंदा ।

क्षीरे नीरे स्नपय सुतरां भव्यलोका अशोकाः,

प्रेयः श्रेयः श्रियमनुपमा येन रम्या लभध्वे ॥३॥

इति जिनपतिसूरिगौतमः श्रीसुधर्मा,

प्रभुयुगवरजम्बूस्वामिवत्सप्रतापः ।

मथितकुपथदपो मज्जितः सज्जितश्रीः,

सकलकलशराध्या पातु संघाय लक्ष्मीः ॥४॥

॥इति श्रीजिनपतिसूरीणा स्तूपकलशः ॥

॥ श्रीजिनप्रभसूरि गीतम् ॥

सखर गच्छि वदमानसूरि, जिगेसर सूरि गुणे ।

अमयेवसूरि जिणवल्ल, सूरि जिणदत्त जुग पयरो ॥१॥

सुगुरु परपर युणहु तुम्हि, भवियहु भक्ति भरि ।

भिद्धि रमणि जिम वरड सयवर नव नयि पारि ॥आचलो

निणचन्दसूरि जिणपतिसूरि जिगेस तु (१२) गुणनिधानु ।

तदणुमभि उपनले सुगुरु, जिणमिच सूरि जुगप्रधानु ॥२॥

तासु पाटि उच्यगिरि उदय ले, जिणप्रभसूरि भाणु ।

मयिच कमल पडिरोहणु, मिळत तिमिर हरणु ॥ ३ ॥

राउ महमद साहि जिणि, निय गुणि रजियउ ।

मेढमडलि ढिलिय पुरि, जिण धरसु प्रकटु किउ ॥ ४ ॥

तसु गठ घुर धरणु भयलि, जिणवेसूरि सुरिराउ ।

तिणि थापिउ जिणमेवसूरि, नमहु जसु मनड राउ ॥ ५ ॥

गीतु पनीतु जो गायण, सुगुरु परपरह ।

सयल समोहि सिद्धिहि, पुहविहि तसु नरह ॥ ६ ॥



॥ श्रीजिनप्रभसूरि कवित्तम् ॥

के सलहउ ढीली नयरु हे, के वरनउ वखाणू ए ।

जिनप्रभसूरि जग सलहीजड, जिणि रंजिउ मुरुताणू ॥१॥

चलु सखि वंदण जाह गुण, गरुवउ जिनप्रभसूरि ।

रलियउ तसु गुण गाहि राय रंजणु पंडिय तिलउ । आंचली ।

आगसु सिद्धंतु पुराणु वखाणिड, पडिवोहह सव्वलोड ए ।

जिणप्रभसूरि गुरु सारिखउ हो, विरला दीमउ कोड ए ॥२॥

आठाही आठमिहि चउथी, तेडावड सुरिताणु ए ।

पुह सिवु मुख जिणप्रभ सूरि चलियउ, जिमि ससि इंदुविमाणु ॥३॥

“असपति” “कुतुवदोनु” मनि रंजिउ, ढीठेलि जिणप्रभ सूरि ए ।

एकंति हि मन सासउ पूछड, राय मणोरह पूरी ए ॥ ४ ॥

गाम भूरिय पटोला गज वल, तूठउ देड सुरिताणू ए ।

जिणप्रभसूरि गुरु कंपिनई छइ, तिहुअणि अमलिय माणू ए ॥५॥

डाल दमामा अरु नीसाणा, गहिरा वाजड तूरा ए ।

इणपरि जिणप्रभसूरि गुरु आवइ, संघ मणोरह पूरा ए ॥ ६ ॥



॥ श्रीजिनप्रभसूरीणां गीतम् ॥

जय हे सरतर गठ गयणि, अभिनवउ सहम करो ।

मिरी जिगप्रमुसूरि गणहरो, जगम कल्पतरो ॥ १ ॥

वदहु भविक जन जिणत्राण, वण नय वसतो ।

धतीस गुण सजूतो वाय्य मयगल दलण सीहो । आचली

तर पचासिनो पोस सुदि आठमि, भणिहि वारो ।

भेटिउ असपत "महमदो", सुगुरि छीलिय नयर ॥ २ ॥

आपुगु पाम वडसार, नमिनि आदरि नरिन्दो ।

अभिनव कवितु वसाणिवि, राय रखइ मुणिदो ॥ ३ ॥

हरसितु देड राय गय तुरय, धण वणय देस गामा ।

भणइ अनेवि जे चाह हो, ते तुह दिउ इमा ॥ ४ ॥

लेड णहु किपि जिणप्रभसूरि, मुणिरो अति निरीहो ।

श्रीमुखि सलहिउ पातसाहि, विविह परि मुणि सीहो ॥ ५ ॥

पूजिवि सुगुर वस्त्रादिकहिं, करिवि सहिथि निसागु ।

देड फुरमागु अनु कारवा, नव वसति राय सुजागु ॥ ६ ॥

पाट हथि चाडिवि जुगपवर, जिणदेव सूरि समेतो ।

मोकल राउ पोमाल ह वहु, मलिक परि करीतो ॥ ७ ॥

वाजहि पच सवुद गहिर सरि, नाचहि तरण नारि ।

इहु जम गडदसहि तु, गुर आवड वसतिहिं मझारे ॥ ८ ॥

वम्म धुर धरल सवव सवल, जाचक जन टिंति दानु ।

सव सजूत वहु भगति भरि, नमहिं गुरु गुणनिवानु ॥ ९ ॥

सानिधि प मिणि देवि इम, जगि जुग जयवन्तो ।

नदउ जिणप्रभसूरि गुरु, सजम सिरि तणउ कतो ॥ १० ॥

॥ श्रीजिणदेवसूरि गीतं ॥

निरुपम गुण गण मणि निधानु संजमि प्रधानु ।

सुगुरु जिणप्रभसूरि पट उदयगिरि उदयले नवल भाणु ॥ १ ॥

वंदहु भविय हो सुगुरु जिणदेवसूरि ढिल्लिय वर नयरि देसणउ

अमियरसि वरिसए सुणिवरु जणु वणु ऊतविउ ॥ आंचली ॥

जेहि कन्ताणापुर मंडणु सामिउं वीर जिणु ।

महमद राइ समप्पिउं थापिउ सुभ लगानि सुभ दिवसि ॥ २ ॥

नाणि विन्नाणी कला कुसले विद्या वलि अजेउ ।

लखण छंद नाटक प्रमाण वखाणए आगमि गुण अमेउ ॥ ३ ॥

धनु कुल धरु जसु कुलि उपनुं इहु सुणि रयणु ।

धनु वीरिणि रमणि चूडामणि जिणि गुरु उरि धरिउ ॥ ४ ॥

धणु जिणसिघ सूरि दिखियाउ धनु चंद्र गह्लु ।

धनु जिणप्रभसूरि निज गुरु जिणि निज पाटिहि थापियउ ॥५॥

हलि सखे धणउ सोहावणिय रलियावणिय ।

देसण जिणदेवसूरि सुणिराय हं जाणउं निनु सुणउ ॥ ६ ॥

महि मंडलि धरमु समुधरए जिण शासणिहिं ।

अणुदिण प्रभावन करइ गणधरो, अवयरिउ वयइरसामि ॥७॥

वादिय मयगल दलण सीहो विमल सील धरु ।

छत्रीस गुणधर गुण कलिउ चिरु जयउ जिणदेव सूरि गुरु ॥८॥

॥ इति श्री आचार्याणा गीत पदानि ॥

श्रीवर्मकलशमुक्ति

५१

श्रीजिह्वारुशालाशूरि पट्टाभिषेक चरित्र

१५७ मुनि ५ । वनी, पणु मनि जिणेवरु ।

पणुपिणु, जिणुपट्टूरि, ॥ १५७ ३३ ५५७ ॥

ताम होय दि गुण जिह्वारु, गुरु गुण गाण तु ।

पाट ठरु जिह्वारु । शूरि वर रामु भगेतु ॥ १ ॥

आमि जिणुवरु मूरि पणु, अणुदिल्लुर पट्टणि ।

वमदि मग पयलण, रामु रजि "दुग्ध" जिणि ।

तातु पट्टि जिणुपट्टूरि, गुणमणि रोहण मम ।

विदिय जेण वरग-वरग-नात् । भाळोवम ॥ २ ॥

अमर व नय अग विरिचरु, पासु पमायगु ।

पन्मणवि धरणि पमुद्द, मुर मादिय सामणु ।

तड जिणुवरु मसूरि तरणि, सवगि मिरोमणि ।

मत्रोदिय चित्तउडि तणि, चामुडा पन्मणि ॥ ३ ॥

जोगिराड जिणुदत्तशूरि, अनियड सहसपर ।

नाण ज्ञाण जोडणिय दुद्रु देविय विरु करु ।

रुनरुतु पन्चपत्तु मयणु, जण नयणाणदू ।

सयल कला संपुत्र वंदु, जिणचन्द्र मुण्डु ॥ ४ ॥

वाइ करडि केसरि किसोरु, जिणपत्ति जईमू ।

पुणवि जिणेशर सूरि सिद्ध, आरंभिय सीसु ।

सयल शुद्ध सिद्धंत सलिल, सायर अप्पारु ।

जिणपवोह सूरि भविय कमल, सविथा गणधारु ॥५॥

तयणं तरु गोयमह सामि, सम लद्धि समिद्धि ।

वहुय देसि सुविहिय विहारि, तिहुअणि सुपसिद्ध ।

“कुतवदीन” सुरताण राउ, रंजिउ स मणोहरु ।

जगि पयडउ जिणचंदसूरि, मूरिहि सिर सेहरु ॥ ६ ॥

॥ धातः ॥

चंद कुल निहि चंद कुल निहि, तवइ जिम भाणु ।

नाण किण्ण उज्जोय करु, भविय कमल पडिवोह कारणु ।

कुगह गह मच्छिन्नं पह, कोह लोह तमहर पणासणु ।

महि मंडलि अच्छरिय धरो, जिण रंजिउ सुरताणु ।

सूरि राउ लो सग्गहि गयउ, जाणिउ निय निरवाणु ॥ ७ ॥

त अह ढिल्लिय पुर वर नयरि, जिणिचंदसूरि गणधारु ।

त जयवल्ह गणि तेडियउ, मंतु कियउ सुविचारु ।

त विजयसीह ठक्कर पवरो, महंतियाण कुलि सारु ।

तउ नामु ठामि (मु)तसु अप्पियउ, तउ गोलइ(गोयम)सउं गणवारु ॥८॥

त गुजरधर मंडणउ, अणहिलवाडउ नामु ।

त मिलिय संघु समुदाउ तहि, महंतियाण अभिरामु ॥ ९ ॥

त उसवाल कुल मंडणउ, तेजपाल तहि साहु ।

त लहु बंधव रुद्धइ सहिउ, गुरु साहम्मि पसाउ ॥ १० ॥

राजेन्द्रचन्द्रमूरि, आचारिज वर राउ ।

ता गुरु

सुय समुद मुणिर रयणु, विउउसमुद धननाउ ॥ ११ ॥

सच न

रल गुरु विनय, तजपालु सुविसेमु ।

पाट महोच्च कारविमु, दिवइ सुयुरु आप्पु ॥१२ ॥

वराणि आणदियउ, जाल्लण तगउ मल्लारु ।

त मर

त दस दिमतर पाठय, कुकउती सुविचारु ॥ १३ ॥

उउनु अणहिल्ल पुर, सुयनवन सुइ गेह ।

मुणिउ

त सयल सघ तिक्कणि मिलिय, पावसि जिम घण मेह ॥१४॥

उ गोलय सहिउ, गुरु आणा मजुत्तु ।

कठ द्वि

वायवतु वाहड तणउ, विजयसोद्धु सपत्तु ॥ १५ ॥

आरउ सचइ कियउ, वज्जहि वज्जतहि ।

त पडर

जिम रामहि अवढा नगरि, ढका बुका पमुहेहि ॥ १६ ॥

इहिय किरि कप्पनरो, राय पमाय महतु ।

दीण दु

त धम्म महाघर धुरि धयणे, दवरज पयर मत्रि ॥ १७ ॥

नण्णु जेल्हा घरणि, जयतमिरी वर्राणि ।

त तमु

कुमल कीरति तहि कुलि तिलकु, घग गुण रणह र्राणि ॥१८॥

तय सनहत्तर किन्नग (कृष्ण) इगारसि जिद्ध ।

तरहम

सुर विमायु किरि महियउ, नदि मुणि जिणि दिद्धि ॥१९॥

रान्द्रचन्द्रमूरि, जिणचन्द्रसुरिहि सोसु ।

त राउ

त कुशल कीरति पाटहि ठविउ, मणहर वाणारिस ॥ २० ॥

इवियउ जिणकुशलमूरि वज्जिय नदिय तूर ।

नाम

त सनु सनलु आणदियउ, मणह मणोरह पूर ॥ २१ ॥

धातः सयल संघह सयल संघह केलि आवासु ।

अणहिलपुर वर नयर गुजरात धर मुखह मंड्यु ।

देस दिसंतरि तहि मिलिय, सयल संघ वरिसंत जिम वणु ।

पाट धुरन्वर संठविउ, मिलिय मिलावड भूरि ।

संघ महोछवु कारावड, वज्जंतड वणतूरि ॥ २२ ॥

त आदहिए आदिजिणिद्र भरहु, नेमि जिम नारायणु ।

पासह ए जिम धरणिडु, जिम सेणिय गुरु वीर जिणु ।

तिण परि ए सुह गुरु भत्ति, महंतियाणि परि सलहिय ए ।

पडिवनए तहि परिपुन, विजयसीहु जगि जस लियड ए ॥२३॥

संघवड ए सामल वंशि, देसि विदेसहि जाणिय ए ।

धण जिम ए वणु वरिसंतु, वीरदेव वखाणिय ए ।

कारइए जीमणवार, साहंमिय वछल्ल वर ।

संघह ए कप्पड वार, गुरुयभत्ति गुरु पूज कर ॥ २४ ॥

दीसई ए अहिणव बात, पाटणि दरिसण संख हूय ।

सूरिहि एसउ सउ-सात साहु, साहुणि चउवीस-सय ।

रुदई ए सउ तेजपालि वरि, तेडिउ पहिरावियइ ।

जइ सई ए दूसमकालि, चन्द्रहि नामउं लिहावियइ ॥ २५ ॥

घर घरि ए मंगल चार, पुन्न कलस घर घरि ठविय ।

घर घरि ए बंदर वाल, घरि घरि गूडी ऊमविय ॥ २६ ॥

वज्जिय ए तूर गंभीर, अंबरू वहिरिउ पडिरमण ।

नाचहि ए अबलिय बाल, रञ्जिय सुर धवला रवेहि ॥ २७ ॥

अणहिलि ए पुर मंझारि, नर नारी जोवण मिलिय ।

किसउ सु तेजउ साहु, जसु एवडउ उछव रलिय ॥ २८ ॥

पुणरविण पुणवि सो नाहु, मघ सयलि मग्मागिय ण ।

आ गइ ण उच्चन मारु, सिरि चन्द वुलि जगि जाणिय ण ॥२६॥

इण परि ण तडवि सघु, पाट महोच्चु कारविउ ।

जिण गरुण नय नय भगि, सयल विन सु ममुद्धरिउ ॥२७॥

धात — धवल मगल धवल मगल कलवलारव ।

वज्जत घण तूर वर महुर महि नघड पुरधिय ।

वसुधारहि वर सति नर षवि महु जेम मनहि रजिय ।

ठामि ठामि कल्लोल झुणि, महा महोच्चु मोय ।

जुगपहाण पयसठयणि, पूरिय मग्माग लोय ॥ ३१ ॥

सयल सघ सुविहाण, जिण सासण उच्चोय करो ।

कोह लोह मय मोह, पाव पक विधसियरो ॥ ३२ ॥

उदयाचल जिम भाणु, भविय कमल पडिरोह करो ।

तिम जिणचद सूरि पाटि, उदयउ मिरि जिण उसल गुरो ॥३३॥

जिम उगइ रवि विनि वि, हरपुहोइ पथि अह कुलि ।

जण मण नयणाणहु, तिम दीठर गुर मुह कमलि ॥ ३४ ॥

अणहिलपुर मझारि, अहिणय गुरु देसण करइ ।

नाण नीरु वरिसतु, पाव पकु जिम घणु हरइ ॥ ३५ ॥

ता महि-मडलि मेरु, गयणागणि जा रवि तपण ।

मिरि जिणकुराल सुणिणहु, जिण मासणि ना चिरु जयउ ॥३६॥

नन्ड त्रिहि समुत्तउ, तजपालु सावय परो ।

भाहमिय मायारु, दस दिमि पसरिउ कित्ति भरु ॥ ३७ ॥

गुणि गोयम गुर णसु, पडहि सुणाहि जे सयुणहि ।

अमराउर तहि वासु, धम्मिय “वम्मकलसु” भणइ ॥ ३८ ॥

कवि सारमूर्ति मुनि कृत

॥ श्रीजिनपद्मसूरि पद्माभिक्षेक रास ॥

. . . - ३६ - . . .

सुरतरु रिसह जिणिंद पाय, अनुसर सुयदेवी ।

सुगुरु राय जिणचन्दसूरि, गुरु चरण नमेवी ॥

अभिय सरिसु जिणपदम सूरि, पय ठवणह रासू ।

सवणंजल तुम्हि पियउ भविय, लहु सिद्धिहि तासू ॥ १ ॥

वीर तित्थ भर धरण धीर, सोहम्म गणिदु ।

जंबूस्वामी तह पभव-सूरि, जिण नयणाणदु ॥

सिज्जंभव जसमहु, अज्ज संभूय दिवायरू ।

भदवाहु सिरि थूलभद्र, गुणमणि रयणायरू ॥ २ ॥

इणि अनुक्रमि उदयउ वद्धमाणु, पुणु जिणेशर सूरि ।

तासु सीस जिणचन्द सूरि, अज्जिय गुण भूरी ॥

पासु पयासिउ अभय सूरि, थंभणपुरि मंडणु ।

जिणवल्लह सूरि पावरोग, दुखाचल खंडणु ॥ ३ ॥

तउ जिणदत्त जईसुनामि, उवसग्ग पणासइ ।

रुववंतु जिणचन्द सूरि, सावय आसासय ॥

वाई गय कंठीर सरिसु, जिणपत्ति जईसरू ।

सूरि जिणेशर जुग पहाणु, गुरु सिद्धापसु ॥ ४ ॥

जिणपवोह पडिवोह तरणि, भविया गणवारू ।

निरुत्तम जिणचन्द सूरि, सघ मण वट्टिय फारु ॥

उदयउ तमु पट्टि सयल फला, नपत्तु भयदू ।

सूरि मउड चूडानयसु, जिण पुराल मुण्डि ॥ ५ ॥

महि मण्टल विहरन्तु सुपरि, आयउ दराउरि ।

तत्थ विहिय वय गहण माल, पय ठरण विविह परि ।

निय आऊ पज्जतु सुगुर, जिणकुसु मुणेइ ।

निय पय सिख समगा, सुपरि आउरिह दइ ॥ ६ ॥

॥ घत्ता ॥

जेम दिनमणि जेम दिनमणि, धरणि पयडेय ।

तत्र तेय म्पिन तम सूरि मउडु, जिणपुराल गणहरू ।

दढ छद लणण सहिउ, पाउ रोर मिळत तम हरू ।

चन्द गच्छ उज्जोय कर, महि मडलि मुणि राउ ।

अणुदिणु सो नर नमउ तुम्हि, जो तिहुपति वसाउ ॥ ७ ॥

मिधु देसि राणु नयर, कचण रयण निहाणु ।

तहि रीहडु सावय हुउ, पुनचन्दु चन्द समाणु ॥ ८ ॥

तसु नणु उउय धवलो विहि सवह सजुत्तु ।

साहु राय हरिपाल वरो, दराउरि सपत्तु ॥ ९ ॥

सिरि तरणप्पट आयरिउ, नाण चरण आधारु ।

सु पहुचन्दि पुण विन्नए, कर जोडवि हरिपाल ॥१०॥

पय ठरणुउय जुगएह, काराविसु वहु गि ।

ताम सुगुर आइसु दियए, निसुणवि हरिसिअ अगि ॥११॥

कुक्कुत्रिय पाट ठरण, दस दिसि सघ हरेसु ।

मयल सवु मिलि आवियउ, वरि करइ पवसु ॥१२॥

पुहवि पथडु खीमड कुलहि, लखमीवरो सुविचारु ।

तसु नन्दग आवउ पवरो, दीण दुहिय सावारु ॥ १३ ॥

तासु धरणि कीकी उयरे, रायहुंसु अवयरिउ ।

त पदमसूरि कुल कमलु रवे, वहु गुण विद्या भरिउ ॥१४॥

विक्रम निव संवछरिण, तेरह सड नऊ एहि ।

जिद्धि मासि सिय छद्धि तहि, सुह दिणि ससिवारेहि ॥१५॥

आदि जिणेसर वर सुवणि, ठविय नन्दि सुविसाल ।

धय पडाग तोरण कलिय, चउदिसि वेंदुरवाल ॥ १६ ॥

सिरि तरुणप्पह सूरि वरो, सरसइ कंठाभरणु ।

सुगुरु वयणि पद्धि ठविउ, पदमसूरि ति मुणिरयणु ॥१७॥

जुगपहाणु जिणपदम सूरै, नामु ठविउ सुपवित्त ।

आणदिय सुर नर रमणि, जय जयकार करंति ॥ १८ ॥

॥ धत्त । ॥

मिलिउ दसदिसि मिलिउ दस दिसि, संघ अपारु ।

देराउरि वर नयरि तुर सहि गज्जंति अंवरु

नच्चंतिय वर रमणि ठामि ठामि पिखणय सुन्दर

पय ठवणुछवि जुगवरह विहसिउ मग्गण लोउ

जय जय सहु समुछलिउ तिहुअणि हुयउ पमोउ ॥ १९ ॥

धन्नु सुवासरु आजु, धन्नु एसु सुहुत्त वरो ।

अभिनव पुनम चन्दु, महिमंडलि उदयउ सुगुरु ॥ २० ॥

तिहुयणि जय जय कारु, पूरिउ महियलु तूर रवे ।

घणु वरिसइ वसुधार, नर नारिय अइ ।वविह परे ॥२१॥

सद्य महिम गुरु पूय, गुरुनाणदहि कारवप ।

भाहम्मिय घण रगि, सम्माणइ नव नविय परे ॥ २२ ॥

वर वत्थाभरणेण, पूरिय मग्गण दीण जण ।

धम्मल० सुवगु जसेण, सुपरि साहु हरिपालु जिम्म ॥ २३ ॥

नाचइ अलीय वाल, पच्च मच्चद वाजहि सुपर ।

घरि घरि मगलचार, घरि घरि गूडिय उभविय ॥ २४ ॥

उदय० कलि अकलकु, पाट तिलकु जिणकुराल सूर ।

जिण सासणि भावडू, जयन्तउ जिणपदम सूर ॥ २५ ॥

जिम तारायणि चन्दु, सहस नयण उत्तिमु सुरह ।

चित्तामणि रयणाह, तिम सुहगुरु गुणउ गुणह ॥ २६ ॥

नवरस दसण वाणि, समगजलि जे नर पियहि ।

मणुय जम्मु ससारि, सहलउ किउ इत्थु कलि तिहि ॥ २७ ॥

जाम गयग मसि सर, धरणि जाम थिर मेर गिरि ।

विहि सद्यह सजत्तु, ताम जउउ जिणपदम सूर ॥ २८ ॥

इहु पय ठरणह रासु भाव भगति जे नर दियहि ।

ताह होइ मिच वास, "सारमुत्ति" मुणि इम भणइ ॥ २९ ॥

॥ इति श्रीजिनपद्मसुरि पद्मभिषेक रास ॥



पुहवि पयडु खीमड कुलहि, लखमीधरु सुविचारु ।

तसु नन्दण आंचउ पवरो, दीण दुहिय साधारु ॥ १३ ॥

तासु धरणि कीकी उये, रायहुमु अवयरिउ ।

त पदमसूरि कुल कमलु रवे, वहु गुण विद्या भरिउ ॥१४॥

विक्रम निव भंवछरिण, तेरह सउ नऊ एहिं ।

जिद्धि मासि गिय छद्धि तहि, मुह दिणि नमिवागैहिं ॥१५॥

आदि जिणेसर वर सुवणि, ठविय नन्दि सुविनाल ।

धय पडाग तोरण कलिय, चउदिमि वेंदुरनाल ॥ १६ ॥

सिरि तरुणप्पह सूरि वरो, सरसइ कंठाभरणु ।

सुगुरु वयणि पट्टहि ठविउ, पदमसूरि ति सुणिरयणु ॥१७॥

जुगपहाणु जिणपदम सूरै, नामु ठविउ सुपवित्त ।

आणदिय सुर नर रमणि, जय जयकार करंति ॥ १८ ॥

॥ धत्त । ॥

मिलिउ दसदिसि मिलिउ दस दिमि, संघ अपारु ।

देराउगि वर नयरि तुर सदि गज्जंति अंवरु

नच्चंतिय वर रमणि ठामि ठामि पिखणय सुन्दर

पय ठवणुछवि जुगवरह विहसिउ मरगण लोउ

जय जय सहु समुछलिउ तिहुअणि हुयउ पमोउ ॥ १९ ॥

धग्नु सुवासरु आजु, धन्नु एसु सुहुत्त वरो ।

अभिनव पुनम चन्दु, महिमंडलि उदयउ सुगुरु ॥ २० ॥

तिहुयणि जय जय कारु, पूरिउ महियलु तूर रवे ।

घणु वरिसइ वसुधार, नर नारिय अइ ।वविह परे ॥२१॥

सष महिम गुरु पूय, गुग्गुलागदहि कारवप ।

साहभिमय घण रणि, सम्माणइ नव नविय पर ॥ २२ ॥

वर वत्थामरणेण, पूरिय मग्गि दीण जण ।

धरलइ भुवगु जसेण, सुपरि साहु हरिपालु जिस्म ॥ २३ ॥

नाचइ अलीय बाल, पच सबट दाजहि सुपर ।

घरि घरि मगलचार, घरि घरि गूडिय ऊभविय ॥ २४ ॥

उदयउ कलि अकलट्टु, पाट तिलकु जिणकुगल सूर ।

जिण सासणि मायडू, जयवन्तउ जिणपदम सूरे ॥ २५ ॥

जिम तारायणि चन्दु, सहस नयण उत्तिमु सुरह ।

चित्तमग्गि रयणाह, तिम सुहगुरु गुरुउ गुणह ॥ २६ ॥

नवरस देसण वाणि, सयणजलि जे नर पियहि ।

मणुय जम्मु ससारि, सहलउ किउ इत्थु कलि तिहि ॥ २७ ॥

जाम गयग नसि सूर, धरणि जाम थिरु मेह गिरि ।

विहि सवह सजत्तु, ताम जयउ जिणपदम सूरे ॥ २८ ॥

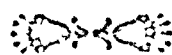
इहु पय ठरणह रासु भाव भगति जे नर दियहि ।

ताह होइ मिव वास, “सारमुत्ति” सुणि इम भणइ ॥ २९ ॥

॥ इति श्रीजिनपद्ममूरि पट्टाभिषेक रास ॥



खरतर गुरुगुण दर्पण छप्पय



सो गुरु सुगुरु जु छविह जीव अप्पण नम जाण० ।

सो गुरु सुगुरु जु सधरुव मिहंन वर्राणड ।

सो गुरु सुगुरु जु सील धम्म निम्मल परिपाल० ।

सो गुरु सुगुरु जु डव्व संग विनम नम भणि टालड ।

सो वेव सुगुरु जो मूल गुण, उत्तर गुण जइणा कर० ।

गुणवंत सुगुरु भो भवियणह, पर तारड अप्पण तरड ॥ १ ॥

धम्म सुधम्म पहाण जत्थ नहु जीव हणिज्जइ ।

धम्म सुधम्म पहाण जत्थ नहु कूड भणिज्जड ।

धम्म सुधम्म पहाण जत्थ नहु चोरी किजड ।

धम्म सुधम्म पहाण जत्थ परत्थी न रमिज्जड ।

सो धम्म रग जो गुण सहिय, दान सील तव भाव मउ ।

भो भविय लोय तुम्हि पर करिय, नरभव बालिम नीगमउ ॥२॥

सिरि वद्धमाण तित्थे जुगवर, सोहम्म सामि वंसंमि ।

सुविहिय चूडामणि सुणिगो, खरतर गुरुणो थुणस्सामि ॥३॥

सिरि उज्जोयण वद्धमाण सिरि सूरि जिणेसर ।

सिरि जिनचंद-सुणिद^१? तिलड^१ सिरि अभय गणेसर ।

जिणवल्लह जिणत्त सूरि जिणचन्द नेमिज्ज० ।

जिणाय जिणेसर जिणप्रभोह जिणचद युणिज्ज० ।

जिणकुराल सूरि जिणपउम गुरु, जिणलढी जिणचद गुरु ।

जिणउय पट्टि जिणराजवर, सपय सिरि जिणभहगु ॥४॥

अग्यारह सड सतसठ२ जिगवल्लह पद दिद्धउ ।

इग्यारह गुणहत्तरइ तहइ जिणदत्त पसिद्धउ ।

चारह पचगल्लइ तहवि जिगचन्द मुगीसरु ।

वारइ तैवीसइ सहिय जिणपत्ति जईमर ।

जोगीस जिणेसर सूरि गुरु, वारह अठहत्तरि वरसि ।

जिणप्रभोह गच्छाह वड, तरह इगतीसा वरसि ॥ ५ ॥

तेरह इगताला वरसि पट्टि जिणचन्दहु लद्धउ ।

तेरहसय सत्तहत्तरइ सहिय जिणकुराल पसिद्धउ ।

तेरह नउया एम जाणि जिणपउम गणीसरु ।

लद्ध नाम जिनलनद्ध सूरि चहदय सय वउरि ।

जिणचन्द सूरि गच्छह तिलउ, चउदह सय छडोत्तरइ ।

जिगउदरसूरि उयवतपहु, सय चौउदह पनरोत्तरइ ॥ ६ ॥

अग्यारह सत्तसठइ जेण वल्लह पद दिद्धउ ।

आसाढ स्तिय छट्टि चित्तकोटहि सुपसिद्धउ ।

किसण छट्टि वरसास इग्यारह गुणहत्तरि ।

सूरि राउ जिणदत्त ठविय चित्तउडह उप्परि ।

जिणचन्द्रसूरि वडमाखयड, सुछ छट्टि विक्कमपुरहि ।

जयवंत हुउ जिण सामणहि, सय वारह पंचत्तरहि ॥ ७ ॥

बन्नेरइ जिणपत्तिगूरि वारह तेवीसड ।

कत्तिय सिय तेगसिहि पट्ट जयवंतउ दीसड ।

माह छट्टि जालउरि सुछतहि ठविय जिणेसर ।

वारह अठइत्तरड रूप लावन्ना मणोहर ॥

जिणपवोह सूरि आसोज पंचमि, जालउरय भयउ ।

डकतीस वरसि अनुतरसड, पट्ट तरु इणि परिलयउ ॥ ८ ॥

तेरह सय इगताल सुगुरु जिणचन्द्र सुणिज्जय ।

वयसाखह सिय तीय नयरि जालउरि थुणज्जय ॥

तेरह सय सत्तहत्तरड सूरि जिणकुसल पसिद्धउ ।

जिक्क कसिण इग्यारसहि पट्टु अणहिलपुरि दिछउ ॥

जिणपदमसूरि तेहर (रह) नवड, जिक्क मासि उच्छव भयउ ।

तह सुद्ध छठि देराउरहि, सयल संघ आणंदयउ ॥ ९ ॥

सय चउद्ध जिण लवधि सूरि पट्टहि सुपसिद्धउ ।

आसाढह वदि पडवि तहवि पट्टागम किद्धउ ॥

तासु पट्टि इहु सुगुरु ठविय चउद्ध सय छडोत्तरि ।

जेसलमेरह माह दत्तमि सुद्धइ सुह वासरि ॥

नर नारि ताह मंगल करइ, जिण सासणि उछव भयउ ।

जिणचन्द्र सूरि परिवार सउं, सयल संघ अणुदिणु जयउ ॥१०॥

खंभ नयरि मझारि चउद पनरोतर वरसहि ।

दियइ मंतु आयरिय इंद आणंदिय सग्गाहि ॥

अजितनाथ वर भवग नदि महिय गुम् वत्थिरि ।

सयल सघ वह परि मिलिय रलिय पूरिय मनभितरि ॥

जिण कुल सूरि सीसह तिलउ, जिणचन्दह पद्दुद्धरणु ।

जिणचन्दसूरि भत्रियह नमउ, सयल सघ वटिय करणु ॥११॥

गुण गण वय मयक वरमि फग्गुण वदि उहुहि ।

अणहिलपुरि वरि नदि ठविय मतीसर दिट्ठिहि ॥

मिरि लोचआयरिय मतु अप्पिय मुमुहुत्तहि ।

सिरि जिणउत्थ मुण्डि पट्टु उहरिय धरित्तहि ॥

धतीस गुणावलि परिअरिय चन्द गच्छ उज्जोय कर ।

जिणराजसूरि गुम् जगि जयउ, सयल सघ आगदयर ॥१२॥

पण सग वेय मयक^१ वरमि माहह छण वामरि ।

भागुमदिल वर नयरि अजियनाहह जिण मदिरि ॥

नदि ठप्रिय प्रित्यारि सुगुम् सागरचन्द गणहारि ।

सूरि मतु जमु दिद्ध किद्ध मगलु विअहु^२ प्परि ॥

जिणराजसूरि पट्टह तिलउ, जिणमासण उज्जोयकर ।

जा चन्द सूरि ता जगि जयउ, मिरि जिणमह मुण्डि वर ॥१३॥

मत मझि नवकार सार नाणह धुरि वेअल ।

देव मझि अरिहन्त सब्ब फुल्लह धुरि उप्पउ ॥

रउ मझि वर कप्पयल सघह धुरि मुणिरर ।

पग्गि मझि जिम राजहस पयअ धुरि मदिर ॥

जिणराजसूरि पद्दुद्धरण, भत्रिय लोच पडिओहयर ।

निम सयल सूरि चूडारयग, जिणमहप्पहु जुग पवर ॥१४॥

१ पुवय २ दिट्ठ ३ विवह

मंगल सिरि अरिहन्त देव, मंगल सिरि सिद्धह ।

मंगल सिरि जुगपवर सूरि, मंगल उवजायह ॥

मंगल सुविहिय सव्व साहु, मंगल जिणधम्मह ।

मङ्गलु विहरउ सव्व सद्ध, मङ्गल सत्ताणह ॥

सुयपवि होइ मङ्गलु अमलु, मङ्गलु जिण सासण सुरह ।

वर सीसह जिणवय सुह गुरुह, मङ्गल सूरि जिणेसरह ॥१५॥

माल्हू साख सिंगार साह रतनिग कुलमंडणु ।

झुदाउत सुख संसि पुहवि धारलदे नंदणु ॥

चउद्धह सय पनरेतिरउ कसिण आसाढह तेरसि ।

पट्ट महोच्छव कियउ साह रतनागर वरसि ॥

खरतरह गच्छि उज्जोय करु, जिणचन्द सूरि पट्टु धरणु ।

जिणउदय सूरि नंदउ सुपहु, विहिसवह मङ्गल करणु ॥१६॥

जिम जलहरंमि मोर जिहा वसंतमि कोकिला हुंती ।

सूरउगमणे कमलु तह भविया तुह आगमणे ॥

जिम जलहर आगमणि मोर हरसिय मण नचइ ।

जिम दिणियर उगमणि कमल वणसिरि सिरि विकसइ ॥

ससिहर संगम जेम सचल सायरु जल विकसइ ।

जिम वसंति महियलि हंसति कोयल मइ मचइ ॥

तिम सूरि नाउ जिनउदय गुरु, पट्टाहिव रसि (?वि) उक्कसिय ।

जिनराजसूरि गुरुदंसणहि भविय नयण मण उल्लसिय ॥१७॥

वासिग ञ्परि धरणि धरणि उप्परि जिम गिरिवर ।

गिरिवर उप्परि मह मेहु ञ्परि रवि ससिहर ॥

ससिहर उप्परि तियस तियस उप्परि जिम सुर' वर ।

इदुप्परि नवगीय गीय उप्परि पचुत्तर ॥

सव्वठिसिद्धि तसु उप्परि, जिम तसु उप्परि मुन्ज हलि ।

तिम सूरि जिणेसर जुगपवर, सूरहि उप्परि इत्थ कलि ॥१८॥

कुसल घडो ससार, कुसल सज्जण जण चाइड ।

कुसल० मडगल वारि लठि कुसलहि घरि आउड ।

कुसलहि घण वरसति कुमलि घण घन रवन्तउ ।

कुसलहि घोड'घट्टि कुसलि पहिरिय सुवन्तउ ॥

एरिसउ नाम सुह गुरु तणउ, कुमलहि जग रलि नामणउ ।

जिण कुसल सूरि नाम भहणि, घरि'घरि होइ ववामणउ ॥१९॥

दस सय चउवीसेहि नयरि पट्टणि अणहिलपुरि ।

हूयउ वाद सुविहतह चेश्वामी सउ बहु परि ॥

दुह्म नरवर सभा समुखि जिण हेलइ जितउ ।

चित्तवास उत्थप्पिय दस गुज्जरह वदितउ ।

सुनिहित गठि सरतर निरुद, दुह्म नरव० तहि दियड ।

सिरि वद्धमाण पट्टह तिलउ, जिणेसर सूरि गुरु गहगह२ ॥२०॥

रवि किरणेह वलग्गि चडिय अट्टावय तित्थहि ।

निय २ वन्त पमाण विंय वदिय जिण भत्तिहि ।

१ छप्परि २ धोजयट्ट ३ करि

पनरह सय तापम पयोह दिखिय जिण सत्तिहि ।

पारावड डग पत्ति सव्व खीरह विय खंडहि ॥

अखीण महाणसि लद्धिवर, गोडम नामिय गुण तिलउ ।

जसु नामिण सिञ्चड कञ्ज सवि, सो द्वायउ तिहुअण तिलउ ॥२१॥

सो जयउ जेण वहिय पचमि (वाउ) चउत्थिपजूसरण ।

पख चउदमि जाया नम्मविया कालकाडरियो ॥

कालिकसूरि मुणिउ जयउ तिहुअण मण रंजण ।

उज्जेणो गदमिल्ल राय भूलह निष्कंडण ॥

सरसइ साहुणि कज्जि सिंघ लंडुण जिणि रखिय ।

सोहम्माइवडंड सयल आउखउ अखिय ॥

भरहडदेसि पयठाणपुरि, सालवाहण अवरौहपर ।

सो कालिगसूरि संघह जयउ, चउत्थि पजूसरण विहिय धरि ॥२२॥

जिणदत्त नंदउ सुपहु जो भारहंमि जुगपवरो ।

अंवाएवि पसाया, विन्नाउ नागदेवेण ॥ १ ॥

नागदेव वर सात्रएण उज्जित^१ चडेविणु ।

पुछिय जुगवर अं व एवि उववास करे विणु ॥

तसु^२ सत्ति तुट्ठाय तीय, करि अखरि लिखिया ।

भणिउ^३ जवाइय पम्ह सय^४, जुगपवर सुधरिगय ॥

भमिअण पव्वि अणहिल्लपुरि, जुगपहाण तिणि जाणियउ ।

जिणदत्तसूरि नंदउ सुपहु, अम्वाएवि वखाणियउ ॥२३॥

गह धम्मो देव सिसी फुगण कन्नाय च (उ)दसी दिवसे ।

पंडिय वजयाणंदो तिज्जणिय “अभयतिलकेण” ॥ १ ॥

पाणि तण्डु विवादि रज्जु जयसिंघ नरिन्ह ।

उज्जैणी वर नयारि मुवणि पहु सती जिणन्ह ।

जिणवल्लम जिणदत्त सूरि जिणचन्द्र जइसर ।

रजिय जिणवय सूरि धरह सिरि सूरि जिणेशर ॥

ता ? ५०३ सोयलु जयह जलु, फासूय यप्पिय विवहप्परि ।

निज्जिणित विज्जयाणद ति(लि)हि, अभयतिलकि चप्पट्टि वरि ॥२४॥

स्यणि रमन रमणि पवेसु न्ठनगु नहु निसहि

जिणेशर न दिन दोसा समय वलि न मव्वरिय विसन्ह ।

नहु जामणाहि पयठरत्ति रहु भमइ नभमणह ।

नहु विहारि वरसाणु जत्त तुगी भरि समणह ॥

भविषणहु जहिनइ त्तिय अवहि, तह सुयमि धुयरय करउ ।

तरु मोह मूल मूलण गयह, जिणयल्लह पय अणुसरउ ॥२५॥

जिणदत्त सूरि मगलु मगलु, जिणचन्द्रसूरि रायस्स ।

जिणवय सूरि जिणेशर, मगलु तह वद्धमाणस्स ॥ १ ॥

वद्धमाण धणगुणनिहाग मगलु कलि अमिलह ।

सुगुरु जिणेशर सूरि वसहि पयडण धुरि धवलह ।

मगलु पहु जिणचन्द्र अभयदेवह जिणयल्लह ।

मगलु गुरु जिणदत्त सूरि मगलु जिणचन्द्रह ॥

जिणपत्ति सूरि मगलु अमलु, जास मुजस पसरिय धरह ।

चउविह सुसव सरल्लह कवि, मगलु सूरि जिणेशरह ॥२६॥

कहस चन्द्र निम्मलह कहस तारायण निम्मल ।

कहम सुपवित्त कहस वगुलउ अय ५जल ॥

कहस नीर सुरसरोय कहस वाहलोय पवित्रिय ।

पदमराग कह गुरुय कहस पवरिय रंगिय ॥

जिणपदम सूरि पट्टु पट्टुधर, अभिय वाणि देसण वरिस ।

तुडि कर सुजीह किनगलि पडिसि, जिनलव्य सूरि गणहरसरसु ॥२७॥

एने वेरि खञ्जूरि जतइ सिरिविडि करि भखिय ।

एन अंव अम्बलिय दख दाडिम जं चखिय ।

एन जंब जंबूयह सयल पिप्पल जं अखियह ।

वडआरु य उवरन एय एय पसर जवसिय ॥

पउमप्पह नारिग नह सु नयनिमल कोमल महूय ।

जिणपत्ति सूरि नालियर इह, अररि कोर वंच भंजेय तुय ॥२८॥

जिम नसि सोहइ चंद जेम कज्जलु तरुलछहि ।

हंस जेम सुरवरहि पुरिस सोहइ जिम लछिहि ।

कंचणुं जिम हीरेहि जेम कुल सोहइ पुत्तहि ।

रमणि जेम भन्तार राउ सोहइ सामतइ ।

सुर नाह जेम सोहइ सुरह, जगि सोहइ जिणवम्म भरु ।

आयरिय मझि सिहासणहि, तिम सोहइ जिणचन्द गुरु ॥२९॥

दसणभद नरनाह वीर आगमि आणंदिय ।

पभणइ वंदिसु तेम जेम केणावि न वंदिय ।

रह सजिय गय गुडिय तुरिय पलरिय पलाणिय ।

सुखासण सय पंच वडवि चल धितिहि राणिय ॥

वहु छत्त चमर परवारि सउं, जाम सपत्त समोसरणि ।

ताम इंद तसु मणु मणवि, अयरावइ आदसइ मणि ॥३०॥

इद वयणि गय गुडिर सहस चउसट्टि वेउविय ।

वारतर सय पच तीह इक्कह मुह किय ।

मुहि मुहि किय अड दत दतहि दतहि अड वाविय ।

वावि वावि अड कमल कमलि दल लणु लण न(१ना)विय ॥

वत्तास वद्ध नाडय घड, पत्ति पत्ति नच्चइ रलिय ।

इयसिय रिद्धि पिखेवि कर, दसणभइ मउ गउ(१य) गलिय ॥३१॥

दसगभइ चितय अहह मइ सुकिय न किद्धउ ।

तउ मनि धरि सवेगि झत्ति तणि सयसु लिद्धउ ॥

वीरु पासि सु ज जाइ जामि मुणिराउ वइट्टव ।

ताम भत्ति सुरराय नमिय सो गुणहि गरट्टिउ ॥

भणय इट्टु तय जतु मुणिट्टु, उहारिय निव्वमत मइ ।

ज करउ विनाण आणग धुणि, मइ नि होइ सजम किमइ ॥३२॥

॥ दूसरी प्रतिकी विशेष गाथाएँ ॥

अमर त जिणवरु गिर त मेर निसियरु तदसासणु,

तरु त अमरतर धन त धनु महता पचाणणु ।

गढ त लरु विसहर त सेसु गह गुरुय त दिवायरु,

अवल त द्रूयमणि नइ त गग जल बहुल त सायरु ।

जिणमुवण त नदीसर भणउ, तुगतणि तापरि गयणु,

पुणि राउत जगि जिणपत्ति गुरु सूरि मउड चूडारयणु ॥३७॥

जिम तरु सुरतरु महि रयण मझिहि चिंतामणि,

धेणु मझि जिम कामधेणु गह मझि दिवामणि ।

उडगण सऊहिं वंदु इंदु जिम सग्गि पग्गिहउ,

गिरवरे मझिहिं मेरु राउ जिम रह निरत्तउ ।

तिम एह भूरि सूरिहिं पवरु जिणपत्रोहभूरि सीसवरु,

जिणचंदसूरि भवियहु नमहु, पहवि पसिहउ जुगपवरु ॥१८॥

जिण सासण वर रज्जि चंद गच्छिहिं समरंगणि,

वरण तुरंगमि चडवि खंतिक्खर खंगु गहेविणु ।

जिण आणा सिरिसिरकु सीलि संनाहु मुसज्जिउ,

पंच महव्वय राय सवल मुणिपत्ति अगंजिउ ।

पररिसउ सुहडु जिनकुसल सूरि, पिसेविण रहरियतणु ।

अणमिडिउ मुडिउ मुणिपय पडिउ मयणमाणु मिल्हेवि पुण ॥१९॥

उत्तर दिसि भद्वइ मासि जिम गज्जउ जलहरु,

जिम हत्थी गडयडइ जेम किन्नरि सरु मणहरु ।

सायरु जिम कल्लोल करइ जिम सीह गुंजारइ,

जिम फुल्लिय सहयार सिहरि कोडल दहकारइ ।

सधोस घंट जिण जम्मक्खाणि, वज्जंतिय जिम त्रहत्रहइ,

जिणपदम सूरि सिद्धंत तिम, वखाणंतउ गहगहइ ॥ २१ ॥

जिम अन्तर गोइक दुद्धि अंतरु मणि सुरभणि,

जिम अंतरु सुरतरु पलास जिम जंत्रुय केसरि ।

जिम अंतरु वग रायहंस जिम दीवय दिणयर,

जिम अंतरु गो कामधेण जिम अंत(रु) सुरेसर,

जिणपदम सूरि तिम (अ)त्रगुरु, एवड अंतरु भविय मुणि ।

खरतरह गच्छि मुणवर तिलउ इथु जीह किम सकउ थुणि ॥२२॥

नवलस कुलि घणसीहनदणु सुप्रसिद्धउ,

खेताहि तिय रुसि जाउ बहु शुणह समिद्धउ ।

पालकालि निज्जणवि मोह सजम सिरि रत्तउ,

गोयम चरिय पयास करणु इणि कालि निरुत्तउ ।

जिणपदम सूरि पट्टुद्धरणु, वयरसाह उन्नति करु ।

जिनञ्चधिसुरि भवियहु नमहु, चटगठि मुणि जुगपयर ॥२३॥

उदय वडउ ससारि उदय सुरवर नर नदय,

उदय कितहु गह गयणि उदय सहसकर वन्य ।

उदय लगी सबि कज्ज रज्ज सिद्धत नमाणइ,

उदउ अनुपम अचल उदय वलि वलि वलाणइ ।

वग धणय पुत्त परियण सयल, उदय(ल)गो जस वित्थरइ ।

जिणउदय सूरि इणि कारिणहिं, उदउ सयल सवइ करइ ॥२४॥

जिम चिंतामणि रयण मझि उत्तम सलहिज्जइ,

जिम कणयाचल गिरिह मझि किरि धुरहि ठविज्जइ ।

जिम गगाजल जलइ मझि सुपवित्त भणिज्जइ,

जिम सोह गह वत्थु मझि ससहर वन्निज्जइ ।

जिम तरह मझि वडित्त करु, सुरतर महिमा महमइइ ।

जिम सूरि मझि जिणभइसूरि, जुगपहाण गुरु गहगइइ ॥२७॥

जिणि उम्मूलिय मोहजाल सुविसाल पयडिहिं,

जिणि सुजाणि किजाणि मयणु किउ खडो खडिहि ।

जसु अगाइ मइ कोह लोह भड किमिहि न मडिहि,

गय जिम जिणि भव रुक्ख भग्ग तव सुंढा दंडिहि ।
 सो गल्लनाह जिणभद्दगुरु, वड्ढिय पूरण कप्पतरु,
 कल्लण वल्लि नवधार धरु, वसह मञ्जि जयवंत चिरु ॥२८॥
 जिणि दिणि दुल्लभ सभा सखर खरतर जे तिण दिणि,
 पडिबोहिय चामुण्ड फुडवि खरतर जे तिणि दिणि ।
 जिणीय वाद छट्ठमइ मासि फुड खरतर तिणिदिणि,

रंजिय नरवंम नरिंद जिहिं, धारनयर स्युं नरवरा !
 जिणभद्रसूरि ते तुअ सवि, अखिल खोणि खरतर खरा ॥३१॥
 वशाखि (पि) का मदाति साख्य सोगत नैयायक,
 मीमांसक मुख मुखरवादि गुरु गर्व निवारक ।
 उत्सूत्राविवि मार्ग वगर्ग देशक यति ब्रजा,
 करटि घटांकुश कुल विशाल सौधोक्कल सुध्वज ।
 जन नयन सुधाकर रुचिरकर, मदन महीधर कुलिशधर,
 जय सूरि मुकुट गत कपट भट, गुरु जिणभद्द युगपवर ॥३२॥
 सयल गरुय गुण गण गणिद गण सीस मडड मणि,
 निय वयणिहिं पर वादि निद्धडइ सुतक्खणि ।
 सवि आचार विचार सार विहिमग्ग पयासइ,
 भविय जण मण विमल कमल रवि जेम पयासइ ।
 पुरि नयरि देसि गामागरहि, विहरतउ सो होइ सुरुरु ।
 सो जयउ जिणेसर सासणिहिं, श्रीजिणभद्र मुणिदवरु ॥३३॥

ताम तिमिर धरि फुरड जाम दिणायर नहु उगइ ।

ता मयगल मयमत्त जाम क्मरीय न लगइ ।

ताम चिडा चिगाचिग जा न सिचाणऽ दुगुइ ।

ता गज्जऽ घणु गयणि जाम नहु पण फुरदइ ।

तिम सयल वाणि निय निय धरिहिं, ताम गव्व पणइ चडइ ।

जिनभद्र सूरि सुह गुरु तणीय, ह्यु न जा पन्निहिं पडइ ॥३४॥

घर पुर नयर निवासि जेय निय गव्व पयामऽ ।

बोलावना बहुय निरुद नहु किंपि विमासइ ।

पहुवि पयउ पमाग लक्षण वर वसाणऽ ।

वादि विनाद विनोदि सक निय चित्त न याणइ ।

परिस जि केवि भुवणिहिं भलइ, वाटी मयगल गउयडऽ ।

जिनभद्र सूरि केसरि हरिहिं त धुज्जवि धरणिहिं पडइ ॥३५॥

नाग कुमर नत्नाह सुग्नाहा जेण तिहुयणि जिन्ता ।

तिहुयण सल्लविरेदो विव र्माउ एम भूवल्ल १

भूवल्मि पमिद सिद्ध जो मकर भणिउ ।

गोरी पयतलि रुहिय सोय इणि वाणिहिं हणिउ ।

दातव मानन असुर मरि हेलइ जो लिद्ध ।

सो नारायण सोल सहस गोपी वसि किद्ध ।

हिउ एह अधिक भडि वाउलउ न मुणिलोयह फलिहिं ।

जिणमद्रूरि इणि कारणिहिं, मयण मन्लु जितउ बलिहिं ॥३६॥

दुर्घट घटना घटित कुटिल कपटागम सूक्त ।

वावाटोत्कट करटि करट पाटन सिंहोद्भट ।

न विट लंपट मुक्त निकट विन तारि भट रफट,

हाटक सुथट किरोट कोटि वृस्ट कम नख तर जट,

विस्टप वाछित कामवट विवडित दुष्ट घट प्रकट

जिनभद्र सूरि गुरुवर किकट, सितपटभिरोमुकुट ॥३७॥

॥ इति समस्तदेव गुरु पट्पदानि ॥



॥ पहराज कवि कृत ॥

॥ जिन्नेदयसूरि गुण वर्णन ॥

किणि गुणि सोववितरग, सिद्धिहिका भति तुम्ह हो मुणिग ।

ससार करि डहण, दिख्वा वालाणर गहण ॥१॥

वालत्तणि वय गहण सुपुणि मुणिवर सभालि ५३ ।

अट्ट कम्म निज्जणवि गमण दुग्ग गइ टालि ५३ ॥

उग्गु तवग्गु जिण तवउ वितु समतहि रहिउ ।

सजम करिसु पहाणु मयण समरगणि वहिउ ।

जिणउ य सूरि पुय पय नमहि, ति नर मुक्ति रमणी रमइ ।

“पहराज” भणइ तुइ विन्नउ, अजउ भवग्गु किणि गुणि तवहि ॥१॥

लीलयति सिद्धि पावहि जे नर पणमति एरिसा सुग्गु ।

मुणिवरह पित्त कलिउ नहु मन्नइ अन्न तिथस्स ॥१॥

मुणिवर मनुमय कलिउ भत्ति जिणवरह मनाव०

अवर तरणि नहु गमड सिद्धिरमणि इह भावइ ।

करइ तवणि वहु भगि रगि आगम वखाणर ।

अधुह जीव वोहत ऐत सुमत्त्वह नाणय ॥

जिणोदय सूरि गच्छाहवर सुख मग्गि धोरि सुपह ।

“पहराज” भणइ सुपसाउ करि, सिव मारग दिख्वाल महु ॥२॥

सुग्गु गिग्ग मग्ग जूय क्रिय कला विसारह

मस मखण परिहरउ सुरा सिउ भेउ निवारइ ।

वेसन रउ कउ पघ पाउ पारद्धि अणतउ ।

चोरी म करि अयाण रखि दुंगय जिउ जंतउ ॥
 पर रमणि मिलिह सतय वसणि, जीव दय दठ संग्रहयउ ।
 जिणउदयसूरि सुगुरु नमहु, सिद्धि रमणि लीलइ लहउ ॥३॥
 सुगुरु सिद्धि इम भणइ कित्ति तूय तणी थुणिज्जइ ।
 सुगुरु देव इम भणय लीह गणहर तुय दिज्जय ।
 सुगुरु सुविह गण वित्ति अचलु तुय नामहि लगउ ।
 तुहत्त पढइ सिद्धंत सुगुरु जिनमत्ति विलगउ ॥
 जिणउदय सूरि जग जुगपवर, तुय गुण वनउं सहसि फणि ।
 परसउ सुगुरु हो भवियणह, कहय सिद्धि णभन्तमणि ॥४॥
 कवणि कवणि गुणि थुणउं कवणि किणि भेय वस्त्राणउ ।
 थूलभइ तुह सील लव्वि गोयम तुह जाणउ ।
 पाव पंक मउ मलिउ दलिउ कन्दप्प निरुत्तउ ।
 तुह मुनिवर सिरि तिलउ भविय कप्पयरु पहतउ ॥
 जिणउदयसूरि मणहर रयण, सुगुरु पट्टधर उद्धरणु ।
 “पहुराज” भणइ इमजाणि करि, फल मनवंछिउ सुह करणु ॥५॥
 फल मनवंछिउ होइ जि किवि तुइ नाम पयासय ।
 तुझ नाम सुणि सुगुरु रोर दारिद पणासइ ।
 नामगहणि तुय तणय सयल आवय उरसासहि ।
 ॥
 जिणउदयसूरि गणहर रयणु, सुगुरु पट्टधर उद्धरणु ।
 “पहुराज” भणइ इम जाणि करि, सयल संघ मंगलु करणु ॥६॥

श्रीजिनप्रभसूरि परम्परा गुर्वाचली

१६२३

वदे सुहम मारिं, जवू सारिं च पभवसूरिं व ।

सिज्जभव जसभद, अज्जसभूय तहा वदे ॥ १ ॥

तह भद वाहु मारिं च, थूलभदजड जिणवरिद्ध ।

अज्ज भदइरि सूरिं, अज्ज सुहत्थिच वदामि ॥ २ ॥

तह सति सूरि हरिभद सूरिं, सडिल्ल सूरि जुगपपर ।

अज्ज समुद तह अज्ज मगु, अज्ज धम्म अह वदे ॥ ३ ॥

भदगुत्त च वइर च, अज्जरत्थिय मुणिवर ।

अज्ज नदि च वदामि, अज्ज नागहत्थि तहा ॥ ४ ॥

रेवय सटिल्ल हिमवत, नाग उज्जोय सूरिणो वद ।

गोविन्द भूणदिन्ने, लोहच्चिय वस सूरीउ ॥ ५ ॥

उमासाइवायगे वदे, वदे जिणभद सूरिणो ।

हरिभद सूरिणो वद, वदेहिं देवमूरिपि ॥ ६ ॥

तह नमिचन्दसूरिं, उज्जोयण सूरि पज्जिइणो वद ।

तह चद्धमाण सूरिं, सूरि सिरि जिणोसर वद ॥ ७ ॥

-जिणचन्द अभयसूमूरिं, सूरि जिण वरलह तहा वदे ।

जिणदत्त जिणचद, जिणवइय जिणोसर वदे ॥ ८ ॥

संजम सरसइ तिहयसु, सुणीण तित्थभर च (ध) रणं ।

सुगुरुं गणहररयणं, वंदे जिणसिह सूरिमहं ॥ ६ ॥

जिणपह सूरि मुणिंदो, पथडिय नीसेस तिहअयणाणंदो ।

संपइ जिणवर सिरि, वद्धमाण तित्थं पभावेइ ॥१०॥

सिरि जिणपह सूरीणं, पट्टंमि पडट्टि ओगुण गरिडो ।

जयइ जिणदेव सूरी, निय पन्ता विजय सूरसूरी ॥११॥

जिणदेव सूरि पहोदय, गिरि चूडाविभूसणे भाणू ।

जिण मेरु सूरि सुगुरु, जयउ जए सयल विजनिहिं ॥१२॥

जिणहित सूरि मुणिंदो, तप्पजेरविय कुमुयवण चंदो ।

मयणकरि कुम विहडण, दुद्धरपंचाणणो जयउ ॥१३॥

सुगुरु परंपरा गाहा, कुलय भिणजो पढेइ पक्कूसे ।

सो लहइ मणोवंछिय, सिद्धि सवंपिभवजणे ॥१४॥

॥ श्रीजिनप्रभसूरि छप्पय ॥

गयण थकी जिण कुलह आणि ओवइ उत्तारी ।

कियो महिप स्युं वाद सुण्यउ नगरी नववारी ॥

पातिसाह रंजियउ साथि वइ वृक्ष चलायउ ।

शत्रुंजय राइण सरिस, वरिस दुद्धइ झइ ल्यायउ ॥

जिण दोरइइ मुद्रिका प्रकट कीय, जिन प्रतिमा वुल्लिय वयण ।

जिणप्रभसूरि खरतर सुगच्छि, भरतक्षेत्र मंडिय रयण ॥१॥

॥ इति गुरावली गाथा कुलकं समाप्तम् ॥

१ नांखि, २ मुख, ३ नयर पिक्खइ, ४ दिल्लीपति छरताण पूढि
९ सिहरि ।

सरतरगच्छ पट्टावली

— १ —

प्रथम श्री(धवल) राग

धन^१ धन जिण (शासन?) पातग नाशन, त्रिभुवन गरुअ^२ गहगहए ।
जासु^३ तणउ जसुनाउ गगाजल, निरमल महियले महमह^४ ए ॥१॥
श्रीवयरस्वामी गुरु अनुमि चिट्टु दिसे, चद्रकुल^५ चउपट जाणिइए ।
गच्छ चउरासीय माहि अति गरुअउ, सरतरगच्छ वक्राणिइए ॥२॥

छंदः—

वयाणिउर गिरि माहि गरुअउ, जेम मेरु महीधरो ।
मणि माहि गिरुयउ जेम सुरमणि, जेम प्रह गणि दिणयरो ॥
जिम देउ दानउ माहि गरुअ, गज्जण अमरसरो ।
तिम सयल गच्छ माहि गरुअउ, राजगच्छ सु सरतरो ॥३॥

राग देशाखः—

सरतरगच्छहिं खरउ वनहार, सरउ आचार मुनि आचरइ ए ।
सरउ सिद्धात वयाणे^२ सुहगुर, सरउ विधि मारग वापरइ ए ॥ ४ ॥
तसु गच्छ^३ मण्डण पाप विहडण, जे हुआ सुविहित सिरोमणि ए ।
श्री जयसागर गुरु उपदेसिहिं, भाइसु सरतर गच्छ धणी ए ॥ ५ ॥

१ श्रीजिनशासन २ ताउ ३ गहगहए ४ कुभवउपट ५ गह

छंदः-

गुरु गच्छ धणी हंड हरखि गाडसु, प्रथम हरिभद सूरि गुरो ।

तसु वंसि क्रमि उदयउ मुणीसर, देवसूरि सुगणहरो ॥

सिरि नेमिचन्द मुणिद सुंदर, पाट तसु उज्जयाल ए ।

सिरि सूरि उज्जोयण जईसर, पाव पंक पखालए ॥ ६ ॥

रागदेशाख छाया

आवुय ऊपरि मास छ सीम, साधिउ सूरिमंत्र लेड (य) नीम ।

पायालह पहुतउ धरणिंदो, प्रगटियो वज्रमय आदिजिगंदो ॥ ७ ॥

मिथ्याती जे जोगी (य) जडिया, सुहगुरु अतिसइ ते सहुनडिया ।

जिणशासन हूउ जयवाउ, विमल तणइ मनि आणंद जाउ ॥ ८ ॥

विमल सुवसहोय विमलि करावी (य),

जसु उवएसिहि (य) त्रिमुवनि भावी ।

जाणि कि नंदीसर परसादो, परतखि देउल भिसि जसवादो ॥९॥

॥ छंदः ॥

जसुवाउ जसु उवएसि लीवउ, विमलवर मंतीसरे ।

कारविय निरुपम विमल वसही, गरुअगिरि आवू सिरे ॥

सिरि सूरि मंत्र प्रभाव प्रगटिय, सुविहित मग्ग दिवायरो ।

सिरि वद्धमाण मुणिद नंदउ, सयल गुण रयणायरो ॥१०॥

॥ राग राजवलभः ॥

गूजर देसिहि जाणियइ, पाटण अणहिलपुर नामी ए ।

राज करइ गजपति तिहा सिरि, दुल्लह नरवइ नामी ए ॥११॥

चउरासी मठपनि तिहां, आचारिज छइ तिणिं कालि ए ।

जिणवर मंदिरि ते वसइ, इक सुविहित मुनिवर टालि ए ॥१२॥

१ वाद ।

सुविहित नइ मठपति हुउ, ग (१रा)यगणि वसिंहि विवादू ए ।

सूरि जिणेसरि पामिउ, जग दसत जय जयवादू ए ॥१३॥

दससय चउनीसहिं गए, उथापिउ चेइयवासू ए ।

श्रीजिनशासनि थापिउ वसतिहि, सुविहित मुनि(वर)वासू ए ॥१४॥

गुरु गुणि रजिउ इम भणइ श्री मुनि दुहह नरनाहू ए ।

इणि कलि-कालिहि सरहरा, चारित्रधर एहजि साहू ए ॥१५॥

॥ छन्द. ॥

सरहरा चारित्रधर गुरु, एहु विरुद प्रकासिउ ।

उथपिय चियवास सुविहित, सघ वसहि निवासिउ ।

रजइउ जिणि राउ दुहह, जयउ सूरि जिणेसरो ।

तसु पाटि सिरि जिणचन्द गणहर, भविय लोअ दिणेसरो ॥१६॥

॥ राग धन्याश्री. ॥

श्रीजिन शासन उधरिउए,

नन अगा^२ तणइ वसानि, श्री अभयदेवसूरिजुगपवरो

प्रगाटिऊ एथभण पास, श्रीजयतिहुअणि जेण गुरो ॥१७॥

॥ छन्द ॥

गुरु गहअ सरतर गच्छ उदयउ, अभयदेव गणेसरो ।

जसु पायन वदइ दिविं पदमावती, धरण सुरेवरो ॥

निय वयण सीमधर जिणेसर, जासु गुण वक्खण ए ।

किम मु सरीसउ मूढ त गुरु, वरणनी जगि जाण ए ॥१८॥

१ उधरियपियवास २ घणह ।

जाणियइ सुविहित सिरुमणि ए ।

तसु तण ए पाटि सिगार, पुह विहि “पिडविशुद्धि” करो ।

इणि जुगी ए एक जोगिद, श्रीजिनवल्लभ सूरि गुरो ॥१६॥

छंदः-

गुरु गुण तणउ भंडार गणहर, सयल संयम भर धरो ।

वागडी देसि वखाणि जिणध्रम, दससहस आवक करो ।

चीत्रउड ऊपरि देवि चामुंड, प्रसिद्ध जिणि प्रतिबोधिया ।

तिणि सूरि जिण वल्लह जईसरि, कवण लोय न मोहिया ॥२०॥

श्रीजिनदत्त सूरि गुरु नमउ ए ।

अम्बिका ए देवि आदेसि, जाणियइ चिहुं जुगे जुग प्रधान ।

सयंभरी ए राय डइ जेहि, दीघउ श्रीजिनधर्म दान ॥२१॥

छंदः

जिनधर्म दानिहि पनरसय मुनि, दीखिया जिण निज करे ।

वखाण सुणिवा देव आवइ, सेव सारइ बहु परे ॥

चउसट्टि योगिणी नामि देवी, जासु आण न लंघ ए ।

तसु गुरु तणइ सुपसाइ नंदउ, एहु खरतर संघ ए ॥२२॥

श्रीजिनचंद सूरि नर रयण ।

नरमणी ए जासु निलाडि, झलहलइ जेम गयणहिं दिणंदो ।

तसु तणइ ए पाटि प्रचंड, श्रीसूरिजिनपति सूरिइंदो ॥२३॥

३६.—

सिर सुरिश्चन्द्र मुण्डि जिनपति, श्रीजिन^१ जासनि गज्ज ए ।
 छत्री वादइ जयपताका, विरद जसु जगि छज्ज ए ॥
 अहसि(जि)रि जिणसर सूरि वदउ, जिण प्रनोह मुनीसरो ।
 फलि काल केवलि विरु^२ गणहर, तयपु जिणचद सूरि गुरो ॥२४॥

राम धन्याश्री भास.—

साहेलीए नयरि दरउरि सुरतरु, मुगुरु वर श्रीजिनपुराल सुर ।
 साहेली ए धूमिहिं नगमइ तमुपय, भवियजन^२ भगति उगति सूरे ।
 साहेली ए तीह तणे जाहि दोहग, दुरिअ टालिद दुहमयल वर ।
 साहेलीए तीह तणइ मन्डि विलसइ, सपति सय वरसु भरि पूर ॥२५॥

छद.—

भरि पूरि जानर सयल सपय, भविय लोयह नितु घर ।
 जे धूमि श्री जिनपुराल सुह गुरु, पय नमइ देराउरे ।
 तसु पाटि सिरि जिणपदम गणहर, नमउ पुहवि प्रसिद्धउ ।
 “धूर्वालि सरसती” विरुद पाटणि जामु सघहिं दिद्धउ ॥२६॥
 साहेली ए इणिगच्छि लब्धिहि गोयम गह गहइ श्रीजिनलब्धि सूरे ।
 साहेली ए चन्द्र गच्छे पूनिमचन्द्र जिम सोह ए श्रीजिनचद सूरे ॥
 साहेली ए श्रीसच उदयकर चदउ नदन श्रीजिनउदय सूरे ।
 साहेली ए सुरि पुरदर सुदर गुरअउ श्रीजिनराज सूरे ॥२७॥

१ जैनपति २ जे

साहेली ए नितु नवतत्व वखाण ए जाण ए सयल सिद्धान्त सारो ।
 साहेली ए मणहर रूपि अनोपम संजम निरमल गुण भंडारो ।
 साहेली ए गोयम जंबु कि अभिनवउ अभिनवउ थूलभद्द वयर गुरि ।
 साहेली ए संपइ^१ प्रणमउ गच्छपति श्रीजिनभद्रसूरि जुग पवरो ॥२८॥
 साहुसाखह तिलउ बछराज साह मलहारो ।
 स्याणीय कुखंहि अवयरिउ छाजइ खरतर गच्छ भारो ।
 साहेली ए संपय पणमउ गच्छपति श्रीजिनचन्द्र सूरि युगपवरो ।
 दंसणि भवियण मोहए सोहइ सूरि गुणरयण धरो ॥२९॥

छंदः-

जुगवर तणा गुणरयण पूरी गरुअ एह गुरावली ।
 श्रीसंधि भाविहि सामलो ती मन तणी पूरउ रली ॥
 आराधतउ विधि खरतर सं..... ।
 इम भणइ भगतिहि सोमकुंजर जाम चंद दिणंदउ ॥३०॥
 इति श्रीविधिपक्षालंकार श्रीखरतर गुरुणा गुर्वावली समाप्ता ॥

* -

नोट: श्रीजिनकृपाचन्द्र सूरि ज्ञानभण्डारस्य गुटकेमें २६ वीं गाथा अतिरिक्त मिली है ।

ज्ञात होता है उस प्रतिके लिखने के समय जिनचन्द्रसूरि विद्यमान होंगे अतः यह १ गाथा उसीमें वृद्धि कर दी है ।

१ दंडइ गणघर गरुयउ

श्रीभावप्रभसूरि गीतम्

समरवि सुहृत् पाय अह, ज(सु) दरसणि मनु उल्लसत् ए ।
थुणीयइ मुणिर राय अहे, कलियुगे जसु महिमा वसइ ए ॥१॥
निरमल निय जम पूरि अहे, चन्दन वत जिम महिमहइ ए ।
श्रीय भावप्रभसूरि अह, श्रीयल्लसत्गठे गहगहइ ए ॥ २ ॥
अमिय समाणीय वाणि अह, नवरस देसग जो करइ ए ।
समय निरक मुजाणि अह, समकिन रयग सो मनि धरइए ॥३॥
पच महान्नार अह, पच विरय परि गजणू ए ।
पालन पच आचार अह, पचमि (नात्व) भजणू ए ॥ ४ ॥
भजणु मोह नरिंदो अह, मयणु महाभडो वसि कीउ ए ।
वसि कीउ कोहु गयदो अहे, मानु पचाननु वन (स?)कीउ ए ॥५॥
चमकीउ दलिउ कनाय अह, लोभ मुजगमु निरजणिउ ए ।
निरजणिउ अरि रागाय अहे, सयल सुरा सुर सेवीयउ ए ॥ ६ ॥
सेवइ जसु पय माध अहे, पकय मूअर रण उणइ ए ।
धन धनु जे नरनारि अह, नित नितु प्रभु गुण गण थुणइ ए ॥७॥
मगल लठि विलास अहे, पूरइ ए वठिय सुहकरू ए ।
निरम उवमम वास अह, रजण भविअण मुणिवरू ए ॥ ८ ॥
नव रम देसग वाणि अहे, घण जिम गाजइ ए गुहिर सरे ।
मयग दवानल वारि अहे, नागिहिं जलि वरिस० सुपर ॥ ९ ॥
विहरइ सुविही याचार अहे, कास कुसुम जसु निरमलउ ए ।
४

माल्हूअ साख विगाल अहे, लृणिग कुलि महियलि निलउ ए ॥१०॥
 लवविहिं गोयम सामि अहे, सीयलिहिं माधु सुदरजनु ए ।
 सन्वड साह मल्हार अहे, राजल देविय नंदनुं ए ॥११॥
 निरमल गुण भंडारो अहे, श्रीय जिनराजसूरे जीस वरो ।
 संयम सिरि उरि हारो अहे, सागरचन्द्रसूरे पादु धरो ॥१२॥
 सुमत्तगु-सुरतरु तेम अहे, सुकृत रसो भरि पूरीउ ए ।
 गुणमणि रयणिहिं जेम अहे, लवणिम मंजरि अंकूरीउ ए ॥१३॥
 दिणियर जिम सविनासो अहे, जस कीयरतिगुण विसतरीए ।
 जगि जयवंतउ सूरे अहे, पूरव गुर सवि उद्धरी ए ॥१४॥
 उद्धरिय धीरिम मे(रु) गिरि जिम, चन्द्रगालि मुख मंडणो ।
 पंच समतिहिं त्रिहुं गुपिति गुपतउ, दुरित भवमय खंडणो ।
 सिरि आइरिय सुवर काति दिणियर, भविक कमल सविकासणो ।
 जयवंतु श्रीय गुरु भावप्रभसूरि, जाम ससि गयणंगणो ॥१५॥

॥ इति श्रीमदाचार्याणा गीतम् ॥

श्रीरागि ढाल ॥ छ ॥



श्रीकल्याणचन्द्रगणि कृत
श्रीकीर्तिरत्नसूरि चउपइ

मरमति मरन वयण ट दवि, निम गुरु गुण बोलि मखवि ।
 पोम० अमोय रमायण विटु, तहमि मरोमिड हृइ गुण वृन्द ।१।
 महि मडण पयडउ धग रिद्धि, नयर महव० नर बहु बुद्धि ॥
 ओमवग अति घण तिणि ठाण, वमड सुरहम जिम धगनाण ।२।
 तहि श्री मयपाल गुणवत, उत्यवत साखा धनवन ।
 फोचर माह तणड नान, आपमल दपा बहु मानि ॥ ३ ॥
 श्रीलिहि सीता रुपइ रम, दान दइ न करइ मनि तम ॥
 दप धरणी दवलद नारि, पुत्त रयग तिणि जन्मा च्यारि ॥४॥
 लयउ भाउ साह सुरग, फन्हउ ददइउ धधर चग ॥
 धनउ जेम धनवन अनेउ, धर्मफाजि जसु अति मवियक ॥५॥
 प दइ गुणपचामह जम्मु, निरिउ दलह त्रेमट्टउ रमु ॥
 श्रीनिनरुद्धन सूरिहि शास्त्र, कीर्तिराड सीखविन सुपात्र ॥६॥
 हिय वाणारीय पद मत्तरइ, पाठरु पत्त अमीयड उपरइ ॥
 तयणतरि आयरिह मतु, जोगि जाणि गुरि दीधउ मतु ॥७॥
 लखउ पन्हउ करइ विन्तारि उठय जेसलभर मझारि ॥
 श्रीजिनभद्रसूरि नत्तागउइ, क्रिया श्री कीर्तिरयग सूरिवइ ॥८॥
 वानो मडगल ता गड अडद, जा गुरु कमरि दृष्टि नर चड ॥
 जय फिरि अह गुरु बोलइ बोल, वादी मूकइ मान निडोल ॥९॥

जहि मस्तकि गुरु नियकरु ठवड, तड घरि नवनिद्धि संपद हवड ।

सुह गुरु जेह भणावड सीस, ते पंडित हुड विस्वा वीस ॥१०॥

जिहा जिहा गुणवंता रहड, तिहां आवक रिधिहि गहगहड ॥

गाम नगर ते अविचल खेम, लवधिवंत जणिजह एम ॥११॥

पनरह पणवीनड वरसंमि, वडसाखा वदिदिण पंचमि ।

पंचवीस दिण अणसण पालि, सगि पहुंचता पाव पखालि ॥१२॥

रविजिम झगमगि झिगमिग करड, नवड तेज तनु अणमण थगड ।

अतिसय जिम तित्थंकरतणा, गुरु अनुभवि हुया अतिवणा ॥१३॥

सुह गुरुअणसण सीधउं जाम, वीर विहारे देविहि ताम ।

अल हलंत दीवो पुण कीध, जडिय किमाडिहि लोक प्रसिद्धि ॥१४॥

जिम उदयाचलि उगउ भाणु, तिमपूरव दिसि प्रगट प्रमाणु ।

थापिउ थूम सुनिश्चलजाण, श्री वीरमपुर उत्तम ठाणि ॥१५॥

श्रीखरतर गणि सुरतर राय, जहि सिरि किर्तिरयण सूरि पाय ।

आराहउ भवियणडकचित्ति, ते मण वंछित पामइ अत्ति ॥१६॥

चिन्तामणि जिम पूरइ आस, पूजड जे मनि धरिय उल्लास ।

तिणि कारणि गुरु चरण त्रिकाल, सेवइ नर नारि भूपाल ॥१७॥

श्री कीर्तिरतन सूरि चउपइ, प्रहउठी जे निश्चल थड ।

भणड गुणड तिहि काज सरंति, "कल्याणचन्द्र" गणि भगतिभणंति ॥१८॥

॥ इति श्रीकीर्तिरत्नसूरि चउपड ॥

सं० १६३७ वर्षे शाके १५८२ प्र० ज्येष्ठ मासे शुक्लपक्षे षेष्ठा

तिथौ गुरुवासरे । श्रीमहिमावती मध्ये श्रीवृहत्खरतर गच्छे श्रीजिन

चन्द्रसूरि विजयराज्ये संखवाल गोत्रीय संवभार धुरन्धर साहकैल्हात-

त्पुत्रसा० धन्ना तत्पुत्रसा० वरसिंघ तत्पुत्र सा० कुवरा तत्पुत्र सा०

न०वा तत्पुत्र सा० सुरताण तत्पुत्रसा० खेतसीह मातृ साह चांपशी

पुरिताका करापिता पुत्र पुत्रादि चिरनंदात् । शुभं भवतु ।

[श्रीपूज्यजीके संग्रहस्थ गुटकाके पृ० ४२ से]

श्रीभक्तिलाभोपाध्याय कृत

॥ श्रीजिनदसमूरि गुरु गीतम् ॥

- - -

मरसति मति त्रिष्ठ अम् अतिधगी, मरम सुशोमल वाणि
 श्रीमजिनदसमूरिगुरुगाडमिन् मन लीण गुण जागि ॥१॥मर०
 अति धगीयत्रियउ मति त्व मरमति, सुगुरु वदण जा२६ ।
 प्रहउठि श्रीजिनदसमूरि गुरु, भाव भगतिहि गाइइ ॥२॥
 पाट धत्सव लाग वची (पिरोजी) फर, फरममिह फरावा ।
 गुरु ठामि ठामि विहार फरना, आगरा जत्र आवए ॥३॥
 नत्र हरसिउ डुगारमी घगो, घघत्र वली पामदत्त ।
 श्रीमाल चतुर नर जाणिय०, ररतर गुग्गुण रत्त ॥४॥
 तत्र हरसिउ डुगारमी फराव२, सुगुरु परमार तणी ।
 वहु परें मजाइ सह सुगन्धो, वात ए छे अति घणी ॥५॥
 पागएथा हाथी पात्साह सुगुरु साम्दो मचरइ ।
 गुरु पाय हेठइ कधीपानड, पटोला वहु पावरइ ॥६॥
 पात्साह माहमो आविउ, उवर रान वजीर ।
 लोक मिलिया पार न जाणियइ, मोरइ काच कपूर ॥७॥
 आवीया माहमा पात्साह सत्र वाजा वाजए ।
 जेण मरणाइ जहरिमरतवाज२, मसरिअ अनर गाजए ॥८॥
 मोनि ववावइ गीत गात्र२, पुण्य कलम धरइ सिर ।
 मिगाएमार सत्र नारी करइ, ज्ज्वन घर घर ॥९॥

रूपटंका सहित तंबोल दियइ, वेंचिउ वित्त अपार ।
 इम पइसारो विस्तार कीयो, वरतिओ जय जयकार ॥१०॥
 तंबोल दिधउ सुजस लीधउ, इसी बात घणो सुणी ।
 श्रीसिकन्दर बादशाह, वडइ दिल्लीनउ धणो ॥११॥
 जिंसी जिनप्रभसूरि किरामति, पादशाहे जणियइ ।
 एथी सहु लोकमाही, घणुं घणुं वखाणीयइ ॥१२॥
 दीवान माहे तेडाविया, कीधी पूछ बहुत ।
 देखाडी किरामती आपणि, गुरुया गुरु गुणवंत ॥१३॥
 दीवान माहे घोर तप नइ, जाप सुगुरु मन धरइ ।
 जिनदत्तसूरि पसायइ चौसठि, योगिनी सानिध करइ ॥१४॥
 श्रीसिकंदर चित्त मानियउ, किरामत कांइ कही ।
 पांचसइ बंदी बाखरसी, छोडव्या इण गुरु सही ॥१५॥
 बंदि छोडि विरुद मोटउ हुयउ, तप जप शील प्रमाणि
 गुरुमोटा करम तणा धणी, जाणिउं इणउ इहनाणि ॥१६॥
 बंदि छोडि मोटउ विरुदलाधउ, बादशाहे परखिया ।
 श्रीपासनाह जिणंद तुळउ, संव सकलइ हरखीया ॥१७॥
 श्रीभक्तिलाभ उवझाय बोलइ, भगति आणी अति घणी ।
 श्रीजिणहंससूरि चिरकाल जीवउ, गच्छ खरतर सिरधणी ॥१८॥

इति गुरु गीतम्



न
२ गुरु गतिकु

२६

पमायजो ।

त गाइसु मुणिरायजी ॥१॥

गर उरसाउ जी ।

वछित सुखदाउ जी ॥

म नउ चद जी ।

इ परमाणन्द जी ॥मन०॥२॥

न भण्डारो जी

मदन विकारो जी ॥३॥मन॥

नरवर राउ जी ।

मुनिवर पाउ जी ॥४॥म०॥

२

॥म०॥

रूपटंका महित तंत्रोल दिग्द, वेचिउ वित्त अपार ।
 इम पइसारो विस्तार कीयो, वरतिओ जय जयकार ॥१०॥
 तंत्रोल दिग्द सुजस लीधउ, इसी वात घणो सुणी ।
 श्रीसिकन्दर वादशाह, वडइ दिल्लीनउ धणो ॥११॥
 जिसी जिनप्रभसूरि किरामति, पादशाहे जणियइ ।
 एथी सहु लोकमाही, घणुं धणुं वखाणीयइ ॥१२॥
 दीवान माहे तेडाविया, कीधी पूछ बहुत ।
 देखाडी किरामती आपणि, गुरुया गुरु गुणवंत ॥१३॥
 दीवान माहे घोर तप नइ, जाप सुगुरु मन धरइ ।
 जिनदत्तसूरि पसायइ चौसठि, योगिनी सानिध करइ ॥१४॥
 श्रीसिकंदर चित्त मानियउ, किरामत कांड कही ।
 पाचसइ वंदी वाखरसी, छोडव्या इण गुरु सही ॥१५॥
 वंदि छोडि विरुद मोटउ हुयउ, तप जप शील प्रमाणि
 गुरुमोटा करम तणा धणी, जाणिउं इणउ इहनाणि ॥१६॥
 वंदि छोडि मोटउ विरुदलाधउ, वादशाहे परखिया ।
 श्रीपासनाह जिणंद तुडउ, संघ सकलइ हरखीया ॥१७॥
 श्रीभक्तिलाभ उवझाय बोलइ, भगति आणी अति घणी ।
 श्रीजिणहंससूरि चिरकाल जीवउ, गच्छ खरतर सिरधणी ॥१८॥

इति गुरु गीतम्



श्री पद्ममन्दिर कवि कृत

॥ श्री देवतिलकोपाख्याय चौपई ॥

पास जिणेशर पय नमु, निरुपम कमला कद ।

सुगुरुथुणता पामियड, अविहड सुख आणद ॥१॥

भारहवास अजोड्या ठाम, वाहड गिरि बहुवण अभिराम ।

च इहसड चम्माल प्रसिद्ध, निवमइ लोक घणा सुममृद्ध ॥२॥

ओसवाल भणसाली वण, निरमल उभय पथ ।

करमचद सुहकरम निवास, तसुवरि जनम्या गुणह निवासा ॥३॥

तासु वगणि सोहग जाणियड, सील सीत उपम आणीय २ ।

पनरहसर तेत्रीसइ वास, तसु घरि जनम्या गुणह निवास ॥४॥

दीघड जोसी देवो नाम, अनुकमि वाचइ गुण अभिराम ।

रामति रमतड अति सुकमाल, माइ ताड मन मोह २ बाल ॥५॥

इगतालड सजम आदरि पाप जोग सगला परिहरी ।

भणीय सयल सिद्धाता सार, चासठ० पद ल्हो उदार ॥६॥

श्रीदेवतिलक पाठक गढगवइ, महिनलि महिमा सहुको कहइ ।

देस विदेजे करी त्रिहार, भप्रियण नइ कीधा उपगार ॥७॥

इसनयण नभरस ससि वास, सेय पचमो मिगसर मास ।

करि अणराण आराहण ठाण, पाम्यड अनिमिय तणउ विमाण ॥८॥

मुनि दर्पकुल कृत

महो० श्रीपुण्यसागर गुरु गीतम्

रागः—सूहब

श्रीजगद्गुरु पय वनीयइ, मारद तणड पसायजो ।

पचडट्टिय जिणि वशिकीय, त गाडसु मुणिरायजी ॥१॥

मन शुद्धि भविण्ण भाप्रियइ श्रीपुण्यसागर उज्जाव जी ।

पालइ शील सुदढ मदा, मन वंछिन सुख्खाव जी ॥

विमल वन्न जसु दीपतव, जिम पूनम नउ चद जी ।

मधुर अमृत रस पीवता, थाइ परमाणन्द जी ॥मन०॥२॥

दस विधि माधु धरम धरइ, उपशम रस भण्डारो जा ।

क्षमा लडग करि जिन हय्यव, हलइ मन्न विकारो जी ॥३॥मन॥

ज्ञान त्रिया गुणि सोहतउ जसु, पणमड नखर राउ जी ।

नाम० नव निवि सपजइ, सेवइ मुनियर पाउ जी ॥४॥म०॥

धन उत्तम व उरि धरउउ, उन्थसिह कुल दिनकार जी ।

जिन रामन माहि परगडउ, सुविहित गच्छ सिणगार जी ॥५॥म०॥

श्रीजिनहस सूरिमरइ मड हवि दीरिय शीस जी ।

दरपो "दण्ड कुल" इम भणइ, गुरु प्रतपउ कौडि वरीस जी ॥६॥म०॥

श्री जिनचन्द्रसूरि अक्षर प्रतिबोध शंख

दोहा : राग असावरी

जिनवर जग गुरु मन धरि, गोयम गुरु पणमेसु ।

सरस्वती सदगुरु सानिधड, श्री गुरु गस रचेसु ॥ १ ॥

वात सुणी जिम जन मुखड, ते तिम कहिस जगीस ।

अधिको ओछो जो हुवड, कोप(य?) करो मत रीस ॥ २ ॥

महावीर पाटडं प्रगट, श्री सोहम गणवार ।

तास पाटि चउसट्टिमड, गच्छ खरतर जयकार ॥ ३ ॥

संवत सोल वारोत्तरड, जैसलमेरु मंझार ।

श्री जिन माणिक सूरि ने, थापिउ पाट उदार ॥ ४ ॥

मानियो राउल माल दे, गुण गिरुओ गणवार ।

महीयलि जसु यश निरमलो, कोय न लोपइ कार ॥ ५ ॥

तेजि तपइ जिम दिनमणि, श्री जिनचन्द्र सूरिश ।

सुरपति नरपति मानत्री, सेव करइ निश दोश ॥ ६ ॥

युगप्रधान जगि सुरतरु, सूरि शिरोमणि एह ।

श्री जिन शासनि सिरतिलौ, शील सुनिम्मल देह ॥ ७ ॥

पूरव पाटण पामियो, खरतर विरुद अभंग ।

संवत सोल सतोतरे, उजवालइ गुरु रंगि ॥ ८ ॥

साधु विहारे विहरतां, आया गुरु गुजराति ।

करइ चउमासो पाटणे, उच्छव अधिक विख्यात ॥ ९ ॥

गतिहासिक जेन कान्य सग्रह

चालि राग सामेरी

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय, महोत्तलि मोटा अन्तान ।

पाठक वाचन परिवार, जूयाधिपनि जयकार ॥ १० ॥

इणि अन्तरि वातज मोटी, मन जागड फी नर ग्योगी ।

धुमति जे फीधउ प्रन्व, त दुरगति परउ पथ ॥ ११ ॥

दठनीद घगा तिण फीधा, मघ पाण नड जसल धा ।

धुमति नउ मोडिउ मान, जग मारि धवारिउ वान ॥ १२ ॥

परती हरि साग्ग त्रासड, गुरु नामे धुमति नामड ।

पूज्य पाण जय पत्र पावड, मोतीड नारि धयावड ॥ १३ ॥

गामागर पुरि विरला, गुरु अहमतात्रा पहुता ।

विहा मघ चतुर्विध वन्त, गुरु दरसन करि विर नडड ॥ १४ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय, धन सारपी लाहड लीधउ ।

गुरु जाणी लाभ अनन्त, चउमामि करड गुणवन्त ॥ १५ ॥

चउमामि तणड परमानि, सुत गुरु पहुता सभाति ।

चउमासि करड गुणराज, श्री मघ तणड हिलनाज ॥ १६ ॥

सरतर गच्छ गण्ड डिण्ट, अभयाग्नि दध मुणिद ।

त्रगट्या जिण थभण पास, जागड अनिसड जमवास ॥ १७ ॥

श्री जिनचन्द्र मूरिन्द, भेटधउ प्रमु पाम जिणन्द ।

श्री जिन धु १० सुरीम, वदया मन धरि जगीस ॥ १८ ॥

हिव अहमदोनाद सुरम्म, जोगीनाथ साह सुधम्म ।

प्रभुजय भटेणगि, तड्या गुरु वगि सुचगि ॥ १९ ॥

मेली सहस्रसंघ गुरु साथि, परवल खरचड निजआथि ।

चाल्या भेटण गिरिराज, संवपति सोमजी सिरताज ॥ २० ॥

राग मल्हार दोहा

पूर्व पच्छिम उत्तरड, दक्षिण चहु दिसि जाणि ।

संघ चालिउ शैत्रुंज भणी, प्रगटी महीयलि वांणि ॥ २१ ॥

विक्रमपुर मण्डोवरड, सिन्धु जेसलमेर ।

सीरोही जालोर नउ, सोरठि चापानेर ॥ २२ ॥

संघ अनेक तिहा आविया, भेटण विमल गिरिन्द ।

लोकतणी संख्या नहीं, साथि गुरु जिणचन्द ॥ २३ ॥

चोर चरड अरि भय हणो, वंदी आदि जिणंद ।

कुशले निज वर आविया, सानिध श्री जिनचंद ॥ २४ ॥

पूज्य चउमासो सूरतइ, पहुंचता वर्षा कालि ।

संघ सकल हर्षित थयउ, फलो मनोरथ मालि ॥ २५ ॥

बली चौमासो गुरु कीयउ, अहमदावादि रसाल ।

अवर चौमासो पाटणे, कीधो मुनि भूपाल ॥ २६ ॥

अनुक्रमि आल्या खम्भपुरि, भेटण पास जिणंद ।

संघ करइ आदर घणउ, करउ चउमासि मुणिद ॥ २७ ॥

राग धन्याश्री० ढालउलालानी

हिव विक्रमपुर ठाम, राजा रायसिंह नाम ।

कर्मचन्द तसु परधान, साचउ बुद्धिनिधान ॥ २८ ॥

ओस महा वंश हीर, वच्छावत वड वीर ।

दानइ करण समान, तेजि तपय जिम भाण ॥ २९ ॥

मुन्दर सकल मोभागी, सरतर गच्छ गुरु रागी ।

बड भागी बलन्त, लघु बधन जसन्त ॥ ३० ॥

श्रेणिक अभय कुमार, तामु तण्ड अवतार ।

मुहतो मतिवन्त कहियई, तसु गुण पार न लहियइ ॥ ३१ ॥

पिसुण तण्ड पग फेर, मुकी वीकम नयर ।

लाहोरि जइय उच्छाहि, सेव्यो श्री पातिशाह ॥ ३२ ॥

मोटउ भूपति अकरर, कउग करइ तसु सरभर ।

चिह्नु सण्ड वरतिय आण, सेवइ नर राय राण ॥ ३३ ॥

अरि गजण भजन सिंह, महीयलि जसु जस मीह ।

धरम करम गुण जाण, साचउ ए सुरताण ॥ ३४ ॥

बुद्धि महोदधि जाणी, श्रीजी निज मनि आणी ।

कर्मचन्द तंडीय पासि, राखइ मन उलासि ॥ ३५ ॥

मान महत तसु दीधउ, मन्त्रि सिरोमणि कीधउ ।

कर्मचन्द शाहि सु प्रीत, चालइ अंतम रोति ॥ ३६ ॥

मीर मलक खोजा खान, दीजइ राय राणा मान ।

मिलीया सकल दीवाणि, साहिन बोलइ मुख वाणि ॥ ३७ ॥

मुहता काहि तुझ मर्म, देव कवण गुरु धर्म ।

मजउ मुझ मन भ्रन्ति, निज मनि करिय एकन्ति ॥ ३८ ॥

राग सोरठी दोहा

बलतउ मुहवउ विनवइ, सुणि साहव मुझ वात ।

देव दया पर जीव ने, त अरिहत विल्यात ॥ ३९ ॥

श्रोत्र मान माया तजी, नहीं जमु लोभ लगार ।

उपग्राम रस में झीलता, ते मुझ गुरु अणगार ॥ ४० ॥

शत्रु मित्र दोय सारिखा, दान भीयल तप भाव ।

जीव जतन जिहा कीजिय, धर्मह जाणि स्वभाव ॥ ४१ ॥

मडं जाण्या हडं बहुत गुरु, कुग* तेरड गुरु पीर ।

मन्त्रि भणड साहित्य सुणउ, हम खरतर गुरु धीर ॥ ४२ ॥

जिनदत्त सूरि प्रगट हइ, श्री जिन कुशल सुणिन्द ।

तसु अनुकमि हइ सुगण नर, श्रीजिनचन्द सुरिद ॥ ४३ ॥

रूपइ भयण हराविउ, निरुपम सुन्दर देह ।

सकल विद्यानिधि आगरु, गुण गण रथण सुगेह ॥ ४४ ॥

संभलि अकवर हरखियउ, कहा हइ ते गुरु आज ।

राजनगर छइं साप्रतड, साभलि तुं महाराज ॥ ४५ ॥

राग धन्या श्री

वान सुणी ए पातिशाह, हरखियउ हीयड अपार ।

हुकम कियो महता भणी, तेडि गुरु लाय म वार ॥ ४६ ॥

मत वार लावइ सुगुरु तेडण, भेजि मेरा आदमी ।

अरदास डक साहित्य आगइ, करइ मुहतउ सिर नमी ॥ ४७ ॥

अव धूप गाढि पाव चलिय, प्रवहण कुल वडसे नहीं ।

गुजराति गुरु हइ डीलि गिरुआ, आविन सकइ अवसही ॥ ४८ ॥

चलतउ कहइ मुहता भणी, तेडउ उसका सीस ।

दुइ जण गुरु नइ मुक्रीया, हित करी विश्वा वीस ॥ ४९ ॥

हितकरि मूक्या वेगि दुइजण, मानसिह इहा भेजीय ।

जिम शाहि अकवर तासु दरसणि, देखि नियमन रंजीय ॥ ५० ॥

महिमराज वाचक सातठाणे, मुफीया लाहोर भणी ।

मुनि वग पटुता शाहि पानइ, दग्नि हरखिउ नरमणी ॥ ४७ ॥

साहि पूउड वाचक प्रतइ, फन आवइ गुरु सोय ।

जिण दीठइ मन रजोव, जास नमइ बहुरोय ॥

बहु लोय नणिमइ जामु पयतलि, जगगुरु हइ ओ घटा ।

तत्र गाहि अफ नर मुगार तटण, वगि मुफइ मइडा ॥

चउमासि नथडी अनही आवइ, घालवउ नवि गुरु तणउ ।

तत्र कहिइ अफभर मुणो मत्री, लाभ धजगउ तमु घणउ ॥४८॥

पतराहि जण अविवा, सुद गुरु तटण फाजि ।

रजम कुळ त नवि परइ, गह गहीयउ गच्छराज ॥

गच्छराज दरमणि वगि दरि, हजि हियडउ हीम ए ।

अति हर्ष आणो साहि जणत, वार वार मलीम ए ॥

सुरताण श्रीजी मत्रवीजी, लेख तुम्ह पठाविया ।

सिर नामी ते जण कहू गुरु फु, शाहि मत्री बोलाविया ॥४९॥

सुह गुरु फागल वाचिया, निज मन करइ विचार ।

हिव मुझ जानउ तिहा सही, सघ मिलिउ तिण वार ॥

तिणवार मिलियउ सव सघलो, बइस मन आओच ए ।

चउमास आजी दश अलगउ, सुगुरु कइउ किम पहुच ए ॥

समझावि श्रीसघ रमभपुर थी, सुगुरु निज मन दइ सही ।

मुनिवग चाल्या शुद्ध नवमी, लाभ वर कारण लही ॥५०॥

राम सामेरी दूहा —

सुन्दर शकुन हुआ बहु कता बहु तस नाम ।

मन मनोरथ जिण फलइ, सीझइ वळित काम ॥५१॥

वदी वडलावी वलड, हरखड सव रसाल ।

भाग्यवली जिणचंद गुरु, जाणड वाल गोपाल ॥५२॥

तेरमि प्रज्य पवारिया, अमदावाद मंत्रार ।

पइमारउ करि जस लीयउ, संव मल्यो सुविचार ॥५३॥

हिव चउमासो आवियउ, किम हुड साधु विहार ।

गुरु आलोचड संव सु, नावड वात विचार ॥५४॥

तिण अवसरि फुरमाणि वलि, आन्धा दोय अपार ।

वणुं २ मुहत्तड लिख्यो, मत लावउ तिहां वार ॥५५॥

वर्षा कारण मत गिणउ, लोक तणउ अपवाद ।

निश्चय वहिला आवज्यो, जिम थाड जसवाद ॥५६॥

गुरु कारण जाणी करी, होस्यइ लाभ असंख ।

संव कहड हिव जायवउ, कोय करउ मत कंख ॥५७॥

ढालःगौड़ी (निबीयानी) (आंकडी)

परम सोभागी सहगुरु वंदियइ, श्रीजिनचंद सूरिन्दो जी ।

मान दीयइ जस अकवर भूपति, चरण नमइ नरवृन्दो जी ॥५८॥

संव वंदावी गुरुजी पागुरया, आया म्हेसाणे गामो जी ।

सिधपुर पहुंता खरतर गच्छ वणी, साह वनो तिण ठामो जी ॥

गुरु आडंवर पइसारो कियउ, खरचिउ गरथ अपारो जी ।

संव पाटण नउ वेगि पधारियउ, गुरुवंदन अधिकारो जी ॥५९॥

पुज्य पाटहण पुरि पहुंता शुभ दिनइ, संव सकल उच्छाहो जी ।

संव पाटण नउ गुरु वांदी वलिउ, लाहिण करिल्यइ लाहो जी ॥६०॥

महुर वधाउ आनिउ मित्रपुरि, हरतिउ सघ मुजाणो जी ।

पाल्खणपुर श्रीपूज्य पत्रारिजा, जाणिउ राव सुरताणो जी ॥६१॥५०

सत्र तडी न रावजी इम भणइ, आपु छु असवारो जी ।

तडि आउउ वगि मुनिवस, मत लावउ तुम्ह चारो जी ॥६२॥

श्रीमघ राय जण पाल्खणपुरि जट, तडी आवइ रगो जी ।

गामागर पुर मुहगुरु विहरता, कहता धर्म सुचगो जी ॥६३॥

राग देशाख ढाल (डकवीस ढालियानी)

भीरोही र आनाजउ गुरु नो लही, नर नारो र आनइ साम्हा उमही ।

हरि कर रथ र पायक वहुला विस्तरइ,

कोणो(क) जिम र गुरु वदन सघ सचरइ ॥

सचरइ वर नीमाण नजा, मधुर मानल वज्ज ए ।

पत्र शब्द थलरि सस सुस्वर जाणि अवर गज्ज ए ॥

भर भरइ भरी वलि नफेरी मुहव सिर धटकिज ए ।

सुर असुर नर वर नारि किन्तर, दरि दरमण रज ए ॥६४॥

वर मूहत्र र पूठि वकी गुण गावती, भरि थाली रे मुक्ताफलवधावती ।

जयउ स्वर र क्रियण जणमुग्र उचरइ वरनयरी रमाह इमगुर सचरइ

सचरइ आनक साधु साथ, आदि जिन अभिनदिया ।

नोदनगिरि श्रीमत्र आउउ, उचउ कर गुरु वटिया ।

राय श्रीसुलनाग आवी, वटि गुरु पय वीनवइ ।

मुझ कृपा कोजइ बोल दोजइ, करउ पजुमण हिवइ ॥६५॥

रु जाणि र आग्रह राजा सवनउ, पजुमण र करइ पूज्य सव शुभ मनउ ।

अढाही र पाली जीत्र दया सरी, जिनमडिर र पूचइ आनक हितकरी ।

हितकरिय कहइ गुरु सुणउ नरपति, जीव हिंसा टालीयइ ॥
 क्रिण पर्व पूनिम दिइ, मंड तुअ, अभय अविचल पालीयइ ।
 गुरु संघ श्रीजावालपुर नंड वेगि पहुंचता पारणइ ॥
 अति उच्छव कियउ साह वन्तइ मुजम लीधो तिणि खिणइ ॥६६॥
 मंत्री कर्मचन्द रे करि अरदाम सुसाहितइ ।
 फुरमोणा रे मूंफया टुइ जण पूज्य ने ॥
 चउमासउ रे पूरउ करिय पधारजो ।
 पण क्रिण डक रे पछइ वार म लगाइजो ।
 म लमाडिजो तिहा वार काइ, जहति जाणी अति धणी ॥
 पारणइ पूज्य विहार कीधउ, जायवा लाहुर भणी ।
 श्रीसंध चउविह सुगुरु साथइ, पातिशाही जण वली ॥
 गांवर्व भोजक भाट चारण मिला गुणियन मन रली ॥६७॥
 हिव देखरे गाम सराणउ जाणियइ, भमराणी रे खांडपरंगि वस्त्राणियइ,
 संघ आवी रे विक्रमपुर नो उमही ।
 गुरु वंधारे महाजन मजलइ गहगही ॥
 गहि गहीय लाहिण संघ कीवी नयर टुणाडइ गयो ।
 श्रीसंध जेसलमेरु नो तिहां वंदो गुरु हरखित थयो ।
 रोहीठ नडइ उच्छव बहु करि, पूज्य जी पधराविया ।
 साह थिरइ मेरइ सुजस लाधा, दान बहु दवराविया ॥ ६८ ॥
 संघ मोटउ रे, जोधपुरउ तिहां आवीयउ,
 करि लाहिण रे शासनि शोभ चढ़ावियो ।
 जत चौथौ रे, नांदी करी चिहुं उच्चर्यो ।

तिथि चारसर, मुको ठापुर जस वया ।

जस वया सघड नयर पाली, आडनर गुरु मडियउ ।

पूज्य चादिया तिहा नादि माढी, तानि दालिद्र सडियउ ।

लाविया भामइ लाभ जाणो, सूरि सोक्षिन निरतिया ।

जिनराज मदिर दरयो मुन्दर, वन्ति आवक हरगिया ॥ ६६ ॥

गोलाडड र, आनन्द पूज्य पधारोण ।

पइसाराउ र, प्रगट फीयउ फट्टारीए ।

जइतारणि र, आव वाजा वाजिया ।

गुरु वन्ती र, दान बलइ सघ गाजिया ॥

गाजियउ जिनचन्द्रसूरि गच्छपति, वोर शासनि ए घडो ।

फलिफाल गोनम स्वामि समरइ, नहीय फो ए जेवडउ ।

निहस्ता मुनिवर वगि आव, नयर मोटइ मडतइ ।

परसरइ आया नयर कर, फइड सघ मुहता प्रतड ॥ ७० ॥

॥ राग गोटी धन्या श्री ॥

कर्मचन्द्र कुल सागर, उदया मुन टोय चन्द्र ।

भागचन्द्र मत्रोसर, वाधव लिखमीचन्द्र ।

इय गय रह पायक, मली बहु जन वृन्द ।

करि सनल इवाजउ, वदइ श्री जिनचन्द्र ॥ ७१ ॥

अच सन्दउ झझरि, वाजइ डोल नीमाण ।

भविषण जण गावइ, गुरु गुण मधुरि वाण ।

तिहा मिलीयो महाजन, दीजइ फोफल दान ।

सुन्दरी सुकलीणी, सूख करइ गुण गान ॥ ७२ ॥

गज डम्बर सबलड, पूज्य पधार्यां जाम ।

मन्त्री लाहिण कीधी, खरची बहुला दाम ।

याचक जन पोण्या, जग मे राख्यो नाम ।

धन धन ते मानव, करड जउ उत्तम काम ॥ ७३ ॥

व्रत नन्दि महोत्सव, लाभ अधिक तिण ठाण ।

ततखिण पातशाहि, आच्या ले फुरमाण ।

चाल्या संघ साथड, पहुता फलवधि ठाणि ।

श्री पास जिणेसर, दंशा त्रिभुवन भाणि ॥ ७४ ॥

हिब नगर नागोरउ रडं आया श्री गच्छराज ।

वाजित्र बहु ह्य गय मेली श्री सद्ध साज ।

आवि षट वंदी करड हम उत्तम आज ।

जउ पूज्य पधार्यां तउ सरिया सब काज ॥ ७५ ॥

मन्त्रीसर वादड मेहड मन नड रड्ड ।

पइसारो सारउ कीधो अति उच्छरड्ड ।

गुरु दरसन देखि वधियो हर्ष कलोल ।

महीयलि जस व्यापिउ आपिउ वर तंवोल ॥ ७६ ॥

गुरु आगम ततखिण प्रगटियो पुन्य पडूर ।

संघ वीकानेरउ आविउ संघ सनूर ।

त्रिणसडं सिजवाला प्रवहण सडं वलि च्यार ।

धन खरचड भविथण, भावड वर नर नारि ॥ ७७ ॥

अनुक्रम पडिहारइ, राजुलदेसर गामि ।

रस रंग रीणीपुर, पहुता खरतर स्वामि ।

नर उच्य मडड आडवर अभिराम ।

सत्र आवियो वदण, महिम तणउ तिण ठाम ॥७८॥

ररची धन अरची श्री जिनराय विहार ।

गुर वाणि सुणि चित्त हरसिउ मघ अपार ।

मघ वदी वलीयउ, पहुनउ महिम मझार ।

पाटणमरसड वलि, कमूर हुयउ जयकार ॥७९॥

लाहुर महाजन पढन गुर सुजगीम ।

मनमुख त आविउ चाली कोम चालीम ।

आया हापाणर श्रीजिनचन्द सुरीश ।

नर नारी पयतलि सेत्र करड निसदीम ॥८०॥

राम गौडी दूरः—

वेगि वधाउ आविउउ, कीयउ मत्रीसर जाण ।

क्रम २ पूज्य पधारिना, हापाणर अहिठाण ॥८१॥

त्रीधी रमना हेम नी, कर कण क काण ।

दानिइ गलिइ सटियउ, तामु दीयउ बहुमान ॥८२॥

पूज्य पधाया जाण करि, मेली सत्र सघात ।

पहुता श्री गुर वादिवा, सफल करड निज आथ ॥८३॥

नडो डेरड आण करि, कडड साह नइ मन्त्रीम ।

जे तुम्ह सुगुम् वोलाविया त आव्या सुरीम ॥८४॥

अकर वलनो डम भणइ, तेडउ ते गणधार ।

दरसण तमु कउ चाहिये, जिम हुइ हरप अपार ॥८५॥

राग गौड़ी वाल्होनी:-

पंडित मोटा साथ मुनिवर जयसोम,

कनकसोम विद्या वरु ए ।

महिमराज रत्ननिधान वाचक,

गुणविनय समयसुन्दर शोभा धरु ए ॥८६॥

इम मुनिवर इकतीस गुरु जी परिवर्या,

ज्ञान क्रिया गुण शोभता ए ।

संव चतुर्विध साथ याचक गुणी जण,

जय जय वाणी बोलता ए ॥८७॥

पहुंता गुरु दीवाण देखी अकबर,

आवइ साम्हा उमही ए ।

बंदी गुरु ना पाय माहि पधारिया,

सइंहथि गुरु नौ कर ग्रही ए ॥८८॥

पहुंता दउड़ी माहि, सुहगुरु साह जो

धरमवात रंगे करइ ए ।

चिते श्रीजी देखी ए गुरु सेवता,

पाप ताप दूरइ हरइ ए ॥८९॥

गच्छपति छे उपदेश, अकबर आगलि

मधुर स्वर वाणी करी ए ।

जे नर मारइ जीव ते दुख दुरगति,

पामइ पातक आचरी ए ॥९०॥

बोलइ वृड बहुत त नर मध्यम,

इण परभवि दुख लइइ ए ।

धोरी करम चण्डाल चिहु गति रोल्वइ,

परम पुरप त इम कहइ ए ॥६१॥

पर रमणि रस रगि संगड जे नर,

दुरगति दुख पावइ वही ए ।

लोभ लगी दुखहोय जाणउ भूपति,

सुख सतोप ह्वइ सही ए ॥६२॥

पचइ आत्रय ए तजे नर सवरइ,

भवमायर हेला तरइ ए ।

पामइ सुख अनन्त नर वड सुरपड,

कुमारपाल तणी परइ ए ॥६३॥

इम मामलि गुरु वाणि रजिउ नरपति,

श्री गुरु न आदर करइ ए ।

वण कचन वर कोडि कापड बहु परि,

गर आगड अकनर धरइ ए ॥६४॥

लिउ दुक इहु तुम्ह मामि जा कुठ चाहिये,

सुगुरु कहइ हम क्या करा ए ।

देसि गुरु निरलोभ रजिउ अकनर,

बोलइ ए गुरु अणुसर। ए ॥६५॥

श्रीपुत्र्य श्रीजी दोय आ या चाहिरि,

सुणउ दिनाणी काजीयो ए ।

धरम धुरंधर धीर गिरुओ गुणनिधि,

जैन धर्म को राजीयो ॥६६॥

॥ राग धन्याश्री ॥

सफल वृद्धि धन संपदा, कायम हम दिन आज ।

गुरु देखी साहि हरखियो, जिम केकी घन गात्र ॥६७॥

वपी मुडं चाली करि, आया अब हम पासि ।

पहुंचो तुम निज थानकै, संघमनि पूरी आस ॥६८॥

वाजिन्न हयगय अम्ह तणा, मुंहता ले परिवार ।

पूज्य उपासरड पहुंचवउ, करि आडम्बर सार ॥६९॥

वलतउ गुरुजी इम भणड, सांभलि तूं महाराय ।

हम दोवाज क्या करो, साचउ पुन्य सखाय ॥१००॥

आग्रह अति अकवर करी, म्हेलइ सवि परिवार ।

उच्छव अधिक उपासरड, आवइ गुरु सुविचार ॥१०१॥

राग आशावरी:

हय गय पायक बहुपरि आगइ, वाजइ गुहिर निसाण ।

धवल मंगल छइ सूहव रंगइ, मिलीया नर राय राण ॥२॥

भाव धरीने भवियण भेटउ, श्रीजिनचन्दसूरिन्द ।

मन सुधि मानित साहि अकवर, प्रणमइ जास नरिन्द रे ॥३०॥आ॥

श्री सङ्घ चउविह सुगुरु साथइ, मंत्रीश्वर कर्मचन्द ।

पइसारो शाह परवत कीधउ, आणिभन आणंद रे ॥ ३ । भाव० ॥

उच्छव अधिक उपाश्रय आन्या, श्री गुरु छइ उपदेश ।

अमीय समाणि वाणि सुगंता, भाजइ सयल किलेस रे ॥४॥भा०॥

भरि मुगताफल याल मनोहर, सहव सुगुण प्रयात्रड ।

चाचक हर्षड गुरु गुण गाता, दान गनि तत्र पावड र ॥५॥ भा०
फागुण सुदि वारस दिन पहुता, लाहुर नयर मक्षारि ।

मनवदिन सहकरा फलीया, वरत्या जय जनकार र ॥६॥भा०॥
पिन प्रति श्रीजी सु वलि मिलता, वाधिउ अत्रिक सनहा ।

गुरु नी सूरनि दरि अक्षर, कडड जग धन धन गहर ॥७॥ भा०
रुइ त्रीधी फ लोभो कूडे, के मनि धरड गुमान ।

पट् दरशन मइ नरण निहाले, नहो कौइ गह समान र ॥८॥भा०
हुकम कीयउ गुरु कु जाहि अक्षर, दउडी महुल पधारड ।

श्री जिनधर्म सुणावी मुझ कु, दुरमति दूरइ वारड र ॥९॥भा०
वरम वात (र) गड नित करता, रजित श्री पातिराहि ।

लाभ अधिक हु तुम कु आपीस, सुणि मनि हुयउ उजाहि र ॥१०॥

रागा' धन्याश्री । ढालः सुणि सुणि जवू नी

अन्य दिवम वलि निज उलट भरइ, महुरस० ऐकज गुरु आग वरड ।

इम धरइ श्री गुरु आगलि तिहाँ अक्षर भूपति ।

गुराराज जपइ सुणउ नरवर नवि प्रहइ ए धन जति ।

ए त्राणि सम्भलि शाहि हरण्यो, वन्य धन ए मुनिवरु ।

निरलोभ निरमम मोह वरजित रूपि रजित नरवरु ॥११॥

नत्र ते आपि० धन मुहताभणी, धरम सुनानिक सरचउ ए गणी ।

ए गगीय सरचउ पुन्य सचउ कीयउ हुकम मुहता भणी ।

वरम ठामि त्रीधउ सुजस लीधउ वधी महिमा जग घणी ।

इम चैत्री पूनम दिवस सातिक, साहि हुकम मुंहनइ कोयउ ।

जिनराज जिनचंदसूरि वंदी, दान याचक नइ दीयउ ॥ १२ ॥

सज करो सेना देस साधन भणी,

कास्मीर ऊपर चढीयउ नर भणी ।

गुरु भणीय आग्रह करीय तेडया, मानसिह मुनि परवर्या ।

संचर्या साथइ राय रांगा, उम्बरा ते गुणभर्या ॥

वलि मीर मिलक बहुखान खोज, साथि कर्मचन्द मंत्रवो ।

सब सेन वाटइं वहइ सुवधइ, न्याय चलवइ सूत्रवी ॥ १३ ॥

श्री गुरु वाणि श्रीजी नितु सुणइ,

धर्म मूर्ति ए धन धन सुह भणइ ।

शुभ दिनइ रिपु बल हेलि भंजी, नयर श्रीपुरि उतरि ।

अम्मारि तिहा दिन आठ पाली देश साथी जयवरी ।

आवियउ भूपति नयर लाहुर, गुहिर वाजा वाजिया ।

गच्छराज जिनचंदसूरि देखी, दुख दूरइ भाजीया ॥ १४ ॥

जिनचन्दसूरि गुरु श्रीजी सुं आवि मिली,

एकान्तइ गुण गोठि करइ रली ।

गुण गोठि करता चित्त धरता सुणिवि जिनदत्तसूरि चरी !

हरखियउ अकवर सुगुरु उपरि प्रथम सइं मुख हितकरी ।

जुगप्रधान पदवो दिङ्गुरु कुं, विविध वाजा वाजिया ।

बहु दान मानइ गुणह गानइ, संघ सवि मन गाजिया ॥ १५ ॥

गच्छपति प्रति बहु भूपति वीनवइ ।

मुणि अरदास हमारी तुं हिवइ ॥

अक्षरम प्रमु अवधारि मरी, भ्रि श्रीजो फट्ट वली ।

महिभरान न प्रनु पाटि थाप. गद् मुस मन लड रली ॥

गुणनिधि रत्ननिधान गणिनइ, सुपत् पाठ+ आपीयइ ।

शुभ लान वेला दिवम लेइ, वगि इनकु थापिनइ ॥ १६ ॥

नरपति प्राणो श्रीगुरु साभली,

फट्ट मड मानी धानज ए भली ।

ए धान मानी सुगुरु, वाणी, लगन शोभन धामरइ ।

माटि+ उच्छ्र मत्रि कर्मचन्, मलि महाजन धरुइ ॥

पानि ॥॥ मइमुग्ग नाम थापिउ, मिह सम मन भात्रिया ।

जिनमिह मूर्ति सुगुरु थाप्पा, सूफि रग वधाविया ॥ १७ ॥

आचारज ए श्री गुरु थापिउ,

मत्र चतुर्विध सात्तइ थापियत् ।

व्यापीउ निमल मुजम महीयलि, मयल श्रीमव सुग्ग+रु ।

चिफाल जिनचन्द्रमूर्ति जिनमिह, तपउ जिह जगि निनकरु ॥

जयमोम रत्ननिधान पाठ (क), दोय वाचक थापिया ।

गुणनिधय सुन्दर, समयसुन्दर, सुगुरु तमु पत् आपीया ॥ १८ ॥

धप मप धा धो मात्त थाजिया,

तत्र तमु नात्त अम्बर गाजिया ।

वाजिया नाल रुमाल तिबली, भरि वीगा भृ गली ।

अति हर्ष माचड पात्र नाच, भगति भामिनी मवि मिलो ।

मोनीया चाल भरवि उलटि, वार वार वध वती ।

इक राम भाम उलामि दता, मधुर स्वर गुण गावती ॥ १९ ॥

कर्मचन्द परगट पद ठवणो कीयो,

संघ भगनि करि भयण संतोपीयउ ।

संतोपिया जाचक टान देइ, किद्ध कोडि पमाउण ।

संग्राम मंत्री तणउ नन्दन, करइ निज मनि भाउण ॥

नव ग्राम गडंवर दिछ अनुक्रमि, रंग धरि मन्त्री वली ।

मागता अश्व प्रधान आप्या, पाचसइ ते मवि मिली ॥ २० ॥

इण परि लाहुरि उच्छव अति घणा,

कीधा श्री संघ रंगि वधावणा ।

इम चोपडा शास्त्रशृङ्गार गुणनिधि, साह चापा कुल तिलउ ।

धन मात चापल देइ कहीय, जासु नन्दन गुण निलउ ॥

त्रिधि वेद रस गशि मास फागुन, शुक्ल वीज सोहामणी ।

थापी श्री जिनसिंह सूरि, गुरुचउ संघ वधामणी ॥ २१ ॥

राग धन्याश्री

ढाल (जीरावल मण्डण सामो लहिस जी)

अत्रिहडि लाहुरि नयर वधामणाजी, वाज्या गुहिर निसाण ।

पुरि पुरि जी (२) मंत्री वधाऊ मोकल्याजी ॥ २२ ॥

हर्ष धरी श्रीजी श्रीगुरु भणी जी, वगसइ दिवस सुसात ।

वरतइ जी (२) आण हमारी, जां लगइ जी ॥ २३ ॥

मास असाह अठाइ पालवी जी, आदर अधिक अमारो ।

सधलइ जी (२) लिखि फुरमाण सु पाठवीजी ॥ २४ ॥

वरस दिवस, लगी जलचर मूकियाजी, खंभनगर अहिठाणि ।

गुरु नइ जी (२) श्रीजी लाभ दीयउ घणउजी ॥ २५ ॥

चड आमीम दुनी महि मटलजी, प्रतिपड कोडि वरीम ।

ए गुंजो (२) जिण जगिनीव छुडाविया जो ॥२६॥

राग—धन्याश्री ।

६।७ — (कनक कमल पगला ठगड ए)

प्रगट प्रनापी परगडो ए, सूरि वडो जिणचन्द ।

कुमति सवि दूर टल्या ए, सुन्दर सोहगकद ॥ २७ ॥

नदा मुद्दगुर नमोए, वड अक्षर जसु मान । सग० । आरणी ।

चिनत्तमूरि जग जागत ए, गरन सानिवकार । स० ।

श्रीजिनकुशल सूरीरवरू ए, वटित फल दानार ॥स०॥ २८ ॥

रीहड वगइ चदलड ए, श्रीवन्त शाह मठार । स० ।

सिरीयाद उरि हमल ए, माणिमसूरि पटवार ॥स०॥ २९ ॥

गुं न लाभ हया घणा ए, होस्यइ अवर अनन्त । स० ।

वरम महाविधि विन्तरइ ए, जिहा विहरु गुणवत ॥ स०॥३०॥

अनस समरडि राजीयड ए, अर न कोइ जाण । स० ।

गन्पति माहि गुणानिल ए, सूरि वड सुरताण ॥ स०॥३१॥

कप्रियण रूहड गुण कतलाए, जसु गुण मरु न पार । स० ।

जिंजीवण गुं नरु ए, जिंन शासन आधार ॥स०॥३२॥

जिहा लागी महोयलि सुर गिरी ए, गयण तपइ शशि मूर । स० ।

जिनचन्द्र रि तिहा लगइ, प्रनपड पून्य पडूर ॥३३॥स०॥

तसु युग रस शशि वच्छरड ए, जेठ वदि तेरस जाणि ।स०।

शाति जिनेसर सानिवड ए, रास चडिऽ परमाणि ॥३४॥स०॥

आभ्रह अति श्री संघ नड ए, अहमदावाद मंझारि ।स०।

रास रच्यो रलियामणउ ए, भवियण जण मुखकार ॥३५॥स०॥

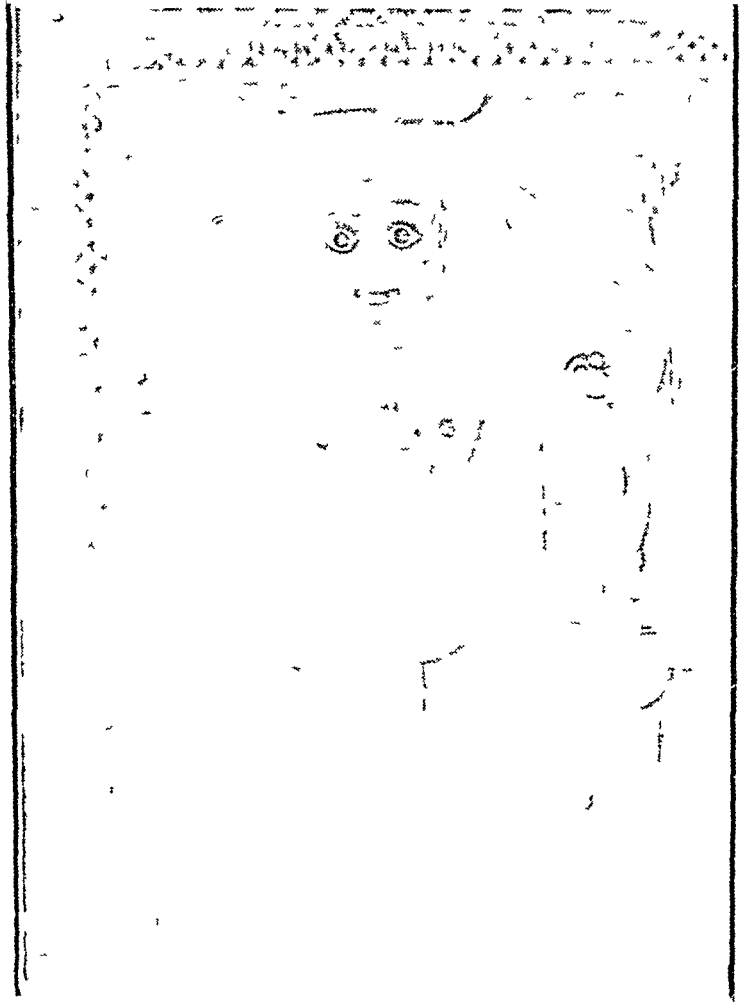
पढड गु(सु)णड गुरु गुण रसी ए, पूजड तास जगीस ।स०।

कर जोडी कवियण कहड, विमल रंग मुनि सीस ॥३६॥स०॥

इति श्री युगप्रधान जिनचन्द्र सृरीश्वर रास समाप्ता मिति ।
लिखितं लब्धिकल्लोल मुनिभिः श्री स्तम्भ तीर्थे, पं० लक्ष्मीप्रमोद
मुनि वाच्यमानं चिरं नंद्यात् यावच्चन्द्र दिवावरौ । श्रीरस्तु ।



ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह



युगप्रधान जिनचन्द्रमूरिजीकी मूर्ति

(बीकानेरके ऋषभ जिनालयमें
सं० १६८६ प्रतिष्ठित मूर्ति)

* कवि समयप्रमोद कृत *

॥ श्रीयुगप्रधान निर्वाण रास ॥



दोहा राग (आसावरी)

गुणनिधान गुरु^१ पाय नमि, वाग वाणि अनुमार (आधारि) ।

युगप्रधान निर्वाण नी, महिमा कहिसु विचार ॥ १ ॥

युगप्रधान जगम यति, गिरुआ गुणे गम्भीर ।

श्री जिनचन्द सुरिन्दवर, धुरि धोरी प्रम धीर ॥ २ ॥

सवत पनर पचाणूयड रीहड बुलि अवतार ।

श्रीवन्त सिरिया दे धर्यउ,^२ सुत सुरताण कुमार ॥ ३ ॥

सवत सोल चडोत्तरड, श्री जिनमाणिक सूरि ।

सइ हथि सयम आदर्यु,^३ मोटइ महत पडूरि ॥ ४ ॥

महिपति जेसलमर नइ, थाप्या राठल माल ।

सवत सोल वारोत्तरड, शत्रु तणइ सिर साल ॥ ५ ॥

ढाल (१) राग जयतसिरि

(करजोडी आगल रही एहनी ढाल)

आज बयावौ सघ मइ, दिन दिन वधत^४ वानइ र ।

पूज्य प्रताप बाधइ^५ घणौ, दुश्मन कीधा कानड र ॥६॥ आ०

१ गौतम २ देवीनइ ३ बाधइ ४ वधइ

सुविहित पद उजवालिख्यउ, पूज्य परिहरड परिग्रह माया रे ।

उग्र विहारड विहरता, पूज्य गुर्जर खंडड आया रे ॥ ७ ॥

रिपिमनीया सुं तिहा थयउ, अति झूठी पोथी वादौ रे ।

पुज्य वखत वल कुमतियां, परगट गाल्यउ नादौ रे ॥८॥ आ०॥
पूज्य तणी महिमा सुणी, सन्मान्या अकवर शाहड रे ।

युगप्रधान पद आपियउ, सह लाहउर उच्छाहड रे ॥९॥ आ०॥
कोड़ि सवा धन खरविद्यउ, मंत्रि क्रमचन्द्रजी भूपालड रे ।

आचारिज पद तिहां थयउ, संवत सोल अडतालड रे ॥१०॥आ०॥

संवत सोलसइ बावनड, पुज्य पंच नदी (सिन्धु) साधी रे ।

जित कासो जय पाभियउ, करि गोतम ज्युं सिधि वाधी रे ॥११॥आ०॥

राजा राणा मंडली, एतउ आड नमे निज भावइ रे ।

श्रीजैनचंद्रसूरिपरु, पुज्य सुशब्द नित २ पावड रे ॥१२॥आ०॥
संड हथि करि जे दीखिया, पूज्य शीश तणा परिवारो रे ।

ते आगम नइ अर्थे भर्या, मोटी पदवीधर सुविचारो रे ॥१३॥आ०॥
जोगी, सोम, शिवा समा, पूज्य कोधा संघवी साचा रे ।

ए अवदात सुगुरु तणा, जाणि माणिक हीरा जाचा रे ॥१४॥आ०॥

१ इस रासकी ३ प्रतिये हमारे पास है जिनमें ऐसा ही लिखा है । सुद्रित,
“गणधर सार्ध शतक” में भी इसी प्रकार है । किन्तु पट्टावलि आदि
में सर्वत्र सं० १६४९ ही लिखा है ।

२ आप तणइ ३ वलि

॥ दोहा सोरठी ॥

महा मुनीश्वर मुकुट मणि, दरसणिया दीवाण ।

च्यारि असी गच्छि सेहरो, शासण नउ सुस्ताण ॥१५॥

अतिशय आगर आदि लणि, झूठ कटु तउ नेम ।

जिम अकर सनमानिउ, तिम बलि शाहि सलेम ॥१६॥

ढाल (जतनी)

पातिसाहि सलेम सटोप, क्रियउ दरसणिया सु फोप ।

ए कामगारा कामो, दरवार थो दूरि हरामो ॥१७॥

एकन कु पाग ववावउ, एकन कु नाआम अगावउ ।

एकन कु दशमटो जगल दोजै, एकन कु पलालो फोरुइ ॥१८॥

ए शाहि हुकुम सामलिया, तसु फोप (कउप) थका सउभलिया ।

जजमान मिलो सयतना, दरहाल करइ गुर जतना ॥१९॥

क नासि होइ पूठि पडोया, बड मइनासइ जइ चढोया ।

कइ जगल जाइ बइठा, कइ दौडि गुफा मारि (चाइ) पइठा ॥२०॥

जे नासत यत्रने झाल्या, त आणि भावसो घाल्या ।

पाणी नै अत्रज पाल्या, वयरीडा वयर सु साल्या ॥२१॥

इम सामलि शाशन होला, जिगवद सुरोश सुशीश ।

गुजराति धरा थो पगारइ, जिन शाशन वान वगारइ ॥२२॥

अति आसति बलि गुरु चालो, अपुण भय दूइ पाओ ।

उपसेनपुड पउगारइ, पुन्य शाहि तणइ दरवारइ ॥२३॥

पुज्य देखि दीङ्गरइं मिलिया, पातिशाह तणा कोप गलीया ।

गुजराति धरा क्युं आए, पातिशाहि गुरु वतलाए ॥२४॥
पातिशाहि कुं देण आशीश, हम आए शाहि जगोश ।

काहे पाया दुःख शरीर, जाओ जउख करउ गुरु पीर ॥२५॥
एक शाहि हुकुम जउ पावां, वंदिथड़ा वंदि छुड़ावा ।
पातिशाहि खयरात करीजइं, दरशणियां पूरुं (दूवउ) दीजइं ॥ २६ ॥
पातिशाहि हुंतउ जे जूठउ, पूज्यभाग वलइ अति तूठउ ।

जाउ विचरउ देश हमारे, तुम्ह फिरता कोइ न वारइ ॥ २७ ॥
धन धन खरतरगच्छ राया, दर्शनियां दण्ड छुड़ाया ।

पूज्य सुयश करि जगि छाया, फिरि सहरि मेडतइ आया ॥२८॥
दूहा (धन्यासिरि)

आवक आविका बहु परइ, भगति करइ सविशेष ।

आण वहै गुरुराज नी, गौतम समवइ देखि ॥ २९ ॥
धरमाचारिज धर्म गुरु, धरम तणउ आधार ।

हिव चउमासउ जिहा करइ, ते निसुणौ सुविचार ॥ ३० ॥
ढाल (राग--धवलधन्यासिरी, चित्तामणिपासपूजियै)
देश मंडोवर दीपतउ, तिहा बीलाड़ा नामौ रे ।

नगर वसै विवहारिया, सुख संपद अभिरामौ रे ॥३१॥ दे० ॥
थोरी धवल जिसा तिहां, खरतर संघ प्रधानो रे ।

कुल दीपक कटारिया, जिहां घरि बहु धन धानो रे ॥३२॥ दे० ॥

१ बंध, २ दंड, ३ श्रावी, ४ जिहॉ रहै, ५ सहुरमतइ ।

पच मिली आलोचिया, इहा पूज्य करै चौमासा रे ।

जन्म जीवित सफलउ हुवइ, सयणा पूजइ आसौ र ॥३३॥दे०॥

इम मिली सब तिहा थकी, आवइ पुज्य दिदारइ रे ।

महिमा बधारइ मेइतै, पूज्य बन्दी जन्म समारइ र ॥३४॥दे०॥

युगजर गुरु पउवारीयइ, सब करइ अरदासो र ।

नयर तिलाडइ रग सु, पूज्यजो करउ चौमासो र ॥३५॥दे०॥

इम सुणि पूज्य पधारिया, तिलाडइ रगरोल र ।

सब महोत्सव माडियउ, दीजै तुरत तगोल रे ॥ ३६ ॥ दे० ॥

दोहा (राग गौडी)

पूज्य चउमासो आवियउ, श्री सब हर्ष उत्साह ।

विविध करइ परमानना, ल्ये लक्ष्मी नौ लाह ॥ ३७ ॥

पूज्य दिव्य नित्य दशना, श्रीसत्र सुणइ बलाण ।

पासी पोसहिता जिमइ, धन जीवित सुप्रमाण ॥ ३८ ॥

विधि सु तप सिद्धान्त ना, साधु बहइ उपधान ।

पूज्य पजूमण पडिक्कमै, जगम युगहप्रधान ॥ ३९ ॥

सवत सोरेसित्तरइ, आसू मास उदार ।

सुर सपद सुह गुरु वरी, ते कहिसु अधिकार ॥ ४० ॥

(ढाल भावना रो चदलियानो)

नाणे (नर) निहालइ हो पूज्य जो आउरउ र, तेही मघ प्रधान ।

जुगजर आपे हो रूडी मोरडी र, सुणिजो "पुण्य प्रदान" ॥४१॥ना०॥

गुरु कुल वासे हो वसिज्यो चेलडा रे, मत लोपउ गुरु कार ।
 सार अनइ वठि संयम पालिज्यो रे, सूद्यो साधु आचार ॥४२॥ना०॥
 संव सहु नै धर्मलाभ कागलड रे, लिखिज्यो देश विदेश ।
 गच्छा धुरा जिनसिंहसूरिनिर्वाहिस्यै रे, करिज्यो तसुआदेशा ॥४३॥ना०॥
 साधु भणी इम सीख धे पूजजी रे, अरिहन्त सिद्ध सुसाखि ।
 संइमुख अणसण पूज्य जो उचरड रे, आसू पहिले पाखि ॥४४॥ना०॥
 जीव चउरासि लख (राशि) खामिनै रे, कञ्चन तृण सम निन्द ।
 ममता नै वलिमाया मोसउ परिहरी रे, इमनिज पाप निकंद ॥४५॥ना०॥
 वयर कुमार जिम अणसण उजलउ रे, पाली पहर चियार ।
 सुख ने समाधे ध्यानै धरम नइ रे, पहुंचड सरग मझार ॥४६॥ना०॥
 इन्द्र तणो तिहा अपछर ओलगइ रे, सेव करइ सुर वृन्द ।
 साधु तणउ धर्म सूद्यो पालियो रे, तिण फलिया ते आणंद ॥४७॥ना०॥

दोहा (राग गौड़ी)

गंगोदक पावन जलइ, पूज्य परखाली अंग ।

चोवा चन्दन अरगजा, संघ लगावई रंग ॥ ४८ ॥

वाजा दाजइ जन मिलइ, पार विहूणा पात्र ।

सुर नर आवै देखवा, पूज्य तणउ शुभ गात्र ॥४९॥

वेश वणावी साधु नउ, धूपि सयल शरीर ।

वैसाड़ी पालखियइ, उपरि बहुत अवीर ॥ ५० ॥

ढाल राग--गउडो (श्रेणिक मनि अचरिज थयउ एहनी)

हाहाकार जगत्र हुयउ, मोटो पुरुष असमानौ रे ।

बड़ वखती विश्रामियउ, दीवइ जिउं बूझाणउ रे ॥ ५१ ॥

पुज्य पुज्य मुक्ति उचरइ, नयणि नीर नवि मायइ रे ।
 सहसुर सी(सा)लइ साभरइ, हियडु तिल तिल याजगे ॥५२॥पूज्य०॥
 सध माधु इम विलविलइ, हा । परतर गच्छि चम्ड रे ।
 हा । जिणशासण मामिया, हा । परताप टिगदउ रे ॥५३॥पूज्य०॥
 हा । सुन्दर सुख सागर, हा । मोग्मि भडारउ रे ।
 हा । रीहड कुल सेहरउ, हा । गिन्वा गणवारउ रे ॥५४॥पूज्य०॥
 हा । मरजाड महोदधि, हा । शरणागत पाल रे ।
 हा । धरणीधर धीरमा, हा । नरपति सम भाल रे ॥५५॥पूज्य०॥
 बहु वन सोहड भूमिका, वाणगगा नइ तीर रे ।

आरोगी क्रिसणागरइ, वाजा२ सुरभि समीर रे ॥ पू० ५६ ॥
 वावन्ना चदन ठगो, सुरहा तल नी धार रे ।

घृत विज्जानर तर पितर, कीधउ तनु सस्कार रं ॥ पू० ५७ ॥
 वेज्जानर वेहनउ सगउ, पणि अतिसय सयोग ।

नत्रि दाक्षी पुज्य मुहपत्ति, देसइ सधला लोग र ॥ पू० ५८ ॥
 पुरप रत्न विग्हड करी, साथि मरवउ न थावइ रे ।

शान्तिनाथ समरण करी, सव सहु घर आजइ रे ॥ पू० ५९ ॥

राग—धन्यासिरी

(सुविचारी हो प्राणी निज मन थिर करि जोय)

ढाल.—

सुविचारी हो पूज्यजी, तुम्ह विनु घडी र ठ मास ।

दरमण दिसाइउ आपगउ हो, सेवक पूजइ आज ॥६०॥ सुवि०

एकरसउ पउधारियड हो, दीजड दरअण रसाल ।

संव उमाहु अति वणउ हो, वंदन चरण त्रिकाल ॥६१॥ सुवि०
वात्हेसर रलियामणा हो, जे जगि साचा मीत ।

तिण थो पागरउ पूज्यजी रे, मो मनि ण परतीत ॥६२॥ सुवि०
इणि भवि भवे भवान्तरइ हो, तुं साहिव गिरताज ।

मातु पिता तुं देवता हो, तुं गिरुआ गच्छराज ॥६३॥ सुवि०
पूज्य चरण नित चरचता हो, वन्दत वंछित जोड ।

अलिअ विचन अलगा टरड हो, पगि २ संपत होइ ॥६४॥ सुवि०
शांतिनाथ सुपसाउलड हो, जिनदत्त कुगल सूरिन्द ।

तिम जुगवर गुरु सानिधड हो, संव सयल आणंद ॥६५॥ सुवि०
मीठा गुण श्रीपूज्य ना हो, जेहवी साकर द्राख ।

रंचक कूड इहा त(न?)ही हो, चन्दा सूरिज साख ॥६६॥ सुवि०
तासु पाटि महिमागरु हो, सोहग सुरतरु कन्द ।

सूर्य जेम चढती कला हो, श्री जिनसिह सुरींद ॥६७॥ सुवि०
हो युगवर, नामइ जय जय कार ।

वंश वधावइ चोपडा हो, दिन दिन अधिकउ वान ।

पाटोधर पुहवी तिलउ हो, चिर नन्दउ श्रीमान् ॥६८॥ सुवि०
युगवर गुरु गुण गांवतां हो, नव नव रंग विनोद ।

एहनुं१ आस्या फलइ हो, जंपइ “समयप्रमोद” ॥६९॥ सुवि०

॥ इति युगप्रधान जिनचन्द सूरि निर्वाणभिदं ॥

६ - : ५ ६ - : ५

॥ युगप्रधान आलजा गीतम् ॥



आसू मास बलि आवीयउ, पूज्यजी, आयउ दीवाली पर्व पू० ।
 काती चउमासौ आवीयउ, पू० आया अरसर सर्व ॥१॥
 तुम्हे आवी र त्रियाद का नदन, तुमे निनु धडिय न जाय पू० ।
 तुम्हे त्रिन अल जो जाय पूज्य० ॥ तुम्ह० ॥
 ग्राहि सलेम वशी उंररा, पू० सभारइ सहु कोइ ।
 धर्म सुणावउ आविनइ पू०, जीव दया लाभ होइ ॥तु०॥२॥
 आवक आना वादिवा पू०, ओसनाल नइ श्रीमाल ।
 दरराण छउ इक वार कउ, पू० वाणि सुणावउ विशाल ॥तु०॥३॥
 वाजउठ माड्यउ वैसणड, पू० कमली माडी सुवाट ।
 वसाण नी वेला थड पू०, श्रीसघ जोय२ वाट ॥पू०॥तु०॥४॥
 आविका मिलि आवी सहु, पू० वादण व कर जोड ।
 वदात्री धर्मलाभ छौ पू०, जिम पहचइ मन कोडि ॥पू०॥तु०॥५॥
 आविना उपधान सहु वहै पू०, माड्यउ नदि मडाण ।
 माल पहिराउउ आविनइ पू०, जिम हुवै जन्म प्रमाग ॥पू०॥तु०॥६॥
 अभिप्रह वादण उपरि पूज्य०, कीधा हुता नर नार ।
 ते पहुचावउ तहना, पू० व२नउ एक वार ॥पू०॥तु०॥७॥
 परव पजूसण वहि गया पूज जी, लेख वाळ्ठै सहु कोय ।
 मन मान्या आ'श छउ, पू० शिष्य सुखी जिम होय ॥पू०॥तु०॥८॥

तुम सरिखड संसारमें पू०, देखुं नहिं को दीदार ।

नयना तृप्ति पामइ नहीं, पू० संभारुं सौ वार ॥पू०॥तु०॥६॥
मुझ मिलवा अलजौ वणौ पूज्य०, तुम्हे तौ अकल अलक्ष ।

सुपनि में आवि वंदावज्या, पू० हुं जाणिसि परतक्षि ॥पू०॥तु०॥१०॥
युगप्रधान जगि जागतउ, पू० श्री जिनचन्द्र मुण्डि ।

सानिधि करिज्यो संघ ने, पू० समयसुंदर आणंद ॥पू०॥तु०॥११॥

॥ इति श्री जिनचन्द्र सूरीश्वराणां आलजा गीतं ॥

सं० १६६६ वर्षे श्री समयसुं(द)र महोपाध्याय तच्छिष्यमुख्य
श्री वाचनाचार्य श्रीमहिमासमुद्र X गणि तच्छिष्य पं० विद्याविजय
गणि शिष्य पं० वीरपालेनालेखि ॥ १ ॥ (पत्र ४ हमारे संग्रहमें)

X पाठक श्री समयसुन्दरजीगणि ने इनके आग्रहसे सं० १६६७ में
“श्रावकाराधना” बनाई जिसकी अन्त्य प्रशस्ति इस प्रकार है :
आराधनां सुगम संस्कृत वार्तिकाभ्यां, चक्रे क्रमात् समयसुंदर आदरेण ।
उच्चाभिधान नगरे महिमासमुद्र शिष्याग्रहेण मुनि षड्वरस चन्द्र वर्षे ॥



॥ श्रीजिनचन्द्रसूरि गीतानि ॥

— — — — —

(१)

मन वरीय सामण माइ, तु मुझकरि सुपसाज,

मन वचन दृढ करिफाय, चिगानद सु लयलाय

गावा श्री गजराउ, मुझ उपज्यौ बहु भाउ ॥ १ ॥

धन धन रगत र गच्छ मडण, श्रीजिनचन्द्रसूरि पय वदण । टेरे ।

मारवाडि देस उदार, जिहा धरम फौ विस्तार ।

तिहा खेतसर मझारि, ओसयश कउ भिणवार ।

सिरवत साह उदार, तसु सिरिय देवी नार ॥ धन० ॥ २ ॥

सुख बिलसता दिन दिन, पुण्यमत गरभ उपन्न ।

नव मास जिहा पडिपुत्र, जनमीया पुत्र रतन्न ।

तिहा खरचीया बहु धन्न, सय लोक कहड धन धन्न ॥ धन० ॥ ३ ॥

नाम यापना सुलगाण, नितु नितु चढत वान ।

जग माह अमली मान, सूरिज तज समान ।

मतिमत सय गुण जाण, रूप रजवइ रायराण ॥ धन० ॥ ४ ॥

तिहा विहरता माणिकसूरि, आविया आणद पूरि ।

देसणा दिद्ध सनूरी, निसुणर भनियण भूर ।

पूरव पुण्य पडूरि, मोहनी कर्म करि चूरि ॥ धन० ॥ ५ ॥

सुलताण मनहि विचार, लेडवा संथम भार ।

सुणि मात निज परिवार, यहु अथिर मव मंसार ।

अनुमति चो सुविचार, हम हांदिंगे अणगाग ॥ धन० ॥ ६ ॥

सुणि पूत तूं सुकमाल, तेरो नव योवन सुरमाल ।

यहु मदन अति असराल, क्या जाणही तूं वाल ।

आपणि मति संभाल, तव पीछड चारित्रपाल ॥ धन० ॥ ७ ॥

अव निसुणि मोरी मात, ए छोडि जूठी वात ।

चारित्र कड व्यावात, नहु कीजइ कहि तात ।

संजगम लेड विख्यात, लड जु नीकी भौंति ॥ धन० ॥ ८ ॥

भणिया इम इचारह अंग, मन माहे आणि रग ।

गुरु भालि अतिहि उत्तंग, गुरु रूपि विजित अनंग ।

परवादि वाद अभंग, गुरु वचन गंग तरंग ॥ धन० ॥ ९ ॥

सोलसड संवत वार, जिनमाणिकसूरि पटधार ।

जिणि सूरि मन्त्र उचार, पामीयो पुण्य अवतार ।

सिरिवंत शाह मल्हार, सव लोक मानड कार ॥ धन० ॥ १० ॥

सुखकरउ श्रीजिणचंद, सव साधु केरे वृन्द ।

जा लगि रवि ध्रू चन्द, ता लग तूं चिरनन्द ।

कहइ कनकसोम मुणिद, करउ संघ कूं आणंद ॥ धन० ॥ ११ ॥

॥ सं० १६२८ वर्षे पं० कनकसोमैविलेखि ॥

(२)

राग मल्हार

भलइ री भलइ आज पूज्य पधारइ, विहरंता गुरु साधु विहारइ । भ० ।

जुगवर श्रीजिन शासनि जागइ, महियल मोटइ भाग सोभागइ ॥ भ० १॥

सोधिउ, पातिमाहि अकवर प्रतिबोधिउ । भ०
 सूरिमन्त्र गुरु सानिध भलाइ, हफतह रोज अमारि पलाइ ॥भ०॥१॥
 सब दुनीया माहे कीधीधी, सघ उदय फाजि पचनगी साधी । भ० ।
 परतिख पचे पीर आवावड, सूत्र सिद्धात ना अरथि जणावड ॥भ०॥३
 वाणी अमृत वखाण सुध ने वयगे, बलिहारी अणिनाले नयगे । भ०
 बलिहारी म्हारा पूजनांतुड, उच्यन्त गुरु अधिक पडूरडा ॥भ०॥४॥
 श्रीवन्तनन्दन सकल , भ०
 ? गारी, वाचक श्रीसुन्दर सुरकारो ॥भ०॥५॥
 श्रीजिनमाणिकसूरि पट

(३)

श्रीसुन्दर सोड, जो मुझ वात जणावड र ।
 ए मेरउ साजणीयउ सर्ज्य पवारड, श्रीगुरु सगहि सुहावड र ।
 किणि वाटडियड मेरउ किणि पुरि आव , तिणिपुरि सोह चढावड ।
 गुरु सगहि सुहावड, जिअधि आगी, पुण्य उच्य स चढावड ।
 गुरु सोभागी, गुरु डि मुणी, जण कार न लोपड कोड ।
 गच्छराउ गुणी जिनचन जो जाणड, मरउ माजण सोड ॥१॥
 आवाजउ गुरु कडनीझ तिनोदी, जिम घन दरसन मोरा र ।
 ए जिम मङ्गलीयउ वण कि मुरगी, दरमण चन्द चकोरा र ।
 रवि दसणियड केतम अघोरा दरि दरसन तोरा ।
 जिम चन्द चकोरा र, ड पोपड, अति हरपित मन मोरा ।
 हित सतोषड पुण्य पधारउ वगड होड प्रमोदी ।
 निरदन्दी श्रीजिनचन्द्र जिम वीक्षावण, मङ्गलीयउ सुतिनोदी ॥२॥
 तुम्हि देखि सहु जण

ए गुरु जोवणीयइ विधि भारगि लीणउ इणिगुरि लोहन मायारे ।

कसि कंचणीयइ जेम परीखा, दिन दिनि वान सवाया रे ।

नितु वान सवाया मोह न माया, मन्मथ आण मनाया ।

पद सोहाया कोमल काया, श्री खरतर गच्छ राया ।

लय लागी रंगीरसि जिउं रमतउ, अलि मकरंदइ पीणउ ।

भाग वली गुणि वय जोवणि, जो विधि भारग लीणउ ॥३॥

ए मनि आणंदियइ साधु कीरति, बोलइ ए गुरु शील उदारा रे ।

गुरु सहव दे कूखि मराला, श्रीवत्त साह मल्हारा रे ।

सिरि वंत मल्हारा श्रीजयकारा, रीहडकुलि सिणगारा ।

जग आधारा नितु अविकारा, भाणिकसूरि पटधारा ॥

चउरासी गण महि गणी निहाल्या, कोइ नहो इणि तोलइ ।

चिरनंदउ जिणवन्द मुनेश्वर, साधुकीर्ति इम बोलइ ॥ ४ ॥

(४)

राग देशाख

श्रीजिनचन्द्रसूरि गुरु वंदउ, सुललित वाणि करइ रे वखान ।

युगप्रवान जिन शासनि सोहइ, अकबर शाहु दीयइ बहुमान ॥१॥

गुजर मंडलते बोलाये, सतन मुखि सुनि जसु गुणगान ।

चहुत पडूरि सुगुरु पाउधारइ, वखत योगि लाहोर सुथान ॥२॥श्री०॥

अरथ विचार पूछि सब विध विध, रीझे अकबर साहि सुजान ।

बहुत २ दरसनि मइ देखे, कौन कहुं या सुगुरु समान ॥श्री०॥३॥

भाग सोभाग अधिक या गुरु कउ, सूरति पाक अमृत समवानि ।

पेस करइ अकबर अणमांगये, सब दुनीयां महि अभयादान ॥श्री०॥४॥

श्रीजिनमाणिक्यसूरि पटोधर, रोहड वशि चढावत वान ।

कहइ गुणविनय पूजजी प्रतपउ, सरतरगच्छ उदयाचलभान ॥श्री०॥

(५)

राग—सारंग

सरसति सामिगी विनवु, मागु णक पसाय । सखीरी ।

उच्छ्र आणी गाडमु, श्रीसरतर गच्छराय ॥ स० ॥ १ ॥

श्रीचिणचन्द्र सूरिइररु, फलि गौतम अतार । स० ।

सूरि सिरोमणि गुणमर्या, सकल कला भटार ॥श्री०॥ २ ॥

ओसवश सिरि सेहरउ रोहड कुलि सिणगार । स० ।

सिरियाद उरि जन्मोया, श्रीवत शाह मल्हार ॥श्री०॥ ३ ॥

श्रीजिनगामन परगडउ, वड सरतरगच्छ इस । स० ।

नर नारी नित जेहनउ, नाम जपड निशदीस ॥श्री०॥ ४ ॥

श्रीजिनमाणिक्यसूरि नइ, पाटइ प्रगट्यउ भाण । स० ।

राय राणा मुनि मडली, मातर मोटा जाण ॥ श्री० ॥ ५ ॥

सोभागी महिमानिलउ, महियल मोहनपेलि । स० ।

अनूझजीव प्रतिनूझवइ, वाणि सुवारम रलि ॥श्री०॥ ६ ॥

जग सगले जस पामोयउ, प्रतिबोधी पातिशाह । स० ।

रुभाइन दधि माळी, राखी अधिक उच्छ्राह ॥ श्री० ॥ ७ ॥

आठ दिवस आपाढ के, अट्टाही निरधारि । स० ।

सत्र दुनीया माहि सासती, पालावी अमारि ॥ श्री० ॥ ८ ॥

शील सुलक्षण सोहतु सुन्दर साहम वीर । स० ।

सुविधि सुपरि करि साधीया, पचनदी पचपीर ॥श्री०॥ ९ ॥

सूधउ मारग उपदिसी, पाय लगाड्या लाख । स० ।

दरसन ज्ञान क्रिया धर, सविगच्छ पूरइ साख ॥श्री०॥१०॥

सइं हथि अक्बर थापिया, सहगुरु युगहप्रधान । स० ।

श्रीसुन्दर प्रभु चिरजयउ, दिन दिन चढ़ते वान ॥श्री०॥११॥

(६)

श्री अकबर बहुमान, कीधरुउ युगप्रधान ।

कर्मचन्द बुद्धिनिधान । भीर मलिक खोजा खान,

काजीमुला परधान । पथनमइ करि गुणगान, दिन चढ़ते वान ॥१॥

सब दिन मुझ मन खंति धणी, श्रिय जिणचन्द सूरिसेव तणी । आं ।

भारवाड़ गुजर बंग, मेवाड़ सिन्धु कलिंग ।

मालव अपूरव अंग, पूरव सुदेस तिलंग ।

सब देस मिलि मनरंग, गावइ सुगुरु गुण चंग ।

जिम केतकि वनभृङ्ग, तिम सुगुरु सुं मुझ रङ्ग ॥ २ ॥सब॥

कलि गौतमा अवतार, तजि मोह मदन विकार ।

निरमाच निरहंकार, धन धन्न ए अणगार ।

माणिक्यसूरि पटधार, अति रूप वयर कुमार ।

श्रीवंत शाह मल्हार, 'सुमतिकलोल' सुखकार ॥ ३ ॥सब०॥

(७)

अकबर भूपति मानीया, तिण मानइ सहु लोइ ।

जिनचन्दसूरि सुरीश्वर, वन्दै वंछित होइ ।

वंदता वंछित होइ अहनिसि, देखतां चित हींस ए ।

श्रीपूज्य जिनचन्दसूरि समवडि अवर कोइ न दीसए ।

सम्पति कारक, दुखनिवारक धर्मधारक महाप्रती ।

मन भाव आणी लाभ जाणी, नमइ अकबर भूपती ॥ १ ॥

असुरा गुरु प्रतिनोधीउ, दाखी धरम विचार ।

शासन सोह चढावीयो, माणिकसूरि पट्टधार ॥

पट्टधार माणिकसूरि नइ ए, रीहड वसड दिन मणी ।

श्रीवत श्रीयादेवी नदन, सुविहित साधु सिरोमणी ॥

गुणखण रोहण भविय मोहन, कम्म सोहण त्रत लीउ ।

सुविचार सार उदार भावइ असुरा गुरु प्रतिनोधीयउ ॥ २ ॥

एहवो गुर वद्यो नहीं डणि जगि त अकथथ ।

अकवर श्रीमुख इम कहइ, खरतर गच्छ मणिमथ ॥

मणिमथ खरतर गच्छ केरउ, अभिनवेरउ सुरतर ।

मन तणा कामित सखल पूरइ, रूप जेम पुरन्दर ॥

जसु तणइ दरसागे दुरित नासइ, रिद्धि वासड घर सही ।

इम कहइ अकवर तह अकथथ, जेणि गुर वद्यो नहीं ॥ ३ ॥

युगप्रधान पदवी भली, आपइ अकवर राज ।

सइमुख हरखै इम कहइ, ए गुरु सव सिरताज ।

सिरताज सव गच्छ एह सहगुरु, करइ वगसीस इम बली,

गुजरात खभायत मदरि करउ निरभय माछली ।

वर्षमान सामि तणइ शासनि, करी उन्नति इम रली ।

आपइ अकवर अधिक हरखे, युगप्रधान पदवी भली ॥ ४ ॥

जा लागि अम्वर रवि शशि, जा सुर शैल नदीस ।

ता नदउ ए राजियो, मानर आण नरस ॥

जसु आण मानइ राव राणा, भाव बहु हियडै धरी ।

नन्द पुविरस शशि वरसि चैत्रह नवमि तिहि अति गुण भरी ।

इम विमल चित्तः भगः भक्तः, समयप्रमोदः समुल्लासः ।

युगप्रवर जिनचन्द्रसूरि वंदो, जाम अम्बर रवि शशि ॥ ५ ॥

(८)

॥ पंच नदी साधन गीत ॥

निकम (पुर) नयरे श्री संघ हरधियो एह नी डाल ।

श्री गोयम गणवर प्रणमी करी आणी उचट अङ्ग ।

गुरु गुण गावण मुझ मन गह गहे, थायइ अति उच्छरङ्ग ॥१॥

धन श्रीजिनशासन सलहिये, खरतर गच्छ सिगगार ।

युगप्रधान जिनचन्द्र जतीसरु, गुरु गोयम अवतार ॥२॥

लाभपुरे जिनधर्म सुणाविने, वृझ्यो पातिसाह ।

श्री गुरु पंचनदी पति साधिना, कोत्रा मनहि उछाह ॥३॥

संघ साथि मुलताण पयारिया, पइसार्यो सविशेष ।

देख हरण्या सवि जन पय नमै, खान मलिक तिम सेखा ॥४॥

ठामि ठामि हुकुमइ श्री शाहिनै, कइता धर्म विचार ।

अभयदान महियल वरतावनां, संघ उदय जयकार ॥५॥

आया पंचनदी तट पत्तणइ, चन्द्रवेलि अभिमान ।

आबिल अठ्ठम तप गुरु आदरी, वैठा निश्चल ध्यान ॥६॥

सोलसय वावनै वच्छरै, पुष्प सहित रविवार ।

माहघवल वारस तिथि निरमलो, शुभ महरत निणि वार ॥७॥

वेडी वइसी पहुतां जिहा मिलै, पंचनदी भर नीर ।

अघरति निश्चल नाव तिहां रही, ध्यान धरै गुरु धीर ॥८॥

शील सत्त तप जप पूजा वसै, माणिभद्र प्रमुख सुमन्त ।

यक्ष सहु जिनदत्तसूरि सानिधै, तेह थया सुप्रसन्न ॥६॥धन०॥
प्रहसमि गुरुजी पत्तणि अविद्या, वाज्या जेत्र निसाण ।

ठाम र ना सघ मिल्या घणा, आपै दान सुजाण ॥१०॥धन०॥
धोरवाड वसे परगडा, नानिग सुत राजपाल ।

सपरिवार तिहा बहु धन खरचिनै, लीयो यश सुविशाल ॥११॥धन०॥
तिहा थी उच्चनगर गुरु आविया, वद्या शान्ति जिणद ।

देरावर प्रणम्या जग दीपता, श्रीजिनकुशल मुणिद ॥१२॥धन०॥
हिव तिहा थो मारग विचि आन्ता, सुन्तर थुम निवेश ।

पद पकज जिनमाणिकसूरिना, भेट्या तिणे प्रवेश ॥१३॥धन०॥
नवहर पास जुहारी पधारिया, जेमलमेरु मझार ।

फागन सुदी बीजै सहु हरपोया, राउल सघ अपार ॥१४॥धन०॥
श्रीजिनचद यतीश्वर गुणानिलो, प्रतपो युग प्रधान ।

‘पद्मराज’ इम पभण्ड मन रसइ दिन दिन वथतै वान ॥१५॥धन०॥

(९)

वनी हे सहगुरकी ठकुराइ

श्रीजिनचन्द्रसूरि गुरु वदो, जो कुछ हो चतुराइ ॥१॥वनी०॥
मरुल सगूर हुकम सत्र मानति तै जिन्ह कु फुरमाई ।

अरु कट्टु दोष नहीं दिल अतरि, तिमि मरहो मनिलाई ॥२॥वनी०॥
माणिकसूरि पाट महिमा वरो, लइ जिन स्यु वितणाई ।

सिगमिग ज्योति सुगरुकी जागी, ‘साधुकीरति’ सुखदाई ॥३॥वनी०॥

(१०) राग मल्हार

पूज्य आवाजउ साभलउ सहिए, हरल्या सगलालोक ।
 मोरउ मन पिण उलस्यउ सहिए, जिम हरि दंसग कोक ॥१॥
 इण रे सुगुरु जी जग माहि जस पडहउ वजाड्यउ ॥आ०॥
 पहिलुं अकन्नर मानीया सहीए, ए गुरु हीरा खाणि ।
 युगप्रधान पद तिण दिव्यउ सहिए, पय लागड राचराणि ॥२॥इण०॥
 गच्छ अनेक मडं जोड्या सहिए, तुम सम अचर न कोड ।
 हेलइ भयण वसी कीयउ सहिए, शीलड थूलभद्र जोड ॥३॥इण०
 अनुकमि श्रीगुरु विहरता सहीए, आंव्या पाटण माहि ।
 चउमासउ प्रमु तिहां करइ सहीए, मन आणी उच्छाह ॥४॥इण०॥
 लेख आयउ आगरा थको सहीए, जाणी सगलो वात ।
 साहि सलेम कोपइ चढ्यइ सहीए, कुमतो वाध्या राति ॥५॥इण०॥
 चउमासो करि पांगुर्या सहीए, करता देस विहार ।
 उग्रसेनपुर आविया सहीए, वरल्या जय जयकार ॥६॥इण०॥
 श्रीपातिशाह बोलाविया सहीए, जंगमजुगहप्रवान ।
 धरम मरम कहि वूझव्यउ सहीए, तुरत दीया फुरमान ॥७॥इण०॥
 जिण शासन उजवालयउ सहीए, साह श्रीवंत कुल चन्द ।
 साधु विहार मुगता कीया सहीए, खरतर पति जिणचन्द ॥८॥इण०
 सिरिया दे उरि हंसलउ सहीए, तेजइ दीपइ भाण ।
 “लब्धिशेखर” मुनि इम भणइ सहीए, सेवक आपणउ जाणि ॥९॥इण०॥

(११)

राउल श्री भीम इम कहइ जी, जादव वंसि वदीत रे ॥ पूज जी ॥
 पधारो जेसलमेरु नइ जी, प्रीति धरी निज चित्त रे ॥रा०॥१॥

वसत बडा गुजराति ना जी, पूज घघार्या जेथ रे ।

धन धन लोक सहुवाल रे, जेह वसइ छड तथ र ॥२॥रा०॥
पूज तणइ जे श्रीमुण्ड जी, निसुणइ अमृत वाणि र ।

सेव फरड गुरु नी शाश्वती र, तेहनो जन्म नमाणि र ॥३॥रा०॥
दिवस घणा विचि बरलीया जी, आवण पेरो आस रे ।

हुसि अठइ माहरइ हियइ जी, इहा जड फरड चउमासि र ॥४॥रा०॥
श्री जेसलगिरि सघ नी जो, अधिक अजइ मन फोडि र ।

गुरुजी चरणइ लागिना, र त्रिकरण शुद्ध कर जोडि र ॥५॥रा०॥
साधु नी सगति जउ मिलइ र, तउ पूजइ मन नी आस र ।

चितामणि करि जउ चढयर र, तउ चित्त थाइ जलस र ॥६॥रा०॥
मुझ मन हरस घणठ अजइ जी, तुम्ह मिलना नु आज र ।

तुम्ह आना सवि साध्यस्या र, अतिक धरम तणा काज र ॥७॥रा०॥
इहा विलम्ब नरि कीजियइ जी, श्री सरतर गणधार र ।

श्री जिनचन्द्र गुणभणइ रे, "गुणविनय" गणि सुखकार र ॥८॥रा०॥
(स्वयलिखित-पत्र १ हमार सप्रह मे)

(१२) राग साभेरी

सुगुरु कइ दरसन कइ बलिहारी ।

श्री सरतरगच्छ जगम सुरतरु, जिनचन्द्रसूरि सुखकारी ॥१॥सु०॥
अकनर शाहि हरस करि कोनउ, युगप्रधान पदधारी ।

समायत मइ शाहि हुकम तइ, जलचर जीन उनारी ॥२॥सु०॥
सात दिवस जिनि सन जीवन फी, हिंसा दूर निनारी ।

देश देशि फुरमान पठाय, सब जग कु उपगारी ॥३॥सु०॥

जिनमाणिक्युरि पाट प्रभाकर, कलि गौतम अवनारी ।

कहड "गुणवितथ" न कल गुण सुंदर, गावत भव नर-नारी ॥४॥सु०॥

(कवि के हस्तलिखित पत्र से उद्धृत)

(१३) राग धन्यासिरी मान्गो

सुगुं मेरड चिरि जीवड चउभाल ।

खम्भायत दरिया की मन्डली, बोलत बोल रमाल ॥१॥सु०॥

भाग हमारड तिहा जावत हड, लाभपुरड भय टाल ।

श्रीजी कुं अडनी अरज करेज्यो, जलचर कुं प्रतिपाल ॥२॥सु०॥

एह अरज निसुणी पूज्या तड, रंज्यु वर भूपाल ।

हुकम करि नड छाप पठीड, हरल्या बाल गोपाल ॥३॥सु०॥

युगप्रवान जिनचन्द यतीसर, छड जसु नाम विगाल ।

साहि अकवर तसु फरेमाइ, तिणि झाड़ायाला जाल ॥४॥सु०॥

निशभरि नींद अवड आवत हई, मरण तणु भय टाल ।

जय जय जय आगीस द्वियत हड, मिलि जीवन की माल ॥५॥सु०॥

धन धन धोर हुमाऊं कुं नन्दन, जीवत दान दयाल ।

धन धन श्रीखरतरवाच्छ नायक, पटकाया रखवाल ॥६॥सु०॥

धन मन्त्री कर्मचन्द वञ्जावत, उद्यम कीड दरहाल ।

साहिव नड साचड सुप्रसादइ, अलीय विन्न सव टालि ॥७॥सु०॥

धन ते संघ इणइ जे अवसर, परवल खरचड माल ।

तसु "कल्याण कमल" नी संपड, आपड न हुवइ बाल ॥८॥सु०॥

(१४) अपूर्ण

सरस वचन सरसति सुपसायइ, गाइसु श्रीगुरुराय री माइ ।
युगप्रधान जिनचन्द्र यतीश्वर, सुर नर सेवे पाय री माइ ॥
कलिनुग कल्पवृक्ष अवतरियो सेवक जन सुखकार री माइ ॥३॥
जिन शासन जिनचन्द्र तणो यश, प्रतपै पुहवि मझार री माई ।
प्रहमम नित नित श्रीगुर प्रणमो, श्रीसरतर गणवार री माइ ॥२॥
सवत पनर पचाणु वर्षे, रीहड कुल मनु भाण री माइ ।
श्रीवत शाह गृहणी सिरियाद, जनम्या श्री "सुरताण" री माई ॥३॥
सवत सोल चडोतर वरसे, लीधो सयम भार री माई ।
जिनमाणिक्यसूरि सैं हाथै दिक्षा, शिष्यरत्न सुविचाररी माई ॥४॥क०
रुतु वय बुद्धि विनाणे जाण्यो, श्रुतसागर नौ सार री माई ।
अभिनव वयर कुमर अवतारै, सकल कला भडार री माई ॥५॥क०
वसत सयोगे सोल वारोत्तर, जेशलमेर मझार री माई ।
पाम्यो सूरीश्वर पद नकट्यो, श्रीसघ जय २ कार री माइ ॥६॥क०
उग्र विहार आदर्या श्रीगुरु, कठिन किनाउद्धार री माई ।
चारित्र पात्र महत मुनीश्वर, रत्नत्रय आधार री माइ ॥७॥क०
सनरोत्तर वर्षे पाटण में, अधिक वधारी माम री माइ ।
प्यार अभी गच्छ साखैसरतर, विहद दीपायौ ताम री माई ॥८॥क०
हथगाउर सौरीपुर नामै, तीरथ विमलगिरिंद री माई ।
आबृगढ गिरनार सिसर तिहा, प्रणम्या श्रीजिनचन्द्ररी माई ॥९॥क०
आरासण तारगै तीरथ, राणपुरै गुरुराज री माइ ।
चरकाणा सखेश्वर ग्रामे, प्रणम्या श्री जिनराजरी माइ ॥१०॥क०

अवर तीर्थ पण श्रीगुरु भैट्या, प्रतिबोध्यो पातिसाह री माई ।
 अकवर अधिको आसति निरखी, दीधौ मौट्रौ लाह री माई ॥११॥
 खम्भायत नो खाड़ी केरा, राख्या जीव अनेक री माई ।
 बरस एक लग श्री गुरु वचने, पाम्यो परम विवेक री माई ॥१२॥क०
 सात दिवस लगि निज आणा में, वरतावी अमारि री माई ।
 अकवर अवर अपूर्व कारिज, कींधा गुरु उपकार री माई ॥१३॥क०॥
 पंचनदी पति परतिख साध्या, माणभद्र विख्यात री माई ।
 ॥

(१५) श्री गुरुजी गीत

युगवर श्री जिनचन्दजी, जगि जिनशासनि चन्द रे ।
 प्रहसमि उठी पूजियइ, कामित सुरतरु कंद रे ॥१॥जुग०॥
 संवति पनर पंचाणुयइ, श्रीवंत साह मल्हार रे ।
 मात सिरियादेवि जनभीयउ, रीहड़ कुल सिणगार रे ।२॥जुग०॥
 संवत सोल चिडोत्तरइ, जाणी जिणि अथिर संसार रे ।
 हाथि जिनमाणिकसूरि नइ, संग्रहउ संयम भार रे ॥३॥जुग०॥
 वयरकुमार तणी परइ, लघुवइ बुद्धि भंडार रे ।
 गुरुकुल वास वसि पामियउ, प्रवचन सागर पार रे ।४॥जुग०॥
 संवत सोल वारोतरइ, जेसलमेरु मझारि रे ।
 भाग्य बलि सूरि पदवी लही, हरखिया सवि नर नारि रे ।५॥जुग०॥
 कठिण क्रिया जिण उद्धरि, मांडियउ उग्र विहार रे ।
 सूरि जिणवल्लभ सारिखउ, चरण करण गुणधार रे ।६॥जुग०॥

पाटण सोल सतरौतरइ, चारि असी गच्छ सात्ति र ।

सरतर त्रिद्व दीपावियउ, आगम अम्पर दासि र ॥ ७ ॥ जुग० ॥
सौरीपुर हथिणाउरे, विमलिगिरि गढ गिरिनार र ।

तारङ्ग अर्जुदि तीर्य०, यात्र करि बहु वारि र ॥ ८ ॥ जुग० ॥
अकपर शाहि गुरु परिसीयउ, कसनटि कचण जेम रे ।

पूज्यनी मधुर देमण सुणी, रजियउ साहि सलेम रे ॥६॥ जुग० ॥
सात दिवस वरतावियउ, माहि दुनिया अमयदान रे ।

पच नदी पति साधिया, वाधियउ अति घणउ वान रे ॥१०॥जुग०॥
राजनगर प्रतिष्ठा करी, सखल मडाण गुरुपार र ।

सखनी सोमजी लजिन, लाह लियइ तिणि ठाइ रे ॥११॥जुग०॥
सुप्रसन्न जेहन० मस्तक, गुरु धरइ दक्षिण पाणि रे ।
तह धरि बेलिकमला करइ सुखसइ अत्रि(ल) वाणि रे ॥१२॥जुग०॥
दरसनी जिन मुगता करी, सोल सितर वासि रे ।

अविना नगर त्रिलाडए, सुगुर रखा चउमासि रे ॥१३॥जुग०॥
दिवस आसु वदि बीजनइ, उच्चरी अणशग सार रे ।

सुरपुरि सुगुर सिधारिया, सुर करइ जय जयकार र ॥१४॥जुग०॥
नाम समरणि नवनिधि मिल, सवि फलइ सघनी आस रे ।

आधि नइ व्याधि दूरइ टलइ सपजइ लील विलास र ॥१५॥जुग०॥
वेशर चन्दन कुसुम सु, चरचता सहगुर पाय रे ।

पुत्र सतान परवलहुन, दिन दिन तेज सवाय रे ॥१६॥जुग०॥
श्रीजिनचन्द्रसूरीसम्भ, चिर जयउ जुगाहप्रवान रे ।

इणपरि गुरु गुण सयुणर, पाठक 'रत्ननिधान' रे ॥१७॥जुग०॥
(श्री जिनचन्द्रसूरि ज्ञान मडार सूरतस्थ हस्त लिखत नन्यात्

प्रेपक पन्यास वेशरमुनिजी)

॥ इति श्री गुरुजी गीत ॥

(१६)

॥ ६ राग ३६ रागिणी गर्भित् गीत ॥

कीजइ ओच्छव सन्ता सुगुरु केरउ (१)

सुललित वयण सुण सखि मेरउ (२)

कहउरी संदेस खरा गुरु आवतिया (३)

तिणवेला उलसी मेरी छातिया (४) ॥१॥

आएरी सखि श्रीवंतमलहारा,

खरतर गच्छ शृङ्गारहारा । ए आंकड़ी (५)

अइसा रंग वधावन कीजइ (६)

गुरु अभिराम गिरा अमृत पीजइ (७)

ऐसे सुगुरु कुं नित्य उलगउरी (८)

सुन्दर शरीरा गच्छपति अउरी ॥ ६ ॥ आ० ॥२॥

दुःख के दार सुगुरु तुम हउ री (१०)

गाउं गुण गुरु केदारा गउरी (११)

सोरठगिरि की जात्रा करणकुं आपणरी गुरु पाय परउ (१२)

भाग्यफल्यो ओच्छव लोकणरओ (१३) ॥३॥

तुं कृपापर दउलति दे मोहि हुं तेरो भगत हुं री (१४)

गुरुजी तुं उपर जीव राखी रहुरी (१५)

इहु सयनी गुरु मेरा ब्रह्मचारी (१६)

हुं चरण लागुं डर डमर वारी (१७) आ० ॥४॥

अहो निकेत नटनराज्य कइ आगइ

अइसइ नृत्य करत गुरुके रागइ (१८)

ऐसे शुद्ध नाटक होता गावत सुदरी

वेणु वीणा मुरज वाजत घुमर धुधरी (१९) ॥५॥

रास मधु माधवइ देति रभा, सुगुरु गायति वायति भभा (२०)

तेजपुज जिमसे भेरवी, जुगप्रधान गुरु पेसउ भवि(२१)आ०॥६॥

सन्धि ठउर वरी जयतसिरी (२२)

गुरुन गुण गावत गुजरी (२३)

मारुणि नारी मिली सन गावत सुन्दर रूप सोभागी रे (२४)

आज सखि पुन्य दिसा मेरो जागी (२५) ॥७॥

तोरी भक्ति मुज मन मा वसी री (२६)

साहि अकर मानर जसु वानरवसी (२७)

गुरुके वरणी तरमइसिधुया (२८)

इया सारी गुरुकी मूरतिया (२९) आ० ॥८॥

गुरुजी तुहिज कृपाल भूपाल कलानिधि तुहिज सन्धि सिरताज(३०)

आवइ ए रीतइ गच्छराज (३१)

सकरा भरण लछन जिन सुनसन्न

जिनचन्द्रसूरि गुरुनुनतिकर (३२) ॥९॥

तेरी सुरतकी बलिहारी, तु पूरव आस हमारी,

तु जग सुरतर ए (३३)

गुरु प्रणमइरी सुरतर किन्नर धोरणी र

मनवडित पूरण सुरमणी र (३४) ॥१०॥

मालवी गण्डमिश्री अमृत थड वचन मीठे गुरु तेरे हठ ताथड (३५)

करइ वंदगा गुरुकुं त्रिकालड हरउ पंन प्रमाद रे (३६)

सवउकुं कल्याण सुख सुगुरु प्रमाद रे (३७) आ० ॥११॥

वहु परभाति वउ उधव सार (३८)

पंचमहाव्रत धर गुरु उदार (३९)

हु आदेसकार प्रभुतेरा, जुगप्रधान जिनचन्द

मुनिसरा, तुं प्रभु साहित्य मेरा (४०) ॥१२॥

दुरित मे वारउ गुरुजी सुख करउ रे श्रीसह पुरउ आगा

नाम तुमारड नवनिधि संपजइ रे लाभड लील विलास (४१) ॥१३॥

धन्यासरी रागमाला रची उदार, छ. राग छत्रोसे भापा भेद विचार,

सोलसड वावन विजय दसमी दिने सुरगुरुवार,

थंभण पास पसायड वंवावती मजार (२) ध०) ॥१४॥

जुगप्रधान जिनचन्द सूरीड सारा

चिग जयउ जिनसिघसूरि सपरिवार (३ ध०)

सकेलचन्द मुणीसर सीस उन्नतिकार,

“समयसुन्दर” सदा सुख अपार (६ ध०) ॥१५॥

इति श्रीयुगप्रधान जिनचन्दसूरीगां रागमाला सम्पूर्णा,

कृता च० समयसुन्दरगणिना लिखिता सं० १६५२ वर्षे

कार्तिक शुदि ४ दिने श्री स्तंभतीर्थ नगरे ।

(१७) राग. — आसावरी

पूज्यजी तुम्ह चरणे मेरुत मन लीणउ, ज्यु मधुकर अरविद ।
 मोहन तलि सत्रइ मन भोहियउ, पेसत परमाणद र ॥१॥पूज्य०॥
 सुललिन वाणि वसाण सुणावति, श्रवति सुधा मकरद र ।
 भविक भवोदधि तारण वरी, जनमन कुमदनी चदर ॥२॥पूज्य०॥
 रीहउ वश सरोज दिवाकर, साह श्रीजन कउ नद र ।
 'समयसुन्दर' कइ तु चिरप्रतपे, श्रीजिनचन्द्र मुणिद र ॥३॥पूज्य०॥

(१८) आसावरी

भले रो माइ श्री जिनचन्द्रसूरि आण ।
 श्रीजिन धर्म मरम वृक्षग कू, अकर शहि पुलाए ॥ १ ॥
 सद्गुरु वाणी सुणि शाहि अकर, परमाणद मनि पाए ।
 हफनहरोज अमारि पालन कु लिखि फुरमान पठाए ॥ २ ॥
 श्री सरतर गच्छ उन्नति फीनी दुरजन दूर पुलाए ।
 "समयसुन्दर" कहै श्रीजिनचन्द्रसूरि सत्र जनके मन भाए ॥३॥

(१९) आसावरी

सुगुर चिर प्रतप तु कोडि वरीस ।
 सभायत चन्द्र माजुलडी, सत्र मिलि दत आशीस ॥ १ ॥ सु०
 धन धन श्री सरतरगच्छ नायक, अमृतवाणि वरीस ।
 शाहि अकर हमकु राखगकु, जासु करी बकशीस ॥ २ ॥
 लिखि फुरमाण पठावत सत्रही, धन कर्मचन्द्र मत्रीश ।
 "समयसुन्दर" प्रभु परम कृपा करि, पूरउ मनहि जगीश ॥३॥

(२०)

श्री खरतर गच्छ राजीयउ रे माणिक सूरि पटवारो रे ।

सुन्दर साधु सिरोमणी रे, विनयवंत परिवारो ॥ १ ॥

विनयवंत परिवार तुम्हारउ, भाग फलयउ सखी आज हमारो ।

ए चन्द्रालउ छड अति सारउ, श्रीपूज्यजी तुम्हे वेगि पधारो ॥१॥

जिणचन्द्रसूरिजी रे, तुम्ह जग मोहण वेलि ।

सुणज्यो वीनती रे, आवउ आम्हारइ दिसि, गिरुआ गच्छपतिरे ॥
वाट जोवता आवीया रे हरख्या सहु नर-नारो ।

संध सहु उच्छव करइ रे घरि २ मंगलाचारो ॥

घरिघरि मंगलचारो रे गोरी, सुगुरु वधावउ वहिनी मोरी ।

ए चन्द्रालउ सांभलज्योरी, हुं वलिहारी पूजजी तोरी ॥२॥ श्री०
अमृत सरिखा बोलड़ा रे, सांभलतो सुख थाज्यो ।

श्रीपूज्य दरसन देखता रे, अलिय विघन सवि जाज्यो ॥

अलिय विघन सहु जायइ रे दूरइ, श्रीपूज्य वाढु उगमते सूरइ ।

ए चन्द्रालउ गाउ हजूरइ, तउ मुझ आस पूलइ सवि नूरइ ॥ ३ ॥
जिणदीठा मन उलसइ रे नयणे अमीय झरंति ।

ते गुरुना गुण गावतां रे, वंछित काज सरंति ॥

वंछित काज सरंति सदाइ, श्रीजिणचन्द्रसूरि वांदउ माई ।

ए चन्द्राला भास मइंगाई, प्रीति “समयसुन्दर” मनिपाई ॥४॥ श्री

(२१)

जनचन्द्रसूरि आलीजा गीत रागः आस्थासिंधूडो

थिर अर्कवर तुं थापीयउ, युग प्रधान जग जोइ ।

श्रीजिनचन्द्रसूरि सारिखउ, सारि० कलिमे न दीसइ कोय ॥१॥

उमाह धरो नइ तातजी हु आवियउर, हो एकरसउ तु आवि ।
मनका मनोरथ सहु फलइ माहरा रे,हो दरसणि मोहि दिसाउ ॥ २ ॥
जिनशासनि रायउ जिणइ, डोलतउ डमडोल ।

समझायउ श्री पातिसाह, सदगुरु साव्यउ तउ सुनोल । उ० ॥३॥
आलेजो मिलवा अति घणउ, आयउ सिन्ध थी एथ ।

नगर गाम सहु निररपीया, कहो क्यु न दीसइ पूज्य केथ । उ० ॥४॥
शाहि सलेम सहु अवरा, भीम सूर भूपाल ।

चीतारइ तु नइ चाह सु, हो पूज्यजी पधारउ किरपाल । उ० ॥५॥
वावा आदिम बाहुबलि, वीर गौयम ज्यु विलाप ।

मेलउ न सरज्यउ माहरउ मा०, ते तउ रख्यो पठताप । उमा०६॥
साह वडउ हो सोमजी गाल्यउ कर्मचन्द्र राज ।

अक्कर इद्रपुरि आणीयउ हो, आस्तिक वादी गुरु आज । उमा०७॥
मूयइ कहइ त भूढनर, जीवइ जिणचन्द्रसूरि ।

जग जपइ जस जेहनउ, जेह० हो पुइवि कीरत पडूरि । उमा०८॥
चतुर्विध सघ चीतारस्यइ, जा जीविसइ ता सीम ।

बीसार्था किम विसरइ, विस० हो निर्मल तप जप नीम । उमा०९॥
पाटि तुम्हारइ प्रगटीयउ, श्री जिणसिंह सूरीस ।

शिष्य निराज्या तइ सहु, तइ० र जतीया पुरी जगीस । उमा०१०॥
समयसुन्दर कृत अपूर्ण—प्राप्त



कवि कुशल लाभ कृत

॥ श्रीफूज्य कहण भक्तिम् ॥

००

राग आसावरी

पहिलो प्रणमं प्रथमजिण, आदिनाथ अरिहंत ।

नाभि नरेश्वर कुलतिलक, आपड सुख अनंत ॥ १ ॥

चक्रवर्ती जे पांचमो, सरणागत साधारि ।

शांति करण जिन सोलमो, शान्तिनाथ सुखकार ॥ २ ॥

बह्वचारी सिर मुकटमणि, यादव वंश जिणिंद ।

नेमिनाथ भावइ नमुं, आणी मन आणंद ॥ ३ ॥

श्री खंभायत मंडणो, प्रणमं थंभण पास ।

एक मना आराधतां, पूरइ जन नी आस ॥ ४ ॥

शासननायक समरीयइं, वर्द्धमान वर वीर ।

तीर्थकर चौवोसमो, सोवन वर्ण शरीर ॥ ५ ॥

च्यारि तीर्थकर शाश्वता, विहरमाण जिन वीश ।

त्रिण चौवीशी जिन तणा, नाम जपूं निशदीस ॥ ६ ॥

श्रीगौतमगणधर सधर, नमिसुं लब्धिनिधान ।

केवलिकमला करि वशइ, महिमा मेरु समान ॥ ७ ॥

समरूं शासनदेवता, प्रणमं सदगुरु पाय ।

तासु प्रसादे-गाइस्थुं, श्री खरतरगच्छ राय ॥ ८ ॥

मतर भेद सयम धरइ, गिरुआ गुण छतीस ।

अधिकी उत्कृष्टी मिना, ध्यान धरइ निसनीस ॥ ६ ॥

सूयगडाग सूत्रे कखा, वीर स्तव अधिकार ।

भव समुद्र तारण तरण, वाहण जिम विस्तार ॥ १० ॥

आ भव सागर सारिसु, सुख दुख अत न पार ।

सद्गुरु वाहण नी परइ, उत्तरइ भवपार ॥ ११ ॥

ढाल' सामेरी

भवसागर समुद्र समान, राग द्वेष वि नेऊ धाण ? ।

ममता तृष्णा जल पूर, मिथ्यात मगर अति क्रूर ॥ १२ ॥

भोजा ऊचा अभिमान, विषयादिक वायु समान ।

ससार समुद्र मझारि, जीव भभ्या अनत वारि ॥ १३ ॥

हिंघ पुण्य तणइ सयोग, पान्यो सहगुरु नो योग ।

भवसागर तारणहार, जिन धर्म तणउ आधार ॥ १४ ॥

वाहण नी परि निस्तारइ, जीव दुर्गति पडितो वारइ ।

कालरि जलि किहान जीपर, पर वादी कोइ न जीपर ॥ १५ ॥

इहंनर तोफान न लागर, सुरि वायु बहइ वैरागइ ।

जल थळ मविहु उपगारइ, भवियण जण हला तारइ ॥ १६ ॥

ढाल.—हुसेनी धन्यासिरी

श्रीजिनराय नीपाइउ ए, वाहण समु जिनधर्म,

भविक जनतारवा ए ॥ १७ ॥

तारइ २ श्रीवंत शाह नो नन्दन वाहण तणी परइ ।

तारइ २ सिरियादे नो सुत कि, वाहण सिला मती ए ।

तारइ २ श्रीपूज्य सुसाधु, श्रीखरतरगच्छ गच्छपत्ति ए ॥ आ० ॥
अविहइ वाहण ए सही ए, सविहुं सुख व्यापार ।

धर्म धन दायकू ए ॥ १८ ॥

तारइ तारइ श्री समकित अति निर्मलो ए ।

पहलउ ते पयठाण, सुमति सूत्रेधर्यो ए ॥ १६ ॥

ता० गुण छतीस सोहामणा ए ।

विहु दिसि वांक मंडाण, सुकून दल मलिवा ए ॥ २० ॥

ता० कूया थुंभ चारित्र तणउ ए ।

जयणा जोडी संधि, सवल सढ तप तणउ ए ॥ २१ ॥

ता० शील डवू सो सोभतो ए ।

ले मत सुगुरु वखाण, दया गुण दोरडो ए ॥ २२ ॥

तारइ तारइ कलमी ते शुद्धी क्रियाए,

पुण्य करणी पंतास, संतोष जलइ भर्याउ रे ॥२३॥

ता० दशविध धर्म वेडूं गवी ए ।

संवर तेह जना रखि मासरि छत्रडी ए ॥२४॥

ता० सतर भेद संयम तणाए,

ते आउला अपार । संवेग सुं पंजरी ए ॥२५॥

ता० आज्ञा नालु अणी समोए ।

पंच समिति पर वांण, कीर्त्तिधज जह लहइ ए ॥२६॥

ता० विजइ वारह भावनाए ।

(दा) हांडा शुभ परिणाम, नागर नवतत्त्व तणाए ॥२७॥

ता० करुणा क्रीलड लेपीड ए, ज्ञान निरुपम नार ।

झोलड समरस भयोए ॥२८॥

ता० जासन नायक हू (कू) यउए, मालिम श्री गुरुराज ।

कराणि मुनिवरए ॥२९॥

ता० जिन भापिन मारग वडइ ए, वाजिननाड सिन्नाय ।

सुसाधु खलासीयाए ॥३०॥

ता० २ ए मारग जिनधर्म तणउए, को डोलइ नहीं लगाए ।

सदा मुखिया करइए ॥३१॥

ता० मल (चा ?) वारी त काठोया ए, कुमती चोर हीनोर ।

सहु भय टालताए ॥३२॥

ता० पुण्य क्रियाणे पूरीया ए, बहुरति वस्तु अनेक ।

सुजस पाखर खरीए ॥३३॥

ता० कयाय डूगर जालवइए, वइतउ ध्यान प्रवाह ।

सिलामति आवीयोए ॥३४॥

ढाल रामगिरी —

धर्ममारग उपदशता, करता २ विधइ विहार र ।

आन्वाजो नगर तनावतो श्री सघ हर्ष अपार र ॥३५॥

पूज्य आन्वा त आसा फली, श्री खरतरगच्छ गणधार रे ।

श्री जिनचन्दसूरि वादीयइ, साथइ २ साधु परिवार रे ॥३६॥ पू०॥

आगम सूत्र अर्थे भया, सुकृत क्रियाण त सार र ।

चारित्र बखारि अति भली(याँ), व्रत पचखाण विस्तार र ॥३७॥

वस्तु अपूर्व बहुरिधा, मिल्या २ भविक नर-नार रे ।

वितय करि पूज्य नड वीनवड, आपउ २ वस्तु उडार रे ॥३८॥पू०॥

मोटा २ आवक आविका, करड मंडाण अनेक रे ।

महोत्सव अधिक प्रभावना, जाणड २ वितय विवेक रे ॥३९॥पू०॥

ज्ञान दरशण चारित्र तणा, अमोलक रत्न महंत रे ।

पुण्य व्यापारि आवि मिल्या, बहुरता लाभ अनन्त रे ॥४०॥पू०॥

दान गुण मोतीय निर्मला, पंच आचार ते पाच रे ।

दश पचखाण ते कहरवड, अगर तँ गीतल वाच रे ॥४१॥पू०॥

सूफ ते सदहणा खरी, सुगुरु सेवा सिकलात रे ।

पोत सुरासुर पोसहा, मकमल प्रवचन मात रे ॥४२॥पू०॥

हीर पेटी महोत्सव घणा, इ आ (त्रा ?) मी ते सूत्रनी साख रे ।

भाव(जाच)परिवार लिय अति भलो, निवृत्ति ते किसमिस दाख रे ॥४३॥पू०॥

श्रीफल श्रीगुरु देशणा, वीश थानिक कमखाव रे ।

नादि उछव मलीयागरड, पूज्यनी भगति गुलाव रे ॥४४॥पू०॥

देश विरति ते कचकडड, चोली(ल) या ते उपधान रे ।

दात(न)? शीलंगरथ उजलड, राती जगु तेह कंताण रे ॥४५॥पू०॥

शीतल सुकडि भावना, स्नात्र तेकपूर बरास रे ।

कतीफड कल्याणिक जाणीयड, कंस बण्यो सह उपवास रे ॥४६॥पू०॥

मासखमण मसझारे समुं (भलुं), लारीते लाख नवकार रे ।

सूत्र ना भेड हीरा खरा, उचित्त नुं दान दीनार रे ॥४७॥पू०॥

पाखर कमण बरीया विसड, लवंग ओ(ड)ली विश्वा(सय)वीस रे ।

नाम आलोयण बाडीया, छठ तप विसय गुणतीस रे ॥४८॥पू०॥

ससार तारण दृ कात्रलो, चडथो त्रन तेह दस्तार र ।

अखोड आणिल निम जाणवी, कल(ड)य वयावचसार र ॥४६॥पृ०॥

अठम तप त टोक(प)रा, अठाही त सेव खजूर र ।

समवसरण तप त मिरी, सोपारी सामायिक पूर र ॥५०॥पृ०॥

लाहिण माल पहिरावणी, उत्तम क्रियाय त जोइ र ।

परत्तोय वस्त जे सप्रो, लास असखित होड रे ॥५१॥पू०॥

श्री गुरु शासन दवता, वाहण ना रसवाल रे ।

भगति भणी सानिव करइ, फळइ मनोरथ माल रे ॥५२॥पू०॥

रागः—केदार गौडी

दिन २ महोत्सव अति घणा, श्रोसव भगति सुझइ ।

मन शुद्धि श्रोगुरु सेत्रोयड, जिणि सेव्य२ श्रिसुख पड ॥५३॥पू०॥

भविक जन वनै सहगुरु पाय, श्री परतर गच्छराय ॥आ०॥

प्रमु पाटिए चडवीसमड, श्रीपूज्य जिनचन्दसूरि ।

उद्योतकारी अभिनयो उत्यो पुन्य अकूर ॥५४॥भ०॥

शाह (श्रावक) भडारी वीरजी, साह राका नइ गुरराग ।

वर्द्धमानशाह वितथ२ घणो, शाह नागजी अधिक सोभाग ॥५५॥भ०॥

शाह वडा शाह पत्रमसो, दवजीने जैतशाह ।

श्रावक हरला(पा)हीरजी, भाणजी अत्रिकउ उच्छाह ॥५६॥भ०॥

भडारी माडण नइ भगति घणी, शाह जावडन घणा भाव ।

शाह मनुआन शाह सहजीया, भडारो अमीउ अविक अछाह रे ॥५७॥

नित मिलइ श्रावक श्राविका, सभलइ पूज्य वरराण ।

हीयडउ उलटइ उलसइ, एम जीव्यो जन्म प्रमाण ॥५८॥भ०॥

आग्रह देखी श्री संघनो, पूज्यजी रक्षा चउमास ।

धर्मनो मार्ग उपदिसइ, इम पहुंतो मननी आज ॥५६॥भ०॥
प्रतिमाप्रतिष्ठा थापना, दीक्षा दीयइ गुरुराज ।

इम सफल नर भय तेहनो, जे करइ सुकृत ना काज रे ॥६०॥भ०॥

राग : गुड मल्हार

आव्यो मास अमाह् झवूके दामिनी रे ।

जोवड २ प्रीयडा वाट सकोमल कामिनी रे ॥

चातक मधुरइ सादिकि प्रीऊ २ उचरइ रे ।

वरसइ धण वरसात सजल सरवर भरइ रे ॥६१॥

इण अवसरि श्रीपूज्य महा मोटा जती रे ।

आवक ना सुख हेत आया त्रंवावती रे ।

जोवड २ अम गुरु रीति प्रतीति ववड वलो रे ।

दिक्षारमणी साथ रमइ मननी रली रे ॥६१॥आं०॥

संवेग सुधारसनीर सबल सरवर भर्या रे ।

पंच महाव्रत मित्र संजोगइ संचर्या रे ।

उपशम पालि उंतग तरंग वैरागना रे ।

सुमति गुप्ति वर नारि संजोग सौभाग्यना रे ॥६२॥

प्रवचन वचन विस्तार अरथ तरवर घगा रे ।

कोकिल कामिनी गीत गायइ ओ गुरु तणा रे ।

गाजइ २ गगन रंभीर श्री पूज्यनी देशना रे ।

भत्रियण भोर चकोर थायइ शुभ वासना रे ॥६३॥

सदा गुरु ध्यान स्नान लहरि शीतल वहइ र ।

कीर्त्ति सुमस विसाल सकल जग मह महइ र ।

सात खेत्र सुठाम सुमर्मह नोपजइ र ।

श्री गुरु पाय प्रसाद सदा सुख सपजइ र ॥६४॥

सामग्री सयोग सुधम सहइ सुणइ र ।

फलीया पुण्य व्यापार आचार सुठामणा र । ७

पुण्य सुगाल हवति मिल्या श्री पूज्यमी र ।

वाहण आन्या खेति घर वाइ हर ? रमजी र ॥६५॥

जिहा ७ श्रीगुरु आण, प्रवर्ते जिह किगइ र ।

दिन ७ अधिक जगोस जो थाइज्यो तिह फिणइ र ।

ज्या लग मेह गिरिन्द गयणि तारा घणा र ।

ता लागि अविचल राज करउ, गुरु अम्ह तणा रे ॥६६॥

परता पूरण पास जिणेसर थभणउ र ।

श्रीगुरु ना गुण ज्ञानहप भवियण भणउ रे ॥

“कुशललाभ” कर जोडि श्रीगुरु पय नमइ रे ।

श्रीपूज्य वाहण गीत सुणता मन रमइ रे ॥६७॥



गुरु गीत नं० २३

सभ (व?) नमड चक्रवर्ती जिनचन्दसूरि,

चतुर (विद्य)संघ चतुरंग सेन सजि, वारे विधन अरि दूरि ।

नव तत नवनिधान जिन पाए, आगम गंगा कूरि ।

चवद विद्या गुण रतन संग करि, नीकउ नीलवट नूरि ॥१॥स०॥

पंच महात्रन महल (ण?)अमण गुण, हइ दरवार हजूरि ।

दरसन ज्ञान चरण त्रिणह तोरथ, साधि सकति अरि चूरि ॥२॥स०॥

मरुवर गूजर मोरठ मालत्र, पूरव सिय संपूरि ।

षट्खण्ड साधि पएम गुरु सानिधि, घुरे सुजस के तूरि ॥३॥स०॥

निरमल वंस उइय फुनि पाए, दरसन अंगि अंकूरि ।

मुनि“जयमोम”वदति जय २ धुनि, सुगुरु सकति भरपूरि ॥४॥स०॥

जयप्राप्ति गीत

(२४) राग :

देखउ माई आसा मेगइ मनकी, सकळ फळीरे उलटि अंगि न माइ ।

सुजस जसु देसनरड, नवखंडि दीपायउ नाम रे ।

माम मोटी महि मंडले, सत्र जन काइ प्रणाम रे ॥१॥जीतउ०॥

श्रीखरतरगच्छ राजोयउ, श्रीजिनचंद्र मुगिइरे ।

मान मोड्यो कुमति तणउ, त्रिभुवन हुआओ आणंद रे ॥२॥अं॥

पाटणि भूप दुर्लभ मुखे, बरस दससइअसो मानि रे ।

सूरि गण पमुइ तिहा चउरासो, मढपति जीपी आसाणि रे ॥३॥जीतउ०॥

दिवस शुभ थान पंचासरइ, करीय परणाम विसार रे ।

सूरि जिणेश्वर पामोयो, खरतर विरुद उदार रे ॥४॥जीतउ०॥

मयन मोल मनरोत्तरड, पाटण नयर मवार र ।

मळी त्रमग महु समन, मय नो नाति नाधार र ॥५॥जीत३०॥
पूय धिरु उजनालिपड, माति तगइ महु लोफ र ।

तज सरतर सहगुरु तगड प्रपिमनी त थयड फोफ ॥६॥जीत३०॥
रिगमनी (प्रपिमनी) जे हुनड 'ककली' बोलनो बाल पपाल र ।

रुष्ट कीधड सरतर गुरु, जाणड बाल गोपाल रे ॥७॥जीत३०॥
निलड नूर अनिमड घणड, सरतर मोह सम जोडि र ।

जबु करिगमता जे भिडइ, जय किम पामर सोड र ॥८॥जीत३०॥
मागिकभूरि पाणइ तण, रिहड कुळ भिणगार र ।

श्रीजितचन्द्रभूरि गुणधा निलड, सेरक जन सुगकार र ॥९॥जी०

(२७) विधि स्थानक चोपड

गरुबौ गच्छ सरतर तणौ, जेहनै गुरु श्रीजितचन्द्रभूरि ।

भद्रभूरि भाग्यर भया, प्रगमन्ता होइ आणद पूरि कि ॥१॥
सूरि निगेमणि चिरजयड, श्रीजितचन्द्रभूरि गणधारि ।

कुमनि ढल निण भाजियड, वर्त्या जग माहिं जय ० कार कि ॥२॥
बालपग ० चारिन लिड, विद्या बुद्धि विनय महार ।

अविधि पथ जिण परिहरी धारइ पच महान्त धार कि ॥३॥
गुण उत्तम सग धरइ, कलिक्काल गोयम अन्तार ।

महु गच्छ माह मिर धणी, रुप मयण मनायड हार कि ॥४॥
सूरि "जिनेन्तर" जगतिलड तासु पाटाडभय दव विरयात ।

वृत्ति नवागि जिणर करी, तैतो सरतर नगावदात कि ॥५॥

श्रीसेठी तटनी तटड, प्रगट कियउ जिण थंभण पास !

कुण्ड रामाडयउ देहनी, ते खरतर गच्छ पूरड आम कि ॥६॥

संवत सोल सत्तोतरड (१६१७), अणहिल पाटण नगर मझार ।

श्रीगुरु पहुंता विचरता, महु भवियण मन हर्ष अपार ॥७॥

केई कुमति कलंकिया, बोलड मूत्र अरथ विपगीत ।

निज गुरु भापित ओलवड, तिहा कणि श्रीगुरु पाम्यो जीत कि ॥८॥

कंकाली मही मूलगो, पंडित तणो वहे अभिमान ।

सागर छीतर सम थयो, जिहि उदयो खरतर गुरु भानि कि ॥९॥

पाटण माहि पंचासरो, पाडा पाखलि जे पोशाल ।

पौल देई पैशी रह्यो, जे मुखि लावत आल पंपाल कि ॥१०॥

गच्छ चौरासी मेलवी, पंच शाख नी साखि उदार ।

जीत्यउ खरतर राजियो, ए सहुको जाणै संसार कि ॥११॥

श्रुति अधाडा पौरसी, बहु पड़िपुना कहंतां दोष ।

सृपावाद इम बोलता, बीजो व्रत किम पामे पोप कि ॥१२॥

यणा दिवस ना वाकुला, माडा गोरस लोधा वीर ।

विधिवादइ साधु लिया, ठामि २ ए दीखै हीर कि ॥१३॥

वर्धमान जिन वा (पा?) रणै, लोधा वासी शुद्ध आधा(हा?)र ।

संधदा तेहना तुम्हे, टालौ छौ ए कवण आचार कि ॥१४॥

पर्व चारि पोसह तणा, बोलइ सूत्र अरथ नै भाखि ।

पर्व पखै पोसह करौ, तेहनी नवि दीसै किह साखि कि ॥१५॥

सातवीस आझेरडा, इम पूछइवा छइ बहु बोल ।

ते सूधी परि सर्दहौ, भव भ्रामक कांड (ग) वाओ निटोल कि ॥१६॥

रोस रोस हम मनि नहीं, एक जोभ किम करउ वखाण ।

श्रीजिनकुरल सूरिन्ह नै, समरणि लाभै कोडि कल्याण कि ॥१७॥

गहुली न० (२६) राग.—भूजरी ।

अन मइ पायउ सत्र गुणजाण ।

साहि अकरर कहइ ए सुहगुर, जिनगासन सुलनाण ॥अव०॥आकणी॥

यतीय सती मइ बहुत निहाले, नही को एह ममान ।

के क्रोधी क लोभो कूडा कइ मन वरड गुमान ॥१॥अव०॥

गुरनी वाणि सुगी अवनिपती, वूझउ वइ सन्मान ।

देम विदेज जीऊ हिंस्या दली, भेजी निज फुलमान ॥२॥अव०॥

श्रीजिनमाणिक सूरि पटोधर, सरतरगच्छ राजान ।

चिरजीवो जिनचद यतीरर, कहइ मुनि“लब्धि”सुजान ॥३॥अव०॥

—

गहुली न० (२७) राग —भूजरी ।

दुनिया चाहइ दौ सुलतान ।

इक नरपति इक यतिपति सुन्दर, जाने हइ रहमान ॥दु०॥आकणी॥

राय राणा भू अरिजन साधी, वरतावो निज आण ।

वर्षर वस हुमाऊ नदन, अकरर साहि सुजाण ॥१॥दु०॥

विधि पथ हीलक दुरजन जनक, गाली मद अभिमान ।

श्रीरत सुत मत्र सूरि सिरोमणी, जग माहि “जुगप्रधान” ॥२॥दु०॥

वइइ सिंहासण हुकुम सुनावति, कौ नवि खडत आण ।

मिर ‘मलक’ बहु उनकु सेवति, इनकु मुनि राजान ॥३॥दु०॥

इक छत्र मिरु वरि मथाडंवर, धारनि दोऊ नमान ।

कहति "लविव" जिनचंद धरावर, प्रतिषो जहा दोऊ मान ॥भा० दु०॥

शहंली नं० (२८) रागः धवल धन्याश्री ।

नीको नीकउरी जिनगामनि ए गुरु नीको ।

युगप्रधान जगि जंगम एही, दीयउ जसु अकवर हो टी?) कउरी ॥जि०॥आ०

राज काज (आज) हम सुन्दर, सफरु भयउ अत्र नीको ।

साहि अकवर कहड जु मोकुं, दरसन थयो गुरुजी कउरी ॥१॥जि०॥

मोहन रूप सुगुरु वडभागी, लखी मान श्रीजीउ को ।

जे गुरु उपर मठ मच्छर धरता, हुउ सुव तिहकु फोकउ रो ॥२॥जि०॥

श्रीगुरु नामि दुरति हरि भाजड, नाद सुगो जिउ सीह को ।

सार (ह?) श्रीवंत सुतन चिर जीवउ, साहिव "लविव" मुनी को ॥३॥

शहंली नं० (२९) रागः सोरठी ।

आज उछंग आणंद अंगि उपनौ,

आज गच्छ राज ना गुण थुणीजइ ।

गाम पुरि पाटणइ रंगि वधावणा,

नवनवा उछव संघ कीजइ ॥ आज०॥आ०॥

हुकम श्री साहि नइ पंच नदि साधिनइ,

उदय कीयउ संघनो सवाथौ ।

संघपति सोमजी, सुणउ मुझ बिनती,

सोय जिणचंद गुरु आज आयो ॥१॥आ०॥

साहि प्रनिशोवना पच नदी साधता,

सुजसमर जास जगि भेर वागी ।

“लब्धिकलोल” मुनि कहर (कहाति) गुरु गावता,

आज मुझ परम मनि प्रीत जागी ॥२॥आ०॥

(३०) गहुलो

सुगुर मेरउ कामित कामगवी ।

मनसुद्ध साही अकरे दीनी, युगप्रयात पदयी ॥१॥सु०॥

सकल निसाकर मडल समसरि, दीपति वदन छवि ।

महिमडल मइ महिमा जाकी, दिन प्रति नवीननी ॥२॥सु०॥

जिनमाणिक सूरि पाटि उदयगिरि श्रीजिनचन्द्र रवी ।

पलत ही हरपत भयउ मन मइ, “रत्न निधान” करी ॥३॥सु०॥

(३१) सुयश गीत ॥ राग — अन्याश्री ॥

नमो सूरि जिगचन्द्र दादा सदादीपतउ,

जीपतउ दुरजण जण विशेष ।

रिद्धि नवनिद्धि सुखसिद्धि दायक मही,

पादुका प्रहसमइ उठि द्य ॥ १ ॥ नमो० ॥

सधवट मोटिकउ बोल साटयउ सरउ,

शाहि सलेम जसकीध सेवा ।

गच्छ चउरासा ना मुनिवर रासिया,

सासीया सूरिजचन्द्र देवा ॥ २ ॥ नमो० ॥

भाग जोभाग वज्राग गुण आगला,

जीवना कलियुगि जीव ज्ञाप्यः ।

अन्नलग्न आनम वरम कारिज(क)री,

स्वर्ग पदुता पत्नी मृग वजाग्यः ॥ ३ ॥ नमो ॥

स्वर्गर मेवका सुरनर सास्त्रिः,

कष्ट संकष्ट मवि दूर कीजः ।

“हर्षतंदन” कळु अनुविद्य श्रीसंघ,

दिन दिन दौलति एम दीजः ॥ ४ ॥ नमो ॥



॥ श्रीजिनसिंहसूरि गीतानि ॥



राग.—येलाउल

(१)

शुभ दिन आज वगड, धरल मगल गावो माइ ।

श्रीजिनसिंहसूरि आचारज, दीपइ बहुत सवाइ ॥१॥शुभो॥
शाहि हुकम श्रीजिनचन्द्रसूरि गुरु, सइहथि दीन वडाइ ।

मश्रीश्वर कर्मचद्र महोच्छव, कोनउ तवहु वनाइ ॥२॥शुभो॥
पातिशाह अकरर जाकु मानत, जानत सब लोकाइ ।

कहइ 'गुणविनय' सुगुरु चिरजोवउ, श्रीसघ कु सुखदाइ ॥३॥शुभो॥

(२) राग गैवाडउ

श्रीगौतम गुरु पायनमी, गाउ श्री गच्छराज

श्रीजिनसिंघ सूरिमरु, पूरवड वठित काज ॥

पूरवड वठित काज सहगुरु, सोभागी गुण सोहइ ए

मुनिराय मोहन वेलि ने परे, भविक जन मन मोह ए ।

चारित्रपात्र कठोर किरिया, धरमकारज उद्यमी

गच्छराजना गुणगाइस्युजी, श्रीगौतम गुरु पयनमी ॥१॥

गुरु लाहोर पवारिया, तेडाव्या कर्मचद्र ।

श्री अकरर न सहगुरु मिया, पोम्या परमाणद ।

पामीया परमाणद ततक्षण, हुकम दिउ उठो ने कियो ।

अत्यंत आदर मान गुरुने, पादशाह अकबर दियउ ।

धर्म गोष्ठि करता दया धरता, हिंसा द्रोप निचारिया ।

आणंद वरत्या हुआ ओच्छव, गुरु लाहोर पधारिया ॥२॥

श्रीअकबर आग्रह करी, काश्मीर कियो रे विहार,

श्रीपुरनगरभोहामणुं ,निहा वरतावी अमार ॥

अमार वरती सर्व धरती, हुओ जयजयकार ए,

गुरु सीत ताप(ना) परीमह. सखा विविध प्रकार ए ।

महालाभ जाणी हरख आणी, धीरपणुं हियडे धरी,

काश्मीर देश विहार कीधो, श्रीअकबर आग्रह करी (३)

श्री अकबर चित रंजियो, पूज्यने करड अरदास ।

आचारिज मानसिध करड, अम मन परमउल्लास

अम्ह मन आज उलास अधिकड, फागुण शुद्धी वीजड मुदा ।

सइहत्थि जिनचंदसूरी दीधो, आचारिज पद संपदा ।

करमचंद मंत्रीसर महोत्सव, आडंबर मोटो कियो ।

गुरुराजना ॥४॥

गुण देखि गिरुआ, वरीस सह गुरु, चापड। चडती कला ।

चापशी साह मल्हार चापल. देवि माता तन डला,

पादसाह अकबरसाहि परख्यो, श्रीजिनसिध सूरी चिरजयउ ।

आसीस पभणइ “समयसुन्दर”, संघ सह हरखित थयउ ॥५॥

इति श्रीजिनसिहसूरीणा जकड़ी गीतं समाप्तम्



(३) गुरु गीतम्

आज मर मन की आज फली ।

श्रीजिनसिंहसूरि मुख देखत, आरति दूर टली ॥१॥

श्रीजिनचंद्रसूरि सइहत्थइ, चतुर्विध सघ मिली ।

शाहि हुकम आचारज पदवी, दीधी अधिक भली ॥२॥

कोडि चरिस मत्री श्रीकरमचंद्र, उत्सव करत रली ।

“समयसुन्दर” गुरुक पत्रपकज, लीनो जेम अली ॥३॥

(४)

जिनसिंहसूरि हीडोलण गीत

मरजनि नामणि वीननु, आपज्यो एक पसाय ।

श्रीआचार्य गुण गाइमु, हीडोलगा र आणद अगिन माय ॥१॥ही०॥

आज श्रीजिनसिंहसूरि, ही० प्रह उगमन(ल)इ सूरि ।ही०

सुझ मन आणद पूरि, ही० दरमण पातिक दूरि ॥आ०॥

मुनिराय मोहण वल्डी, महियल महिमा आज ।

चद जिन चढती कला ही० श्रीसघ पूरव२ आस ॥२॥

मोभागी महिमा निलउ, निलउट दीपइ नूर ।

नरनारि पाय कमल नमइ, ही० प्रगट्यो पुण्यपडूर ॥३॥ही०॥

चोपडा वशइ परगडउ, चापसी शाह मल्हार ।ही०

मात चापल द उरि धर्या, ही० प्रगट्यउ पुण्य प्रकार ॥४॥ही०॥

चोपसी गच्छ सिर तिलउ, जिनसिंहसूरि सूरीस ।

चिरजयउ चतुर्विध सघ सु, ही० ‘समयसुन्दर’ थ२ आसीस ॥५॥ही०

(६) जिनसिंहसूरि गहुंलो

चालउ सहेली सहगुरु वादिवाजो, सखि मुझ मनि वादिवानो कोड़ रे ।
 श्रीजिनसिंहसूरि आवीयाजो, सखो करुं प्रणाम कर जोड़ रे ।१।चा०
 मात चापलदे उरि धर्याजी, सखो चापसो शाह मल्हार रे ।
 मनमोहन महिमा निलउजो, सखी चोपड़ा साख शृङ्गार रे ।२।चा०
 वइरागइव्रत आदर्योजी, सखी पेच महाव्रत धार रे ।
 सकल कलागम सोहताजी, सखी लब्धि विद्या भंडार रे ॥३॥चा०॥
 श्री अकबर आग्रह करिजी, सखी कास्मोर कियउ विहार रे ।
 साधु आचारइ साहि रंजीयउ रे, सखी तिहां वरतावि अमारि रे ।४।चा०
 श्रीजिनचंद्रसूरि थापोयउजी, सखी आचारिज निज पदधार रे ।
 संव सयल आस्या फली, सखी खरतर गच्छ जयकार रे ।५।चा०।
 नंदि महोच्छव मंडोयउजी, सखि कर्मचंद्र मंत्रीस रे ।
 नयर लाहोर वित बावरइजो, सखो कवियण कोडि वरीस रे ।६।चा०।
 गुरुजी मान्या रे मोटे ठाकुरेजी, सखी गुरुजी मान्या अकबरसाहि रे ।
 गुरुजी मान्या रे मोटे ऊंबरेजो, सखी जसु श त्रिभुवनमाहि रे ।७।चा०
 मुझ मन मोह्यो गुरुजी तुम गुणेजी, सखि जिम मधुकर सहकार रे ।
 गुरुजी तुम दरसन नयणे निरखताजी, सखी मुझमनि हर्षअपार रे ।८।
 चिर प्रतपइ गुरु राजीयउजी, सखो श्रीजिनसिंहसूरीस रे ।
 'समयसुंदर' इम विनवइजी, सखी पूरउ माहरइ मनही जगीस रे१।चा०

वधावा (६)

आज रंग वधामणां, मोतीयडे चउक पूरावउ रे ।

श्रीआचारिज आविया, श्रीजिनसिंहसूरि वधावउ रे ॥१॥आ०॥

जुगप्रधान जगि जाणीयइ, श्रीजिनचदसूरि मुणिद रे ।

सइहथि पाटइ यापीया, गुरु प्रतपइ तजि दिगद रे ॥२॥आ०॥
सुर नर फिन्नर हरपीया, गुरु सुललिन वाणि वखाणइ रे ।

पाति ॥हि प्रतिभोधियउ, श्रीअऊनर साहि सुजाण रे ॥३॥आ०॥
बलिहारी गुरु वणयडे ? (वयगडे) बलिहारी गुरु मुखचन्द रे ।

बलिहारी गुरु नयणडे, पेसहात परमाणद रे ॥४॥आ०॥
धन चापल दे कूलडी, धन चापसी साह उदार र ।

पुरप रत्न जिहा उपता, श्री चोपड़ा सार अङ्कार र ॥५॥आ०॥
श्री सरतर गच्छ राजियउ, जिनशासन माहि दीवउ र ।

“समयसुन्दर” कहइ गुरु मेरउ, श्रीजिनसिंहसूरि चिर जीवउ ॥६॥आ०॥

इति श्री श्री श्री भावाय जिनसिंहसूरि गीतम्

॥ श्री हर्षनन्दन मुनिनालिपीकृतम् ॥

✽

(७)

आज कुं धन दिन मेरउ ।

पुन्य दशा प्रगटी अम मेरी, पदतु गुरु मुख तेरउ ॥ १ ॥ आ० ॥

श्री जिनसिंहसूरि तुहि (२) मर जीउ मे, सुपनइ मइ नहींय अनेरो ।

कुमुदिनी चन्द जिसउ तुम लीनउ, दूर तुही तुम्ह नेरउ ॥२॥आ०॥

पुन्यारइ दरसन आणद (मोपइ) उपजती, नयन को प्रेम नवेरउ ।

“समयसुन्दर” कहइ सन कु बलभ, जीउ तु तिन थइ अधिकेरउ ॥३॥आ०॥

(८) चौमासा गीत ।

श्रावण मास सोहामणो, महियल वरसे मेहो जी ।
 वापीयडारे पिउ २ करइ, अम्ह मनि सुगुरु सनेहो जी ॥
 अम मन सुगुरु सनेह प्रगट्यो, मेदिनी हरयालियां ।
 गुरु जीव जयणा जुगति पालइ, वहइ नीर परणालियां ॥
 सुध क्षेत्र समकित वीज वावइ, संव आनंद अति घणो ।
 जिनसिध सूरि करउ चउमासउ, श्रावण मास सोहामणो ॥ १ ॥
 भलइ आयउ भादवउ, नीर भर्या नीवाणो जी ।
 गुहिर गंभीर ध्वनि गाजता, सहगुरु करिही वखाणो जी ॥
 वखाण कल्पसिद्धात वाचइ, भविथ राचइ मोरडा ।
 अति सरस देसण सुणी हरपइ, जेम चंद चकोरडा ॥
 गोरडी मंगल गीत गावइ, कंठ कोकिल अभिनवउ ।
 जिनसिंहसूरि मुणिंद गाता, भलै रे आव्यो भादवउ ॥२॥
 आसू आस सहु फली, निरमल सरवर नीरो जी ।
 सहगुरु उपराम रस भर्या, सायर जेम गंभीरो जी ॥
 गंभीर सायर जेम सहगुरु, सकल गुण मणि सोहए ।
 अति रूप सुंदर मुनि पुरंदर, भविथ जण मण मोहए ॥
 गुरु चंद्रनी परि झरइ अमृत, पूजतां पूरइ रली ।
 सेवतां जिनसिध सूरि सह गुरु, आसू मास आसा फली ॥ ३ ॥
 काती गुरु चढती कला, प्रतपइ तेज दिणंदो जी ।
 धरतीयइ रे धान नीपना, जन मनि परमाणंदो जी ॥
 जन मनि परमाणंद प्रगट्यो, धरम ध्यान थया घणा ॥

घलि परव त्रिवाली महोत्सव, रलीय रग वधामणा ॥

चउमास प्यार मास जिनसिंघ, सूरि सपद आगला ।

वीनवर वाचक 'समय सुन्दर', काती गुरु चढती फला ॥४॥

—

(९) गहलो

आचारिज तुम मन मोहियो, तुम जगि मोहन वेलि ।

सुन्दर रूप सुहामणो, वचन सुवारस फलि ॥ १ ॥आवा॥

राय रागा सन मोहिया, मोहो अकधर साह र ।

नर नारी रा मन मोहिया, महिमा महियल माह र ॥ २ ॥आवा॥

कामण मोहन नवि करौ, सुधा दीसो छो साधु र ।

मोहनगारा गुण तुम तणा, ण परमारय साय रे ॥ ३ ॥आवा॥

गुण दग्गी राचे सहुको, अगुण राचे न कोय र ।

हार सहुको द्वियड धरै, नेउर पाय तलि होय र ॥ ४ ॥आवा॥

गुणत र गुरु अहत्तणा, जिनसिंहसूरि गुरुराज र ।

ज्ञान त्रि वा गुण निर्मला, "ममय सुन्दर" सरताज र ॥ ५ ॥आवा॥

(१०) गुरुराणी महिमा गीत

गुरु वाणी (जग) मगलउ मोहीयउ, माचा मोहण वलो जी ।

साभलता सहुनई सुख सपजई, जाणि अमी रस ग्लो जी ।१।गुरुवा॥

वानन चदन तइ अति सीतली, निरमल गग तरगो जी ।

पाप परालइ भयियण जण तणा, लागो मुझ मन रगो जी ।२।गुरुवा॥

वचन चातुरी गुरु प्रतिबुद्धवी, साहि "सलेम" नरिंदो जी ।
 अभयदान नउ पडहो बजावियउ, श्रीजिनसिह सूरिंदो जी ।३।गुरु०॥
 चोपड़ा वंशइ सोभ चढ़ावतउ, चापसी शाह मल्लारो जी ।

परवादी गज भंजण केसरी, आगम अर्थ भंडारो जी ।४।गुरु०॥
 युगप्रधान सडंहाथइ थापिया, अकबर शाहि हजुरो जी ।
 'राजसमुद्र' मनरंगइ उचरइ, प्रतपउ जां ससि सूरु जी ।५।गुरु०॥

(११) गच्छपति पद प्राप्ति गीत

श्रीजिनसिहसूरि पाटइ बड्ठा, श्रीसंघ आव्या (झा?) मान रे ।

खरतरगच्छपति साही (पदवी) पाइ, वाध्यउ दिन दिन वान ॥ १ ॥

माई ऐसा सदगुरु वंदीयइ, जंगम जुगहपूरधान रे ।

कोडि दीवाली राज करउ ज्युं, ध्रुवतारा असमान रे ।२।मा०॥

सूरिमंत्र सिर छत्र विराजइ, क्षमा मुगट प्रधान रे ।

सुमति गुपति दुइ चामर बीजइ, सिंहासण धर्मध्यान रे ।३।मा०॥

श्रीसंघ रे युगप्रधान पदवी लही, आया "मकुवरखान" रे ।

साजण मण चित्या हुआ, मल्या दुरजण माण रे ।४।मा०॥

श्रीसंघ रंग करइ अति उच्छव, दीधा बहुला दान रे ।

दश दिशि कीर्त्ति कवियण बोलइ, 'हरषतन्दन' गुणगान रे ।५।माई०॥

(१२) ॥निर्वाण गीतं ॥ ढालः निंदलरी

मेडतइ नगारि पधारोया, श्रीजिनसिह सुंजाण हो । पूजजी० ।

पोस वदि तेरस निसि भरइ, पाम्यउ पद निरवाण हो ।१।पूजजी०॥

तुम पउढया माहर किम सरइ, पउढण नी नही वार हो । पूजजी०॥

नयण निहालउ नेह सु, वइठउ सहू परिवार हो ॥ आकणी० ॥

दीर्घ नौद निवारीयर, धम तणइ प्रस्ताव हो । पूजजी० ॥

राइ प्रायच्छित साचवउ, पडिकमणउ शुभ भाज हो ॥१॥पू०॥

झालर वाजी वहरइ, वाजउ सस पडूर हो ।

तरवर पसी जागीया, जागउ सुगुर सनूर हो ॥३॥पू०॥

प्रहफाटी पगडउ थयउ, हीयउ पिण फाटण हार हो ।

बोलाया बोलइ नहीं, कइ रुठउ करतार हो ॥४॥पू०॥

समरइ सगला उतरा, "मुकुरवखान" नमान हो ॥पू०॥

कागल दस विदज ना, बाची करइ (उ?) जनान हो ॥५॥पू०॥

लहुडा चेला लाडिला, मी(वि?)नति करइ विशेष हो ॥पू०॥

पाटी परवाडि दीजीयर, मुहडर सामठ देख हो ॥६॥पू०॥

ए पातिसाही मेवडउ, ऊमो करइ अरदास हो ॥पू०॥

एक घडी पट्लु नहीं, चालउ श्री जो पाम हो ॥७॥पू०॥

आवी वादिवा आविका, ओसवाल श्रीमाल हो ॥पू० ॥

यथासमाधि कहइ करउ, एक वखान रसाल हो ॥८॥पू०॥

चोल्णहारउ चलि गयउ, रह्या बोलावण हार हो ॥पू०॥

आप सवारय सीझन्यउ, पामनउ सुरलोक सार हो ॥९॥पू०॥

मौन ग्रहउ मनचितवी, कीधउ कोइ आलोच हो ॥पू०॥

सगला शिष्य नवाजीया, भागउ मूल वी सोच हो ॥१०॥पू०॥

पाट तुम्हारइ प्रनपीयउ, श्रीजिनराज सनूर हो ॥पू०॥

आचारिज अधिक्री कला, श्रीजिनसागर सूर हो ॥पू०॥११॥

भवि ० याज्यो वदना, श्रीजिनसिंह सूरिद हो ॥पू०॥

सानिध करज्यो सर्वदा, 'हरपनन्दन' आणद हो ॥१२॥पू०॥

श्री खेमराज उपाध्याय भक्ति

सरसति करि सुपसाउ हो, गाड सु सुहगुरु राउहो ।

गाइसुं सुह गुरु सकल सुगतरु, गछि खरतर सुहकरो ।

महियलइ महिमावंत मुणिवर, बालपणि संजम धरो ।

सिद्धान्त सार विचार सागर, सुगुणमणि वयरागरो ।

जयवंत श्री उवझाय खेमराज, गाडसु सही ए सुह गुरो ॥१॥

भवियण जण पडि वोहड हो, छाजहडह कुलि सोहड हो ।

छाजहड कुलि अवतरीय सुहगुरु, साह लीला नन्दणो ।

वर नारि लीलदेवी उयरइं, पाप तापह चन्दणो ।

दिखीया श्री जिनचन्द्रसूरि गुरि, संवत पनर सोलेत्तरड ।

सीखविय सुपरइं सोमधज गुरि, भवियण, (जण) संशय हरइ ॥२॥

उपसम रसह भंडारु हे, संजमसिरि उर हारु ए ।

संजम सिरि उर हार सोहइं, पूरव ऋषि समवडि धरइ ।

नवतरत नवरस सरस देसण, मोह माया परिहरइ ।

जिणआण धरइ हीयडइ, पंच पमाय निवारए ।

उवझाय श्री खेमराज सुहगुरु, चवद विधाधारए ॥३॥

कनक भणइ सिरनामी हे, मइ नवनिधि सिद्धि पाभी हे ।

पामीय सुहगुरु तणीय सेवा, सयल सिद्धि सुहामणी ।

चाउले चौक पूरेवि सुहव, वधावउ वर कामिणी ।

दीपंत दिनमणी समउ तेजइ भवियजण तुम्हि वंदउ ।

उदिवंता श्री उवझाय खेमराज, 'कनक' भणइ चिरनंदउ ॥४॥

गुरु गीतं (वर्द्धं भं० गुटका से) १७ वीं सदी लि०

श्री भावहर्ष उपाध्याय गीतम्

श्री सरसति मति दिड घणी, सुहगुरु करउ पसाय ।

हरप करी हु वीनवु, श्रीभावहर्ष उवज्ञाय ॥ १ ॥

श्री भावहर्ष उवज्ञायवर, प्रतपउ कोडि वरीस ।

तूठी सरसति देवता, हरपि दीय२ आसीस ॥ २ ॥

तुडि करीन२ किम तोली(य)ड, धीर गम्भीर गुणेहि ।

मेरु महासागर मही, अधिका ते गुरु देहि ॥ ३ ॥

दिन दिनि सजमि सचडइ सायर जिम सित । पारि ।

तप जप रप तेह्वी करइ, जिसी न लाभइ लारि ॥ ४ ॥

सुरवर जिम सोहामणा, मन वडित दातार ।

हर्ष ऋद्धि सुख सपदा, तर आवण जलधार ॥ ५ ॥

राग :—सोरठी

जलवर जिउ जगत्र जीवाडइ, मन परम प्रीति पदि चाडइ ।

देसण रस सरस दिखाडइ, दुख दहनति दूरि गमाडइ ॥ ६ ॥

आवक चावक उठाह, मोर जीम श्री सघ साह ।

सरवर ते भविण अरण, वाणी रमि भरियइ विण ॥ ७ ॥

ऊगड तिहा सुकृत अरूर, टलइ मिथ्या भर तमल (तिमिर?)पूर ।

सताप पाप हुइ चूर, जिन ॥सन निमवणउ नूर ॥ ८ ॥

श्री भावहर्ष उवज्ञाय, ते जलिहर कहियइ न्याय ।

उपसम रसि पूरित काय, सोहइ ससारि सजाय ॥ ९ ॥

दूहा :- श्रीजिन माणिकमूरि गुरु, दीधउ पद उवझाय ।

जेसलमेरइ माहि मुदि, दममि नमउ तसु पाय ॥ १० ॥

सुगुरु पाय प्रमोद नमीयड, दुख दुर्गति दूरड गमीयड ।

भव सागरि भिमि न भमीयड, सुख संपति सरिसा रमीयड ॥११॥

खरतरगछि पूनिम चन्द, गुरु दीठइ मनि आणंद ।

सेवंता सुरतरु कंद, रंजइ गुरु वचनि तरिद ॥१२॥

साह कोडा नंदन धन्त, कोडिम दे उयरि रतन्त ।

‘कुलतिलक’ सुगुरु चा सीस, उवझाय सदा मुजगीस ॥१३॥

श्री भावहर्ष हितकारी, सुधउ मुनि पंथ विचारी ।

पंच समिति गुपति गुणधारी, विहरइ गुरु दोष निवारी ॥१४॥

श्री भावहर्ष उवझाया, चिरजीवउ मुनिवर राया ।

मई हरखइ सुहगुरु गाया, मुज हीयडड अधिक सुहाया ॥१५॥

(संग्रहस्थ पत्र १ तत्कालीन लि० रचित)

सुखनिधान गुरुगीतिका

राग धन्याश्री

सुगुरु के पणमो भवियण पाया,

श्रीसमयकलश गुरु पाटि प्रभाकर, सुखनिधान गणिराया ।१।

हुंउ वंस विक्षात सुणीजइ, छइ सुख संपति ध्याया ।

गुणसेन वदति सुगुरु सेवातइ, दिन २ तेज सवाया ।२।

* १ सं० १६८९ चैत्रछदि ३ दिने शुक्रवारे पं० गुणसेन लिखीतं

ऋषिदेव रतन वाचनार्थ (श्रीपूज्यजी संग्रह हथगुटकेसे)



श्री साधुकीर्ति जयपताका गीतम् ।



॥ जयपताका गीत ॥

सोल्हसइ पचवीसर समर, आगाइ नयरि विशेष र ।

पोसहकी चरचा थकी, सरतर सुजस नी रख रे । १ ।

सरतर जइत पद पामीयउ, साधुकीर्ति जय सार र ।

साहि अकरर षहउ श्रीमुखइ, पण्डित एह उदारर । सर०
“बुद्धिभागर” तणी बुद्धि गइ, भासीयउ अति अविचार र ।

पष्ट थया तपा अपिमती, सरतरे लह्यउ जयकार र । २ ।

सस्कृत तपलो न बोलीयउ, थया तिसाण अपार र ।

चतुर अकरर मुख पडिते, करी सागर बुधि हार र । ३ । सर०
तर्क व्याकर्ण पढयउ नहीं, मरम ए सुण्यउ अखण्ड ए ।

मलम सागर बुधि ऊधडयउ, जाणीयउ अशुचि नउ पिंड र । ४ । सर०
गगदासि साह धोधू तणइ, मोडीयउ कुमत नउ माण र ।

वचन पतिशाह ए बोलीयउ, बुद्धि सागर अजाण र । ५ । सर०
पीतलि माहि थो नीकली, अहया रङ्ग पतङ्ग र ।

अपिमती सहू अ०२ प्हवा, सागर बुद्धि तणइ भग रे । ६ । सर०
हुकम करि पातिशाहइ दीया, भेरि दमाम नीसाण रे ।

गाजतइ पाजतइ आवीया, सरतर सुजस वसाण रे । ७ । सर०

श्रीजिनचन्द्रसूरि सानिधड, “दया कलग” गुरु सीस रे ।

“साधुकीर्ति” जगि जयत छड, कहड कवि “जलह” जगीमरे । ८।ख०
॥ इति श्री साधुकीरति गुरु जयपताका गीतं ।

(२)

संवन् दस मय असोयड पाटणड, ची (चैत्य) वासी मलिमाणो जी ।

खरतर विरुद लहयड दुर्लभ मुखड, सूरि जिणेमर जाणोरे । १ ।
जय पाडयड (पाम्यो?) खरतर पुरि आगरड, साधुकीर्ति बहु नूरे जी ।
पोसह पर्व दिनड जिण थापीयड, अकवर साहि हजुरे रे । २। जय
आगरड पुरि मिगसरि धुरि वारसी, सोलपंचवीस वरीस जी ।

पूरव विरुद सही उजवालयड, साधुकीर्ति मुजगीशो रे । ३।ज०
च्यारि वरण खरतर (कुं)जय (जय)करि, जाणइ वाल-गोपालजी ।

वूठा वाट वटाऊ सहु कहड, कुमती सिर पंच तालोजी । ४। जय
कुवुद्धि पट्ट थयड तड पिण सही, नीलज अनड.....॥

तस्कर जिम दुइ भेरि वजाविनड, आ०यड रयणी ठामजी । ५।ज०
चाइमल मेघदास नेतसी, ले अकवर फुरमाणो जी ।

पंच शब्द वजावी जय लहयड, खरतर कोयड मंडाणो जी । ६।ज
श्रीजिनदत्त कुशलसूरि सानिधड, उत्तम पुण्य प्रकारो जी ।

कर जोडी नइ “खइपति” वीनवइ, खरतर जय-जयकारोजी । ७।ज
इति श्री जयपताका गीतं ॥ श्री । आ० भरही पठनार्थं ॥

(पत्र १ श्रीपुजजी सं०)

(३) गहली राग—असावरी

वापि रनाल अमृत रम सारिणी, मोह्या भवियग लोइ जी ।

सूत्र भिद्धन अर्थ सूधा फट्टइ, सुगता सवि सुत्र होइ जी ॥१॥

नदगु साधुकीर्ति नितु वन्दोयरा पाम रम भडारो जी ।

शील मुदद मजम गुण आगला, मयल मघ मुखनारो जी । म०
पच सुमति त्रण गुति भलो परइ, पाल निरतीचारो जी ।

जे नर-नारी पय सेवा करइ, उत्तर तरइ ससारो जी ॥१॥ म० ।

वन्निग नल्लन गुरु चटनी फला, ओमवग मिगारो जी ।

घन पैमल ष जिणि ज्यरइ धया, मचितो पुलि अवनारो जी । ३ स०
दरमणि नयनिधि सुत्र सम्पति मिल, दयानल्लन गुरु मीसोजी ।

“द्वयकमल” मुनि फर जोडी भणइ, पूरवउ मनह जगोसो जी । ४ स०

॥ म० १६२५ वर्षे श्रावणमुदि १० आगरा नगर जिनचन्दसूरि
राज्य हसकीर्ति लिगिन श्राविका साहिनी पठनार्थ ॥ पत्र १ श्री-
पुजगीय समहमें । (अनायी, पार्श्व गीतसह)

(४) कवित्त

साधुकीर्ति साधु अगस्ति जिमो, मत्र सागरको नाद उतार्यो ।

पति ॥६ अकररय दरवार जीतउ जिणवाद पुमति विचार्यो ।

पीत्रउ जिण तिण चक्रवार भडार दीयउ छघु नीति विचार्यो ।

सकुच्यउ अद्ध सागर माजि गयो,

गरन इक हानि भज गच्छ निकाया ११

कवि कनकशेफ कृत

जइतपद वेलि

सरसति सामणी वीनवुं, मुअ दे अमृत वाणि ।

मूल थकी खरतर तणा, करिस्थुं विरुद वखाणि ॥१॥

आवक आवी मिली सुणो, मनधरि अति आणंद ।

चित्त विपवाद न को धरउं, साचउं कहइ मुनिंद ॥२॥

सोलहसय पंचीसइ समइं, वाचक दया मुनीस ।

चउमासि आया आगरै, बहु परि करि सुजगीस ॥३॥

“रतनचन्द” वधराग गणि, पण्डित “साधुकीर्त्ति” ।

“हीररंग” गुण आगलो, ज्ञाता “देवकीरत्ति” ॥४॥

तप करि “हंसकोर्त्ति” भलो, “कनकसोम” जसवंत ।

“पुण्यविमल” मनि ध्यान धरि, “देवकमल” बुधिवंत ॥५॥

“ज्ञानकुशल” ज्ञाता चतुर, “यशकुशल” हि जस लिद्ध ।

“रंगकुशल” अति रंग करी, “इलानंद” सुप्रसिद्ध ॥६॥

वैरागे चारित्र लीयो, “कीरत्ति(वि)मल” सूजाण ।

वड़ जिम साखा विस्तरौ, दिन २ चढ़ते वान ॥ ७ ॥

चालि नितु दिन २ चढतइ वान, श्री संघ दीयइ बहुमान ।

तपले चरचा उठाइ, आवकने बात सुणाइ ॥८॥

सो सरिखो पंडित जोइ, नही मझि आगरै कोइ ।

तिणि गर्व इसो मन कीधउं, बुद्धिसागर अपयश लीधो ॥९॥

आनक आगे इम बोलइ, अम्ह गाथारस(थ?) कुण खोलइ ।

आवक कहइ गर्व न कीजइ, पूछी पडित समझोजइ ॥१०॥

सधवी सतीदास कु पूछइ, तुम्ह गुरु कोइ इहा छइ ।

सधवी गाजी नइ भाखइ, साधुकीर्ति ठै इम दाखइ ॥११॥

लिखि कागद तिणि इक दीन्हउ, आवक वचने न पतीनउ ।

पोसह तिहि एक प्रकार भ्रमि भूलउ त अविचार ॥१२॥

साधुकीर्ति तत्व विचार्या, तत्वारथ माहि सभायों ।

पौष छइ दोइ प्रकार बूझ्यो नहीं सही गमार ॥१३॥

तिहा लिखत दोष दस दीह्या, तपला तन थया निरीह्या ।

मिली पद्मसुदर नइ आखउ, गच्छ न्यासीकी पत राखउ ॥१४॥

दूर।—पद्म सुदर इम बोलियउ, वदन नायउ काइ ।

स्वारथ पढीओ आपणइ, तउ आयो इण ठाइ ॥१५॥

हिव अपराव समउ तुम्है, पडयो वरासउ एह ।

हिव सणै तुम आविया, काइ दिखाडउ छैह ॥१६॥

तपले ने सतोपीउ, पिणि साक्यउ मन माहि ।

साधुकीर्ति जिहा आविस्यै, तिहा हु आविसु नाहि ॥१७॥

सुणी वात सरतर सररी, सघ मिल्यो सघ आइ ।

गाल वजाडइ ऋषिमती, हिव डीला तुम्ह काइ ॥१८॥

चालि—डीला हिव हम्हे न होस्या, ऋषिमतीयनकी पत खोस्या ।

सरतर तेजसी बोलायो बहु आणद सु त आव्यो ॥१९॥

पचे मिलि वात पतोठी, परगच्छी हुआ वसीट्टी ।

चउथान कि चरचा थापो, ते घर लिखि अनइ अम्ह आपउ ॥२०॥

तपला रिप तुं सोचावई, इहा पद्मसुंदर नहीं आवई ।

करिस्था पातिसाह हजूर, खरतर घरि वाज्या तूर ॥२१॥

मिगसर वदी छद्म प्रभातई, मिलिआ पातिसाह संघातई ।

वाइमल्ल बोलायउं पिछाणी, साहि वात सहु गुदराणी ॥२३॥

आणंदइ खरतर मालहई, कविराज कइंकी आहवालई ।

निज २ थानक सवि आया, विहाणई कविराज बुलाया ॥२३॥

अनिरुद्ध महादे मिश्र, मिलिया तिह भट्ट सहथ ।

साधुकीर्त्ति संस्कृत भाखई, बुधिसागर स्युं स्युं दाखई ॥२४॥

पंडित कहइ मूढ गमार, तेरो नाम छै बुद्धि कुठार ।

पोपह चरचा दिन पंच, साचउं खरतर पक्ष संच ॥२५॥

दूहाः

कविराजई निर्णय कीयउं, जूठउं बुद्धि कुठार ।

साहि पासि जाई कहू, पोपह पर्व विचार ॥२६॥

पद्मसुन्दरइम चिंतवई, इणि हाणई मो हानि ।

साहि पास जाइ कहई, द्यो हम जीवीदान ॥२७॥

मिगसर वदी वारस दिने, गया साहि आवासि ।

खरतर पूठइ देवगुरु, तपा गया सब नासि ॥२८॥

साहि हजूर बोलाविआ, श्वेताम्बर कउं न्याय ।

हुं करिस ततखिण खरउं, तेड्या पण्डित राय ॥२९॥

ढाल

हिव तेड्या पंडित रायई, कविराज सभा बोलायई ।

साधुकीर्त्ति संस्कृत बोलई, खरतर कहि केहनइ तोले ॥३०॥

साहि सुगत दीयइ सानासि, सरतर मनि अधिक उल्लास ।

बुद्धिसागर कउ न जाणइ, साहि साधुकीर्त्ति कु वलाण२ ॥३१॥

पडित सभ (व? भा?) बोल्इ एम, निर्णय कीधो छै जेम ।

सरतर गच्छ कउ पन साचउ, तपला परि फोड न राचउ ॥३२॥

मूढ पडित सम किम होइ, पातिसाह विचार्या जोइ ।

तत्र परमसुदर बोलायउ, लुकि रह्यो सभा माहि ना०यो ॥३३॥

चउपवीं पोपह चाप्या, सरतर कु जइतपद आप्यो ।

गजनगीया सरतर लोक, ऋषिमती थया सत्र फोक ॥३४॥

विण हुकम भेरि हु (हु?) इ वाचइ, तपा राति दीवी ले आन० ।

पातिसाह सुणी ए वात, तपलारउ फरउ निपात ॥३५॥

चा०मल मघइ छोडाया, मान भग करी कढवाना ।

तपला कहइ सर भरि कीजइ, दुरि(इ?)भेरि हुकम इन्ह दीजइ ॥३६॥

दूर।:—

सरतर मनहि विचारियो, एह वात किम होइ ।

जीती वाजी हारीयइ, करउ पराक्रमको० ॥३७॥

घोधू चाइमल नेतसी, मेघउ पारस साह ।

नमिदास धगराज सहजसिंघ, गगदास भोज अगाह ॥३८॥

श्रीचद श्रीवच्छ अमरसी, दरगह परवत वलाण ।

छाजमल गढमल भारहू रडउ सामीदास सुजाग ॥३९॥

चीकानव (य?)री तिहि मिल्या, भेहवचा सपवाल ।

आवक सभ (व?) तेडावीया, महिम के फोटीवाल ॥४०॥

चालिः-

मिलि पहुतावी चापमि, बड्ढी छुं जिहां आवासि ।

आदर तिठ अवि(क^१)उंदीधउं, गुरु मंत्रि चित्त वमि कीधउं॥४१॥
चाडमल्ल मेधउं वात वणाड, अकवर रे तिहा लीया बुलाड ।

परवत नेमीदास हजूर, दीजउं वाजा हुकम पडूर ॥४२॥
अउलीआ पातिसाहि तूडुं, सडंहाथि थापि लीउं पूठउं ।

सभ वाजा जडत वजावउं, अपणा पोरह कुं वधावउं ॥४३॥
खोजा छडीदार पट्टाया, खरतर साचा जस पाया ।

भेरि मद्दल ढोल नीसाणा, वाज्या चढ्यो बोल प्रमाण ॥४४॥
संघ मेलि मिल्यउं आणंदइं, गुरु सोहड श्रीसंघ वृन्दइं ।

वाजार आगरइं केरइं, पडसारउं कीवउं भलेरइं ॥४५॥
खरतरै जडत पद पायो, भागत जन सहु अबुलायउं ।

पंच वरण व वाइ अनेक, पहिराया संधि विवेक ॥४६॥
हारयउं तपलो सहु जाणइं, खरतर कुं लोक वखाणइं ।

साखी भट्ट छुं इण वातइं, खरतर परव शुद्ध विख्याते ॥४७॥
जिनदत्त कुशल सानिद्धइं, जिनभद्रसूरि वंश वृद्धइं ।

जिनचंद्रसूरि सुप्रसादइं, खरतरे जीतउं इण वादइं ॥४८॥
दया “अमरमाणिक्य” गुरु सीस, साधुकीर्ति लही जगीस ।

मुनि “कनकसोम” इम आखइं, चउविह श्रीसंघकी साखइं॥४९॥

(तत्कालीन लिखित पत्र ३ संग्रहमें)

जयनिधान कृत

साधुकीर्ति गुरु स्वर्गगमन गीतम्

सुखकरण त्रीराति जिणेसरु, समरी प्रवचन वचनए जी ।
 सोदण सुदगुरु गा२५, नि नभा जी ॥१॥
 चतुर निरोमणि भावई वदीयइ, 'श्रीसाधुकीरति' ज्ञज्ञायो जी ।
 प्रहसमि भविण्य कामित सुरतरु, ररतरगच गुरुरायोजी ॥आ०॥
 सवन सोल पनोसइ सुह दिनइ, 'श्रीजिनचद्रमूर्तिदा' जी ।
 भावव मासइ सुदि पुनम थापिथा, पाठरु पद आणदो जी ॥२॥च०॥
 सु कुल 'सचिती' श्रीगुरु उपना, 'खेमल' घरि हसो जी ।
 'वस्तपाल' पिता जसु जाणिये, मुनिजन महि अवतसो जी ॥३॥च०॥
 नाण चरण गुण मयल फला घरु, जग परिमल सुविसालो जी ।
 'अमरमाणिक्य' गुरु पाटइ दीपना, अठमि शा इदलभालो जी ॥४॥च०॥
 गाम नयर पुरि विहरा महीयलई, पडिवोदी जणपुन्दो जी ।
 सोल ध्यालई आया सवनइ, पुरि 'जालोर' मुणिदो जी ॥५॥च०॥
 माह वहुल परि अणमण उग्ररि, आणो निय मन ठामो जी ।
 ॥६॥च०॥

आठ पूरी चउदसि दिन भलइ, पहुता तत्र सुरलोक जी ।
 धूम अपूर्व फियउ गुण (रु?)तणउ, प्रणमोजइ वहुलोक जी ॥७॥च०॥
 इण फलिकारे श्रीगुरु जे नमइ, भाव धरी नरनारी जी ।
 समन्ति निर्मल हुइ वलि तहनई, धन फणसुत सुखकारी जी ॥८॥च०॥
 धन धन 'साधुकीर्ति' रलियामणा, सनही नाम सुहाए जी ।
 पाय कमल जुग नितु तस प्रणमता, घरि घरि मगल थाए जी ॥९॥च०॥
 उल्ल आणी सहगुरु गा२५, वाचक 'रायचद्र' सीसि जी ।
 आसा पूरण सुरमणि सुरगवी, जयनिधान' सुह दीसि जी ॥१०॥च०॥

वादी हर्षनन्दन कृत

श्री संमयसुन्दर उपाध्याय देशमें गतिकम्

२०८

(१) राग (भास्वी)

साच 'साचोरे' सद्गुरु जनमिया रे, 'रूपसीजीरा' नंद ।
 नवयौवन भर संयम संप्रद्योजी, सइंहथ 'श्रीजिनचंद' ॥ १ ॥
 भले रे विराज्यो उपाध्याय देशमें रे, 'समयसुन्दर' सरदार ।
 अधिक प्रतापी वड़ जिम विस्तरै रे, शिष्य शाखा परिवार ॥भले॥२॥
 चवदै विधा आपण अभ्यसी रे, पण्डित राय पडूर ।
 छोड़ाया सांडा मयणे मारता रे, राउल 'भीम' हजूर ॥भले॥३॥
 'लाहाउरे' 'अकवर' रंजियो रे, आठ लाख अरय दिखाड़ ।
 वाचक पदवी पण पामी तिहां रे, परगड़ वंश 'पोरवाड़' ॥भले॥४॥
 सिन्धु विहारे लाभ लियउ धणो रे, रंजी 'मखनूम' सेख ।
 पांचे नदियां जीवदया भरी रे, राखी धेनु विशेष ॥भले॥५॥
 पहिराया पूरा मुनिवर गच्छ ना रे, प्रणमे भूपति पाय ।
 वजड़ाव्या वाजा ताजा मेड़ता रे, रंजी मंडोवर राय ॥भले॥६॥
 वाल्हो लागे चतुर्विध संघ ने रे, 'सकलचंद' गणि शीश ।
 बड़वरखती वादी सदा रे, 'हर्षनंदन' सुजगीश ॥भले॥७॥

कवि देवीदास कृत



(२) राग—आसीवरी सिन्धुडो

‘समयसुन्दर’ वाणारसचंद्रिय, सुललित वाणि वलाणो जी ।
 राय रजण गीतारथ गुणनिलो जो, महिमा मेरु समाणो जी ॥स०॥१॥
 अरथ करी ‘अधर’ मन रीक्षव्यो, बलि फड धीजी घातो जी ।
 ‘जेसलभर’साडा जीउछोडाव्या, रावल करि रलिआतो जी॥स०॥२॥
 ‘शीतपुर’ माह जिण समक्षावियो, ‘मयनूम’ महमद सेखो जी ।
 जीवदया परा पढह करारवियो, रासी चिहुखड रसो जी ॥स०॥३॥
 ढड दिवान सगले दोपता, सघ घणो मोभागो जी ।
 मान मोटा राणा राजिया, वणारीम बडभागो जी ॥स०॥४॥
 सगुण सिगलो गच्छ पहिरावियो, लोक माह यश लोधो जी ।
 ‘हरपनन्दन’ सरसा पिप्य जेहने, ‘वानो’ विरु प्रसिद्धो जी॥स०॥५॥
 जन्ममूमि ‘माचोर’ जेहनी, बश ‘पोरवाड’ विल्यातो जी ।
 मातु ‘लीलाद’ ‘रूपसी’ जनमिया, र हवा गुरु अवदातो जी॥स०॥६॥
 (श्री) ‘जिनचन्दमूरि’ सइहथे दीरिया, ‘सफलचन्द’ गुरु शीरो जी ।
 ‘समयसुन्दर’ गुरु चिर प्रतपै सदा, धै ‘देवीदास’ आसीसो जी॥स०॥७॥

॥ इति श्रीसमयसुन्दरोपाध्यायाना गीतद्वय ॥

[हमार सप्रहमे तत्कालीन लि० प्रति, पत्र १ से]

राजसोम कृत

अहोपाध्याय्य समयसुन्दरजी गीत

(३) ॥ ढाल हांजरनी ॥

नवखंडमें जसु नाम पंडित गिरुआहो, तर्क व्याकर्ण भण्या ।
 अर्थ किया अभिराम पदएकणराहो, आठ लाख आकरा ॥१॥
 साधु वडो ए महन्त 'अकवर' शाहे हो, जेह वखाणीयो ।
 'समयसुन्दर' भाग्यवंत पातिशाह पू(तू?)ठोहो, थापलि इम कछोरे ॥२॥
 जीवदया जशलीव राउल रंजी हो, 'भीम' 'जेशलगिरि' ।
 करणो उत्तम कीध 'साड़ा' छोड़ाया हो, देशमें मारता ॥३॥
 'सिद्धपुर' माहे शेख 'महम्मद' भोटो हो, जिण प्रतिबोधीयो ।
 सिन्धु देश माहे विशेष 'गायां' छोड़ावी हो, तुरके मारती ॥ ४ ॥
 सखर वस्त्र पटकूल गच्छ पहरायो, खरतर गरुअडो ।
 वचनकला अनुकूल प्रबंध देखी हो, शाख कीधाधणां ॥ ५ ॥
 पर उपगार निामत्ति कीधो सगलो हो, धन-धन इम कहे ।
 गीत छंद बहु वृत्ति कलियुग माहे हो, जिणे शाको कियो ॥ ६ ॥
 जुगप्रधान 'जिनचन्द' स्वयंहस्त वाचक हो, पद 'लाहोरे' दियो ।
 'श्रीजिनसिंहसूरिंद' शहर 'लवेरे' हो, पाठक पद कीयो ॥ ७ ॥
 आगम अर्थ अगाह सरंमुख साचो हो, जेजे प्ररूपीयो ।
 गिरुओ गुरु गजगाह पारिवार पूरो हो, जेहनो परगडो ॥ ८ ॥
 कीधो क्रियाउद्धार संवत सोले हो, इक्काणु समे ।
 गौतमने अणुहार पंचाचार पाळे हो, धणुं बली खप करे ॥ ९ ॥

अणसण करि अणगार सवत सतर हो, मय निडोत्तरे ।

‘अहमदानाद’ मक्षार परलोक पहुचा हो, चैत्र शुदि तेरसे ॥ १० ॥

चानीगज दल सीह पाट प्रभाकर हो, प्रतप तेहने ।

‘हरपतन्दन’ अणनीह पण्डित माही हो, लीह काढी जिणे ॥ ११ ॥

प्रगट जासु परिवार भाग्यवन्त मोटो हो वाचक जाणीये ।

दिन दिन जय-जयकार जगजिरजीवो हो, ‘राजसोम’ इम कहे ॥१२॥*

[इति महोपाध्याय समयसुन्दरजी गीत]



॥ श्री यशकुशल सुगुरु भक्तिम् ॥

॥ राग काफ़ी ॥

‘श्री यशकुशल’ मुनीसर (नागुण) गावो तुम्ह सुलकारी ।

सहु जनने सुलसातादायक, विन्न विदारण हारी ॥१॥य०॥

ठाम ठाम महिमा सदगुरुनी, जाणे लोक दुगाड ।

तिम वलि इण देशे सविरोपै, फहता नावै काई ॥२॥य०॥

भर दरियावै समरण करता, हाथे कर ऊधारै ।

ध्यान धरै इक मन जे साचौ, तेहना कारज सारै ॥३॥य०॥

‘कनकसोम’ पाटै उदयाचल, श्री ‘यशकुशल’ मुणिन्द ।

दिन दिन अधिको साहिन सोहे, जिम ग्रह माहि चढ ॥४॥य०॥

महिर करी नड दीजइ दरिशन, जोजइ सेवक सार ।

‘सुलस्तन कडै कर जोडी नै, भवि भवि तू ही आधार ॥५॥य०॥

* यह गीत बाहबेरेके यति श्री नेमिच द्रुजीसे प्राप्त हुआ है । एत द्य उ हँ धन्यवाद देते हँ ।

कविवर श्रीसार कृत
श्री जिनरत्नसूरीरस

[रचना समय सं० १६८१]

.....तोरण चंग ।

दीठां सगला दुख हरइ, थायइ अति उछरंग ॥ ६ ॥ मेरी० ।
अति सखर सुंदर अति भली, सोहइं घणी ध्रमसाल ।

जिह आवी व्यवहारिया, धरम करइ सुविसाल ॥१०॥ मेरी० ।
वन वाग वाड़ी अति घणी, तिहां रमइ लोक छयल ।

सोहइं नगर सुहामणउ, भोगी करइ सयल ॥११॥ मेरी० ।
'रायसिंघ' राय करावियउ, 'नवउ कोट' अमली माण ।

कचमहले करि सोभतउ, केहइ करूं वखाण ॥१२॥ मेरी० ।
हिव राज पालइ रंग सेती, राजा तिहां 'रायसिंघ' ।

वयरी मृगला भांगिवां, ए सादूलोसिंघ ॥१३॥ मेरी० ।
प्रतिपयउ 'राठोड़ा' कुलइं, सेवकां पूरइ आस ।

पट्टराणी साथइ सदा, विलसहि भोगविलास ॥१४॥ मेरी० ।
तेहनइ 'मुहतउ' मलहपतउ, परदुख काटनहार ।

'कर्मचन्द' नामइ दिपतउ, बुद्धइं अभयकुमार ॥१५॥ मेरी० ।
डोलती 'राखी' जेण पृथ्वी, दिया दान अपार ।

'पैत्रीसइ' मांहि मांडियउ, सगलइ सत्तूकार ॥१६॥ मेरी० ।



निनराज मूरिजी—जिन रगसूरिजा

(शालिभद्र चोपन्की प्रतिष्ठ)



'फोडि' द्रव्य दीया याचका, 'लाहोर' नगर उच्लाह ।

श्री 'जिनचन्द' युगवर कीया, पत्तगरियउ 'पतिराहि' ॥१७॥ मेरी० ।

'नव' गाम नइ 'नव' हाथीया, तिहा दिया द्रव्य अनेक ।

श्री जिनसिंहसूरिद' नइ, आचारिज सविवेक ॥१८॥ मेरी० ।

'रायसिध' राजा राज पालइ, मत्रवी तिहि 'कर्मचद' ।

सहू फो लोक सुखइ बसइ, दिन दिन अधिक आणद ॥१९॥मेरी०॥

दूह ।— वसइ तिहा व्यवहारिउ, सोभागो सिरदार ।

धर्म पुरन्धर 'धर्मसी', बोहिय कुल सिणगार ॥ १ ॥

दुरियन नउ पीहर सदा, धर्मो नइ धनवत ।

कुल मडण महिमा निलउ, गुणरागी गुणवन्त ॥ २ ॥

पतिमका नइ गुणवती, शीयलवती वरियाम ।

मनहर नारी तहनइ, 'धारलदे' इणि नाम ॥ ३ ॥

भणि जाणइ चउसठि फला, रूपइजीती रम ।

१६वीं नारि फो नहि, अदभूत रूप अचम्भ ॥ ४ ॥

दोगदक सुरनी परड, सहो सगला सजोगे ।

निज प्रीतम माथइ सदा, विलसइ नय नव भोग ॥ ५ ॥

ढाल बीजी—माहका जोगता नु कहिज्योर अरदास । ए जाति ।

उत्तम गृह माहि (ए) कदा र, पउठि 'धारल' दवि । प्रीतमजी । पउ०

सननइ मोती झुबका र, मुख सज्या नित मेव ॥ प्री० सु० । १ ।

प्रीतमजी बोल० अमृत चाणि प्रीतमजी बोलइ कोयल चाणि ।

प्रीतमजी तु मरउ सुलताण, प्रीतमजी तु तो चतुर सुजाण ।

प्रीतमजी दिठउ स्वप्न उदार, प्रीतमजी कहउ नइ तासु विचार ।
प्रीतमजी थे पण्डित सिरदार ॥ आंकणी० ॥

चोवा चन्दन अरगजा रे, कस्तूरि धनसार । प्री० कस्तूरि० ।
चिहुं दिशि परिमल महमहइ रे, इन्द्र भुवन आकार ॥ प्री० इन्द्रवार
दमणा पाडल केतकी रे, जाइ जुही सुविशाल । प्री० । जा० ।
फूल तिहां महकइ घणा रे, तिम फूलांरी माल ॥ प्री० ति० । प्री० वी० ।
देहदिशी दीवा झलहलइ रे, चन्द्रूअडा चउसाल । प्री० चं० ।
सीतइ चीतर भिल्या भला रे, वारु वन्नरेमाल ॥ प्री० वा० । प्री०
मनहर भोती जालिया रे, करइ कली उजास । प्री० क० ।
पुन्य पखइ किम पामीयइ रे, एहवा सखर आवास । प्री० ए० । प्री०
'धारलदे' पडठि तिहां रे, कोइ न लोपइ लीह । प्री० को० ।
किउं सूती किउं जागती रे, दीठइ सुहणे सीह ॥ प्री० दी० । प्री०
सुहणउ देखी सुहामणउं रे, पामइ हरख अपार । प्री० पा० ।
स्वप्न तणउ फल पूछिवा रे, वीनवीयउ भरतार ॥ प्री० वि० ॥ प्री०
अमृत समी वाणि सुणीरे, जाग्या 'धरमसी' साह । प्री० जा० ।
पुण्ययोग जाणे मिली रे, साकर दूधहि मांहि ॥ प्री० सा० ॥ प्री०
धरि आणंद इसउ कहइ रे, सखरउ लह्यउ सुपन्न । प्री० स० ।
सूरवीर विद्यानिलउ रे, हुइस्यइ पुत्र रतन ॥ प्री० हु० । प्री० ।
कुलदीपक बोहित्थरां रे, अन्ति हुस्यइ राजान । प्री० अं० ।
सिंह तणी परि साहसी रे, थास्यइ पुत्र प्रधान ॥ प्री० था० । प्री० ।
गरभकाल पूरउ हुस्ये रे, सात दिवस नव मास । प्री० सा० ।
पुत्र मनोहर जनमिस्यइ रे, फलिस्यै मन नी आस ॥ प्री० म० । प्री०

हीवडइ हरस थयउ घणउर, मुणिरउ मुपन विचार । प्री० सु० ।

कठति फरी उठि तगर, पडुती मुउन मक्षार ॥ प्री० प० ॥ १२ ॥ प्री० घो०
दूर । धरि (मुवन?) आनी इम चितवइ, अजेमीम घट्ट रात ।

धरम जागरि जाताना, प्रकणणउ परमात ॥ १ ॥

जे भणिया घट्टुत्तरि-फला, भणिया वद पुराण ।

प्रहउगइ घर तडिया, जोसी ज्योतिप जाण ॥ २ ॥

'श्रीधर' 'धरणीधर' सहो, जोमी 'विठ्ठल'म ।

। पठरी खीरोदक धोतीया, आव्या मन व्हासि ॥ ३ ॥

सतोप्या जोसी फडइ, मुपन तणउ फळ गट्ट ।

पुळदीपक सुत होइस्यइ, फूड फहा तउ नेम ॥ ४ ॥

इम फळ मुपन तणउ सुणी, किया उचव असमान ।

सनमान्या जोमी सहू, दिया अनगळ दान ॥ ५ ॥

ढालतीजो' मनि मेघकुमर पत्नीवी ॥ ६ ॥ जाति ।

दिव दीजइ दान अनेक, परियण माहे धव्यउ विरक ।

सुरलोक थकी सुर धवियउ, धारल' धरि अवतरिउ ॥ १ ॥

धधिया लागउ परिवार, माता हरसि तिणवार ।

राजा पिण घइ सन्मान, तिग दिन थो धधियउ वान ॥ २ ॥

इम गरम वचइ सुरद्राइ, तसु माहिमा कठयि न जाइ ।

मास नीजर दोहला पावइ, माता मनि घणु सुहावइ ॥ ३ ॥

जाणइ चन्द्र पान करोजइ, भरि घुट अमिरस पीजइ ।

वलि दान अनगळ दीजर, ललमी रो लाहो लीजर ॥ ४ ॥

जिनराजनी फीज० जात्र, धरि तडो पोसु पात्र ।

सरचीजइ धन असमान, छोडापु वन्दीवान ॥ ५ ॥

सुणियइ श्री जिनवर वाणि, मन लागी अमिय समाणि ।

ध्याउ श्रीअरिहन्त देव, कीजइ सहगुरुकी सेव ॥ ६ ॥
कर्म रोग रामेवा ओसउ, कीजइ पडिकभणउ पोसउ ।

मनशुद्धि ध्यावुं नवकार, दुखियां नइ करू उपगार ॥ ७ ॥
वन वाग जइ उछरंग, प्रीतम सुं कीजइ रंग ।

मनमान्या वरसइ मेह, तउ फलइ मनोरथ एह ॥ ८ ॥
'विमलाचल' नइ 'गिरनार', 'सरोतसिखर' सिरदार ।

भेटूं 'आवू' सुखकारी, पूजा करूं 'सतर' प्रकारी ॥ ९ ॥
तालः जा 'खाजा' लापसी आही, वलि लाडु लाखणसाही ।

परसुं खुरसाणि मेवा, कीजइ साहमीनी सेवा ॥ १० ॥
धन खरची नाम लिखावुं, 'सात क्षेत्रे' वित्त वावुं ।

तिम दुखित दीन साधारू, इणि परि आपउ निसतारू ॥ ११ ॥
इम डोहला पामइ जेह, 'धरमसी' शाह पूरइ तेह ।

उत्तम नर गरभइ आयउ, माता पिण आणंद पायउ ॥ १२ ॥
जउ पापी गरभइ आवइ, तउ मात खिहाला खावइ ।

कइ ठिकरि ना खाइ खणउ, कइं खायइ भीत लवंड ॥ १३ ॥
एतउ गरभ सदा सुकमाल, फलि मात मनोरथ माल ।

गुणवन्त हुस्यइ ए आगइ, तिण सहको-पाये लागइ ॥ १४ ॥
माता मनि घणउ सनेह, सुख देस्यइ नन्दन एह ।

खाउ खारउ नवि खायइ, इम काल सुखे करि जायइ ॥ १५ ॥
दित सात अनइ नव मास, पूरउ थयउ गरभावास ।

फल फूले दहदिशी फलियां, माता मन हुइ रङ्गरलिया ॥ १६ ॥

अति शीतल वाजइ वाय, दुखिमानइ पिण सुख थाय ।

गुणवन्त पुरुष जन जायइ, तव सगलउजग सुत पायइ ॥१७॥
मुह माया वरसइ मेह, लोक २ निवड सनेह ।

सगलइ जगि हुयउ सुगाल, गुणगाव० बालगोपाल ॥ १८ ॥
इम ध०व सु अधरात, सुखसज्या सूती मात ।

‘धारले’ नन्दन जायउ, सूरिज जिम तज सवायउ ॥१९॥
दूह ॥ वरसासा सुदि (सातमां १) दिन, सोलहसय सहनाल ।

अवण नक्षत्र सुहामणउ, बुधवार (इ) सुविशाल ॥११॥
पच उच ग्रह आविया, छत्र जोग सुलकार ।

शुभवेला सुत जन्मयिउ, वरत्यउ जय जयकार ॥२१॥
चन्द्र अन२ सूरिज थकी, सुत नउ अधिकउ तेज ।

रत्नपूज जिमि दीपतउ, सोहइ माता सेज ॥३॥
ढाल चौथी, वधावारो —

दासी आवि दौडति ए, जिण (हा ?) छइ ‘धरमसी’ शाह ।

वधाइ पुत्रनी ए-दीधी मन उमाह ॥ १ ॥
फली आसा सहू ए, जायउ पुत्र रतन । फली० ।

कोजइ कोडि जतन० फली० ‘धरमसी’ साह धन धन्न० ॥फली०॥
उदयउ पूरत्र पुन्य फली आस्या सहू ए । आ० ।

सुत दी०२ दुस वीसर्या ए, वाजइ ताल कसाल ॥

दमामा दुडवडी ए, वाजड वनर माल ॥ २ ॥ फली० ॥
वाज० थालो अति भली ए, वाजइ जागी ढोल ।

हवइ उ००५ घणाए, गीता रा रमझोल ॥ ३ ॥ फली० ।

कुंकुं हाथा दीजीय० ए, सूरव वड आसीस ।

कुमर धरमसी तणउ, जीवउ कोडि वरीस ॥४॥ फली० ।
गलिए, फूल विछाडया ए, नाटक पडउ वत्रीस ।

कुमर भलउ जनमियउ ए, हरख घणउ निभदीन ॥५॥ फली० ।
जन्म महोछव डम करड ए, खरचउ परवल दाम ।

मजल जलधर परड ए, न गिण० ठाम कुठाम ॥ ६ ॥ फली० ॥
याचक जय-जय उचरड, सगा लढड सनमान ।

सयण संतोपिया ए, सखिया करड गुणगान ॥ ७ ॥ फली० ॥
हिव दिन दसमड आवियड ए, करड दसूठुण प्रेम ।

सगा सहि निहतरइ ए, असुचि उतारड एम ॥ ८ ॥ फली० ॥
सतर भक्ष भोजन भला ए, सालि दालि घृत घोल ।

सहू संतोपिया ए, उपरि सरस तंचोल ॥ ९ ॥ फली० ॥
एम जमाडि जुगतसुं ए, दिया नालेर सद्रूप ।

भलउ सहको भणइ ए, उछव कियउ अनूप ॥१०॥ फली० ॥
धन 'धारलदे' नायडी ए, धन २ 'धरमसी' साह ।

कियउ उछव भलउ ए, लियइ लखमीरउ लाह ॥ ११ ॥ फली० ॥
दूहाः करि उछव रलियामणउ, पुत्र तणउ मुख जोय ।

श्री खेतसी नामउ दियउ, दीठां दउलति होय ॥ १ ॥
सहको लोक इसउ कहइ, सयणां तणइ समक्ख (क्ष) ।

'धरमसी' साह प्रतई हूयउ, परमेसर परतक्ख ॥ २ ॥
कुलदीपक सुत जनमियउ, करिस्थइ कुल उद्धार ।

इणि नन्दन जाया पछइ, उदय हुआउ संसार ॥ ३ ॥

वखत बलइ इम जाणियइ, शास्त्र तणइ बलि न्याय ।

सहको राणा राजवी, पडिस्यइ एहनइ पाय ॥ ४ ॥

पगे पद्म झलकर भलउ, लक्षण अगि वत्रीस ।

कइ गढपति कइ गच्छपति' हुइस्यइ विरवावीस ॥ ५ ॥

६।७ ६—सुगुण सनेही मरे लाला । इण जाति ।

धोज तणउ जिम वाधइ चन्द्र, तिम वाधइ 'धारलदे' नन्द ।

मात पिता उमहइ आणद, देवलोक नउ जिम माकन्द ॥१॥

माता सुत नइ ले धवरावइ, वेदा-वेदा कहिय चुलावइ ।

उन्हउ नीर लेइ न्हवरावइ, इम माता मनि आणद पावर ॥२॥

आउ मेरा नन्दन गोदि सिलावु, वगू लट्टु तुनइ अणावु ।

केलवि काजलधालइ अरिया, सोलर ले खेलावर सरिया ॥३॥

कानि अडगनिया पाइ पन्हइया, धमकर पगि धूधरिया वनिया ।

चदलउ करि वागउ पहिरावइ, सिरिकसवीकी पागवनावइ ॥४॥

करय२ माता कठइ लागइ, करय२ लोटइ माता आगइ ।

कइयइ घडा ना पाणी डोहइ, करय० हसि माता मन मोहइ ॥५॥

करय५ दूधनी दोहणी डोल२, करय० हीचइ चढि हींढोलइ ।

करय२ झाल२ मारण तरतउ, करयइ िपइ माता थी डरतउ ॥६॥

करयइ मा नउ कचूअउ ताण२, कइय२ काधइ चढिय पलाणइ ।

करय५ हसि मा साम्हउ जोवइ, करयइ रुसण भाडी रोवइ ॥७॥

देखी कुवर कहइ इम माता, इणि सुत दीठा थायइ साता ।

मति को पापी नजरि लगाव२, गुली काठिलउ गलइ वधावइ ॥८॥

माऊ ० कहतउ पासइ आव२, काइ पूत मा एम बुलावइ ।

प्रेम नजरि माँ साम्ही मेलइ, दूध माहि जाणे साकर मेलइ ॥९॥

भणमणा बोलइ बोल अमोल, पहिरयउ वागो रातउ खोल ।

अंगि शृङ्गार करावइ सोल, माता सूं डम फरइ रंगरोल ॥१०॥
फेरइ चकरडी माता प्रेरइ, बालूडा बलिहारी तैरइ ।

दंगूलट्टू फेरइ चंगा, हाथइ गोटा ल्यइ पंचरंगा ॥११॥
ऊंचउ उपाडइ ले बाहडिया, माता कहइ आउ मेरा नान्हडिया ।

हाथे बालइ सोवन कडिया, गूंथी छइ फूलनी दडियां ॥१२॥
मइ सोलही पासा सारइ, रमइ पंचेटे विविध प्रकारइ ।

बीजा बालक सहको हारइ, जीपइ कुमर भाग्य अणुसारइ ॥१३॥
इम उच्छव सुं नव-नव केलइ, 'धारलदे' रउ धोटउ खेलइ ।

रूपइ भयण तणउ अवतार, सात वरस नउ थयउ कुमार ॥१४॥
बुद्धई बीजउ वयर (अभय?) कुमार, आवइ सहु सुणियउ इक वार ।

मात पिता चितइ उद्दासइ, कुमर भणावउ पंडित पासइ ॥१५॥

दूहा: पुत्र भणइवा मांडियइ, पण्डित गुरुनइ पाय ।

विद्याआवी तेहनइ, सरसति मात पसाय ॥ १ ॥

भली परइ आवी भले, सिद्धो अनइ समान ।

'“चाणाइक” आवइ भला, नीतिशास्त्र असमान ॥ २ ॥

तेह कला कोइ नहीं, शास्त्र नहीं बलि तेह ।

विद्या ते दीसइ नही, कुमर नइ नावइ जेह ॥ ३ ॥

कला 'बहुत्तरि' पुरपनी, जाणइ राग 'छतीस' ।

कला देखि सहु को कहइ, जीवो कोड़िवरीस ॥ ४ ॥

“षड़ भापा” भाषइ भली, “चवदह विद्या” लाध ।

लिखइ 'अठारह लिपी' सदा, सिगले गुणे अगाध ॥ ५ ॥

ढाल सधिनो छट्टो:—पणमिय पास जिणेसर पैरा। इणजाति ।

कुमर हिवइ जोवन वय आयउ, दिन दिन दिपइ तेज सवायउ ।

गरुअउ यश तिहुमवणे गायउ, धन धन ,धारलदे' उ(द)र जाउउ ॥१॥

सूरिज जिम तेजइ करि सोढइ, मेह तणी परि महिअल मोहइ ।

'निसण' तणी पर सूर सदाइ, दानइ 'करण' थकी अघिकाइ ॥२॥

रूपइ 'मनमथ' नउ मद गाल्यउ, काम क्रोध विपयारस टाल्यउ ॥३॥

सायर जिम सोहइ गभीर, मेर महीधर नी परि धीर ।

कलपवृक्ष जिम इच्छा पूरइ, चितामणी जिम चिता चूरइ ॥४॥

'विक्रमादित्य' जिसउ उपगारी, अह्निसि सेवक नइ सुखकारी ।

पाच 'पडव' जिम बलवत, सीह तणी परि साहसवत ॥५॥

नयन कमल नी परि अणियाली, सोहइ अवर जाणइ परवाली ।

करइ हाथ सु लटका मटका, बोलइ वचन अमी रा गटका ॥६॥

काया सोहइ कचण वरणी, सोहइ हाथे सल' समरणी ।

लखतवतो मोहण वेलि, हस हरावइ गजगोतिगेली ॥७॥

मस्तक सुंदर तिलक विराजइ, दरसण दीठा भावठि भाजइ ।

पहिरइ नित २ ननर वागउ, तेगदार माहे अधिकउ तागउ ॥८॥

रायराणी सहुको छइ मान, धरमध्यान करिवा सावधान ।

न करइ परनिन्दा परधात केहा केहा कहू अवदात ॥९॥

देरि दिन दिन अधिक प्रतापइ, वाका वयरी थरथर कापइ ।

महीयलि सिंगले बोलइ पूरउ, इणपरि विचरइ कुमर सनूरउ ॥१०॥

हिउ इणि अउसर श्री] 'वीकाणइ', 'अकर' जेहनइ आप वखाणइ ।

सरतरंग' माहे प्रबल पडूर, आठ्या गुरु 'श्रीजिनसिंह'सूरा ॥११॥

सुविहृत साधु तणइ परिवारइं, दे उपदेश भविक निरतारइं ।

विचरइ महियल उग्र विहारइ, आप तरइ लोकां नइ तारइ ॥१२॥
हुवइ सवल तिहा पइसारइ, जिनगासनि रो वान वधारइ ।

कलिकालइ गौतम अवतारइ, पूजजी 'वीकानयर' पधारइ ॥१३॥
हरखित हुआ सहूको लोक, जिम रवि दंसणि थायइ कोक ।

वड़ा वड़ा आवक सुणइ अशेष, पूजजी एहवउ दइ उपदेश ॥१४॥
दोहो : ए सायर गाजइ भलउ, अथवा गाजइ मेह ।

वाणी सांभलता थकां, एहवउ थयउ संदेह ॥१५॥
पोपइ 'नव रस' परगड़ा, करइ 'राग छतीस' ।

सरस वखाण सुणी करी, सह को दइ आसीस ॥१६॥
ढाल सातमी : भेधमुनि कांइ डमडोलइरे । इणजाति ।

सहको आवक सांभलइजी, लोक सुणइ लख गान ।

"खेतसी" कुमर पधारियाजी, इणपरि सुणइ वखाण ॥१७॥
भविकजन धरम सखाइ रे, जीवनइ सुखदाइ रे ।

कीजइ चित्त लाइ रे, भविकजन धरम सखाइ रे ॥अँकणी०॥
सदगुरुनी संगति लहीजी, लाधौ आरिज खेत ।

मानव भव लाधउ भलउजी, चेत सकइ तउ चेत ॥२॥ भविक० ॥
इण जगि सरव अश्राशतउजी, हीयइ विचारी जोय ।

इम जांणिरे प्राणियाजी, ममता मां करउ कोय ॥३॥ भविक०॥
माया मोह्या मानवीजी, धन संचइ दिन राति ।

वयरी जम पूठइ वहइंजी, जीव न जाणइ घात ॥४॥ भविक०॥
दश दृष्टंते दोहिलउजी, लाधउ नर भव सार ।

तिहा पणि पुण्यइ पामियइंजी, उत्तम कुल अवतार ॥५॥ भविक०॥

पत्रीस लाख विमान नउ जी, साहिन छड जे इन्द्र ।

ते पनि आवक कुल सदा, बउड धरि आणद ॥६॥भविक्०॥

वरजीजइ आवक कुलइ जी, अनतकाय पत्रीस ।

मधु मारण वरजइ सदाजी, तिम अबध बावीस ॥७॥भविक्०॥

सामायिक छे टाल्यइभी, त्रीस अनइ दुइ टोप ।

परनिदा नवि कीजियइजी, मन धरियइ सुतोप ॥८॥भविक्०॥

इक दिन दिक्षा पालीयइजी, आणी भात्र प्रधान ।

तउ सिवपुर ना सुग लहइभी, निश्चय दव विमान ॥९॥भविक्०॥

इणि जगि सरव अराधतोजी, स्वारथ नउ सहु फोय ।

निज स्वारथ अणपूजतइजी, सुत फिरी वयरी होय ॥१०॥भविक्०॥

चितामणी सुरतरु समउजी, जिनवर भापित धर्म ।

जउ मन लुहइ कीजियइजी, तउ तूटइ सही कर्म ॥११॥भविक्०॥

दोह ।—खेतसी पुमरइ समल्यउ, जिनसिंह सूरि वखाण ।

वाणी मनमाह वसी, मिठ्ठी अभिय समाण ॥१॥

करजोडी एहवउ कहइ, आणि हरस अपार ।

तुम्ह उपदशइ जाणियउ, मइ ससार असार ॥२॥

तिणि कारण मुक्षनइ हिवइ, दीजइ सजमभार ।

कृपा करि मो उपरउ, इणि भविथी निस्तार ॥३॥

वलनउ गुर इणि परि कहइ, मकरउ ए प्रतिनध ।

मात पिता पूउउ जइ, करउ धरम सम्बन्ध ॥४॥

ढाल आठभीः—माहके दह रंगीली चूनरी—रणजाति ।

अहो गुर वादी नइ उठियउ, आन्यउ माता नइ पास हो ।

कर जोडिनइ इणि परि कहइ, आणी मन माहि उलास हो ॥५॥

मोनइ अनुमति दीजइ मातजी, हुं लेइस संजमभार हो ।
 जगि स्वारथ नउ सहु को सगउ, मिलीयोछइ ए परिवार हो ॥२॥मो०॥
 सहगुरु नी देसण सुणी, मन मांहि धरी अनुराग हो ।
 हिव इणिमवथी मन उभगउ, मुझ नइ आन्वउ वयरगहो ॥३॥मो०॥
 अहो देस विदेश फिरी करी, खाटीजइ परिवल आथि हो ।
 पणि परलोकइ जातां थका, तो नावइ प्राणी साथि हो ॥४॥मो०॥
 अहो इणभवि परभवि जीवनइ, सुख कारण श्रीजिनधर्म हो ।
 जिणथी सुख सम्पति सम्पजइ, कीजइ तेहिज कर्म हो ॥५॥मो०॥
 अहो डाम अणि-जल जेहवउ, जेहवउ चञ्चल नय (हय?) वेग हो ।
 माता अथिर तिसउ ए आउखउ, आण्यउ इम जाणि संवेग हो ॥६॥मो०॥
 अहो इणि जगि को केहनउ नहीं, परिजन नइ वलि परिवार हो ।
 भगवन्तरउ भाख्यउ जीवनइ, इक धर्म अछइ आधार हो ॥७॥मो०॥
 अहो जीव तणइ पूठइ वहइ, सर सान्ध्यइ वयरी काल हो ।
 तिण कारण करसुं मातजी, पाणी आव्या पहलइ पाल हो ॥८॥मो०॥
 अहो ए सुख भोगवतां छतां, दुख थाय पछइ असमान हो ।
 ते सोनउ केथउ कीजियइ, जे पहिरयउ तोडइ कान हो ॥९॥मो०॥
 अहो जेह बडा सुखिया अछइ, वलि हुस्यइ सुखिया जेह हो ।
 ते सहु को पुण्य पसाउलइ, इहां कोइ नहीं सन्देह हो ॥१०॥मो०॥
 भेदाणी धरमइ करी, माता मुझ साते धात हो ।
 सुनिवर नउ भारग मांहरइ, हियडइ वसियउ दिनरात हो ॥११॥मो०॥
 दोहा :- पुत्र वयण इम सम्मली, संजम मति सुविशाल ।

मुर्छाङ्गत माता थइ, पड़ी धरणी तत्काल ॥ १ ॥

गगोदक सु छाटिनइ, धीइया शीतल वाय ।

सावधान हुइ तदा, इणि परि जम्पइ माय ॥ २ ॥

तु नान्दियउ मारइ, तु सुझ जीवनराण ।

एक घडी पिण दिन समी, तोरइ विरह सुजाण ॥ ३ ॥

तु सुकमाल सोहामणउ, दोहिलउ सजम भार ।

बोल विचारी बोलियइ, सजम दुष्करकार ॥ ४ ॥

तन वन यौवन लहो करी, विलसउ नवनव भोग ।

बलि बलि लहता दोहिला, एहवा भोग सजोग ॥ ५ ॥

वेलि (९):—उही एहवा भोज सजोग, विलसीजइ नवनवभोग ।

तु “बोहियरा” कुल दीवउ, तिणि कोडि वरस विरजीवउ ॥१॥

सुत तु सुकमाल सारइ, तु सिगलानइ सुखार ॥२॥

जिणवर भासित ले दोक्षा, तु किणो परि मागिसी भिक्षा ॥२॥

तु पडितचतुर सुजाण, तु बोलइ अमृत-वाणि ।

तुज गुण गावउ सहु कोइ, तुज सरिरउ पुरिस न फोइ ॥३॥

दोहा :—सामलता पिण दोहिली, सुत सजमनी वात ।

आवक धरम समाचरउ, तु सुकमाल सुगात ॥ १ ॥

वेलि :—सुत तु सुकमाल सुगात, मत कहिजो सजम वान ।

इणि गहमइ सजम भारइ, विचरवउ खडा धारइ ॥१॥

बहुला मुनिवर आगेइ, चूका छइ चारित लेइ ॥

तिणी वात इसी मत कहिजो, डोकरपणि चारित लेज्यो ॥२॥

इणि जीवनवय तु आयउ, तु नन्दन पुण्यइ पायउ ।

घणा दुखित दीन सधारउ, ‘बोहिय कुल’ वान वधारउ ॥३॥

- दोहा : वचन महवड सामलि, इणि परि कहइ कुमार ।
कायर कापुरिसा भणी, दुहिलउ संजम भार ॥ १ ॥
- वेलि : माता दुहिलउ संजम भार, जे कायर हवड नर-नारि
जो सूर वीर सरदार, तिणनड स्थुं दुकारकार ॥ १ ॥
- गाथा : ता(उ)तूंगोमेरुगिरी, मयरहरो(सायरो)तावहोडदुत्तारो ।
ता विसमा कज्जगड, जाव न धीरा पवज्जंति ॥ १ ॥
- वेलि : जे कुल ना जाया होवड, ते कुलवटि साम्हउ जोवड ।
तिण कारण ढील न कीजड, माताजी अनुमति दीजड ॥२॥
- दोहा : संजम उपर जाणियउ, सुत नउ निवड सनेह ।
हिव जिम जाणो तिम करउ, दीधी अनुमति एह ॥ १ ॥
- वेलि : हिव दीधी अनुमति एह, संयम सुं निवड सनेह ॥
दिक्षा नउ उच्छव कीजड, मुंह मांग्या धन खरचीजड ॥१॥
- धरि रङ्ग 'धरमसी' शाह, इम उच्छव करइ उच्छाह ।
धरि मंगल वाजित्र वाजड, तिणि नादइ अम्बर गाजइ ॥२॥
- वाजइ भुगल नइ भेरी, वाजइ नवरंग नफेरी ।
वाजइ ढोल दमामा ताली, गुण गावइ अवलावाली ॥३॥
- वाजइ सुन्दर सरणाइ, सुणता अरणे सुखदाइ ।
वाजइ झलरि ना झणकार, पडइ भाडल ना दोकार ॥४॥
- वाजइ राय गिडगिडी रंग, विध विध वाजइ मुख चंग ।
गन्धर्व बजावइ वीणा, सुणइ लोक सहु तिहां लीणा ॥५॥
- वाजइ त्रिवली ताल कंसाल, गीत गावइ बाल-गोपाल
आलापइ राग छत्तीस, इम उच्छ (व) थाय जगीस ॥६॥

दोहा • उष्णोदक सु कुमर नइ, भलउ करायउ स्नान ।
 अङ्गि शृङ्गार फीया सहु, वणियउ वेप प्रधान ॥ १ ॥

वेलि :—हिव वणियउ वेश प्रधान, गगोदक सु फीया स्नान ।
 मोतीयडे कुमर वधायउ, आभरणे अगवणायउ ॥ १ ॥
 मस्तकि भलउ मुकुट विराजइ, दोइ फानइ कुण्डल छाजइ ।
 त्रिहु वाहे वरणा सध, फरि मोहइ बाजुन्ध ॥२॥
 उर वर मोतिन कउ हार, पाइ घुवरिया धमकार
 अठव उपरि थयउ असवार, याचक करइ जयजयकार ॥३॥
 ताजा नेजा गयणइ सोहइ, वरजोलइ इम मनमोहइ ।
 ॥४॥

दोहा:—हिव गुरु पासइ आवियइ, मिलीया माणस थाट ।
 कुमर तणउ जस उचरइ, 'चारण' 'भोजिग' 'भाट' ॥ १ ॥

वेलि:—हिव 'चारण' भोजिग भाट', "धरमसी" शाह करइ गहगाट
 "खेतसी" गुरु पायइ लागइ, गुरु वादी वठउ आगइ ॥१॥
 इम पभणइ "धरमसी" शाह, ए कुमर वडउ गज गाह ।
 पूजजी हिव कृपा करीजइ, ए माहरि थापण लीजइ ॥ २ ॥
 हिव कुमर सुणे वाल्खा, ले दिक्षा चलिजे रुडा ।
 नुरजीनो कह्यो करेजो, सूधउ सज्जम पालेजो ॥ ३ ॥
 जिम दीप० 'वोहिथ' वश, तिम करिजो सुत अवतश ।
 क्रोधादिक वयरी दाटे, महियली बहुलउ जस राटे ॥ ४ ॥
 पुजन्त० किसी सीस मीखावा, स्यु दात नइ जीभ भलावा ।
 जिम सहुको कहइ धन धन्त, तिम करिज्यो पुत्र रतन्त ॥५॥

दोहा : 'सोलहसय छपन्त' मंडं, संवत्सर सुखकार ।

'मिगमर सुदी तेरमि' दीनड, लीयउ संजम भार ॥१॥

भाणक मोती माल सह, हय गय रथ परिवार ।

छंडी संजम आदर्यो, जाण्यो अथिर संमार ॥२॥

दे दिक्षा नामउ कीयउ, 'राजसिंह' अणगार ।

हिव 'श्रीजिनसिंहसूरि' गुरु, करड अनेथ विहार ॥३॥

वेलि : हिव करड अनेथ विहार, 'राजसिंह' हुआ अणगार ।

लीयउ पंच महाव्रत भार, पट जीव नउ राखणहार ॥१॥

पंच सुमति भली परि पालड, विषयारस दृग्दं टालड ।

काड धरम दश परकारड, पाटोधर वान वधारड ॥२॥

ग्रहणा सेवन दुड शिक्षा, सीखी संजम नी रिक्षा ।

मंडलि तप वूहा जाणि, 'श्रीजिनचन्दसूरि' त्रिनाणी ॥३॥

दीधी दीक्षा वडड विरुद, नामउ दीयउ 'राजसमुद्र' ।

हिव शास्त्र भण्या असमान, ते गिणतां नावड गान ॥४॥

उपधान वूहा मन रंग, 'उत्तराध्यन' नड 'आचारंग' ।

तप कल्प तणउ आरुहउ, छम्मासी तप पिण वूहउ ॥५॥

वयसडं बहु पंडित आगड, लुलि लुलि सहि पाये लागड ।

इम लोक कहड गुणागगी, जयउ 'राजसमुद्र' सउभागी ॥६॥

दोहा : भावइ 'आठे व्याकरण' 'अट्टारह-नाममाल' ।

'छप-तर्क' भणिआ भला, 'राग छत्रीस' रसाल ॥ १ ॥

भलइ मेली भणिया वलि, 'आगम पैतालीस' ।

सइंमुख श्री 'जिनसिंह' गुरु, सीलि दीयइ निशदीस ॥२॥

महियलि वादि बड बडा, ताता (ता लग?) गरब वहति ।

जा लागि 'राजसमुद्र' गणि, गरुआ नवि बुद्ध ति ॥ ३ ॥

भोटइ भुनिवर महियलइ, 'राजसमुद्र' अणगार ।

जे जे वि ॥ जोइयइ, तिणि नहु लामइ पार ॥ ४ ॥

'वाचनाचारिज' पद दीयउ, 'श्रीजिनचंद्र सूरिद' ।

पाटोवर प्रतिपउ सत्ता, रलिय रग आणट ॥ ५ ॥

बड वरुनी सुप्रसन्न वरुन, जाग्यो पुण्य अरू ।

परतली दवी 'अम्बिका', हुइ हाजरा हजूर ॥ ६ ॥

परतलि परत-दिठ ए, 'अम्बा' नइ आधार ।

लिपि वाची 'धधानीयइ', जाणइ सत्ता सत्तार ॥ ७ ॥

'जेसलमेर' दुखा गढि, राउल 'भीम' हजूर ।

वादई 'तपा' हराविया चिवा प्रगल पडूर ॥ ८ ॥

इम अनेक चिवा बलइ, साटया बडा निरुद ।

चिवावत बडउ जती, सोहइ 'राजसमुद्र' ॥ ९ ॥

बाल दसमी—उलाला जाति ।

हिय श्री शाहि 'मलेम', 'मानसिघ' सू धरि प्रेम ।

बड बडा साहम धीर, मूफइ अपणा वजीर ॥ १ ॥

तुम्ह 'वीकाणइ' जावउ, 'मानसिघजी' कू बुलावउ ।

इत वर 'मानसिघ' आउइ, तउ मुझ मन (अति) सुरा पावइ ॥ २ ॥

ते 'वीकाणइ' आजा, प्रणमइ 'मानसिघ' पाया ।

दीया मन महिराण, 'पतिसाही-फुरमाण' ॥ ३ ॥

मिलियउ संघ सुजाण, वाच्या ते फुरमाण ।

तेडावा (या?) 'पतिसाह', सहु को धरइ उच्छाह ॥ ४ ॥

हिव श्री 'जिनसिंघ सूर', साहसवंत सनूर ।

चिंतइ एम उल्हासइ, जाइवउ 'पतिसाह' पासइ ॥ ५ ॥

'बीकानेर' थी चलिया, मनह मनोरथ फलिया ।

साधु तणइ परिवारइ, 'मेडतइ' नथरि पधारइ ॥ ६ ॥

आवक लोक प्रधान, उच्छव हुआ असमान ।

श्री गच्छतायक आयउ, सिंगले आनंद पायउ ॥ ७ ॥

तिहां रक्षा मास एक, दिन २ वधतइ विवेक ।

चलिवा उधम कीधउ, 'एक पयाणउ' दीधउ ॥ ८ ॥

काल धरम तिहां भेटइ, लिखन लेख कुण भेटइ ।

'श्री जिनसिंघ' गुरुराया, पाछा 'मेडतइ' आया ॥ ९ ॥

सइंमुखि लीधउ संथारउ, कीधउ सफल जमारो ।

शुद्ध मनइ गहगाहता, 'पहिलइ देवलोक' पहुता ॥ १० ॥

संवत 'सोल चिहुत्तरइ', 'पोषसुदि 'तेरस' वरतइ ।

सोग करइ सहि लोक, पूज पहुंचता परलोक ॥ ११ ॥

हिव देही संस्कार, कीधउ लोक आचार ।

बीजइ दिन धरि प्रेम, लोक विभासइ एम ॥ १२ ॥

आगम गुणे अगाध, मिलीया बड बड़ा साध ।

संघ मिल्यउ गजथाट, कुणनइ 'दीजियइ' पाट ॥ १३ ॥

तब बोलया सही लोग, 'राजसमुद्र' पाट जोग ।

दीजइ एहनइ पाट, जिम थायइ गहगाट ॥ १४ ॥

‘चवदह विद्या’ निधान, मुनिवर माहि प्रधान ।

एह हवड गच्छसर, तउ तूठउ परमसर ॥ १५ ॥

सायर जेम गभीर, मेर महीधर धीर ।

दीठा दालिद जायइ, वाद्या नवनिधि थायइ ॥ १६ ॥

‘राजसमुद्र’ हवड राजा, ‘सिद्धसेन’ हवइ युवराजा ।

तउ सरतरगच्छ सोहउ, सघ तणा मन मोहइ ॥ १७ ॥

दोहा—इम आलोच करि हिवउ, उठड श्रीसघ जाम ।

‘आसकरण’ आवड तिसइ, ‘सघवी’ पद षभिराम ॥ १ ॥

कुलदीपक श्री ‘चोपडा’, वड जेहड विस्तार ।

लखमी रो लाहउ लीयड, सघ माहे सिरदार ॥ २ ॥

श्री सघ आगलि इम कहड ए मोरी अरदास ।

‘पद ठवणो’ करिवा तणउ, द्यो आदेश उलास ॥ ३ ॥

इम अनुमति ले सघनी, धरड चित्त उच्छरग ।

पद ठवणउ सघवी करड, आणी उलट अग ॥ ४ ॥

सवत ‘सोलचिहुत्तरइ’, सोमवार सिरताज ।

‘फागुणसुदि’ ‘मातम’ दिनइ, थाप्या श्री जिनराज ॥५॥

अद्वैतक सोहइ भलउ, ‘श्री जिनराज सूरिद’ ।

प्रतिपउ तारूलगि महियलउ, जा लगि ध्रू रवि चद ॥६॥

सइ हथ ‘श्री जिनराज’ गुरु, थाप्या प्रवल पडूर ।

आचारिज चढती कला, ‘श्री जिनसागरसूरि’ ॥ ७ ॥

सूरिज जिम सोहइ सदा, ‘श्री जि(न?)राज सुरिद’ ।

श्री ‘जिनसागर’ सूरि गुरु, प्रतपइ पृनिम चढ ॥ ८ ॥

हिव श्री 'जिनराज मुरिध्वर', महियल करउ विहार ।

थापउ उच्छव अति वगा, वरेत्यः जय जयकार ॥ ६ ॥

'जेसलमेर' दुर्ग गहि, 'सठसफणउ-श्रीपान' ।

थाप्यः श्री जिनराज गुरु, समर्था पूरउ आन ॥ १० ॥

श्री 'विमलोचल' उपरउ, जे आठमउ उहार ।

कीथी तेहनी थापना, जागः सहु संभार ॥ ११ ॥

परतिव पास 'अमोक्षरः' थाप्यः 'भागवट' माहि ।

इम अवदान किना कहूं, मोटउ गुरु गजगोल ॥ १२ ॥

परतिव देवी 'अम्बिका', परतिवि 'वाचन वीर' ।

'पंचनदी' साथी जिगउ, भाव्या 'पांच पीर' ॥ १३ ॥

श्री खरतरगः सेहरउ, महियलि सुजम प्रधान ।

प्रतपः श्री 'जिनराज' गुरु, दिन २ वयनः वान ॥ १४ ॥

ढाल इन्धारहमी आयो आयःरी समरंता दादा आयः ।

गायः गायःरी जिनराजमूरि गुरु गायः ॥

'श्री जिनसिंह मूरि' पाटोघर, प्रतपः तेज सवायःरी ॥जि०११आ०॥

पूरव पश्चिम दक्षिण उत्तर, चिहुं दिसी सुजस सुहायः ।

रंगी रंगीली छयल छनीली, मोती (य) वेगि वधायःरी ॥२॥जि०॥

धन धन 'धर्मसी' शाह नो नंदन, धन 'धारलदे' जायउ ।

तू साहिव में तेरःसेवर, तुझ चल(र?)णे चित्त लायःरी ॥३॥जि०॥

'सिंधु' देल विहार फरीनइ, 'पाच पीर' वर ल्यायउ ।

उदय हवइ तिणि देसइ अधिकउ, जिणि दिशि पूज गवायःरी ॥४॥जि०॥

श्री 'ठाणाग' नी वृत्ति करिनइ, विपमउ अरथ वतायउ ।

सूरि मन्धारी परउपगारी, इंदु नउ बीजउ भायःरी ॥५॥जिन०॥

सह को आवक रजो 'नव रड', निज नामउ वरतायउ ।

विद्यावत वडउ गच्छ नायक, सहको पाय लगायउरी ॥६॥जिन०॥

सोहर शहर सदा 'सेनावउ' 'मरुधर' माहि मल्हानउ ।

सवत 'सोल इक्यासी', वरसर, एह प्रथ वणायउरी ॥७॥जिन०॥

'आमाढा वदि तेरसि' दिवसइ, सुरगुरु वार कहायउ ।

श्री गच्छनायक गुण गावता, 'मह पिण सनलउआयउ'री ॥८॥जिन०॥

'रत्नरूप' वाचक मन मोहइ, 'राम' वग दीपायउ ।

'हमकीर्ति' मुनिवर मन हरपइ, एह प्रथ करायउरी ॥९॥जिन०॥

श्री 'जिनराजसूरि' गुरु सुरतर, मइ निज चित्ति वसायउ ।

मुनि 'श्रीसार' माहिन सुखनार, मननाजिन फलपायउरी ॥१०॥जिन०॥

इति श्री वरतरगच्छाधिराज सकल साधुसमाज वृढ वदित
पादपद्म निठझ सन्नेक मंगलसद्य श्री जिनराजसूरि सूरिश्वराणा
प्रथ गुम वव वधुरतरो लिखितोय श्री काल् ग्राम ॥ शुभ भूयात
पठक पाठनना मराठमनसा ॥ आविका पुण्यत्रमाविका धारा पठ-
नार्थ ॥ श्री प्रथम दूहा २१, प्रथम ढाल गाथा १६ दूहा ५, वीजी ढाल
गाथा १२ दूहा, ५ तीजी ढाल गा १६ दूहा ३, चौथी ढालगा ११
दूहा ५, पाचमी ढाल गाथा १५ दूहा ५, छठी ढाल गाथा १४
दूहा २, सप्तमी ढाल गाथा ११ दूहा ४, आठमी ढाल गाथा ११
दूहा ५, नवमी ढाल गाथा ३७ दूहा ६, दशमी ढालगाथा १७
दूहा १४, इगारमी ढालगाथा १० सर्व गाथा २२४, सर्व ज्लोक ३२४
सव ढाल ११, (पत्र २ से ६, प्र येक पत्रमे १५ लाइने सुन्दर अक्षर,
ज्ञानभटार दानसागर वडल न० १३ तत्कालीन लि०)

॥ श्री जिनराज सूरि गीतम् ॥

(१)

‘श्री जिनराज सूरेश्वर’ गच्छ धणी, धुरि मायु नउ परिवार ।
ग्रामानुग्रामउ विहरता सखि, वरसता हे देसण जलधार ॥१॥

कडयड सुगुरु पथा रिस्यडजी, डण नयरड हे सखि पुण्य पडूर ।
सूहवि मोती बवारि (वि?) रथे जी ॥ आ ॥

जेहनड वंसड वडत्रडा, गच्छपति हुआ निरदोष ।

देवता जिहनी साखि घौसखि, तिण सुं हे कुण करड मन रोष ॥२॥

‘श्री अभयदेवसूरि’ जिहां हुआ, सखि नव अंग विवरणकार ।

चउसठि योगिणी जिण जीतली, ‘जिनदत्तसूरि’ हे जिहा सुखकार ॥३॥

जेहनी महिमा नउ नहो सखि, पार ग्ह निहाल ।

‘श्री जिनकुशल सूरेश्वर’ सखि, दीपड हे डणि जगि चउमाल ॥४॥क०

पतिगाहि अकवर वृक्षव्यउ, जिणि अमृन वाणि सुणावि ।

‘श्रीजिनचन्द्रसूरेश्वर’ हुआउ सखि, डणि गच्छि हे जग अधिक

प्रभाव ॥५॥क०

‘लाहोरि’ दीधी जेहनड, गुण देखि आप हजूर ।

श्रीयुगप्रधान पदवी भली सखि, छानउ हे रहै किम जगि सूर ॥६॥ क०

तेहनड पाटड प्रगटियउ सखि, ‘श्री जिनसिंहसुरिन्द’ ।

तसु पाटि परतखि थप्पियउ सखि, ए गुरु सोहगनउ कन्द ॥७॥ क०

निर्मलड वंश(ड) ऊपनउ, वजू स्वामि गाखि शृङ्गार ।

श्री‘गुणविनय’ सद्गुरु इसउ सखि, चाहिवा हे मुझ हर्ष अपारा ॥८॥क०

(२) श्री जिनराजसूरि सवैया ।

‘जिनदत्त’ (सूर) अर ‘कुशल’ सूरि मुनिद

घटित दायक जाकु हाजरा हजूर जु ।

चारित पात (विरयात) जीते (है) मोह मिव्यात

और जो अशुभ कर्म किये जिन दूर जु

‘जिणसिध सूर’ पाट सोहै मुनिवर थाट

भणत सुजाण राय विद्या भरपूर जु ।

नञ्जन (नञ्जत्र?) माझ जैसे राजत निञ्जतपति,

सूरिन मैं राजे ऐसे जिनराज सूर’ जु ॥१॥

जैसे बीच वारण(?)के गगके तरग मानो,

कोट सुलदायक भविक सुख साजकी ।

गगन अना नकी ब्रह्म वद विचरत

सत्र रस सरस सजल रीझ काजकी ।

गाजत गभोर अ (घ?) न धार सुध खीर घृद,

अवण सुपात धुन (ध्वनि?) ऐन मेघ गाज की ।

‘जिनसिध सूर’ पाट विधना सो घडी (य) घाट,

अमृत प्रनाह वानी(णी?) सूर ‘जिनराज’ की ॥२॥

‘साहिजहा’ पातिशाह प्रजल प्रताप जाको,

अति ही करूर नूर को न सरदासी (?)है ।

‘असी चउ गठ’ मत्र थहराये जाक भय,

ऐसो जोर चकतौ हुवौ न कोउ भारी है ।

श्रीय 'जिनसिंह' पाट मिल्येऽसाहि मनमुग्ध,

'धरमनी' नंदन सकल जग भाव्यो है ।

कहे 'कविदास' पट्टरथन कुं आरि,

जामनकी टेक 'जिणराज मूर्ति' राव्यो है ।३।

'आगरे' तखत आये सवहीके मन भाये,

विविध वयाये संव सकल उग्रह कुं ।

राजा 'गजसंव' 'मूरसंव' 'अमरपत्थान',

'आलम' 'दीवान' मद्रा मुशुक सराह कुं ।

कहे 'कविदास' जिणसिंह पाट मूर तेज,

अगम मुगम कीने जामन मुग्रह कुं ।

'मिगसर बहु (वदि?)चोथ' 'रविवार' शुभ दिन,

मिले 'जिनराज' 'आहिजहां' पतिआह कुं ।४।

॥ श्री गच्छाधीश जिनराजसूरि गुरु गीतम् ॥

(३) ॥ ढाल अलवेल्यानी जाति मांहे ॥

आज सफल सुरतरु फलयउ रे लाल, आज सफल थयउ दीस । सुखदाइ
गच्छ नायक भेट्यो भलेरे लाल, 'श्रीजिनराज सूरिश' ॥१॥सु०
सोभागी सवि सूरि मइं रे लाल, समता लीन शरीर । सु० ।

दिनकर नी परि दीपतउ रे लाल, धरणीधर वर (परि?)धीर ।सु॥२॥
तूठी जेहनइ 'अंविका' रे लाल, अविचल दीधो वाच । सु० ।

लिपि वाची 'घंघाणियइ' रे लाल, सहुको मानइ साच सु०॥३॥सो०॥

राउल 'भीम' सभा भली रे लाल, 'जेसलमेर' मझारे । सु० ।
 परवादी जीता जिय२ र लाल, पान्यउ जय-जयकार । सु०॥४॥सो०
 'श्री जिनवल्लभ' सामल्यउ र लाल, कठिन क्रिया प्रतिपाल । सु० ।
 इण जगि परतखि पेलिय२ र लाल, 'श्रीजिनराज'कृपाल । सु०॥५॥सो०
 प्रतिपइ पुण्य पराक्रम० र लाल, मानइ सहुको आण । सु० ।
 पिशुन थया सहु पावरा रे लाल, दूरइ तजि अभिमान । सु०॥६॥सो०
 मइ गल जिम गुरु मालहतउ र लाल, मोटा साथि मुणिद । सु० ।
 जन मन मोहइ चालता र लाल, पामइ परमाणद । सु०॥७॥ सो०॥
 क्रोध तज्यउ काया थकी रे लाल, दूरि कियउ अहङ्कार । सु० ।
 मायानइ मानइ नहीं र लाल लोभ न चित्त लिंगार । सु०॥८॥ सो०॥
 श्री सघ सोभ वधारतउ रे लाल श्रीजिनराज मुनीश । सु० ।
 प्रतिपउ गुरु महिमडलइ रे लाल, 'सहजकीरति' आगीस । सु०॥९॥सो०

॥ इति श्री गच्छाधीश गुरु गीतम् ॥

(४) ॥ ढाल, बहिनोनी जाति भारि ॥

गच्छपति सदा गरुड निलउ, पच सुमति गुपति दयाल ।

सुविहित शिरोमणि साचिलउ पच महाव्रत पाल ॥ १ ॥

सद्गुरु वदियइ, 'श्रीजिनराजसुरिन्द' ।

दरशन अधिकआगद, जगम सुरतरु कन्द ॥ आकणी

सघपति शिरोमणि सघवी, श्री 'आसकरण' महन्त ।

पद उवणउ जिहनउ कियउ, खरची धन बहु भाति ॥ २ ॥ सो०॥

पहिरावियउ निज गच्छ सहुए, अधिकी करणी कीध ।

‘श्रीजिनसिंह’ पटोधरु, जग माहे जस लीध ॥ ३ ॥ स०॥
‘बोहित्थ’ वंशड वाधतउ, श्री ‘धर्मणी’ धन धन्त ।

‘धारलदे’ धरणी परडं, जायउ पुत्र रतन्त ॥ ४ ॥ स०॥
जसु देखि साधुपणउ भलउ, हरखि दिवउ बहुमान ।

सावासि तुम्ह फरणी भली, कहड श्री ‘मुकरवलान’ ॥ ५ ॥ स०॥
श्री संघ करड वधामणा, जसु देखि करणी सार ।

गुणवंत सगले ही लहै, पूजा विविध प्रकार ॥ ६ ॥ स०॥
जिण माहि बहु गुण सूरिना. देखियड प्रकट प्रमाण ।

वरणवी हुं नवि सकूं, जसु विद्या तणउ गान ॥ ७ ॥ स०॥
श्री गच्छ खरतर चिरजयउ, जिहां एहवा गच्छराय ।

सीह अनई वलि पाखर्यउ, कहु किम जीपणउ जाय ॥ ८ ॥ स०॥
जिहां लगे मेरु महीधरु, जिहां लगइ शशि दिनकार ।

प्रतिपउ तिहां लगे गच्छधणी, ‘सहजकीरति’ सुखकार ॥ ९ ॥ स०॥

(५)

श्री जिनराजसूरि गुरु राजइ, सिरि जैन तणउ छत्र छाजइ ।

सद्गुरु प्रतपउ जी ॥

दिन-दिन तेज सत्रायो, भविक लोक मनि भायउ ॥ १ ॥ श्री०॥
गजगति गेलइ चालइ, पञ्च महाव्रत पालइ । स० । श्री०॥

मुनिवर मुनि परवारइ, कुमति कदाग्रह वारइ ॥ २ ॥ स०श्री०॥
श्रीजिनसिंह सूरि पाटइ, पूज्य सोहइ मुनि (वर)थाटइ । स० श्री०॥

महिमा मेरु समानइ, दिन-दिन चढतइ वानइ ॥ ३ ॥ स० । श्री०॥

‘धरमसी’ शाह मल्हार, उरि ‘धारल’ अवतार । स० । श्री०

रूपड वरकुमार, विद्या तणउ भण्डार ॥ ४ ॥ स० । श्री०
वाद करो ‘जेसाणइ’, जस लीधउ सहुको जाणर । स० श्री०

पास वरइ जिण जाणी, लिपि वाची ‘धवाणी’ ॥ ५ ॥ स० । श्री०
बोळइ अमृत वाणी, सुरनर कइ मन भाणी । स० । श्री० ।

सुललिन करिय वस्त्राण, रीझविया रायराण ॥ ६ ॥ स० । श्री०
‘बोहित्थरा’ वसइ दीवउ, फोडि वरस चिरजीवउ ॥ स० । श्री०

जा लगि सूरज चन्द, ‘आनन्द’ प्रभु चिरनन्द ॥ ७ ॥ स० । श्री०
(६)

आवउजो माहर पूज इणि देसडर, चीतारइ श्री ‘करण’ नरेश र ।

चीतारइ नरनारि नरश ।

मुझ मुस यी पथीडा वीनवे र, जाई जिण छइ पूज तिण देश र ॥१॥

तीन प्रदिक्षण तू दइ करीरे, श्री जी र तु लागे पाय रे ।

बलि युवराजा ‘रगविजर’ भणी र, इतरउ करिजे वीर पसाय रे ॥२॥ आ०

जसु दरगनि दीठर तन ऊलसइ रे, मेरु तणी पर पूजजी धीर र ।

मिहर करि पूज माहरइ देसडर र, आवउ पुहपा(?) केरा वीर र ॥३॥

सवेग्या माहे सिर सेहरउ र कलि मड गौतम नइ अवतार र ।

जगम तीरथ तारक जगतमइ रे, जिण जीतउ बलि मदन विकारर ॥४॥

पूजजी जे किम मुझ नइ वीसरइ रे, जिणसु धरम तणउ मुझ राग र ।

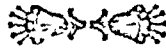
त गुरु वीसाया नवि वीसरइ रे, जेहनउ साचउ जस सोभाग रे ॥५॥

‘श्री जिनराजसूरोमर’ गच्छ घणी रे, मानी मझनी ए अरदास र ।

‘सुमतिविजय’ कहि चतुर्विं सघनी रे पूजजी सफल करउ हिव
आश ॥ ६ ॥ आ०

कवि धर्मकोर्ति कृत

॥ श्री जिनसागर सूरि ररर ॥



दूहा: श्री 'थंभणपुर' नउ धणी, पणमी पास जिणंद ।
श्री 'जिनसागर सूरि' ना, गुण गावुं आणंदि ॥ १ ॥
सरसति मति मुझ निरमली, आपउ करिय पसाय ।
आचारज गुण गांवता, अविहड वर द्यो माय ॥ २ ॥
वीर जिणिंद परम्परा, 'उद्योतन' 'वर्द्धमान' ।
सूरि 'जिणेश्वर' पाटवी, 'जिनचन्द्र' सूरि गुणजाण ॥३॥
'अभयदेव' 'वलभ' गुरु, पाटइ श्री 'जिनदत्त' ।
'जिनचंद सूरिसर' जयउ, सूरिसर 'जिनपत्ति' ॥ ४ ॥
'जिणेश्वर सूरि' 'प्रबोध' गुरु, 'चंद्र सूरि' सिरताज ।
'कुशलसूरि' गुरु भेटतां, आपइ लखमी राज ॥ ५ ॥
'पदमसूरि' तेजइ अधिक, 'लवधि सूरि' 'जिनचंद' ।
पाटि 'जिनोदय' तसु पटइ, श्री 'जिनराज' मुणिंद ॥ ६ ॥
'जिनभद्र' श्री 'जिनचंद' पटि, 'जिनसमुद्र' 'जिनहंस' ।
नामइ नव निधि संपजइ, धन धन 'चोपड' वंश ॥ ७ ॥
मनवंछित सुख पुरवइ, 'माणिक सूरि' मुणिंद ।
'रीहड' वंशइ गरजीयउ, युग प्रधान 'जिनचंद' ॥८॥

श्री 'अकनर' प्रतिबोधीयो, वचने अमृत धार ।

श्री 'सरतर' गच्छराज नी, कीरति समुद्राँ पार ॥ ६ ॥

'युगप्रधान' पद आपीयो, 'अकनर' साहि सुजाण ।

निज हाथि श्री 'जिनसिह' नइ, पदवो दीध प्रधान ॥१०॥

तिण अवसर बहु भाव सु, दड 'सवा कोडि' दान ।

'वच्छावत' वित वानरइ, 'कर्मचद' मत्रि प्रधान ॥११॥

युगतर 'जवू' जेहवउ, रूपड 'वन्-कुमार' ।

'पच नती' साथी जिणइ, शुभ लगन शुभ वार ॥१२॥

सनत 'सोल गुणहतरइ', वृक्षवि साहि 'सनेम' ।

'जिन ॥सनि मुगतउ' कर्या, 'सरतर' गच्छ मन् सेम ॥१३॥

तासु पाटि 'जिनसिह' गुरु, तासु शीस सिरताज ।

'राजसमुद्र' 'सिद्धसेनजी', दरसणि सीक्षर काज ॥१४॥

युगतर श्री 'जिनसिह' नइ, पाटइ श्री 'जिनराज' ।

'जिनसागरसूरि' पाटवी, आचारिज तसु काज ॥१५॥

कनम पिता कुण मात तसु, जनम नगर अभिहाण ।

कुण नगरइ पद थापना, 'वरमकीरति' कहइ वाणि ॥१६॥

ढाल'— तिमरीरइ

'जवू' दीपह थाल समाण, 'लस जोयण जेहनो परिमाण ।

'दक्षिण' 'मरतउ' आरिज देस, 'मरुधरि' 'जगलि' दस निवेस ॥१७॥

तिहा कणि राज० 'रायसिंघ' राज, 'वीकानथर' वसइ शुभकाज ।

ठाम ठाम सोहर हट सेरी, वाजिन वाजइ गावर गोरी ॥१८॥

नगर माहि बहुला व्यवहारी (व्यापारी), दानशील तप भावि उदारी ।
वसई तिहा पुण्यड बहु वित, साह 'वधा' नामड थिर चित्त ॥१६॥

राग : रामगिरी ।

दोहा रथणी सोहड चंद्र सुं, दिनकर सोळडीन ।

तिम 'वधा' 'वोध्थ' कुळड, पूरड मनह जगीन ॥२०॥

ढालः पाछली

तासु घरणि 'मिरगा दे' नती, रूपड रंभा तु जीपति ।

'चउसठि' कला तणी जे जाण, सुखि वोलड सा अमृत वाणि ॥२१॥

प्रिय सुं प्रेम धरड मनि वणड, 'दसरथ' मुन जिम 'सीता' मुणड ।

चंद्र चकोर मनड जिम प्रीति, पालड पतिव्रत धरम ती रीति ॥२२॥

पाचे इंद्री विपथ संयोग, नित नित नवला बहुविध भोग ।

नव यौवन काया मद मची, इंद्र संवातड जाणे सची ॥२३॥

रागः आसावरी

दूहा सुखभरि सूती सुंदरि, पेखि सुपन मध राति ।

रागत चोल रत्नावली, प्रिड नै कहड ए वात ॥ २४ ॥

सुणी वचन निज नारि ना, मेव घटा जिम मोर ।

हरख भणई सुत ताहरड, थासड चतुर चकोर ॥२५॥

ढाल आस फली माडडी मन मोरी, कूखड कुमर निधान रे ।

मनवंचित्त डोहला मवि पूरइ, पामइ अधिकड मान रे ॥२६॥आ०

संवत 'सोळ वावन्ना' वरपई, 'काती सुदो' 'रविवार' रे ।

'चउदसि'ने दिनि असिणि रिखइ(नक्षत्रइ?),जनम थयो सुखकारे॥२७

नित नित कुमर वायड बहु लक्ष्मणि, सुरतरु नउ जिम कद र ।

नयणी अतोपम निलवट सोहइ, वटन पूनम नउ चद र ॥२८॥

सहुअ सजन भगतावी भगतइ, मेलि बहु परिवार रे ।

‘चोलउ’ नाम दियउ मन रगइ, सुपन तणइ अनुसारि र ॥२९॥

साहिअ समाण मिलि मात पासइ, साह ‘वठराज’ कुलि दीव र ।

‘सामल’ नाम धरि हुलरावइ, मुरि वोलर चिरजीव र ॥३०॥

रागः— मारु

दोहा.—रमइ कुमर निज हरससु, मात ‘मृगाद’ पुत्र ।

गजगति गेलइ चालतउ, कुलमडण अदभूत ॥ ३१ ॥

मीठा बोलइ बोलडा, काय कनक नइ वान ।

वालक ‘वत्रीस लखणो’, मात पिता छइ मान ॥ ३२ ॥

ढाल.— पाछली

भाइडी मनोरथ पूरइ, सुन्दर सुसडी आपइ रे ।

बडा वचन नवि लोपीयइ, मन सुधि सीस समापइ र ॥३३॥

आसा वाधी भाइडी, सेवइ सुरतरु जेमो र ।

पोसइ पुमर नइवहु परइ, ‘शालिमद्र’ जिम प्रेमो र ॥३४॥

इण अवसरि तिहा आवीया, ‘जिनसिंह सूरि’ सुजाणो रे ।

श्री सघ वदइ भावसु, उठत्र अधिक मडाणो रे ॥३५॥

मात ‘मृगाद’ सुत सह, निसुणर अरथ विचारो रे ।

मन मइ वैराग उपनो, जाणी अधिर ससारो ॥ ३६ ॥

दोहा.—‘गजसुकमाल’ जिम ‘मेव मुनि’, ‘अइमतो तिण काले ।

‘सामल’ ते करणी करइ, जाणइ बाल गोपाल ॥३७॥

ढाल :- कैदारा गौडी

सांभली वचन सहगुरु केरा, जीवादिक नवतत्व भलेरा ।
 उपशम रस ध(भ?)र कायकलेसी, संजम सेवा बुद्धि निवेसी ॥३८॥
 मात पासे जइ कुमर सोभागी, पभणइ संजमि लीउ मनरागी ।
 अनुमति मोहि दीयउ मोरी माइ, नवि कीजइ चारित्र अंतराइ ॥३९॥
 मात भणइ वछ साभलि साचुं, इण वचनइ पुत्र हुं नवि राचुं ।
 लोह चणा मयण दांति च्वायइ, तेहथी संजम कठिन कहायइ ॥४०॥
 कुमर भणइ माता किं सूर परचारइ, कायर हुइ ते हीयहुं हारइ ।
 संजम लेवा वात कहेवी, मइ पिण निश्चइ दिक्षा लेवी ॥ ४१ ॥

राग : देसाख

दोहा : बडभाइ 'विक्रम' सहित, 'मात' भणइ मु(तु?)झसाथि ।
 करिसुं आत्मारोधना, 'जिनसिंह सूरि' गुरु हाथि ॥४२॥
 दूध माहि साकर मिली, पीतां आणंद होइ ।
 वचन सुणि निज मातना, हरखउ कुमर मनि सोइ ॥४३॥
 'विक्रमपुर' थी अनुकमइ, सदगुरु करइ (अ) विहार ।
 'अमरसरइ' पउधारिया, 'श्रीजिनसिंह' उदार ॥४४॥
 साभाइक पोसउ करइ, पडिकमणउ गुरु पासि ।
 संजम लेवा कारणइ, कुमर मनइ उलासि ॥४५॥
 श्री'अमरसर' संव तिही, हरखित थयउ अपार ।
 वाजित्र बाजइ नवनवा, वरनउलां सुप्रकार ॥४६॥
 'श्रीमाल' वंशि सुहाभणउ, 'थानसिंह' थिर चित्त ।
 संजम उछव कारणइ, खरचइ तिहां बहु वित्त ॥४७॥

सवत 'सोल इकमठ' 'माह' भासि सुभ मासि ।

मात सहित दिक्षा लीयइ, पहुती मन नी आसि ॥४८॥

तिहाथी चारित लेइ नड सदगुरु साथि विहार ।

विद्या सीखइ अति घणी, धरता हर्ष अपार ॥४९॥

अनुक्रमि देस वदावता, आया 'जिनसिंह' राया ।

'राजनगर' 'जिनचंद्र' ने, लागर जुगावर पाया ॥५०॥

पाच समिती तीन गुप्ति जे, पालइ प्रवचन मात ।

छ जीवनी रक्षा करइ, न कर इपर नी ताति ॥५१॥

सामाचारि सूत्र अरथ, जाणइ सरव प्रकार ।

'सतावीस' गुणे करी, सोह' 'सामल' सार ॥५२॥

तप वूहा माडलि तणा बड दिय़ा तिहा दीथ ।

'श्रीजिनचंद्र सूरि' सइहथइ, 'सिद्धसेन' मुनि कीथ ॥५३॥

वूहा उपधान उरुइ, आगम ना बलि जोग ।

'छ मासी' 'प्रिकमपुरइ' सरिया सकल सयोग ॥५४॥

सुगुर भणाव' चाह सु उत्तम वचन विलास ।

युगप्रवान बहु हित धरइ, पहुचइ बटित आस ॥५५॥

चउपइ :—पभणइ शास्त्र सिद्धात विचार, मुणिवर 'सिद्धसेन' सिरदा र

गुरु नड विनय साचवइ भलउ, 'सिद्धसेन' विद्या गुण निलउ ॥५६॥

'अग इग्यारह' 'धार-उपग', 'पयन्ना दस भणइ मन चग ।

'छ छेद' ग्रन्थ मूल सूत्रह 'चारि',

'नन्दी', अनइ 'अनुयोगदुआर' ॥५७॥

‘चउदह’ विद्या तणउ निहारण, सदगुरु उत्तम करइ वखाण ।

उदयवंत अवसर नउ जाण, निज गुरु तणइ जे मानइ आण ॥५८॥

खमावंत मांहे पहली लीह, सोहइ गुरु पासइ निसदीह ।

दस विध जतीधरम नउ धणी, तप जप संयम करुणा घणी ॥५९॥

यात्र करी ‘सैत्रुजा’ तणी, साथइ ‘जिनसिंह सूरि’ दिनमणी ।

संधवी ‘आसकरण’ विख्यात, संघ करावी कारिअ जात ॥६०॥

‘खंभात’ नइ ‘अमदावाद’, ‘पाटण’ माहि धणउ जसवाद ।

‘वडली’ वंद्या ‘जिनदत्तसूरि’, भेट्या पातक जायइ दूर ॥६१॥

इणि अनुक्रमि ‘जिनसिंह सूरि’, ‘सीरोहीयइ’ गुरु सवल पडूरि ।

करिअ पइसारौ वंदइ संघ, राजा मान दिअइ ‘राजसिंह’ ॥६२॥

‘जालउरइ’ आवइ गच्छराज, वाजित्र वाजइ बहुत दिवाज ।

श्रीसंघ मुं वंदइ कामिनी, रूपइ जीति सुर भामिनी ॥६३॥

‘खंडप’ नई ‘द्रूणाडा हेव, ‘धंधाणी’ भेट्या बहु देव ।

अनुक्रमि मन मइ धरिअ ऊलासि, आन्या‘वीकानेर’ चउमासि ॥६४॥

‘वाघमल’ पइसारो करइ, नीसाणइ अंबर थरहरइ ।

कीधा नेजा पोलि पागार, वसतिइं आयां श्रीगणधार ॥६५॥

आनन्दइ चउमासउ करी(इ), आया ‘मेवडा’ बहु हित धरी ।

तेडावइ श्रीशाहि ‘सलेम’, ‘भेडता’ आया कुसले खेम ॥६६॥

रागः वैर।डी

दूह।

तिणि अवसर ‘जिनसिंह’ नउ, परवसि थयउ सरीर ।

देवगतइ छूटा नही, पुरष बडा बहु भीर ॥६७॥

अवसर जाणी तिण समइ, श्रीसघ कहइ विचारि ।

बोळइ सदगुरु चित धरी, वड वलती सिरदार ॥६८॥

अणशग आराधन करी, पहुता गुरु सुग लोग ।

वाजित्र वाज२ तिहा घणा, माडवी तणइ सजोगि ॥६९॥

सोग निवारो थापीया, सखर महुरत लीध ।

भट्टारक गुरु 'राजसी', 'सामल' आचारज कीध । ७०॥

'आसकरण' 'अमीपाल' वलि, 'कपूरचन्द' सुविलाम ।

पद ठवणउ करइ रग सु, 'ऋषभदास' 'सूरदान' ॥७१॥

रागः— आसावरी

तत्र सिणगार्या पोलि पगारा, तवू उचा खचीया ।

मस्तक उपरि मोती झु वड,वहीचड भारइ लचीया ॥

तेह तलइ वरठा बहु लोग, भूमि भाग नहिं माग ।

एक एकनइ वेरहइ भेलदइ, तिल पडिवा नहों लाग ॥७२॥

सखली नादि मडाइ तिहा कणि, वाजित्र विविध प्रकार ।

सूरी मत्र आप्यउ तिण अवसरि, 'हेमसूरि' गणधार ॥

श्री 'जिनराज' सूरिस्वर नाभइ, साधु तणा सिणगार ।

बालपणइ सूरि पद आपी, सुप्यउ गच्छ नड भार ॥ ७३ ॥

तेहिज नादि आचारिज पदवी, 'श्री जिनराज' समीपइ ।

मन सुद्धइ सूरि मत्र ज दइ, 'जिनसागर सूरि' थापइ ।

सजि सिगगारने कामिणी आवइ, भरि भरि मोतिन गल ॥

सोवन फूलि बघाउइ सदगुरु, गाव२ गीत थमाल ॥ ७४ ॥

संवत् 'सोल चउहत्तरि' वरसइ, 'फागुण सुदि' 'सनिवार' ।

शुभ वेला सुभ महरत जोगड, 'सातमि' दिवस अपार ॥

संघ सहु हरखित थइ वंदइ, धइ बहुलउ बहुमान ।

'आसकरण' संघवी तिण अवसरि, आपड वांछित दान ॥७५॥

भट्टारक 'जिनराजसूरि', वर्त्तमान गणवार ।

पाटइ 'जिनसागर' वरुं, आचारिज अधिकार ॥७६॥

ढाल : तेहिज

त्रिहिरिअ 'राणपुरड' 'वरकाणइ', 'तिमिरि' भेट्या पास ।

'ओइस' 'धंवाणी' यात्र करीनइ, 'मेडतइ' करिअ चउमास ।

तिहाथी उच्यव कीध 'जेसाणड', 'भणसाली' 'जीवराज' ।

'राउल' 'कल्याण' सुं श्री संघ वंदइ, सीधा सगला काज ॥७७॥

अमृत वाणि सुणइ तिहां श्रीसंघ, वंच्या इयारह अंग ।

मित्री सहित रुपडआ लाहइ, साह 'कुसला' मन रंग ॥

लठुपुरइ पाउधारइ सदगुरु, श्रीसंघ साथइ आवइ ।

साहमोवलल करइ साह 'थाहरु', 'श्रीमल' सुत वित्त वावइ ॥७८॥

तिहाथी विहार करि 'जिनसागर', आचारज हितकार ।

'फलवद्धीयइ' आवइ ततखिण, थावइ बहुअ प्रकार ॥

उलउ धरिअ तिहां कणि वादइ, श्रीसंघ दइ बहुमान ।

पइसारउ करि 'झावक' 'मानइ', दीधउ याचक दान ॥७९॥

श्रीखरतर गचु सोह चडावइ, तिहांथी करिअ विहार ।

'करणुंअइ' आया बहु रंगइ, संघ वंदइ गणवार ॥

वीकानयर वदीइ पहुचड, 'श्रीजिनसागर सूरि' ।

'पासणीए' करयु पइमारउ, रगइ बहुत पडूरि ॥८०॥

राग 'सामेरी

पासाणी बहु बित वाव०, पइमारउ सामेरी आवड ।

'सोलह सिणगारे' मारी, सिरि(श्री?) कलर धरि बहु नारी ॥८१॥

मिरि 'भागचद' सुन आव०, 'मणुहरदाम' निज दाव० ।

बलि मघ सहगुरु वदड, श्रीपरतरगच्छ चिरनदइ ॥८२॥

तिहा वाजड ढोल नीसाण, सरा झालरनउ मडाण ।

बहु उजवि वसतइ आया, श्रीसघ तणड मनिभाया ॥८३॥

सुहव मिली निज्जण कीजड, निज जन्म तणउ फल लीजई ।

तत्रोल भली पर दीघा, मन बछिन कारिज सीघा ॥८४॥

राग '—धन्याश्री

'विन्नमपुर' थी सचरी ए, 'सर' माहि करिअ चउमास ।

दिन दिन रग वधामणाए पूरइ मननीआस ॥आ०॥

वधावउ सदगुरु ए, 'जिनसागरसूरि' वधावउ ।आ०परतरगच्छपडूरि०॥

तिहा श्री भगइ आवियाए, 'जालसर' सुखवाम ।व०

उच्छनसुगुरु वादिआए, मत्री 'भगवत दास' ॥८५॥व०॥

विचरिय तिहा थी भावसु ए, 'डीडवाणउ' वदावि ॥ व० ॥

'सुरपुर' सघ सुहामणउ, भेटइ बहुल भावि । व० ॥ ८६ ॥

'मालपुरइ' महिमा थइ ए लोधउ लाभ विशेष ॥ व० ॥

श्री सघ वदइ चाह सु, प्रहसमि नयणे पति ॥ व० ॥ ८७ ॥

- नयर 'बीलाडइ' चित धरी ए, चतुर करइ चउमास ॥ व० ॥
- उच्छव करइ 'कटारिआ' ए, पाखी पारण खास ॥ व ॥ ८८ ॥
- अनुक्रमि सदगुरु पांगुरइ ए, 'मेदनीतटह' निहाली ॥ व० ॥
- 'रायमल' सुत जगि परिगडउए, 'गोलवछा' 'अमीपाल' ॥ ८९ ॥ व० ॥
- बंधव जेहनइ अति भलउए, वड वरखती 'नेतसीह' ॥ व० ॥
- बहु परिवारइ दीपताए, भात्रीजउ 'राजसीह' ॥ व० ॥ ९० ॥
- सबली नांदइ आदर्यो ए, ब्रत उचार सवेर ॥ व० ॥
- रूपइए लहण करिए, तंबोलइ नालेर ॥ व० ॥ ९१ ॥
- 'रेखाउत' वित्त वावरइ ए, 'सीरीमाल' 'वीरदास' ॥ व० ॥
- 'माडण' 'तेजा' रंगसुं ए, 'रीहड' 'दरडा' खास ॥ व० ॥ ९२ ॥
- सुंदर गुरु सोहामणउ ए, भावइ कीजइ सेव ॥ व० ॥
- तिहाथी विहरी अनुक्रमि ए, वंघा 'राणपुर' देव ॥ व० ॥ ९३ ॥
- 'कुंभलमेरइ' जिन थुणी ए, 'मेवाडइ' गुणगान ॥ व० ॥
- 'उदयपुरा' नउ राजीयउ ए, राणउ 'करण' छइ-मान ॥ ९४ ॥ व० ॥
- 'लखमीचंद' सुत परगडाए, 'रामचंद' 'रघुनाथ' ॥ व० ॥
- चित्त धरि वंदइ प्रहसमइए, 'अजाइवदे' सुत साथि ॥ ९५ ॥ व० ॥
- साधु विहारइ पग भरइ ए, 'सोनगिरइ' अहिठाण ॥ व० ॥
- श्री संघ उच्छव नित करइ ए, अवशर नउ जे जाण ॥ ९६ ॥ व० ॥
- 'साचडार' संघ सहु मिली ए, आग्रह हे 'हाथिसाह' ॥ व० ॥
- चउमासइ गुरु राखीयाए, 'जिनसागर' गजगाह ॥ ९७ ॥ व० ॥
- वर्तमान गच्छराजजी ए, 'जिनसागर सूरि' सुखकार ॥ व० ॥
- 'श्री जिनसागर' चिरजस्रउए, आचारिज पद धार ॥ ९८ ॥ व० ॥

युगवर सरतर गच्छ धणीए, 'जिनचद सूरि' गुरुराय ॥व०॥

शीस सिरोमणी अतिभलाए, 'धरमनिधान' स्वज्ञाय ॥६६॥व०॥

तास शीस अति रगसु ए, 'धरमकीरति' गुण गाइ ॥ व० ॥

सवत 'सोलडक्यासीयइए, 'पोस वदि' 'पचमि भाइ ॥१००॥

श्री जिनसागरसूरि' नउ ए, रास रच्यु सुपनकद ॥ व० ॥

सुणता नवनिय सपजइ ए, गाता परमाणद ॥ १०१ ॥ व० ॥

ता प्रतपउ गुरु महियल_२, जा गगन_२ दिनईस ॥ व० ॥

'धरमकीरति' गणि डम कहइ ए, पूर सकल जगीस ॥१०२॥व०

इति महारक जिनसागर सूरिणाम् रास

(वीकानर स्टेट लायब्रेरीमे पत्र ४)

श्रीजिनसागर सूरि सवैया

धुरा दम मरुधरा शहर 'वीकाण' सदाइ,

'वोहिय' हरे विरु इत वसइ 'वठउ' वरदाइ ।

'मृगा मात' मोटिम्म, सुपन सूचित सुत सुन्दर,

आठ' वर्ष अधिकार कला अभ्यास कुलोधर ।

वैराग जोग मा रमतइ, ललमी तजी कोडे लखे,

सूरीस श्री 'जिनसागर' सुगुर, उपम इसडे आरसे ॥११॥

युगप्रधान 'जिनसिंह' वस 'चोपडा' विसेखइ,

आवक 'अकनर' शाहि लीध जमलाम अलेख_२ ।

सइ हथ तण गुरु पासि, सुकन करि माता सगइ,

'अमरसरइ' अनति आए मनरगि अभगइ ॥

संप्रहो साधु मारग मरम, पूरण गुण पूरण पत्ने,

सरीन श्री 'जिनसागर' सुगुरु, उपम उमडे आरन्वे ॥२॥

विनय विवेक विचार वाणि मरमर्ता विराजउ,

'विद्या चवट' निधान, मुज्जम जगि वाजा वाजउ ।

विपम वाणि विपवाद, विपथमन अंगि न वायउ,

वखनवन वर विबुध वान दिन प्रति वायउ ॥

वाजणी थाट वाडी विपड, परि परि पूगउ पारन्वे ।

सूरीस श्री 'जिनसागर' सुगुरु, उपम उमडे आरन्वे ॥३॥

उध्व रंग ववाड दिवावन, सुंदर मंगल गीन सुहावन,

मोतीन थाल विमाल भरि भरि, भाभिनी भावन्नुं आपि दधावन ।

गच्छ नाथक लायक लास्र गुणी, गुण गावत वडिन ते फल पावन ।

श्री 'जिनसागरसूरि' वडरागर, नागर रंगि देख्यउ गुन्नावत ॥४॥

प्रगट सोभाग माग विकट वडराग माग,

राग हु कउ लाग दोष दूरि हीर हीचउ हइ ।

ततु तुम ददधार अमृत ज्ञान आहार

कठिन क्रिया प्रकार काम जु वहीचउहइ ।

ललित ललाट नूर, तपति प्रताप सूर,

'सागर' सुरिंद गुरु गौतम कहायउ हइ ॥५॥

सवाथा छड (उपरोक्त विकानेर स्टेड लायत्रेरी की

प्रति मे, तत्कालीन लि०)

कवि सुमतिवल्लभ कृत

श्री जिनसागर सूरि निर्माणरत्न



दृष्टः—समस्त सरसति सामिनी, अविरल वाणि द मात ।

गुग गाइसु गच्छराज ना, 'सागर सूरि' विख्यात ॥१॥

सहर 'वीकाणो' अति सरस, ललिमी लाहो लेत ।

'ओस वश' मइ परगडा, 'बोहिथरा' त्रिदत्त ॥ २ ॥

'वच्छराज' घरि भारजा, 'मिरधा दे' सुत दोइ ।

'वीको' नइ 'सामल' सुरी, अविचल जोडी जोइ ॥ ३ ॥

श्री 'जिनसिंघ सुरीश नी, सामलि दर्शन सार ।

मात सहित वान्धव त्रिन्हे, सज (म) लड सुखकार ॥४॥

'माणिकमाला' भावडी, 'विनयकल्याण' विशेष ।

'सिद्धसेन' इम त्रिहु तणा, नाम दीक्षा ना देखि ॥ ५ ॥

'वादी राय' भणाविया, 'हर्षनदन' करि चित्त ।

'चवदह' विद्या सीखवी, सूत्र अर्थ सयुक्त ॥ ६ ॥

सूयो सयम पालता, विद्या नउ अभ्यास ।

करता गीतारथ थया, पुण्या परकाम ॥ ७ ॥

'सिद्धसेन' अभिनव थयो, सिद्धसेन' अवतार ।

बीजा चेला वापना, 'सामलिड' सिरदार ॥ ८ ॥

श्री 'जिनचद सुरीश' नउ, वचन विचारी एम ।

आचारिज पद थापना, कीधी कहिस्यु नम ॥ ९ ॥

'जिनचन्द्र सूरि ना' शिष्य मान सहुजी, वडा वडा आवक तम ।
 धनवत धींगा पूज्य तण्ड परगडी, वडभागी गुर एम ॥ ३ ॥ म०
 सघ उदयवल्ल 'अहमना' नौ जी, 'वीकानेर' त्रिगेप ।
 'पालाण' नइ 'सभाडन' आवक दीपताजी, 'मुलताणी' राखी रखा॥४॥ म०
 'जेनलमरी' आवक पूज्य ना परगडाजी, सधनायक 'सखनाल' ।
 'मडना' मइ गोलचण्ड गह गहैजी, 'आगरा' मे 'ओसवाल' ॥५॥ म०
 'धोलाडा' मइ सवनी 'कटारिया' जी, 'जस्तारणि' 'जालोर' ।
 'पचियास' 'पालहणपुर' 'मुज्ज' 'सूत मड जी, 'निही' नइ 'लाहोर' ॥६॥ म०
 'लूगकरणमर' 'जा' 'मरोट' मड जी, नगर 'थटा' माहि तम ।
 'टरा' मे सामग्री नागनी जी 'फरधी' 'पोकरण' एम ॥७॥ म०
 'सागरसूरि' ना आवक सह सुग्रीजी, अधिकारी 'ओसवाल' ।
 दश प्रग्ने आवक दीपताजी, मर सचण भूपाल ॥ ८ ॥ म०

हाल ३ (कडखानी)

'करमसी' शाह सत्सरी पोरिनै, 'महमद' दिड अति सुजश लेवे ।
 सुपुत्र 'लालचन्द' हर वरम सवत्सरी, पोरिन सघनु श्रीप्ल देवे ॥१॥
 धन्य हो धन्य 'सागरह सूरिन्द' गुर, जेहनो गच्छ दीप सवायो ।
 वड वडा आवक परगडा नरखडे, पूज्य नौ सुयश त्रिहुलोक गायो ॥२॥
 शाह 'लालचन्द' नी, धन्य वडा मावडी, जे विद्यमान 'धनादे' कहीजर ।
 'पूठीया' उपरा खडनो 'पीटणी', मरर समराविनई लाभ लीजशा ॥३॥
 वहुअ 'कपूर द' जेहनो जाणई, सुपुत्र 'असेन' नी जेह माता ।
 सरचवइ आगला गच्छ ना काम नइ, धर्म ना रागिया अधिक ताता ॥४॥

साह'शान्तिदास'सहोदर 'कपूरचन्द' सुं, वेलिया हेम ना जेह आपे ।
 'सहस दोय रूपिया पाच शत' आगला, खरचिने सुजग निज सुथिर
 थापे ॥५॥

मात 'मानवाई डं' खंड डक पीटणी, करीय उपासगड(में)सुजग लीया ।
 वरस ना वरस आसाढ़ चोमास ना,पोसीता पोखिवाबोल कीया॥६॥
 शाह 'मनजी' तणो कुटुंब अति दीपतो, चिहुंखंडे चंद नामो चढायो ।
 शाह 'उदेकरण' 'हाथी' खरो 'हाथियो', जेठमल 'भोमजी' तिम
 सवायो ॥७॥

धरम करणी करै'शाह हाथी'अधिक,राय'वन्दी'छोडनो विरुद्ध राखै ।
 जीव प्रतिपाल उपगार सहु नै करै,सुपुत्र'पनजी भला सुजस दाखै॥८॥
 'मूलजी संघजी' पुत्र 'वीरजी, 'परोख' सोनपाल' 'सूरजी' वखाणो ।
 पाखीया'बोस नड च्यारि' जीमाडिने,पुण्य नो वाहरु जे कहाणो ॥९॥
 'परोख' 'चन्द्रभाण' 'लालू'सदा दीपता,'अमरसी'शाह सिरताज जाणो ।
 'संघो' 'कचरमल्ल परीख' अखइ अधिक, बाछड़ा 'देवकर्ण' तिम
 वखाणो ॥ १० ॥

साह 'गुणराजना' सुपुत्र अति सलहीई, 'रायचन्द गुलालचन्द' साह
 दाखो ।

एम श्रीसंघ उदयवंत'राजनगर'नो,भल भला आवक एम आखो ॥११
 तेम 'खंभाइती' संघ नाथक बड़ो,'भंडशाली' 'बधू' सुतन कहीई ।
 बड़ बड़ी धरम करणी घणी जे करी,लाख मोजा'ऋषभदास'लहि॥१२॥

दोहा- श्री 'जिनसागरसूरि' नो, उदयवंत परिवार ।

चेला गीतारथ सहु, पालइ पञ्च आचार ॥ १ ॥

यथा योग जाणी करो, पाठक वाचक कीध ।

श्री 'जिनधर्म'सूरीशने, गच्छ भार इम तीध ॥२॥

ढाल ३

इक दिन दासी दौडती,

आवे कृष्ण नड पास र ॥ एहनो ॥

'अहमदावाद' मड आपणड, सेंहरि सघ हजूर र ।

प्रथम ओढाडी पठेयडी, श्री जिनसागरसूर' र ॥ १ ॥

अनसर लासीणो लही, सरचे द्रव्य अनेकर ।

'भगसाली 'ववू' भारिजा, 'विमला द' सुविप्रक र ॥२॥

चलतु पद थापन करो, सूर मन्त्र गुरु टीध रे ।

श्री'जिनधर्म सूरीधर', नाम थापना इम कीव र ॥ ३ ॥

सघवणि 'सहजलद' तिहा, ल्यड लिपामी नो लाह र ।

पद ठणो करड परगडो, कहइ लोक वाह-वाह र ॥४॥

पहिला पणि सुकून जिक, कीधा अनेक नकार र ।

शत्रुजय सघ कराधिड, सरचो द्रव्य हजार र ॥ ५ ॥

श्री 'जिनसागरसूरि' जी, सहगुरु साथे लीध र ।

पाटनरने पाभरी, जाचक जन ने दीव र ॥ ६ ॥

'भगसाली मधुआ' घरणि, ते 'सहिजल द' एह र ।

पद ठणणि जे 'पूज्य' ने, सरचो नइ जस लेह रे ॥ ७ ॥

ढाल ४ (कपूर हुवे अति अजलो रे)

अवसर जाणी आपणउ रे, आगळ थी अणगार ।

जिण थी शिव सुख पामिइ रे, त सामलि अग दय्यार ॥ १ ॥

सुगुरु जो धन्य-धन्य तुम अवतार,

ए माणस भव नुंसार ॥ आकणी ॥

आनुपूर्वी एहवी रे, उपशन्थो पूरव रोग ।

श्री संघ 'अहमदावाद' नो रे, गीतारथ संयोग ॥२॥

'आखातीज' नइ छाहड़ि रे, शिष्यादिक नइ सार ।

सीखामणि सहगुरु दि(य)इं रे, गुरु गच्छ तुं व्यवहार ॥३॥
चारित फेरी ऊचरि रे, गच्छ भार सह छोड़ि ।

उत्तम मारग आदरि रे, अशुभ कर्म दल तोड़ि ॥ ४ ॥

'सुदि आठम वैसाख' नो रे, अणसण नो उचार ।

श्रीसंघ नी साखि करइ रे, त्रिविधि-त्रिविध विविहार ॥५॥
पासे गीतारथ यति रे, श्री 'राजसोम' उवजाय ।

'राजसार' पाठक भला जी, 'सुमतिजी' गणि नी सहाय ॥६॥
'दयालुशल' वाचक वलि रे, 'धर्ममन्दिर' मुनि एम ।

'समयनिधान' वाचक वह रे, 'ज्ञानधर्म' मुनि तेम ॥ ७ ॥

"सुमतिवल्लभ" सावधान सुं रे, आठ पुहर सीम तेम ।

शाह 'हाथी' धर्म हाथियो रे, निजरावि गुरु एम ॥ ८ ॥

ढाल (९) विगजारानी

मोरा सहगुरुजो, तुम्हे करज्यो शरणा च्यार । सहगुरुजी करज्यो०
अरिहन्त सिद्ध सुसाधुनो मो० केवलि भापित धर्म,

ए फल नरभव लाध नो ॥ १ ॥ मो०

जीव 'चुरासी' लख, त्रिकरण शुद्ध खमाविज्यो । मो० ।

पाप अठारह थान, परिहरि अरिहन्त ध्यावज्यो ॥ २ ॥ मो०

परिहरि सगण दोष, वितालीस आहार ना । मो०

जिन धर्म एक आधार, टालि दु स ससार ना ॥ ३ ॥ मो०

ए ससार असार, स्वार्थ नो सहुको सगो । मो० ।

अथिर कुटुम्ब परिवार, धर्म जागरिया तुम जगो ॥ ४ ॥ मो०

अथिर छड पुत्र फलन, अथिर माल घर परिग्रहो । मो० ।

अथिर विभव अधिकार, अथिर काना तिमि ए कहो ॥५॥ मो०

तुम्ह मावज्यो भाजन वार, मन समाधि माहि राखज्यो । मो० ।

अथिर मात नड तात, अथिर शिष्यादिक नइ भाखज्यो ॥ ६ ॥ मो०

जीवन हाथ मड जाइ, राखी को न सकइ मही । मो० ।

जेहवो सध्या वान, तहवी सपद ए कही ॥ ७ ॥ मो०

एकलो आनइ जीव, जाइ एखलो प्राणियो । मो० ।

पुण्य पाप दोइ साथ, भगवन एम वखाणियो ॥ ८ ॥ मो०

जाल मरण करी जीव, ठामि ठामि हुओ दुखो । मो० ।

पडित मरण ए जागि, जिण थी जीव हुणइ सुखी ॥९॥मो०

इम भावना एकात भाव, अरिहन्त धर्म आरावता । मो० ।

पुहता सरग मझारि, आतम कारिज सावता ॥१०॥मो०॥

दोहा •—‘सनर(इ) मड अगोस’ मड, मास ‘जेठ वदि तीज’ ।

‘शुक्रे’ ‘सागरसूरि’ जी, सरग ना पाम्या चीज ॥ १ ॥

दाल द—हाया क मिनी वीणइ रे लाल, एहनी ।

अवसर राखीणो लहीर, साह हाथी सर्व जाण । मर पूजजी० ।

महिमा मोटी इम करइ र लाल, पूज्य तणड निराण ॥ १ ॥

यासइ रहि निजरावियारे, दिन ‘इग्यारह’ सीम । मे० ।

सुस सनद व्रत आखडी र लाल, नाना विधि ना नोम ॥११॥मे०

चोवा चंदन अरगजा रे, सहगुरु तणइ स्रीर । मे० ।

करि अरचा पहिराविया रे लाल, पांभरी पाटू चीर ॥मे०॥३॥

देव विमान जिसी करी रे, माडवी अति श्रीकार । मे० ।

बाजे गाजे बाजते रे लाल, करि नीहरण विचार ॥मे०॥४॥

वयरचि सूकड़ि अगर सुं रे लाल, कस्तूरी घनसार । मे० ।

दहन दींइ घृत सींचता रे लाल, श्री पूज्य नुं तिणवार ॥मे०॥५॥

जीव छुडावी (वे?)जुगति सुं रे, श्री संघ भेलो होइ । मे० ।

‘गाया’ ‘पाडा’ ‘बाकरी’ रे लाल, रूपइया शत ‘दोइ’ ॥मे०॥६॥

‘शान्तिनाथ’ नइ देहरइ रे लाल, वादी देव विशेष । मे० ।

वचन साभलि वीतराग ना रे लाल, मूंकी सोग अशेष ॥मे०॥७॥

(ढाल ८) धन्याओ कुंवर भलइ आविया एहनी ।

श्री ‘जिनसागर सूरि’ जी ए, पाटि प्रभाकर तेम ।

सुगुरु भले गाइयइ, श्री‘जिनधर्म सुरीसरुए, जयवंता जग एम ॥१॥

देस प्रदेशे विहरता ए, भविक जीव प्रतिबोह । स० ।

उदयवंत गच्छ जेहनो ए, महियल मोटी सोह ॥ स० ॥ २ ॥

गुण गाता सगुरु तणा ए, पूज्यइ मन नी खाति । स० ।

मन वंछित सहु ना फालि ए, भाजि मन नी भ्रांति ॥ स० ॥ ३ ॥

संवत ‘सतर वीसोत्तरइ’ ए, ‘सुमतिवल्लभ’ ए रास । स० ।

‘आवणसुदि पुनम’ दिनि ए, कीधो मनह उल्लास ॥ स० ॥ ४ ॥

श्री ‘जिनधर्म सुरीश’ नो ए, माथि छै मुझ हाथ । स० ।

‘सुमतिवल्लभ’ मुनि इम कहइ ए, ‘सुमतिसमुद्र’ शिष्य साथ ।स०॥५॥

॥ इति श्रीनिर्वाणरास संपूर्णम् ॥

(हमारे संग्रह में, तत्कालीन लि०)

श्री जिनसागरसूरि अष्टकम्

(१)

श्री मञ्जेशलमेरुदुर्ग नगर, श्री विजयगुर्जरै ।

थटाना भटनर मन्त्रितट, श्री मंदापट स्फुटम् ॥

श्री जावालपुत्र च योधनगर, श्री नागपुरा पुन ।

श्रीमहाभपुर च वीरमपुरे, श्री सत्यपुर्यामपि ॥१॥

मूलनाथपुरे मरोट नगर, देराउरे, पुगले ।

श्री उच्च फिरहोर सिद्धनगरे, धौंगोटके स्वले ॥

श्री लाहोरपुर महाजन रिणी, श्री आगरार पे पुरे ।

सागानेरपुर सुपर्न नरमि, श्री मालपुर्या पुन ॥२॥

श्री मत्पत्तन नाम्नि राजनगर, श्री स्थभतार्थे स्तथा ।

द्वीप श्री भृगुकच्छ वृद्धनगर, मौराष्टक सर्वत ।

श्री वाराणपूर च राधनपूर, श्री गूर्जरै माले ।

॥३॥

सर्वत्र प्रसरी सरीति सतत, सौभाग्यमात्रालयत ।

वैराग्य विदा मति सुभगता, भाग्याधिकत्व भृगम् ।

नैपुण्य च कृतज्ञता सुजनता, यथा यज्ञोवात्ता ।

सूरि श्री जिनसागरा विजयिनो, भूयासुरते चिरम ॥४॥

आचाया सत नच सति नतरो, गच्छेनु नाम्नापरम् ।

त्व त्वाचार्य पन्थार्थ्युग् युगवर, प्रौढ प्रतापाकर ॥

भव्याना भव सागर प्रतरणे, पोतायमानो भुवि ।

श्री मच्छ्री जिनसागरः सुखकरः, सर्वत्र शोभा करः ॥५॥
सौम्यश्री हिम दीधि तौ सुर गुरौ, बुद्धि र्द्धरायां क्षमा ।

तेजःश्री स्तरणौ परोपकृति धीः, श्री विक्रमे भूपतौ ॥
सिद्धि गौरखनाथ योगिनि बहु, लामश्च लम्बोदरे ।

संत्येवं विविधाश्रया गुण गणाः, सर्वेश्रिता त्वां प्रभो ॥६॥
श्री बोहित्थ कुलांबुधि प्रविलसत्प्रालेय रोचि प्रभा ।

भास्वन्मातृ मृगासु कुक्षि सरसि, श्री राजहंसोपमाः ॥
श्री मद्रिक्रम वासि विश्व विदिता, श्री वस्तराजा गजाः ।

संतु श्री जिनसागरा, खरतरे, गच्छे चिरंजीवित ॥७॥
इत्थं काव्य कदम्बकं प्रवरकं, मुक्तापुरः प्राभृतम् ।

विज्ञप्तं समयदिसुन्दर गणिर्भक्त्या विघत्तेभृशम् ॥
युष्मत्प्रौढतम प्रताप तपनो, देदीप्यता सत्वरः ।

यूयं पूरयत स्व भक्त यतिना, शीघ्रं मनोवाञ्छितम् ॥ ८ ॥

(विकानेर स्टेट लायब्रेरी)



॥ जिनसागरसूरि अवदात गीत ॥

(०)

पूरउ पण्डित पूउीयउ र, भामिणि आप भभावर । जोमीडा ।

आसो दीपणो दखिन, माडि लगन उपाय र ॥ १ ॥ जो०

‘श्रीजिनसागरसूरिजी’ र, आज काल किण गाम र । जो० ।

मो मन वाण उमहो र, सुणि अनान नइ नाम र । जो० ।

‘श्रीजिनसागरसूरिजी र लो० । आ० ।

‘श्रीजिनकु १७’ यतीवरइ र लो, सुपन दिसाड्यो माच र । जो०

जन्म थकी यश विस्तयो र, निकलफ फाठ नइ वाच र । २० जो०

११७ ‘भोम’ नरसरइ र लो, निरखी गुण मुण नृर । जो० ।

केसर चन्दन चरची नइ र, पामिसि पनी पडूर र । ३ । जो०

उज्य दिसाड्यो ‘अम्बिका’ र लो श्री जिनसामन टव र । जो०

युगप्रधान ‘जिनचन्दजी’ र लो, नरइ कृपा नित मय र । ४ । जो०

मन मान्या वठिन फण्या र, पूज्य पधाया आप र । जो० ।

‘हर्षनन्दन’ कहइ सर्वज्ञ र लो, प्राधउ अधिन प्रताप र । ५१ जो०

(३)

गाम नगर पुर विहरता पूजजी, ‘श्रीजिनसागरसूरि’ ।

कठिन क्रिया रख आदरो, पूजजी, पूहवि सुजस पडूरि ॥ १ ॥

पूजजी पधारउ सूरजी मेडतइ’ र, आवक अति अविपक ।

आवक चितारइ दिन प्रति चाह सु, आपइ लाभ अनक ।

श्रीसघ श्रीसघ वानी हो, हरसित थाइस्यइ । आ०

खरतर गच्छ शोभा दीयउ, पूजजी वोहियरे वरदान ।

साहित्य 'सुकुरवखानजी,' पूजजी पग लागे धड मान ॥ २ ॥ पू० ॥
रूप कला पण्डित कला, पू० वचन कला गुण देख ।

राय राणी मानड घणुं, पूजजी थांड माहे विशेष ॥ ३ ॥ पू० ॥
कामण मोहन नवि करो पू० लोक सहु वसि थाय ।

ए परमात्म प्रीछवउ, पू० पूर्व पुन्य पसाय ॥ ४ ॥ पू० ॥
चित्त चाहता आविया, पू० श्रीसंघ मानी वचन ।

रंग महोच्छव दिन प्रतड, 'हरपनन्दन' कहड धन ॥ ५ ॥ पू० ॥

(४)

॥ जाति फूलडानी ॥

श्री संघ आज वधावणी, हिव आज अधिक उछरंगो रे ।

आचारज पद पामियउ, 'जिनसागरसूरि' सुचंगो रे ॥ १ ॥ श्री० ॥
खरतरगच्छ उन्नति थड, हिव कीधा अनुपम कामो रे ।

दुरजण सुहडा सामला, हिव साजण वाधी मामो रे ॥ २ ॥ श्री० ॥
धन पिता 'वच्छराज' जो 'मृगा' पिण भाता धनो रे ।

वंश धन 'वोहियरा', जिहां उत्तम पुत्र रतनो रे ॥ ३ ॥ श्री० ॥
वाजा वाज्या रूयडा, वलि तान मान सन्मानो ।

सूहव गावइ सोहलउ, तिहां याचक पामइ दानो रे ॥ ४ ॥ श्री० ॥
नयण सल्लणा पूजजी, हिव हुं वलिहारी नामइ रे ।

मोहनगारा मानवी, हिव 'हरपनन्दन' सुख पामइ रे ॥ ५ ॥ श्री० ॥

(५)

चतुर माणस चित्त उलसइ र, दखी पूज सरय र । हो पूजजी॥

नान्हीवय गुण मोटका र, उपजड भाव अनूप र ॥१॥

ए परमाथ श्रीछज्यो र ।

मान सरोवर लहुडोर, राजहस सेवड तोर रे ।

लज्जागर मोटड घणु र, पथी न चासड नीर र ॥१॥

चदा कर चावणे, सहुको बइसड पास र ।

सूर (सूर्य) तपड जो आकरो, जावड सहुको नासि रे ॥३॥

उचो लागो अति घणउ, सरलड पिड सजूर रे ।

नान्ही कलि रुहावता, छाया फल भरपूर रे ॥४॥

मोटा मङ्गल मड झरड, विलसड ता गर (लग?) राज ।

सींहणि करो छावोर, गाजइ नहा वन माझ । ५ ।

नान्हा मोटा क्यु नहा, गुण अवगुण वधाण ।

‘जिनसागर सूरि’ चिर जयड र, हर्षनन्दन’ गुण जाण ॥६॥



श्री करमसी संथार गीताम् ।

• - २०४ - •

सद्गुरु चरण नमी करी, गाडसु श्रीकरपिराइ ।

‘करमसीह’ करणी करी, सामलीयड चित्तु लाड ॥

चित्तु लाइ संमलीयइ चरित, निज भावस्थुं चारित लियउ ।

धन वग ‘कूकड़ चोपड़ा’ नउ, सुयश प्रगट जिणइ कियउ ॥

तप करी काया प्रथम शोधी, विगय पट् रस परिहरी ।

‘करमसी’ सुपरि कियउ संथारउ, सुगुरु चरण नमी करी ॥१॥

रीतइ गुरु कुल वास नी, मनि आणी संवेग ।

जाणी काया कारमी, करि निश्चल मन एक ॥

मन एक निश्चल करी आपइ, अन्न समुंखड परिहर्हउ ।

आहार त्रिविध त्रिविध संयोगइ गुरु मुखइ अणसण वर्यउ ॥

आराधना करि संव खामण, धरी विविध उल्हास नी ।

‘करमसी’ तिणि विधि कियउ संथारउ, रीति गुरुकुल-वास नी ॥२॥

चड्यउ संथारइ तिणि परइ, जिणि विधि पूरव साधु ।

करम भाजिवा सिंह हुवउ, भलइ ‘करमसी’ साधु ॥

‘करमसी’ साधु भलइ दीपायउ, गच्छ खरतर संवनइ ।

परभावना अम्भारि वरती, उच्छव होई दिन दिनइ ॥

जिसिद्धान्त गीतारथ सुणावइ, साधु वेयावच्च करइ ।

धन कर्म करमट तिय खपावइ, चड्यउ संथारइ तिणि परइ ॥३॥

जन्म 'जेसाणर' जेहनउ, 'चापा शाह' मरहार ।

'चापलदत्रि' उरि धर्यउ, 'ओसवश' नउ सिणगार ॥

'ओसवश' नउ सिणगार ष मुनि, दुकर करणो जिणि करी ।

अन्नेक जामन मरण हुती, छटउ अणसण उच्चरी ॥

'करमसी' मुनिमन कीरयउ करडउ गह नाण्यउ दहनउ ।

मन मदन करडइ क्षेत्र जीत्यउ, जन्म 'जेसाणर' जेह नउ ॥ ४ ॥

जेहनी प्रशसा सुर करइ, मानन क्हो मात्र ।

सोम मुनीरनर इम कहइ, धन वन एह सुपात्र ॥

धन एह पात्र सुमाधु सुन्दर, परतरि मुनि पचम अरड ।

धन जन्म जीविय जाणि एहनउ, पर १० ग्री महिमा करइ ॥

मास की सलेखण करि नउ, अधिक दिन बीस उपरइ ।

ए अमर जग मइ हुआउ इणि परि, नरसा सुर नर करइ।५॥

'वससास' सतोपस्यु, 'सातमि वदि' उचार ।

कियउ सथारउ करमसी, कलि मइ धन अणगार ॥

अणगार धन्ना शालिभद्र जिम, तप अन्नेक जिणउ कियो ।

'मइ अढी वेला निवी आत्रिल' करी जिण अणसण लिया ॥

चारित्र पचे वरस पाली, सु लयउलाई मौक्ष स्यु ।

आणद सरतर गच्छ वाध्यउ, वडमारर सतोप स्यु ॥ ६ ॥

॥ इति गीतम् ॥

कवि ललितकीर्ति कृत

॥ श्री लब्धिकल्लोल सुगुरु गतिम् ॥

• - - - •

गुरु 'लब्धिकल्लोल' मुनिन्द जयउ, जाणे पूरव दिसि रवि उदयउ ।
 मन चिन्तित कारिज सिद्धि थयउ, दु ख दोहग दूरइं आज गयउ ॥
 'सोलइ सइ इन्ध्यामी' वर वरमइ, भवियण लोकण देखण हरसइ ।
 गच्छपति आदेशइ 'भुज' आया, चउमास रखा श्री संघ भाया ॥२॥
 'कातो वदि छट्टि' अणसण सीधो, मानव भव सफल जिणे कीयो ।
 ले परभव ना संवल बहुला, पहुंता सुर सुवरस(?) भुवन वहिला ॥३॥
 आवी सुरपति नरपति निरखइ, 'मगसर वदि सातम' बहु हगखइ ।
 पगला थाण्या चढतइ दिवसइ, निरखी तन वयन नयन विकशइ ॥४॥
 थिर थान भलो 'भुज्ज' मइं सोहइ, सुर नर किन्नर ना मन मोहइ ।
 सद्गुरु परतिख परता पूरइ, सहु संकट विकट विधन चूरइ ॥५॥
 'श्रीमाली' कुल कैरव चंदा, साह 'लाडण' 'लाडिम' दे नंदा ।
 दउलति दायक सुरतरु कंदा, प्रणमइ पद पंकज नर वृन्दा ॥६॥
 श्री 'कीरतिरतन सूरीश' तणी, शाखा मइं अद्रमुत देव मणी ।
 वाचक 'लब्धिकल्लोल' गणी, दिन प्रति प्रतपउ जिम दिवस मणी ॥७॥
 गणि 'विमलरंग' पाटइ छाजइ, अभिनव दिनकर जिम जगि राजइ ।
 जसु नामइ अलिय विघन भाजइ, जसु अतिशय करि महियलि गाजइ ॥
 मन शुद्धइं कीजइ गुरु सेवा, अति मीठी टीठी जिम मेवा ।
 निज गुरु पद सेव करण हेवा, दिन प्रति वाछइ जिम गज-रेवा ॥८॥

तुम्ह दश देगन्तरि काइ ममउ, गुरु सेन यकी ढालिद्र गमउ ।
 इति अनोति कुनीति दमउ, घर नउडा लिखमो पामि रमउ ॥१०॥
 साह 'पीथइ' 'हाथी' 'रायसिघइ', 'माडण' आडइ करि 'भुज' सघइ ।
 उचम करि थुभ तणउ रगइ, थाप्या पूरन दिनि मन सगइ ॥११॥
 निज सेवक नइ दरसन आपइ, पणि पणि सानिव करिदु ख कापइ ।
 गणि 'ललित कीर्ति' चढतउ दावइ, वदइ गुरु चरण अधिकदावइ ॥१२॥

॥ इति गुरु गीतम् ॥

सुगुरु वशावली

भट्टारक 'जिनभद्र' सखउ, गच्छ नायक सखतर ।

तसु पट्टहि 'जिनचन्द्र' सूरि, तप तज दिवाकर ॥

सहगुरु श्री'जिनसमुद्र', तासु पट्टहि श्रुत सागर ।

तसु पट्टहि बुधिमत सूरि 'जिनहस' सूरिचर ॥

अभिनवउ इन्द्र रूपइ अधिक, सजम रमणी सिर तिलउ ।

गच्छपति तास पट्टहि गुहिर, 'जिनमाणिक' महिमा निलउ ॥१॥

'पारिस' वश असिद्ध, जुगति जिनवर्म सु जोरी ।

ऋडु तसु पट्टि 'कल्याणवीर', वाचक धर्म धोरी ॥

'भणराली' कुळ भाण शीस, तसु पट्टहि सुरतरु ।

वाचक श्री'कल्याणलाम' वाणी अनुपम वरु ॥

याठक 'कुशलवीर' तासु सिसु, वदइ एम वशावली ।

गुरु भगत शिष्य गुरु गुण यही सफल करउ रसनावली ॥२॥

(P C गुटका न० ६०)

॥ श्रीविमलकीर्ति गुरु गीताम् ॥

(१)

प्रह उठी नित प्रणमियइ हो, 'विमलकीर्ति' गणि चंद ।

तेज प्रतापे दीपता हो, प्रणमै सह नर वृन्द ॥ १ ॥

भविक जन वंदियइ हो, नामे पाप पुलाय ॥ भ० ॥ आकणी ॥

खरतरगच्छ मे शोभता हो, सर्व कला गुण जाण ।

जेहनइ मुखि भारती वसइ हो, जाणइ ज्ञान विज्ञान ॥ २ ॥ भ० ॥

'हुवड' गोत्रे परगडउ हो, 'श्रीचंद' शाह मल्हार ।

मात 'गवरा' जनमिया हो, शुभ मूरति(महूरत) सुखकार ॥३॥भ०॥
संवत् 'सोलह चउप्पणइ' हो, लीधी दीक्षा सार ।

'माह सुदि सातम' दिनइ हो, पालइ निरतिचार ॥ ४ ॥ भ० ॥

'साधुसुन्दर' पाठक भला हो, सकल कला प्रवीण ।

सइंहथ दीक्षा जेण दीधी हो, ध्यान दया जुण लीण ॥५॥भ०॥

चउरासी गच्छ सेहरो हो, श्री 'जिनराज सुरिन्द' ।

वाचक पद सइंहथ दियो हो, सेव करइ जन वृन्द ॥६॥भ०॥

'सोलहसड बाणू' समइ हो, श्री 'किरहोर' सुठाम ।

आराधन अणसण करी हो, पहुंता स्वर्ग सुधाम ॥ ७ ॥ भ० ॥

'विमलकीर्ति' गुरु नाम थी हो, जायइ पातक दूर ।

'विमलरत्न' गुरु सेवता हो, प्रतपे पुण्य पडूर ॥ ८ ॥ भ० ॥

(२)

राग—धन्याश्री ॥

वाचक 'विमलकीर्ति' गुरुराया, प्रणमो भविष्य पाया व ।

रजत दस्ति नननिधि धाड, सुग्न मपति लील मदाइ व ॥१॥ग०

सवत 'सोल च०पन्ना' वरमे, चतुर चारिज गहड हरप व ।

'साधुमुन्दर' तमु गुरु सुननीता, वादी गज मद जीता वे ॥२॥ग०
तामु गिप्य गुरु कमल निणन्दा भक्ति क चकोर चित्त चटा व ।

अनुनम 'वाचक' पन्थी पाड, गुरु मौभाग्य सवाइ व ॥३॥ग०॥

मूल चष 'मुल्लाण' कदावड, तिहा चउमासई आवड व ।

दान पुण्य (तिहो) अधिका थावड, श्री मघ वधतड दावड वा॥४॥ग०॥

मिन्धु नगर 'कहिरोरड' आया, लर चौरासी समाया व ।

अणमग पाली स्वर्ग सिधाना, गीत ज्ञान बहु गायी व ॥५॥वा०॥

शिष्य जाया प्रतपड रवि चटा, जा लगि मर धू चटा व ।

'आणनिजय' डम गुण गावड, चढती दडलति पावड वे ॥६॥वा



साध्वी हेमसिद्धि कृत

॥ लावण्यसिद्धि पहुतणी गीताम् ॥

— * —

राग :- सोरठ

दूहाः आदि जिणेशर पय नभी, समरी सरसति मान ।

गुण गाइसुं गुरुणी तणा, त्रिभुवन माहि विख्यात ॥ १ ॥

वेलि ढालः-जे त्रिभुवन माहि विख्यात, 'लावण्यसिद्धि' गुण अवदान

'वीकराज' साहकी धीया, वइरागड चारित्र लीया ॥२॥

'गूनर दे' माता रतन्न, सह लोका कहड धन धन ।

शीलादिक गुण करि सीता, सह दुनीया माहि वनीना ॥३॥

जिण माया मोह निवार्या, भविषण भव-जलनिधि तार्या ।

सूधा पंच महाव्रत पालइ, त्रिणह गुप्ति सदा रखवालड ॥ ४ ॥

दूहाः अदार सहस गीलंगवर, टालड सगला दोस ।

सुन्दर संजम पालती, न करड भाया भोस ॥ ५ ॥

न करइ तिहा माया भोस, वलि निज घट नाणड रोस ।

धन धन ते आवक आवी, गुरुणी नइ प्रणमे आवी ॥ ६ ॥

मीठी तिहां अभीय समाणी, सुन्दर गुरुणी नी वाणी ।

सुणि सुणि वूझइ भवि लोक, दिनकर ढंसणि जिम कोक ॥ ७ ॥

पहुतणी 'रत्नसिद्धि' पाटइ, दिन प्रति जस कीरति खाटड ।

नवनिध हुइ गुरुणी नई नामइ, मनवंचित भवीयण पामड ॥८॥

दूह ।—अग उपाग बहु तणा, जाण० अरथ विचार ।

श्री 'लावण्यसिद्धि' पद्यतणी विद्या गुण भडार ॥६॥

सत्र विद्या गुण भडार, महिमडलि करइ विहार ।

तप करि काया उजवाळइ, 'चदननाला' इणि काले ॥१०॥

'जितचद' सुगुरु आण्णैस, परमाण करइ सुविशेष ।

अनुक्रमि 'विक्रमपुरि' आवी, निज अत्त समय परभावी ॥११॥

सवि जीवह रासि समावी, उत्तम भावना मन भावी ।

अण १० आदरियउ रगण, सुर व(प्र?)णमड धरमहु सगइ ॥१२॥

दूह ।:—समकिन सृवउ पालनी, करती सरणा च्यारि ।

इण परि सधारो कीयउ, माया मोह निवारि ॥ १३ ॥

माया मोह निवारी, करइ नघ प्रभाजन सारी ।

वाजड पच शब्द तिहा भेरी, नीसाण घुरति नफेरी ॥१४॥

अप०२ आरतीय उचारि जिन सासन महिम वधारी ।

जिनवर नो ध्यान धरती, नत्रकार त्रिघड समती ॥ १५ ॥

दूह ।:—सवत 'भोलहस० वासट्टि', पद्यती सरण मझारि ।

जय जय स्व सुर गण करइ, धन गुणगी अवतार ॥ १६ ॥

धन धन गुणगी अवतार, भवियण जन नइ सुखकार ।

थिर थान 'विक्रमपुरि' शुभ, देखि मनि वरइ अचम ॥१७॥

परता पूरण मन केरी, कल्पतरु थी अधिस्त्री ।

हमसिद्धि' भगति गुण गात्रड, ते सुख सपति नितु पावइ ॥१८॥

(तत्कालीन लि० हमार सग्रह म)

पहुतणी हेमसिद्धि कृत
सोमसिद्धि (साध्वी) गीतगोवर्ण गीतग

राग : मल्हार

सरस वचन मुझ आपिज्यो, सारद करि सुपसायो रे ।

सहगुरणी गुण गाइसुं, मन धरि अचिक उमाहो रे ॥१॥

सोभागिण गुरुणी वंदीयइ, भाव धरी विशेषो रे ।सो० आंकड़ी ।

गीतारथ गुरुणी जाणीयइ, गुणवंती सुविचारो रे ।

करुणा रस पूरी सदा, सब जन कुं सुखकारो रे ॥२॥सो० ।

शीलइ सीता रूयडी, सोमइ चंद्र समानो रे ।

उग्र विहारइ तप करइ, महिमा सहित प्रधानो रे ॥३॥सो०॥

‘नाहर’ कुल माहि चंदलउ, ‘नरपाल’ जु गुण ठामो रे ।

तेहनी नारी जाणियइ, शील करी अभिरामो रे ॥४॥सो०॥

‘सिधा दे’ गुण आगली, तास पुत्री गुणवंतो रे ।

रूप करी अति शोभती, ‘संगारी’ नाम कहंतोरे ॥५॥सो०॥

योवन वय जब आवीयउ, पिता मन माहि चितइ रे ।

‘बोधरा’ वंशे दीपतउ, ‘जेठ शाह’ सुहावइ रे ॥६॥ सो० ॥

तास पुत्र ‘राजसी’ कहीजइ, परणावइ मन रंगो रे ।

वरष अठार हुआ जेम(त?)लइ, उपदेश सुणी मन चंगो रे ॥७॥सो०॥

वइराग उपनउ तेहनइ, अनुमति मांगी तेमो रे ।

सासु श्वसरा इम कहइ, हुज्यो तूझ नइ खेमो रे ॥ ८ ॥सो०॥

चारित्र पालना टोहिलउ, सुकुमाल जु तुझ देहो र ।

मन रुहिय्यो काड तुम्ह बली, मुझ चारित्र ऊपर नहो र ॥६॥सो०
उच्छ्रव महोत्सव कीधा घणा, दीया लीगी सारो र ।

लावण्यसिद्धि' क'हड रह', सत्र अथ ना लयड विचारो रे ॥१०॥सो०
'सोमसिद्धि' नाम जु थापीउउ, गुगे करी निधानो र ।

आपण० पत्र थापो सही, चारित्र पाल० प्रधानो रे ॥११॥सो०॥
'संत्रुज' प्रमुख यात्रा करी, तिम त्रलि तीर्थ जारो र ।

कीवी भावड सत्रा सही, तप उपमा सारो रे ॥ १२ ॥सो०॥
'श्रावण वदि चञ्जिसि' दीनड, 'वृहस्पतिवार' प्रधानो रे ।

अणसण लीघड भावसु, सत्र कला गुण निधानो रे ॥१३॥सो०॥
देव थानक पहता सही, श्री गुग्गी गुणवतो रे ।

गुहणी आस्था पूरी करउ, मुझ मन घगो खतो रे ॥१४॥सो०॥
त्रिगला पाल० नहटउ, तुम सु (तो?) प्राण आधारो रे ।

तुम्ह त्रिता हु क्युकर रहु, दुखीया तु सावारो रे ॥१५॥सो०॥
मोरा नड त्रलि दादुरा, वायोहा नड महो रे

चक्रवा चितवन रहड, चद्रा उपरि नहो रे ॥ १६ ॥ सो० ॥
दुखीया दुख भाजीयड, तुम्ह त्रिता अवर न कोइ रे ।

सहगुग्गी गुण गाजीयड, वाडउ दिन त्रिने मोइ र ॥ १७ ॥सो०॥
चद्र सृज उपमा, दीजइ (अधिक) आणदो रे ।

पहुतोणी 'हमसिद्धि' इम भणड, ढज्यो परमाणदो रे ॥१८॥सो०॥
॥ इति निर्वाण गीतम् ॥

(तत्कालीन लि० हमार सग्रहमे)

साध्वी विद्या सिद्धि कृत

॥ गुरुणी गीतम् ॥

×

.....

... करि आगली, सुमति गुपति भंडार ॥ प्र० ॥२॥

गोत्रज 'साउसखा' जाणियइ, 'करमचंद' साह मल्हार ।

भाव अधिक परिणामइ आदर्यो लीधउ संजम भार ॥प्र०॥३॥

जणती (जाणीती ?) गछ माहे पहुतणी, क्रिया पात्र सुविचार ।

अहनिस जपता नाम सुहामणउ, सुख संपति सुखकार ।४। प्र०॥

श्री 'जिनसिंह सूरिसर' आपीयउ, 'पहुतणी' पद सुविशाल ।

तप जप संजम रुडो परि राखती, जिम माता नइ बाल ।५। प्र०॥

साध्वी माहि सिरोमणि साध्वी, भणिय गुणिय सुजाण ।

राति दिवस जे समरण करइ, प्रणमइ चतुर सुजाण । ६ । प्र० ॥

'सोलहसइ निआणू' वरस मइं, 'भाद्रव बीज' अपार ।

इम बोलइ 'विद्यासिद्धि' साध्वी, संपति हुवउ सुखकार ॥प्र०॥७॥

(स० १६६६ भा० व० ३ लि०)



(१) श्रीगुर्वावली फाग

पणमत्रि + नल लच्छि वर, चउवीसमउ जिणदो ।

गाइसु 'धरतर' जुग पउर, आणिसु मनि आणदो ॥१॥

अह पहिलउ जुगउर जगि जयउ ए, श्री 'सोहमसामि' ।

वीर जिणदह तणड पाटि, सो शिअपुर गामी ॥

मोह महाभड तणउ माण, हलि निरदलीयउ ।

'अनुस्वामी' सुस्वामि साल, फवलसिरि वलीयउ ॥२॥

सुनन वलि सिरि 'प्रभउसूरि', 'सिअभव' गणहर ।

दम पूर्वधर 'वधरस्वामि', तयणुकमि मुणिवर ॥

तमु वणि णियर जिसउए, तउ तय फुरन्तु ।

सिरि 'उअजोयगसूरि' भूरि, गुण गणहि वदीतउ ॥३॥

'आनुअगिरि' मिहरि जेण, तप कीयउ अमासी ।

पयडीअय सिरि सूरि मउ, तमु महिम पयासी ॥

'पउमावड' 'धरणिन्द' जामु, पय फ(य) मल नमसिय ।

नउउ सो सिर 'वडमाण', मुणि लोय पससिय ॥४॥

भास

'अणहिट्ठपुणि' मडपत्ति (जीपी) जेण, थापी मुणिवर वासो ।

रायगण 'दुळ्ह' तणड, पामी विरद पयासो ॥५॥

अह 'धरतर विरद' पयास जा(सु), टीधउ चउसालो ।

निम्मल सयम गुणहि जामु, रजिय भूपालो ॥

वारिय चेइयवाम वाम, थापिय मुणिवर केर ।

मूरि 'जिणेसर' गुरुराय, दीपड अधिमेर ॥६॥

'श्रीजिणचंद' मुणिन्द चंद, जिम मो.ड मच्छ ।

विवरिय जेण नवंग चंग, पयडी थंमण पहु ॥

निय वयणिहि शुण कहड जामु, भीमंधर जिणवर ।

सलहिज्जड मिरि 'अभयदेव', मो मूरि पुरन्दर ॥७॥

'वागडिया' 'दस स(ह)स' मार सावड पडिबोहिय ।

'चित्रोडी' 'चामंड' चंड, जमु दरमणि मोहिय ॥

'पिण्डविमोही' विचार सार, पयरण निम्माविय ।

'जिणवल्लह' सो जाणीयड ए, जण नयण मुहाविय ॥८॥

भास

'अंवा' एवि पयास करि, जाणी जुगहपहाणो ।

'नागदेवि (व?)' जो मुणिवर वाणी अमिय ममागो ॥९॥

अहे अमी समाण वखाण जामु, सुणिवा सु(र) आवड ।

चउसठि जोगणि जासु नामि, नहु तणु (क्रिणि?) संतावड ॥

जुगवर श्री 'जिणदत्तसूरि', महियलि जाणीजडं ।

निम्भल मणि दीपंति भाल, 'जिणचंड' नमिज्जड ॥१०॥

राजसभा छतीस वाड, क्रियड जड जड कारो ।

'बवेरक' पड ठवण जासु, सुप्रसिद्ध अपारो ॥

सहगुरु श्री 'जिनपत्तिसूरि', गाजड अलवेसर ।

सूरि 'जिणेसर' 'जिणपचोह', 'जिणचंड' जईसर ॥११॥

चपक जिम वगराज माहि, परिमल भरि महकड ।

कस्तूरी धनमार कमल, पयडउ बहकड ॥

रतिम सोहड 'जिनकुजल सूरि', महिमा गुण मणहर ।

तयगतरी 'जिनपद्मसूरि', जिणजासणि गणहर ॥१२॥

भास

रुप्रधिवन्त 'जिनलप्रधि' गुरु, पाटिहि सिरि 'जिणचटा' ।

अन्य करण जिण अन्यप्रत, श्री'जिणराज'मुणिल्लो ॥१३॥

अह श्री 'जिनराज' मुणिल्ल पाटि, गयणगणि चढो ।

सरतरगण सिंगार हार, जण नयणाणणे ॥

मायर जिम गभीर धीर, आगम सपन्न ।

सहिगुरु श्री 'जिनभद्रसूरि', कलि गोप्रम मन्नउ ॥१४॥

तसु पाटि'जिणचढ सूरि', जिनममुद्र सूरिल्लो ।

तसु पाटिहि 'जिनहस सूरि', किरि प्रनम चन्दो ॥

श्री जिनमाणिक सूरि' तासु, पाटिहि गुण भरियउ ।

चिर जीउउ जगि प्रजयप्रन्न, सघहि परिपरियउ ॥१५॥

जद्रूमडलि अचल मरु, दिणयर दोपतउ ।

गिर उ सरतर सघ एह, ता जगि जयप्रन्नउ ॥

वाणारमि सिरि 'सेमहस', गणिपर सुपसा ॥

रेलारेली फाग प्रवि, सहगुरु गुण भाउउ ॥१६॥

॥ इति गुरावली फाग सपूणा ॥

चारित्रसिद्ध कृत
(२) गुर्वावली

सिव सुखकर रे, पास जिणंसर पय नमउ,

गोयम गुरु रे, चरण कमल मधुकर रमउ ।

कवि जननी रे, दिउ मुझ शुभ मति निरमली,

रगि गाडसुरे, सुविहित गच्छ गुर्वावली ॥

सुविहित गच्छ गुर्वावली किर, जेम भविष्यण गाइयड ।

चहु सिद्धि रिद्धि निवान उत्तम,हेलि भिवपुर पाइयड ।

जे नाण दर्शन चरण उज्जल, 'चउदसयवावन' वली ।

गणवार सवि तें भावि वंडो, पह निर्मल मति रली ॥१॥

भिव रमणी रे, वर सिरि वीर जिणंसर,

गुण गण निधि रे, 'गोयम'स्वामी गणहर ।

उपगारी रे सुखकारी भविष्यण तणड,

डक जोहा रे, तेहना गुण केहु किम थुणड ॥

किम थुणड तेहना गुण महोदधि, कवहि पार न पावए ।

जिसु मधुर ध्वनि कर देव दानव, किन्तरी गुण गावए ॥

जसु नाम जिहा झरइ अमृत, पढम संगल कारणो,

सो वीर जिणवर पढम गणवर, जयो दुख निवारणो ॥२॥

'गच्छाधिप' रे, 'सोहम' सामी गुण तिलो,

तसु पाटहि रे 'जंवू सामी'जग तिलो ।

वर कंचण रे, कोटि 'नवाणू' परिहरी,

सुभ भावइ रे, परणी जिह संयम सिरि ॥

सयमश्री जिहि हलि परणी, चरण करण सु धारओ ।

मय अट्ट चरण मान गजण, भविय दुत्तर तारओ ।

सोभाग सुन्दर सुगुण मन्दिर, मुक्ति कमला कामिनी ।

जिह नाथ पामी अतलेने? उइ, भइय शुभ गुण गामिनी ॥३॥

तत्पनन्तर र, 'प्रभव स्वामि' श्रुतव प्रली,

सिख पट्टति र, भविप्रह भाखी अति भली ।

'मिजभव' र, सामी गुण गणधार ए,

मिथ्या मत र, पाप तिभिर भर वार ए ॥

वार ए कुमत दुसग दूपण, भात्र भेय दिनायरो ।

'जसभइ' गणहर नाण दसण, चरण गुणगण सायरो ।

'सभूतिविजय' प्रधान मुनिपती, प्रजल कलिमल खडणो ।

श्री 'भद्रनाह सुवाहु सजम, जैन शासन मडणो ॥ ४ ॥

श्री 'धूलिभद्र' र, वाम कामभट भजणो,

उपसम रस र, सागर मुनि गण रजणो ।

जसु उत्तम रे, सुजस पडह जगि वाज र

अति निरमल र, शील सनल दल गाज ए ॥

गाजल दुखर सुविवि कारी जासु गुण पृरी मही ।

रवि चक्र तलि वर मील सुभ वलि, जेह सम सरिखो नही ।

प्रतिनोवि कोश्या मधुर वयणिहि, किद्ध उत्तम नाविया ।

सो नलचारी सुकृत-धारी, भावि प्रणामो भाविया ॥ ५ ॥

तसु अनुमि र, 'अज्जमहागिरि' जगि जयो,

जिणरूपह र, तुलगाकारी सो भयड ।

तसु सविनय रे, 'अज्ज गृहथी' जाणिये,

'संप्रति' नृप रे, मावय जासु वखाणियड ॥

वखाणिये जगि जासु उत्तम, लब्धि महिमा अति धणो ।

श्री 'अज्जसंती' थियर कहियड, तासु पाट्टिहि गच्छ धणो ।

'हरिभद्र' आरिज सुमति वासिन, 'माम अज' मुणीमरो ।

'पन्नवण सुत' उद्धार कारी, जयो सो जगि जुगवरु ॥ ६ ॥

हिव आरिजंग, 'संडिल' नाम जडमम, श्री भिवत रे मित्र' मुण्डि जुगोमरु ।

धर्मागिर रे धर्माचारिज सोहण, वर संजम रे सील सुगुण जग मोहण ।

मोह ए रतनत्रय विभूषित, 'अञ्जगुत्त' मुणीमरा,

गुण रयण रोहण भविय मोहण, 'अज्जममुद्द' गणीमरा ।

सिर 'अज्जमंगु' सुधम्म पयडण, पवर दिणयर दीप ए ।

सिरि 'अज्ज सोहम' थयिर हरिवल, मोह कुञ्जर जीप ए ॥७॥

गुण सागर रे, 'भद्रगुप्त' मुनि नायगो,

भवियण जण रे, समकिन सुरतरु दायगो ।

'सीहगिरि' गुरु रे, अंतेवासी राज ए,

जा ईमर रे, देस पूर्व-धर छाज ए ॥

छाज ए वाला मथणमाला, रुव दंसणि नवि चल्थो ।

वर कणय कोडि हेलि छोडी, मथण मय भड जिणि भल्यड ।

सिरि 'वयर स्वामी' सिद्धि धामी, फलिय सिव सुह आगमो ।

निकलंक चारित्र धवल निर्मल, सिव जुग पवरागमो ॥८॥

श्री आरिज रे, 'रक्षित' जिणमथ भास ए,

नव पूरव रे, साधिक शुभ मति वासए ।

‘दुर्बलिकापस्य’ प्रधान दिनेसर, श्री ‘आरिजनन्दि’ मुनिर्गणसरु ॥
गगेसरु मिर ‘नागहृत्वी’ मान माया चूरणो,

‘रवत’ गणधर ‘ब्रह्मन्नीपी’ सूरि वछिय पूरणो ।

‘सडिल’ ज२२२ परम सुहकर, ‘हमवत’ महा मुणी ।

सिर ‘नागअञ्जुण’ नाम वाचक, अमिय सम सुन्दर झूणी ॥ ६ ॥

‘श्रीगो वन्द’ र वाचक पत्नी हिय लहड,

सम दम सम र, चरण करण भर निरबहइ ।

श्रुत जल निधि र, ‘दिन्नसभूइ’ वायगो,

‘लोकह हित’ र, सहगुर शुभ मति वायगो ॥

वायगो भासइ हियइ वासइ, ‘दूप्यगणि’ जगि निरमला ।

वर चरण सती गुप्ति मुत्ती, नाण निश्चय उजला ॥

श्री ‘उमास्वाति’ सुनाम वाचक, प्रवर उपसम रतिधरो ।

‘पचमय’ पयरण परम वियरण, पसमरइ सुइ गुणधरो ॥१०॥

हिव ‘जिनभद्र’ र, क्षमाममण नाम० गणी,

श्री ‘हरिभद्र’ र सूरिसर जगि दिनमणी ॥

अगीकृत र, जिन मत ‘ठव सूरेश्वर’ ।

श्री ‘नमिचन्द्र’ र, सूरिराय दुरयह हरु ॥

दुरिय हरु सुसकर सुविहित, सूरि ‘उद्योतन’ गुरो,

श्री सूरिमत्र प्रभाव प्रकटित, ‘वर्द्धमान’ गुणाकरो ॥

दुह कुमत छदी सुविवि वदी, मिच्छतम तम दिगारो,

जिणधम्म दसी अति जससी, भविय कयरवस सहरो ॥११॥

जे सुहृगुरु रे, अ विहारे विहरता,

‘अणहिल्लपुर’ रे पाटणि पहुता विहरता ॥

चियवासी, रे महिमा खंडण तिह कियउ,

‘दुल्लभ’ नृप रे ‘खरतर’ विरुद तिहा दीयउ ॥

तिह दिउउ खरतर विरुद उत्तम. नाम जग माहि विस्तरड,

आदरड जिनमन भावि भविषण, सुविधि मारग विस्तरड ॥

चियवासी मयगल सवल दल छल, केसरी पद पाव ए,

श्री ‘जैनईश्वर सूरि’ सुविहित, सुजस रेह रहावए ॥१२॥

हिव सुविहारे, चक्र चतुर चिन्तामणी,

मिथ्याभर रे, तिभिर विहंडन दिनमणी ॥

जिन प्रवचन रे, वचन विलास रसालए,

वन मधुकर रे, अति संवेग रसालए ॥

‘संवेगरंग विसाल साला’, नाम प्रकरण जिह कह्यो,

भव पाप पंक पखालि निरमल, नीर संजम तप धरयो ॥

‘जिनचंद्र सूरि’ नवाग विवरण, रयण कोस पयास(ए)णो,

श्री ‘अभयदेव’ सुणिद दिनपति, परम गुण गण भासगो ॥१३॥

हिव तप जप रे, ज्ञान ध्यान गुण उजला,

आतम जय रे, चरण सुधारसु निरमल ।

‘जिनवल्लभ’ रे, सुविहित मारग दाख ए,

विधि थापक रे, कुमति उसूत्र वि दाख ए ॥

दाख ए गंग तरंग सुवचन, अविधि तरु भंजण करी,

संवेग रंग तरंग सागर, नवल आगल गुणसरी ।

तसु पाटि श्री ‘जिनदत्त सूरि’ गुरु, ‘युगप्रधान’ सुहायरो ।

चारित्र चूडामणि समुञ्जल, जैनचन्द्र' सूरिसरो ॥१४॥

तासु पाटिहि र, वालइ चद कि चढणो

श्री 'जिनपति' र, सूरिसर जगि मडणो ।

'जिनइश्वर' र 'जिनत्रयोध' सूरिसर,

नव सुन्द(र)र, श्री 'जिनचन्द्र' सुधा करु ॥

श्री 'जैनचन्द्र' सुगकरु जल, कुसल कमला कारगो,

'जिनकुसल सूरि' सुरिंद सकट, दुग्ग दोहग वारगो ।

'जिनपदम' सूरि विलास अविचल, पउम आतम थाप ए ।

'जिनलब्धि' लब्धि निधान 'जिनचन्द्र', सूरि सुभ मति आप ए ॥१५॥

उदयाचल रे, उदय 'जिनोदय' सुहगुरु,

सुसन्नाथी रे, श्री 'जिनराज' कन्नाथर ।

भद्रकर रे, श्री 'जिनभद्र' सुणीसर,

'चद्रायण' र, 'चन्द्रसूरि' गुरु गणहरु ॥

गणार मोह विकार विरहित, 'जिनसमुद्र' यतीश्वरु ।

'जिनहस सूरिसर' सुमगल, करण टुह दालिं हरु ।

श्री 'जैनमाणिक' सुगुण माणिक, सीरसागर अनुपमो,

जय सुसकारी दुसहारी, कप्पतर वर जगमो ॥१६॥

श्री 'सोहम' र, स्वामि ने अनुक्रम भयो,

तसठमइ रे, पाटइ ए जुगार जयो ।

सूरीसर रे, श्री 'जिनचन्द्र' सुमोह ए,

वयरानी ए, उपसम धर मन मोह ए ॥

मोह ए भवियण जणह मानस, एह परम जगीसरु,

वर ध्यान सुमति नियात सुन्दर, नवल करुणा रस भरु ।

पण विपथ विपम विकार गंजण, भाव भड भय जीप ए ।

सो सुवियचारी शीलधारी, जैन आत्मन दीप ए ॥१७॥

गंभीरिम रे, उममा सागर गुरु तणी,

किम पावइ रे जिह तइ महिमा अति घणी ।

मह मूलिक रे, रत्नत्रय जिह जाणीयइ,

सम दम रम रे निरमल नीर वखाणिये ॥

वखाणिये जिह सवल संयम, रंग लहरी गहगहइ,

सुध्यान वडवानल सुगुण मय, नदी पूर जिहां वहे ।

एक इह अचरिज भयउ हम मति, सुणहु कवियण डम कहइ ।

‘जिनचंदसूरि’ सुरिन्द्र पटतर, कहउ जलनिधि किम लहइ ॥१८॥

इह सुहगुरु रे, गुण गण वर्णत किम सके,

वहु आगम रे, पाठी तउ पुणि ते थके ।

इह कारणि रे, श्री गुरु सम को किम तुलइ,

किह पीतलि रे, कंचन सम सरि किम मुलइ ॥

किम मुलइ रयणी दिन समाणी, बहुय सरवर सागरा,

नक्षत्र ससहर सूर कातर, उखर भू रयणागरा ।

सोभाग रंग सुरंग चंगिम, चरण गुण गण निरमला.

‘जिनचन्द्र सूरि’ प्रताप अविचल, दिन दिनइ चढ़ती कला ॥१९॥

‘दिलि’ मंडलि रे, ‘रुस्तक’ नगर सोहामणो,

तिहा श्री संघ रे, सोहइ अति रलियामणो ।

ऊमाहो र, निवसइ गुरु वसण तणो,

मन महि जिम र, चानक घन तिम अति घणो ॥

अति घणो भाव उन्हास उच्छन, सधन धन सो अवसरो,

सा वन्न वला सु धन मेला, जत्थ दीसइ सुहगुरो ।

जे भावि वण्ड तह नन्द० दुग्ग छन्द० बहु परै,

सप्रहइ समन्ति शुद्ध मोवन, सुगुर उच्छन जे करइ ॥२०॥

मन मोहन र, गुण रोक्षण घरणी धरु,

पूर्व ऋषि र, उजवाळइ जगतीसरु ।

चिर ननपो र, श्री 'जिनचद्र' यतीमर,

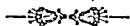
जा दिनकर र, ससर सुर वर भूधर ॥

सुर भूधर जा लगइ अविचल, सौरमागर महियले,

जयन्त गुर गच्छपति गणर प्रकट तेजइ इणि कलइ ।

'भतिभद्र' वाचक सोस चारित्र, -सिंह' गणि इम जप ए ।

गुर नाम सुणता भावि भणता, होड मिव सुख सप ए ॥२१॥



गुर्वावली नं० ३

ढाल—गीता छन्द नी ।

भारति भगवति र, तु वसि मुख कजे मेरइ,

सहगुर सुरतर र, गा सु सुजस नवरइ ।

तत्पुत्र गा०सु सुविहित यति पति, सिरि 'ज्योतनसूरि' वरो ।

तसु पाट पुन्दर मोहग सुन्दर 'वर्द्धमानसूरि' युग प्रवरो ।

'अणाहिलपुर' 'दुर्लभ' राय अगाणि, जिणि मठपत षण जीतव ।

क्रिया कठोर 'जिनचरसूर' ति, 'सरतर' विन्द वदीतव ॥२१॥

विधि सु विरचित रे, जिणि 'संवेगरंगशाला' ।

गुरु 'जिनचन्द्र मूरि' रे, तेज तरणि सुविशाला ।

सुविशाल सुश्रंभण पास प्रकाशक, नव अंग विवरण करण न(व?)रो ।

श्री 'अभयदेव सूरि' वर तसु पाठक, श्री 'जिनवल्लभ मूरि' गुरो ॥

'अंधिका देवी' देसित युगवर, 'जिनदत्त मूरि' अदीणो ।

नरमणि मंडित 'जिनचंद्र' पदि, 'जिनपति' मूरि प्रवीणो ॥२॥

'नेमिचन्द्र' नन्दन रे, सूरि 'जिनेसर' सारा,

सूरि सिरोमणि रे जिन प्रबोध उदारा ।

सुविचार उदारा 'जिनचन्द्रसूरि', 'जिनकुशल मूरि' 'जिनपद्म' मुणी

श्री 'जिनलब्धि सूरि' 'जिणचन्द्र', 'सुगुरु जिणोदय' मूरि मुणी ।

'जिनराज' मुनिप (ति) 'जिनभद्र' यतीसर,

श्री 'जिणचन्द्र सूरि' 'जिनसमुद्र' वसी ।

श्री 'जिनहंस सूरि' मुनि पुंगव श्री 'जिनमाणिक सूरि' जशी ॥३॥

तसु पदि परिगडउ रे, गुण मणि रोहण सोहड ।

'रीहड' कुलतिलउ रे, सकल सुजन मन मोहड ।

मोहड वचन विलास अमृत रस, 'श्रीवंत' साह जनेता ।

'सिरियादे' परि रत्न अमूलक, श्री खरतर गच्छ नेता ।

"नयरंग" भणइ विसद विधि वेदी, संघ सहित निरदंदी ।

श्री 'जिनचन्द्र' सूरि सूरीश्वर, चिर नन्दउ आणन्दी ॥ ४ ॥

कविवर समयसुन्दर कृत

(४) खरतर गुरु पद्यावली

प्रणमी वीर जिणेसर दव, सारइ सुरतर निन्तर सेव ।

श्री 'खरतर' गुरु पद्यावली, नाम मात्र प्रमगु मन गली ॥ १ ॥

उच्यते श्री 'न्योतन' सूरि, 'वर्द्धमान' विद्या भर पृरि ।

सूरि 'जिणेसर' सुरितर समो, श्री जिनचन्द सूरेश्वर' नमइ ॥२॥

अभयप्र सूरि सुरकार, श्री 'जिनप्रद' किरिया मार ।

दुग्धप्रदान 'जिनदत्त सूरिद', नरमणि मटित श्री 'जिनचद' ॥३॥

श्री 'जिनपति' सूरिश्वर' राय, सरि जिणेसर प्रणमु पाय ।

'जिनप्रदोव' गुरु समरू सत्ता, श्री 'जिनचन्द' मुनीश्वर मुदा ॥४॥

दुग्धल करण श्री 'दुग्धल' मुणिद, श्री 'जिनपदम सूरि' सुत्तरु ।

लविवत श्री लविव' सूरिस, श्री 'जिनचद नमु निमदीस ॥५॥

सरि 'जिनोदय' उच्यतेभाण, श्री 'जिनराज' नमु सुविभाण ।

श्री 'जिनभद्र' सूरिश्वर भलउ, श्री 'जिनचद सकल गुण निलउ ॥६॥

श्री 'जिनममुद्र सूरि' गच्छपती, श्री 'जिनहस' सूरिश्वर यती ।

'जिनभाण+सूरि' पाटे थयउ, श्री 'जिनचद सूरिश्वर जयो ॥७॥

ए चउनीस खरतर पाट, जे समरइ नर नारी थाट ।

त पामइ मनरित कोडि, समयसुन्दर' पभणइ करजोडी ॥८॥

इति श्री खरतर २४ गुरु पद्यावली समाप्ता लिखिताच प० समय-

सुदरण ॥ सुन्दर वड वडे अक्षरो मे लिखित ।

(जय० भ० न० २६ गुटका)

कविवर गुणविनय कृत

(५) स्वरारगच्छ गुर्वावली

- - - - -

प्रणमं पहिली श्री 'वर्द्धमान', वीजो श्री 'गौतम' शुभ वान ।

त्रीजो श्री 'सुधरम' गणधार, चोथो 'जंबू' स्वामि विचार ॥१॥

पंचम श्री 'प्रभव' प्रमु थुणुं, श्री 'अर्थ्यभव' छठो भणुं ।

'यज्ञोभद्र' सत्तम गणधार, श्री 'संभूतिविजय' सुखकार ॥२॥

'कोसा' वेश्या वश नवि पडयो, 'थूलभद्र' मुझ मनमे चढयो ।

दशम 'सुहस्तिसूरि' उदार, 'संयति' नृप प्रतिबोधनहार ॥३॥

श्री 'सुस्थित' मुनि झयारमो, 'इन्द्रदित्र' वारम नितु नमो ।

तेरम 'दिन्नसूरि' दीपतो, 'सोहगिरी' सुर गुरु जीपतो ॥४॥

पनरम नरम वाणि जेहनी, रूप कला सोहड देहनी ।

दस पूर्व धर धोरी जिस्यो, 'वयरिस्वामि' मुझ हीयडे वस्यो ॥५॥

सोलम लधुवय जिण व्रत लीध, 'वज्रसेन' स्वामि सुप्रसिद्ध ।

सतरम 'चन्द्रसूरि' मुणि चन्द्र, 'सामन्तभद्र सूरि' सुखकन्द ॥६॥

'देवसूरि' प्रगमं सुपवित्त, 'कुमद्रचन्द्र'वादे जिण जित्त ।

वीसमो श्री 'प्रद्योतनसूरि', जगि उद्योत कियो जिणि भूरि ॥७॥

सप्रभाव 'शातिस्तव' कारि, 'मानदेव' गुरु महिमा धारी ।

श्री 'देवेन्द्रसूरि' गुण निलउ, सिव पह जिण देखाड्यो भलो ॥८॥

'भक्तामर' 'भयहर' हित धरी, स्तवन कीयो जिण करुणा करी ।

ते श्री 'मानतुंगसूरीश', 'वीरसूरि' राजे निसदीस ॥९॥

ढाल—श्री 'जन्दवसूरीनर', पचवीसम प्रभ जाणि र ।

'दवानन्द' वस्त्राणियर, छावीसम मनि आणी र ॥ १० ॥ ए०
पहवा सदगुरु गाडये, मन शुद्धि करीय त्रिकाले र ।

सयम सरवरि झीलता, पटकाया त्रतिपालो र ॥११॥ ए०
'विक्रमसूरि' त्रिवाकरू, तसु पाटि 'नरसिंह सूरि' र ।

श्री 'समुद्र सूरीश्वर', महक० सुजम कपूर र ॥ १२ ॥ ए०
'मानदव' त्रीसम हुयो श्री 'विजुधप्रभसूरि' र ।

'जगानन्द' वत्रीसमो, राज० सुगुग पडूरि र ॥ १३ ॥ ए०
श्री 'रविप्रभ' रवि सारलो, तजड करि 'मतिमद्र' र ।

'यशोभद्र' चउत्रीसमो, पइत्रीसम 'जिनिमद्र र' ॥ १४ ॥ ए०
श्री 'हरिभद्र' छत्रीसमो, सरत्रीसम 'दवचन्द्र' र ।

'नेमिचन्द्र' अडत्रीसमो, ज्यो जाणि दिणन्द रे ॥ १५ ॥ ए०
ढाल.—श्री 'उद्योतन' मुनिवरु, श्री वर्द्धमान महन्तो र ।

विमल' दण्डनायक जिणे, त्रतिनोध्यो जयवन्तो रे ॥१६ ॥
युगप्रवान गुर जाणिवा ॥

'सरतर' त्रिरुद्र जिणड ल्यो, 'दुर्लभ' राज नी सासड र ।

सरि 'जिणेशर' जगि जयो, कीरति सवि जसु भासर र ॥१७॥यु
श्री 'जिनचन्द्र' यतीमरु, 'अभयदेव' गणवारो र ।

नव अग विवरण जिणि कीया, जिण शासन सिणगारो रा॥१८॥यु
ढाल!—चामुडा जिणि वृह्णवी, श्रुतसागर तसु पाटड र ।

श्री 'जितवल्लभ' गुर थया, मदीयल मोटइ थाटइ र ॥१९॥ यु०॥
जीती चौमठ योगिनी, जिणि श्री 'जिनदत्तसूरि' रे ।

नाम ग्रहण तेहनो कोयड, विकट सकट सवि चूरड रे ॥२०॥यु०॥

श्री 'जिनचन्द्र सूरीसर' भाभलो, नरमणि मण्डित भालोजी ।
 तेहनड पाटड श्री'जिनपति'थया,सकल माधु भूपाल जी॥२१॥धन०॥
 धन धन श्रीखरतर गच्छ चिरजयो, जिहा प्हवा मुनिराजो रे ।
 शुद्ध क्रिया आगम मे जे कही, ते भाखड मिव काजो जी ।२२॥धन०॥
 सूरि 'जिणेशर' सररवति मुख वसड, जगु महिमा नो निवासो जी ।
 'जिनप्रबोध' प्रतिबोधन जे करड,अमृत वचन विलासोजी ॥२३॥धन०॥
 'श्रीजिनचन्द्र' यतीसर तेहथी,'श्रीजिनकुण्डल' प्रयानोजी ।
 जसु अतिशय करि त्रिभुवन पूरियो,कुण हुवड ग्ह समानोजी॥२४॥ध
 'वाल धवल सरम्बती' विरुद्ध करी, लाधी जिण विख्यातो जी ।
 'पद्म सूरीनर' तसु पाटड थयो, लवधि सूरि सुवदीतो जी ॥२५॥धन
 श्री 'जिनचन्द्र' 'जिनोदय' यतीवरु, धीरम धर 'जिनरायो' जी ।
 श्री 'जिनभद्र' थयो सुविहित धगी, भवसागर वर पाजो जी ॥२६॥ध
 'जिनचन्द्र' 'समुद्र' सूरीसर सारिखो,कुण हुवड ऋषि गुण पूरि जी ।
 श्री 'जिनहंस' मुनीसर मानोयइ, श्री 'जिनमाणिक' सूरि जी ॥२७॥
 पातिसाहि अकवर प्रतिबोधीयो, अमर पडह जगि दिद्धो जी ।
 पंचनदी जिणि साधी साहसड, चन्द्र धवल जस सिद्धोजी ॥२८॥ध०
 'युगप्रधान' पद साहड जसु दीयो, श्री 'जिनचन्द्र' सूरिदो ।
 उवारी 'खंभायत' मालली, चिरजयो जा रवि चन्दो जी ॥२९॥धन०
 वीर थकी अनुक्रमि पट्टइ हुआ, जे जे श्री गच्छ धारो जी ।
 नाम ग्रही ते प्रभण्या एहना, कुग पामइ गुण पारो जी ॥३०॥धन०॥
 'जेसलमेरु' विभूषण 'पास' जी, सुप्रसादइ अभिरामो जी ।
 श्री 'जयसोम' सुगुरु सोसइ मुद्रा, 'गुणविनय'गणि शुभ कामो जी॥३१॥

॥ श्री जिनरगसूरि वैत्कानि ॥

॥ ६१० हसला गीतनी जाति ॥

(१)

मनमोहन महिमा निरुड, श्री रगविजय उपज्ञायन र ।

सेवत सुरत+ सम वडड, सगहि कइ मनि भाय न र ॥१॥म०॥

सवत 'मोल अठइत्तरइ', जेसलमर मझारि न र ।

फागुण वदि सत्तमि दिन२, सयम त्यइ शुभ वार न र ॥२॥म०॥

अनुपम रूप फला निला, ज्ञानचरण आधार न र ।

भविष्य नर प्रति वृझय२, परिहर विषय विकार न र ॥३॥म०॥

निज गच्छ उन्नति कारणइ, श्री जिनराज सुरिन्द न र ।

पाठक पद दीवउ विपड, प्रणमड मुनि ना वृन्द न र ॥४॥ म०॥

कुमति मतगज कसरो, महिमागर मतिवन्त न र ।

मान२ मोटा महिपती, महिमा मर महन्त न र ॥५॥म०॥

'सिधुड' वग दिनेमरू, 'साकरशाह' मल्हार न र ।

'मिन्दूर द' उर हमलउ, 'सरतरगच्छ' सिणगार न ॥६॥म०॥

वड जासा जिम विस्तरउ, प्रतपउ जा रवि चन्द न र ।

'राजहस' गणि वीनवइ, वज्यो परम आणदन र ॥७॥म०॥

॥ इतिश्री पाठक गीतम्, कृत प० राजहस गणिना ॥

(२)

खरतर गच्छ युवराजियउ, थाप्यउ श्री जिनराज न रे ।

पाठक रंगविजय जयउ, सत्र गच्छपति सिरताज न रे ॥ १ ॥

भवियण वांदु भावस्युं, जिम पायउ मुख सार न रे ।

रूप कला गुण आगलउ, निर्मल सुजस भंडार न रे ॥२॥ भ०॥
सरस सुकोमल देसना, मोहइ सहूय संसार न रे ।

कूड़ कपट हीयइ नहीं, सहुको नइ हितकार न रे ॥३॥ भ०॥
होडि करइ गुरु नी जिके, ते जायइ द्रह वोडि न रे ।

सुख पायइ ते सासता,जे सेव करइ कर जोडि न रे ॥४॥ भ०॥

गुरु गुण गात्रइ मन सूधइ, नाम जपइ निगि दीश न रे ।

‘ज्ञानकुशल’ कहइ तेहनी, पूजइ मनह जगीश न रे ॥५॥ भ०॥

॥ युगप्रधान पद गीतम् ॥

(३)

‘जिनराजसूरि’ पाटोधरु, दसच्यार विधा जाण ।

वचन सुधारस वरसत्तो, मानै सहुको आण ॥ १ ॥

मोरी सही ए वादोनी, जिनरंग, आणी मनमें रंग ।

वाणी गंग तरंग । मो०

पातिशाह परख्यो जेहने, दीधो करि फुरमाण ।

, सात सोवे (सुत्रा ?) माहरो, करज्यो वचन प्रमाण ॥२॥ मो०॥

तसु पुत्र दीपे पाटवी, ‘दारा’ स को सुलताण ।

युगप्रधान पदवी तणो, करि दीधो निसाण ॥३॥ मो०॥

‘नमोदास’ ‘सौधड’ जाणोजर, ‘श्रीमाली’ जाति सुजाण ।

मा(सा?)ह पचायण अति भलउ, गुर रागी गुण जाण ॥४॥मो०॥
पैसारो भलिभाति सु, कीरो निराण र काज ।

हाथी निणगाया भला, घोडा मुखमली साज ॥५॥मो०॥
वाजा वजाया तरा (?), नजा वणाया तूर ।

दान देइ याचक भणि, दादाजी र हजूर ॥ ६ ॥मो०॥
श्रीपृज आया उपासरै, श्री सघ सगले साथ ।

मन रग महाजन लोकम, नालेर दीया हाथि ॥७॥ मो०॥
सूत्र वधावै मोतीयै, गुहली गावै गीत ।

‘कइ उत्रारै कापडा, राखै कुल गी रीत ॥८॥ मो०॥
रुचन ‘सतरदाहोतर’, श्री सघ आणद आण ।

‘युगप्रधान’ पद थापीया, ‘मालपुरै’ मडाण ॥९॥ मो०॥
रादी तणा मद जीपत्तौ, महिमा तणो भडार ।

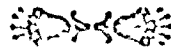
दूर कीया दुरजन जिणइ, सरतर गठ निणगार ॥१०॥मो०॥
धन मात जस ‘सिटर ट’, धन पिता ‘साकरमीह’ ।

धन गोत्र ‘मिधुड’ परगडो, धन मोरी ए जीह ॥११॥मो०॥
‘रमलरत्न’ इम बीनये, मुझ आज अविक आणद ।

चिरजीवो गुर ऐ सही जालगि ध्रुरति चन्त ॥१५॥मो०॥

॥ श्री कमलहर्ष कवि कृत ॥

श्रीजिनरत्नसूरि निर्वर्ण रत्न



सरभति सामणि चरण कमल नमी, हीयडड मुगुरु धरेवि ।

श्री 'जिनरत्न सूरिभर' गुरु तणा, गुण गाऊं संखेवि ॥ १ ॥

'श्रीजिनरत्नसूरिभर' समरिये ॥

महियल मोटः 'मरुधर' देस मड, 'शुभ सेरुणा' गाम ।

धूना(धनी?)लोक वसड मुखीया जिहां, धरमी अति अभिराम ॥२॥श्री॥

वसड तिहा वर गाह 'तिलोकमी', चावः चतुर सुजाण ।

'ओसवाल' वंशे उन्नति करू, जुगति करड वखाण ॥ ३ ॥श्री॥

तासु घरणि 'तारा दे' (दी) पती, सीलवती सुचंग ।

रूपवन्त जोभा मे आगलो, सरस सुकोमल अङ्ग ॥ ४ ॥श्री॥

रत्न अभोलख जिणड जनमियो, कुल मण्डण कुल भाण ।

मात पिता वन्धव सहु हरेखिया, जाणड राणो राण ॥ ५ ॥श्री॥

'आठ वरस' नड मन माहि उपनो, लवु वय पिण वैराग ।

माया ममता सगली छाडिने, दिन २ चढतड वान (भाग?) ॥६॥श्री॥

श्री 'जिनराज सूरिभर' गुरु कन्है, आणी मन आणन्द ।

निज 'वाधव' 'माता' तीने मिली, लीधी दीख मुणिद ॥ ७ ॥श्री॥

शास्त्र अनेक भण्णया थोडइ दिनड, बुद्धि तणड विस्तार ।

चउद वरस नइ संयम आदर्यो, सफल गिणी अवतार ॥ ८ ॥श्री॥

निज उपम० भविष्य वृषवइ, करइ अनक नि०र ।
 पाल (इ) मन सुउड मुनिवर भलउ, चारित्र निरतीचार ॥ ६ ॥ श्री ॥
 गुण अनक सुगी श्री पुजजी, तडापि निज पाम ।
 'अहमदावाद' नगर माह आपियउ, 'पाठिक पट' जलाम ॥ १० ॥ श्री ॥
 जुगत भलिपर 'जमल' 'तजमी', अवसर लही मनन्त ।
 आगड सु उच्छव कीयउ तिहा, सर-उउ धन धरि सन ॥ ११ ॥ श्री ॥
 'पाटण' नगरड पूज्य पवारिया, चतुर रहा चउमाम ।
 सूत्र मिहत्त अनक मुणावना, महु नी पूरड आम ॥ १२ ॥ श्री ॥
 मवत 'सतरइ मय' वरमड भलइ, श्री 'जिनराज सृग्मि' ।
 मडहध रतन सूरुमर'धापीया, मनि धरि अधिक जगोम ॥ १३ ॥ श्री ॥
 'अनाटा मुदि नमो शुभ दिन', धिर निज पाटड वापि ।
 श्री 'जिनराज' सरगि पवारिया, त्रिविधि समावि पाप ॥ १४ ॥ श्री ॥
 श्री 'जिनरत्न' तणी मानी महु, दम प्रदशड वाण ।
 ठामि २ मिच' तडाबीया, गणिता जन्म प्रमाण ॥ १५ ॥ श्री ॥

ढाल*—नू गोया गिर गिगर मोहड, पहनी ।

चमासि पारण करी मंगु, कीयो तयी रिहार र ।

आरिया पालणपुरड' पूजजी, कीयउ उच्छव सार र ॥ १ ॥

आज वन 'जिनरत्न' वाद्या, गया पातक दूर र ।

श्रीसध मगल० मनि हरर उउ, प्रकट पुण्य पडूर र ॥ २ ॥ आ ॥

'भोजनगिरी' श्री मघ आपहि, आवीया गणवार र ।

प२मार उच्छव मरल कीधउ, सीठ (सठ?) पीयइ' सार र ॥ ३ ॥ आ ॥

संघ नइ वादिवि सुपरइ, पूज्यजी पट्टधार रे ।

विचरता 'मरुधर' देस मांहे, साधु नइ परिवार रे ॥४॥ आ०॥
संघ आग्रह आविया हिव, पूज्य 'वीकानेर' रे ।

'नथमल' 'वेणइ' उच्छव कीधउ, खरचीयो धन ढेर रे ॥५॥ आ०॥
उपदेस निज प्रतिबोध श्रावक, करता उप विहार रे ।

'वीरमपुरइ' चउमास आ०या, संघ आग्रह सार रे ॥६॥ आ०॥
चउमास पारण आविया हिव, 'वाहडमेर' सुजाण रे ।

चउमास राख्या संघ मिलकर, पूज्यजी परमाण रे ॥७॥ आ०॥
तिहा थी विचरी 'कोटडड' मइ, चतुर करी चउमास रे ।

पारणइ 'जेसलमेर' श्रावक, तेडीया उल्हास रे ॥८॥ आ०॥
पइसाग उच्छव 'गोप' कीधो, लीयउ लखमी साह रे ।

याचका बहुलउ दान दीधउ, मन धरी उच्छीह रे ॥९॥ आ०॥
संघ आग्रह च्यारि कीधा, पूज्यजी चउमास रे ।

धन-धन 'जेसलमेरि' श्रावक, लोक मय (नइ?) सावास रे ॥१०॥ आ०॥
'आगरा' नइ संघ आग्रह, घणा कीध विशेष रे ।

'आगरइ' गच्छराज आ०या, श्राविका मन देख रे ॥११॥ आ०॥
हुकम 'वेगम' तणउ पाभी, 'मानसिह' महिराण रे ।

पइसार उच्छव अधिक कीयउ, मेलीया रायरान रे ॥ १२ ॥ आ०॥
हरखीया मन माहि सहु श्राविक, वरतीया जयकार रे ।

याचका वाछित दान दीधउ, प्रबल पुन्य प्रकार रे ॥१३॥ आ०॥
तप नियम व्रत पचखाण करता, धारता धर्म ध्यान रे ।

निज गुणे सगले श्रावकां मन, रंजीया असमान रे ॥१४॥ आ०॥

चउमास चाधी तिन कीधी, पूजजी परसिद्ध र ।

चउमास चौधी गले रास ना, सुघ आग्रह किद्ध र ॥१५॥ आ०॥
दिन दिन चढतउ सुमस महियल गुण अधिकड गच्छराज र ।

दुत्तर दुसमायर पडता, जगत जाण जिहाज र ॥ १६ ॥ आ०॥
करजोडी इम विनजु एहनो ढालः—

इण विवि इम रहता वका, पूजजी नड हीडोल असमाधि ।

कारण जोगइ वपनी, करमे पिण हो हिव अवमार लाघ ॥ १ ॥
तुम्ह त्रिण पूजजी किम सरइ ।

‘आपाढा सुदि दसम’ थी, वपु वाधी हो वदन विकराल ।

ध्यान एअ अरिहन्त नो भनि रासइ हो छाडी जजाल ॥ २ ॥ तु०॥
वइरागइ मन वालिउठ, नवि कीधा हो ओपध उपचार ।

सगो सिर सेहगे, ‘चरसी’ हो गच्छ मड श्रीकार ॥ ३ ॥ तु०॥
अल्प आरुसो जाणीनइ, पोतानउ हो पूजजी तिण वार ।

सइमुरा अणशण आदर्या, सत्रि छडी हो पातक आचार ॥४॥ तु ॥
क्रोध लोभ माया तजी, तजीया वलि हो आठे मद मोह ।

पापस्थानक सवि परिहर्या, जगमाहि हो अति वधती सोह ॥५॥तु०॥
मन वचन काया करी, वलि लाग्ता हो व्रत ना दूषण जेह ।

त आलोया आपणा, गच्छ नायक हो गिरआ गुण गेह ॥ ६ ॥ तु०॥
सरथा च्यार उच्चरी, आराधी हो सूधा गुरु दव ।

कलमल पाप परालिन, पट् जीवन हो पाली नित मव ॥ ७ ॥ तु०॥
जीव अनेक छोडाविया, याचक मिली हो धन सरची अनन्त ।

दुखीया दान दिवउ धनो, धन उ धन हो मुनि लोक कहन्त ॥८॥तु०॥

संवत 'सतरड सय भलड, ड्यारे' हो 'श्रावणि वटि सार' ।

'सोमवार' 'सातम' दिनड, सोभागी हो पहले पहर मंजार ॥६॥तु०॥

'चउरासी' लख जीवनड, खमावी हो आलोड पाप ।

'हरपलाभ'नड हरखस्युं, निज पाटड हो अविचल थिर थाप ॥१०॥तु०॥

निरमल चित नवकार नड, मुखि कहता हो धरता सुभध्यान ।

श्रीपूज्यजी संवेगी हो, पहुंता अमर विमान ॥ ११ ॥ तु०॥

करे अनोपम कोकही, माहों मुखमल हो वड सूफ विधाय ।

चोया चन्दन अरगजा, कस्तूरी हो केसर चरचाय ॥१२॥ तु०॥

विधि विधि वाजित्र वाजता, वडसारी हो जाणे देव विमान ।

हयवर गयवर हीसता, सहु लोकहु (हो)करता गुण गान ॥१३॥तु०॥

ढाल वाल्हेसर मुञ्ज वीनती गोडीचा राय एहनी ।

चडठो आमण दुमणो सोभागी, ए ताहरड परिवार हो । सोभागी० ।

परदेसी जिमि छाडिने सो०, जड्ये किम गणधार हो । सो० । १ ।

दरसण द्यो गुरु माहरा सो०,

सहु श्रावक श्राविका । सो० । जोवड तुमची वाट हो । सो० ।

ए वेला नहीं ढील नी सो०, सुन्दर रूप सुवाट हो । सो० । २ ।

वेला थड वखाणनी सो०, मिलीया सहु रायराण हो । सो० ।

आवी वडसो पूठीयड सो०, वार म ल्यावो जाण हो । सो० । ३ ।

आवी वडठा एकठा सो०, पंडित पूछण काज हो । सो० ।

वेगड उत्तर द्युड तुम्हे सो०, गरुआ श्री गच्छराज हो । सो० । ४ ।

एक वेली सुविचार नड, वोळड वोळ रसाल हो । सो० ।

वाट जोवड जिम मेह नी सो०, उभा वाल गोपाल हो । सो० । ५ ।

इतना दिवस लगइ हुती सो०, मन मइ सहु नइ आस हो । सो० ।
 तइ तउ भूल तिका करी सो०, चाल्या ओडी निरास हो । सो० । ६ ।
 शिष्य सहु वालावी नइ सो०, फेरयउ माथइ हाथ हो० । सो० ।
 त वेला स्यु चीसरी सो०, करि बीजा नउ हाथ हो । सो० । ७ ।
 आवण अवधि न फही सो० नाप्यउ मन मइ नइ हो । सो० ।
 अनव० (?) जेम विचारी नइ सो०, छनमे दीधी छेह हो ॥सो०॥८॥
 चउमासु पिण जाणि नइ सो०, सक न आणी काइ हो । सो० ।
 अधविचइ म मकी करी सो०, कुण बहु छाडी जाइ हो । सो० । ९ ।
 दव विमान मोहीयउ सो०, पूठी सगरि न काव हो । सो० ।
 इहा तो लोभ न को हुतो सो०, तिहा लोभइ चित दीध हो । सो० । १० ।
 आलस ऋिण ही वात नउ सो०, नवि हुतउ तिल मात हो । सो० ।

दोष पुम्हारउ को नहीं सो०

॥११॥

मन थी भावन मूकतउ सो०, एक समइ पिण एम हो । सो० ।

ते पिण भाव विसारियउ सो०, बीजा सु धर प्रेम हो० ॥सो०॥१२॥
 पर भर (पिण) सरतो नहीं सो०, पूज परइ निसदीम हो । सो० ।

जमवारोकिम जाइस्यइ सो०, महि मोटा जगदीम हो । सो० । १३ ।
 रिग ० मइ गुण सभरइ सो०, आठ पोहर दिन राति हो । सो० ।

कुण आगलि कहि दासवु सो०, तेहनी बीगत वात हो । सो० । १४ ।
 बीसाया निवि बीसरइ सो०, सदगुरु ना गुण गाम हो । सो० ।

ममरइ सहु साचइ मनइ सो०, नित नित लेइ नाम हो । सो० । १५ ।
 परतिल इग पचम अरइ सो०, सूरि मकल सिरताज हो । सो० ।

तुझ सरियउ जग को नहीं सो०, नरागी मुनिराज हो । सो० । १६ ।

गच्छपति तो आगइ हुआ सो०, होस्यइ वलि छइ जेह हो ।सो०।

पिण तो सम संसार मइ सो०, नवि दीमइ गुण गेह हो ।सो०।१७
वखतावर विद्यानिलउ सो०, सूत्र सिद्धात प्रवीण हो । सो० ।

कलियुग माहे जुवता सो०, अधिको धरम धुरीण हो ।सो०।१८।
तइ तउ ताहरउ निरवाहीयउ सो०, जनम लगइय समान हो ।सो०।

सींहण पण व्रत आदर्यो सो०, पाल्यउ सींह समान हो ।सो०।१९।
त्रिभुवन मइ ताहरी क्षमा सो०, साराहइ संसार हो० । सो० ।

कलि भाहे डक तुं हूओ सो०, निरलोभो गणधार हो ।सो०।२०।
महियल मइ यश ताहरो सो०, कहता नावे पार हो । सो० ।

गुण अधिका गच्छराज ना सो०, केता कलं वखाण हो ।सो०।२१।
रास सरस डम आदिस्यउ सो०, पूज्य तणउ निरवाण हो ।सो०।

भाव वणइ परमोद सु सो०, करज्यो खेम कल्याण हो ।सो०।२२।
'आवण सुदि डयारसइ' सो०, थिर शुभ थावर वार हो । सो० ।

'मानविजय' सोस डम भणइ सो०, 'कमलहरप' सुखकार हो ।सो०।२३।
अति जयवंतउ 'आगरइ' सो०, खरतर संघ सुखकार हो । सो० ।

सुख संपत देज्यो सदा सो०, धरि मन शुद्ध विचार हो ।सो०।२४।
भणतां गुणता भावस्यु सो०, रास सरस इक चित्त सो० ।

नवनिधि सिद्धि माहमा वधइ सो०, था(य)इ जन्म पवित्र हो ।सो०।२५।

॥ इति श्री श्री जिनरत्नसूरि निर्वाण रास समाप्तम् ॥

सं० १७११ वर्षे कार्तिक सुदि ७ दिने सोम वासरे लिखतं पाटण
मध्ये मानजी करमसी कस्य लिखतं ॥ साध्वी विद्यासिद्धि साध्वी-
समयांसिद्धि पठनाथे । पत्र ३

(बीकानेर वृहद्-ज्ञानभंडार)

श्री जिनरत्नसूरि गीतानि

(१)

काल अनन्तानन्त पहनो ढाल—

‘श्री जिनरत्न सूरी १’, पूज वादवा हो मुझ मन छइ सही ।
 देवण तुझ दीदार, जान चतुर्विध हो श्रीसव सामउ जमही ॥ १ ॥
 गुरवा श्री गच्छराजा, सरतर गच्छ मन् पूज दीपइ मदा ।
 प्रतपअ अधिक पटूर, जिण मुख दीठर हो मुख होवइ मुदा ॥ २ ॥
 ‘लुणिया’ वझ विर जात, साहू ‘तिलोकसी’ हो कुल सिर सहेरउ ।
 ‘तजल’ वनि मल्हार, हस तणी परि हो सहगुर अरतर्यउ ॥ ३ ॥
 ‘पाटण’ नयर प्रसिद्ध, श्री ‘जिनराज’ हो सइ हयि थापीयउ ।
 सगगी सिरदार, अविकउ जाणी हो गुरु पद आपियउ ॥ ४ ॥
 मुख जिसउ पूनिमचद, वाणि सुमारस हो निज मुख वरसतउ ।
 करतउ उग्र विहार भव्य जोवानउ हो नित प्रतिनोवतउ ॥ ५ ॥
 ताहरी त्रिमुवन माहि, मस्तक आणज हो मन सूधी धरइ ।
 गुगनर वीर जिणन्द तह तणी परि हो उत्तु टी करइ ॥ ६ ॥
 (प्रण) मइ भवियण लोक, तुझ मुख वरया हो पाप सवे टल्या ।
 ‘राजविजय’ गुण जिण, ‘रूपवर्न’ भणि हो वठित मुझ फल्या ॥ ७ ॥

(२) राग—ढाल—नायकारो

श्री गच्छ नायक सेविउर, ‘श्री जिनरत्न’ सूरिउर । सुगुरुजी ।
 पूज्य नइ वानउ मोतिया र लाल, आणी मन आणद रे । सुगुरुजी १।

आवउ तुम्ह इण देस मड रे लाल० । आ० ।

‘लूणिया’ वंसइ लखपती रे, तिलोकसी’ साह मल्हार रे । सु० ।

‘तारादे’ उरि हंसलउ रे लाल, कामगवी अनुहार रे । सु० । २। आ० ।

श्री ‘जिनराज सूरीसरड’ रे, सडंहथ दीधउ पाट रे । स० ।

वड वखती वइरागीयउ रे लाल, कलि गौतम नउ घाट रे । स० । ३। आ० ।

शीलइ करि थूलभद्र समउ रे, रूपइ वइर कुमार रे । स० ।

पालइ पंच महात्रतृ रे लाल, लोभ तउ नहीय लिगार रे । स० । ४। आ० ।

वाणी सुधारस वरसतउ रे, सजल जलइ अनुहार रे । स० ।

आगम सूत्र अरथ भरयउ रे लाल, श्री खरतर गणवार रे । स० । ५। आ० ।

श्री संघ हरप अछइ वणउ रे, वंदिवा तुम्हारा पाय रे । स० ।

तुझ मुख कमल निहालिवा रे लाल, चाह धरइ राणाराय रे । स० । ६।

‘जिनराज’ पाटइ चिर जयउ रे, सूहन छइ आसीस रे । स० ।

‘खेमहरप’ मुनि इम भणइ रे, लाल जीवउ कोडि वरीस रे । स० । ७। आ० ।

(३) रागः मल्हार, ढाल व दलो री

‘श्री जिनरतन’ सूरीदा, दीपइ मुख पूनिम चंदा । सहगुरु वंदउ वे । १।

‘लूणीया’ वंस विराजइ, दिन २ ए अधिक दिवाजइ । स० । २।

‘पाटण’ मई पद पायउ, सब आवक जन मन भायउ । स० । ३।

‘तिलोकसी’ शाह मल्हारा, ‘तारा दे’ उरि अवतारा । स० । ४।

गुणे गौतम गणधारा, गुरु रूपइ वइरकुमारा । स० । ५।

शीलइ तउ थूलभद्र सोहइ, छत्रोस गुणे मन मोहइ । स० । ६।

आगम अरथ भंडारा, जिण शासण मइ सिणगारा । स० । ७।

वाणी सुधारस वरसइ, सुणिआ कु जन मन तरमइ । ८० । ८ ।
 इम 'र्येमहरप' गुण दोलर, पूज्यजी न कोइ न तोलइ । ८० । ९ ।
 (किरहोरमे आधिकारजी पठनार्थ कविन स्वय लिखित पत्र ३ सप्तहमे)

(४) ढाल—पोपट पखियानी

सुण र पथिया कन आउइ गच्छराज, सफल विहाणउ आज ।

सरिया वछिन काज, भेट्या श्री गच्छराज ।

सुणि र पथिया कन (आवर) गच्छराज । आवणी ।

उभी जोवू वाटडी, आइ कहइ कोइ मुइइ ।

सोवन जीभ वगामणी, दमु पथो हा तुइ । १ । सु० ।

मुमति गुपति धरता थका, पालइ शुद्ध आचार ।

किरिया आचरता थका, साथड बहु अणगार । २ । सु० ।

'लुणीया गोत्र दीपता, साह तिलोकसी जाणि ।

'ताराद' जननी भडी, मुन जनम्या गुग खानि । ३ । सु० ।

भाउइ सजम आदर्यउ, जननी सुत सुलकाजि ।

जिणवर भापित मारग, दीलना आ 'जिनराज' । ४ । सु० ।

सवत 'सतरहिमड' भलइ, मास 'आपाठ' ममाण ।

श्री 'जिनराज' यापिया, सुकलइ 'सप्तमि' जाणि । ५ । सु० ।

गामागर पुर विहरता, जलगर नी परि जाणि ।

भविण नइ पडिबोधता, भेटउ ऊगत भाण । ६ । सु० ।

'कनकसिंह' गणिवर कहइ, दिन दिन घु आसीस ।

श्री जिनरतन सुरिंजी, प्रतपउ कोडि वरीस । ७ । सु० ।

इति श्री गुरु गीतम् (पत्र १ हमारे सप्तहमे तत्कालीन लि०)

निर्वाण गीतम्

(७) बाल पोषट् पंखीया जाति

'श्री जिनरत्न' सूरीभरो, लघु वय संयम धार ।

उद्यत विहार संचर्या, 'उग्रसेन पुर' सिणगार ॥ १ ॥

सुहृगुरु पूज्य जी, मुखि बोलउ इक वात ।

प्रीतम सहगुरु, काइ निसनेह अपार ।

बह्म पूज्यजी तुं मुअ प्राण आधार ।

जीवण पूज्यजी तुम विण कवण आधार ॥ आकणी ॥

धन पिता 'तिलोकसी', 'तेजलदे' उर धार ।

जिणइ एहवउ पुत्र जनमीयउ, सयल जीव सुखकार ॥२॥

'श्रावण वदि सात्तिम' दिनइ, कीध (अणगण) उचार ।

चउविहार सुध भावस्युं, पाल्यउ निरतीचार ॥३॥

श्रावक श्रावइ वादिवा, ओसवाल अनइ श्रीमाल ।

दरसन दीठा सुख हुवइ, नावइ आल जंजाल ॥४॥

च्यार प्रहर लगि तिहा धरी, छोट्याज राग न (इ) द्वेष ।

सहु जीवसुं तिहा खामणइ, पाम्या स्वगना सुख ॥५॥

आसु जल चउसर वहइ, छोट्या केस कलाप ।

देह पछाडइ भूमिस्युं, शिष्य करे रे विलाप ॥६॥

हिव पर्व पजूसण आवीया, धरम कहउ मन कोडि ।

श्री संघ जोवइ वाटडी, वादणि उपरि कोडि ॥७॥

तुम्ह सरिखा संसार मइ, देख्या नहीं दीदार ।

लोचन तृपति पामइ नहीं, जुवुं हुं सउवार ॥८॥सहु० मी० ॥

युग प्रधान श्री पूज्यजी, श्री 'जिनरत्न' सुरिंद ।

सयल संवतइ सुखकरु, 'विमलरत्न' आणंद ॥९॥

(पं० मानजी लि० पत्र १ से)

॥ जिन रत्नसूरि पट्टधर जिनचन्द्रसूरि गीतानि ॥

(१)

‘श्री जिनचन्द्र सूरीसर’ र, गच्छ नायक गुण जाण र । मोभागी ।
महियल मड महिमा घणो रे लाल, जाणइ राणो राण र मो॥१॥श्री०
सुन्दर रूप सुखामणो र, वलनायर वड भाग र । सो० ।

‘धार वरम नइ उपनउ रे लाल, लपुत्रइ मनि वइ राग र सो॥२॥श्री
श्री ‘जिनरत्न’ सूरीसर आपियउ र, सइ हथ सयम भार र ॥सो॥॥
श्री सवइ उच्चन क्रियउ र लाल, ‘जेसलमेर’ मझार र मो० ॥३॥श्री
श्रीतम जिम गुण गहगहइ र, मा२ ‘सहसमल’ नन्द र । सो० ।

‘गणपर गीतड’ गुग निलो र लाल, दरसण परमा ॥ र । सो॥४॥श्री
श्री ‘जिनरत्न सूरीसरइ’ र, दीघउ अविचल पाट र । सो० ।

वधन० वरम ‘अठार’ मइ र लाल, सेवइ मुनिपर थाट र ।सो॥५॥श्री
‘सिन्दूर ड’ सुन चिर जयउ र लाल, गच्छ खतरसिणगार र ।सो०
श्रीतल चन्द्र तणी परइ र लाल, सवेगो मिरदार र । सो० ॥६॥श्री०
श्री ‘जिनरत्न’ पटोधरु र, सहुनो पूरइ आम र । सो० ।

धर मन हर्ष ऊमाहलउ र लाल, पभगइ ‘त्रिशाविलास’ र ।सो॥७॥श्री

॥ इति श्री वर्तमान श्री जिनचन्द्र, सूरि गीतम् ॥

॥ साध्वी रत्नमाला वाचनार्थम् ॥

(०)

श्री‘जिनचन्द्र’ सूरीवर वदीयइ र, गरुयउ गठपति गुणमणि गह र ।
मोहनगारी मूरति नाहरी र, घटीय विधाता सइहथि एह रे । १।श्री०
वदनि कमल सरसति वासउ क्रीयो र,

अड सिद्धि आवि रही जसु हाथि रे ।

कर दाहिण सिर थापइ जेहनइ रे, ते नर पामइ वंछित आथि रे । २। श्री०
 ईति उपद्रव कोन हुवइ किहां रे, जिहा किणि विचरइ श्री गछराज रे ।
 चरि २ मंगल होवइ नवनवा रे, जावइ भावठि सगली भाज रे । ३। श्री०
 धन-धन आवक नइ बलि आविका रे, भावइ आवि सुणइ उपदेस रे ।
 पामी धरमलाभ गुरु आसिकारे, शाता सुखनउ जाणि निवेस रे । ४। श्री०
 जोतां नयणे बीजा गच्छपति रे, ते नावइ जुगवर ताहरी जोडि रे ।
 खजूया कोडि मिलई जउ एकठारे, तउकिम थायइ सूरिज होडि रे । ५। श्री०
 श्री 'जिनरतन' आदेसइ आविया रे, रंगइ 'राजनगर' चउमास रे ।
 वयणे* सगुरु तणे पद्मवी लही रे, चिहु दिशि प्रगट्यउ पुण्य प्रकाश रे । ६।
 'नाहटा' वंशइ 'जइमल' 'तेजसी' रे, देव गुरु भगती माता तास रे ।
 हरखई 'कसतूरा' उछव करी रे, शोभा वधारी जगमई खास रे । ७। श्री०
 कुल उजवालक 'गणधर' गीतमइ रे, 'सहस करण' सुपीयार दे' नंद रे ।
 सुप्रसन्न हुइ जोवइ जिण सामुंहउ रे, तेहना जावइ दोहग दंद रे । ८।
 ध्रू शशि गिर अविचल जालगइ रे, तां लागि प्रतपउ गच्छाधीश रे ।
 वाचक 'रूपहरष' सुपसाउले रे, 'हरषचन्द' पभणइ अधिक जगीस रे । ९।

इति श्री गुरु गीतम् (सं० १७३० आसू वदि ८ बीकानेरे लि०
 पत्र २ हमारे संग्रहमे)

(३)

जीहो पंथी कहि संदेसडउ, जीहो पूज्यजी नइ पाइ लागि । जीहो० ।
 गुरु दरसण तू देखतां जीहो, जागस्यइ तुरा भागि । १ ।

*मानजीकृत गीतमें भी

सदमुख (इ) श्रीपूजजी रे, अमृत एहवी वाणि ।

पाटइ एहनउ थापज्यो रे, करेज्यो वचन प्रमाण । ४ । मे० ।

चतुर नर वदु श्री 'जिनचन्द्र'

जीहो अमृत आरणी दम ना जीहो सामलना दुग जाय ।

जीहो तिण कारणि तू जाइ नइ जीहा करज्यो वचन प्रमाण । १ । जी० ।

वचन प्रमाण कीधा हुता जी, घर माहि नत्रि निधि चाइ । जी० ।

गुरु न्याम्या सुग सपजइ जीहो दुमति कनामइ जाइ । ३ । जी० ।

'वीकानवर' जाणीयइ र, जी० बहु रिधिनउ भडार । जी० ।

तिणगाम माहि दीपतउ जी 'सहमरण' सुखकार । ४ । जी० ।

'राजल' कुसि उपनउ जी हो, नामइ 'श्री जिनचन्द्र' । जीहो ।

वरदागि तिणि त्रन लीयउ, मनि धरि अधिक आणद । ५ । जी० ।

विद्या सुखु सारिलउ जी हो, रूपइ वडरकुमार ।

श्री 'जिनरत्न' पाटइ सही, बहु सुखनउ दातार । ६ । व० । जी० ।

चिर जीनउ गठ राजीनउ, परतर गठ नउ इन्द्र । जी० ।

पण्डित 'करमसी' इम कहइ जी, प्रतपउ जा रवि चन्द्र । ७ ।

(४)

सुखु वरावउ मूहन मोतिया, श्री जिणचद' मुणिन्द ।

सकल कला करि शोभता, जाण कि पूनम चन्द ॥ १ ॥ सु० ॥

लघु वय सयम जिण लीनउ, सूत्र अरथ नउ जाण ।

पूज पद पायउ जिण परगडउ, पूरव पुण्य प्रमाण ॥ २ ॥ सु० ॥

'श्री जिनरत्न सूरि' सइ हथइ, श्री सव तणइ समक्ष ।

पाटइ थाप्या ह प्रेम सु, मति मन्त जाणि नइ सुर्य ॥ ३ ॥ सु० ॥

'चोपडा' वशइ चिर जय, 'सहिमू' शाह सुनन ।

मात 'सुपियार' जनमियउ, सहुको कहइ धन धन्त ॥ ४ ॥ सु० ॥

श्री 'जिन पुराल सूरि' सानिधइ प्रतिपउ कोडि वरीस ।

वधतइ दाव२ गुरु वधो, 'कल्याणहर्ष' शइ आगीस ॥ ५ ॥ सु० ॥

(५)

पंचनदी साधन कवित्त

उछलती जल अकल बोल, कल्लोल छिलंती ।
 बलती बलती बेल झाग अत्थाग झिलंती ।
 भमरेटे भयभीत भमकती तटे भिडंती ।
 पडती जुडती पवन ज अनम जड ऊथेडती ।

जप जाप आप परताप जप, सुरि मंत्र सानिध सबल ।

‘जिनरतन’ पाट ‘जिणचन्द्र’ जुगत, ‘पंच नदी’ साधी प्रबल । १ ।

॥ कवित्त पंचनदी साधी तिण समय रो (१८ वीं शताब्दी लि०)

वाचक अमरविजय गुण वर्णन

कवित्त

साच शील संतोप, साधु लछन सकजाई ।

बरपत अमृत वचन, विपुल विद्या वरदाई ।

‘उदयतिलक’ गुरु आप, हरप सुं दीयो बोध हित ।

पुन्य थान निज परसि, चौपडे कीयो विमल चित्त ।

सज्जन सुभाव सुख सुं सदा, शास्त्र हेत वृझे सकल ।

वाचक वदा बखतैत वर, ‘अमरसिंह’ तुझ यश अबल ॥१॥

(जयचन्द्रजी के भण्डारस्थ उपरोक्त पत्र से)

जिन सुखसूरि गीतम्

(१)

ढालः—रसोधानी

सहु मिलि सुहव आवड मन रली, गावो गुण गच्छाय । सोभागी० ।
 विधि सु वदो 'जिनसुख सूरि' नइ, जसु प्रणम्या सुख थाय ।सो०।शस
 'बहरा' गोत्र विराजड अति भला, 'रूपचद्र' शाह मल्हार । सो० ।
 'रतनाद' माता उर ऊपनड, परतरगळ सिणगार ।२। सो० ।सहु०
 श्री 'जिनचद्र' सूरिसर सइहथड, थाप्या अनिचल पाट । सो० ।
 'सुगत' विदर श्री सध नी साखर, सुनिहित मुनि जन थाट ।३।सो०।
 चारित लघुवय माहे आदरयड, तप जप सु बहु लीन । सो० ।
 'आगम अरथ विचार समुद्र समड, विद्या चवड प्रवोण ।४।सो०।।
 सोभागी गुण रागी अति घगु, वड वलती गुण राणि । सो० ।
 कठिन क्रिया सुविहित गळ साचवई, मीठी अमृत वाणि ।।५।सो०।।
 सोम पणइ करि चद्र सुहामणा, प्रतपर तज दिणद । मो० ।
 रूप कला करि अधिक विगजनड, मोहड भवियण घुन्ड ।।६।सो०।।
 सूरि गुण छत्तीस शोभना, वड वलती वड मान । सो० ।
 लाक महाजन माने वड उडा, राउ राणा सुल्तान ।।७।सो०।सहु०
 दिन ० वयती दडलनि सु रथड, कीरति दस प्रदंग । सो० ।
 सुजस चिहु खड चावड त्रिसतरड, आण अधिक सुविरोप । ८ सहु०

संघ मनोरथ पूरण सुरतरु, 'जिन सुखसूरि' महंत । सो० ।
 ङणपरि 'सुमतिविमल' अमीस थड, पूरवड मननी रे खंति । ६महु०
 ॥ इति श्री 'जिनसुख सूरि' गीतम्, आश्रिता जगीजी वाचनार्थ ॥

(तत्कालीन लि० पत्र २ नमारे संग्रहसे)

(२)

उदय थयो धन धन दिन आजनो, प्रगट्यउ पुण्य पडूरो जी ।
 वंद्या आचारिज चढ़ती कला, नामे 'जिनसुख सूरु' जी ॥३०॥१॥
 'सूरत' अहरे हो जिनचंद सूरिजी, आप्यो आपणो पाटो जी ।
 महोत्सव गाजै वाजै माडिया, गीतारा गहगाटो जी ॥ ३० ॥ २
 'पारिख' गाह भला पुण्यात्मा, 'सामीदास' 'सुरदासोजी' ।
 पद ठवणो कीवो मन प्रेम सुं, वित्त खरच्या सुविलासो जी ॥३०॥३॥
 रूडी विव कीधा गतीजुगा, साहमी वत्सल सारो जी ।
 पडूकूले कीधी पहिरामणी, सहु संघ नड श्रीकारो जी ॥ ३० ॥ ४ ॥
 संवत 'सतरै वासठे' समै, उच्छव बहु 'आसाढो' जी ।
 'सुदि इग्यारस' पद महोत्सव सज्यो, चंद फला जस चाढो जी ॥३५
 'सहिरेचा' 'वहुरा' जगि सलहिये, 'पीचो' नख परसंसो जी ।
 मात पिता 'रूपचंद' 'सरूपदे', तेहनइ कुल अवतंसो जी ॥ ३० ॥६॥
 प्रतपो एहु घणा जुग गच्छपति, श्री 'जिनसुख सुरिन्दो' जी ।
 श्री 'धरमसी' कहुं श्री संघ नइ, सदा अधिक करो आणंदो जी ॥३०॥७

जिनसुखसूरि निर्वाण गीतम्

(३)

६।७—अबूकटानी

सहीया चालौ गुरु वादिवा, मजि करि सोल मिंगार ।

सहली भात्र सु पसर मरीय कचोल्डो, महि मली धनमार ।स०।१।

‘सत्ररैसै असोयै’ ममे, ‘जेठ किसन’ जग जाण ।स० ।

अणराण करि आरायना, पाभ्यौ पट्ट निरवाण ।स० ।२ ।

‘जिनचन्द सूरि’ पाटोधरू, ‘श्री जिनमुख सूरिन्द’ ।स० ।

दरत्तण दौलति सपजै, प्रणभ्या परमाण ।स० ।३ ।

पत् थाप्यौ निज हाथ सु, ‘श्री जिनभक्ति’ सूरीस ।स० ।

सभचै सघ धन खाति सु, इह फहै आमीस ।स० ।४ ।

‘रिणी’ नगर रलीयामणो, श्रावक महु विधि जाण ।स० ।

दस प्रदशै दीपता, मन मोटै महिराण ।स० ।५ ।

धूम तणी थिर यापना, मोटै करै महिराण ।स० ।

हरप घगै सव हेतु सु, आसत अधिकी आण ।स० ।६ ।

‘माह जुकल छट्ट’ नै दिनें, शुभ महूरत मोमवार ।स० ।

‘श्री जिनभक्ति’ प्रतिष्ठिया, हरर या सह नर नार ।स० ।७।

सहीय महली सवि मिली, पहिर पटम्बर चीर ।स० ।

गुण गावौ गजराय ना, मेरु तणी पर धीर ।स० ।८ ।

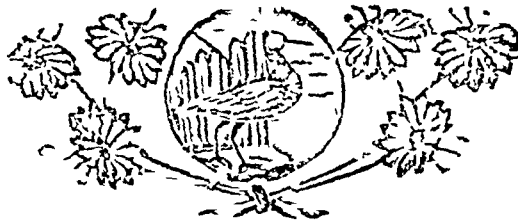
नामे नमनिधि सपजै, आरती अलगी थाय ।स० ।

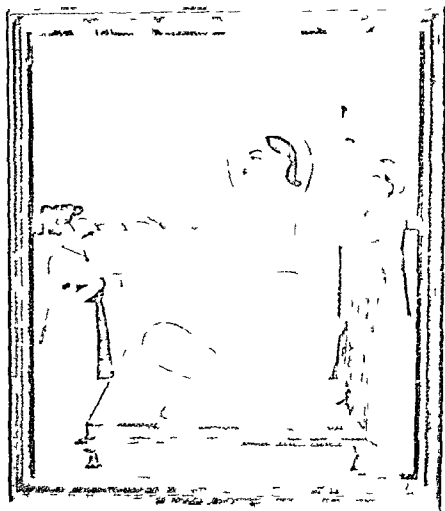
कर जोडी ‘बलमी’ कहै, लुलि २ लागे पाय ॥ सहेली भाव सु० ९ ॥

जिनभक्तिस्मृति गीताम्

बालः आपादं भैरवं आवे ग देवी ।

‘जिनभक्ति’ जतीसर वंदौ, चढनो कठा द्रोपति चंभौ रे । जि० ।
 खरतर गच्छ नायक राजें, श्रीम गुणें करि अजे रे । १ । जि० ।
 श्री ‘जिणमुख स्मृति’ मनाथै, दीवौ पद आपणें हाथे रे । जि० ।
 श्री ‘रिणीपुर’ संघ सवायौ, महोच्च कीवो मन भायौ रे । २ जि० ।
 ‘सेठीया’ दंसे मुखदाई, श्री जिन धर्म मोभ सवाई रे । जि० ।
 ‘हरिचन्द’ पिता धर्मधीरौ, ‘हरिमुखदे’ उदरें हीरौ रे । ३ । जि० ।
 लघुवय जिण चारित लीवौ, मद्गुरु नै सुप्रसन्न कीवौ रे । जि० ।
 विद्या जसु हुड वरदाई, पुन्यै गुरु पदवी पाई रे । ४ । जि० ।
 प्रगत्यो जज्ञ देस प्रदेशै, वरते आज्ञा सुविसेसै रे । जि० ।
 वाटै सहु देस वधाई, खरतर गच्छपति सुखदाई । ५ । जि० ।
 संवत ‘सतरै’ उगुण्यासी, जेष्ठ वदि त्रीज’ पुण्य प्रकासी रे । जि० ।
 सहु सुजस रिणी संघ साध्या, उम कहै ‘धर्मनी’ उपाध्या रे । ६ जि० ।





श्री जिनभक्तिसुरिजी

(बाबू विजय सिंहजी नादके सोजयसे)

॥वाचनाचार्य सुखसागर गीतम्॥

राग — कडवारी

वाचनाचार्य 'सुखसागर' वदियै,

सुगुण नोभाग जसु जगि सचायो ।

अङ्ग षष्ठ्याङ्ग धरि नारि नर नित नमै,

फठिन किरिया करण इलि कहायो ॥ १ ॥ वा० ॥

पूज्य आत्म गलि 'धमणो' वाग्निवा,

नयरि 'समाज्ञै' अधिक सुख वास ।

सव नी आण सुगुण करि षडिगम्या,

चतुर चित चग सू चरम चौमास ॥२॥वा०॥

करिय चौमाम अति सत्य आगद सू,

निज वचन रजव्या सकल नर नारी ।

ज्ञान परमाण निज आयु तुच्छ जाणित,

साधु व्रत साचवद गलिय सभारि ॥ ३ ॥ वा० ॥

प्रथम पोरसि अनै वलिय (स० १७२५) 'मिगसर', तणी

'कसिण चवन्म' अनै 'सोम' (शुभ) वार ।

ऊचो चढू षष्ठ्याङ्ग वयण सुख सु फणो,

ऊच गत जाणना एह आचार ॥ ४ ॥ वा० ॥

करिय अणसण अनै वलिय आराधना,

सकल जीन राशि शुभ चित समावी ।

मन वचन काय ए त्रिकरण शुद्ध सु,

भाव धरि भावना वार भावी ॥ ५ ॥ वा० ॥

एक मन भजन भगवंत नउ करतहि,

सुणतहि उत्तराध्ययन वाणि ।

सावचेत आप श्री संघ वेठा थकां,

स्वर्ग गति लहिय पुण्यवन्त प्राणी ॥ ६ ॥ वा० ॥

वादियां गंजणो सकल जण रंजणो,

प्रगट धट ज्ञान बहु जाण पूरो ।

दुःख दालिद्र हरि सुख संपति करड,

सुपसन्न सेवकां हुड सनूरो ॥ ७ ॥ वा० ॥

भाग बड भेटयइ राग मन लाइ नड,

गाइ नड सुगुण शोभा बडाई ।

कुंकमे केसर पूजता पाटुका अधिक,

धरि ऋद्धि नव निद्धि आई ॥ ८ ॥ वा० ॥

संघ सुखदाय मन लाय सुख सागरा,

नागरा नित नमइ शीस नामी ।

गाणि 'समयहर्ष' नित सुगुरु गुण गावता

सिद्धि नव निद्धि बहु वृद्धि पामी ॥ ९ ॥ वा० ॥

॥ इति गुरु गीतम् ॥



हीरकीर्ति परम्परा

॥ कवित्त ॥

‘पद्महम’ गुरु प्रवर, सत्ता संचक मुख आपै ।

‘दानराज’ दिल साच, सेवना सकट कापै ॥

‘निलय सुन्दर’ वाचक सुगुरु, साहिन सुलकारी ।

‘हर्षराज’ गुणवन्त, ‘हीरकीरति’ हितकारी ॥

पाचे सुगुरु पाच मरु सम पचानुत्तरनी परै ।

दीजियै मुख मतान रिद्धि, ‘राजलाम’ वीनति करै ॥१॥

वाचक प्रवर ‘राम जी’, नडो मुनिवर वसतावर ।

नामे नवनिधि होड, ‘राजहर्ष’ गुण आगर ॥

पण्डित चतुर प्रवीण, जुगति जाणन जोरावर ।

‘तिलक पद्म’ ‘दानराज,’ ‘हीरकीरति’ पाटोधर ॥

इम ऋद्ध वृद्धि आणद करौ, मुख सन्तति शौ मपना ।

‘राजलाम’ करै गुरु जी दुज्यो, सेवक नु सुप्रसन्न सदा ॥२॥

॥ सवन १७२० वर्षे मित्ती माघ सुदि ५ दिने ॥

॥ श्री गुरुभ्यो नम ॥



धा० हीरकीरति स्वर्गगगन गीताम्

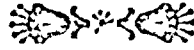
श्री 'हीरकीरति' वाचक प्रणमो, सुर मणि सुरनरु सुरधेन समो ।
 अरिथण दुख दोहग दूरि गमइ, घरि नवनिधि लिखमो रंग रभइ । १ ।
 सुख संपति दायक उपगारी, सेवक जन नइ सानिध कारी ।
 लवधइ गुरु गोयम गणधारी, नित ध्यान धरू हुं बलिहारी । २ ।
 गुरु चरण करण बह्व व्रत पालइ, तप जप करि अशुभ करम टालइ ।
 पूव मुनिवर मारग चालइ, निज देव सुगुरु मनि संभालइ । ३ ।
 श्री 'गोलवछा' वंसइ दीपइ, तेजइ करि दिनकर नइ जोपइ ।
 महियल मंडल महिमा जागइ, सेवक लुलि पाये लागइ । ४ ।
 सिद्धंत अरथ गुण भंडार, छ(व) काथ वल्ल प्रति हितकार ।
 सुमिती अजव मइव सार, मुत्ती संजम तप निरधार । ५ ॥
 अणदीधउ न लीयइ साच वदइ, आकिंचन (दश) विध सील हवइ ।
 आहार तणा दूषण टालइ, वइतालीस सुद्धि क्रिया पालइ । ६ ।
 शाखा जगगुरु जिनचन्द्र तणइ, महिमा जस वास संसार थुणइ ।
 गणि 'दानराज' पाटै उदयो, वाचक वर 'हीरकीरति जयो । ७ ।
 संवत 'सतरइ गुणतोस' समइ, रहिया चौमासउ अंत समय ।
 'श्रावण सुदि चउदस' जोधाणइ' ज्ञानइ करि आऊखो जाणइ । ८ ।
 चोरासी योनि खमावि सहू, लख पाप अठार आलोय वहू ।
 अपनै मुख अणशण आदरीयो, निज चित्तमे ध्यान धरम धरीयो । ९ ।
 नवकार महामंत्र संभाली, गति असुभ करम दूरे टाली ।
 अणशण पहरु वि आराधी, सुह ज्ञाणइ सुर पदवी लाधी । १० ।

सतरङ्ग 'पुणतीनर' 'मा२' माम्, 'तरम्' दिवसर मन उन्हामइ ।
 'वदि' नदुरत शनि सुभ वार, पगला 'थाप्या' जयजय कार । ११ ।
 श्री 'पद्महम' वाचक प्रयत्न, श्री 'दानराज' सोहाग करु ।
 श्री 'निलयसुन्दर' हारपगज' मुत्ता, ऋणमो श्री 'हीरकीरति' सदा । १२ ।
 पाचै गुरना पगला मोह (पच) परमसर जिम मन मोहै ।
 समर्था मनक दरसण दीजै, मुत्त सतति उँ उन्नति कीजै । १३ ।
 पाचै गुरगा पूज्या । पगला, दुःख आरति रोग । टलइ सगला ।
 घरि वइठा आइ मिलइ कमला, गुरु तूठा थोक सह सगला । १४ ।
 पय पूजो गुरु हिय भाव करी, य मर चन्दन मु चित्त धरी ।
 सदगुर सुपसायइ रगारली, लह पुत्र फलय समृद्ध वली । १५ ।
 निन दिन आणद सुमति दाता, गुरु चरणौ अहनिस जे राता ।
 मनवठिन पूरण कामगनी, सेवक सुगदायक अधिक टयी । १६ ।
 साचउ साहिन तुहिज मरो, हु रिजमतगार भगत तरो ।
 सुपसायइ गुर नय निह सप(जोइ), गणि 'राजलाभ सेनक जपइ । १७ ।

॥ इति श्री ॥



उपा० भावप्रमोद स्वर्गगान गीताम्



नं० १

जिसौ भाव जोगी जती जोग तत्त जाणतौ, वैण वखाणतौ अमृत वाणि ।
साङ्गीयो तिसौ अवसाण २ सिव, जंपै अरिहंति भनि अंति जाणो ॥१॥
व्याकरण तर्क सिद्धंत वेदन्त री, जीह वदतौ सदा भेद जुओ ।
भाव शिष 'भाव परमोद' चो भाव सुछ,

हुं तौ आछौ तिसौ मरण हुआ ॥२॥

गछे चोरासीये न छै कोइ ईये गुणि, अरण मुनीयो न को एम सीयो ।
(भावपरमोद) जिम मुखा भगवंत भणै,

लीया जस लाह स्वर्गलोक लीयो ॥३॥

वरसि 'जुग वेद मुनि इंद १७४४ 'गुरु' 'माह वदि',

वात अखियात जुग सात वचिसी ।

चड पाठक तणी घणी महिमा वसु,

रात दिन वडा कवि पात रचिसी ॥४॥

नं० २ कड़खामें

विरदे वखाणी जै जी 'भावपरमोद' कुल रो भाण ।

जग मांहि जाणिजै जी, परवान पुरुष प्रमाण । टेक

परधान सुजस निधान प्रगडच, वाधतै मुखि वान ।

असमान मांन गुमान अमली, माण दीयण सु दांन ।

ऊनधां नाथणा नडण अनडा, पूजतै निज प्रांण ।

दीपतो सरव गुण जाण दीप, खरतरै दीवाण ॥१॥वि०॥

व्याकरण वेद पुराण वक्तौ, सकल जैन सिद्धन्त ।
 ब्रह्मज्ञान आत्म धरम वित्त, उपधान जोग विधन्त ।
 आगम पेंतालीस अरये, कथे काइ न काण ।
 पाठक पदवी धार पृथि(वि) मे, एहवै अहिनाण ॥ २ ॥ वि० ॥
 थूलभद्र नारद जिसौ धीरम, सील सत्त सरूप ।
 'जिनरतन' सूरि पढूरि जैन, इतै बुद्धि अनूप ।
 तिम 'चद' रै पिण छदि चलौ, वडिम आगवाण ॥
 पाट पति छत्रपति पाव पूजै, रीझवै रावराण ॥ ३ ॥ वि० ॥
 'जिनराज सूरि' जिहाज जिन धरम, मट्टारक मुनिभूप ।
 शिष्य तास 'भावविजै' समो भ्रम गच्छ चोरासी रूप ।
 'भाय विनय' तिणरै पाट भणिजै, वडिम गुग वलाण ।
 एतला वस राजहस ओपम, सलहिजै सुविहाण ॥ ४ ॥ वि० ॥
 वाचतो वाणि वलाणि अत्रिल, अमृत धारा एम ।
 नव नवा नव रस वचन निरूपम, जटहरा धरनि जेम ।
 जस सुजस पकज वास पसरी, प्रथी रै परिमाण ।
 रत्रि चद नै ध्रू(व) मेरु रहिसी, सुजस रा सहिनाण ॥ ५ ॥ वि० ॥
 जिण बाल वय ब्रह्म चोरु चारित्र, लीयो जती प्रत योग ।
 वय तरुण पण मन मै न वड्या, भला वडित भोग ।
 तत पच सावत नेम जत सत, वाच रद्र ब्रह्माण ।
 मुनीयो नहौ अरिहत मुख हू, अत रै अवसाण ॥ ६ ॥ वि० ॥
 आराधना सीवन उचर, शुद्ध सरणा च्यार ।
 सनि क्रोत्र कपट मिमातमूके, लोभ नहोय लिमार ।

1

1

1

1

कविधर जिनहर्ष गीतम् ।



॥ दोहा ॥

सरसनि चरण नमी करी, ग्रास्यु श्री नपिराय ।
 श्री जिनहर्ष मोटो यति, समय अनुसार कठिवाय ॥१॥
 मद मतोन जे थयो, उपगारी मिरदार ।
 सरस जोडिऊला करी, कर्या ज्ञान विस्तार ॥२॥
 उपगारी जगि गहवा, गुणवता प्रन धार ।
 तहना गुण गाता यथा, हुद सफल अनार ॥३॥

वाडी ते गुडा गामनी ॥ देशी ॥

श्री जिनहर्ष मुनीश्वर गाडये, पाइये वडित मीद्ध ।
 दुनम काल माहिं पणि दीपनी, किरिया शुद्धो फीध ॥१॥ श्रीजि० ॥
 शुद्ध क्रिया मारग अभ्यासता, तजता मायार मोस ।
 रोस धरड नही रहस्यु मुनीवर, सुदरु चित्त० नही सोस
 ॥२॥श्रीजि०॥
 पच महान्त पालै प्रेमस्यु, न धरै द्वेष न राग ।
 कपट लपट चपेटा परिहरड, निरमल मन म वडराग ॥३॥श्री॥
 सरल गुणै दरि हठ जेहन, ज्ञान शठता (र) दूरि ।
 ममता मान नही मनि जेहने, समता साधु नु नूर ॥४॥श्री॥

मंदमती नें शास्त्र वंचावता, आपता ज्ञान नो पंथ ।

जोडिकला माहि मन राखतो, निरलोभी निग्रंथ ॥५॥श्री॥

शत्रुंजयमहात्म आदि भला, तेहना कीधा रे रास ।

जिन स्तुति छंद छप्पया चउपई, कीधा भल भला भास ॥६॥श्री॥

निज शक्तिं इम ज्ञान विस्तारीयुं, अप्रमत्त गुणना निवास ।

ईर्या सुमति मुनिवर चालता, भापासुमति स्युं भाप ॥७॥श्री॥

एपणासुमति आहारइं चित्त धरचुं, नही किहाइं प्रतिबंध ।

निरीह पणै मन लूखू जेहेनुं, नही को कलेशनो धंध ॥८॥श्री॥

गच्छनो ममत्व नही पण जेहने, रुडा निस्पृह वंत ।

शातो दांत गुणे अलंकर, शोभागी सत्यवंत ॥९॥श्री॥

(२)

श्रीजिनहरप मुनीश्वर वंदीइ, गीतारथ गुणवंत ।

गच्छ चुरासीइं जाणइ जेहने, मानइं सहुं जन संत ॥१॥

पंचाचार आचारइं चालता, नव विध ब्रह्मचर्यधार ।

आवश्यकदिक करणी उद्यमइं, करता शक्ति विस्तारि ॥२॥

आज कालिनारे कपटी थया, मांडी डाक डमाल ।

निज पर आत्मने धूतारता, एहवो न धरचोरे चाल ॥३॥

आज तो ज्ञान अभ्यास अधिकछै, किरिया तिहां अणगार ।

ते 'जिनहरप' माहि गुण पाभीइ, निंदै तेह गमार ॥४॥

आप मती अज्ञान क्रिया करी, त्रा(द?)डूकइ जिम सांड ।

हुं गीतारथ इम मुख भाखता, खुलनुं थाइरे षांड ॥५॥

कामिनि काचन तजवा सोहिला, सोहलु तजनु गेह ।
 पणि जन अनुवृत्ति तजवी दोहली, 'जिनहरपइ' तजी तह ॥६॥
 श्रीसाहायिक पणि सुभ आवी मरणा, श्री'वृद्धिविजय' अणगार ।
 व्याधि उपन्नर सेवा बहु करी, पृरण पुण्य अवतार ॥७॥
 आरावना करानर साधुने, जिन आज्ञा परमाण ।
 लल चुरासीर योनि जीव मावता, ज्ञाता रुडुल ध्यान ॥८॥
 पच परमेष्टीर चित्तड ध्याना, गया स्वर्गे मुनिराय ।
 माडवी कीधर रुडी आनन, निहरण काम कराय ॥९॥
 'पाटण' माहिर धन ए मुनिवर, विचर्या काल विशेष ।
 अरुडणै त्रत अत समइ ताइ, धरता सुभ मति रर ॥१०॥
 धन 'जिनहरप' नाम सुहामणु, वन २ ए मुनिराय ।
 नाम सुहावइ निस्टुइ साधनु, 'कनीयग' इम गुणगाय ॥११॥



* कवियण कृत *

देव विलास ।

(देवचंद्रजी महाराजगो रास)

सुकृत प्रेमराजी वने, प्रोह्लासन चिद्रहंम,

ते तेम रि(ह?)दये अक्षता, 'आदिनाथ अवतंस ॥ १ ॥

'कुह' देशे करुणानिधि, उत्पन्न 'श्रीजिनशान्ति',

शांति थड सवि जनपदे, कार्तस्वर जस कान्ति ॥ २ ॥

प्रह्लचारोचूडामणि, योगीश्वरमें चंद,

तारक राजुलनारिनो, प्रणमुं 'नेमिजिणंद' ॥ ३ ॥

यशनामिक कृत्य ताहरं, पुरीसादाणी विरुद,

वामाकुल वडभागीयो, 'पारसनाथ' मरह ॥ ४ ॥

जिनशासननो भूपति, 'वर्द्धमान' जिनभाण,

दूधम पंचम आरके, सकल प्रवर्ते आण ॥ ५ ॥

पंच परमेष्ठि जिनवरा, प्रणमु हुं त्रिणकाल,

अन्य एकोनविंशति जिना, तस प्रणमुं सुविशाल ॥ ६ ॥

सरसती व(र)सती मुखकजे, 'माघ' कविने साध्य,

'कालिदास' मूरख प्रते, कीयो कवि कीधा पद्य ॥ ७ ॥

'मल्लवादी' तुज सांनिधे, जीत्या वौद्ध अनेक,

तुज दरिसणे पद लब्धिनी, उत्पन्न थइ विवेक ॥ ८ ॥

निम माताना नहाप्यथी, गाजी मर्द 'देवचद्र',

'दवविलास' रचु भलु, सरतरगाजु दिणद ॥ ६ ॥

कोइ देवाणुप्रिय कहे, ए स्तवना कर किम,

स्या ? गुण जोइ वरणन, इयु ? वोले जिम तिम ॥ १० ॥

पचमकाले 'दवचद' ना, गुण दागिपने यत्र,

यथार्थपणे (कहो) मुज प्रते तो सत्य मानु अत्र ॥ ११ ॥

सामलि मूढगिरोमणि, अद्यता गुण कहे जेह,

प्रशस किम कोविट कर, गुण कहु सामलि तह ॥ १२ ॥

पचमकाले 'दवचद्रजी', गधहस्ति जे तुल्य,

प्रभावक श्रीवीरनो, ययो अधुना नहुमूल्य ॥ १३ ॥

रत्नाकरसिंधु सद ।, चतुर्विध सव जिन भूप,

कही गया त सत्य छे, सामल ताम ररूप ॥ १४ ॥

ढाल—कपुर होये अति उजलुरे ण देगी ।

श्री देवचद्रजीना गुण कहुर, सामल । चतुर सुजाग ।

धटता गुणनी प्ररूपणार, कहवाने सावधानर ।

भविका सामलो मूकी प्रसाद । टक । ॥ १ ॥

प्रथम गुणे सत्य जल्पनार१, बीजे गुणे बुद्धिमान ।

त्रीजे गुणे ज्ञानवततार३, चौथे सास्त्रमे ध्यानरे ४ । भविका० सा० । २ ।

पचम गुणे नि रूपटतारे५, गुण छट्टे नही क्रोधद ।

सजल नो त जाणीपेरे, नही अनता नी योधर । भवि० । सा० ॥ ३ ॥

अहकार नही गुण सातमर, ७ आठमे सूत्रनी व्यक्ति ८ ।

जीवद्रव्यनी ररूपणार, जाणे तेहनी युक्तिर ॥ भ० ॥ ना० ॥ ४ ॥

सकल आगम हृदये रन्धारे, तेहना भांगा जेह ।
 'कर्मग्रंथ' 'कम्मपयडी' ना रे, स्वप्नमा अर्थना नेहरे । भ० सां० ५ ।
 नवमे सकल ते शास्त्रना रे, ६ पारंगामी पृज्य ।
 अलंकार कौमुदी भाष्यजेरे, अष्टादश कोश ना गुह्यरे । भ० सां० । ६ ।
 सकल भाषामे प्रवीणतारे, पिंगल कृत शेष नाग ।
 काव्यादिक नैषध भला रे, स्वरोदय शास्त्रे अथाग रे । भ० । सां० । ७ ।
 जोतिष सिद्धान्त शिरोमणि रे, न्यायशास्त्रे प्रवीण ।
 साहित्य शास्त्रे सुरतरु रे, स्वपरशास्त्रे लीण रे । भ० । सां० । ८ ।
 दशमे गुणे दानेश्वरी रे, १० दीनने करे उपगार ।
 एकादशे विधातणी रे, ११ दानशालानो प्यार रे । भ० । सां० । ९ ।
 गछ चोरासी मुनिवरु रे, लेवा आवे विधादान ।
 नाकारो नही मुखथकी रे, नय उपना विधान रे । भ० । सां० । १० ।
 अपर मिथ्यात्वो जीवडारे, तेहनी विधानो पोस ।
 अपूर्व शास्त्रनी वाचना रे, देतां न करे सोस रे । भ० । सां० । ११ ।
 विधादानथी अधिकता रे, नही कोइ अवर ते दान ।
 न करे प्रमाद भणावतारे, व्यसन ना नही तोफान रे । भ० । सां० । १२ ।
 पुस्तक संचय द्वादश गुणे रे, १२ जीर्णने करे नूतन ।
 स्वर्णामे अपर गणे रे, प्रतिष्ठाधारक जन रे । भ० । सां० । १३ ।
 वाचक पदवी त्रयोदश गुणे रे, १३ चौदमे वादीजीत, १४
 पनरमे जेहना उपदेशथीरे, १५ चैत्यनूत(न)नी प्रीति । भ० सां० । १४ ।
 सोलमे वचनातिशयथो रे, १६ द्रव्य (ख)रचाव्यो धर्मथान ।
 सप्तदशे राजेन्द्र पाय नस्यो रे, आज्ञा माने प्रधानरे । भ० । सां० । १५ ।

मारि उपद्रव टालीओ र, अष्टादशे गुणे जेह १८
 दश देशे गुण कीर्त्तिनी र प्रवर्त्त विर यातनु गेह र । भ० सा० १६ ।
 एकोनविराति गुणगणे र, आजाननाहु देवचद्र १६ ।
 क्रिया अक्षर बीसमे गुणे र, अवधि जाणे सुरेन्द्र र । भ० सा० १७ ।
 जिम जेपनागन गिरमणि रे, तेहना गुण छे अनन्त ।
 तिम दवचद्र मणि मजुर, (मस्तकेर) एकवीस गुण महत रो भ० सा० १८ ।
 प्रभाविक पुरुष आगे थयार, अधुना तहन तुल्य ।
 ए गुण बावीस स्थूलतार, सूक्ष्म गुण बहुमूल्य र । भ० सा० १९ ।
 पढम ढाल ए गुणतणी र, कवियणे भारी जेह ।
 अल्पभवी हस्ये त महहेर, एहवा पुरिस थोडा जगरहर । भ० सा० २० ।

दुहा—

प्रथम ढाल ए गुणतणी, कवियण भारी जेह,
 विपक्षीने जाणवा, मनमे जाणे तेह । ॥ १ ॥
 गुणतो सर्वत्र प्रगट छे, दश विदेज विर यात ,
 कवियणी अधिकाइता, स्यु ? एहमे छे वात । ॥ २ ॥
 कवियण कह एक जीभते, किम गुणवर्णन जाय
 सागरमे पाणी घणो, सागरमे (न) समाय ॥ ३ ॥
 बला कोइ भवि पुज्जे, कवण ज्ञाति कुण जाति,
 मातपिता किहा एहना त सभलावो भाति ॥ ४ ॥
 दश किहा किहा जन्मभू कुण गुरुता ए शिष्य,
 कुण श्रीपूज्य वार हुवा, भली उलटे लीधि दीक्ष ॥ ५ ॥

विद्याविशारद किहा थया, किम सरस्वती प्रसन्न,

किहा साधना कीधी भली, सुणता चित्त प्रसन्न ॥ ६ ॥

देवचन्द्रना वचनथी, किम खरचाणो द्रव्य,

किम भूपति पाये नभ्या, ते विरतंत कहु भव्य ॥ ७ ॥

सर्व गुण गणनी वारता, भापे कवियण जेह,

साभलजो भविजन तुमे, पावन थाये देह ॥ ८ ॥

देशी हसीरानी ।

थाली आकारे थिर भलो, जंबुद्वीप विदीत । विवेकी ।

तेह मे भरतक्षेत्र रम्यता, आरज देश सुप्रतीत ॥ वि० ॥ १ ॥

भवियण भाव धरो सुणो ॥ वि० ॥

मरुस्थल देश तिहा सुन्दरु, तेह में 'विकानेर' डंग ॥ वि० ॥

तेहने निकट एक रम्यता, ग्राम अछे सुभ चंग ॥ वि० ॥ २ ॥ था० ॥

रिद्धिवंत महाजन वणा, रिद्धेकरी समृद्ध, ॥ वि० ॥

अमारोशब्दनी घोषणा, सुखीआ जन सुबुद्धि ॥ वि० ॥ ३ ॥ था० ॥

'ओशवंशे' ज्ञाति जाणीये, 'लुंणीयो' गोत्र सुजात ॥ वि० ॥

साह श्री 'तुलसीदासनी', धर्मबुद्धि विख्यात ॥ वि० ॥ ४ ॥ था० ॥

'तुलसीदास' नी भार्या, 'धनवाड' पुन्यवंत । विवेकी ।

शील आचारे सोभती, सत्यवक्ता क्षमावंत ॥ वि० ॥ ५ ॥ था० ॥

यथाशक्ति त्रय विक्रयता, व्यवहारनुं जे धाम ॥ वि० ॥

दम्पती प्रीतिपरम्परा, धर्म खरचे दाम ॥ वि० ॥ ६ ॥ था० ॥

सुविहितगच्छमे जामली, वाचकमे शिरदार ॥ वि० ॥

वाचक 'राजसागर' सुधी, जैन काजी मनोहार ॥ वि० ॥ ७ ॥ था० ॥

अनुक्रम गुरु तिहा आवीया, वादवा दम्पति ताम ॥ वि० ॥
 'धननाइ' श्री गुरुने कहे सुगो गुरु सुगुणु धाम ॥ वि० ॥ ८ ॥ था० ॥
 पुत्र हस्ये जेह माहर, वोरावीस धरी भाव ॥ वि० ॥
 यथार्थ वयण नी जल्पना, सुगुरुने जाप्यो प्रस्ताव ॥ वि० ॥ ९ ॥ था० ॥
 विदार कर गुरु तिहा थकी, गर्भ वधे दिन दिन ॥ वि० ॥
 शुभयोग शुभमुहूर्ते, सुपन लह्यु एक दिन ॥ वि० ॥ १० ॥ था० ॥
 राव्याम सुता थका, किंचित् जागृत निंद ॥ वि० ॥
 मरु पवत उपर, मिली चौसठ इद्र ॥ वि० ॥
 जिन पडिमानो ओज्व कर, मिलीया द्व ना वृन्द ॥ वि० ॥ ११ ॥ था० ॥
 अवा करता प्रभुतणी, एहवु सुपने दीठ ॥ वि० ॥
 औरावण पर वसोने, दता सहूने दान ॥ वि० ॥ १२ ॥ था० ॥
 एहवु सुपन त देखीन, थया जानत तरकाल ॥ वि० ॥
 अरगादय थयो तत्क्षिण, मनमे ययो जमाल ॥ वि० ॥ १३ ॥ था० ॥
 उत्तम सुपन जे देखीउ, पण प्राकृतने पास ॥ वि० ॥
 कहतु मुजने नवि घटे, जे बोले तह फळ आस ॥ वि० ॥ १४ ॥ था० ॥
 दृष्टात इहा 'मूलदव नो, सुपन लह्यु हतु चन्द्र ॥ वि० ॥
 सुखकजमे प्रवेशता, त थयो तरनो इन्द्र ॥ वि० ॥ १५ ॥ था० ॥
 अटिल एरे त चद्रमा, सुखमे करतो प्रवश ॥ वि० ॥
 मूरसन फल पुठता, भोजन लह्यु सुविवेक ॥ वि० ॥ १६ ॥ था० ॥
 यादृश तादृश आगले, सुपन तणो अवदान ॥ वि० ॥
 कह (ते)न पञ्चात्ताप उपजे, ए रास्त्रे विरयात ॥ वि० ॥ १७ ॥ था० ॥

अनुक्रमे विहार करताथका, 'श्री जिनचंद' सृरीग । ॥वि०॥
 तेह गामे पधारीया, जेहनी प्रचल जगीस । ॥ वि० ॥ १८ ॥था०
 त्रिधिस्थुं वादे दपति, 'धनवाइ' कहे तास । ॥ वि० ॥
 हस्त जूओ स्वामी मुजतणो, आगल सुखतुं धाम(वास?)वि० १६ था०
 एक पुत्र विद्यमान छे, अन्य सगर्भा दीठ । ॥ वि० ॥
 अतजाने जाणीओ, पुत्र दुजो हसे इण्ट । ॥ वि० ॥ २० ॥था०
 ए वीजा पुत्रने अम देज्यो, पण वाचकने दीधु वचन । वि० ॥
 वीजी ढालमे कवि कहे, मन मा(न्या) नानुं मन्न । ॥वि० ॥ २१था०

दूहा: सोरठा

दंपती श्री गुरुपास, करजोडी करे विनती,
 तुम उपर विश्वास, यथार्थ कहो श्रीस्वामीजी ॥ १ ॥
 सुपनाध्यायना ग्रन्थ, काड्या गुरुए तत्खिणे,
 सत्य बोले निग्रन्थ, लाभानुलाभ ते जोइने ॥ २ ॥
 श्री गुरु शिर धुणावीयुं, चमत्कृति थइ चित्त ,
 सामान्य वर ए सुपन स्युं ? पण इहा एहवि थीति ॥ ३ ॥
 हे देवाणुप्रिय । सामलो, सुपन तणो जे अर्थ ,
 शास्त्र अनुसारे हुं कहुं, नवि बोलुं अमे व्यर्थ ॥ ४ ॥

देशो मनमोहनां जितराथा

तुम धरणीमे गजपतिदीठो, तेनो शास्त्रे कळो गरीठोरे ।
 कुंवर थास्ये लाडकडो, हारे सुपनप्रभावे थास्येरे ।
 गज पर बेसीने दान, वलि अनमिष सेवे विधानरे । ॥ १ कुं० ॥

द्योय कारण छे ए सुपन, देवे जो प्रभावे ए तप(म?)नेर । कु०
 अपति थाये ए पुत्र के, पत्रपति धर्मनु सूत्रर । कु०॥१॥
 जो राज राजेसरी थास्ये, सर्वदेशनो ईश इनास । कु०
 जो पत्रपतिनु पद पामे, तो देश विहार सुठामेर । कु०॥३॥
 गुरु तव ते जाणो गजराज, तपरि वेससें शिरताजर । कु
 द्रवतारूप जन चाकरीये, सिंह बालकने वञ्जी पारसरीयेग । कु०॥४॥
 दान देस्ये त विद्यादान, बुद्धि अभयदान निदानर । कु०
 जिन ओछव करता इन्द्र, दीठु वृन्दारक वृन्दर । कु०॥५॥
 जिनशासननो होस्ये यम, विजानो होस्ये सर कुभ । कु०
 चैत्य न्युनन पडिमा थापन, तेजस्वीमें तपननो तापनर । कु०॥६॥
 दपति कहे मुनिराज, साभलता न वरस्यो लाजर । कु
 नोधभाव न आणस्यो चित्त, पुत्र तजस्विमे आदित्यर । कु०॥७॥
 तुम राक तणे घर रत्न, रहेस्ये नही करस्ये यत्नर । कु०
 दपति मनमाहि चिंते, धार्यु छे वोहरावानु निमित्तर । कु०॥८॥
 सत्रत सत्तर (४६)छेताला वरपे, जन्म्यो त पुत्र छ(टे?) हरपेर । कु०
 गुण निष्पन्न ते नाम निधान, 'देवचद्र' अभिधानर । कु०॥९॥
 वरस थया ते पुत्रने आठ, धार ते विज्ञानना पाठर । कु०
 कवियण भासी त्रीजी ढाल, आगल वात रसालर । कु०॥१०॥

दूर ।

अनुक्रमे विहार करता यका, आव्या पाठक तत्र,

'राजसागर शिरोमणि', अर्भक प्रसव्यो यत्र ॥ १ ॥

गुरु देखी हर्षित थया, बहुबाण्यो पुत्र रत्न,
 धर्मलाभ गुन तव दीये, कर जो पुत्र जनन ॥ २ ॥
 वाचक श्री 'राजमागर', कोविद्धमे शिरताज,
 दिन केतलागक गया पत्नी, मन चिन्थु शुभकाज ॥३॥
 दीक्षा देवी शिष्यने, सुभ महुरत जोड जोन,
 सुभ चीथडोण देखीने, तो थाये संतोष ॥ ४ ॥
 संव सकलने तेडीने, दीक्षानी कही वात,
 वचन प्रमाण करे तिला, उलस्या नहूना गात्र ॥ ५ ॥
 गुभ ओछव महोछवे, दीक्षा दीये गुरुराय,
 संवत 'छपने' जाणीये, लघु दीक्षा दीये गुरुराय ॥ ६ ॥
 श्री 'जितचंदसूरीवर', वडी दीक्षा दीये सार,
 'राजविमल' अभिया दीड, श्रीजीनो वणो प्यार ॥७॥
 'राजमागरजी'ये हितधरी, सरस्वतीकेरो मंत्र.
 आपुं शिष्य 'देवचंद्रने', मनमे कीथो तंत्र ॥ ८ ॥
 गाम 'वैलाडु' जाणीये, 'वेणातट' सुभरम्य,
 भूमिगृहमे राखीने, सावन करे तारतम्य ॥ ९ ॥
 थड प्रसन्न सरस्वती, रसनाप्रे कीथो वास,
 भणवानो उद्यम करे, श्री गुरुसाहाज्य उलास ॥ १०॥
 देशी चारी म्हारा साहिया
 देवचंद्र अणगारने हो लाल, सुभ शास्त्र तणा अभ्यासरे,
 देखीने ठरे लोथणा ।
 प्रथम पडावश्यक भणे हो लोल,के(ते?)पछी जैनशैलीनो वासरे । दे०॥१॥

सूत्र सिद्धान्त भणावीया हो०, वीरजिनजाए भारना जेहरे । ८०
 स्वमार्गम पोपक थया हो०, टाले मिव्यामतनु गेहर । २० दे०
 अन्यदर्शनता शास्त्रनो हो०, भणवाने करता ज्वमरे । ८०
 वैयाकरण पचकाव्यना हो०, अर्थ कर कराये सुगम्यर । ३ दे०
 नैषध नाटक ज्योतिष शिवे हो०, अष्टादश जोया कोपर । ८०
 कौमुदी महामाव्य मनोरमा हो०, पिंगल स्वरोदय तोपर । ४ दे०
 भारता (भाष्य ?) ग्रन्थ जे कठिणता हो०,

तत्त्वारथ आवश्यककृतवृद्धवृत्ति हो । दे०

‘हमाचार्य’कृत शास्त्रनार, हो०, ‘हरिभद्र’ ‘जस’ कृत ग्रन्थ चित्तरे । ५ दे०
 पद्कर्मग्रन्थ अत्रगाहता हो०, कम्मपयडोये प्रकृति सवधरे । ८०
 इत्यादिक शास्त्रे भला हो०, जैन आम्नाये कीध सुगधर । ६ दे०
 सकल शास्त्रे लायक थया हो०, जेहन थयु मइ सुड ज्ञानर । ८०
 सवन् सतर चुमोतरे (१७७४) हो०, नाचक ‘राजसागर’ देवलोकरा । ७ दे०
 सवन् सतर पचोतर (१७७५) हो०, पाठक ज्ञानधर(म) देवलोकर ।
 मरट ‘(मरोट?)’ ग्रामे गुरे भलो होला०, ‘आगमसार’ कीधो ग्रन्थर ।
 ‘त्रिमल्लास’ पुत्री दोगभली हो०, ‘माइजी’ ‘अमाइजी’ शुभपुष्पर । ८ दे०
 दोग पुत्रीन कारणे हो०, कीधो ग्रन्थ ते आगमसारर । दे०
 सवन् सतर सीतोतर (१७७७) हो०, गुजरात आव्या देवचदर । ९ दे०
 पाटण माहि पवारीया हो०, व्याख्यान मिले जनवृन्दर । १० दे०
 कवियण कहे चोथी ढाल्मे हो०, कळो एह विस्तत प्रसिद्धरे । दे०
 आगल हव भवि सामलोरे हो०, धर्मकरणीनी वृद्धिर । ११ दे०

११

पादपाने देवतांती, वैशाखना १११०,

वासी भवति न वासी, स्वयंभुव पुत्र वपुष्य ॥ १ ॥

'श्रीगामी' न मेदयो, नगरभेद नगरान,

राय राधा न राधाना नर, प्रकृत सर्वे वाज ॥ २ ॥

नामे 'वेचरी' 'दोन्नीती', अत्र नमस्ते पर,

'गाव' 'वर्षागाव' नो, नरे न नमस्ते नर ॥ ३ ॥

कोविदम अर्षमर्ष, श्री 'ना' नमस्ते,

पुनवतनो नरेपुत्र नर, अत्र भवति विज्ञ भूमि ॥४॥

ने सुवता उपदेशयो, भगवतो महामुद्र,

'वेचरी' 'दोन्नीती' नरे, अत्र नमस्ते अमुद्र ॥ ५ ॥

ने सेठ 'वेजनी' नरे, 'वेचन' सुनिगात्र,

नव निता सेठ प्रत्ये नरे, नरे देवागुत्रिन नात्र ॥ ६ ॥

सत् नमस्कृता सत् न चित्त, तेवना जे अभि गत,

सुत सुते नमे चार्वा नरे, नरे धारदयो नान ॥७॥

मीठे वयणे सुत नरे, नामलीयुं नव सेठ,

स्वामी हु जागु नरी, नमस्कृति थर द्रव ॥ ८ ॥

एहवे अवसरे तिहा हता, संवेगी थिरदार,

'नानचिमल मूर्तिजी', तिहा नवा सेठ उदार ॥ ९ ॥

विधिस्थुं वादी पुथीयुं, सह(म)कृद सहस्रनाम,

आगमे थी पृथकता, निकासो सुभधाम ॥ १० ॥

‘ज्ञानविमलपूरि’ कहे, महसकृन्ना नाम,

अवसर प्राये जणावस्यु कहस्यु नाम न ठाम ॥११॥

सकलशास्त्रे उपयोगता, तिहा उपयोग न कोइ,

आगम कुची जाणरी, ते तो निरला कोड ॥ १२ ॥

ए देगी • माहरी सहार समाणी ।

एक दिन श्री ‘पाटण’ मझार, ‘स्नाहानी पोर्लि’ उदार र ।

सहसजिननो रमीयो, ‘देवचन्द्र’ वयगे उलसीयो रे ॥ १स०॥ टेक ॥

ते पोर्लि चोमुपनाडी पास, सहनी पूर आस र ॥स०॥१॥

सतरभेदी पूजा रचाणी, प्रभु गुणनी स्तवना मचाणी र ।स०॥

‘ज्ञानविमल सृरि’ पूजामे आ ना, आनकन मन भाव्या र ॥स०॥ २॥

तिहा वली यात्राये ‘द्वचन्द्र’, आव्या वहुजनने वृन्द र ।स०॥

प्रभुने नगाम करीन वठा, प्रभुध्यान घर त गरीठा र ॥स०॥ ३॥

एहव तिहा शठ दर्शन करवा, ससार समुद्रने तरवार ।स०॥

प्रन्न कर शेठ ‘ज्ञानविमलने’, महसकृन्ना नाम अमलनर ॥स०॥४॥

बहु दिन यया तुम अवलोकन करता, इम धर्मना कार्य किम सरतारास०

प्राय सहसकृन्ना नामनी नास्ति, कदाचि कोइ शास्त्रे अस्तिर ।स०॥ ५॥

ज्ञानसमसेर तणा झलकारा, देवचन्द्र बोल्या तेणिनारर ।स०॥

श्रीजी तुमे मृपा किम बोलो, चित्तथी वात त बोलोरे (बोलोरे) ॥स०॥६॥

प्रभु मन्दिरम यथार्थनी व्यक्ति, किम उपजे थावक भक्तिर ।स०॥

तुमे कोविदमे कहेनाओ श्रेष्ठ, अयथार्थ कहो ते नेष्टर । ॥स०॥७॥

तव 'ज्ञानविमलजी' त्रःकी बोल्या, तुमे आत्र आगम नवी खोल्यारे ।
 तमे तो भन्स्यलीयाना वासी, तुमे वाक्य बोलोने विभासीरे ॥स०८॥
 शास्त्र अभ्यास कर्यो होय जेहने, पूछोये वाक्य ते तेहनेरे ।स०
 तुमे एह वात्तामा नही गभ्य, असे कहीये ते तुम निभभ्येरे । ॥स०९॥
 उम परस्पर वाद करतां, तव गेठ बोल्या हर्ष भरभारे ।स०
 श्रीजी तमे अयथार्थ न बोलो, एह वातनो करवो निचोलोरे ॥स०१०॥
 'ज्ञानविमल' कहे सुणो 'देवचंद्र', तुमने चर्चानो उपछंदरे ।स०
 जो तुमे बोलो छो तो तुमे लावो, सहसकूट जिन नाम संभलावोरे ॥११॥
 तव 'देवचंद्र' कहे सुगुरु पसाये, सत्य युक्ति हवे न खसायरे ।स०
 तव 'देवचंद्रजी' शिष्यने साहसुं, जोइ लावो सहसजिननुं नामुरे ॥स०१२॥
 सुविनीत सूलक्ष्णने विद्वान, गुरुभक्तिमार्ही निवानरे ।स०
 'भनरूपजी' रजोहरणयो, पत्र आपे गुरुजीने तत्रे । ॥स०१३॥
 'ज्ञानविमलसूरि' तव वाची, एह 'खड(र?) तरे' भारी फाचीरे ।स०
 सत्कुलगुरुनो एह छ शिष्य, जेहनी जगमाहि छे अभिल्यरे ॥स० १४॥
 शास्त्रमयादाये सहसनाम, साख्युक्त ते नाम सुठामरे ।स०
 भौन रहीने पुछे ज्ञान, तुमे केहना शिष्य निवानरे ।स० १५॥
 'उपाध्याय' राजसागरजीना शिष्य, मिठी वाणी जेहवी इक्षुरे ।स०
 नम्रता गुण करी बोले ज्ञान, 'देवचंद्र' ने आप्या मानरे ।स० १६॥
 तुम वाचकतो जैनना काजी, तुमे जैनना थंभ छो गाजीरे ।स०
 आदि घर छे ते(त?)मार्हं भव्य, तुमे पण किम न होये कव्यरे ।स०१७॥
 इणिपरे परस्पर युक्ति मिलीया, शेठ 'तेजसी'ना कारज फलीयारे ।
 सहसकूटनां नाम अप्रसस्ति(द्धि?)देवचंद्रे कीधा प्रसरितरे । (प्रसिद्धि)

प्रतिष्ठा तिहा कीधी भव्य, ओचव कीधा नवनवर । स० ।
 'क्रिमाज्वार' कीधो 'देवचद्र', काड्या पाप परिग्रहदर । स० १६।
 ढाल कही ए पाचमी रुडी, ए वात न जाणस्यो कूडोर । स० ।
 ऋविग्रण कहे आगल सत्रध, वली सोनुने सुगधर । स० २०।

दोहा ।

क्रिमा ज्वार 'देवचद्रजी', कीधो मनथी जेह,
 ए परिग्रह सवि कारिमो, अते दु रनु गेह ॥ १ ॥
 नत्र नत्र नी नत्र डु गरी, कीधो सोवनराशि,
 साथे कोइ आनी नहों, जूठो धरवी आसि ॥ २ ॥
 धन धन श्री 'शालिभद्रजी', धन धन धन्नो सुजात,
 अगणित रुद्धिने परिहरी, ए काइ योडी वात ॥ ३ ॥
 चत्रीस कोटिसोवनतणी, 'धन्नो' काकदी जेह,
 मूकी श्री जिन 'वीरनी', दीक्षा लीधी नेह ॥ ४ ॥
 देवचद्र मनमे चितवे, हु पामर मनमाहि,
 मूळा धर त फोऊ सवि, सत्य प्रभु भारग घाहि (माहि ?) ॥ ५ ॥
 सवत 'मतरसत्यासीये', आव्या 'अमदानाद',
 लोक सहु तिहा वादवा, आव्या मन आल्हाद ॥ ६ ॥
 'नागोरीसरा(य)' जिहा अछ, तिहा ठवीया मुनिराज,
 निलोमो निष्कपटता, सकल साधुरिरताज ॥ ७ ॥
 साधु श्री 'देवचद्रजी', स्यादवादनी युक्ति,
 जीवद्रव्यना भावने, दखाडे ते व्यक्ति ॥ ८ ॥

तेहवे देशना साभलो, आवक आविका जेह ।

वाणी जल आपाढ सम, वरसे ध्वनि घन गेह ॥ ६ ॥

पापस्थान अठार छे, ते मूको भविजन्त,

जिनवरे भाष्यां जे अछे, ते सुणीये एक मन्त ॥ १० ॥

हाल अलगी रहेनी, ए देशी

वीर जिणेसर मुखथी प्रकासे, पापस्थान अठार,

तेहथी दूर रहो भवि प्राणी, सु(सु?)णीये आगार अणगार ॥ १ ॥

जिनवर कहेजी, कहेजी, २ जिनवर कहेजी । टेक ।

पापथानिक पहिलु तुमे जाणो, जीवहिंसा नवि करीये,

वेद्री तेन्द्री चौरिंद्री पंचंद्री, वध मा मन नवी धरीये ॥ २ ॥ जि० ॥

एकेद्रियादिक अनंतकायादिक, तेहना करो पचखाण,

एकेद्रीय तो संसारि नी करणी, अनुमोदना नवि आण ॥३ ॥ जि० ॥

अणगारी ने सर्वनी जयणा, पटकायाना त्राता,

कोइ जीवने दुःख नवि देवे, उपजावे बहु साता ॥ ४ ॥ जि० ॥

मरि कहेता दुख उपजे सहु ने, मारे किम नवि होय,

रुद्रध्याने नरकगति पास्यो, ब्रह्मदत्त चक्रवर्त्ति जोय ॥ ५ ॥ जि० ॥

मृपावाद पाप थानिक बीजुं, जुठुं नवी बोलोजे,

वैर विखादे (विपवादे) मृखा वचन बोले, पतीयारो किम कीजे ॥६ ॥ जि० ॥

झुठ बोलयाथी 'वसु' भूपतिनुं, सिंहासन भुइं पडीयुं,

काल करीने दुरगति पोहतो, झुठ वयण ते जडीयुं ॥ ७ ॥ जि० ॥

झुठु मिठु लागे जनने, कडुया फल छे तेह,

आगारी अणगारि मुखथी, झुठ न बोलस्यो रेह ॥ ८ ॥ जि० ॥

त्रीजु धानिक कहे जिनवरजी, नाम अदत्तादान,
 अणदीघी वस्तुनी जयणा, धरवानो करो स्थान ॥ ६ ॥ जि० ॥
 चोरी असने दुरंगानि पामे, तहनो फोड न साखी,
 चोरद्रव्य खाता नृप जो जाणे, जिम भोजनमा माखी ॥ १० जि० ॥
 तृण जाच्यु कल्पे साधुने, नवि ले अदत्तादान,
 चोर तणो बली सग न कीजे, इम कहे जिन वर्धमान ॥ ११ जि० ॥
 पापस्थानक चौवु भवि जाणो, ब्रह्मचर्य मनमा धारो,
 रूपवत रामा दखीने मन नवि कीजे विकारो ॥ १२ ॥ जि० ॥
 विरथी नर रामाए राचे, त दुख पामे नरक,
 लोह पुनली धखावे अगने, आर्लिगावे धरके ॥ १३ ॥ जि० ॥
 विपवही सदग छे लडना, तहनो सग न कीजे,
 मनमा कपट चपट कर जनने, शुभ प्राणी क्रिम रीझे ॥ १४ ॥ जि० ॥
 रावण मुज आद देड भूपा, नारी थी विगुआणा,
 नीता सुदजन सोल सतीना, जगम जस गवाणा ॥ १५ ॥ जि० ॥
 स्त्रीसगे नव लाख हणाड, जीवनणी वहरागि,
 ब्रह्मचर्य चोडु चित्त न धर तो, पाम नरकतो वास ॥ १६ ॥ जि० ॥
 पाचमु यानिक परिग्रहनु, करीये तहनो प्रमाण,
 ग्रन्थो नढी त निग्रन्थ कहीये, नि द्रव्य मुनि सुजाण ॥ १७ ॥ जि० ॥
 क्रोध मान माया लोभ जाणो, राग द्वेष कलह न कीजे,
 अभ्यास जान पैगुन रति वर्ता, अरति परपरिवाद न लीजे ॥ १८ जि० ॥
 पापस्थानक अडारमु भासु, मिथ्यात्वराख्य नवि धरीये,
 सत्तर थी ए भार कहीये, मिथ्यात्वे कम तरीये ॥ १९ ॥ जि० ॥

मिथ्यात्वशल्य काढीने प्राणी, समकितभाहि भलीये ,
 जिनवर भापित वचन स(र)दहीये, भव भव फेर टलीए ॥२०॥जि०॥
 नैगम संग्रह आदे देड, सप्तनयनी (ने?) (मप्त) भंगी ,
 तेहनी रचना करता गुरुजी, अपवादने उत्तमंगी ॥ २१ ॥जि०॥
 च्यार निखेपे सूत्र वाचना, नाम द्रव्य ठवण भाव ,
 कुमति ठवणादिकने उवेख, किम निक्षेप जमाव ॥ २२ ॥जि०॥
 जीव अजीव पुण्य पाप आदे देड, 'श्री नवनत्तनी' वाचा,
 भेद भेद करीने भविने, समजावे अर्थ ते साचा ॥ २३ ॥जि०॥
 गुणठाणा चतुर्दश कहीये, मिथ्या सास(साद?)न मीरसे ,
 ए आदि प्रकृतियो वधी, कर्मग्रन्थयो लहीस्ये ॥ २४ ॥जि०॥
 देशना वाणी देवचंद्र भाखे, भवियणने हिनकारी ,
 छठी ढाल ए कवियणे भाखी, सुगुरु मल्या उपगारी ॥ २५ ॥जि०॥

दूही

भगवइ सूत्रनी वाचना, साभले जनना वृन्द,
 वाणी गिठी पियुप सम, भाखे श्री देवचंद्र ॥ १ ॥
 'माणिकलालजी' जालिमी, हुंडकनो मन पास,
 तेहने गुरुए बुझव्यो, टाली मिथ्यात्वनी का(वा?)स ॥ २ ॥
 नौ(नू?)तन चैत्य करावीने, पडीमा थापो तासि(आवा)स,
 देवचंद्र उपदेशथी, ओछव हुथा उलास ॥ ३ ॥
 श्री 'शातिनाथनी पोल' में, भूमिगृहमे विव,
 सहसफणा आदे देइ, सहसकोड जिनविब ॥ ४ ॥

तदानी प्रतिष्ठा तिहा करी, धन सरचाणा पूर,

जैनधरम प्रकासीयो, दिन दिन चढत नूर ॥ ५ ॥

सवन सतर ओगगीस (एग्न्याऐंज्ञी?) १७७६ मे, चातुर्मास रभात,
तिहाना भविन पुझन्या, जेहना (बहु) अवगत ॥६॥

६।७—रसीयानो देशी

श्री देवचद्र मुनोद्र त जैन नो, स्तभ सदग थयो सत्य । सुज्ञानी,
रजना मे श्री 'शत्रुजय' तीर्थनो, महिमा प्रकाश नित्य । सु० ।

तीर्थ महिमा शत्रुजयनी सुणो ॥ १ ॥

श्री सिद्धाचल महिमा मोटकी, श्री ऋषभ जिणदनी वाणी। सु० ।
मुक्ति गमननु तीर्थ ए अठे, सास्वत तार्थ त्रमाण । सु० । २ । तीर्थ० ।

दु खम आरो पचमो जिन क्हो, एकविसति सहस वर्ष । सु० ।
चार योजन श्री शत्रुजयगिरि, एहनु कुण क्ह रहस्य ॥३॥ ती० ॥

काकर काकर माधु सिद्ध थया, भरत कीयोर उद्धार ॥ सु० ॥
'कर्मासा (ह)' आद दइ जाणीण, सोल उद्धार उद्धार ॥ ४ ॥ ती० ॥

तीर्थ माहात्म्यनी नरूपणा गुरु तणी, सामले आवकजत्र । सु० ।
सिद्धाचल उपर नवनवा चैत्यनी, जीर्णोद्धार कर सुदिन्न । सु० ५ ती०

कारसानो तिहा सिद्धाचल उपरे, मडाव्यो महाजन्त । सु० ।
द्रव्य सरचाये अगणित गिरि उपरे, उलसित थायेरे तन्न । सु० ६ ती०

सवन सतर (१७८१) एकासीये, व्यासीये - यासीये कारीगरे काम । सु०
चित्रकार सुधाना काम त, हृषद् उज्वलतारे नाम ॥ सु० ११ ती० ॥

फिरीने श्री गुरु 'राजनगरे' भला, तिहा भविन उपदश । सु० ।
विनतो 'सुरति' वदिर नी भली, चोमासानीरे विरोप । सु० ८ ती० ।

श्री 'देवचंदजी' 'सुरति' बंदिरे, कीथा भविने उपगार । सु० ।
 'पंचासिये' 'छयामीये' 'सत्यासीये', जाणीये वृद्धितणा जे भंडार । सु० ६
 'पालीताणे' प्रतिष्ठा करी भली, खरच्यो द्रव्य भरपूर । सु० ।
 'वधुमाये' चेत्य 'शत्रुंजय' उपरे, प्रतिष्ठा 'देवचंद' नी भूरि । सु० १० ती०
 पुनरपि श्री गुरु 'राजनगर' प्रत्ये, आव्या चोमासुं रे सार । सु० ।
 संवत 'सत्तर (८८) अठ्यासीय' माहि, पंडित माहि शरदार । सु० ११ ती०
 वाचक श्री 'दीपचंदजी' प्रत्ये, उप(र)नी व्याधिनी (?) व्याधी । सु० ।
 'आसाढ' सुदि वीज दीने ते जाणीये, पुढता स्वर्ग प्रवान । सु० १२ ती०
 'तपगच्छ' माहे विनीत विचक्षण, श्री 'विवेकविजय' सुनींद्र । सु० ।
 भगवा उद्यम करता विनयी वगुं, उद्यमे भगावे 'देवचंद्र' । सु० १३ ती०
 गुरुसदृश मन जाणे 'विवेकजी', खिजमतिमें निसदिन्न । सु० ।
 विनयादिक गुण श्री गुरु देखीने, 'विवेकजी' उपर मन्त । सु० १४ ती०
 'अमदावाद' मे एकसमे भलो, 'आणंदराम' साह श्रेष्ठ । सु० ।
 'रत्नभंडारी' ना अग्रेस्वरी, जेहना मनसेरे इष्ट । सु० । १५ ती०
 श्रीगुरुने वली 'आणंदराम' ने, चर्चा थायरे नित्य । सु० ।
 चर्चाए ते जीत्यो गुरुजीए, 'आणंदनी' गुरुपरि प्रीति । सु० १६ ती०
 'कवियण' भाखी सातमी ढाल ए, पंचम आरारेमाहि । सु० ।
 एहवा पुरुष थोडा प्रभुमार्गना, प्रकाश करवाने उछाहिं । सु० १७ ती०

दूह ।

शाहा श्री 'आणंदरामजी', गुरुनी गुरुता देखि,

भंडारी 'रत्नसिंध' आगले, प्रसंशा करी सुविशेष ॥ १ ॥

गुरु ज्ञानी शिरोमणि जिनवर्मे वृषभ समान,

‘मस्तरथल’ थी इहा आवीआ, सकलविद्यानु निधान ॥ ७ ॥

‘रतनसिंह’ गुरु वादवा, आव्यो आलय तास,

नय उपनय सभलावीने, मन प्रसन्न कर्यु तास ॥ २ ॥

देशी—वन धन श्री ऋषिराय अनायी

पूजा अरचा ‘रतन भडारी’, करता श्रीजिनवरनीर ।

श्री ‘द्वचद्रजी’ना उपदेशयी, शिवमदिरनी निसरणीर ॥१॥

धन धन ए गुरुरायने वयण, जिनशासन दीपाव्योरे ।

पचम आरे उत्तमकरणी गुजरातिनो सो (सु?) वो नमाव्योर । टेकर

प्रिव प्रतिष्ठा ब्रह्मी थाये, सत्तर भेदी पूजार ।

भडारीजी लाहो लेता, ए गुरु सम नही दूजार ॥धन० ॥३॥

प्रिधि योगे त ‘राजनगर’मे, मृगी उपद्रव व्याप्योर ।

गुरुरन भडारी सर्व व्यवहारी, अरज करी सीस नमाव्योर ॥धन०॥४॥

स्वामी उपद्रव ‘राजनगर’मे, थयो छे सर्व दु स क्त्तरि ।

तुम बठा अमे केहने कहीये, तुमे छो दु सना ह्त्तरि । ॥धन० ॥५॥

जैनमार्गना मत्र यत्रादिक, करीने खीला गाड्यार ।

मृगी उपद्रव नाठो दुरि, लोकना दु स नसाड्यारे । ॥धन० ॥६॥

जिनशासननो उदय त करता दु सभ आरे ‘द्वचद्र’रे ।

प्रसासा सघल शाशन केरी, टाट्यो दु सनो ददरे । ॥धन०॥७॥

एहवे सम ‘रणकु जी’ आव्या, बहूलु सैन्य लेइनरे ।

युद्ध करवा ‘भडारी’ साथ, आव्यो नगारु दडनर । ॥धन०॥८॥

‘रतनसिव’ भडारी तत्तपिण आव्यो श्री गुरु पासेरे ।

काइ करणो दल बहोतज आयो में छा थाक् विस्वासेरे । ॥धन० ॥९॥

- फिकर मत करो 'भंडारीजी', प्रभुजी आछो करस्येरे ।
 जीत वाद थाहरो अब होस्ये, करणी पार उतरस्येरे ॥धन०११०॥
 चमत्कार श्री जिन आम्नायनो, गुरुजीये ते दीधोरे ।
 फतेह करीने आज्यो वहिला, थाको कारज सीधोरे ॥धन०१११॥
 'रतनसंघजी' सैन्य लेइने, युद्ध करवाने सांहमोरे ।
 'रणकुंजी' साथे तोपखाने, चाल्यो न करे खामोरे ॥धन०११२॥
 परस्पर युद्धे 'रणकुंजी' हार्यो, थई भंडारी नी जीतरे ।
 ए सर्व 'देवचंद्र' गुरुपसाये, हेमाचार्य कुमारपाल प्रीतरे ॥धन०११३॥
 'घोलका' वासी सेठ 'जयचंदे', 'पुरिसोतम' योगीरे ।
 गुरुने लावी पायो लगाइयो, जैनधर्मनो भोगीरे ॥धन०११४॥
 योगिंद्र एक गिर 'पुरुसोत्तम'ने, (नो?) मिथ्यात्व शल्यने काळ्योरे ।
 बुझविने जिनधर्म मार्गमां, श्रुतिये मन तस वाल्योरे ॥धन०११५॥
 'पंचाणुंइ' 'पालीताणे' आव्या, 'छनुंये' 'सत्ताणुंये' 'नवानगरे'रे ।
 'ढुढक' टोला 'देवचंदे' जीत्यां, चैत्य चाल्या सर्व झगरेरे ॥धन०११६॥
 'नवानगरे' चैत्य जे मोटां, ढुढके जे हता लोप्यारे ।
 अर्चा पूजा निवारण कीधी, ते सघला फिरी थाप्यारे ॥धन०११७॥
 'परधरी' गाम में ठाकुर बुझव्यो, गुरुनी आज्ञा मानेरे ।
 'कवियणे' आठमी ढाल ते रुडी, ए वात न जाणो कुडिरे ॥धन०११८॥

दोहा ।

पुनरपि 'पालीताणे' गुरु, पुनरपि 'नुतन' नग्र माहि ।

संवत् (१८०२-३) अठार 'दोय' 'त्रिणमा', 'राणावाव' उछाहिं ॥ १ ॥

तत्रना अधीशन, रोग भगदर जेह ।

टाल्यो तत्रस्त्रिण गुरुजिइ, गुरु उपर बहु नह ॥ २ ॥

सत्रत 'अष्टादश च्यार'में, 'भावनगर' मझार ।

मेता 'ठाकुरसी' भलो, हु ढकनो बहु पास । (प्यार ?) ॥ ३ ॥

श्री 'देवचद्रे' घुझनी, शुभमार्गिनो वाम,

तत्रना ठाकुर तणी, मत कीवी जैन पास ॥ ४ ॥

सत्रत 'अष्टादश च्यार मे, 'पालीताणो' गाम ।

मृगी टाली गुरुजीये, श्रीगुरुजीने नाम ।

॥ ५ ॥

सत्रत 'अष्टादश' 'पच' 'पण्ठ'में, 'लौन्डी' गाम उदार ।

'ढोसो वोहोरो' साहा 'धारसी', अन्य आवक मनोहार ॥ ६ ॥

साहा श्री 'जयचद' जाणोय, साहा 'जेठा' बुद्धिवत ।

'रही कपासी' आदि दइ, भणान्या गुरुइ तत ॥ ७ ॥

गुरुइ सहू प्रतिनोधीया, जैनधर्मम सत्य ।

गुरु जगार न वीसारता, धर्मो सचें वित्त ॥ ८ ॥

'लिनडी' 'धागद्रे' गाम ए, अन्य 'चुडा' वली गाम,

प्रतिष्ठा त्रिण थइ विननी, द्रव्य सरण्या अभिराम ॥ ९ ॥

'धागद्रे' जिनविननी, थइ प्रतिष्ठासार,

'सुरजानदजी' तिहा मल्या, 'देवचद्रे'नो प्यार ॥ १० ॥

देशी:— ललनानी ठे ॥

सत्रत 'अदारने आठमे', गुजरातियो काह्यो सघ ललनानो

श्रीगुरुना गुरु उपदेशथी, शत्रुजयनो अभग ॥ ल० ॥ १ ॥

गुरुवयणा ते सहहो ॥टेका॥

गिरि उपर उछव थया, खरच्या बहुला द्रव्य ।

पूजा अरचा बहुविधि, अनुमोदं ते भव्य ॥ ल० ॥२ गुरु०॥
उभी सोरठ जानग, करतां ते भविजत्र । ल० ।

‘अष्टादश’ ‘नव’ ‘दशमे’, श्री गुजराति चोमास ॥ ल० ॥३ गुरु० ॥

संवत् ‘दश अष्टादशे’, ‘कचरासाहाजीडं’ संव । ल० ।

श्री शत्रुंजय तीर्थनो, साथे पधार्या देवचन्द्र ॥ ल० ॥४ गुरु०॥

साह ‘मोतीया’ ‘लालचंद’, जाणीड जैनमारगमें प्रवीण । ल० ।

श्राविका अवल ते भक्तिमा, दानेश्वरीमां नहीं खीण ॥ल० ॥५ गुरु०॥

..... ॥६॥

संघमे श्री ‘देवचन्द्रजी’, अन्य व्यवहारीया साथ । ल० ।

श्री ‘शत्रुंजय’ गिरि आवीया, लेवा धर्मनुं पाथ ॥ ल० ॥७ गुरु०॥

प्रतिष्ठा जिनविंवनो, गुरुजिडं किधी तत्र । ल० ।

साठी सहस्रत्र द्रव्य खरचोयो, गुरु वचने ते यत्र ॥ ल० ॥८ गुरु०॥

संवत् ‘अठार इग्यार’मे, प्रतिष्ठा ‘लीवडी’ मध्य । ल० ।

‘वढवाणे’ श्रावक हुंडकी, पुस्त्या खरची रुद्धि ॥ ल० ॥९ गुरु०॥

चैत्य कराव्या सुंदर, जिन अर्चना ठाठ । ल० ।

प्रभाविक पुरुष ‘देवचन्द्रजी’, धन्य एहनी मात ॥ल० ॥१० गुरु०॥

शिष्य सुविनीत पासे भला, श्री ‘मनरूप’ जी दक्ष । ल० ।

‘विजयचन्द्र’ बुद्धिये प्रबलता, न्याय शास्त्रना पक्ष ॥ल०॥११ गुरु०॥

वादी अनेक ते जीतीया, गच्छ चोरासीना साय । ल० ।

भणे तर्कवादी भलो, श्री ‘देवचन्द्रनो’ हाथ ॥ल० ॥१२ गुरु०॥

‘मनरुपजी’ ना शिष्य दोउ, ‘वक्तुजी’ ‘राजचन्द’ । ल० ।
 गुरुभक्ति आज्ञा धरे सेवामे सुखचन्द ॥ ल० ॥ १३ गुरु० ॥
 सवत ‘अडार ना वारमें’, गुरु आव्या ‘राजद्रग’ । ल० ।
 गठनायकने तडावीआ, महाछव कीधा अभग ॥ ल० ॥ १४ गुरु० ॥
 ‘वाचकपद’ ‘देवचन्द’ने, गुरुपति देव सार । ल० ।
 महाजन द्रव्य सरचो बहु, एह सवध उदार ॥ ल० ॥ १५ गुरु० ॥
 नरमी ढाल सोहामणी, कवियण मासी एह । ल० ।
 एक जीमे गुण वर्णता, कहिना नावे छेह ॥ ल० ॥ १६ गुरु० ॥

॥ दूर । ॥

वाचक श्री ‘देवचन्द्रजी’, दजना पीयूष समान,
 जीव द्रव्यता मेदस्थु, नय उपनय प्रधान ॥ १ ॥
 प्रथ भला ‘हरिभद्र’ ना, वाचक ‘जस’ कृत जेह,
 ‘गोमटसार’ ‘दिगमरो’, वाचना करे हित नेह ॥ २ ॥
 ‘मुलताने’ ‘देवचन्द्रजी’, वली अन्य वीकानेर’,
 चामासा गुरु तहा करी, ज्ञानवणी समसेर ॥ ३ ॥
 नवाग्रन्थ ज्हेन कर्या, टाका साहत तह युक्त,
 ‘दसनासार’ ‘नयचन’, शुभ ‘ज्ञानसार’नी भक्ति ॥ ४ ॥
 ‘अष्टकटीका’ युक्तिथी, ‘कर्मप्रथ’ वली जेह,
 तहनी टीका आदि दइ, ग्रन्थ क्या बहुनेह ॥ ५ ॥
 ‘राजनगरे’ ‘देवचन्द्रजी’, ‘दोसीवाडा’ माहि,
 थाका लोक व्याख्यानमे, सामलना उठाहि ॥ ६ ॥

एकदिन वायुप्रकोपथी, वमनादिकनी व्याधि,

अकस्मात् उत्पन्न थड, शरीरे थड असमाधि ॥ ७ ॥

शास्त्र मरण दोड कल्या, पंडित मरण छे जेह,

बाल मरण तो दुसरो, उत्तम पण्डित मृत्यु वेह ॥ ८ ॥

तव शरीरनि क्षीयणा, (क्षीयता?) जिथिल थया अंगोपांग,

बुद्धि करीने जाणीडं, अनित्य पदारथरंग ॥ ९ ॥

पुद्गल तो अनित्यता. अनादिनो स्वभाव,

मूर्ख तेपरि रंग धरे, पण्डित धरे विभाव ॥ १० ॥

निज शिष्योने तेडीने, टे शिक्षा हितकार,

मुज अवस्था क्षीण छे, ए पुद्गल व्यवहार ॥ ११ ॥

ढालः निंदलडी वैरण हुय रही, ए देशी

शिष्य शिरोमणी जाणीडं, 'मनरूपजी' हो वाचक गुणवंत,

चतुर चाणाक्य शिरोमणि, गुरु उपर बहु भक्तिवंत,

धन धन ए गुरु वंदीए ॥ १ ॥

धन्य एहनी चतुराईने, गुरु वेठा हो आवक करे सेव,

पदकज सेवे जेहना, आज्ञा माने हो नित नित मेव ॥ २ ध० ॥

विनयी विचक्षणे पण्डिते, गुणालंकृत हो जेहनुं भयुं गात्र,

श्रीगुरु मनमें चितवे, मुझ 'मनरूप' हो शिष्य घणु सुपात्र ॥ ३ ॥ ध० ॥

'मनरूप' शिष्य विद्यमानता, 'रायचंदजी' हो दुजला पूज्य,

गुरुसेवामें विनयी घणुं, विद्याना हो जेह जाणे गुह्य ॥ ४ ॥ ध० ॥

श्री 'रूपचंद' शिष्य सुरीलता, 'विजयचंदजी' हो पाठक गुणयुक्त,

विद्या भरे हस्ति मलयतो, मेघध्वनि सम हो उद्घोषणा छंद,

द्वितीय शिष्य 'विजयचंदजी', तर्कवादे हो जीत्या वादीवृन्द ॥ ५ ॥ ध० ॥

तस सीस दोय सुसीलता, पूज्य पूजा हो 'सभाचद' 'विवेक',
 गुरुनो प्रेम शिष्य उपर, गुरु विप्रमाने हो चाद्री कीया भेक ॥६घ०॥
 शिष्या दवे उपाध्यायजी, सर्वशिष्यने हो कहे वारी प्रेम,
 समयानुमार निचरज्यो, पापनुद्धि हो नवि धरस्यो वेम ॥७घ०॥
 पग प्रमाणे सोडि ताणज्यो, श्री सघती हो धारज्यो तमे आण,
 वाहिज्यो सूरिनी आज्ञा, सूत्र शास्त्रे हो तुम धरज्यो ज्ञान ॥८घ०॥
 तूज समरथ छो मुज पुठे, मुझ चिंता हो नास्ति लखलेस,
 सपरिवार ए ताहर खोले छे, हो मुक्या सुविशेष ॥९घ०॥
 तव 'मनरूप' जी गुरु प्रत्ये, कहे वाणी हो जोडी हाथ,
 गुरुजी तूम वडभागीया, पामर अम हो पण शिर तुम हाथ ॥१०घ०॥
 सकल शिष्य मेला करी, गुरुजीये हो सहन थाप्यो हाथ ।
 प्रयाण अवस्था अमतणी, वाणी वहवी हो जेवो गंगापाय ॥११घ०॥
 दणवैकालिक उत्तराख्ययनता, अध्ययनने सामले गुरुराय ।
 यथार्थ सर्व मन जाणता, अरिहतनोहो ध्यान घर चित्तलाय ॥१२घ०॥
 सप्त 'अढार वारम' 'भाद्रपद' मासे हो 'अमावस्या' दिन,
 प्रहर एक रजनी जाता, देवगति लहे 'द्वचंद्र' धन धन्य ॥१३घ०॥
 मोटे आडार माडवी, चोरासो गच्छता हो आवक मल्या वृन्द,
 अगर चदने काण्टेभली, चिंता रचिता हो महाजन सुरप्रकद ॥१४घ०॥
 प्रतिपदा दहन दीयु, गुरु पूठी द्रव्य घणो सरचत,
 तिथियो जमाडि वहोलता, जाणे अपाढो हो घने करो वरसन ॥१५घ०॥
 ए द्वचंद्रना वगणवी, द्रव्य सरच्या हो अगणीत सुमठाम,
 धा धन सरचाइयु, एहवा गुरुता हो कीया गुणनाम ॥१६घ०॥

दशमी ढाल लोहामणी, नाम धरीयुं हो गायो देवविलास ।
आसन्न सिद्धि जे थया, कोइक भवे होन्थे मुक्तियो वास । १७ ध०

दुर्द्व ।

मान आठ भव पहवा, जो धरमे पह जीव ,
भाव वाल्यकाल विध्वंसना, धर्म योवनमे सदीव ॥१॥
अनुमाने करी जाणीये, द्रव्यथको विरोप ,
मान आठ भव उलंधीने, शिव कमलाने पंग ॥२॥
प्रसु मारग विलारवा, द्रव्य भावथी शुद्ध ,
विध्व आलहादकारी थयो, जिनवाणीनी वृद्ध ॥३॥
श्री जिनविचनी थापना, करवा निज सुवृद्धि .
च्यार निक्षेपा युक्तस्युं, स्याद्वाद भाखे शुद्ध ॥४॥
एक पाइए साचे सकल, तस चाले करामात ,
गाजी मर्द ए जैननो, मिथ्यात्वी कीया महात ॥५॥

रागः धनाश्री पांभी ते प्रतिबोध ए देशी

श्री देवचंद्र ऋषिराय स्वर्गेरे (२) पहोता ते सुभ ध्यानधीरे ।१।
सूरय (सूर्य?) चंद्र नै इंद्र अवधिरे (२) देखी मन चिते पहवुरे ।२।
जिनशासननो थंभ देवचंदरे (२) अमरपुरीमे अवतथीरे ।३।
देश देशमां वात पोहोतीरे (२) सांभली भवि विलखा थयारे ।४।
कल्पतरुसम एह देवचंदरे (२) सरिखा पुरुष थोडा हस्येरे ।५।
मस्तके मणि हती जेह गुरुनेरे (२) दहन समय उछली पडीरे ।६।
ते गइ पृथ्वी मध्य कोइनेरे (२) हाथे ते आवी नहीरे ।७।
महाजन शिष्य समुदाय भेला थडरे (२) स्तुप करान्यो गुरुतणीरे ।८।

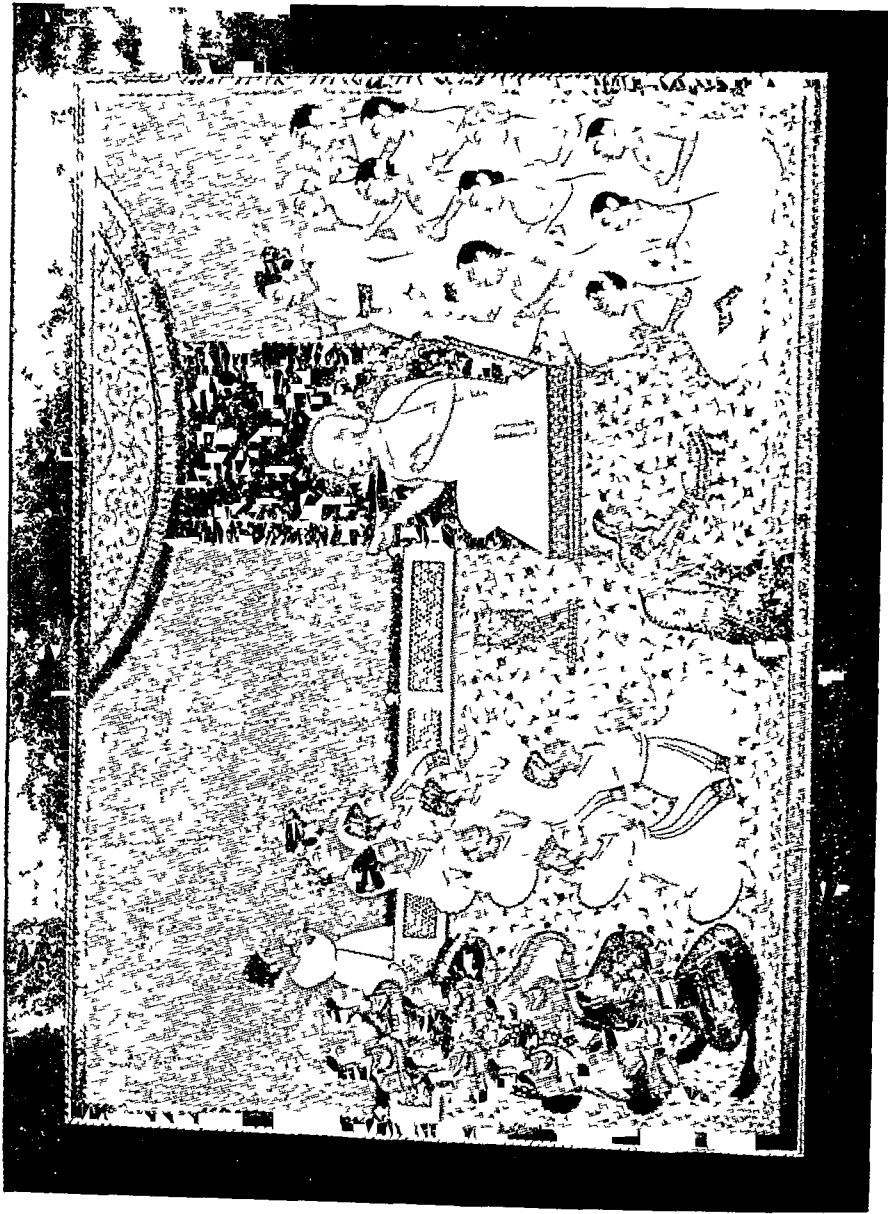
- प्रतिष्ठा करी तत्र पादुकारे (२) पूजा प्रभावना बहु विधिर १६।
 वतले दिन वाचक 'मनरूप' र (२) स्वर्ग गति गुरने मिल्यार १७०।
 'रायचद' शिष्य निधान गुरनार (२) विरह तम्यो जाये नहीर १७१।
 मन चित 'रायचद' ए सविरे (२) अनित्यता श्री गुरये कछोर १७२।
 पल्योपम पुरव आयु ते पण र (२) पूरा थया शास्त्रे कछार १७३।
 आ पण प्राकृत जीव जुठार (२) स्नेह धरवो ते मूढतार १७४।
 तित्ययर गणयर जेह सुरपतिर (२) चक्री येसवराम एहनेर १७५।
 कृताते सहाया सब का गणनार (२) इयर जननी जाणनार १७६।
 इम मन चिती रायचद गुरनीरे (२) स्तवना नामनी मन वरर १७७।
 गुर सरयो नही इष्ट दीवोर (२) गुरुइ ज्ञान वसाडीयुर १७८।
 गुरु पठे 'रायचद' पद्धतिरे (२) चलवे व्याख्याननी सपदार १७९।
 गुरु जेहवी किहाथी बुद्धि गुरनारे (२) ज्ञान त्रिदु किचित स्पर्शतार।
 जैनशैलीमा प्रवीण 'रायचद' रे (२) गुरुपसाये ताटरा थयार १८१।
 मनमा नही राकलेश कोइथीर (२) वाग्वाद कोइथी नवि करर १८२।
 सुविहितमार्गनो जाण 'रायचद' रे (२) गीलादिक गुण समछोर १८३।
 आठ मा मोहनीकर्म व्रतमें रे (२) चोथु व्रत जीतवु दोहिलुरे १८४।
 गील तणेरे प्रभाव सकट (मवि)टले (२) नासे तत्क्षिण ए यकीरे १८५।
 जनमा जेहनो सोभाग्य अक्षयरे (२) रिद्धि वृद्धि अणगणिततारे १८६।
 एक दिन श्री 'रायचद' कविनेरे (२) कहे अम गुरु स्तवना करोरे १८७।
 अमे जो करीये स्तव एह अणवटेरे (२) स्वकीर्ति करवी अयोग्यतारे
 त माटे कहयु तुम्ह जननारे (२) तुम बुद्धि प्रमाणे योजनारे १८९।
 'कवियणे' देवविलास' कोयो (२) मन हर्षित उल्लस्योरे १९०।

- कीवो 'देवविलास' शुभदिनेरे (२) जयपताका विस्तररी रे । ३१
 संवत १८२५ 'अठार पचोस आसोगुदिरे' (२) 'अष्टमी' रविवारे रच्योरे
 स्तोकमे देवविलास कोधोरे (२) किंचिन् गुण प्रहीने स्तच्योरे । ३३
 वोहोलो छे अधिकार जोतारे (२) ग्रंथ थाये मोटो वणोरे । ३४
 भणारये 'देवविलास' सामले (०) तम घरे कमला विस्तररे । ३५

कलस

- श्री 'वीर' जिनवर 'सोहम' गणधर, 'जंतु' मुनिवर अनुक्रमे,
 'खरतरगच्छ' उद्योतकारक, श्री 'जिनदत्त' सूरयोपमे ।
 तास पाट 'जिनकुशल' सूरि, 'जिनचंद्र' (१) सूरि तसपटे,
 'शुगप्रधान' नो विरुद जेहनो, नामथी दुःकृत कटे ॥ १ ॥
 गच्छ स्तंभक उपाध्यायजी, 'पुण्यप्रधान' (२) प्रधानता,
 सुमति धारी 'सुमति' (३) पाठक, 'साधुगंग' (४) वाचक भृता ।
 श्री 'राजसागर' (५) उपाध्यायजी, 'ज्ञानधर्म' (६) पाठक थया,
 सुकृती 'दीपचंद्र' (७) पाठक, 'देवचंद्र' (८) पाठक जय जया ॥ २ ॥
 'मनरूप' वाचक (९) 'विजयचंद्रजी', पाठकनो पद भाग्यता,
 'मनरूप' पदकज मेरुगिरिवर, 'रायचंद्र' (१०) रवि उद्गता ।
 सुज्ञानताये विनयवन्ते, बुद्धि युक्ति सुरगुरु,
 चंद्र सूर ध्रु तार तारक, रहो अविचल जयकर ॥ ३ ॥
 इति श्री देवचंद्रजीनो निर्वाण रास संपूर्ण





श्री जिनलामसूरेजी (बाब विजय सिंहजी नाहरके सौजन्यसे)

॥ श्री जिनलाम सूरि गीतानि ॥

ढाल—जचीनीची सरवरीयैरी पाल, एदेसी लफरुमे ।

(१)

आज सुहावो जो टीह, आज नै वयागोजी अम्ह घर आगणैजी ।
 अग उमाहो जो आज, सहगुरु ह आया आणन्त अति घग्गे जी ॥१॥
 आगो ह सहिअर साथ, सजि सजि ह सोल शृङ्गार सुहामगाजी ।
 जगम तीरथ एह, वन्न फीजइ हो छीजइ दुख घणा जी ॥२॥
 वन धन सोडन देश, धन धन गाम नयर त जाणियइ जी ।
 जिहा रिचरै गच्छ राण, भाण प्रनापी हे सुजस वयाणियइ जी ॥३॥
 धन 'पचाडण' तान, धन 'पदमा द' हो मात महीतलै जी ।
 'नेहित्य वग' विर यात, कुल उजवाल्या पूज जी इण कल्ले जी ॥४॥
 सवि सिगगायाँ ह हाट, प्रोलि रचाइ हो च्याक फारती जी ।
 चढे सरोड जीह, श्री जिन शामन महिमा दीपती जी ॥५॥
 मिलोया ह महामन लोक, उच्छव मड्यो हो अति आडम्वर जी ।
 दे मन वडित दान, याचकजन धन धन जस उचरै जी ॥६॥
 गोरी गावै जी गीत, फरहर गनगगणि धज फरहरइ जी ।
 कोतिल बलि गज वाजि, सुरिय फरता हो आगल सचरै जी ॥७॥
 दुन्दुभि ढोल दमाम, झलरि भुगल भेर नफेरीया जी ।
 वाजै वाजित्र मार, फूलडै पिजइ हो 'वीरपु' सरिया जी ॥८॥
 हीर अनै बलि चीर माणिक मोती हो चारोजै उता जी ।
 पवरोजै पदकृष्, मुनिपति आत्रै हो गज गति मलपता जी ॥९॥

पूज पधार्या हे पाट अमिय समानी हो वाणी उपदिसें जी ।
 सुणि सुणि श्रवण सहेज बहु नर नारी हे हियडउ उल्लसै जी ॥१०॥
 जां शशि सायर सूर जा धुर मेरु महीधर थिर रहै जी ।
 श्री 'जिनलाभ' सूरीश, तां चिर प्रतपो हो मुनि'माणक' कहै जी ॥११॥

(२)

एक सन्देशो पंथी माहरो, जाइनें वीनविजे करजोड । गरुआ पूजजीहो
 महिर करीनइ गच्छपति आविजै, वांदणरौ म्हाने कोड ॥ग०॥१॥
 वहिला पवारो 'थलवट' देशमें, श्री संघ जोवै थारी वाट ॥ग०॥
 ढोल न कीजै हो पूज इण वात री, साथै मुनिवर थाट ॥ग०॥२॥
 'कच्छ' धरा सुं हो पूज्य पधारि नै, नाइसक्या इण ठाइ ॥ग०॥
 म्हे पिण जाण्यो जिण थानै राखिया, विचही में विलभाइ ॥ग०॥३॥
 'जेसलमेरा' श्रावक जोइनै, पूज रक्षा लोभाइ ॥ग०॥
 मुंह मीठा सुं मनडो मोहियो जी, दूजा नावै दाइ ॥ग०॥४॥
 म्हां तो कागल साहिवा जी मोकल्या, लिख लिख अरज अछेह ॥ग०॥
 तौ पिण पाछौ जा(ब)ब न आवियो, पूज खरा निसनेह ॥ग०॥५॥
 मनमें ऊमाहो गच्छपति छै घणुं, सुणिवा थाहरी वाणि ॥ग०॥
 नाम तुम्हीणो खिण नहीं वीसरुं, वंदावौ हित आणि ॥ग०॥६॥
 पाटोधर मानीजै भाहरी वीनति, श्री खरतर गच्छ ईश ॥ग०॥
 'बीकाणै' चौमासो कीजियै, श्री 'जिनलाभ' सूरीश ॥ग०॥७॥
 अरज अम्हीणी पूज्य अवधारिड्यो, सूरीसर सिरि इंद ॥ग०॥
 बेकर जोड़ी त्रिकरण भाव सुं, वंदै मुनि 'देवचंद' ॥ग०॥८॥
 ॥इति श्री पूज्यजो री भास संपूर्णम् ॥ लिखितं पं० जीवन० छोटै
 स्थाला मध्ये कोठारियां रै खण मध्ये ॥ शुभं भवतु, कल्याण मस्तु ॥

(३)

जिण शासन शिणगारा, वदो सरतर गणधार हे ।

सहिया सदगुरु वेग वधावो ।

सदगुरु वेग वधावो, मिल मङ्गल भास मल्हावो हे ॥स०॥१॥

धन धन 'मारु' देश, धन थलवट माडल वेश हे ॥स०॥

धन 'पचारण' तात, धन धन पदमादे' मात हे ॥स०॥२॥

'बोहित्य' वश सनायो, जिहा पुरुष रा ए जायो हे ॥स०॥

'माडवो' नगर मझार, होय रया जय जयकार हे ॥स०॥३॥

धुरय निसाणे छाई, वाटै श्री सच वधाई हे ॥स०॥

गोरी मगल गावे मोत्या, भर थाल वधावै हे ॥स०॥४॥

श्री 'जिनभक्ति' सुरिन्दा, पाट थाप्या जाणै इन्दा हे ॥स०॥

निलवट चढतै नूर, जाणे ऊगो अभिनव सूर हे ॥स०॥५॥

लवु वय चारित लोनी, गुण देखी गुरु पद दीनी हे ॥स०॥

सदगुरु हुती सनायो, जिण सरतर गच्छ दीपायो हे ॥स०॥६॥

पूरवली पुण्याड, एतो मोटी पदवो पाइ हे ॥स०॥

पच महानत धारी, थारी रहणीरी बलिहारी हे ॥स०॥७॥

रूप देव कुमार, एतो लगधि तणा भण्डार हे । स० ।

पालै पचाचार गुरु गोतम है अवतार हे । स० ॥८॥

।

मीठो सदगुरु वाणी, साभलता चित्त समाणी हे । स० ॥ ९ ॥

'श्री जिन लाम' सुरिन्द, प्रतपो जिम सूरिज चद हे ।स०।

चित्त वरि अधिक जगोश, इम 'वसतो' द आशीस हे ॥स० ॥१०॥

(४)

* श्री जिनलाम सूरि निर्वाण गीतम् *

: >>> <<< :

ढोल आदि जिणिद मया कगे पढनी ।
देश सकल सिर सौभती, थलवट सुथिर गुजाणो रे ।

जिहा 'विक्रमपुर' परगडो, तिहां प्रगद्या मुनि भाणो रे । १ ।
गुणवन्ता गुरु वंदोथे । आंकडी० ।

सुमती ग्राह 'पंचायण', 'पटमादेवी' नन्दा रे ।

'वोहिय' वंग विभूषण, लाल अमोल अमंदा रे । २ । गु० ।
श्री 'जिनमक्ति' सूरीसरु, श्री खरतर गछराथा रे ।

तासु संयोगे आदर्यो, संजम शोभ मवाया रे । ३ । गु० ।
अरथ सहित सदगुरु दीयड, 'लक्ष्मीलाम' सुनामो रे ।

वरस 'अठार चउडोत्तरे', पाम्ब्यो पाम्ब्यो पद अभिरामो रे । ४ ।
श्री 'जिनलाम' सूरीसरु गछनायक गुणरागी रे ।

पंचम काले परगडा, श्रुतधर सीम सोभागी रे । ५ । गु० ।
देश विदेशे विचरता, बहु भवियण प्रतिबोधी रे ।

सकल कछुपता टालता, आतम धरम विरोधी रे । ६ । गु० ।
नगर 'शुढै' गुरु आवीया, 'चउतीसे' चउमासै रे ।

तिहां निज समय प्रकाशने, पहुंता सुर आवासै रे । ७ । गु० ।
चरण कमलकी थापनां, अनिसयवंत विराजै रे ।

दास 'क्षमाकल्याण' नौ, वंदन हुआ शुभ काजै रे । ८ । गु० ।
इति श्री जिनलाम सूरि सदगुरु सिद्धाय (पत्र १ तत्कालीन, संग्रहमें)

॥ जिनलामसूरि पट्टधर जिनचन्द्रसूरि गीत ॥

(१)

ढाल—आज रो सुजानी स्वामी जोर वण्यो राज ।
 जिनचन्द्र सूरि' गुरु वदियै जो राज, वदियै वदियै वदिय जी राज जि
 सह गच्छपति मिर सेहरोजी राज, वरतर गच्छ सिणगार म्हााराज ।
 श्री 'जिनलाम' पट्टोधरजी राज, 'ओस वग' अवतार म्हााराजि०
 लघु वय सयम आजाजी राज, 'मरुधर' दश मझार । म्हााराजि०
 अनुक्रम गुरु पट्ट पामियाजी राज, सूत्र निद्वत आधार म्हााराजि०
 देश घणा वन्दावताजी राज, गया 'पूर्व कें देश' । म्हा०
 'समेत निखर' 'पावापुरी' जी राज, कीनी जात्र अरोर म्हााराजि०
 चौमामो कीनी तिहा जी राज, 'अजीमगज' मझार म्हा०
 भव्य जन कु प्रतिनोधनाजी राज मोहो जे नगर अर म्हााराजि०
 आचरज पद शोभता जो राज, छतीम गुण अभिराम । म्हा०
 सुमत पाच कु पालना जी राज, तीन गुपतिका धाम म्हााराजि०
 उ काय का पीहर मलाजी राज, सात महाभय वार । म्हा०
 आठ प्रमाद महात्रलो जी राज, दूर क्रिया सुविचार । म्हााराजि०
 आवक 'वीकानर' का जो राज, वीनति करै वारो वार । म्हा ।
 पूज जी इहा प्यारिये जी राज, महर करी गणधार । म्हा ॥ जि० ७ ॥
 'वच्छावत' कुल दीपताजी राज, 'रूपचद' जी की नद । म्हा० ।
 'नेसर' कृत्ते ऊपनाजी राज, राज करो ध्रुव चद । म्हा ॥ जि० ८ ॥
 वरस 'अठार पचास' में जी राज, 'चद वैसार' मझार । म्हा० ।
 'चारित्र नदन' वीनवइ जी राज, 'आठम' तिथि 'गुरार' म्हााराजि० ९ ॥

(२)

ढालः-म्हाराँ सद्दियां हो अमर वधावो गज भोतियां०

म्हारा पूजजी हो, श्री 'जिनचन्द्र सूरि' राजिया. स्वस्तर गच्छराभाण ।

म्हारा पूजजी हो, दिन दिन तुम चढती कला, प्रतपोजी कोडि कल्याण

श्री 'जिनचन्द्र' सूरि पटवरू ॥ आकणी ॥१॥

म्हां० धन धन धन वेला चडी, धन भायत सुप्रमाण ।

दरसन सद्रू न निरखरयां. सुणभ्यां सुख नी वाण ॥२॥म्हां॥श्री०॥

म्हां० पूरत्र नै पुण्ये पामियो, श्री सद्रूगुरु नो पाट ।

शील गुणे करि जोभता, वरतावे धर्म वाट ॥३॥म्हां०॥श्री०॥

'ओस वंश' अति दीपतो, 'वच्छावत' वलि गोत्र ।

पिता 'रूपचंद' गुणनिलो, मात 'केसरदे' पुत्र ॥ ४ ॥ म्हं ॥ श्री ॥

म्हां० मरुधर देश सुहामणो, 'गुडा नगर' मझार ।

म्हां० श्री 'जिनलाम' सैहथ दियो, सूरि मंत्र गणवार ॥म्हां०श्री॥५॥

म्हां० संव सकल उत्सव कियो, वरत्यो जय जयकार ।

म्हां० सूहव वधावै गज भोतियां, सजि सजि भोल श्रङ्गार ॥म्हां०॥६॥

म्हां० चंद चंद चढती कला, वखत बिलंद गच्छराज ।

म्हां० गौतम ज्युं गुणनिव सही, प्रतपो अविचल राज ॥म्हां०श्री॥७॥

म्हां० वाणि सुधारस वरसता, हरखै भवि जन भोर ।

म्हां० धर्मगुरु दै धर्म देसना, नासै करम कठोर ॥म्हां०॥श्री०॥८॥

म्हां० वर्तमान गुरु विचरता, 'श्री जिनचन्द्र सूरीश' ।

म्हां० दर्शन देखण अलजयो, पूरो मनह जगीश ॥म्हां०॥श्री०॥९॥

म्हा० 'सिन्धु दश' मे दीपतौ, 'हाला नगर' निमेव ।
 म्हा० शुद्ध मन आवक आविका दय सुगुरु करै सेव ॥म्हा०॥श्री०१०
 म्हा० धन धन ग्राम नगर जिके, जिहा निचरै गच्छराण ।
 म्हा० धन आवक ने आविका, श्री मुत्र सभलै वाण ॥म्हा०श्री०११
 म्हा० अम्ह मन हरत घणो अछै सदगुरु सुगना वाण ।
 म्हा० साधु समक्षे परिवया, आवो श्री गच्छराण ॥म्हा०॥श्री०१२॥
 म्हा० श्रीमुख कमल निहारवा, अम्ह मन छै बहु आश ।
 म्हा० श्री सदगुरु हिव पूरजो, आवजो चउमास ॥म्हा०॥श्री०१३॥
 वन दिन ते सकलो घडो, मुग्र नी सुणस्या वाण ।
 म्हा० सदगुरु सेवा मारस्या, जीवत जन्म प्रमाण ॥म्हा०॥श्री०१४॥
 म्हा० सयत 'अडार चौतीस' मे, 'मायन' मास भक्षार ।
 म्हा० उत्तमान सदगुरु तणा, गुण ताया निस्तार ॥म्हा०॥१५॥श्री०१५॥
 इम बहुविध वीनति करी, अवधारो गच्छराय ।
 म्हा० "कनकधर्म" कहै वदणा, अवधारो महाराया ॥म्हा०॥१६॥श्री०१६॥



जिनहर्षसूरि गीता

हाल : जाति सोहिलानी

पहिरी पोसाखा सखिया पागुरी रे, सुन्दर सजि मिणगार ।
 गिहआजी गच्छपति आया ढुकड़ारे, देखण हर्ष अपार ॥१॥
 चालो हे सहेली पूजजी नै वादस्या हे, 'ओजिनहर्ष' सूरिन्द्र ।
 चंद पटोधर गच्छ चौरासिया हे, दीपत जेमदिणन्ड ॥२॥चा०॥
 पूज्य सामेलै श्रावक श्राविका हे, हय गय बहु परिवार ।
 सिणभार्या सारा रूडी परै हे, मारग हाट बाजार ॥३॥चा०॥
 कौतुक देखण बहु भेला थया हे, अन्य मती पिण लोक ।
 दर्शन देखत सहु रामी थया हे, रवि दर्शन जिम कोक ॥४॥चा०॥
 चहल घणी 'बीकाणै' रे चोहटै हे, लोक मिल्या लख कोड़ ।
 अंग ऊमाहो पूजजी नै वांदिवा हे, लाग रखो मन कोड़ ॥५॥चा०॥
 उत्सव देखी मन हर्षित थयो हे, रथव्यां च्योतरणिंद (?)
 शास्त्र यथोक्त गुणेकर ओल्लथारे, एतो धरम नरेन्द्र ॥६॥चा०॥
 'बोहरा' गोत्र जगतमे दीपता हे, सेठ 'तिलोक चन्द' धन्न ।
 धन माताये 'तारादे' जनमियारे, अनुपम पुत्र रतन्न ॥७॥चा०॥
 भावे बधावो भाणक मोतियां हे, दे दे प्रदिक्षण तीन ।
 बारे आवत्त पूजजीने वांदिणा हे, क्रोधादक होय छीन ॥८॥चा०॥
 पूज पधारो 'बीकाणै' रे पूठिये हे, बाचो सूत्र वखाण ।
 भाव बधारो..... हे ज्युं होय परम कल्याण ॥९॥चा०॥
 वादो देव 'बीकाणै' दीपता हे, पूजो चिन्तामणि पाय ।
 आदीसर बावो नित भेटिये हे, ज्युं तृषणा दूर नसाय ॥१०॥चा०॥
 सज्जन बधज्यो पूज पधारता हे, दुर्जन होवो रे विध्वंस ।
 राज करो पूज ध्रू ल्हा शाब्बतो हे, विनवै 'महिमाहंस' ॥११॥चा०॥

ऐतिहासिक जैन काव्य सभ्रह



श्री जिनदत्त स्मृतिजी

(बाबू विजय मिहजी नाहरके मौज यत्ते)

श्रीजिन सौभाग्यसूरि भास ।



६।७—बोडी तो आइ थारा दममे एहनी दशी

‘करणा द’ कृत्ते ऊपना, सदगुरुजी पिता ‘करमचद’ (वि)र यात हो ।

गच्छ नायक ‘सौभाग्यसूरि’ हो सदगुरुजी ।आ० ॥१॥

श्री‘जिनहर्ष’ पाटोधर सदगुरुजी, श्री‘जिनसौभाग्य’ सूर हो॥ग०॥ग०

चीठी धातण चालीया सदगुरुजी, ये वचना रा सूर हो ॥ग०॥३॥

उया तो कूड कपट कियो सदगुरुजी,थे कूडकपट सु हुवा दूर हो॥ग०४

‘वीकानेर’ पधारज्यो सदगुरुजी, यामू कौल कियो ‘रतनश’हो॥ग०५

थाका पुण्य थाके रतनै सदगुरुजी, पुण्य प्रनल जग माह हो॥ग०॥६॥

‘वीकानेर’ पधारिया सदगुरुजी, वासु एकात कियो ‘रतनश’ हो॥ग० ७

भलाड विराजो पाटियै सदगुरुजी, थे भ्रारा गुरुदव हो ॥ग०॥८॥

तप्तत दियो गुरु वचन थी सदगुरुजी, श्रीसघ मिल रतनश’ हो॥ग० ९

नोनतपाना वाजिया सदगुरुजी, वाज्या मङ्गल तूर हो ॥ग०॥१०॥

गोत्र ‘सजानची’ दीपता सदगुरुजी, ‘लालचद’ बुधवान हो॥ग०॥११॥

महोच्चन कीनो अति भञ्जे सदगुरुजी,दीनो अढलक दान हो॥ग०१२॥

कोड वरस लगै पालज्यो सदगुरुजी, वड सरतर गच्छ राज हो॥ग०१३

कोठारी’ वश दीपावज्यो सदगुरुजी, ज्या लग सूरज चद हो ॥ग१४

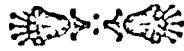
वीजानै वादा नहों सदगुरुजी, थे भ्रारा गच्छराज हो ॥ग०॥१५॥

सवत् ‘अठारै वाणवे’ सदगुरुजी, ‘सुदमातम’ गुरार’ हो॥ग०॥१६॥

‘मिगसर’ पाट विराजिया सदगुरुजी, सूव थया गहगाट हो॥ग०॥१७॥

॥ इति श्री भास सम्पूर्णम् ॥

श्रीजिन महेन्द्रसूरे भास ।



(१)

ढालं आज नो हजारी ढालो पाहुणो ।

वारि जाऊं पूज म्हारी वीनति, सुणजो अधिके चाव । सुगुरु म्हारा हो ।

म्हा दिश थे करज्यो मया, धरो पन्न सकोमल पाव ॥सु०॥१॥

पूजजी पधारो म्हारा देजमे ।

लायज्योजी मुनिवर लाजरा, सूरतवत सज्योत

घण जाणीता गुण घणा, दिल रजण घे स्योत ॥सु०॥२॥

वादल तंबू चंपा वागमें, म्हेतो खडा किया इण खात ।सु०

धूप पडै धरती तपै, गच्छपति गोरै गात ॥सु०॥३॥

राज सभामे राजता, नित नित चढते नूर ।सु०

गावै यश याचक घणा, हिन्दूपति आप हजूर ॥सु०॥४॥

लिख 'परवानो' मोकलै, थानै 'उदयापुर' नौ 'राण' ।सु०

कई दिनां रौ कोड़ छै म्हानै, भेटण 'खरतर' भाण ॥सु०॥५॥

हाथीडा तो मेलुं राणे रावरा, ओठोडा सज सिणगार ।सु०

पग पग मेलुं पूजजीने णलखी, पग पग रथ असवार ॥सु०॥६॥

मोह्य रेयाजी 'मरुधर' मेड़तं, अधिका गढ़ 'अम्बेर' ।सु०

'बीकाणे'री आइ पूजजी नै वीनति, झाला दे 'जेसलमेर' ॥सु०॥७॥

लुल लुल लेसा थारा वारणा, थारे पग पग करता पेश ।सु०

एकरस्युं म्हारै आइज्यो थेतो, देखोनी 'जोधणे' रो देश ॥सु०॥८॥

पाटोघर पाव पधारिया, सूरीश्वर मिरताज ।सु०
 गहरो गुमानी ज्ञानी गच्छपति, म्हारो मानी अरज महाराजा।सु०६॥
 जालम 'सरतर' राजवी गुरु, साचो गच्छ सिणगार ।सु०
 भलके हे सहिया चपो भान्मे, म तो टीठो अजव दीदार ॥सु०॥१०॥
 सूरज गच्छ चौरासिया, थानै भलाइ कहै वड भाग ।सु०
 आज सवार अभिमानमे, म्हारो रीझयो मन घणो राग ॥सु०॥११॥
 अभीय रसायन आपरो, मीठी घाण मुणिन्द ।सु०
 तपन तपे जिनहर्ष रै, श्री 'जिनमहेन्द्र' सुरिन्द ॥सु०॥१२॥
 दिलभर दर्शन दर्शनै, सफल करै र सार ।सु०
 'राजकरण' नितराजरे, पाय लागै हर्ष अपार ॥सु०॥१३॥

(२)

आज बघाई आवियो म्हार, मारु दग मझार हो राज ।
 दीधी बघाई दोडनै म्हार, पूजजी आप पवारो हो राज ॥
 आज बघाओ हे सखी, गहरो गच्छपति गज मोतीडे हो राजा॥१ आ०
 भागी दू वधावणी तोने, पथोडा लार पसाव हो राज ।
 बले सघ जोता वाटडी, ये तो आवी आज सुणाय हो राजा॥२॥अ०॥
 घण थट हरिया वागमे एतो भलहलीयो जग भाण हो राज ।
 आवो हे सहेली आपे निरसस्या, एतो सरतरगच्छरो राणहो राजा॥३आ०
 धवल मङ्गल करण ढोलमे ऐतो जगी ढोल धुराया हो राज ॥आ०॥४॥

पुर पैसारे पधारिया, एतो पूजजी पौपध शाला हो राज ।
 गहमाती अति वणी आतो, कूहक रही करनाल हो राज ॥आ०१५॥
 भाभल भोली भामणी, एतो गौराङ्गी चढो गोख हो राज ।
 दर्शन सद्गुरु देखवा, एतो झाख रहीय झरोख हो राज ॥आ०१६॥
 भांभल नैणा भालीयो, एतो गच्छपति गुण रो गाढो हो राज ।
 पालै चारित निर्मलो, एतो लाइक चौरास्या रो लाडो हो राजा ॥आ०१७॥
 रतिपति रूपे रीझिया, एतो नरनारी ना थाट हो राज ।
 शील शिरोमणि सेहरो, प्रतपो जिनहर्ष पाट हो राज ॥आ०१८॥
 'सुन्दरा' देवी जन्मियो, लाखीणो नग लाल हो राज ।
 सुत 'रुधनाथ' शाहरौ, गाहे दौयण गज ढाल हो राज ॥आ०१९॥
 रहणी करणी राजरी, आतो म्हारे मनडे मानी हो राज ।
 खीर सायर भारी क्षमा, एतो गौतम जेहड़ा ज्ञानी हो राज ॥आ०२०॥
 चिरजीवो राजस करो, ओ'जिनमहेन्द्र' सूरिन्द्र हो राज ।
 'राज'सदाइ राजनै, एतो इसडी दै आशीस हो राज ॥आ०२१॥
 ॥ इति भास सम्पूर्णम् ।



महोपाध्याय राजसोमाष्टकम्

श्रेयस्कारि सता यदाशु चरित, सामोदमाकर्णित ।

कर्माभ्या सतत मत मतिभृता, मद्भूत भाजान्वितम् ॥

निभ्राणास्तदनन्त काति कलिता कारुण्य लीलाश्रिता ।

श्रीमत्पाठक राजसोमगुरवन्त सतु मोदप्रता ॥१॥

येषा चार मुलोद्गता सुललिता वाचो निभ्योल्लम-

द्रूप वीक्ष्य पुन प्रमोद जनक लावण्य लीलागृहम् ॥

रातानन्द पदनकन मनसा स्वस्य श्रुतीना दशा-

मपदानाच विनिर्मित फल युता मेन ध्रुव शाश्वत ॥२॥

चित्त सर्व सुपत्रणामपि धिराद्वाचस्पतर्भाषित ।

माधुर्येण तिरञ्चकार सहसा नादीन्व यद्वच ॥

शास्त्रासक्तयिया सदैव मुधिया चेतश्चमत्कारकृत् ।

दुर्वादि द्विरदौष दर्प दलन शार्दूल विक्रीडितम् ॥३॥शा० उडा॥

प्राप्त प्रनोपोदयमकगर्भित ? चद्र दधञ्चार तयैकमभ्यरम् ।

आमोद सनेह भनारत मत चैतन्य भाजा विननोति चेतसि

(यदित्तित्तेष) ॥४॥

समाव्यत तन्मधुर निराश्रय नित्योन्ध तद्विद्वृतय विराजन ।

श्रीराजसोमोत्तम नाम विश्रुत यत्रास्पदे किं खलु तस्य वर्गनम् ॥५॥

वत् समभानयवानवद्यता वीक्ष्यानुरक्तैरिव पेशलैर्गुणै ।

हित्वामिथो द्वेषमलकृत स्थितीन् योगीन्द्र वशाहितलक्षणान्युरन् ॥६॥

इन्द्रवरिवृत्तम् ॥

विशद गुण निधानं साधुवर्ग प्रधानं ।

कृत कुमत पिधानं सत्कृतौ सावधानम् ॥

धृतिरुचिर विधानं, सर्व विद्या दधानं ।

गुरुमनघ विधानं प्राप्यतं सन्निधानम् ॥७॥

पद्मबंध ॥

प्रणमत गुरुभक्त्या भक्तलोका विशुद्धै-

रति निभृत यशोभिः शोभमानं विमानम् ॥

विजित निखिल लोकोद्दाम कामस्य जेतुः ।

स्फुट शुभ मति माला मालिनी यस्य वृत्तिः ॥८॥युग्मां॥

मालिनीवृत्तम् ॥

इत्थं श्रीराजसोमाल्या महोपपद पाठकाः ।

संस्तुताः संतु चिदान क्षमाःकल्याणकाक्षिणाम् ॥९॥

इति विद्यागुरुणामष्टकम् । पं० रायचंद्रजिदूर्हर्षचंद्र जित्कृतेऽष्टक-
मिदं लिखितं पं० खुस्यालचंद्रेण (पत्र १ महिमा० वं० नं० ७४)



वाचनाचार्य-अमृत धर्मष्टिकम् ।



श्रीवाचनाचार्यपद प्रतिष्ठा गणीश्वरा भृगुगुणैर्गरिष्ठा ।
 सत्य प्रतिज्ञामृतधर्म सना जयन्तु त सद्गुरवो गुणत्रा ॥ १ ॥
 गणाधिप ओजिनभक्तिमूरि, प्रणय सघात सुविश्रुतानाम् ।
 येषा जनि श्रीमति वृद्धगाले उक्तेन वशेऽजनि कब्धेरो ॥ २ ॥
 भट्टारक श्री जितलाम सूर्य श्रीयुक्त प्रीत्यादिम सागराश्च ये ।
 आसन् सतीर्था िल तद्विनयतामत्राप्य यै प्राप्तमनिदित पदम् ॥३॥
 शत्रुजयागुत्तम तीर्थयात्रया मिद्धतयोगोद्धहनेन हारिणा ।
 सवेग रगाहन चेतमा पुन पवित्रित यनिजजन्म जीवनम् ॥ ४ ॥
 जिनन्द्र चैत्य प्रकरो मनोरमो वरण्य हम्न कलौर्विराजित ।
 व्यधापि(यि?) सघेन च पूर्ण मडले येषा हितेनामुपदेशत स्फुटम् ॥५॥
 प्रभूतजतून् प्रतिरोध्य ये पुन नगंगता जेसलमरुसत्पुर ।
 समाधिना चद्र शराष्टभूमित सवत्सर माव सिताष्टमी तिथौ ॥ ६ ॥
 स्थानाङ्ग स्रोक्त वचोनुसाराद्विज्ञायत देवगतिरतुयेषाम् ।
 यतो मृत्तोदात्म विनिर्गामोभूत्साक्षात्तु विज्ञानभृतो विदति ॥ ७ ॥
 एव विद्या श्रीगुरव सुनिर्भर कृपापरा सर्वजनेषु साम्प्रतम् ।
 क्षमादि नत्याण गणि प्रति स्वय प्रमोदकूद्राङ्ग ददतु स्वदर्शनम् ॥८॥
 इति श्रीमदमृतधर्म गुरुणामष्टिकम् ।



उपाध्याय क्षमा कल्याणोष्टकम् ।

०८२०५५५५

(१)

चिदप्येः पारजः स्फुरदमल पङ्के मह मुक्तो,

मुदानन्त ध्यात्री मुनि गणवरो मारगमनः ।

सदा सिद्धातार्थं प्रकटन परो वाक्पति समः,

क्षमाकल्याणोऽसौ नयनमृतिगाभी भवतु मे ॥१॥

गुरो तत्रांघ्रिदर्शनं मदीय मानसे मुदे ।

भवेद्यथैव केकिता गिरौ पयोद लोकनम् ॥२॥

महोक्तायदीयगां निपीय कर्णं संपुटेः ।

भवन्ति मोदसंयुताः जनाः सुवार्म्म भागिनः ॥३॥

तपः पुंज युजोऽजस्रं ध्यानं संमग्न चेतसः ।

क्षमाकल्याण सन्ताम्नो गुरुत्वन्दे गुरुद्युतीन् ॥४॥

गुरुं ज्ञानप्रदं नौमि सद्धर्माचार चंचुरं ।

यदक्षि करुणा दृष्टैः पूतोऽवर्मा भवत्वरं ॥५॥

विरामं विपदा शश्वत्स्मरतां भूमि मण्डले ।

वन्दारु नर मन्दारमुपासे गुरु पत्कजं ॥६॥

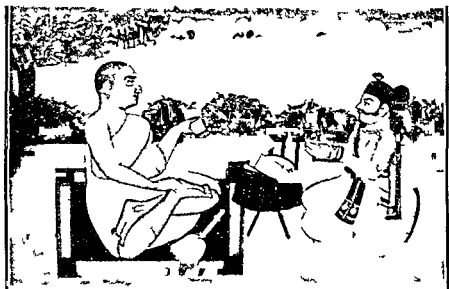
मोह मास्थत्सदा सेव्योहृद्वाक् संहतनैर्मया ।

योयं गाथेयं वर्णामः सौजन्याद् वनौचिरं ॥७॥

काम मोह राग रोष दुष्ट दाव वारिदस्थः ।

दर्शनं जनावहारि अस्तुमे सुपाठकस्य ॥८॥

ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह



उपाध्याय क्षमाकल्याणजी

(श्रीहरिसागरसूरिजीकी कृपासे प्राप्त)

यद्वाणी सुदमातनोति कृतिना, पूतात्मना नित्यरा ।

सद्वीजवृक्षरूपिन सुरसरिन्नीराजुना सन्तत ॥

योगारूढ मुनीन्द्र मानस सरो वास विधाय स्थिता ।

ता पीत्वा जलदाभ्यु चातक इवहन्मे यथाहप्यति ॥६॥

✽ परलोक गताना श्री गुरूणा स्तवः ✽

(२)

सर्वं शास्त्रार्थं वक्तृणा, गुरूणा गुरु तेजसाम् ।

क्षमा कल्याण साधूना, विरहोमे समागत ॥१॥

तेनाहं तु सिनोजडस्य विचरामि महीतम् ।

सस्मृत्य तद्गिरोगुर्वी, धैर्य्यं मादाय सस्थित ॥२॥

वीकानर पुर रम्ये, चातुर्वर्ग्यं विभूषित ।

क्षमाकल्याण विद्वांसो, ज्ञान दीप्रास्तपसिन ॥३॥

अग्न्यद्रि करि भू वर्षे, (१८७३) पौष मासादिमे दलेः ।

चतुर्दशो दिन प्राते सुरलोकं गतिगता ॥४॥युग्म ॥

वन्देह श्रीगुरुन्नित्यं भक्ति नम्रेण वर्ष्मणा ।

मदुपकार कृता श्रेण्य स्मर्यन्ते सतत मया ॥५॥

गृह पवित्री कुस्मे दयालो, गुरो सदापाद सरोजन्यासै ।

लुनोहि जाड्य मनसिस्थित वै, सस्कारवत्या च गिरा सदात्व

श्री स्तात् सता सदा ॥६॥

स्वैयं स्वस्वचन्द्रो कथो

उपाध्याय जयभाणिक्यजीरो छंद

दोहा

सरस सवुध दिव्ये शारदा, सुंडाला सप्रसाह(द?) ।

गुण गाउं 'धमडो' जती, बुध समपो वरदाह ॥ १ ॥

चैत्य प्रसाद चिणाविया, कर जिण इधका कोड ।

चहुं कूटा लग नाम चढ, हुवे न किण सुं होड ॥ २ ॥

जैन धरम धारया जुगत, साझण भील सचाह ।

'हरखचंद' पाट 'जीवण जी' हुवा, सिव सहु करै सराह । ३ ।

खरतर वंश ओपम खरा, वाचे सकत्र वखाण ।

पण धारी 'जीवणदास' पट, साचो 'धमंड' सुप्रमाण ॥ ४ ॥

॥ छंद जाति रोभकंद ॥

पण धारीय 'जीवणदास' लणे पट, थाट घणे 'धमडेश' जती ।

सरसत सकत उकत समापण, नीत पत दीयण सुमत नीती ॥

जस वाणं सचाण सचाण सहवाचै, परदेश प्रवेश कीरत केती ।

नर नार उच्छाव करै ब्हो नारद, वारद ज्युं इधकार भती ॥ ५ ॥

संवत् 'अठार वरस पचीस ही'. मास 'वैशाख सुद छठ' भीती ।

परवाण वाखाण पतठ्ठा ही पुरत', पेख रहे दस देस पती ॥

नीरख परख करै बहु नाईक, वाइक पढै कवराव बती ॥ ६ ॥

पूजा अरचा मड पाट पटनर, राजत झालर सस प्रती ।
 परानी ऐम न कोई पयपै, न्यात कहै धन धन नीती ॥
 उडवा रस कोसै सार वगवाणों, जम जोर हुवोचहु कुट जेती ॥५०॥
 कर कोड सहोड करै कर कोरत, ध्यान धरै को न्यान धरती ।
 दीयै दान घणा मनमान सदताही, पुज जणेसुर पाइ वती ॥
 इधकार करै जीणवार सुजाणे, आणन कोइण इड इती ॥ ५० ॥

॥ कवित्त ॥

रुनर गच्छ जस सटण, पाट उजवाल वडै प्रण(ण?) ।
 'हरसचद' हरा हेत, वरा 'जीणण' जी वाटण ॥
 'सुन्दरदास' मपूत, जे 'वस्तपाल' वसाणु ।
 'दीपचद' दरियाय ओपमा 'अरजन' जाणु ॥
 'जीवणादास' पुठ सटण सुजेस, वड जाया जिम पिन्तरी ।
 परवार पुत 'धमडेण' रो, रवि जितरी अविचल रहो ॥१॥
 ॥ श्री ॥ ३० ॥ श्री जयमाणिक्य जीरो ए कवित्त छै ॥

॥ जैन न्याय ग्रन्थ पठन सम्बन्धी सचैथा ॥

स्याद ज्ञानं नै (जय?) पनाका 'नयचक्र' नै (नय?) रहस्य'
 'पचअस्तिका य' 'रत्नआकरान्तारिका' ।
 क ठन 'प्रमेय कोल मारतड' 'सम्मति' सु,
 'अष्टसहस्री' वादि गजकी विदारिका ।
 'न्याय कुसुमाञ्जलि' जु 'तरकरहस्यदीपो(का)',
 'स्यादवाद-मजरी' विचार युक्ति वारिका ।
 उइ 'किरणावली' से तर्क शास्त्र जैन माझि,
 कहा नैयायिकादि पढो शास्त्र पारका ॥१॥

❀ ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह ❀

द्वितीय विभाग

(खरतरगच्छको ज्ञाखाओं सम्वन्धी ऐतिहासिक काव्य)

वेगड खरतरगच्छ गुर्वावली

पणामिय त्रीर जिणंद चंद, कय सुकय पवेसो ।

खरतर सुरतरु गच्छ स्वच्छ, गणहर पभणसो ।

तसु पय पंकय भमर सम, रसजि गोयम गणहर ।

तिणि अनुक्रमि सिरि नेमिचंद मुणि, मुणिगुण मुणिहर ॥ १ ॥

सिरि 'अद्योतन' 'वर्द्धमान', सिरि सूरि 'जिणेसर' ।

थंभणपुर सिरि 'अभयदेव', पयडिय परमेसर ।

'जिणवल्लह' 'जिनदत्त' सूरि, 'जिणचंद' मुणीसर ।

'जिणपति' सूरि पसाय वास, पहु सूरि 'जिणेसर' ॥ २ ॥

भवभय भंजण 'जिणप्रबोध', सूरिहि सुपसंसिय ।

आगम छंद प्रमाण जाण, तप तेउ दिवायर ।

सिरि 'जिन कुशल' मुणिद चंद, धीरिम गुण सायर ॥ ३ ॥

भाव(ठ) भंजण कप्प रुक्ख, 'जिन पद्म' मुणीसर ।

सब सिद्धि बुद्धि समिद्धि वृद्धि, 'जिणलद्धि' जइसर ।

पाप ताप संताप ताप, मलयानिल आगर ।

सूरि शिरोमणि राजहंस, 'जिणचंद' गुणागर ॥ ४ ॥

बोहिय त्रायक लाय नाय, सिव मुख सुख दायक ।

महियलि महिभामाण जाण तोल्इ नहु नायक ।

‘झझण’ पुत्त पवित्र चित्त, कि तिहिं कलि गजण ।

सूरि जिणेसर’ सूरि राउ, राउह मण रजण ॥ ५ ॥

‘भीम’ नरेसर राज काज, भाजन अड बुदर ।

वगड नदन चद कुद, जसु महिमा मदर ।

सिरि ‘जिनोत्तर सूरि’ भूरि, पइ नमड नरेसर ।

काम कोह अरि भग सग जगम अलपेसर ॥ ६ ॥

सपइ नयनिध प्रिहित हतु, विहरइ मुहि मडलि ।

थापइ जिणवर वम्म कम्म, जुत्तउ मुणि मडलि ।

जा गगगगणि ‘चद सूरि’, प्रतपड चिर काल ।

ता लग सिरि ‘जिणधम्म सूरि’, नदउ सुविशाल ॥ ७ ॥



॥ श्री जिनेश्वर सूरि गीत ॥

• : - - - - •

सूरि निरोमणि गुण निलो, गुरु गोयम अवतार हो ।

सद्गुरु तुं कलिधुग सुरतरु समो, वांछिन पूरणहार हो ॥ १ ॥

मद्गुरु पूर मनोरथ संघना, आपो आणंद पूर हो । सढ० ।

विघन निवारो वेगला, चित विंता चक्रपूर हो ॥ सढ० ॥ २ ॥

तुं 'वेगड' विरुदे वडो, 'छाजहडा' कुल छात्र हो ।

गच्छ खरतर नो राजियो, तुं सिंगड वर गात्र हो ॥सढ०॥३॥

मद् चूर्यो 'मालू' तणो, गुरु नो लीयो पाट हो ।

सम वरण । लोधो सहु, दुरजन गया दह वाट हो ॥सढ०॥४॥

आराधी आणंद मुं, वागही त्रि राय हो ।

धरणेन्द्र पिण परगट कियो, प्रगटी अति महिमाय हो ॥सढ०॥५॥

परनो पूर्यो 'खान' नो, 'अणहिल वाडड' माहि हो ।

महाजन वंद मुकावीयो, मेल्यो संघ उछाह हो ॥सढ०॥६॥

'राजनगर' नई पांगुर्या, प्रतिबोध्यो 'महमद' हो ।

पद ठवणो परगट कियो, दुख दुरजन गया रद हो ॥सढ०॥७॥

सिंगड सीग वधारिया, अति ऊंचा असमान हो ।

धोंगड भाइ पाचसई, घोडा दीधा दान हो ॥सढ०॥८॥

सवा कोटि धन खरचीयो, हरख्यो 'महमद शाह' हो ।

विरुद दियो वेगड तणो, प्रगट थयो जग माहि हो ॥सढ०॥९॥

गुरु आ (मा?) वरु बहु वेगडा, बलि वगड पतिगाह हो ।

बिस्- धना गुरु ताहरो, तुझ सम बड कुण थाय हो ॥सन्०॥१०

श्री 'साचअ' पयारीया, मु (पु)इत्ता गच्छ उठरग हो ।

वगड 'धूलग' गोत्र व, माहो माहि सुरग हो ॥सन्०॥११॥

'राडरही' वी आनीया, 'लसममीह' मत्रीम हो ।

सघ सहित गुरु वनीया पट्टनी मनह जमीम हो ॥सन्०॥१२॥

'भरम' पुत्र त्रिहरानीयो, रानग कुल नी रीत हो ।

चार चौमासा रानोना, पाली धम नी प्रीत हो ॥सन्०॥१३॥

सन्त 'चउ प्रीमा' समे, गुरु सवारो कीध हो ।

सरग थयो 'सकनीपुरै', वगड धन जस लीध हो ॥सन्०॥१४॥

पाट थाप्यो 'भरम' नें, कर अधिको गद्ग्याट हो ।

धूम मढाव्यो ताहिरो, जा 'जोमा(धा?)ण' री वाट हो ॥सन्०॥१५॥

लोक रलक आन घणा, दादा तुझ दीवाण हो० ।

जे जे आन्या चितवरे, त त चढस त्रमाण हो ॥सन्०॥१६॥

पट पुत्री उपर दियो, 'तिलो+सी' नड पुत्र हो ।

पूर्यो परतो मन तणो, रान्यो घर नो सूत्र हो ॥सन्०॥१७॥

नू 'झाझग' सुत गुण नितो, 'झनकु' मात मल्हार हो ।

'जिणचट्ट' सूरि पाटइ तिनकर, गच्छ वगड मिणगार हो ॥सन्०॥१८॥

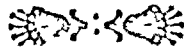
म(ह)गुरु 'जिणेमर सूरजी', अरज एक अवधार हो ।

सन्गु उदय करज्यो सघ मइ, नहु धन सुत परिवार हो ॥सन्०॥१९॥

'पोस सुटि तरस' नइ तिनर यात्रा कीधी उदार हो ।

श्री 'जिनसमुद्र' मूरिद नड, करज्यो जयजयकार हो ॥सन्०॥२०॥

॥ श्री जिनचंद्र सूरि गीत ॥



राग:- धारु

आज फल्यो म्हारडं आवलोरे, परतख सुरतके जाण ।

कासवेनु आवी घरे रे, आज भले सुविहाण । पधार्या पूज्यजी रे
श्री 'जिनचंद्र सूरिंद' पधार्या पूज्यजी रे ।

श्री चंद्र कुलावर चंद्र पधार्या, श्री खरतर गच्छ नरिंद । पू० ॥ १॥
श्री वेगड गच्छ इंद्र पधार्या पूज्यजी रे ।

ढोल दमामा वाजीया रे, वाज्या भेर निसाण ।

सुमति जन हरपित थया रे, कुमति पड्यो भंडाण ॥ प० ॥ २॥
घरि घरि गूडी ऊळळ रे, तलीया तोरण वार ।

पाखडी कांनई कीया रे, वेगड गच्छ जयकार । गच्छ खरतरजूरे
सूहव बधावो मोतीयइ रे, भर भर थाल विशाल ।

खोटा कूड कदाप्रही रे, ते नाठा तत्काल ॥ प० ॥ ४ ॥

वडई नगर 'साचोर' मंडं रे, श्री पूज ज्यो भाण ।

तारा ज्युं झाखा थया रे, खोटा अ(उ)र अजाण ॥ प० ॥ ५ ॥
पाटि विराज्या पूज्यजीरे, सुललित वाण (वखाण) ।

अशुद्ध प्ररूपक भयलडा रे, त्याना गलोया माण ॥ प० ॥ ६ ॥
'बाफणा' गोत्र कश्या निलोरे, शाह 'रूपसी' नो नंद ।

“श्री जिन समुद्र” कहइ पूज्यजी रे, प्रतपो ज्युं रविचंद्र । प० ॥ ७ ॥

॥ जिनसमुद्र सूरि गीतम् ॥



ढाल—कडखड, राग गुढ रामगिरि सोरठ अरंगजो

सुधन दिन आज जिन समुद्र सूरिद आयो, सूरिद आयो ।

चढो गच्छराज सिरताज वर बड वलन,

तलन 'सूरत' मइ अति सुधायो ॥ १ ॥

आवीयइ पूज्य आणद हुआ अधिक,

इन्द्रि पिण तुरत दरसन निखायो ।

अशुभ दालद्र तणी दूर आरति टली,

सकल सपत् मिली सुजम पायो ॥ २ ॥

उदय उदयरज तन सकल कीधो उदय,

वान वेगड गछइ अति वधायो ।

जाचका दूदान दीधा भली जुगत सु,

सप्त क्षेत्रे वलि सुवित्त वायो ॥ ३ ॥

सत्रक साब्दो सजे स गुरु निज आणीया,

शाह 'छतराज' मनमड उमायो ।

गेहणी सकल हरपइ करी गह गही,

विप्रिय मणि मोतीया सु वधायो ॥ ४ ॥

पूज पद ठवण संघ पूज पर भावना,

करे निज वंश 'छाजहड' सुभायो ।

गंग गुण दत्त राजड जिसा कृत करी,

चंद लग सुजस नामो चढायो ॥ ५ ॥ सु० ॥

छहा वरणा दीयइं दान दानी छतो, कलियुगइ करण साचो कहायो ।

सगुरु 'जिनसमुद्र सूरिद' गौतम जिसौ,

धरमवंतइ खरइं चित ध्यायो ॥ ६ ॥

चतुर जिण चतुर विध संघ पहिरावीया,

जगात्र मइं सुजस पढहो वजायो ।

मूल धर्म मूल पख चित मइं धारता,

जैन शासन तणो जय जगायो ॥ ७ ॥

गुरे 'जिनसमुद्र सूरिद' साचो गुरु,

शाह 'छत्रराज' सेठइ सवायो ।

विहो वड शाख ध्रौ जेम वाधो सदा,

गुणीय "माइदास" इम सुजस गायो ॥ ८ ॥ सु० ॥



खरतरगच्छ पिप्पलक गाखा

॥ गुरु पदावली चउपइ ॥



समर सरसनि गौतम पात्र, प्रणमु सहिगुरु खरतर राय ।

जसु नामइ होयइ सपदा, समरता नाइ आपदा ॥ १ ॥

पहिला प्रणमु 'उजोतन' सूरि, वीजा वहमान' पुन्य पूरि ।

करि उपवास आराहि दवी, सूरि मत्र आप्यो तसु हवि ॥२॥

वहिरमाण 'श्रीमवर' स्वामि, सोधावि आव्यउ शिर नामि ।

गौतम प्रतइ वीर उपादिस्वउ, सूरि मत्र सुधउ जिन पधउ ॥३॥

श्री 'सोमवर' कहइ दवता, धुरि जिन नाम देज्यो थापता ।

नाम पट्टि 'जिनवर सूरि', नामइ दुख वली जाइ दूरि ॥४॥

'पाटण' नयर 'दुल्लभ राय यदा वाढ हूओ महपति स्यु तदा ।

समन 'दस अमीयइ' वली, खरतर विरद दीयइ मनिरली ॥५॥

चउथइ पट्टि 'जिनचद सूरिद', 'अभयदव' पचमइ मुणिद ।

नवगि वृत्ति पास थभणउ, प्रगटयउ रोग गयु तनु तणउ ॥६॥

श्री 'जिनवल्लभ' छट्टइ जाणी, क्रियावत गुण अधिक वलागी ।

श्री 'जिनदत्त सूरि' सातमउ, चोसठि योगणी जसु पय नमइ ॥७॥

वावन वीर नत्ती वलि पच, माणभद्र स्यु थापी सच ।

व्यनर वीज मनावी आण थूम 'अजमेर' सोहइ जिम भाण ॥८॥

श्री 'जिनचद्र सूरि' आठमइ, नरमणि धारक 'दिली' तपइ ।

तास जीम 'जिनपति' सूरिद, नवमइ पट्टि नमु सुखकद ॥९॥

'जिनप्रोध 'जिनजर सूरि', श्री जिनचद्र सूरि' यश पूरि ।

वदु श्री 'जिनपुराल' मुणिद, कामकुभ सुरतरु मणिकद ॥१०॥

शाह लाधा कृत

श्री जिन शिवचंद सूरि रास

(रचना सवत १७६५ आश्विन शुद्ध पचमी, राजनगर)

दूहः :-

शासन नायक समरोये, श्री 'वर्द्धमान' जिनचंद ।

प्रणमु तहना पद युगल, जिम लहु परिमाणद ॥ १ ॥

'गौतम' प्रमुख जे मुनिवरा, श्री (मोहम) गणराय ।

'जनू' 'प्रभया' प्रमुखने, प्रणमता मुग्न थाय ॥ २ ॥

श्री वीर पटोधर परमगुरु, युगप्रधान मुनिराय ।

यानत 'दुपसह सूरु' लगे प्रणमु तहना पाय ॥ ३ ॥

तास परपर जाणीये, सुविहित गच्छ सिरदार ।

'जिनदत्त' ने 'जिनकुराल' जी, सूरि हुवा सुखकार ॥ ४ ॥

तस पद अनुक्रमे जाणीये, 'जिन वर्द्धमान सूरिद' ।

'जिन धर्म सूरु' पाटोधरु, 'जिनचंद सूरु' मुण्डि ॥ ५ ॥

'शिवचंद सूरि' जागीये, देश प्रदेश (पाठा० प्रसिद्ध) छे नाम ।

सरतरगच्छ सिर सेहरो, सवेगी गुणधाम ॥ ६ ॥

तस गुण गण नी वर्णना, धुर थो उत्पत्ति सार ।

नाम ठाम कही दाखवु, त सुणज्यो नर नारि ॥ ७ ॥

ढाल (१) - श्रेणिक मन अचरज थयो । ए देगी ।

मरुधर देश मनोहर, नगर तिहा 'भिनमालो' रे ।

राजा राज करे तिहां, 'अजित सिंध' भूपालो रे मरु० ॥१॥

गढ़ सढ़ मंदिर शोभता, वन वाड़ी आरामो रे ।

सुखीया लोक वसे तिहा, करे धरमा ना कामो रे ॥मरु०॥२॥

तेह नगर माहे वसे, साह 'पद्मसी' नामो रे ।

'ओश(वाल)वंश'साखा बडी, 'राका' गोत्र अभिरामो रे ॥मरु०॥३॥

तस वरणी 'पद्मा' सती, आविका चतुर मुजाणो रे ।

सुत प्रथव्यो शुभ योग(ति)थी, 'सिवचंद' नाम प्रमाणो रे ॥मरु०॥४॥

कुमर वधे दिन दिन प्रतड, संठजी हृदय विभासे रे ।

पूत्र निसाले मोकलूं, अव्यापक ने पासे रे ॥ मरु० ॥ ५ ॥

भणी गुणी प्रोढा (पाठा० मोटा) थया, बोले मधुरी भापो रे ।

संसारिक सुख भोगना, कुमर ने नहीं अभिलापो रे ॥मरु०॥६॥

इणे अवशर गुरु विचरता, तिणहीज नगरीमें आंव्या रे ।

श्री 'जिनधर्म सूरिंद' जी, आवक जन मन भांव्या रे ॥मरु०॥७॥

पइसारो महोछव करी, नगर माहे पधरावे रे ।

आवक आविका तिहा मिली, गीत ज्ञान गुण गावे रे ॥मरु०॥८॥

धन धन ते दिन आज नो, धन ते वेला जाणो रे ।

जेणे दिन सदगुरु वादीयइ, कीजिये जन्म प्रमाणो रे ॥मरु०॥९॥

दूहा थिर चित जाणी परपदा, गुरुजी दीये उपदेश ।

जीवाजीव स्वरूप ना, भाख्या सकल विशेष ॥ १ ॥

चाणी श्री जिनराज नी मीठी अमीय समाग ।

दीधी सदगुरु देरना, रोइया चतुर सुजाण ॥ २ ॥

आह पदमसो' कुअरे, धर्म सुणी तिणि वार ।

वयरगें चित्त वासीयो, जाणी अथिर समाग ॥ ३ ॥

कुमर कह श्री गुरु प्रत, करजोडी मनोहार ।

दीया आपो मुझ भणी, जारो भयपार ॥ ४ ॥

जिम सुख देवाणुप्रिये, तिम कीजे सुविचार ।

अनुमत छेद कुमरजी, हवे छेसे सयम भार ॥ ५ ॥

ढाल बीजी—जी र जी रे स्वामी समोसर्थां । ए दशीं ।

अनुमति छो मुझ तातजी, लेसु सजम भारो र ।

ए ससार असार मा, सार धरम सुखकारो र । अनु० । १ ।

वचन सुणी निज पुत्र ना, मात पिना दुख पाव र ।

मयम छै वठ दाहिलु, सु होय नाम धरावे र । अनु० । २ ।

अति आग्रह अनुमति दीयड, मात पिता मन पारै र ।

उ छत्र मु प्रत आदर, सघ चतुरविव सारै र । अनु० । ३ ।

सबत 'सतर ग्रहसठे', लीये दीक्षा मन भाव रे ।

'तेर वरस' ना कुमर पणे, नरनारि गुण गावै र । अनु० । ४ ।

मन बच काया वग करो, रगे चारित्र लीयो र ।

पाले प्रत निरमल पणे, मनह मनोरथ सीधो र । अनु० । ५ ।

मामरूप तिहा किण रही, श्री पूज्य कीधो विहारो र ।

गाम नगर प्रतिबोधता, करता भवि उपगारो र । अनु० । ६ ।

कुमर भणे अनि उल्लटै, गुरु पासै मन सारै र ।

ज्ञानानरणी क्षय उपगामे, भणीया सूत्र सिद्धान्तो र । अनु० । ७ ।

व्याकरण नाममाला भण्णा, वलि भण्णा काव्य ना ग्रन्थो रे ।

ज्याय तर्क मवि मोखीया, धरता माधुनो पंथोरे । अनु० । ८ ।
गीतारथ गणधर थया, लायक चतुर मुजाणो रे ।

वयरगं मन भावना, पाले श्री गुरु आणो रे । अनु० । ९ ।
दूहा पाट योग जाणी करी, श्री गुरु करे विचार ।

पद आपुं 'सिवचंद'ने, तो होय जय जयकार ॥ १ ॥
निज समय जाणो करी, श्री गुरु कीध विचार ।

'उदयपुरे' पाठधारीया, उच्छव थया अपार ॥ २ ॥
निज देहे वाधा लही, समय (पाठा० संयमे) थया सावधान ।

अणअण आराधन करी, पास्या देव विमान ॥ ३ ॥
संवत 'सतर छहोत्तरे', 'वेगाख' मास मझार ।

'सुदि सातम' शुभ योगे तिहा, आपुं (प्युं) पद श्रीकार ॥४॥
श्री 'जिनधर्म सूरिंद' ने, पाटे प्रगट्यो भाण ।

श्री 'जिनचंद सूरिइवरू', प्रतपे पुण्य प्रमाण ॥ ५ ॥
हाल ३ नीदलडी वयरण हुइ रही । ए देशी० ।

भावे हो भत्रियण सामलो, 'सिवचंदजी'नो हो (भलो) रास रसालके ।
जे नित गावे भाव सुं, तस वाधे हो घर मंगल मालके ॥ १ ॥

अवशर लाहो लीजिये । आकणी० ।

आवक 'उदयापुर' तणा, पद महोछव हो करवा मन रंग के ।
समय लही निज गुरु तणो, धन खरचे हो धरमे दृढ रंग के । अ०२१
'दोसी भिक्षु'सुत तिणे (समे) करे, वीनति हो कुशल संघ एमके ।
रे हरे श्रीगुरु नो अवसर कीहां, अमो करसुं हो पद महोछव प्रेमकोश ।

सवत 'सतर छीउन', मास 'मान्न हो सुदि सातम' सारक ।
 राणा 'सप्राम' नाराज्य मे, कर उठव हो आवकतिण वार क ।अ०४।
 श्री सघ भगति करे अति भली, बहु विधना हो मोठा पकवानके ।
 शाल दाल घृत घोल सु वली आपे हो बहु फोफउ पानके ।अ०५।
 पहेरामणी मन मोद सु, 'छुराले' 'जीये' हो कीधा गहगाट के ।
 जस लीधो जगमे घणो, सतोपीया हो वली चारण भाट के ।अ०६।
 श्री 'जिनचद' सूरीश्वरू, नित्य दीपे हो जेसो अभिनन सूर के ।
 वयरानी त्यागी घणु, सोभागी हो सज्जन गुणे पूर क । अ० । ७ ।
 तिहा जिप्य 'हीरसागर' कीयो, अति आग्रह हो तिहा रखा चौमासके ।
 श्री गुरु दीये धर्म देशना, सुणना होय हो सुख परम उलासके ।अ०,८
 धरम उजोत थया घणा, करे आनिका हो तप त्रत पचसाण क ।
 सघ भगति परभावना, थया उठन हो लशा परम कल्याण क ।अ०९।

दोहा—चार्तुमास पूरण थये, विहार करे गुरु राय ।

'गुर्जर देश' पाउधारिया, उठन अधिका थाय । १ ।

सवत 'सतर अठोतर' कर्या किना उद्धार ।

वयरानी मन वासीनउ, कीधो गठ परिहार । २ ।

आतम साधन साधता, दता भनि षपन्श ।

करता यात्रा जिणदनी, त्रिचरे दश त्रिदश । ३ ।

जस नामी 'शिवचद' जी, चावु चिहु सड नाम ।

सवगी सिर सेहरो, कीया उत्तम काम । ४ ।

ढाल (४): नगरी अयोध्या थी संचर्या ए देशी ।

गुज्जर देश थी पधारीया ए, यात्र करण मन लाय । मनोरथ सविफल्या ए,

‘शत्रुंजय’ गिरवर भणी ए, भेटवा आदि जिन पाय, मनो० । १ ।

चार मास झाझेरडा ए, रह्या ‘विमल गिर’ पास । मनो० ।

नव्याणु यात्रा करी ए, पोहोती मन तणी आस । मनो० २ ।
तिहा थी ‘गिरनारे’ जड ए, भेटीया नेमि जिणद ।

‘जुनेगढ़’ यात्रा करी ए, सूरी श्री ‘जिनचंद’ । म० । ३ ।
गामाणुगामे विहरता ए, आवीया नगर ‘खंभात’ । म० ।

चोमासुं तिहां किण रह्या ए, यात्रा करी भली भाति । म० ४ ।
चरचा धर्म तणी करे ए, अरचे जिनवर देव । म० ।

समझू श्रावक श्राविका ए, धरम सुणे नित्य मेव । म० ५ ।
तप पचखाण घगा थया ए, उपनो हरप अपार । म० ।

तिहां थी विचरता आवीया ए, ‘अहमदोत्राद’ मझार । म० ६ ।
विस्व प्रतिष्ठा घणी थइ (पाठा० करी) ए, वली थया जैन विहार । म० ।

ते सवि गुरु उपदेश थी ए, समझया बहु नर नारि । म० ७ ।
तिहां थी ‘मारुवाड’ देश मां ए, कीधी ‘अर्बुद’ यात्र । म० ।

‘समेत सिखर’ भणी संचर्या ए, करता निरमल गात्र । म० ८ ।
कल्याणक जिन वीसना ए, वीसे टुंके तेम (पाठा० तास) । म० ।

यात्रा करी मन मोद सुं, वाध्यो अति घणो प्रेम । म० । ९ ।
दोहा ‘समेतसिखर’ नी यातरा, कीधी अधिक उछाह ।

श्री पार्श्वनाथ जिन भेटीया, नगरी ‘वणारसी’ भाह । ११ ।

‘पावापुरी’ मे पाउयारोया, जिहा श्री वीर निर्वाण ।

‘चपापुरी’ माहे वादीया, श्री वासपूज्य जिनभाण । २ ।

‘राजप्रही’ वैभारगिरि, यात्रा करी मघ साथ ।

‘हथीणापुर’ जिन वादीया, शाति कुथु अरनाथ । ३ ।

‘दि(द)ली’ चौमासु रही, करना यात्र विशेष ।

निहार करता पुनरपि, आल्या वली ‘गुर्जर देश’ । ४ ।

ढाल (६):—पाटोघर पाटोये पधारो । ए देशी ।

जिन यात्रा करी गुरु आल्या, आनक श्राविका मन भाल्या ।

पटोघर वादीये गुरुराया, जस प्रणमे राणाराया । प० । १ । आ० ।

‘भगसाली कपूर’ ने पासे, तिहा ‘सिवचद’ जी चौमासे । पटो० ।

जस प्रणमे राणा राया, पटोघर वादीये गुरुराया । आकणी० ।

दजना दीये मधुरी वाणी, सुणता सुल लहै भवि वाणी । पटो० ।

वाचे ‘भगवती’ सूत्र वलागै, समझ्या तिहा जाण सुजाण । प० । २ ।

ज्ञान भगति थड अति सारी, जिन वचन की जाऊ बलिहारी । प० ।

मली श्राविका जिन गुण गात्रे, भरी मोती ण थाल वधावे । प० । ३ ।

गडुली कर गुरुजी ने आगे, शुद्ध वोव वीज फल मागे । प० ।

आनक करे धर्म नी चरचा, जिहा जिन पद नी थाये अरचा । प० । ४ ।

नव कल्प कीधो निहार, शुद्ध धरम तणा दातार । प० ।

ईति उपद्रव दूरें कीधो, ‘सिवचदजी’ ये यश लीधो । प० । ५ ।

पुनरपि मन माहे विचारे करू यात्रा सिद्धाचल सार । प० ।

‘राजनगर’ थी कीधो विहार, करी यात्रा ‘सेत्रुज’ ‘गिरनार’ । प० । ६ ।

तिहा 'जी रखा 'दीवे' चोमासुं, जेठनु धरमे जिन तामुं । प०
 पुनरपि 'विहाचल' आवे, गिर फलिया मन ने भावे । प० । ७ ।
 थई यात्रा जिनेश्वर केरी, गुन गुगति रमणी कीची नेरी । प० ।
 जितगुण निरक्या नित्य हेरी, टाकी भव भ्रमण नी फेरी । प० । ८ ।
 'बोवे' वन्दिर जिन वादी, करो करम तणी गति मंदी । प०
 'भावनगरे' देव जुहार्या, दुख दालिद्र दूरे निवार्या । प० । ९ ।
 दीदा ।

संवन 'सनर चोराणुंये', 'माह' माम सुवकार ।

'भावनगर' थो आवीया, नयर 'खम्भान' संजार ॥ १ ॥

गुरु सुणरागी आवके, दीवो आदर मान ।

गुरुजी दीये धर्म देखता, तात्विक सुवा नमान ॥ २ ॥

ट्रेप करी (पाठा० धरि) कोड दृष्ट नर, रुमति दुर्भवी जेह ।

यवनाधिप आगल जड, दृष्ट वचन जहे तेह ॥ ३ ॥

सुणीय वचन नर मोकल्या, गुरुने तेडी नाम ।

यवन कहे अम आपीये, तुम पासे छे दाम ॥ ४ ॥

दाम अमे राखुं नहीं, राखुं भगवंत नाम ।

कोप्यो यवनाधिप कहे, खींचो एहनी चाम ॥ ५ ॥

पूरव वयर संयोग थी, यवन करे अति जोर ।

ध्यान धरे अरिहंत नुं, न करे मुख थी सोर ॥ ६ ॥

संचित कर्म विपाकना, उदयागत अववार ।

सहे परिसह 'शिवचन्द्रजो', ते सुणजो नरनार ॥ ७ ॥

ढाल (६) : वेवे मुनिवर त्रिहरण पागुर्याजी । एदेशी० ।

'जिनचन्द्र सूरी' मन भाहे चिन्तवेरे, हवे तुं रखे थाय कायर जीवरे ।

एह थी नरग निगोद माह धणीरे, तेंतो वेदन सही सदीवर ॥ १ ॥
 धन धन मुनी सम भावे रखा र, तह नी जइये नित्य बलिहार र ।
 दु कर परीसह जे अहियासने र, तं मुनी पाम्या भव नो पारगाधगा ।
 'सुधग' मुनीना जे शिष्य पाचसैरे, पालक पापीये दीधा दु सर ।
 घाणी धाली मुनीवर पीलीयारे, ते मुनि (पणम्या) अचिचेल सुख र ॥ धन ० ॥ ३ ॥
 'गजसुकुमाल' मुनी महाकालमे रे, स्मसान रहीया काउसगजो ।
 'सोमल समर' शीस प्रजालियोजी, ते मुनि प्रणम्या (पाठा० पाम्या)
 सुख अपवर्ग जो ॥ धन ० ॥ ४ ॥

'सुकोजल' मुनिवर सभारीयेजो, जेहना जीवित जन्म प्रमाण र ।
 चाचणे अग वदार्थु साधुनुजी, परिसह सही पहुता निरवाण हो ॥ धन ० ॥ ५ ॥
 'दमदन्त' राजनरपि काउसग रखाजी, कौरव कटक हणै इटाल जो ।
 परिसह सही शुद्ध ध्यान साधुजी र, त पण मुगत गया ततकाल जो
 ॥ धन ० ॥ ६ ॥
 'सुधग' ऋषिने घाल उनारताजी, कठीन अहोयासे परिमह साधु जो ।
 ते मुनी ध्यानै कर्म सपाधीनजी, पाम्या शिष्यपद सुख निरवाध जो
 ॥ धन ० ॥ ७ ॥

इत्यादिक मुनिवर सभारताजी, धरता निजपद निरमल ध्यान जो ।
 अड चेतन नी भाव भिन्नताजी, वेदक चेतनता सम ज्ञान जो ॥ धन ० ॥ ८ ॥
 तत्त्वमण निज वासित वासनाजी, जानादिक त्रिक शुद्ध जो ।
 अडता ना गुण अडमे रासताजी, जेहनी आगम नैगम बुद्ध जो ॥ धन ० ॥ ९ ॥
 पुढगल आप्या (थप्पा) लक्षणे जी, पुढगल परिचय कीनो भिन्न जो ।
 अन्त समय एहवी आत्मदशाजी, जे रासे ते प्राणी धन्न जो ॥ धन ० ॥ १० ॥

कोपातुर यवने रजनी समे जी, दीघा दुग्ध अनेक प्रकार जो ।

तोहे पण न चल्या निज ध्यानथी जी, सहेता नाडी दंड प्रहार जो । ११

हस्त चरण ना नख दुरे कीया जी, व्यापी वेदन तेण अनेक जो ।

हार्यो यवन महादुष्टात्मा जो, जो राखी पूरव मुनी नी टेक जो । १२

जिम जिम वेदन व्यापे अति घणीजी, तिम सम वेदे आत्मराम जो ।

इम जे मुनिवर सम(ता) भावे रमे जी, तेहने होज्यो नित परणाम जो

बूझो :- प्रात समय आवक सुगो, पास आव्या जाम ।

यवन कहै आखो थड, ले जाउ निज धाम । १

‘रूपा वोहरा’ ने घरे, तेडी लाव्या ताम ।

हाहाकार नगरे थयो, दुष्ट ना मुख थया स्याम । २

‘नाथसागर’ नीझामता, नीरखि परिणिति शाति ।

उत्तराध्यन आदे बहु, संभलावे सिद्धांत । ३

सकल जीव खमाविनइ, सरणा कीधा च्यार ।

सत्य निवारी मन थकी, पचख्या चारे अहार । ४

अणशण आराधन करी, चढ़ते मन परिणाम ।

समतावंत धीरज गुणे, साध्युं आत्म काम । ५

चोथुं व्रत कोइ आदरे, कोइ नीलवण परिहार ।

अगडी नीम केइ उचरे, केइ आवक व्रत वार । ६

संघ मुख्य ‘सिवचन्द्र’ जो, वचन कहे सुप्रसिद्ध ।

‘हीरसागर’ ने गछ तणी, भलो भलामण दीध । ७

संवत ‘सतर चोराणुये’, वैशाख मास मझार ।

पष्टि दिन कविवार तिहा, सिद्ध योग सुखकार । ८

प्रथम पोहोर माहे तिहा, धरता जिननु ध्यान ।

फाल फरी प्राये चतुर पाम्या दव विमान ॥६॥

ढाल ७ — माइ धन मन्पत्र ए, धनजीवी तोरी आज । ए दशीना
धन धोरज दडता, धन धन सम परिणाम ।

जेणे परिसह सही ने, रात्र्यु जग माहै नाम ॥१॥

बलिहारी तोरी बुद्धि ने, बलहारि तुम ज्ञान ।

जेणे आतम भावे, आराध्यु शुभ ध्यान ॥२॥

बलिहारी तुम कुळ ने, बलिहारी तुम वश ।

शासन अजुआली, अजुथाल्यो निज ह्म ॥३॥

गुरू कुमर पणे रया, तर वरस घर वास ।

शिष्य विनय पणे रया, तर वरम गुरू पास ॥

गच्छनायक पन्वी, भोगवी, वरम अठार ।

आयु पूरण पाली, वरस चुमालीस सार ॥४॥

धन धन 'शिवचन्दजी', धन धन तुय अपतार ।

इम थोफ थोफ, गुण गाव नर नार ।

कर श्रावक मली तिहा, माडवी मोटे मडाण ।

कचनमय कलस, जाणे अमर विमाण ॥५॥

तिहा जोवा मलीया हिन्दु मलेळ अपार ।

गाय धवल मंगल, दीये ढोल तणा दमकार ॥

जय जय नन्दा कह, लीय डडा रम सार ।

भेर भूगल साथ, सरणाइ रणकार ॥६॥

बली अगर उरतेने, सावन फूले वधार ।

इम उठव थात, वन माह लड आव ॥

सुकटने अगर सु, कीधो दही सरकार ।

निरनाण महोळन, इणि पर कीधो उरार ॥७॥

पुरपोत्तम पूरो, सूरु लयल विवेक ।

जणे गळ अजुयाली, राखी धर्मनी टेक ॥

निहा धूम करावी, आवके उल्लव कीधो ।

वली पगला भरावी, 'रूपे वोहरे' जम लीवो ॥८॥

तिम 'राजनगर' मे, थंभ करी अति मार ।

तिहां थाण्या पगला, 'बहिरामपुर' मंझार ॥

अति उल्लव थाये, भगति करे नर नार ।

इम गुरुगुण गावे, तम घर जय जयकार ॥९॥

अति आप्रह कीधो, 'हीरसागरे' हित वाणी ।

करी रामनी रचना, साते ढाल प्रमाण ॥

'करुया मति' गळपति, साहजी 'लाधो' कविराय ।

तिणे रास रच्यो ए, सुणत भणत सुखथाय ॥१०॥

कलशे:

इम रास कीधो मुजस लीधो, आदि अन्त यथा सुणी ।

'शिवचन्द्रजी' गळपति केरो, भावजो भवि गुणमणी ॥

संवत 'सतरेसे पंचाणुं', 'आसो' मास सोहामणो ।

'सुदि पंचमी' सुरगुरु वारे, ए रच्यो रास रलीयामणो ॥

निरवाण भाव उलास साथे, 'राजनगर' भाहि कीयउ ।

कहे साहजी 'लाधो' 'हीर' आप्रह थी, रास एह करी दीयउ ॥११॥

इति श्री शिवचन्द्रजी नो रास समाप्त ॥८॥ प० ५ नि० म० ला० ॥

प्रति नं० २ पुष्पिका लेख

सम्बत् १८४० ना आसु वदि ४ दिने श्री मुजनगर मध्ये लिखते । गाथा १०५ लिखतं देवचन्द्र गणिना लिखतं श्रीवृहत्स्वरतर-गच्छे खेम शाखाया श्रीकच्छदेशे श्रीशांति प्रसादात् वाच्यमान हेतवे । मेरु महीधर जा लगे जा लग उगत सूर, ता लग ए पोथी सदा रहे जो ए सुख पूर ॥ श्री रस्तु । कल्याणमस्तु ॥ श्री श्री

(पत्र ६ अंजारसे विद्वद मुनिवर्य लब्धि मुनि जो द्वारा प्राप्त)

आचपश्रीय (सरतरगञ्जीय) आचार्यगारुड

जिनचद सूरि पट्टधर श्री जिनहर्ष सूरि गीतम्



सरि देख्यउ हे सुपनउ मइ आज, श्री गञ्जराज पवारिया ।

सरि सगला हे मावा भिरताज, श्री 'जिनहरग' सूरिधर ॥१॥

सरि चालउ हे करनी गज गेलि, ढल तणी पर ढल कनी ।

सरि म्हाका सन्गुह मोहनगेलि, नाणि अमीरस उपदिसइ ॥२॥

सरि समती ह मोलह अगार, ओढो सुरगी चूनडी ।

सरि जीमह धर कल । उर, मोत्या बाल वधामणउ ॥३॥

सरि जुगवर चवद विद्या रा जाण, जाणो तल सारइ जगइ ।

सरि मानइ ह महु राजा राण, पाटइ श्री 'जिनचद' ऋड ॥४॥

सरि दीपइ 'दोसी' वश द्विणन्द, 'भगना' उरइ धया ।

सरि जीउउ 'भादाजी' रउ नद, 'कोरतमद्धन' इम फहइ ॥५॥



लघु आचार्य शास्त्र।

॥ श्री जिनसागर सूरि गीता ॥



श्री संघ करइ अरदास हो, वेकर जोड़ी आपणै भावसुं हो । पूजनी ।
 पूरे मननी आस हो, एकरसउ वंदावउ आविनइ हो ॥ पू० ॥ १ ॥
 तइं जाण्यउ अथिर संसार हो, संयम मारग 'लघुवय' आदर्यो हो । पू०
 आगम नउ भण्डार हो, जाण प्रवीण क्रिया नी खप करइ हो । पू० ॥ २ ॥
 तूं साधु शिरोमणि देखिहो, पाट तणइ जोगि 'जिनचंद सूरि' कळोहो ।
 तइं राखी जगमइं रेख हो, पाट वइसता उपसम आदर्यो हो । पू० ॥ ३ ॥
 एकाल तणउ परभाव हो, गुण करतां पिण अवगुण ऊपजइ हो । पू०
 दूध भजइ विष भाव हो, विपधर मुख खिण माहि जातां समो हो । पू० ४
 नगर 'अहमदाबाद' हो, दोषी माणस दोष दिखाड़ियो हो । पू० ।
 धरम तणइ परसाद हो, निकलळ कनक तणी परि तूं थयो हो । पू० ५
 थारउ सबलो जस सोभाग हो, चिहुं खंड कीरति पसरि चौगुणी हो ।
 तुम्ह उपरि अधिको रागहो, चतुर विचक्षण धरमी माणसां हो । पू० ६
 जे वेचइ मणिका काच हो, ते सी कीमत जाणे पाचिनी हो । पू० ।
 कदाप्रही मिथ्या वाच हो, कुगुरु न छंडइ सुगुरु न आदरइ हो । पू० ७
 तूं शीलवन्त निलोभ हो, श्री 'जिनसागर सूरि' सुगुरु तणी हो । पू०
 'जयकीरति' करइ सुशोभ हो, अविचल मेरु तणी परि प्रतपज्यो हो । ८

॥ श्री जिनधर्म सूरि गीतम् ॥



१ ढाल : सोहिलानी

आया श्री गुरु राय, श्री सस्तर गच्छ राजिया ।

श्री 'जिन धर्म सुरिन्द', मङ्गल वाजा वाजिया ॥१॥

पेसारे मडाण, 'गिग्धर' शाह् उच्छ्रय करइ ।

'वीकानेर' मझार, इण विध पूज जी पग धरइ ॥२॥

श्री 'सध' साभो जाइ, आणी मन उल्ट घणे ।

लुलि लुलि वादइ पाय, सो दिन त लेखै गिगै ॥३॥

सिर धर पूरण कुभ, सूद्व आवै मलपती ।

भर भर मोती थाल, वधाव गुरु गच्छपती ॥४॥

पग पग हुवे गहगाट, घर घर रग वधामणा ।

झालर रा झणकार, सख शब्द सोहामणा ॥ ५ ॥

कौथी प्रोल उत्तङ्ग, नर नारी मन मोहनी ।

नाना विधि ना रग, तिण कर दीसइ सोहती ॥६॥

सिणगार्या सन हाट ऊची गुडी फरहरइ ।

दूधे बूढा मह, याचक जण यश उचरइ ॥७॥

प्रथम जिणेसर भेटि, आया पूज उपासरे ।

साभलि गुरु उपदेश, सहुको पहुता निज घर ॥८॥

सोहलानी ए ढाल, मिल मिल गावे गोरडी ।

'ज्ञान हर्ष' कहै एम०, सफल फलो आश मोरडी ॥९॥

२ ढाल : विष्णुआनी

सहिर करो मुञ्ज ऊपरै, गुरुआ श्री गणवार रे लाल ।

‘भणगाली’ कुल सेहरो, मान ‘मिरगा’ सुखकार रे लाल ॥१॥म०॥

सुन्दर सुरति नाहरी, दीठां आवै दाय रे लाल ।

मधुकर मोह्यो मालती, अवान को मुहाय रे लाल ॥ २ ॥ म० ॥

मूर गुणे करि सोहना, पट् जीव ना प्रतिपाल रे लाल ।

रुपे वथर तणी परे, कलि गौतम अवतार रे लाल ॥ ३ ॥ म० ॥

साधु संघाते परिवर्या, जिहा विचरै श्री गुरु राय रे लाल ।

सुख सम्पति आणन्द हवड, वरते जय जय कार रे लाल ॥४॥म०॥

श्री ‘जिनसागर सूरि’ जी, सडं हथ थाप्या पाट रे लाल ।

श्री ‘जिन धर्म सूरीवरु’, दिन दिन हवड गहगाट रे लाल ॥५॥म०॥

‘राजनगर’ रलियामणो, पद महोछव कीयो सार रे लाल ।

‘विमला दे’ ने ‘देवकी’, गुण गण मणि आधार रे लाल ॥ ६ ॥ म० ॥

गच्छ चौरासी निरखिया, कुण करें ए गुरु होड रे लाल ।

‘ज्ञानहर्ष’ शिष्य वीनवै, ‘माधव’ वे कर जोड़ रे लाल ॥ ७ ॥ म० ॥



जिनधर्मसूरि पट्टर जिनचन्द्रसूरि गीतम् ।



१ देशी दरजणारा गीतरी ॥

मुणि सहियर मुझ वातडी, तुझ नै कहु हिन आणी । हे वहिनी ।

आचारजे गच्छ रायनी, सुणिवा जइयइ वाणि । हे वहिनी ॥१॥

सूरतडी मन मोही रखउ ॥ आकडी ॥

सहगुरु वेसी पाटियर, वाचै सूत्र ।सद्धन्त । हे वहिनी ।

मोहन गारी मुहपति, सुन्दर मुख सोहन्त । हे वहिनी ॥२॥

गहली सद्गुरु आगलै, करिये नयनवी भाति । हे वहिनी ।

सुगुरु वधावा मोतीये, मन माहि धरि खाति । हे वहिनी ॥३॥

बैनी मन विहसी करो, मामला सरस वषाण । हे वहिनी ।

भाव भेद सूधा कहै, पण्डित चतुर सुजाण । हे वहिनी ॥४॥

साधु तणी रहणो रहइ, पालै शुद्ध आचार । हे वहिनी ।

सूरि गुणे करि शोभतो, श्री परतर गणधार । हे वहिनी ॥ ५ ॥

‘बुहरा’ वश विराजतो, ‘सावल’ शाठ सुमिरल्यात । हे वहिनी ।

रत्न अमलिक उर धर्यो, ‘साहिन’ जसु माता । हे वहिनी ॥ ६ ॥

श्री ‘जिनधर्मसूरि’ पाटवी, श्री ‘जिनचन्द्रसूरि ।’ । हे वहिनी ।

अविचल राज पालो सदा, पभणै ‘पुण्य’ आगीस । हे वहिनी ॥ ७ ॥

लिखित सन् १७७६ वष त्रैसाए सुदी १२ भौम ।

जिन युक्ति सूरि पट्टर जिनचन्द्र सूरि गीतम् ।

पूजजी पधार्या मारु दगमे, दूयावूठाजी मेह । गुणवन्ता हो गच्छपति ।

ओसघ वादे हो अधिक उच्छाह सु, मन धरि धर्म सनेह ॥१॥

गुणवन्ता हो गच्छपति, श्रीजिनचन्द्र सूरि सुखकर ॥ आकडी ॥
 मिलि मिली आवो हे सखर सहेलिया, भरि मोतियड़े थाल ।गु०।
 वादण जास्यां हे खरतर गच्छ धणी, जीव दया प्रतिपाल ॥२॥गु०॥
 संघ साम्हेले हो साम्हा संवरै, मन धरि अधिक आणन्द ।गु०।
 वाजा वाजै हो गाजै अम्बरै, गच्छपति ना गुण वृन्द ॥३॥गु०॥
 गुणियण गावे हो गुण पूजजी तणा, बोले मुख जै जै बोल ।गु०।
 कीरति थारी हो गंगाजल जिसी, दस दिशि करै कलोल ॥४॥गु०॥
 पग पग कीजे हो हरख गूंहली, दीजै वंचित दान ।गु०।
 सूहव गावै हो मङ्गल सोहला, गिड, धूं धूं घुरे निसाण ॥ ५ ॥ गु० ॥
 नर नारी ना हो परिकर बहु मिलै, वंदण भणी विशेष ।गु०।
 आय विराज्या हो पूजजी पाटिये, छौ धर्मरा उपदेश ॥६॥गु०॥
 नवरस सरस सुधारस वरसतो, गरजती जलद समान ।गु०।
 सुणतां लागै हो श्रवण सुहामणी, इसी म्हारै पूजजी री वाण ॥७॥गु०॥
 नित नित नवला हो हरख वधामणा, पूरव पुण्य प्रमाण ।गु०।
 जिण दिशि देशे हो पूज्य समोसरे, तिण दिश नवे निधान ॥८॥गु०॥
 पंचाचार हो पूज्य सदा धरै, पूज्य सुमति गुपति सोहन्त ।गु०।
 गुण छतीसे हो अंग विराजता, पूज भविजन मन मोहन्त ॥९॥गु०॥
 चद ज्युं दीसे हो नित चढती कला, 'जिन युक्तिसूरि' जी रे पाट ।गु०।
 श्री गौयम जिम बहु लब्धे भर्था, सोहे सुनिवर थाट ॥१०॥गु०॥
 धन 'बीलाड़ा' हो संघ सराहिये, पूज रह्या चोमास ।गु०।
 जिन शासन नी हो थई प्रभावना, सफल फली सहु आश ॥११॥गु०॥
 मात "जसोदा" हो नन्दन जाणिये, 'भागचन्द' सुत सुविचार ।गु०।
 युगप्रधान हो जगमें अवतर्या, गोत्र 'रीहड़' सिणगार ।गु०।
 पूज प्रतपो हो जा रवि चन्द्रमा, हो पूज जीवो कोड़ बरीस ।गु०।
 इम निज मनमे हो हरख धरी घणो, 'आलम' छौ असीस ॥१३॥गु०॥
 ॥ इति श्री पूज्यजी गीतम् ॥

गैतिहासिक जेन काव्य संग्रह

तृतीय विभाग

(नव्याय-डीय एतिहासिक ३१ व संस्करण)

॥ शिवचूला गणिनी विनि ॥

आ नन्व त मन धरिण, ध वीम जित पत्र अणुमरीण ।

गोयमन्वामि पमावृण, अमे गा(नि)मि श्री गुणो विनादृण ॥१॥

ग्राहट' वग सिगाहण, 'गहा' ण गुणह भटारण ।

गानिहि मानिहि च्छाहण, जसु जपय जय जयराहण ॥ २ ॥

तसु घरणी 'वि हण' मनि ण, मन्वारा मपन्न जीवज्यती ण ।

जिणाहि माया वयराहण, म्ना रयणहि गुण मणि आगण ॥३॥

दुअर गुणह भडाहण, 'जिनरीरति सूनि' सा वीरुण ।

'राजलच्छि' घहन तसु नामुण, लीह पवनणि फर पगामुण ॥४॥

'शिवचूला' मनि सिगाहण, जसु विस्वर जगि च्छाहण ।

रुप लीवग्य मनोहण, तप तजिहि पाव निमिर हण ॥५॥

चारित्र पात्र गुण जाणिण, श्री गच्छ भार धुनि आणीण ।

निणे अयसर आ रुध मन रलीण, विचार जाह त मनि रलीण ॥६॥

'महत्तर' पत्र उच्छाहण, तवरिण पनउ 'महात्' माण ।

विनन्या श्री गुणरा, मउ मनि घणउ उमाहण ॥७॥

क्रिउ पमायो श्री सध मिलीण, आणन्ति नाचउ वली घलीण ।

लिट्प्र न 'त्रैगासुण' 'चन्द्र चाणुइ' नि पदिरे पायीण ॥८॥

'मदपाट' महोत्तम वरीण, 'दज्जपुरी' जग सुनि (चि?) विस्तरण ।

आउइ श्रीमध न्ह दिशि तणाण, आररा जट माहमा अति धणाण ॥९॥

मंडप मोटा मंडाणाए, तिहा बइसइ चतुर सुजाणुए ।

नाचइए निरुपम पात्रुए, जसु जोता गहगहइ गात्रुए ॥१०॥

चउरी चउहिं पखि चमर ढलइए, पोसालइना दिशि विस्तरइए ।

मंगल धवल महलावइए, श्री'शवचूला' महत्तर गायसिंए ॥११॥

च्यारइ भगवन् आणंदपुरे, तेहवे वाम खिवइ 'सोमसुन्दरसूरे' ।

महत्तर उवज्जाय पदवीए, वित विचय 'महा दे' संघवीए ॥१२॥

सुभासु लकुटा र(रा?)सुए, गुण गाइए 'शवचूला' महत्तरीए ।

'रत्नशेखर' वाचक वरुए, पन्यास गणीश अति विस्तरुए ॥१३॥

दीक्षा महोत्सव अपारुए, तिहिं वरतइ जयजयकारुए ।

पंचशब्द तिहा वाजइए, तिणे नादे अम्वर गाजइए ॥१४॥

वन्दिद्य जन जय उच्चरइए, तिहिं मांगतजन दालिह हरुए ।

तलीया तोरण उच्छलइए, तिहा घरवर गुडि विस्तरइए ॥१५॥

श्रीसंघ मन पुगि रुलीए, गुणगाइ गोरडी सवि मिलिए ।

दक्षीण देव सिरि महलावइए, साह सुपत्र खेत्रे धन वावरइए ॥१६॥

देवहिं गुरुभक्ति थुणीए, खेत्र 'शाहपुर' आपणीए ।

दरसनस्थुं गुणधारुए, वस्तु पहिरावइ अतिहिं अपारुए ॥१७॥

श्रीसंघ पंचंगि मडदीए, साह 'महादे' इणिपरे जस लीए ।

रंजिय सयल सभा जणुए, संतोषिय साहमि भगत जनुए ॥१८॥

करणी अनुपम ते करइए, तस किरति दह दिसि विस्तरीए ।

महत्तर नाम विशालुए, तस उपमा चन्दनवांछुए ॥१९॥

द्र पदि तारा मृगावतीए, सीता य मन्दोदरी सरसतीए ।

सोल सती सानिध करइए, भणयवाघ (भणवाथी?)

श्रीसंघ दुरिया हरइए ॥२०॥

[इति श्री जितकीर्ति सूरि महत्तरा श्रीशवचूला गणि प्रवर्तिनी

राजलच्छी गणिर्विज्ञप्तिकाः, आविका हीरादे योग्यं]

(खरतर गच्छीय प्रवर्तक मुनिवर्य सुखसागरजोसे प्राप्त)

कविगुणविजय कृत

विजयसिंहसूरि विजयप्रकाश रास

प्रथमनाथ पृथ्वी तणो, प्रणमु प्रथम जिणत् ।

माना 'मरु द्वो' तणो, नन्दन नयगानन्द ॥१॥

'सोरोही' मुल मण्टणो, दुग्न नो ररुटणहार ।

'रूपभय' साहित्य मयउ, वाठिन फर तानार ॥२॥

राजगनि जिनपति जे धरड, गज लाउन निमत्तोस ।

'हीर विजयसूरि' हाथम्यु त्रे चोयो जगतीस ॥३॥

'अजिनताय' जग जोपनो, तोलनीकर दोणार ।

'ओलवश' नड नेहरड, जपना जय जयनार ॥४॥

'शाति' शातिकर मोलमो, परम पुग्य अरूर ।

नगर शिरोमणि 'विजयपुरी', सूद्वि गिर भिन्दूर ॥५॥

'कमठ' काठ वी काटिओ, जिणि जलनो मुज्जदिण ।

लाग्य च्युआलीस घर धणी, त वीधो 'वरणीद ॥६॥

ते दुस चिन्ता चूरणो, पूरण पूरइ अ म ।

प्रहउठि प्रमु प्रगमिइ, श्री'तीरा'लि' पाम ॥७॥

शासन साहित्य सेवोयइ, समरय साहस वीर ।

'वभणनाहि' मडणो, वीर वाड मन्नीर ॥८॥

वचन सुधारन वरसनो, सरननि त्रिउ मनि माय ।

'कमल विजय' गुरु पड कमल, प्रणमु परम पनाय ॥९॥

‘हीर’ पाटि ‘जेसिगजी’, पाटि प्रगट जगीस ।

श्री‘विजयदेव’ सूरिसरु, जीवो कोडि वरीस ॥१०॥

तिणि निज पाटि थापीओ, कुमति मतंगगज सीह ।

‘विजयसिह सूरिसरु’, सकल सूरि सिर लीह ॥११॥

रास रचुंरलीयामणो, मनि आणी उल्लास ।

‘विजयसिह सूरि’ तणो, सुणयो ‘विजय प्रकाश’ ॥१२॥

सावधान सज्जन सुणो, पहिला दिउ दुइ कान ।

खंडानी पृथ्वी कही, विद्याना छइ दान ॥१३॥

ढाल : राग देशाख ।

अदार कोडा कोडि सागर जेह, युगला धरम निवारक जेह ।

‘ऋषभदेव’ हुआ गुण गेह, धनुष पंचसइ सोवन देह ॥१४॥

‘आदीश्वर’ निं सुत शत एक, ‘भरतादिक’ नामिं सुविवेक ।

आप पाट ‘भरतेसर’ आप्यो, ‘बहली देश’ ‘बाहूवल’ थाप्यो ॥१५॥

‘भरत’ तणा अठाणुं भाइ, तेमा एक ‘मरुदेव’ सवाई ।

तिणि निज नामि वसाव्यो देश, तेह भणी भणियइ ‘मरु देश’ ॥१६॥

ईति अनीति नहीं लवलेश, धर्म तणो ते कहिइ देस ।

चोर चरड नी न पडइ धाडि, ॥१७॥

बड़ा बड़ा जिहां छइ व्यवहारी, सत्रूकार करइ अनिवारी ।

मोटा तीरथ नी जिहा सेवा, मोतीचूर मिठाइ मेवा ॥१८॥

राजा पिण जिहां धरम करावइ, परमेसर नी पूजा मंडावइ ।

सहजिं जीव अमारि पलावइ, आहेडा उपरि नवि आवइ ॥१९॥

सूर सुभट माटी मुंछाला, करि झलकइ करवाल कराला ।

व्यापारी दीसइ दुंढाला, घरि घरि सुभिख सुगाला ॥२०॥

देस माटो तिम माटा कोस, भोला लोक नहीं मनि रोस ।

बोलट भापा प्राहि अटारी, कडि वाधइ बहु लोक कगरी ॥२१॥
लोक धरइ हाथि हथिआर, वाणिग पणि झूठा झूझार ।

रण त्रिदता पणि पाठा पग नापइ, साहमो साहमणि नड यिर थापइ ॥२२॥
कपट विदुषी बोलइ गाढिइ, गरढी पणि जिहा घुघट काढइ ।

त्रिघना पणि पहरइ करि चूडि, रात रसोइ रावइ रूडी ॥२३॥
प्रहो पाहुगइ सनल सजाइ, राय राणा नी परि भुजाइ ।

पाटभक्त मनमा नहीं द्रोह, स्वामिभक्त स्यु अधिको मोह ॥२४॥
पुण्यवन्त प्राहि नहि सुट, वाहग साहण चढवा उट ।

जिहा थाकइ तिहा लिइ विश्राम, चोर चत्तार तगु नहीं नाम ॥२५॥
लोक लास लीलाइ चालइ, मोना रूपी (या) हाथि उलालइ ।

दुम्भन नइ सिर देवा दोट माटा 'मारुआडि' नवकोटी ॥२६॥
प्रथम कोट 'मडोवर' ए ठाम हन (णा) 'जोवनवर' अभिराम ।

बोजो 'अनुद' गढ त जाण्यो, त्रीजो गढ 'जालेर' वत्ताण्यो ॥२७॥
चोयो गढ त 'नाहडमेर', पाचमो 'पारकरो' नहीं फेर ।

'जेसलिमेरि' छठो कोट, जिणि लागइ नहिं व रो चोट ॥२८॥
कोटडड' सातमो कोट वटरो, आठमो कोट कयो 'अजमेरो' ।

कोइ 'पुकर' कोइ कडइ 'फञ्चद्वी नवकोटी 'मारुआडि' प्रसिद्धी ॥२९॥
दोह ।

घन 'मडोवर' महरा, जिहा 'मडोवर' 'पास' ।

'गुणविजय' कहइ प्रभु पूजता, पूरइ मनती आस ॥३०॥
आज सफल दिन मुझ हु(यो)उ, अबहु हु(य)उ सनाथ ।

'गुणविजय' कहइ जन मुझ मलयो 'फञ्चधि' 'पारसनाथ' ॥३१॥

ढाल : - चौपाइ ।

‘मरु’ मण्डल माहि ‘भेडतु’, दालिद्र दुख दूरि फेडतः ।

तेहनी कीरति जग मा घगी, एहवी लोक वात मडं सुणी ॥३२॥

जिन शासन माहि वोल्या वार, चक्रवर्ती ‘भरनादिक’ उदार ।

तिम शिख सासनि चक्रो होड, च्यार उपरि अधिका वलिदोइ ॥३३॥

तेमां धुरि ‘मानधाता’ भण्यो, चक्रवर्ती ते मूर्लि जण्यो ।

तव माता पहुती परलोक, राजलोक मधलड तव शोक ॥३४॥

किम ए वाल वृद्धि पावस्यइ, इंद्र कहड मुझ निधा(आ?) वसइ ।

तिण कारणि ‘मानधाता’ कइउ, चक्रवर्ती पहलिउ गहगह्यो ॥३५॥

दान देवा घरि साभो जाय, ते मोटो हुउ महाराय ।

कोडा कोडि वरस तसु आय, प्रजा तगुं पीहर कहवाय ॥३६॥

कृत युग मा ते (हुयउ) प्रसिद्ध, इन्द्रइ राज्य थापना किद्ध ।

तिणि नगर वास्युं ‘भेडतुं’, लीलाइं लखमी तेडतुं ॥३७॥

‘भेडतुं’ते ‘मानधाता पुरी’, जेहथी लाजी ‘अलकापुरि’ ।

जे मांटेइ तिहां धनपति एक, इणि नगरि धनवन्त अनेक ॥३८॥

लोक वात एह्वो सांभलि, साच्युं ते जाणइ केवली ।

‘भेडता’ नी महिमा अति घणी, तिण वेला ‘भेडतीआ’ धणी ॥३९॥

चउपट चहुटां केरि ओली, गढ मढ मन्दिर मोटी प्रोलि ।

घरि घरि उछरंग कलोल, बाजइ मादल भुगल ढोल ॥४०॥

चिहु दिसि सजल सरोवर घणां, देराणी जेठाणी तणां ।

कुंडल सरवर सोहामणुं, जाणे कुण्डल धरणी तणुं ॥४१॥

गाजर गयार हय (व)र घट्ट, व्यहारीआ नणा गज घट्ट ।

वनवाडी ओपर आराम, पासइ 'फलधि' तीरथ ठाम ॥४२॥
दश दश ना आवर लोक, दादइ दीठइ नासइ सोरु ।

परता पूरइ 'पास कुमार', रानि दिवस उधाडा वार ॥४३॥
इस्यु तीरथ नहीं भूमोतल, माणम लार एक जिठा मिलइ ।

पोस दसमी जिन जन्म करयाण, 'मडता' पासि इस्यु अहिनाण ॥४४॥
'मटनु' दीठइ मन उलसइ, दरलोक ते दूरि वसइ ।

'मडनु' देखी लका रिसी, पाणी आणइ वाणारसी' ॥४५॥
गिरार उठ ऊचा प्राभाइ, नन्दीपर स्यु माडइ वाद ।

सनरभेद पूजा मडाण, रसिया आवक सुणइ वखाण ॥४६॥
महाजन निं मनि मोटी दया, राऊ ढोक उपरि बहु मया ।

ठामि २ तिहा सत्रुकार, तिणि नगरी नित दय दयकार ॥४७॥
तिणि नगरि महाजन मा वडो, 'चोरप्रडिया' कुळ नु दीवडो ।

'ओसवाल' अति अरडकमल, साह 'भाडण' नन्दन 'नथमल' ॥४८॥
तस घरि लक्ष्मी वासो वसइ, रूपि रति पति नइ ते हसइ ।

नाथू नइ घर गज गामिणी, 'नायक द' नाभि कामिनी ॥४९॥
मणि माणक मोटा मालिआ, सोना रूपा नी यालिया ।

सालि दालि मरारा साल्या, उपरि घल घल घी अति घणा ॥५०॥
'कुळा' दान्ति दिइ बहु दान, साहमी साहमणि नइ सन्मान ।

सायु सावत्री घरि आवती, पाणी नी परि घी जिहति ॥५१॥
मीठाइ मेवा भरपूर, चोआ चदन अगर कपूर ।

'नायक द' नवयौवन नारि, 'नाथू' सुख विलसो ससारि ॥५२॥

पुण्यइ पार्षी ऋद्धि अपार, जग जण जपइ जै जैकार ।

‘सालिभद्र’ सम सुख भोगवइ, सुखि समाधिं दिन जोगवइ ॥५३॥
‘नायक दे’ नंदन दुइ जण्या, सकल कला गुण सहजि भण्या ।

‘जेसौ’ नइ ‘केसौ’ तिस नाम, ‘दशरथ’ घरि जिम ‘लखमण’ ‘राम’ ॥५४॥
त्रीजो सुत जायो तिण बलि, मात तात पुहती मनरलो ।

‘भेडता’ माहि हुआ आगंड’, ‘कर्मचंद्र’ नामइ कुल चंद्र ॥ ५५ ॥
‘कपूरचंद्र’ चौथा नुं नाम, ‘पंचायण’ ते पंचम ठाम ।

‘नाथू’ ना नंदण गुण मर्या, जाणिकि पाच पाडव अवतर्या ॥५६॥

दोहा

पाडव पाचइं माहि जिम, विचलो सुत सिरदार ।

तिम ‘नाथू’ नंदन विचि, ‘कर्मचंद्र’ सुविचार ॥५७॥
विक्रम ‘संवत सोलसइं’ उपरि ‘च्युंआलीस’ ।

शाके ‘पनर नवोत्तरइ’ पूरइ सजन जगोस ॥ ५८ ॥
उजल पखि फागुण तणइ, वोज दिवसि रविवार ।

उत्तर भद्र पदा तणइ, चौथा चरण मझार ॥ ५९ ॥
राजयोग रलीयामणइ, फाग रमइ नर नारि ।

‘कर्मचंद्र’ कुंवर जणयो, जगि हुआ जय जयकार ॥६०॥
कर्क लगन मूरति भवनि, तिहा गुरु उंचइ ठामि ।

बडठो तिणि तूठो दिइं, गुरु पदवी अभिराम ॥६१॥
त्रीजइ राहु सु खेत्रीउ, कन्या राशि निवास ।

भाई भुज बलि दीपतौ, दुसमन थाइ दास ॥६२॥
रवि कवि बुध ए आठभइ, कुंभि लगन बईइ ।

नवमइं भवनिं केतु कुज, पूरण चंद्र पईइ ॥६३॥

मरि शनि नीचउ वल्लउ, दशमड भवनि उदार ।

पणि फल उवा नु दिड, कद्र ठामि सुखकार ॥६४॥

ए शुभ वला अजतया, 'कमचद' सुखकर ।

सुखि समाधि वाधनु, बीज थकी जिम चट ॥६५॥

ढाल — राग गौडी ।

इक दिन डम चितड नाथक व भरतार,

सुग सेजि सूतो, जाग्यो रयणि मझार ।

मइ पूत्र भत्र काड कीधा पुण्य अपार,

तणि मही पाम्या सुग सघला ससार ॥ ६६ ॥

मुझ मदिर मडडी, मणि माणर ना हार,

नित नमा पहरना नित नवला आहार ।

नितु ० घर आर, अगथ गरथ भडार

वलि पाम्या परिघल पुत्र कलत्र परिवार ॥ ६७ ॥

इणि भत्रिनत्रि कोधउ सुगो श्री जिन धर्म,

त्रिप (य) रसि हुसी कीवा कोड उकर्म ।

'धन्तो' 'कवन्तो' 'सालिभद्र' सुकमाल,

जोड वर्मिड तरिया वलि 'अवति सुकमाल' ॥ ६८ ॥

ए त्रिपय तणि रमि प्राणी नइ नहु रग,

जिम नयण तणइ रमि दीव० पडइ पतग ।

रागि करि वध्यो वौध्यो वाण कुरग,

अम्नाडी पाडइ करिणी मद्र मातग ॥ ६९ ॥

खारा नइ खोटा, मीठां मधुरा भक्ष,

काचा नइ कोरां, कंदा मूल अभक्ष ।

रयणि भोयण घण, परदारा गम(न) किद्ध,

तोहि तृपति नही मुझ, जिम खारइ जलि पिद्ध ॥७०॥

ए जरा धूतारी, धोइ देस विदेस,

विण साबू पाणी, उज्जल करस्यइ केस ।

तिणि विण आव्यइ जे, मडं कीधा बहु पाप ।

ते मुझ मनि जाणइ, जिम मा जाणइ वाप ॥ ७१ ॥

कोइ सुगुरु मिलइ सुं, निज पातिक आलोउं,

गुरु वाणी गंगा, पाप तणां मल धोऊं ।

एहवइं 'मेडता' मा, आन्या वड अणगार ।

श्री 'कमल विजय' गुरु, सकल शास्त्र भंडार ॥ ७२ ॥

साह 'नाथू' हरख्या, निरखी तस दीदार,

धन २ ए मुनिवर तपा गछ शृङ्गार ।

जाव जीव एहनिं द्रव्य सात आहार ।

भीठाइ मेवा, विगइ पंच परिहार ॥ ७३ ॥

ए गुरु संवेगी, वेरागी धन धन्य ।

ए भोटो पंडित, ठाणे पंचावन्न ।

आवी वंदी नइ, कही 'नायक दे' कंत ।

गुरुजी आलोयण आपो, मुझ एकंत ॥ ७४ ॥

चलता पंडित कहइ सुणिं तु 'नाथूसह',

आलोयण लेयो, जब वंदउ गछताह ।

आलोचन नी विधि, गीतारय समझाइ ।

दिइ अगीतार्थ तु, साभो पाप भराइ ॥ ७५ ॥

आलोचन काजि, वीस वरस पढरीजइ,

तिम जोअण सातसइ, गीतारय शोधोजइ ।

तिणि कारणि तप गठ नायक गुरु नि पासि ।

लेयो आलोचन, अवसरि मनि उलासि ॥७६॥

वस्तु तव बोलइ, 'नायक' नु नाथ ।

ते दूर देजान्तरि, छड तपगठ ना नाथ ॥

तुम्है पणि गठ माहि, मोटा पण्डित राय ।

देस्यो आलोचन, तउ छोडु तुम्ह पाय ॥७७॥

तत्र 'कमल विजय' गुरु, शास्त्र शास्त्रि सब जाणी ।

'नायू' मति दीठी, धर्म राग रगानी ॥

आलोचन दीधो, (मनवरी) बहु जगीस ।

उपवास छट बहु, अट्टम तिम । कवीस ॥७८॥

नायक दे' नायक, जोडी दुइ निज पाणी ।

तत्र बोलइ करस्यु ए प्रमाण तुम्ह वाणी ॥

बलि तुम्ह पसायइ, हु(य)उ निर्मल प्राणी ।

आज थकी अभिग्रह, ठामि भात नइ पाणी ॥७९॥

आलोचन करता चेत्यो, चतुर मुजाण ।

पूउद निज नारी, तिम भाइ 'सुरताण' ॥

मुझ कबु करी नइ, लीजइ संजम जोग ।

जेहयी पामीजइ, अजरामर सुर भोग ॥८०॥

दोहा ।

साह 'मांडण' कुल जलधि नुं, हस्तिमल 'नथमल' ।

विषम विषय रमि नवि छल्यो, चोखड चित्त छयल ॥८१॥

निज कुटम्ब तेडी करी, 'नाथू' कहइ निरधार ।

तुम्हे सहु(हुव)उ इकमना, लेस्युं संयम भार ॥८२॥

'कर्मचन्द' कुअर प्रमुख, सहु कहइ ए वात ।

अम्ह प्रमाण छइ तातजी, न करूं धर्म विघात ॥८३॥

जिम आलोयण अवशरि, मिल्या सुगुरु निकलङ्क ।

तिम हवि गठ नायक मिलइ, तो व्रत ल्युं निशङ्क ॥८४॥

ढाल राग तोडी:

इसा अवसगि 'लाहुर' सहरि करि, दुइ चउमासि ।

'विजयसेन सूरि' 'मेडतइ', आन्या जित कासी ॥

'नाथू' पाचइ पुत्र लेइ, गुरु नइ वंदावइ ।

'कर्मचन्द' मुख चन्द, देखि गुरुजी बोलावइ ॥८५॥

गछपति जंपति ए उदार, बालक शुभ लक्षण ।

जे चारित्र लेस्यइ सही, तो धास्यइ विचक्षण ॥

'नाथू' साह चो भाव, संभलि मुनि नाथ ।

हरल्या चित्त माहि ज्युं, चढड चिंतामणि हाथ ॥८६॥

गुरु कहइ 'नाथू' साह । सुणो, चौमासा माहि ।

'हीरजी' दर्शन तणइ हेतु, पहुचुं उठाहिं ॥

'कर्मचन्द्र' कुंअर कुटम्ब सहु, साथ समेला ।

समय लेइ तु आवयो, थायो अम्ह भेला ॥८७॥

सीख दइ 'मेठता' यकी, 'साण्टी' पधारड ।

परं षजूरण पारणइ, 'राणपुर' जोहारड ॥

जगम थापर तीर्थ नोइ, मिलिआ 'वरकाणड' ।

'जालोरउ' सघ वन्वा, आ यो जग जागशा॥८८॥

'कमल विजय' गुरु तिहा चउमामि, पूजना पग वण्ड ।

'वीझो' वानु सघ रगि, नाचड नत्र छदइ ॥

तिहा थो गुरु 'जेसवजी', 'सीरोही' आणड ।

अनुकामि साम्हो सघ आवि, 'पाटण' पवराण ॥८९॥

पुग्यवन्त 'पाटण' असिछ, नगरी भिरताज ।

तिहा 'हीरजी' निर्वाण जाणी, रहइ 'तप' गळ राज ॥

हनइ सुणउ जे 'भडत', हुआ मटाण ।

चारिण लेना 'कर्मचन्द्र', ज्यउ जग भाण ॥९०॥

जीमणार जटेनीड, बहु गाम जीमाटड ।

'नायक द' पति पाति रति, करि मोटी माण्ड ॥

सोना रूपा ना वचोल, याली सुनि ॥ली ।

मालि दालि शुचि सालणा, घल घल धी नाली ॥९१॥

दही करणघोल झोल, उपरि तम्बोल ।

नागरवलि सोपारी पारी, यलि कुन्म रोल ॥

चन्दन वसर टाटणा, माणम लस मिलीया ।

वागा लाल गुलाल जाणि वेसूडा फलिआ ॥९२॥

मिल्या महाजन माणव, घइठा बहु टोला ।

चालीसा दिवसा लगड, लीधा वन्तउला ॥

देव तणी वन भक्ति युक्ति, गुरु गुरुणो तेड्या ।

साहमी साहमिणी संविभाग, करि पानक फेड्या ॥६३॥

सणगार्या सत्र हाट पाट, चहुटा चउरासी ।

रुडो गूडो वहुत तेज, नेजा उझासी ॥

‘भेडतीआ’ म हराण तेणि, दीवा नीसाण ।

वाजड मझल तूर पूर, पडड कुमती प्राण ॥६४॥

धवल गीत गाडं अपार, गोरो गुण उ(ओ?)री ।

‘कर्मचन्द्र’ मुखचन्द्र देखि, नाचंनि चकोरी ॥

मड (ट्ट) भोजिग वहु भट्ट नट्ट, वोलड विरुदाली ।

लंख मंख खेलन्ति खय, कर देना ताळी ॥६५॥

‘कर्मचन्द्र’ कुंअर उदार, शृङ्गार करावड ।

तिम विहु वाधव मात तात, ‘सुरताण’ मुहावड ॥

माथड मळड विसाल भाल, कुण्डल दुइ दीपड ।

हियडड मोती तण (उ) हार, गंगाजल जीपड ॥६६॥

बाजू वंधन वहरखा, कर कंकण जडोआ ।

दीख्या लेवा काज सज, सिंधुर शिरि चढिआ ॥

वोलड इम गुण लोक थोक, परदेसी पाथू ।

छत्रीसे वरसे छयडा, धन २ ए नाथू ॥६७॥

धन २ कुअर ‘कर्मचन्द्र’, धन २ ए भाइ ।

धन २ शाह ‘सुरताण’ धन, ‘नायक’ दे भाइ ॥

भुगल भेरि नफेरी नाद, वाजड सरणाड ।

एक भणड ए ‘वस्तुपाल’, ए‘भोज’ सवाइ ॥६८॥

थानकि २ याकणे, दीजइ जे मागइ ।

पच वण दया भरी, वलि चालइ आगइ ।

कप्पड कीघा फोट चोट, दमाम दीघी ।

‘ओसवाल’ भूआल घन, इम फीरति कीघी ॥६६॥

याचक नइ धन कन कनक टान, देइ दालिद सडइ ।

इम आडभर परिवर्या, आण्या वन सडइ ।

त्रिण प्रदक्षिण समोसरण, विधिस्त्यु गुरु वदइ ।

‘कर्मचद’ सकटुन लेइ, चारित्र आणदइ ॥१००॥

दोहा:—

‘कर्मचद’ रवि आनर तप गण गयण उद्योत ।

दुरित तिमिर दूरिं क्रिआ, तिम कुमती सज्योत ॥ १ ॥

‘माडण’ कुल मटण करइ, ‘मरमडलि’ उलास ।

सयत ‘सोलइ चावनड, वीज’ दिवसि ‘माह’ मास ॥ २ ॥

‘जेसौ’ थिर थापी घरे, तिम ‘पचायण’ पुत्र ।

उनी रुद्धि छाडी लिउ, छइ (६) माणसे चारित्र ॥ ३ ॥

ढाल राग धन्याश्री:—

तिहा थो त मुनि चालइ, त्रिज कपाय नइ पालइ ।

आण्या गूजर दस, पाटणि कीद्ध प्रवेस ॥ ४ ॥

‘विजयसन’ सूरिराय, प्रणामि पातक जाय ।

ते उइ नड (६) दीघी दिक्षा, ग्रहणा सेवना शिक्षा ॥५॥

‘नेमिप्रिय’ ‘नाथू’ जाण, ‘सूरविजय’ ‘सुरताण’ ।

‘कर्मचन्द’ मुनि नाम, ‘कनकविजय’ गुणधाम ॥ ६ ॥

‘केसा’मुनि तणुं नाम, ‘कीर्त्ति विजय’ अभिराम ।

‘कपूरचन्द’ ते लहि(य)इ, ‘कुंअरविजय’ मुनि कहि(य)इ ॥७॥
सवला मा सिरदार, ‘कनक विजय’ अणगार ।

ए मोटउ महाभाग, श्रीआचारज लाग ॥ ८ ॥

पोतानुं पटधारी, ‘विजयदेव’ गणवारी ।

तेहनइ ते गिण्य दीनो, जडिउ कनक नगीनो ॥ ९ ॥

‘कनक विजय’ मुनि चेलो, कल्पलता तणु वेलो ।

‘विजयदेवसूरि’ पासि, सगला ज्ञात्र अभ्यामि ॥ १० ॥

गुरु नुं पास न मुकइ, विनय वड़ा नो न चूकइ ।

नाममाला नइ व्याकरण, कीवा कंठ आभरण ॥ ११ ॥

जोतिष तर्क विचार, जाणइ अंग इयार ।

‘पण्डित’ पदवी विशिष्टा, ‘सोल सत्तरी’ प्रतिष्टा ॥ १२ ॥

‘विसा’ ‘वदो’ वित्त वावइ, ‘अम्हदावाद’ सोहावइ ।

खरची अति घणी आथि, ‘विजयसेन सूरि’ हाथि ॥१३॥

‘जेसिंग’ नुं निरवाण, ‘खंभाडति’ जग भाण ।

पाटि पटोधर पूरो, ‘विजयदेव सूरि’ सूरउ ॥ १४ ॥

‘जेसिंगजी’ पाट दीपइ, तेजि सूरज जीपइ ।

पूरइ संघ जगीस, ‘श्रीविजयदेव सूरीस’ ॥ १५ ॥

भलउ भटारक भावइ, ‘पाटणि’ चउमासु आवइ ।

सोल तिहुतरा वर्षि, ‘लाली’ आविका हर्षी ॥ १६ ॥

प्रौढ़ प्रतिष्टा ते मंडइ, दानि दालिइ खंडइ ।

पोस बहुल छट्टि सार, नही जिहां दोष अढार ॥१७॥

‘श्रीविजयदव’ सूरिदव, सकल सघजि आणदड ।

‘फनफविजय’ फविराय, फीघा श्री उवझाय ॥ १८ ॥

इम जे गुरु नि आराधइ, त मुख सपति साधइ ।

‘विजयदव’ गणधार, भूतलि करड विहार ॥ १९ ॥

साहि ‘सलेम’ उदार, फरवा सुगुरु दीडार ।

‘माडगढ’ गुरु तेड्या, कुमति ना मड फेड्या ॥ २० ॥

दखी ‘तपगठ नाह’, सुमी भयो पातिमाह ।

जगगुरुन पटि पूर, वइ ‘विजय दव’ सूर ॥ २१ ॥

साहि ‘जहागीरी वापइ, नाम ‘महातपा’ आपइ ।

चइक गुरु मोटे, तोडि करइ तहु खोटे ॥ २२ ॥

सुहिरा निसाण गाजइ, पाति ॥ही वाजा वाजइ ।

मिलीया ‘माली’ मघ, ‘दक्षिणी’ श्रावक सघ ॥ २३ ॥

पामरी दोइ पग लागी, षड फसरि आदिइ वागी ।

मिमरु मलमल साइ, पगि पटकूल विछाइ ॥ २४ ॥

बोटी वढ गाठोडा, बलि दोघा घणा घोडा ।

श्रावक श्राविका आवइ, मोती वाले वधावइ ॥ २५ ॥

लोक लाग्य गुरु पूजइ, तहना पातिक धूजइ ।

सुखी नइ पटि दीवउ, ‘विजयदव’ चिरजीवउ ॥ २६ ॥

दोह ।

‘विजय दव’ गुरु गाजता, ‘गूजर’ दगि विहार ।

अनुकमि करता आविया, ‘सौरठ’ देश मझार ॥ २७ ॥

‘मिमलाचल’ तीरय वडउ, सनल तीर्थ शृगार ।

मिहा श्री‘ऋषभ’ समोसर्या, पूर्व नवाणु वार ॥२८॥

तिहा थी आनव उझास२, 'सानली' नगरि 'माह' मासि ।

'अजुआली छट्टि' वलागी,

॥३९॥

तीन मास लगइ गुरु मौनी, अमारि पलावइ 'सोनी' ।

सव मुख 'रतनसी' साह, लीघो ललमी नु लाह ॥ ४० ॥

श्री'कतक विजय' उज्जाय, वलाण करइ मुनिराय ।

पाल२ निज गुरती आण, थास्यइ ते तपगळ भाण ॥४१॥

गुरुभीह विधानि वडठा, पातक पायालि पडठा ।

छट्ट(अ)ठ्ठम करइ अनेक, उपपत्त(उपनास?) घणा सुविनेक ॥ ४२ ॥

आपिल करी धनल२ धानि, पूरव दिसि वडमइ ध्यानि ।

पचलाण जणाना माटि, आपइ अक्षर लिखी पाटि ॥ ४३ ॥

आनक तिहा अगार कपूर, उगाहइ परिमल पूर ।

इण परि आचारय मत्र, आराधइ पूज्य पत्रिन ॥ ४४ ॥

वैसाख मास जय आन० सुहिणइ सुर वात जणावइ ।

वाचक नि निजपट आपउ, गळ भार 'कतकजी' नइ थापउ ॥४५॥

ए वाणि सुणी गुरु हर२ ना, जिम शीतल जल थी तरस्या ।

मह(य)लि बहु मगल क्रीजइ, गुरु आया 'आसातीजइ' ॥४६॥

आव२ तिहा सव अपार, अग पूजा ना अनार ।

दुख दालिद दूरी गमाया, याचक घर सुभर भराया ॥४७॥

'सानली' नइ 'इडरि' जुइ, प्रासाद प्रतिष्ठा हुइ ।

'राय' दणि शोभा लीघी, गुरु दोइ चौमासी क्रीघी ॥४८॥

इवइ 'राजनगारि' गुरु आवइ, चेउमासु सव करावइ ।

बीजु 'धीनीपुर' माहि, गुरु चतुर चउमासु चाह२ ॥४९॥

‘पारणि पुंजाञ्ज’ आवड, ‘सीरोही’ नोह चडावड ।

अग्निव उदयो ‘तेजपाल’, प्राग्वंश निलक ‘तेजपाल’ ॥५०॥
राय ‘अखयराज’ वडह वीर, तेहनि घरि जेह वजीर ।

ते जाह तिहा किणि आवड, गुरुनि वंदो मनि भावो ॥५१॥
करड यात्र ‘विमल गिरी’ केरी, जिणि भाजठ भवनी फेरी ।

आवड ‘कमीपुर’ फेरी, डमकावड ढोल नफेरी ॥५२॥
पूज्य जी नड कहड परधान, एतलुं द्विं मुअनिं मान ।

करि मेल वधारो वानो, गुरुराज कह्युं ए मानो ॥५३॥
गुरु कहड अम्ह मनि नहो खेस, टालड तुम्हे सयल किलेस ।

तिहा लिखित भापित करि लीवा, साहि महु को नि दीवा ॥५४॥
ए लिखित थकी जे चूकड, तेहनिं जगदीसर सुकड ।

मांहो साहि मेल कराव्यड, पुण्यड भंडार भराव्यड ॥५५॥
आचारज ‘विजयाणंदि’, गुरु जी वाचा आणंदि ।

श्री ‘नंदीविजय’ उवझाय, जेहनु मोटड भडवाय ॥५६॥
‘धनविजय’ ‘धर्मविजय’ नाम, वाचक दुड अति अभिराम ।

इत्यादिक मुनि जगजाण्या, पुणिं गुरु चरणे आण्या ॥५७॥
साह कहइ ‘सीरोही’ पधारड, बलि वीनति ए अवधारो ।

‘तेजपाल’ सीरोही आवइ, ‘श्रीविजय देव’ गुण गावडा ॥५८॥

दोहा

‘राजनगर’ थी विचरता. करता संघ कल्याण ।

‘गवदेसि’ गुरु आविया, जिहां राजा ‘कल्याण’ ॥५९॥

‘विजयदेव सूरि’ वड वखत, वाचक पंच समेलि ।

‘ईडरगिरि’ शिर ‘ऋषभ जिन’, भेटयइ हुइ रंग रेलि ॥६०॥

‘ईडरगढ’ मुख मडणउ, साहिब सुख दातार ।

‘गुणविजय’ कहइ भगल करउ, ‘सुमगला’ भरतार ॥६१॥

‘रायदेश’ रलिआमणउ’ ‘ईडरगढ’ सिरदार ।

घरि ० उत्सव अति घणा, फाग रमइ नरनारि ॥६२॥

ढाल—फागनी

तपगठको गुरु राजीयो, रमइ पुण्यनु फाग । ललना ।

परणो समता सुन्दरी, जिनआणा वर वाग । ललना

पुण्य फाग गुरु जी रमइ ॥६३॥

पहिलु पाप पलायना, नेम तप निर्मल नीर । ल०

चुआ चदन चित भलु, छटइ चारित्र चीर ॥ल०पु०६४॥

परपरा आगम वडउ, चढवा तुग तुरग । ल०

ज्ञान ध्यान नेजा घणा लीला लहरि तरग ॥ल०६५॥

सकल सघ सेना मिली, वाज० जग जस ढोल । ल०

वाचक पडित उ वरा, सूरा साधु अडोल ॥ल० । पु० ॥६६॥

इरु दिनि गुरुनि वीनवइ, ‘तपागठ’ परिवार । ल०

एक अम्हारी वीनति, अवधारउ गणधार । ल० । पु० । ६७॥

तपागठ मल तुम्हे करी, कीधु उत्तम काज । ल०

हवइ एक इहा थापीइ, आचारिज युवराज ॥ल०पु०६८॥

आज अना रायण फल्या, आयउ मास वसत ।

चपरु कैतक मालती, वासती निकसत ॥ल०पु०६९॥

तिम अम्ह आशा वेलडी, सफल करउ मुनिराज । ल०

‘कनकविजय’ वाचक वरु, करउ पटोघर आज ॥ल०पु०७०॥

वलता गळ भूपति भगड, जोड महुरत सुद्धि ।ल०।

आचारय वाचक वलि, वलि जोभी बहु बुद्धि ॥ल०पु०७१॥

सन मान्युं महुरत मल्युं, शकुनादिक नी शाखि ।ल०।

‘अजुवाली छट्टि’ अति भली, वडि मास ‘वैशाखि’ ॥ल०पु०७२॥

गुरुजी नइ सहु वीनवड, ए छड दिवस पवित्र ।ल०।

सोमवार सुहामणा, रुंडु पुण्य नक्षत्र ॥ल०पु०७३॥

‘ईडर’संघ शिरोमणि, ‘सोनपाल’ ‘सोमचन्द’ ।

अधिकारी सा ‘सूरजी’, सुत ‘सादूल’ अमंद ॥ ल० ।पु०७४॥

‘सहसमल’ ‘सुन्दर’ भला, ‘सहजू’ ‘सोमा’ जोडि ।ल०।

‘धन जी’ ‘मनजी’ ‘इंदुजी’, ‘अमीचंद’ नहि खोडि ॥ल०पु०७५॥

चासी ‘राजनगर’ तणा, संववी ‘कमलसीह’ । ल० ।

‘पारिख’ ‘अहमदपुर’ तणा, ‘वेला’ सुत ‘चापसींह’ ।ल०पुण्य०७६।

‘पारिख’ ‘देवजी’ ‘सूरजी’, ‘धान सींग’ ‘रा(य)सींग’ । ल० ।

साह ‘भामा’ ‘तोल्हा’ भला, साह ‘चतुर्भुज सिंव’ ।ल०पुण्य० ७७ ।

‘जागा’ ‘जसू’ ‘जेठा’ भला, भाई गुरु ना होड । ल० ।

‘कोठारी’ ‘मंडण’ मुखी, ‘वछराज’ रहिया जोइ ।ल०पुण्य०७८।

‘कर्मसीह’ नइ ‘धर्मसी’, ‘तेजपाल’ समउ न कोइ । ल० ।

‘अखयराज’ राचा वरु, मंत्री ‘समरथ’ सोइ ।ल०पुण्य०७९।

मंत्रि ‘लखू’ नइ ‘भीमजी’, ‘भामा’ ‘भोजा’ जोइ ।ल०।

‘फडिआ’ ‘भालजी’ ‘भाणजी’, ‘लखा’ ‘चोथिआ’ दोइ ।ल०पुण्य०८०

‘गांधी’ ‘वीरजी’ ‘भेवजी’, तिम वलि ‘वीरजी’ साह ।ल०।

‘देवकरण’ ‘पारिख’ ‘जसू’, उ करडि उछाह ।ल०पुण्य०८१।

‘भाणजी’ शाह ‘सूरजी’, तिम वली ‘तेजपाल’ ।ल०

इत्यादिक ‘इडर’ तणउ, मिल्यउ सघ सुविगाल ।ल०पुण्य०।८०।

‘घाणड’ सत्र सहु मिल्यो, ‘अहिम नगर’ नु सघ ।

‘सावली’ नु सघ सामठउ, ‘पटमसिह’ ‘चापसीह’ ।ल०पुण्य०।८३।

साह ‘नागर’ सुत हवि तिहा, ‘सहजू’ साह उदार ।ल०

दानि मानि आगलउ, ‘इडर’ शोभाकार ।ल०पुण्य०।८४।

शिणगारी निज घर घगु, तड्या ‘तपगज’ नाथ ।ल०

पट्ट देवान कारणि, सघ चतुविध साथि ।ल०पुण्य०।८५।

इण अवसरि बोलविआ, ‘धर्मविजय’ उवज्ञाय ।ल०

‘लावण्यविजय’ नामड वलि, वारु वाचक कहाय ।ल०पुण्य०।८६।

चर चारित ‘चारित्रविजय’, वाचक कुल कोटीर ।ल०

चोथा पण्डित परगडा ‘कुशलविजय’ वजीर ।ल०पुण्य०।८७।

‘कनकविजय’ वाचक तुम्हो, तेहउ एणि आवासि ।ल०

तब ते च्यार मलपता, पुहता वाचक पास ।ल०पुण्य०।८८।

ऊठउ तुम्ह तुठउ गुरु, निज पद दिइ सुविवेक ।ल० ।

विजयवत वाचक वडइ, गुरनि शिष्य अतक ।ल०पुण्य०।८९।

तुम्हे कहउ छउ ते सहो, पणि तुम्ह पुण्य अपार ।ल० ।

लछि आवती लीजीइ, गुरुजी छइ गछ भार ।ल०पुण्य०।९०।

इम गुरु चरणे आणिया, माणस दसइ थाट ।ल०

‘होरइ’ जिम ‘जेसिघजी’, तिम थाप्या गुरु पाटि ।ल०पुण्य०।९१।

वास थाल तत्र आणीउ, सा० ‘सहजू’ अभिराम ।ल०

वास ठवइ गुरुजी करइ, ‘विजयसिंह सूरि’ नाम ।ल०पुण्य०।९२।

‘कीरतिविजय’ ‘लावण्यविजय’, वाचक पद दोड दीछ ।

आठ विवुध पद थापीआ, मया सुगुरु डम कीछ । ल०पुण्य०१६३।
श्रीफल करी प्रभावना, जीमण वार अवार ।

महमूदी ‘सहजू’ तिहा, खरची पंच हजार । ल०पुण्य०१६४।
‘कल्याणमल्ल’ राय रञ्जिआ, ‘इडर नगर’ मझार । ल०

सा० ‘सहजू’ उत्सव करइ, वरत्यो जयजयकार । ल०पुण्य०१६५।
वलि ज्येठ माहि तिहा, विभ्र प्रतिष्ठा एक । ल० ।

सा० ‘रहीआ’ उत्सव करइ, खरचइ द्रव्य अनेक । ल०पुण्य०१६६।
वीजइ पखवाडइ वली, अमराउत जस लिछ । ल०

‘पारिख’ ‘देवजी’ नी घरि, पूज्य प्रतिष्ठा किछ । ल०पुण्य०१६७।
संवत ‘सोल इक्यासो(य)ड’, उत्सव हुआ आणंद । ल०

‘विजय देव सूरि’ थापीआ, ‘विजयसिंह’ सूरिंद । ल०पुण्य०१६८।
धवल मंगल दिइ कुल वहू, वाजइ ढोल नीसाण । ल०

‘विजय देव’ गुरु पाटवी, प्रगटिउ तप गठ भाण । ल०पुण्य०१६९।
गुरु आचारज जोडली, ‘इडरगढ़’ चउमासि । ल०

राय ‘कल्याणइं’ राखीआ, पहुंचाडो मन आसि । ल०पुण्य०१७०।

दोहा :

एहवइ ‘सीर (ही)’ थकी, तेडइ सा ‘तेजपाल’ ।

‘आवू’ पूज्यं पधारिइं, चैत्र मास सुर साल ॥१॥
तेह वोनति मन धरी, गुरुजी करइ विहार ।

सघ लोक बहुला मिलइ, उत्सव करइ अपार ॥२॥
साम्हा आवइ ‘साहजी’, ‘दोसी’ ‘जोधा’ जोडि ।

संघवी ‘मेहाजल’ मिली, गुरु पूजइ कर जाडि ॥३॥

गुरु उपरि करड लूठणा, साह दिइ तरल तुरग ।

घणा सघ स्यु गुरु करड, 'आबू' यात्रा जग ॥४॥

'गुण प्रिय' कहइ जग जम लि(य)उ, धन ० 'विमल' नरिंद ।

जिण 'अधुय' गिरि थापीउ, 'मरु दवी' नु नद ॥५॥

'अर्जुन' गिरि तीरथ करी, 'वभणवाडि' वीर ।

सुगुरु 'सीरोही' आविया, जाणे अभिनवी'हीर' ॥६॥

चौमासु गुरुजी करइ, 'सीरोही' सुखठाम ।

'तेजपाल' शाह प्रमुख सहु सघ करइ शुभ काम ॥७॥

विजय दसमी दिन दीपतु, 'विजयदेव' गुरु पास ।

'विजयसिंह सूरी' तणो, गायउ विजय प्रकाश' ॥८॥

राग :—धन्याश्री ।

महावीर जितपाटि पुरधर, स्वामि 'सुप्रमा' सोहइजी ।

'जबू' 'प्रभर' शय्यभव' सूरिय, 'थसोमद्र' मन भोहइजी ॥

डम अनुकामि 'जगचद्र' महामुनि, च्युआलीसमि पाटिजी ।

'तपा' विरुद तस राणइ थाण्यु, मेदपाटि 'आघाटि' ॥९॥

तिणि तप गणि गुणवन्नि पाटि, 'देवसु द्र' सुखकारीजी ।

पचासम पाटिइ गुरु सुन्दर, 'सोमसुन्दर' गणधारोजी ॥

तह चकी उपन्तमि पाटि, 'आणदविमल' मुणि इदोजी ।

'तपागळ' जेणि तिरमल कीवउ, जिसो आसो० चदोजी ॥१०॥

सत्तावनमि पाटि परम गुरु, 'प्रियशान' वैरागीजी ।

अष्टावनमि पाटि हीरो, 'हीरजी' गुरु सोभागीजी ॥

उगुणसद्विमि पाटि पुरन्दर, 'विजयमेन' गद्य धोरीजी ।

पाटि साद्विमि 'विजयदेव' गुण, गुण गावड मुर गोरीजी ॥११॥

'हीर' 'जमंगजी' पाट दीपावड, 'विजयदेव मृगि' भोंहोजी ।

पूजा नाम कर्म तप थगिट, रावड तप गद्य लोहोजी ॥

तप पट दीपक रति पतिजी, एक 'विजयसिंह' मुरीमोजी ।

डकभठमि पाटि पुरपोत्तम, पूरड संघ जगोभोजी ॥१२॥

'सोलव्याभोधा' वर्षि र्षि, 'भीरोती' सुव पावडजी ।

'अपभदेव' प्रमु, पाय पमायड, 'विजयसिंह मृगि' गावोजी ॥

'कमल विजय' जय मंडित पडित, 'विशविजय' गुण चेलोजी ।

'सुधाविजय' पण्डित एम पयपड, वावड तपगद्य चेलोजी ॥१३॥

अति श्रीविजयसिंह मृगि विजय प्रकाश नाम रासि (संपूर्ण)

(धत्र ११ श्री तत्कालीन लिखित, जयचंद भण्डार वं० नं० ६६)



ऐतिहासिक जैन कव्य संग्रह चतुर्थ विभाग

(विभाग न० १ की अनुपूर्ति)

कवि पल्ल विरचिता।

जेसलमेरभाण्डागारे ताडपत्रीया खरतर पद्मावली

॥ श्री जिनदत्त सूरि स्तुतिः ॥



जिण दिट्ठइ आणदु१ चडइ अइर रहमु चअणुणु ।

जिण दिट्ठर क्षडइ पाउ तणु निम्मळ हुइ पुणु ॥

जिण दिट्ठइ सुहु होइ कट्टु पुवुक्किउ नासइ ।

जिण दिट्ठइ हुइ रिद्धि दूरि दारिइ पणासइ३ ॥

जिण दिट्ठइ हुइ सुइठे धम्ममड अणुहुहु काइ उरएहु५ ।

पहु नव फणि मडिउ 'पाम' जिणु 'अजयमेरि' किन पिअएहु६ ॥१॥

मयण मकरि धरि धणुहु वाण पुणि पच म पयडहि ।

रूविण७ पिम्म पयावि वम हरि हरु मन(त) पिनडहि ॥

रूउ८ पिम्मु ता वाण मयण ता दारिसहि थणुहर ।

नम(व) फणि मडिउ सीसि जाव नहु पअएहि जिणनरु ॥

१ आनद, २ अहरवड, ३ पनासइ ४ सह, ५ उइ खहहु, ६ पिअएहु,
७ भूविण, ८ भूउ

जइ पडिहसि 'पास' जिणिद वसि नाणवंतइ निम्मल रयण ।
 न सु धणुहरु बाण न रूव१० नहि न रूय११पिंमु हुइ हइमयण ॥२॥
 नम (व) फणि 'पास' जिणिदु गढिउ अन्नलि जु दिइउ ।

'अजयमेरि' 'सभरि१२नरिंदु' ता नियमणि तुइउ ॥
 कं'वणमउ अइ१३ कलसु सिहरि साणउ रञ्जविअउ ।

जणु सुतरणि तउ१४ तवइ तिंवु (त्थु) आयासि सउन्नउ ॥
 जा वुक्कमिसिण ढक्कारविण करु१५ उब्भिवि फरहरइ धय१६ ।
 'जिणदत्तसूरि' धर धम(व)लि जसि तापसिद्धि सुर भुयणि१७ कय ॥३॥
 'देवसूरि पहु' 'नेमिचंदु' बहु गुणिहिं पसिद्धउ ।

'उज्जोयणु' तह 'वद्धमाणु' 'खरतर' वर लइउ ॥
 सुगुरु 'जिणेसरसूरि' नियमि 'जिणचंदु' सुसंजमि१८ ।

'अभयदेउ' सव्वंगु नाणि 'जिणवल्लहु' आगमि ॥
 'जिणदत्तसूरि' ठिउ पट्टि तहि जिण उज्जोइउ जिण-वयणु ।
 सावइहिं परिकिखवि परिवरिउ मुल्लि महगवउ जिव१९रयणु ॥४॥

वणुहर धयवड२० वरिय सारि सिंगार सुसज्जिय ।
 सोहगिण गुडगुडिय पंच(व)र पडिम निमज्जिय ॥

ति(नि)यइ (रू)अ तेअ गगलिय२१ पिंम पडिकार निरुत्तिय ।
 २३ रणरह सुच्चलिय२२ गरुय माणिण म अमन्निय२३ ॥

करि कडयड२४ मुणि महिवइहिं रहिय रूवय संपुन्न भय ।

'जिणदत्तसूरि सीहह' भयण मयण करडि२५ घड विहडि गय ॥५॥

९ दंत, १० भूव, ११ भुय, १२ संभारि, १३ अह, १४ तओ, १५ कर
 उज्जिवि, १६ धर, १७ भवणि, १८ सुसंयमि, १९ जिम २० धरय, २१
 आगलिय, २२ सुवलिय, २३ मइ अन्निय, २४ कडसड, २५ हकर धियइ,

तव तलप्फ भीसणह् धम्म धीरिमसुरिम२६ सुविसालह् ।

सजम सिर भासुह् दुसहद(व)य दाढ करालह् ॥

नाण नयण दारणह् नियम निरु२७ नहर समिद्धह् ।

कम्म कोय(व)नि२८ह् विमलपह् पुच्छ पमिद्धह् ॥

उपसमण उयर२९ धर दुब्बिसह् गुण गुजारव जीह् ।

‘जिणदत्तसूरि’ अणुसरहु पय पा३०-रडि-घड-सीह् ॥६॥

जर-जल वहल-रउहु लोह-लहरिहि गज्जतउ ।

मोह मच्छ ३१-लिउ कोव फड्ढोल वहतउ ॥

मयमयरिहि परिवरिउ वच चहु चल दुमचर ।

गव्व३० गरुय गभीरु असुह् आवत्त भयफर ॥

ससार समुहु३१ जु णरिमउ जमु पुणु पिन्वियवि ठरियइ ।

‘जिणदत्तसूरि’ उअएसु मुणि पर तभड्डइ३३ तरियइ ॥७॥

सानन किवि कोयलि३ फवि सरह३४ (य?) रिय पसिद्धिय ।

ठाइ ठाइ लक्खियइ३५ मूढ निय वित्ति विरद्धिय ॥

दरहि न किवि पर३६ वविसु परप्परु जुञ्झहि ।

सुयुरु सुयुरु मणि मुणिवि न किवि पट्ट तर जुञ्झहि ॥

‘जिणदत्तसूरि’ जिन नमहि पय पउम मच्छु३७(गव्वु) निअमणि वहहि

ससार उयहि दुत्तरि पडिय ‘तिनहु’३८ तरहइ चडि तरिहि ॥८॥

तव सजम सयनियम-धम्म-कमिण वावरियउ ।

लोह-कोह मय-मोह तहव मन्त्रिहि परिहरियउ ॥

२६ सूवि, २७ सनहए, २८ निट्टुरह, २९ उपर, ३० गय, ३१ समुहु
३२ सुणित, ३३ सुतरियइ, ३४ सरतरिय, ३५ लक्खियहि, ३६ परत्त,
३७ सच्छु, ३८ जिनहु

विसम छंदलक्ष्मणिण सत्थ अत्थत्थ विसालह ।

‘जिणवल्लह’ गुरुभत्तिवंतु पयड्ड कलिकालह ॥

अन्निहि वि गुणिहि संपुन्न तणु दीन दुहिय उद्धरणु धर ।

‘जिणदत्तसूरि’ ‘पर पल्लभ(?)णु तत्तवंतु सलहियइ धर ॥६॥

वक्खाणियइ त परम ततु जिण पाउ पणासइ ।

आरहियइ त ‘वीरनाहु’ कइ ‘पल्लहु’ पयासइ ॥

धम्मु तु दय संजुतु जेण वरगइ पाविज्जइ ।

चाउ त अपाखंडियउ जु बंदिणु सलहिज्जइ ॥

जइ ७७३६ त उत्तिमु मुणिवरहवि (पवर वसहिहो चउर नर ।

तिम सुगुरु सिरोमणि सूरिवर ‘खरतर सिरि’ ‘जिणदत्त’ वर ॥१०॥

१ इति श्री पट्टावली ५८ पदानि । संवत् ११७० वर्षे अश्व युगाद्य पद्ये ११ तिथौ श्री मद्धारानगर्यां श्री खरतर गच्छे विधिभार्गा प्रकाशि वसतिवासि श्री जिणदत्त सूरीणां शिष्येण जिनरक्षित साधुना लिखितानि ।

२ इति श्री पट्टावली ॥ संवत् ११७१ वर्षे पत्तन महानगरे श्री जयसिंह देव विजयिराज्ये श्री खरतरगच्छे योगीन्द्र युगप्रधान वसति वासि जिनदत्त सूरीणा शिष्येण ब्रह्मचंद्र गणिता लिखिता ॥ शुभं भवतु श्री मत्पार्श्वनाथाय नमः सिद्धिरस्तु ॥



॥ श्री नेमिचन्द्र भण्डारि कृत ॥

जिन वल्लभ सूरि गुरु गुणवर्णन



॥६०॥ षणमपि सामि वीरजिणु, गगहर गोयमसामि ।

सुधरम सामिय तुलनि, सरणु जुगप्रधान सिवगामि ॥१॥

तित्तु रणुद्ध स मुणिरयणु जुगप्रवान क्रमि पत्तु ।

जिणवल्लह सूरि जुगपवर, जसु निम्मलउ चरित्तु ॥२॥

तसु सुहगुरु गुणकित्तणइ सुरराओवि अममत्थो ।

तो भत्ति भर तर लियो, कहिउ कहिसु हियत्तु ॥३॥

कह भवसायर दुहपवरु, वह पत्तउ मणुयत्तु ।

कह जिणवल्लहसूरि वयगु, जाणिउ समय-पनित्तओ ॥४॥

कह सुभोह मणउलसिय, कह सुद्धउ सामन्नु ।

जुगसमिला नाएग मइए, पत्तउ जिण-विहि-तत्तु ॥५॥

जिणवल्लहसूरि सुहगुरहे, बलिकिज्जउ सुरगुरुराय ।

जसु वयणे विजाणियइ तुट्टइ कम्म कमाय ॥६॥

मूढा मिल्लहु मूढ पहु, लागहु सुद्धइ धम्मि ।

जो जणवल्लहसूरि कहिओ, गच्छहु जिम सिवधरमि ॥७॥

अयीर माय-पिय वयनह, अथार रिद्धि िहभसु ।

जिणवल्लहसूरि पय नमआ, तोडइ भव दुह पासु ॥८॥

परसप्पणय न केवि गुरु, निम्मल धम्मह हुंति ।

सव्व तिदस पुर मन्निअइं, जे जिणवयण मिलंति ॥६॥

गुरु गुरु गाइवि रंजियइं, मूढा लोउ अयाणु ।

न मुणइ जं जिण आण विणु, गुरु होइ सत्तु समाणु ॥१०॥

जिम सरुणाईय माणुसह, कोइ करइ शिरछेओ ।

न मुणइ जं जिण-भासियओ, तिम कुगुरुह संजोओ ॥११॥

हुंडा अवसप्पणि असम गहु, दूसम काल किलिक्कु ।

जिणवल्लहसूरि भडु नमहु, जेण उसुत्तु न सिद्धउ ॥१२॥

जो जिह कुलगुरु आइयउ, तहि ते भत्ति करंति ।

विरला जोइवि जिणवयणु, जहि गुण तहिं रज्वंति ॥१३॥

हाहा दूसम काल बलु, खल-वक्कतण जोइ ।

नामेणइ सुविहिय तणइ, मित्तुवि वयरिओ होइ ॥ १४ ॥

तिहि चेडाहि विहउं नमओ, सुमुणिय परम उग्राह ।

हियउइ जिण विहिक्कु पर, अनुसुद्धउ गुण जाह ॥१५॥

जे जिणवरु पहु हीलियइ, जणु रजियइ हयासुं ।

सो वि सुगुरु पणभंतह, कुट्टिल हियइ हयासु ॥ १६ ॥

मरिय भवे जिओ वीर जिणु, इक्कि उसुत्त लवेणु ।

कोडाकोडि सागर भमिओ, किं न सुणहु भोहेण ॥१७॥

तव संजम सुत्तेण सउ, सव्ववि सहलउ होइ ।

सो वि उसुत्तलवेण सउ, भव-दुह-लक्खहं देइ ॥ १८ ॥

माया मोह चएउ जण, दुलहउं जिण विहि-धम्मं ।

जो जिणवल्लह सूरि कहिओ, सिग्घं देइ शिव-संमुं ॥१९॥

ससओ कोइ म करहु मणि, ससइ हुइ मिच्छु ।

जिणब्रह्मसूरि जुग परर, नमहु सु त्रिजग-परिच्छु ॥२०॥

जई जिणब्रह्मसूरि गुरु, नय दिओ नयणेहिं ।

जुगपहाणउ विजाणियए, निठई गुण-चरिएहिं ॥२१॥

त धन्ता सुकन्थ नरा ते ससार तग्नि ।

जे जिणब्रह्मसूरि तणिय, आणा मिये वहति ॥ २२ ॥

तेहि न रोगो दोहगु तहु, तह मगल पहाणु ।

जे जिणब्रह्मसूरि थुणिहि, तिन्नि सझ सुविहाणु ॥२३॥

सुविहिय मुणि चूडा रयणु जिणब्रह्म तुह गुणराओ ।

इक्क जीह किम सयुणेउ, भोलओ भक्ति सुहाओ ॥ २४ ॥

सपड त मन्तामि गुरु, उगाउ उगाउ सूर ।

जे जिणब्रह्म पउ कहहि, गमइ अमगाउ दूरि ॥ २५ ॥

इक्क जिणब्रह्म जाणियइ, सट्ठुनि मुणियइ धम्मु ।

अनसुहु गुरु सवि मानयड, तित्थ जिम धरइ सुहसु ॥२६॥

इय जिणब्रह्म युड भणिय, सुणियइ करइ कल्लाणु ।

दओ घोहि चउतीस जिण, सासय-सोम्भु निहाणु ॥ २७ ॥

जिणब्रह्म व्रमि जाणियइ, हिवमइ तसु सुशीसु ।

जिणदत्तसूरि गुरु जुगपवरो, उद्धरियउ गुरुवसो ॥२८॥

तिणि नियपर पुण ठावियओ, बालओ सौंइ किसोम् ।

पर-मयगल-उल-दलणु, जिणचदसूरि मुणीसर ॥ २९ ॥

तम सुपट्टि हिय गुरु जयओ, जिणपति सूरि मुणिराओ ।

जिणमय विहिउज्जोय करु, दिणयर जिम विम्भओ ॥३०॥

पारतंतुविहि विसयसुहु, चीरजिणेसर वयणु ।

जिणवड सूरि गुरु हिव कहओ, मिच्छड अ. पुन्न कवणु ॥३१॥

धन्न तडं पुरवर पट्टगडं, धन्न ति देग विचित्त ।

जहिं विहरड जिणवडसुगुरु, देसण करड पवित्त ॥३२॥

कवण सु होसइ देसडओ, कवण सु निहि स भुहुत्त ।

जहि वंदिसु जिणवड सुगुरु, निसुण सुधम्मह तत्त ॥३३॥

सल्लुद्धार करेसु हड. पालि सुदड्डं सम्मतो ।

नेमिचंद इम विनवडए, सुगुरु-गुण-गण-रत्त(त्तो) ॥३४॥

नंदउ विहि जिण मंदिरहि, नन्दउ विहि समुदाओ ।

नंदउ जिणपत्तिसूरि गुरु, विहि जिण धम्म पसाओ ॥३५॥

इति नेमिचंद भंडारि कृत गुरु गुणवर्णन ॥



कवि ज्ञानहर्ष कृत

श्रीजिनदत्तसूरि अवदात छप्पय

वत ज्ञान रिक्ख थिर ॥२१॥

जनम भयउ प्रातकउ, नामदियउ चाचक ताकउ ।

दुआदस वरस जन भए, कर्यउ राज 'कनवज' अनाकउ ॥

चढे 'सीह' 'द्वारिका', जाति करणण कु निचल ।

लयउ कुयए 'आसथान', राणी जाट्ट कउ अट्टल ॥

राव 'वरनाथ' साहसीक मणि, जाति चले 'सीह' 'द्वारिका' ।

'ज्ञानहर्ष' लहे पचसै सुहड, परमु पर दल मारका ॥२२॥

अस्सुवान सइ पच लेहु, 'सीहउ' यू चएले ।

पट्ट यप्पि एहु अनुज, सुहड सग एएले भएले ॥

सवहु सु करि भिक्ख, म 'द्वारामति' डेर ।

दिद्ध 'सीह' महाराज, सुप्पम(व्र?) मट्टरत सनर ॥

'आसथान' कुवर आसाढ सिधि, लेहु सग दरकूच चलि ।

'ज्ञानहर्ष' कहइ तिस वार त्रिच भयउ इक्क अचरिज्ज इलि ॥२३॥

'सीह' आए 'मरुदेस', सुपन इक देख्यउ रानी ।

वृथ पाहर सन देम, हम्म अन्तरि वीटानी ॥

वज्जण सुणि 'सीह' यू, चोट वाही हुड समु । ।

दिवस अगत 'सीह' कहत, हुइगउ कर अपणउ जहा तहा ॥

मम करहु राणी क्रोध हम, नीद गमावग हेत ह्य ।

ज्ञान हए वदति तिस हेत करि, भए रात्र वर सब्ब भूय ॥२४॥

अत्र आख्यान कवित्त ।

‘माल्यारि’ कइ देसि, सहिर ‘पल्लीपुर’ अन्धुं ।

तहा हउ पुर नाह, वं(वं?)भ ‘जगसोहर’ दक्खुं ॥

‘खेरनगर’ ‘महेंग’, ‘गुहिल-वंगी’ हउ राजा ।

नारण ‘पल्लीनगर’, चट्यउ सो करत दिवाजा ॥

तिनवार ‘वंभ जस्सोहर’, वट्टे वयुंहि ‘पल्ली’ रहइ ।

कोऊ रखुं आणि आपाढ मियि, ‘ज्ञानहर्ष’ कवि यूं कहइ ॥२५॥

‘पह्लिनगर’ चउभास, रहे खरतर गच्छ नायक ।

तिन गुरु कउ जस बहुत सुण्यउ, विप(प्र ?) लोकां वाडक ॥

ताकउ नाम ‘जिनदत्त सूरि’, मंत्र धारी सूर वर ।

पंच नदी पंच पीर, साधि लिछउ सुर कउ वर ॥

‘माणभद्र’ जक्ख हाजर रहइ, तगउ खरउ सेवा कइ ।

‘ज्ञानहर्ष’ कहइ गुरु कित्त बहु, पार न सुर गुरु नहु करइ ॥२६॥

गुरु पहंचे ‘मुलतान’, पीर पंच आए नाम सुणि ।

पत्थर पारे पीर, गुरु वरसे कंचण मणि ॥

पीर प्रहे गुरु पाड, संघ पइसारउ कीनउ ।

भूयउ मुगल कउ पूत, जीउ गुरु वाले दीनउ ॥

सहु लोग देखि अचरिज भए, इन गुरुका अवदात बहु ।

‘ज्ञानहर्ष’ कहत ‘जिनदत्त’ की, करत देव कीरत सहु ॥२७॥

गुरु करत बरखण, धरे आगे चउसठि गिणी ।

छोटेसे पाटले, आइ बइठी तिहां जोगिणि ॥

चउसठि तिय कइ रूप, आई गुरु छलयइ कु ।

गुरु यू तिण कू उली, लेहु उठा पटलइ कु ॥
पट्टे रहे आसण चढे, करामत गुरुकी वडी ।

‘ज्ञानहर्ष’ क०त कर जोडि कर, रही देव चउसठ सडी ॥२८॥
करहु दूर पाटले, गुरु हारे हम तुम्ह पइ ।

चाहीजइ कतु वात, लेहु गुरु यू तुम हम पइ ॥
कहइ गुरु हम साधु, लोभ मरुता नहीं करना ।

परतिस भइ तत्र देव रूप बहु चउसठि भइना ॥
वर सात दइत हरिसित भइ, सहु लोगा सुणता समुप ।

‘ज्ञानहर्ष’ कहत अवदात यउ, परसिध हइ सत्र लोक मुग ॥२९॥
हइ हइ देव वर मत्त, नाम गुरु लेता त्रिजुरी ।

परइ नहो कस परइ, प्रथम अ्यउ वर वइ सगरी ॥
गाम नगर मणिमत्य, एरु हुइगउ तुम्ह आवग ।

तुम आवग ‘सिन्धु’ गयउ, स ट ल्यावइ व्यापारग ॥
वर चउयउ भूत प्रेत ज्वर, आधि व्याधि सनही तरइ ।

‘जिनदत्तसूरि’ मुखि जप्पता, ‘ज्ञानहर्ष’ कवि उच्चरइ ॥३०॥
चोर वाडि सकृ मिटति गुरु नामे पञ्चम वर ।

छट्टउ जलहु तरइ, जउ लू मुख समरइ सदगुर ॥
सातमउ वर साधवी, ऋतु नावइ सरतर की ।

अ्यउ वर दे पग परी, वात सहु कही कइ डरकी ॥
समरता आइ खडी रहइ, वीर वाचन्ने परवरी ।

‘ज्ञानहर्ष’ कहत निस निति प्रतइ, करइ नृत्य चउसठ सुरी ॥३१॥

‘उज्जेनी’ गुरु गण, देवि थाभड गुरु हरख ।

जप्यउ मन्त्र करि ध्यान, लिह पोथी आकरखे ॥

तिस विच सोवन लिह, गुरु वहु विद्या पाउ ।

‘चित्रोर’ कड भण्डार, तथा गुरु जाड रखाड ॥

एम पोथी की वान, ‘कुंवरपाल’ राजा मुणी ।

‘ज्ञानहर्ष’ कड ‘पाटणनगर’ नवनव अमवारां धनी ॥३२॥

‘कुंवरपाल’ जितवर्म, हड आचरक पुनम गच्छ ।

आचरक सर्व बुलाड, संघ नायक खरतर गच्छ ॥

गुरु यू कुं तुम लिखड, हेम मिय पोथी आवड ।

कागड संघ दरहाल, भेज पोथी मंगावई ॥

गुरु लिख्यउ वचन पोथी परड, छोर न पोथी वाचनी ।

‘ज्ञानहर्ष’ कड भण्डार विच, रस्य कड पोथी पूजनी ॥३३॥

गुरु ‘कुंवरपाल’ कड, ‘हेम’ नामड आचारिज ।

तिण पड पोथी धरी, छोरि वाचउ गुरु आरिज ॥

कहत गुरु हेम वतड, अ्या छोरी नवि जावड ।

साधवी गुरु की भडन, छोरितां अँख गमावई ॥

पुस्तकिक उडि भण्डार विच, ‘जेमलमेरन’ कड परी ।

‘ज्ञानहर्ष’ कडत तिम जाडगा, रकखड बहु चउमठ सुरी ॥३४॥

परकमणइ विच बीज, परत रकवी गुरु ततखिण ।

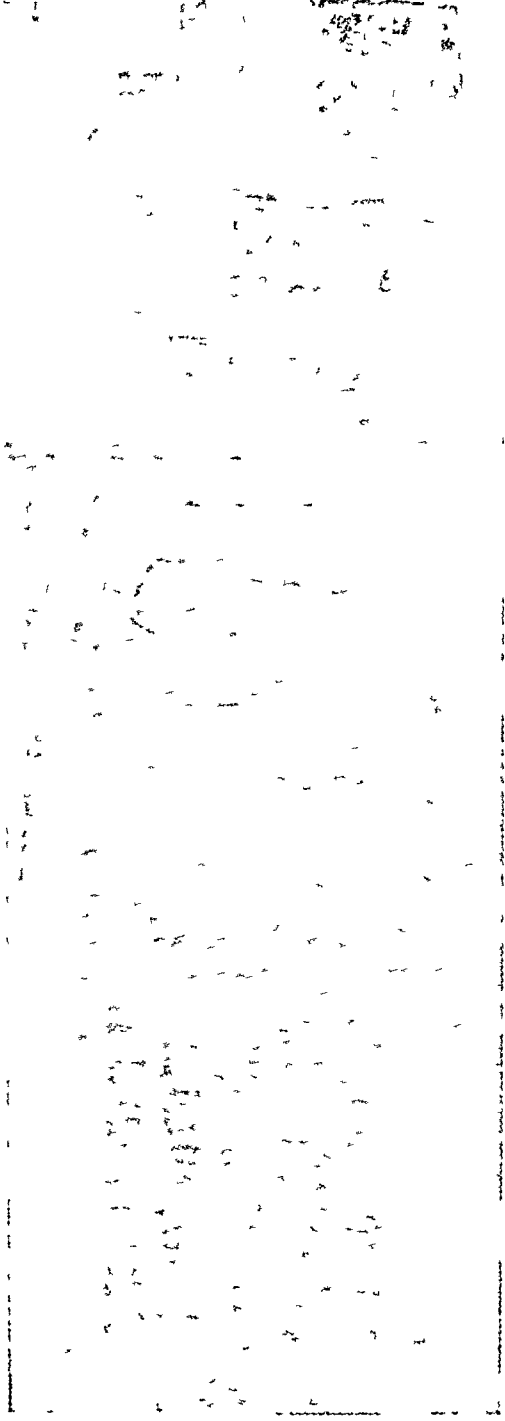
‘वित्रंपुर’ परी सृगी, गमी गुरु स्तोत्र तंज्यउ भण ॥

पतरइसइ गृइ तथा, महेसरी डागा लूण्या ।

परबोधे आवक, ॥

१७ वीं शताब्दी लि० (इस प्रतिका सातवा मध्य पत्र हमारे संग्रहमें)

पेटिह सिन जिन कठ संग्रह



श्री जिनेश्वर सूरिजी

(श्री जिनपति सूरि शिष्य)

Copyright Sarabhai M Nawab

कवि सोममूर्ति गणि कृत
श्रीजिनेश्वरसूरि संयमश्री विवाह
वर्णन रास ।

चित्तामणि मण१ चितियत्ये,२ मुहियइ३ धरविणु पास जिणु ।
जुगपवरु 'जिणोसरसूरि' सुणिराउ,थुणिसु हउ ४ भत्ति आपणउपगुरु १।
निय हियइ२ ठवहु वर उमोतिय हारु, सुगुरु 'जिणोसरसूरि' चरिय ।
भविय जण जेण सा मुत्ति वर कामिणी, तुम्ह वरणमि उक्क ठियए८ ॥२०॥
नयर 'भरुकोटु' मरुदेसु सिरिजर मउडु, सोहए६ रयण कचण पहाणु ।
जत्थ वज्जति नय मेरि भकारओ,१० पडिउ अन्नस्स११ हियए
धसकको१२ ॥३॥

कन दसण कला वलि आवासु१३, महुर वाणी (य) अमिय झरतो ।
रहए तत्थ भण्डारिओ पुन्निमा,१४ चद जिम 'नेमिचदो' ॥४॥
सयल जण नयण आणद अमिय-छडा, रुव लावणण सोहगचग१५ ।
पण२गी 'लसमिणी' तामु वक्खाणि,१६

पवर गुण गण रयण एग१७ खाणि ॥५॥

१० मणि, २० चि वियत्ये ३० मुहियय ४० इड, ५० आपणउ, ६०
दियय, ७० मोतिया, ८० मोतिय ८०इ, ९० सोहइ, १०० भकारउ, ११० अ नय
स्स, १२० धसको, १३० आ तास १४० राउ पुनिम, १५० चद, १६० वर-
काणि, १७० एक थाणि ।

वार पञ्चताल१८ विक्रम१६ संवच्छरे, मग्गामिर सुद्ध ण्णारसीए२० ।

‘लखमा’ए विहि पुत्तु उपन्नु, नेमिचंद कुल मंडणउ [ए+] ॥६॥

‘अंवा’ए विहि सुभिणउ२१ दिन्नु,२२

एउ२३ अम्हाणउ२४ मणिर२५ धरिविर६ + ।

‘अंबडु’२७ नामु२८ तसु कियउं२६ पियरेहि,

रंग भरि गरुय-वद्धावणाए३० ॥७॥

धात्तः अत्थि पुहविहि अत्थि पुहविहि नयर ‘मरुकोटु’,३१

भंडारिउ तहि३२ वसए, ‘नेमिचंदु’ गुण रयण सायर ।

तस भञ्जा ‘लखमिणि’, पवर सील+ [वंत] लावन्न मणहर ॥

तह३३ उप्पन्नउ पुत्तु वरो,३४ रूविणि३५ देवकुमारु ।

‘अंबडु’ नाउं३६ पयट्टियउ,३७ हूयउ जय जय कारु ॥८॥

अन्निउ८ दिसहो अंबडु कुयर, पभणउ३६ मायह४० अग्गड धीरु ।

इहु संसारु दुहह४१ भंडारु,

ता हउं४२ मेलिहसु४३ अतिहि४४ असारु४५ ॥ ६ ॥

परणिसु संजम४६ सिरि वरनारी,

माइ माइए४७ मज्झु४८ मणह पियारी ।

१८b पचेताल, १९b विक्रम a विक्रम, २०b इकारसीए, २१b सुभिणए, २२b दोनु, २३b c एहु, २४b c अम्हारउ, २५a मणु b मनि, २६b c धरेवि, २७b c अंबडो, २८b नाउं, २९b कियड, ३०b c वद्धावणाए ।

३१c गरुकोटु, ३२a तह, + ab प्रति, ३३c तस उपन्न, ३४a पुत्तुवरु, ३५a b रूविणि, ३६a नामु, ३७a पयट्टिय, ३८b अन्निहि दिवसिहि अंबडु कुमर, c अन्निदिवसिहुउ अंबडु कुमरो, ३९a पभणय, ४०b माया अग्गड धीरु (c रोह), ४१a b दुह, ४२a c ता हउ, ४३a मिलिहसु, ४४a अत, ४५c असारो, ४६c संयमसिरि, ४७c माए b माइ, ४८b सुझ,

जासु पसारण व छेउ४९ सिञ्जए,५०

वलिदि न समारमि पडिजए५१ ॥ १० ॥

इहु निसुणेविणु 'अनड' वयणु, पभणइ माया समलि लाडण ।

तुहु नवि५२ जाणइ वालउ भोलउ,

इहु५३ व्रतु होइमइ५४ ५५३५५ दुहलउ ॥ ११ ॥

मरु धरेविगु५६ निय भुयदडिहि,५७

जलहि तरेवउ५८ अप्पुणि गहहि५९ ।

हिंडेवउ असि धारह६० उय(३?)रि, लोह चिणा चावत्रा इगिपरि ॥१ ॥

ता तुहु६१ रहि घर कहिय२ लागि, ज तुहु भावइ६२ वच्छउ६३ तु मागि ।

किंपि न भावइ६४ विणु सजमसिरे,

माइ६५ भणइ ज रुडउ६६ त करि ॥ १३ ॥

धातः—भणइ 'अनडु' भणइ 'अनडु एहु ससार ।

गुर दुन्ध भरिपूरियउ,६७ माइ माइ ता वगि मिलिहसु६८ ।

परणेविणु६९ दिक्कसिरे,७० त्रिपिह भगि हउ सुन्ध माणिसु ।

माइ७१ भणइ दुकर चरपु, तुहु पुणि अइ सुकुमालु ।

कुमर भणइ दुकर१६७२ विणु, नहु उलियइ७३ कलिकालु७४ ॥ १४ ॥

१९a वलित b वलिभो, २०a सिञ्जए b मीझए २१a पडिजय b पडीजण,

२२a तुह b तुहु, २३a एहु २४b होसइ, c होसए २ a एरभो दुहेलभो,

२६b c धरेवउ, २७a भूयदडि, २८a तरेवओ, २९a अप्पण बाहइ c आपुण

गहडि, ६०a धारा उयरि c धारह उवरे ।

६१a तुह c तुहु, ६२a भावि, ६३c वलित ६४c भावए, ६५c माय,

६६b c रुयउड, ६७b भरिपूरिवउ ६८a मिलिहसु c मिलिहसु, ६९b परिणेवा,

७०a दिक्कसिरे, ७१c माय, ७२a दुकर, ७३a छलिइ, ७४a कलिकालु,

‘अंबडु’ पभणड माड७५ सुणि, परिणिमु संजम लच्छि ।

इकुजुए पुहविहि७६ सलहयड, जायउ ‘लखमिणि’ कुच्छि७७ ॥१५॥
अभिनव ए चालिय जानउत्र, ‘अंबडु’ तणड वीवाहि ।

अप्पुगु७८ ए धम्मह चक्रवड,७९ हूयउ८० जानह माहि ॥१६॥
आवहि आवहि रंगभरि, पंच-महव्वय राय ।

गायहि गायहि महर सरि८१, अट्टय८२ पवयणमाय ॥१७॥
अठार८३ सहसह८४ रहवरह,८५ जोत्रिय८६ तहि सीलग ।

चाल्हि चाल्हि खंति सुह,८७ वेगिहि८८ चंग तुरग ॥ १८ ॥
कारड कारड ‘नामचंडु’,८९ ‘भंडारिउ’ उच्छाहु ।

वाधड वाधड जान९० दांख, ‘लखमिणि’ हरपु९१ अवाहु ॥ १९ ॥
कुसलिहि९२ खेमिहि९३ जानउत्र, पहुतिय९४ ‘खेड’ भञ्जारि ।

उच्छवु हूयउ९५ अड ९६पवरो, नाचड फरफर नारि ॥ २० ॥
‘जिणवड’ सूरिण मुणि९७ पवरो, देम्मण अमिय रसेण ।

कारिय जीमणवार९८ तहि, जानह हरिस भरेण९९ ॥ २१ ॥
‘खंति जिणेसर’ वर भुयणि,१०० माडिउ१०१ नंदि सुवेहि ।

वरिसहि भविय१०२ दाण जलि, जिम गयणंगणि मेह ॥ २२ ॥

७९c म य, ७६a जुपउविहि, ७७b कुक्खि, ७८b उप्पुणि. c आपुणु,
७९a चक्रवय, ८०a हूयय, ८१a रंगभरि. ८२a अट्ट, ८३a अट्टार. ८४a
सहस, ८५a रहवर, ८६a जोत्रिया, ८७b.c सुह, ८८a वेगहि ।

८९b नेमिचंद्र, ९०a जानह, ९१a हर्ष, ९२a कुसलिहि. ९३a खेमहि,
९४a पहुतो. ९५a हुयउ, ९६a पवरु, ९७a पवर, b. पवरि, ९८b जीवण-
वार, ९९b भणो, १००a भुवणि-१०१b.c मंडिय, २b भाविय c. भविया,

तहि अग्यारिय३ नीपजइ,४ झाणानलि पजलति ।

तउ सवेगहि५ निम्मियउ, हथलेवउ६ सुमहुत्ति७ ॥ २३ ॥

इणि परि 'अधु' वर कुयरु८ परिण२ ६ सजम नारि ।

वाजइ१० नदीच११ तूर घण१२, गूडिय१३ घर घर वारि ॥२४॥

धातः—कुमरु चलिउ कुमरु चलिउ गरय विठ डु ।

परिणेवा दिक्खसिरी,१४ 'खेडनयरी' खेमेण पत्तउ१५ ।

सिरी 'जिणवइ' जुगपवरु१६ दिट्टु, (इ), तत्थ निय मणहि१७ तुट्टउ१८ ।

परिणइ सजममिरी१९ कुमर,२० वज्जहि न दय२१ तूर ।

'नेमिचदु'२२ अनु 'लखमिणि'-हि, सविय२३ मणोहर पूर ॥२५॥

'वीरप्पहु'२४ तसु ठवियउ२५ नामु २६

जिण वयगु२७ अमिय रसु झरतो२८ ।

अह सयल नाण समुदु२९ अवगाह५,

'वीरप्रभु'३० गणि [निय+] गुरु पसा७ ॥२६॥

क्रमि क्रमि 'जिणवर सूरहि'३१ पाटु,

उद्धरिओ३२ ['जिणेसरसूरि' नाम ।

विहरए भविय लोयच पडिनोहण,

अवयरिउ] किरि 'गोयम' गणिदो ॥२७॥

३b c अगियारोय, ४c नीपजइ, ५b c सवेगहि, ६c हथ लेवउ, ७b c सुमु-
हुत्ति, ८b कुमरु, c कुमरो, ९a c परिणइ, १०a b वाजइ, ११a नदी,
१२b c घणा, १३a गूडो । १४a दिक्खसिरे, १५a पत्तओ, १६bc जुगपवरो,
१७bc मणिदि, १८a तुट्टओ, १९c सजमसिरी, २०c कुमर, २१a नन्दीतूर
b नन्दि, यत्तर, २२bc नेमिचद, २३a b पवव, २४a c वीरपहु, २५a ठवियओ,
२६ b नाउ २७b श्रवण, २८a b झरता, c किरि झरतो, २९c समुदु,
३०a b वीरप्रभु x b प्रति, ३१a वय, ३२a उद्धरिओ, [२x] b c प्रति,

'अञ्जमुहत्थि'३३ जिम जिण भवण३४ मंडियं,

महियलं निम्मियं अरिरि जेहिं ।

सिरि 'वयसामि' जिम तित्थि३५ उन्नड कया३६,

कट्टरि अच्चरिय सुचरिय पहूणं ॥२८॥

यात्तः-- जेण जिणवर जेण जिणवर भुवण उत्तुंग ।

किरि भवियण ववहारियह, पुन्न हट्ट संठविय३७ पुरि पुरि ।

जणु दुग्गइ३८ उट्टरिउ, धम्मरयण दाणेण वहुपरि ॥

नाण चरण दंसण जुवइ, केलि विलासु३९ पहाणु४० ।

साहु-राउ४१ सो वन्नियइ४२, 'जिणेसरसूरि'४३ जगि४४ भाणु ॥२९॥

मिरि 'जावालपुरमि' ठिप्हिं, जहि४५ निय अंत समयं सुणेवि४६ ।

नियय४७ पट्टंमि सइं हत्थि संठाविओ,

वाणारिउ४८ 'प्रवोहमूर्ति'४९ गणि ॥३०॥

सिरि 'जिणप्रवोह सूरि'५० दिन्नु तसु नीनु,

तउ भणिउ५१ सयल संवरस अग्गे ॥

अह जिम एहु नमेवउ५२ संधि,

जुगपवरु 'जिणप्रवोहसूरि' ५३ गुरु ॥३१॥

३३a महत्थि, ३४c भुवण, ३५a उन्नय, ३६b कय, : ७a संठियउ, ३८a

दुग्गय उट्टरिय, उट्टगइउ ट्टरिउ । ३९b c विलास, ४०b पहाण,

४१a राय, ४२a वन्नियह, वन्नियइ, ४३c छरि, ४४a जग, ४५ b-c जे हिं,

४६c सुयं सुणेवि, ४७b नियइ, ४८ b वाणारी, ४९b प्रवोहमूर्ति,

c प्रवोहमूर्ति, ५०a जिण प्रवुह, b जिणप्रवह, c जिण प्रवोघ, ५१a भणिउं,

५२b मानेवव c मानेवओ, ५३b जिण प्रवोघह सूरि, c जिणप्रवोघसूरि,

अणसणु लेवि५४ सुह झाणु धरवि, अरिरि सु०६तु इम भाणिऊग ।
 [तर इगतीम आसोज५५ घदि छट्टि, 'जिणेश्वरसूरिसगमि' पत्तु ॥५]
 'जिणेश्वर सूरि' सगमि सपत्तु५६ पूरउ सघ मण वट्टियाड५७ ॥३२॥
 णहु वीवाह७३५८ जे पढइ जे दियहि खेला खेली५६ रग भर६० ।

ताह जिणेश्वर सूरि सुपमन्नु६१,

इम भणइ भविय गणि 'सोममुत्ति'६२ ॥ ३३ ॥

॥ इति श्री जिनेश्वर सूरि सयमश्री विवाह वर्णन रास समाप्त ॥



५४५ लेविणु [x] abप्रति, ५५६ आसोय ५६६-७ संपत्तभो, ५७६ घट्टियाड
 ५८६ घीवाहडउ ७ घीवाहुएउ, ५९ b ७ खेलिय, ६० b ७ भरि
 ६१६ छपउ न ६२६ सोममूर्ति, ७ सोममुत्ती ।

॥ कवि ज्ञानकलश कृत ॥
श्री जिज्ञोदय सूरि पट्टाभिषेक राय

संति करणु सिरि संभिनाह, पय कमल नमेवी ।

कासमीरह मंडणिय१ देवि, सरसति सुमरेवी२ ॥

जुगवर सिरि 'जिणउदयसूरि', गुरु३ गुण गाएसू ।

पाट महोच्छव४ रासु रंगि, तसु हउं पभणेसू ॥ १ ॥

चन्द्र गच्छि सिरि वयर ५साखि, गुणमणि भंडारू ।

'अभयदेवु'६ गुरु गहगहए, गरुयउ७ गणधारू ॥

सरसइ८ कठाभरणु [न(न?)यण], जण नयणाणंदू ।

'जिणवल्लह' सूरि चरण कमलु, जसु नमइ सुरिंदू ॥ २ ॥

वासु पाट्टि६ 'जिणदत्तसूरि', विहि मग्गह मंडणु ।

तउ 'जिणचंद' मुणिद रूवि, मयणह मय खंडणु ॥

वाइय१० मयगल११ कुंभ दलणु, कंठीर समाणू ।

सिरि 'जिणपत्ति' मुणिदु१२ पयडू, महियलि जिम भाणू ॥ ३ ॥

तसु पय कमल मराल सरिसु१३, भवियण जण सुरतरु ।

सूरि 'जिणेसरु' कटरि पुत्र, लच्छी केलीहरु ।

निम्मल सयल कला कलाव, पउमिणि वण दिणमणि ।

सुहगुरु सिरि 'जिणपत्रोह सूरि', पंडियह सिरोमणि ॥ ४ ॥

१b कममीरह मंडणीय, २a समरेवी, ३a गुरु, ४a महोच्छव, ५b साखि, ६a अभयदेव, ७a प्रति, ७a गुरयउ, ८a सराय, ९b पाटि, १०b वाइय, ११a मंगल, १२b मुणिद, १३b सूरिछ ।

चढ घजल निय फित्ति धार१४, धवलियह१५ वमहू ।

तयण सुगुरु 'जिणचदसूरि', भवजलहि तरहू ॥

सिधु देसि सुविहिय विहारु जिण धम्म पयासणु ।

सुगुरु राउ 'जिणकुसलसूरि', जगि अखलिय सासणु ॥ ५ ॥

तासु मीसु 'जिणपदमसूरि', सुगुरु१६ अवतारु ।

न लहइ सरसति देवि, जासु विवा गुण पारु ॥

तयणातर विहि—सघ, नीरु-निहि१७ पूनिमचदू ।

जिण सासणि सिगारु हारु, 'जिणलघधि' सुणिदू ॥ ६ ॥

तासु पाटि जिणचदसूरि तव तेय फुरतउ ।

जलहर जिम घणु नाण नीरु, पुरि पुरि वरिसतउ१८ ॥

'खमनारि' सपत्तु तत्थ, गुरु वयणु सरई ।

गच्छ सिक्ख नियपट् सिक्ख१९, आयरियह देई ॥ ७ ॥

॥ धात ॥

गच्छ मडणु गच्छ मडणु, सारु सिगारु२० ।

जगसु फिरी कप्पतर, भवियलोय सपत्ति कारणु२१ ।

तव सज्जम नाण निहि, सुगुरु रयण ससार वारणु ।

सुहगुरु मिरि 'जिणलघिसूरि', पट्ट कमल मायहु२२ ।

झायहु २३सिरि, जिणचन्दसूरि', जो तव तेय पयहु ॥८॥

१४b धार, १५b घवलिय, १६b सुगुरु, १७b निसमिहि, १८a वरसंवउ,
१९a सिक्ख, २०b सिगारु, २१a कार १२२b मार्यहु, २३a झायहु,

सहि मंडलि 'ढीलिय नयरे', २४ कंचण रयणु विसालु २५ ।

तउ 'रुद्रपाल' २६ 'नीजउ' 'सधरो', निवसइ तहि 'श्रीमालु' ॥६॥

तसु नंदणु बहु गुण कलिउ, संधवइ 'रतनउ' साहु ।

तXसयल महोच्छव धुरि धवलो, 'पूनिग' मनि उछाहु ॥१०॥

सुहगुरु २७ वंदण 'खंभपुरे', दीण दुहिय साधारु ।

'रतनसीह' 'पूनिग' सहिउ, आवइ सपरिवार (रु) ॥११॥

वंदवि सुहगुरु विन्नविउ, 'तरुणप्पह' सूरि राउ ।

तXगुरु पय ठवणहरु २८ कारणिहि, २९ तिणि लाधउ सुपसाउ ॥१२॥

तXपाट ठवणि सुहगुरु ३० तणए, आवइ विहि समुदाउ ।

त नयर लोउ ३१ जोयण मिलए, खरतर विहि जसवाउ ॥१३॥

'आसाढ पनरोतरए, तेरसि पहिलइ पक्खि' ।

तउ ३२ नंदि ठविय 'अजियह भुवणि', सलहीजइ नर लक्खि ॥१४॥

'तरुणप्पह' सुहगुरु रयणु, वाणारउ सुविचारु ।

त ठविउ ३३ पाटि गणि 'सोमप्पहो', ३४ सयल गच्छ सिगारु ॥१५॥

त दिन्नु नामु 'जिणउदयसूरि', सवणह अमिय पवाहु ३५ ।

त+जय जयकार समुच्छलिउ, हूउ ३६ संघु सणाहु ॥१६॥

॥ यात ॥

सयल मन्दिर सयल मन्दिर लच्छि गेहंमि ।

'खम्भाइत' ३७ वर नयरि, ३८ अजियनाह मन्दिरी मणोहरि ।

तहि मिलिउ संघु घणु ३९ पंच, स० ४० वज्जंति बहुपरि ॥

२४b ढिलियनयरो, २५b विसालु, २६b त रुद्रपालु, xa प्रति,
२७b छद्गुर, २८b पयठवणा, २९a कारणहि, ३०b सुहगुर, ३१a नयरलोय
३२a त । ३३b ठविय, ३४b सोमपहो, ३५b प्रवाहु a xप्रति, ३६a हूंयउ,
३७a खंभाइत, ३८a नयरे, ३९b यणू, ४०b सबद,

रतनउ' पूनउ' सघवइ, सुहगु१४१ तणइ पसाइ ।

पाट महोच्छु कारवइ, दिइइइ हरपु न माइ ॥१७॥

इणि४३ परि ए गुरु आपसि, सुहगुरु पाटिहि४४ रुठविउ ।

तिहुयणि ए मगलचारु, जय जयकारु समुच्छलिउ ॥१८॥

वाजप४२ नदिय तूर, मागण जण कलिरवु करए ।

मीकरि ए तणइ क्षमालि,४६ नडि मडपु जण भणुहरए ॥१९॥

नाचइए नयण विसाल, चद वयणि मन रग भर ।

नव रगिण रासु रमति, खेला खेलिय४७ सुपरिपर ॥२०॥

घरि घरिण वन्दरवालि,४८ गीनह झुणि रलिनावणिय ।

तहि पुरि। हुयउ४९ जमेवाउ, ग्गरतर रीति सुहावणिय ॥२१॥

मलहिसु१० ए विहि समुदाय 'सम्मनयरि' वहु गुण कलिउ ।

ढीसइ ए दाणु ढीयतु, जगसु सुरतर करि५१ फलिउ ॥२२॥

सववइ ए 'रतनउ'५२ साहु, 'वस्तपाल'५३ 'पूनिग' सहिउ ।

घणु जिमए वट्टिन धार, धनु वरिसन्त-५४ गहगहिउ५५ ॥२३॥

अहिणवु ए क्रियउ विपेकु, रगिहि५६ जीमणवार हुय ।

ग१इ५७ मनहि आणदि, चउविह सघइ५८ पूय क्रिय ॥२४॥

'रतनिगु' ए 'पूनिगु' वेवि, दाणु दियतउ नवि खिसए ।

माणिक ए मोतिय टानि, फणन कापडु५९ लेखइ किसए ॥२५॥

४१b सुहगुर, ४२b कारवइ, ४३b इण, ४४a पाटहि, ४५a वजए,

४६b जमालि, ४७b खेलखिलिय, ४८b नदुरवाली, ४९a हुउ । ५०b सलाहिसु,

५१b किरि, ५२a रतन ५३b वस्तपाल, ५४a वरसतउ,

५५a गहगण, ५६a रगहि, ५७b गरुणइ, ५८b सघइ ५९a कापड,

‘रतनिगु’ ए ‘पूनिगु’ ६० वेवि, बंधव प्रीतिहि ६१ संमिलिय ६२ ।

झालिहि ६३ ए संवह भारु, निय निय ६४ पूरहि मनि रलिय ॥२६॥

॥ वात ॥

तहि ६५ जि उच्छवि तहि जि उच्छवि, रणइ वणतूर ।

वर मंगल धवल ६६ झुणि, कमल नयणि नच्चंति ६७ रस भरि ॥

तहि ‘सालिहगु’ धुरि धवल ६८, दियइ दाणु ‘गुणराजु’ बहुपरि ।

मागण जण कलिरवु करइ, चमकिय चित्ति सुरिंदु ।

पाट ठवणि सुहगुरु ६९ तणए, ७० संधि सयलि आणंदु ॥२७॥

संघु सयलि आणंदु, दंसण नाण चारित्त धरो ।

सिरि ‘जिणउदय’ सुणिंदु, जउ दीठउ नयणिहि ७१ सुगुरो ॥२८॥

घरि घरि मंगल चारु, भविय कमल पडिवोह करो ।

संजमसिरि उरि हारु, उदयउ ७२ सुहगुरु सहसकरो ॥२९॥

‘माल्हूय’ ७३ साख सिंगारु, ‘रुदपाल’ कुल मंडणउ ।

‘धारलदेवि’ मल्हारु, सुहगुरु भव दुह खंडणउ ॥३०॥

जिम जिण विभव विहारि, नंदणवणि ७४ जिम कण्पतरो ।

सुरगिरि गिरिहि मझारि, जिम चिंतामणि मणि पवरो ॥३१॥

जिम धणि वसु भंडारु, फलह मांहि जिम धम्म फलो ।

राज माहि गज सारु, कुसुम माहि जिम वर-कमलो ॥३२॥

६०a पूनिग, ६१a प्रीतिहि, ६२a संमिलय, ६३b झालहि, ६४a निघ
निघ, ६५a तह, ६६a धवल, ६७b नचंति, ६८a धवल, ६९b सुहगुर,
७०b तणइ, ७१a नयणिहि । ७२b उदय, ७३b माल्हय, ७४b विणि,

जिम नाणससरि हस, भाद्रव घणु दाणेसरहृ७५ ।

जिम गह मडलि हसु, चट७६ जेम तारा—गणहृ७७ ॥३३॥

जिम अमरावरि इन्दु, भूमंडलि जिम चकधरो ।

सघह माहि मुणिदु, तिम सोहइ 'जिणउय' गुरो ॥३४॥

नवरस देसण वाणि, घणु७८ जिम गाजइ गुहिर सर ।

नाणु७६ नीर वरिसतु८०, महिमडलि विहरइ सुपर ॥३५॥

नदउ विहि८१ समुदाउ, नदउ सिरि 'जिणउदयसूरि' ।

नदउ 'रतनउ साहु, सपरिवार 'पूनिग' महिउ८२ ॥३६॥

सुदगुण गुण गायतु, सयल लोय वछिय ल्हए ।

रमउ रासु इहु रगि, "ज्ञान-फलस" मुनि इम कइए ॥३७॥

॥ इति श्री जिनोदय सूरि पट्टाभिषेक रास समाप्त ॥



॥ उपाध्याय मेरुनन्दन गणि कृत ॥

॥ श्री जिणोदयसूरि विवाहलउ ॥

सयल मण वंछियं१ काम कुम्भोवमं,

पास पय-कमलु पणमेवि भत्तिर ।

सुगुरु 'जिणोदयसूरि' करिसु वीवाहलउ,

सहिय उमाहलउ मुज्ज चित्ति ॥१॥

इच्छु३ जगि जुगपवरु अवरु नियदिक्खगुरु,

थुणिसुं हउं तेणनिय ४ मइ वलेण, ।

सुरभि किरि कंचणं दुद्धसक्कर घणं,

संखु किरि भरीउ गंगाजलेण ॥२॥

अत्थि 'गूजरधरा' सुंदरी सुंदरे६,

उरवरे रयण हारोवमाणं ।

लच्छि केलिहरं नयरु 'पल्लहणपुरं' ७

सुरपुरं जेम सिद्धाभिहाणं ॥३॥

तत्थ मणहारि ववहारि चूडामणि

निवसए साहु वरु 'रुदपालो'८ ।

'धारला'९ गेहिणी तासु गुण रेहिणी,

रमणि गुणि१० दिप्पए जासु भालो ॥४॥

१a.c.d वंछिये, २b भत्ते, ३b एकु, ४b मय, ५d सुट्ट, ६b सुंदरा,
७b पल्लहणपरं, ८ पल्लहणपुरं, ८d रुदपालो, ९d धारलादेवी, १०a गणि,

तासु कुञ्जो मरे पुन्त जल सुभर, ११

अवयरिउ कुमरवरु १० रायहसो ।

‘तर पचहुतर’ सुमिण ससईउ,

आयउ१३ पुत्तु निय कुल वयसो ॥५॥

करिय१४ गुरु उञ्जव सुणिय नय जयरव,

दिन्नु तसु नामु सोहमा सार ।

‘समरिगो’ भमर जिम रमइ निय सयण-मणि, १५

कमलवाणि दिणि रयणि १६ ऋहु पयार ॥६॥

लोय लोयण दले अमिउ वरसतउ१७

वद्धए सुद्ध१८ जिम वीय चदो ।

निच्यु१९ नव नव कला धरइ गुणनिम्मला,

ललिय लावन्न सोहमाकरो ॥७॥

घात —

अत्थि ‘गुजर अत्थि गुजर, दमु सुविसालु ।

जहि२० ‘पल्हणपु’ नयरो, अलहि जेम नर रयणि मडिउ ।

तहि निवमइ नाहु—वरो २१, ‘रुदपालु’ गुणगणि२२ अरुडिउर३ ।

तसु मन्तिरि ‘धारल’ उयरे, उपन्नउ सुकुमाह ।

‘समर’ नामि सो समर जिम, वद्धइ रूपि अपारु२४ ॥८॥

११b सोभरे, १२b कुमरवर c कुमरवर, १३b जाइउ c त जायउ, १४d करिउ १५b सयणगणि d अगणि १६b बोह, १७b c d अमिय वरिसतउ, १८ सुद्धु । १९c d नित्त २०b तहि, २१b c साहवरो २२b गणह, २३b अपडिय, २४ d रवि अमह,

अह अवर वासरे 'पल्हणे-पुर' वरे,

अविय जण कमल वण वोहयंतो ।

पत्तु सिरि 'जिण कुशलसूरि' सूरिवमो

महियले मोह तिमरं हरंतो ॥६॥

बंदुप अत्ति रंगेण उक्कंठिउ 'रुदपालो', परिवार जुत्तो ।

धम्मरए उवएस दाणेण आणंदए, सादरं सूरिराउ विन्नतोरए ॥१०॥

अह सयल लक्खणं जाणिरए

सुवियक्खणं, सूरि ददूणरए 'समरं कुमारं' ।

अवय तुह नंदणो नयण आणंदणो,

परिणओरए अम्ह दिक्खाकुमारिं ॥११॥

इय अणिय पत्तु गुरु 'भीमपल्लीपुरे'

तं वयणु३० रयण जिम 'रुदपालो' ।

धरिवि ३१ निय चित्ति सयणिहिं आलोत्तए,

तं सुरुवं३२ सुणय सोजि वालो ॥१२॥

तयणु ३३ निय जणणि उच्छंगि निवडेवि,

मंडए ३४ राहडी विविह परि ३५ ।

अणइ 'जिणकुशलसूरि' पासि जा अच्छए,

माइ परिणावि मूं ३६ सा कुमारिं ३७, ॥१३॥

२६d धम्म, २६b.c.d वित्तो, २७b.c.d वाणि २८a दङ्गण, २९b.c.d

परिणउ, ३०b वयण, ३१b.d. धरवि, ३२b.d सुरुवं । ३३b तयण,

३४d संवए, ३६b.d परे, ३६a जाणइ (परिणावि)सुं, ३७b कुमारी,

माइ भणइ निसुणि वच्छ भोलिम ३८ धणो,

तउ नवि ३६ जाणए ४० तासु सार ।

रूपि न रीजए मोहि न भोजए,

दोहिली जालवीजइ अपार ॥१५॥

लोभि न राचए मयणि न माचए,

काचए चित्ति४१ सा परिहरए ।

अवर नारी अवलोयणि४२ रुसए,

आपणपइ४३ सयि४४ सत वरए ॥१५॥

एसिय४५ अनेरीय वात विपरीत, तासु तणी छड घणी सच्छ ।

मरल४६ ममाव४७ मेलणडा घाल,४८

कुणपरि रजिसि४९ कहि न वच्छ ॥१६॥

तेण कल कमल दल कोमल१०हाय, वाथ५१ म वाउलि देसितउ ।

रूपि अनोपम उत्तम वश५२, परणाविसु वर नारि हउ ॥१७॥

नव नव मगिहि पच पयार५३, भोगिवि भोग वल्लह कुमार ।

अमि क्रमि अम्ह वुलि कलसु५४ चडावि,

होजि सघाहिवड५५ कित्तिसार ॥१८॥

इय जणणि वयण सो कुमार निसुणेवि,

कठि आलगिउ५६ भणइ५७ माइ ।

जा ५८सुहगुरि कहि माजि मू सु (म?) नि रही,

अवर भलेरीय न सुहाइ५९ ॥१९॥

३८b नूलिम, ३९b तं, ४०d ४१a वित्ति, ४२b अवलोयो, ४३b पय, ४४d रूपि, ४५b इसी ४६b सरण ४७b सम्भाव, ४८। बाला, ४९b रजसि, ५०d कोमला, ५१d बाम, ५२d घर, ५३d पयारइ, ५४b कलस, ५५b सघाहिव, ५६b आलिंगिय ५७b मणय, ५८c जास, ५९b छहाए ।

तउ कुमर निच्छय जणणि जाणेवि,

ढणहण नयणि नीरं अगंती ।

कारिन तं६० वच्छ जं तुञ्ज मण६१ भावए,

अच्छए६२ गद गद सरि भणंती ॥२०॥

॥ धात ॥

अन्न वासरि अन्न वासरि, तम्मि नयरंमि ।

‘जिण कुसलु’६३ सुणिद वरो, महियलंमि विडरंतु पत्तउ ।

तहि वंदइ६४ भत्ति भरि, ‘रुदपालु’ परिवार जुत्तउ ॥

गुरु पिक्खवि ‘समरिगु’६५ कुमरो६६ आणदिउ६७ नियचित्ति ।

भणइ अम्ह दिक्खालुमरि परिणावउ६८ सुमुहत्ति ॥२१॥

तच सुवयणु तं च सुवयणु, धरिवि नियचित्ति ।

निय मंदिरि आवियउ, ‘रुदपालु’, सयणिहि विमासइ ।

तं जाणि कुमर वरो, आगहेण६९ निय जणणि भासइ ॥

मूं परिणावि न दिक्खसिरि७० माइ भणइ वरनारि ।

कुमर भणइ विणु दिक्खसिरि अवरन मनह७१ मझारि ॥२२॥

॥ भास ॥

अह जाणेविणु ‘समरिग’ निच्छउ,७२

कारावइ७३ वय सामहणी तउ७४ ।

६०c तउ, ६१b मनि t मणि, ६२d अच्छर, ६३b कुसल, ६४b वंदय, ६५b समरग, ६६d कुमर, ६७b आणंदिय, ६८d परिणावहु, ६९b आगहेणि, ७०b दिक्खसिरे, ७१a मनहं । ७२b निच्छओ. ७३c कारविधि, ७४b तओ.

मलिय७५ साजण७६ चालइ नियपुर,७७

धवल७८ धुरधर जोत्रिय १६५१ ॥२३॥

चालु चालु हल सही७६ वगिहि ८० सामहि,

धारल' नदण वर८१ परिणय महि ।

पभणतिय सुललि५ सु दरी,

गायइ ८२ महुर सरि गीय८३ हरिम८५ भरि ॥२४॥

क्रमि क्रमि जान पत्तिय,८५ सुहदिणि,

भीमपलो पुर'८६ गुर८७ हरसिउ मणि ।

अह८८ मिरि वीर जिणिइह मदरि,

मडिय वहलि८६ नदि सुवासरि६० ॥२५॥

तरल_१ तुग्गमि चडियउ लाडणु,

भागण वडिय दाण दियइ षणु ।

कोलय६२ अणइ३ वरिसउ 'समरिग' वर,

जिम 'सरसइ'६४ किरि 'कालिा' कुमर ॥२६॥

आविउ जिणहरि वर मणहरवउ,

दीस कुमारिय मउ६५ हथलेवउ६६ ।

'जिणतुमलमूरि' गुरो आपुण पइ जोमिउ६७,

होमइ झाणानलि६८ अवि६३ घिउ ॥२७॥

७५० मिलिय ७६० साजय, ७७० नियपुर, ७८० धवलु, ७९० हलि
सिहि ८०६ वगइ ८१६ घर ८२६ गाइ ८ गाइदि ० गायदि,
८३०, श्रीय ८४६ हरसि, ८५० पहुतिय, ८६६ भीमपलीय, ८७६ गुरु ८८६
अमिहि ८९६ पहिकि ९०० वडकि ९०६ असासरे ०६५ारि ९१८ गुरल
९२६ कलहय ९३६ अणु ९४१ सरसय, ९५६ स० ९६६ इधिलषओ ९७६ ८
जोसिय ९८१ कालानलि

वाजइ भंगल तूर गुहिर सरि,

दियइं धत्रल वर नारि विविह परि ।

इणहह परि 'तेर बियासिय' १०० वच्छरि,

'समरिगु' १०१ लाडणु १०२ परिणइ १०३ वय १०४ सिरि ॥२८॥

॥ यात ॥

तयणु १०५ चल्लवि तयणु चल्लवि, 'भीम वरपरिल',

सामहणी जान सउं 'रुदपालु' आविउ सुवित्थरि १०६ ।

परिणाविउ दिक्खसिरि, 'समरसिंहु' १०७ 'जिणकुसल' सुहगुरि ॥

जय जय रेवु घणुट उच्छलिउ, १ उद्धरिउ १० गुरु वंसु ।

'रुदपालु' अनु 'धारलहं', नचइ जगि जस हंसु ११ ॥२९॥

दिञ्चु 'सोमप्पहो' मुणि तसु नामु, सवण आणंदणं अमिय जेम १२ ।

जिम जिम चरण आचार १३ भरि सोहए,

मोहए दिक्खसिरि तेम तेम ॥३०॥

पढइ जिनागम पमुह विज्जावली,

रलिय १४सेविज्जए गुण गणेहिं ।

अह ठविउ १५ वाणारिउ १६ 'जेसलपुरे',

'चउद छडुत्तरे' १७ सुहगुरेहिं १८ ॥३१॥

१९d इणि. १००b विहासियइ. १०१d समरिग १०२b लाडण, १०३b परिणय.

१०४b वइ. १०५b तयण d. वयण. १०६b वच्छरि ।

१०७b समरसिंधु d. समरसिंह. c b घण. ९b उच्छलिय. १०d उद्ध-
रियउ. ११b निच्छइ जइ जगि हंसु, १२a जिम d जेण. १३a. d आचार.
१४b सेवजए. १५d ठविय. १६b वाणारिय १७b छडोत्तरे, १८a गुरेहिं

सुविद्विआचारि१६ विहार२० करतउ,

वाणारिउगणि 'सोमप्यहो'२१ ।

दुविह भिक्खो२२ सुगीयत्थु२३ सजायउ,

गच्छ गुह भार उद्धरण२४ सीहो२५ ॥३२॥

तयणु२६ 'जिणचद सूरि' पट्टि, सठाविउ२७,

सिरि२८ 'तरणप्यह' (आ) यरियरापर६ ।

'चउड पनरोतर'३० 'सभतित्थे'पुरे, मास 'असाढ वदि तेरसीए' ॥३३॥

सिरि 'जिणउदयसूरि' गुरुय नामण, उदयउ भाग सोभाग निधि ।

विहरण 'गूजर' 'सिधु' 'मवाडि, ३१पमुह दसेसु रोपइ३२ सुविधि ॥३४॥

॥ घात ॥

नामु३३ निम्मिठ नामु निम्मिउ, तासु अभिरामु ।

'सोमप्यह' मुणि रयणु३४ सुगुरु, पाम सो पढइ अहनिंसि ।

वाणारिउ ऋमि (क्रमि३५) हूयउ,

गच्छ भारु३६ धरु३७ जाणि गुण वसि३८ ।

सिरि 'तरणप्यह' आयरिणु३९ सिरि 'जिणचदह' पाटि ।

थापिउ सिरि 'जिणउदय', गुरुउ० विहरइ मुनिवरथाटि४१ ॥३५॥

१९b d सुविद्वि आचारि, २०b विहार २१a c d सोमप्यहो २२a सिक्ख
२३b c सुगीयत्थ, २४b भारु d भारुद्धरण, २५a c d सहो, २६b तयण,
२७d सठाविउ, २८d पिर, २९b तरण प्यह आयरिय d तरणप्यहायरिय
राए, ३० पनोतरे ३१d सिन्धु मेवाड गूजर ३२b रोविधि ।

३३b तासु निम्मिठ (२) नामु अभिरामु c तासु नियठ (२) नामु
अभिरामु d भाल्लु निम्मिठ (२) नामु अभिरामु ३४b रयण, ३५b d
३६c भार, ३७d धरि, ३८d वसि, ३९b आयरिय, ४०d सूरि, ४१b घट्टि

पंच पङ्कट् ४२ जिणि ४३ सोस तेवोस,

चउद् माहुणि धण संववड २३य ।

आयरिय उवज्जाय वाणारिय ४४ ठविय,

मह महत्तरा पमुह पयि ४५ ॥३६॥

जेण रंजिय मणा भणडं ४६ पंडिय जणा,

वलि वलि धूणिवि ४७ नियसिरायं ४८ ।

कटरि गाभीरिमा ४९ कटरि वय धीरिमा,

कटरि लावण सोहग जायं ॥३७॥

कटरि गुण संचियं ५० कटरि इंदिय जयं, कटरि संवेग निव्वेय रंगं ।

वापु देसण कला वापु भइ निम्मला, वापु लीला कसायाण भंगं ॥३८॥

त्तस्स ५१ एह ५२ गुण गणं जेम तारायणं,

कहिउ किम सक्कं ५३ एक जीह ।

पारु न ५४ पामए सारया देवया,

सहस मुहि भणड जड रत्ति ५५ दीह ॥३९॥

॥ घात ॥

अह अणुक्कमि अह अणुक्कमि, पत्तु विहरंतु ।

सिरि 'पट्टणि' सूरिवरो, पवर सीसु जाणोवि नियमणि ।

'वत्तीसइ भद्वइ ५६ मद्धम, पक्खि इकारसी' दिणि ॥

४२a एइठ b पइट्टा, ४३b.d जिण, ४४b वाणारिय, ४५b पय d पइ, ४६b भणय, ४७.1 धूणिविमिय, ४८a.c.d सिराइं ४९b-c.1 गम्भीरिमा. ५०a c

सञ्चयं, d सम्भयं, ५१b तास ५२b पइ c d पहु ५३b सक्क ५४a' पार ५५a रति b राति ५६b c d भद्वव

सिर 'लोगहियायरि' यर५७ अप्पिय५८ निय पय५६ सिम्प्या६० ।

सपत्तउ सु५लोयि६१ पहु चोहेना सुर ल५प्या६२ ॥४०॥

धन्न६३ सो वासरो पुन्न भर भासुरो,

साजि६४ वेला सही अमिय ६५वला ।

जत्थ निय सुहगुर भाव कम्पतरु,

भत्ति गा२ज्जप हरिस ह्ला६६ ॥४१॥

महलु६७ मणुयत्तण ताण लोयाण, लहइ ते सुम्पल सपत्ति भूरि ।

सुद्ध६८ मण सठिय थूम६६ पडिमठिय

जेय शायति 'जिणउदयसूरि' ॥४२॥

णहु सिरि 'जिणउदयसूरि' निय सामिणो,

कहिउ मड चरिउ७० अड मट७१ घुद्धि ।

अम्ह सो दिक्ख गुरु वेउ सुपसन्नउ,

उदसण नाण४चारित सुद्धि ॥४३॥

णहु गुरु राय वीवाहलउ जे पढइ,

जे सुणइ७३ जे थुणइ जे दियति ।

उभय लोगेवि ते लहइ ७४ मणवठिय,

'मेरुनदन'७५ गणि इम भणति ॥४४॥

॥ इति श्री जिनोदय सूरि गच्छनायक वीवाहलउ समाप्त ॥

५७b छोगह आयरिय त लोगहि आयरिय ६८b आपिय
६९b नियनिय त नियमय ६०b c b सिक्ख ६१b सुरलोय त सर
लोइ ६२b c d लक्ख ६३b d धनु ६४b साज ६५b d वल ६६b हेळ
६७b सइल त सुहल ६८d सुहमणि सठिय ६९d घृति ७०d घरिउ ७१b
इय ७२d देसण ७३b जे गुणइ जे सुणति c d जे गुणइ जे सुणइ जे दि-
यति (t देयन्ति) ७४b लहय ७५b मेरुन द । ।

॥श्रीजयसागरोपाध्याय पर्वास्तिकाः॥



संवत् १५११ वर्षे श्री जिनराजसूरि पट्टालङ्कारे श्रीमज्जिमग्ग
सूत्रि-पट्टालङ्कार राज्ये ॥

श्री उज्जयन्त शिखरे, लक्ष्मीतिलकाभिधो वर विहार ।

‘नरपाल’ संधपतिना, यदादि कारयितुमारेभे ॥ १ ॥

दर्शयति तदाचाम्नां, श्रीदेवी देवतां जन समक्षम् ।

अतिशय कल्पतरुणा, ‘जयसागर’ वाचकेन्द्राणाम् ॥ २ ॥

‘सेरीपकाभिधाने’, ग्रामे श्री पार्वनाथ जिन भवने ।

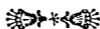
श्री शेषः प्रत्यक्षो येषा पद्मावती सहितः ॥ ३ ॥

श्री ‘भेदपाट’ देशे, ‘नागइह’ नामके शुभ निवेशे ।

नवखण्ड पार्श्व चैत्ये, सन्तुष्टा शारदा येषाम् ॥ ४ ॥

तेषां श्री ‘जिन कुशल सूरि’ प्रमुख, सुप्रसन्न देवतानाम् पूर्व
देशवर्ति ‘राजद्रह’ नगरोदण्ड विहारादि । स्थानोत्तर दिग्वर्ति नगर-
कोटादि स्थान पश्चिम दिग्वर्ति वलपाटक ‘नागद्रहा’-दिषु । राज
सभा समक्षं निर्जित पूर्व भट्टाद्यनेक वादि राजवेरमाणां । विरचित
‘सन्देह दोलावली वृत्ति’ लघु ‘पृथ्वीचन्द्र चरित्र’ ‘पंच पर्वा’ अन्य
रत्नावली प्रमुख मेहा वृषभनाथ स्तवः श्री ‘जिन वल्लभ सूरि’ कृत
‘भावारिवारण स्तव वृत्ति’ । संस्कृत प्राकृत बन्ध स्तवन सहस्राणाम्
स्थापितानेक संधपतीनां कवित्व कला निर्जित सुर गुरुणां पाठिता-
नेक शिष्य वर्गाणाम् इत्यादि

॥ श्री कीर्तिरत्नसूरि फागु ॥



न०—१ (नुटक)

स्लिगि त्राजित्र घुम घुमड ए, गयणगण गाजइ ।

छल छल छपल कसाल ताल, महरा-रवि वाज२ ॥ २८ ॥

भास—आव० कामिणी गहगहिय, गाजइ मङ्गल चार ।

खेला खेलइ अमिय रसि हरिपिउ सव अपार ॥ २९ ॥

अहे ऋमि ऋमि आगम वेद उन्द, नाटक गण लफ्फग ।

पञ्च वरिस विजा विचार, भणि हुअ विथन्सग ॥

पण्डिय मुणि तिणि गुरि पसाउ, करि “कीरतिराउ” ।

वाणारी (स) पदि थापिउ, ए सो पयड पभाउ ॥ ३० ॥

नयर ‘महज०’ हेन तेम, जिणमइ” सूरिन्द ।

उपज्ञाया राय थापिउ ए, ‘कीर्तिराय’ मुणिन्द ॥

घरि घरि उच्छउन बहुय रगि, कामिणि जण गाजइ ।

‘हरपि’ ‘दवल देवि ताम, मनि हरपि (म) न मावइ ॥ ३१ ॥

धारड अङ्ग इग्यार सार, सुविचार रसाल ।

टालड दोप कपाय जाय (ल?), उरसम-सिरि माल ॥

जिण शासन जे अवर, बहुय सिद्धन्त प्रसिद्धि ।

त जाणइ सवि भेय वय, वपु दे पिग बुद्धि ॥ ३२ ॥

॥ भास ॥

‘सिन्धु’ देण ‘पूगव’ पमुह, बहु विह देस विहार ।

करइ सुगुरु देसण हरस, वरिसड सुह फल कार ॥ ३३ ॥

अहे क्रमि क्रमि ‘जेसलमेरु’ नयरि, पहुंतउ विहरन्तउ ।

‘कित्तिराय’ उवझाय चन्द, तव तेउ फुरन्तउ ॥

सिरि ‘जिणभद्रसूरि’ मुणिय, पात्र आचारिज कीधउ ।

मोटड उलटि ‘कित्तिरयणसूरि’, नाम प्रसिद्धउ ॥ ३४ ॥

सो सिरि ‘कीरतिरयण सूरि’ भवियण षड्वोहड ।

लवधिवन्त महिमानिवास, जिण शासनि सोहड ॥

स्वस्तर गच्छि सुरतरुह जेम, वंछिय दाणेसर ।

वादिय मयंगल माण तिमिर, भर नाण दिणेसर ॥ ३५ ॥

परिस सुहगुरु तणउ नाम, नितु मनिहि धरीजइ ।

तिमि तिम नव निहि सयल सिद्धि, बहु बुद्धि लहीजड ॥

ए फागु उछ रंगि रमइ, जे मास वसन्ते ।

तिहि मणिनाण पहाण कित्ति, महियल पसरन्ते ॥ ३६ ॥

॥ इति श्री कीर्त्तिरत्नसूरि वराणां फागु समाप्त ॥

॥ छः ॥ शुभं भवतु श्री संवस्य ॥ छः ॥

॥ लिखितं जयध्वज गणिना ॥



॥ श्री कीर्तिरत्नसूरि गीतम् ॥

न०—२

नवनिवि चवत् रयण आन०, तसु मन्दिर भम्पति रिति(द्धि?) पावड ।
 दूझे कामगवी भावै, श्री 'कीर्तिरत्न सूरि' जे ध्यावै ॥ न । आ० ॥
 सुरतरु अगणि सफल फले, सुर कुभ सिरोमणी हेली मिलइ ।
 जागती जोति अमृत सवलै, दुख दारिद दोहण दूर हलै ॥१ । न० ॥
 अविहट उहट उठव घणा, थिण दविण एवत्यण कामुण्णा ।
 पसरइ महियल विमल गुणा, चगड गुरु ध्यावो भविक जणा ॥२०॥
 माहिम प्रतीति सुवर लगइ, डारण सारण कनहु न लौ ।
 शीति सु नीति बवइ त्रिजग०, नहु नदि चल० तसि पूठि अग० ॥३॥
 श्री 'सखवालाह' वस वरइ, 'दिपा' सुन 'दवल' दे उयरइ ।
 दीक्षा'वद्ध'नसूरि'गुरइ, सजम वासिर उ(ध?)रियउ धवल धुरइ ॥४॥
 आचारिज करणी वृत्तणा, जिन मुनन पयट्टण पड ठणणा ।
 मीस नादि मालारुहणा, गुरु पीर न होइ इगारि-सणा ॥ ५ । न० ॥
 मून(ल?) 'महे-०' थिर ठाणइ, पगला 'अरधुद-गिरि' 'जोधगे' ।
 पूज करइ जे इकठाण० त सदा सुरती नहुको जाणे ॥ ६ । न० ॥
 दीप दिवस अतिसइ सोहइ, सुर नाद संगीत सुवण मोहइ ।
 झिग मिग दीप कली बोहइ, गुरु जा मलीउ एरकान व कोहइ ॥७॥
 प्रगट प्रभात्र प्रताप त(प इ, नर नारि नमी कर जोड जपइ ।
 अत्रलाह सा(सन?)त्रला धार धपइ, श्री'एरतरुगच० प्रभुता सुमपइ।८॥

दीण हीण दुखिया मरणे, विपुला कमला सथ वर परणइ ।
 असुभ करम आरति हरणइ, जे लोन चतुर सदगुरु चरणे ॥ ६ नव० ॥
 कुंटं व कलत्र सुत मर्यादा, चालइ शुभ कारिज अप्रमादा ।
 भोग संयोग सुजस वादा, करि 'कीर्तिरत्न' सहगुरु दादा ॥१०॥ नव० ॥
 भाग सुभाग सुमति संगइ, सुभ देस सुवास वसे रंगइ ।
 पाप संताप न के अंगइ, न्हावो गुरु ध्यान लहरि गंगइ ॥ ११ ॥ नव० ॥
 चाट उचाट उदेग अरी, ऊप (भूत?) पलीत आनीत बुरी ।
 चावति कूड कलंक मरी, नासे तत्क्षण गुरु नाम करी ॥ १२ ॥ न० ॥
 भास विलास उल्हास सबहु, आनन्द विनोद प्रमोद लहु ।
 भोगवड सुर समृद्धि सहु, सुप्रसन्न सुदृष्टि सुगुरु पहु ॥१३॥ नव० ॥
 सुहगुरु थ(स्त?)वणा पढ़इ गुणइ, वाचंता आपण ववण(वयण?)सुणइ ।
 कुंगल मंगल तसु फ(पु?)प्य थुणइ, श्री 'साधुकीरति' पाठक पभणइ ॥१४॥
 ॥ इति श्री कीर्तिरत्न सूरि गीतं ॥

न० ३

'कीर्तिरत्न सूरि' वंदिये, मूल महेत्रे थान ।

संधमिया सिर सेहरो, 'संखवाल' कुलभाग ॥ १ ॥ की० ॥
 संवत् 'चवदे उपरै, उगुणपचासै' जास ।

जन्म थयो 'दीपा' धरे, 'देवल दे' उल्हास ॥ २ ॥ की० ॥
 'डेलह' कुमर हिव नेम ज्युं, मंकी निज वर वास ।

'तेसठै' संथम लियो, श्री 'जिनवर्द्धन' पास ॥ ३ ॥ की० ॥

वाचक पत्र हिव 'सत्तर', 'असिये' पाठक मार ।

आचारज मताणवे 'जेसलमेर' मक्षार ॥ ४ ॥ की० ॥

सुर नर किन्नर कामिणी, गुण गात्र सुविशाल ।

माधु गुणे करी सोहता, धार तिचे जिम लाल ॥ ५ ॥ की० ॥

पगला 'अरजुन गिरि' भला, 'जोधपुर' जयकार ।

'राजनगर' राजे सदा, युम सखल सुखकार ॥ ६ ॥ की० ॥

जसु माये गुरु कर ठपै, ते श्रावक यतवन ।

सीस सिद्धान्त मिरोमणी, 'राजमागर' गरजन्त ॥ ७ ॥ की० ॥

अणमण लेड रे भावस्यु, सवत् 'पनर पचोस' ।

अमर विमाने अवतया, श्री 'कीर्तिरत्न सूरीम' ॥ ८ ॥ की० ॥

अमीय भरै भल लोयणे, तु मुझ द दीदार ।

पाठक 'ललितकीर्ति' कहै, दिन प्रति जय-जयनार ॥ ९ ॥

न०—४

श्री 'कीर्तिरत्न सूरीम' तणी, महिमा धावइ जग माहि घणी ।

वरि ध्यानै धावइ भूमि-वणी, महि अलमुनिजन सिर मुगट मणि ॥ १ ॥

नजे कर जिम दीपड तरणी, सन्गुर सेना चिन्ता हरणी ।

भटार सुधन सुभर भरणी, कमला विमला कामिन करिणी ॥ २ ॥

अड बडीया सकट उदरणी, वरदायक जसु शोभा वरणी ।

घर पापै नर सुघरि घरणी, प्रेमइ अविकइ तरिणी परिणी ॥ ३ ॥

सव दोहग दूरइ रुहरणी, फोटक न हुवइ परिणी फिणी ।

अग(ल?)गी अदवी यानक हरणी, साचउतिहा गुरु असरण सरणी ॥ ४ ॥

नाहि सरोमणि 'देव' घरै, 'देवल दे' जनयो वरि वरी ।

संवत 'गुणपंचास तरो', श्री 'संखवाल' कुल सहसकरो ॥५॥
 संवत 'चवटें त्रयसठि' वरसे, 'आसाढ इग्यारीस' बहु हरसे ।
 श्री 'जिनवरधन सूरि' गुरु पासै, संयम लीधो मन उल्हासै ॥६॥
 'सितरड' वाचक पद गुरु पायउ, 'असीयड' उवज्ञायक पद आयउ ।
 'सतानण्यड' वरसे दीयउ, आचारिज श्री 'जिनभद्र' कीयो ॥७॥
 'लखडें' 'केल्हडें' तिहा मन लाड, 'जेसलगिर' पुर तिहा किण जाई ।
 'मा(हो)घ मुकल दसमी' आड, महोछव करि पदवी दिवराड ॥८॥
 'पतरड पचवीसड' तिण वरसड, 'आसाढ इग्यारस' बहु हरसे ।
 अणसण लीधो मन नै हरसे, सुभगति पामी सुरवर सरसड ॥९॥
 'वीरमपुर' वधते वानै, थाप्यो थिर थूंभ भला थानड ।
 महीयल सहु को नड मन मानइ, जस सोभा जग सगलौ जानै ॥१०॥
 समूर्यो सदगुरु सानिधकारी, सकलाप सजन जन साधारी ।
 नरवर सुर(वे) वर नै नरनारी, थूंभे आवे जात्रा धारी ॥११॥
 भूत प्रेत डर भय नावइ, जंजाल सवे दूरडं जावडं ।
 गणि 'चन्द्रकीर्ति' गुरु गुण गावै, श्री 'कोरतिरत्नसूरि' ध्यावइ ॥१२॥

॥ इति गुरु गीतं ॥



कवि सुमतिरग कृत

श्रीकीर्तिरत्न सूरि (उत्पत्ति) छन्द

न०— ५

सुमति करण सारद सुखदाइ, सानिध कर सेवका सटाइ ।

‘कीर्तिरत्न सूरिन्द’ कहाइ उत्पत्ति तास कहण मति आइ । १।
‘जालधर’ वसै सवि जाणै, ‘सखनाली’ नगरी सुख माणै ।

‘कोचर’ साइ ससार वखाणै, दे देकार घर खाणै दाने ॥२॥
दोय घर घरणी दौलिन दावै, कामणि लउ सुत एक कहावै ।

‘रोलू’ रीति सुजस रहावै, पिता प्रेम धरि करि परणावे ॥३॥
आधी रातै ‘रोलू’ अङ्गण, डस्यो साप कालै जम डडण ।

मूवौ जाणिले चाल्या दङ्गण, सन्मुख मिल्या ‘सरतर गच्छ’ मडग । ४।
‘जिनेश्वर सूरि’ कहै गुण जाणी, विषयर भर रो लोक मुणि जाणी ।

सरतर करो जिम ए सही जोयै, ‘कोचर’ सरतर हुवो तडीवै ॥५॥
नहर कहर गुणगै करि जाव, मात्रगान हुआ सहि सुख पावै ।

आप फगे (रोल) घर आवै, सरै राग सरतरा कहावे ॥ ६ ॥
दूहा—तरै सै तेरोत्तर, ‘कोचर’ सरतर किद्ध ।

आदि प्रामाद प्रतिष्ठियो, सूरि जिनेश्वर सिद्ध ॥ ७ ॥
‘कोचर’ माह ‘कोरटै’ वसियौ, सत्तूकार दीयै जस रसीयो ।

कुल्लार (गुरु ?) आय घणै ही कसीयो,

सरतर विरुद थकी नवि रसीयो ॥ ८ ॥

‘रोलू’ सुत दोग कक्षा रसीला, ‘आपमल्ल’ ‘द्वेषमल्ल’ असीला ।
 ‘द्वेष’ वरे ‘देवलदे’ वाला, चार सुत जनम्या चौसाला ॥६॥

॥ छ-५ मोतियदाम ॥

‘लखो’ तिम ‘भादो’ ‘केल्हो’ साह, ‘देलहो’ चोथो गुणे अगाह ।
 ‘लखा’ नै लिखमी तूठी लेह, परिया तिण सात तणो वर देह ॥१॥
 ‘वीसलपुर’ वसियौ ‘लखो’ वास, ‘जेसाणै’ ‘भादो’ करै विलास ।
 ‘मेहैवै’ ‘केलो’ मोटी मांम, चोथो तिण चारित लीधो आम ॥२॥
 चवदैं गुण पचासै’ जन्म, धर्यो तिण वालक वय थो धम्म ।
 तेरै वरसै जव हुयो तेह, ‘राडग्रह’ माग्यो राखण रेह ॥३॥
 ‘चवदैंसे तेसठै’ चाल्या चूप, विवाह करण जग राखण रूप ।
 खीमज थल कै पासै जान, आवी नै उतरी तिण थान ॥४॥
 सरली एक खेजड़ी देखी सोर, जुवांने जानी मांड्यो जोर ।
 इण ऊपर वरछी काढै कोय, पगणावुं पुत्री मेरी तोय ॥५॥
 रजपूतै एकण कहियो आम, ‘केले’ नै सेवक लीधी तांम ।
 उलाली वरछी नांखी एम, तीर तणी पर काढी तेम ॥६॥
 आतरै तिहा जोर आयो असमान, परलोक गयो ते छूटा प्राण ।
 ‘देलहै’ सो देखी मन दिलगीर, नर भव अथिर ज्युं डामै नीग ॥७॥
 ‘खेमकीरति’वांदै मन (वैठो) खात,भांगी सहु मन(को)तन की भ्रात ।
 साह सगा सहुनै समझाय, ‘जिनवर्द्धनसूरि’ पासै जाय ॥८॥
 दीक्षा तत्र लीधी ‘देलहै’ आप, पुराणा तोडण पाप सन्ताप ।
 मामा ते पारख मोटे मन्न, धरा सहु आखै धन हो धन्न ॥९॥

अचारह अग पढ्या इण रीत, गीतम स्वामी ज्यू वीर वदीत ।

वणारस कीयो गुरु गुरु वार, 'चन्द्रसैसतर' चित्त बिचार ॥१०॥

'जेसाणें' खेतरपाल को जोर, उथापी माड्यो बाहिर ठौर ।

आचारज क्षेत्रपाले मेल, भट्टारक काढ्या गच्छ थी ठल ॥११॥

दोह—'नाल्हें' साह निकालनै, याप्यो 'जिनभद्र सूरि' ।

दोस दियौ को देवता, भावी मिटै न दूर ॥१२॥

'पीपलीयो' गच्छ थापीयो, शुभ बेला सुभ वार ।

'साहण' सा सत करी, वादो वाद विचार ॥१३॥

'जिनवर्द्धन सूरि' जाण वे, शिष्य सदा सुविनीत ।

आप दिसा आग्रह कियो, गुरु गच्छ रासग रीत ॥१४॥

आधी राते आवि कै, वीर कही ए बात ।

आउखो गुरुनो अल्प, मास छ मास कहात ॥१५॥

'महेरे' म सामठी, च्यार करी चौमाम ।

'जिनभद्रसूरि' खोलात्रिना, आवो हमार पास ॥१६॥

अनुमानें करि अटकल्यो, उदयवत गच्छ एह ।

आवि मिल्या आन्तर सहित, पाठक पदयो दह ॥१७॥

'चन्द्रसै असी' वरस, पाठक पदवी पाय ।

'जिनभद्रसूरि' 'जेमलनगर', तेढाव्या तिहा जाय ॥१८॥

॥ छन्द सारसी ॥

लक्षपति 'लखो' साह 'बेहो', 'महव' थो आविया ।

'जेसलमरे' करी वीननी, प्रज्य नै विधि वनिया ॥

जिनभद्र सूरें मया करके, 'चन्द्रसैमताणजे' ।

'कीर्तिरत्नसूरि' आत्रीय, दीव पदवी तिण हेव ॥१९॥

बहु खरच कीया दान दीया, विविध लखमी वावरी ।

‘संखवाल’ साचा विरुद खाटै, धर्मराग हीयै धरी ॥

‘सैत्रुंज’ संघ कराय साथै, संघ सहुको ध्रम धवै ॥२१की०॥

‘संखैसरै’ ‘गिरनार’ ‘गोडी’, देस ‘सोरठ’ संचरी ।

चितलाय चैत्यप्रवाडी कीधी, लाहिणा जिहां तिहा करी ।

वर आय घणा घमंड सेती, संघ पूज करी लवै ॥३१की०॥

आचारजां सुं अरज करिने, चतुरभासक राखिया ।

गोत्रजा कुलगुरु दूर कीधा, भेद आगम भाखिया ।

समझावीया सिद्धात सुवचन, वाणि जांणी अमी श्रवै ॥४१की०॥

‘मालवै’ ‘थट्टा’ ‘सिध’ सनमुख, ‘संखवाल(चा)’मत जावजो ।

पाट भगत हुइज्यो सुगुरु भाख्यो, गच्छ फाट मे नावजो ।

दीक्षा न लेज्यो, संघ पद पिण, हलद्र ओषद(ध?)मत खवौ ॥५१की०॥

‘कोरटै’ ‘जेसलमेर’ देहरा, कराविजो गुरु इम भणै ।

नगर चोहटा थकी जिमणै, पास वसज्यो धन घणै ।

सीख सात मानै साह सहुको, सुखी हुइ इह परभवै ॥६१की०॥

पंचास एक शिष्य पंडित, ‘कीरतिरतनसूरि’नै ।

गुरु गुणे गौतम जेम गिणियै, जुगति सुमति जगीसनै ।

वासक्षेप जेहने सीस उपरि, करै तसु दालिदु गमै ॥७१की०॥

कलस आऊखा नै अंतपक्ष, अणसण पाली नै,

संवत ‘पनरपचीस’, मन वैराग वाली नै ।

‘वैसाख सुनी पंचमी’, सुगुरु सुरलोक सिधाहे ।

अण कीधे उद्योत हुवो, जिनभवनत माहे ।

सुखकार सार शृंगार मणि, “सुमतिरंग”सानिध सदा ।

रखवाल वाल गोपाल कूं, वाट घाट यदा तदा ॥८१॥

न०—६

सोहे गुरु नगर 'महेव' परचा पूरै नित मेवे । सो० ।
 'सखवाल' कुले गुरु राजै, 'दीपचन्द' पिता घर छाजै हो ॥ १ सो० ॥
 'दवल दे' जसु वर माता, जनम्या डेलार न विरयाता हो । सो० ।
 'चरदेमय तेसठ वरसै', 'आपाठ वनी' शुभ दिवसै हो । २ । सो० ।
 'अपारसै', दीक्षा लीधी 'जिनवरधन सूर' दीधी हो । सो० ।
 तप जप कर करम सपाया, नवि राखी काइ माया हो । ३ । सो० ।
 नामै जसु नावै रोगा, सुख सपत पामे भोगा हो । सो० ।
 'जिनमद्र सूरि' तेढाया, 'जैसाण नगर' मे आव्या हो । ४ । सो० ।
 'ववदसै मताणये' वरसै, सूरि पद नीधो मन हरसै हो । सो० ।
 सवन पतरसे पचीसे, 'वैशाख पचम' शुभ दिवसै हो । ५ । सो० ।
 इसाणै सदगुरु पहुता, मनमे शुभ ध्यान ज धरता हो । सो० ।
 ना ग डाइण वेताला हो, भूत प्रेत न आल जजाला हो ६ । सो० ।
 सद्गुरु गुण पार न पावै, मुनिजन वर भावना भावै हो । सो० ।
 'जयकीर्ति' सदा गुण बोले, सदगुरु गुण कोड न तोले हो । ७ । सो० ।

न०—७

'कीर्तिरतन' सुरीन्दा, वदै नरनारी ना वृन्दा हो । सद्गुरु महिर करो
 महिर करो गुरु मेरा, हुतो चरण न छोडू तरा हो । सो० । १ ।
 नगर 'महेव' राजे, सवता सब दुख भाजै हो । सो० । २ ।
 वठिन पूरण दाता, नित करिजो सपति साता हो । ३ । सो० ।
 नय नय दसमे सोहे, पूरै परचा जन मोह हो । ४ । सो० ।

चौरादिक भय वारं, सेवक ना कारिज मारं हो । स० । ५ ।

बंध्या पुत्र समापै, निरधनीया धन मत्र आपै हो । ६ स ।

अलगा थी यात्री आवे, देखंता चरण सुहावै हो । स० । ७ ।

इम अनेक गुणवारी, प्रतिबोध्या नर ने नारी हो । ८ स०
'अद्वारेसे गुणयासी', 'अपाढ़ दमम' परकासी हो । स० । ९ ।

गांम 'गडालय' थाप्या, सेवक ना संकट काप्या हो । १० स०
नासु प्रसाद करायो, देसा में सुजस मवायो हो । स० । ११ ।

'जयकीरति' गुण गावै, मन वंछित पद पावै हो । स० । १२ ।

न० ८

सद्गुरु चरण नमो चितलाय, जिण भेटया दुख दालिड जाय ।

आज करो रे ऊछाह सद्गुरु चरण कमल आगै । आ० ।

नगर 'महेवै' 'दीपमल्ल' साह, 'देवलदे' घरणी जनभ्यां सुनाह । आ१ ।

संवन् 'चवदे गुणपचास', 'डेल्ल' नाम दियो शुभ जास । आ० ।

यौवन वय आव्यो तिण वार, कीनी सगाई हर्ष अपार । आ०२ ।

जान सजाय करी रे तैयार, चलता आव्या 'राडद्रह' वार । आ० ।

तिहां इक खीमस्थल सुविशाल, जां विच सोहे समीय रसाल । ३ ।

तिण ही ठामे उतरी जान, रंग रली कीना सन्मान । आ० ।

किणे इक ठाकुग बाह्यो बोल, इण पर वरछीं काढे तोल । आ० । ४ ।

देवुं पुत्री तिणे परणाय, ऐसो वचन सुण्यो चितलाय । आ० ।

'केलहै' रो सेवक उक्यो ताम, काढी वरछी छूटा प्राण । आ० । ५ ।

'डेल्लहै' दीठौ ए विरतंत, सद्गुरु वचने भागी अन्त । आ० ।

'तेसठे' शुभ संथम लीद्ध, श्री 'जिनवरधन सूर' दीध । आ० । ६ ।

नेम तणो पर छोडो रिद्ध, जगमे सुजस हुवो परसिद्ध । आ० ।
 इयार अग ह्या जाण, तेजे करो प्रतप जिम भाण । आ० । ७ ।
 गौतम स्वामी ज्यु करय विहार, प्रतिबोधे सहु नर न नार । आ० ।
 सिंघ तडाव्या 'जेसलमर', सदगुरु आया सुर नर घेर । आ० । ८ ।
 'मताणय' सूरि पदवी जास, श्री 'जिनभद्रे' दीधो वास । आ० ।
 तप जप तीरथ उग्र विहार, करता आव्या 'महव' वार । आ० । ९ ।
 सिंघ सकल पसारो कीन, गुरै पिण सखरी देशना दीन । आ० ।
 सयन 'पनरसे पचवीस', वदी वैशाख पचमि शुभ दीस । आ० । १० ।
 अणमण कर पडुता सुरलोक, नर नारी सय दव धोक । आ० ।
 गुर परचा जग सगलै पूर, दुखिया आप सुर भरपूर । आ० । ११ ।
 विरूत कहता नावै पार, इण कलि मे सुरगुरु अवतार । आ० ।
 नगर 'महेत्रे' मलमो थान, ठाम ठाम दीप परधान । आ० । १२ ।
 'कीर्तिरत्नसूरी' गुरराय, महिर करो ज्यु सपति थाय । आ० ।
 'अठारसे गुण्यासीये' वास, वदि वैशाख दसमी परगास । आ० । १३ ।
 रच्यो प्रामाद 'गडालय' माहि, दोय थान सोहे दोनू वाहि । आ० ।
 सुगुर चरण थाप्या घण प्रेम, सुजस उपायो 'कातिरतन' एम । आ० । १४ ।
 भलै दिहाडो उग्यो आज, भेटया सदगुरु साया काज । आ० ।
 'अमौत्रलाम'री विनती एह, नित प्रति करजो आनद अछेह । आ० । १५ ।

न०—९

वधारो कुल बल, महिर मयमाला मडै ।

वित्त वादल विस्तार, दुख टालिद विहडे ।

दोलन कर तामिनी, मुवाय सचारी ।

गुण गरजारव कर भर, सरवर नरनारी ।

वाल सुगाल तत्काल कर, सखवाल घर घर सही ।

'कीर्तिरत्नसूरी' कीजीयै, गरथ अरथ गुण गहगही ॥१॥

श्री जिनलाम सूरि विहारपुत्रग

(सं० १८१५ से सं० १८३३)

॥ दोहा ॥

गच्छ नायक लायक गुणे, सागर जेम गम्भीर ।

निज करणी कर निरमला, जाणै गंगा नीर ॥१॥

नपसी तालावर तणै, गच्छपति किसी गरज ।

आसंगाथत आपणा, डण परि करै अरज ॥२॥

'पाच वरस रहिया प्रथम, दिन दिन वधतै डण ।

गच्छ नायक 'जिनलाम' गुरु, बड़ वखती 'वीकाण' ॥३॥

'पवाण श्चन्द्र ढवसु शशि' वरस, सरस भलौ श्रीकार ।

शुभ वेला 'वीकाण' सुं, वारु कियौ विहार ॥४॥

सधन धरे समझू सकल, घण आवक जसु वास ।

गुणवंतौ 'गारब गहर', तिहां कीधौ चौमास ॥५॥

आठ मास तिहा थी उठे, बंदावी थल देश ।

'जेसाणै' गुरु जाय नै, परगट कियौ प्रवेश ॥६॥

चार वरस लगि चाहसुं, नित नित नवलै नेह ।

बड़ वखती आवक जिके, जतने राखै जेह ॥७॥

तिहां तीरथ छै 'लौद्रवौ', जूनौ जगहि वदीत ।

तिहां प्रभु पारस परसिया, सहसफणा शुभ रीत ॥८॥

सीख करे तिहां थी सुमन, पुलिया पच्छिम देस ।

सुख विहार आया सुगुरु, प्रणमेवा पासेस ॥९॥

विधि सु गौडी—राय नै, वादी कियौ विहार ।

गच्छपति चलि आया गुठै, चौमासौ चित वार ॥१०॥

रहि चौमासौ रग सु, विहलौ करै विहार ।

माती धरा महेवची, वदावी तिण वार ॥११॥

नगर 'महेवै' आय नै, नमिवा नागौडौ पास ।

जाये कीध 'जलोल' मे, चित चोरै चौमान ॥१२॥

मिगसरमे बलि मलपिया, गज ज्यू श्री गुरुराज ।

आवै 'आनू' अरचिया, जगनायक जिनराज ॥१३॥

जस साटै दाटै पिशुन, उर दुयणा पग दीध ।

'धीलाडै' बहु रग सु चतुर चौमासौ कीध ॥१४॥

'खेजडलै' नै 'सारिये', रहिया बलि 'रोहीठ' ।

पिशुन किया सहु पाधरा, धरमे होता धीठ ॥१५॥

'मडोवर' महिमा घणी, 'जोधाने' री जोइ ।

मुनिपति आया 'मेडतै', हित सु तिमरी होइ ॥१६॥

च्यार महीना चैन सु, झाझे जतने जार ।

'जैपुर' आया जुगति सु, सहिर वडै श्रीकार १७॥

सहिर किना साग सरग, इलमे बसियौ आय ।

वरस थयौ वासर जितौ, वासर घडी विहाय ॥१८॥

हठ कीधौ घण हेत सु, पिण नवि रहिया पूज ।

मुनि पति जाय 'मेवाड' मे, वस्तायो नामूज ॥१९॥

'उदयापुर' हुती अलग, कठिन अठारै कोस ।

'रिसहेस' नै रग सु, नमन कियौ निरदोप ॥२०॥

बलता 'उदयापुर' बले, गहिरा कर गहगाट ।

वीनति घणै विराजिया, 'पालीवालै' पाट ॥२१॥

अटकलता आसौ अवस, निरस विचै 'नागौर' ।

पिण मन बसियो पूज रै, सहिर भलो 'साचोर' ॥२२॥

तिण वरसे 'सूरेत' ना, असपति अवसर देख ।

तिड़ावै सहगुरु तुरत, लायक मूंकी लेख ॥२३॥

दया लाभ देखी घणो, ऊपजतो उण देस ।

सुमति गुपति संभालता, पुर तिण कीध प्रवेश ॥२४॥

सरस वर जुग आवके, करतां नव नव कोड़ ।

सुपरै सेवा साचवी, हित सुं होडा होड़ ॥२५॥

कर राजी आवक सकल, जग सगले जम खाट ।

'राजनगर' आया रहण, वहता पगवट वाट ॥२६॥

तिहां पिण तालेवर तुरत, उच्छव करै अपार ।

दोय वरस लागि राति दिन, सेवा कीधी सार ॥२७॥

मन थिर कर साथे थई, आवक सहु परिवार ।

सत्रुंजनी सेवा करे, गुरु चढ़िया गिरनार ॥२८॥

उतर तिहा थी आविया, 'वेलाउल' वंदाय ।

महिमा मोटी 'मांडवी', पूजण सद्गुरु पाय ॥२९॥

कोडी-धज तिण नगर मे, लखपति तणा लंगार ।

सहु आवक सुखिया जिहां, वारवि सुं विवहार ॥३०॥

वरस लगै तिहा वावर्यो, धन अगिणत धर्म काज ।

चोखे दिन 'भुज' चालिया, राजी हुए गुरुराज ॥३१॥

'भुज' तणै आवक भली, सेवा कीध सवाय ।

भाग बली जिहा संचरै, थट सगला तिहा थाय ॥३२॥

इण विधि अट्टारै वरस, दीन (दिन दिन?) नव नव देस ।

परचिया आवक प्रवल, वाणी तणै विशेष ॥३३॥

हिव वहिला बिनती सुणी, करिज्यो पूज प्रयाण ।

'बीकानेर' वंदाविज्यो, सेवक अपणा जाण ॥३४॥

श्री जिनराजसूरि गीतम्

६।७:—कपूर होवर अति उजलुए ।

गळपति वदन मनरली रे, गरओ गुणह गभीर ।

‘श्रीजिनराजसूरीसरु’ र, सवि गळ फइ सिरि हीर रे ।१।
वदवत्री ‘जिनराजसूरीद’ । आपणी ।

श्री ‘जिनसिंधसूरि’ पटोघरु र, उन्नतिकार महत् ।

चारिअ चगइ मन रमइ र, सेवइ भविजन सत रे ।२।व०
‘जेसलमेर’ जिनद नी रे, फीधी प्रतिष्ठा चग ।

‘भणसाली’ ‘थिरु’ तिहा र, धन सरचइ मन रग र ।३।व०
‘रुपमी’ सधनी ‘सेत्रुजइ’ र, आठमउ फीध उद्धार ।

‘मरुदेवीदुकर’ भलउ र, चउमुख आदि विहार ।४।व०
मोटी माडी माडणी र, दहरा प्रोलि प्राकार ।

सनल महोजव तिहा सजी र, प्रतिष्ठा विधि विस्वार र ।५।व०
चित चोरसर सा(ह) ‘चापमी’ र, ‘भाणवडइ’ भल भात्र ।

सुगुरु प्रतिष्ठा तिहा करी र, जम बोलइ जन आवि र ।६।व०
सधपति ‘आसकरण’ सही रे, ममाणीमइ फीध नसाद ।

विअ महोजव माडोया र, ‘भेडता’ महा जस-वाद रे ।७।व०
धन ‘सरतर’ गळि दीपता र आत्रक सत्र गुण जाण ।

आण मानर गळराज नी र, तेजइ जाणे भाण रे ।८।व०
‘धरमसी’ नन्दन दिन दिनइ र, दीपइ जिम रवि चद ।

‘हरपवलभ’ वाचक फहइ रे, आपइ परमाणद रे ।९।व०

श्री जिनरत्नसूरि गीतम्

हाल:- विलसे ऋद्धि समृद्धि मिली ।

श्री 'जिनरत्नसूरिंद' तणी, महिमा जागइ जग मांहि घणी ।

जसु सेवा सारइ स्वर्गधणी, मन वंछित पूरण देव मणी ।१।

जसु नामइ न डसइ दुष्टफणी, टलि जायइ अरियण जुड्या अणी ।

अहिनिंसि जे ध्यावइ सुगुरु भणी, तसु कीरत वाधइ सहस गुणी ।२।

निरमल व्रत लील सदा धारी, पट काया तणौ रक्षाकारी ।

कलियुग मइ 'गौतम' अवतारो, गुण गावइ सहु को नरनारी ।३।
धसि केसर चंदन सुविचारी, फल ढोवइ नेवज सोपारी ।

विधि जे वंदइ आगारी, ते लच्छि तणा हुवइ भरतारी ।४।

जसु जम्म नगर 'सेरुणाणं', तिहां वसइ 'तिलोकसी' साहाणं ।

गोत्रइ अति निरमल ल्खणीयाणं, तसु घरिणी 'तारादे' विधि जाणं ।५।

जसु उयर सरोवर हंसाणं, तिण जायउ पुत्ररतनाणं ।

सोलह सइ सत्तरि वरसाणं, पुनवंत पुरप दीवाणं ।६।

चउरासीयइ चारित लीघउ, गुरुमुख उपदेस अमीय पीघउ ।

सुभकारिज सतरइसइ कीघउ, सहगुरु सइंहथि निज पट दीघउ ।७।

सतरइसइ इयार सही, आवण वदि सातमि सुगति लही ।

पग पूजण आवे जे उमही, गुरु आस्था पूरइ त्यां सवही ।८।

'उग्रसेनपुरइ' सद्गुरु राजइ, जसु थूंभ तणी महिमा छाजइ ।

'खरतर' श्री संघ सदा गाजइ, गुरु ध्यानइ दुखदोहग भाजइ ।९।

श्री 'जिनराजसूरीस' तणउ, पाटोघर श्री 'जिनरत्न' भणउ ।

महियल मइं सुजस प्रताप घणउ, प्रहसमि ऊठी नित नाम थुणउ ।१०।

एहवा सद्गुरु नइ जे ध्यावइ, चित चिता तास सवे जावइ ।

दिन-दिन चढती दउलति पावइ, 'जिनचंद' सगुरुना गुण गावइ ।११।

इति श्री जिनरत्नसूरि गीतं (संग्रहमें, ६३ प्रति नं० १३)

श्री दयातिलक गुरु गीतम्

राग—आसावरी

सरद ससी सम सुहगुरु सोहद, सयल साधु मन मोहइ ।

देसना वारिद, जिम वरसइ, जन मयूर चित हरमइ र ।१।

भाव स्यु भवीयण जण पणमउ, 'श्री दयातिलक' रिपराया ।

दीपता तपकरि दिणयर जिम, नरवर प्रणमर पाया रे ।१।भा०
नवविध परिग्रह छडि भली परि, सयम स्यु चितलाया ।

दोष दयाल निरतर टालर, मनमय आण मनाया रे ।२। भा०
पच महाव्रत रगड पालइ, पच प्रमाद निवारइ ।

नितु नितु सील रयण सभाल, भय सायर थी तारइ र ।३।भा०
चरण करण गुण सुहगुरु धारइ, आठ करम फु वारइ ।

शोध मान मद तजइ मुनीसर, मुनिवर धर्म सभारइ ।४।भा०
'श्री क्षेमराज' पाटइ अति दीपइ, वादि विनुध जन जोपइ ।

वाणा अत्रणि सुहाणी छाजइ, सरतर गठि गुरु राजइ रे ।५।भा०
'वाल्हाद' उरि मानसरोवर, रायहस अवयरिया ।

'वच्चा' कुल मडण ए सुहगुरु, गुण गण रयणे भरिया र ।६।भा०
पूरव मुनि नी रीति भली पार, आगम करिय विचारइ ।

जाणि करी सूधीपरिए गुरु, गुण गरुआना धारइ र ।७।भा०

इति श्री गुरु गीत । (पत्र १ सप्तहमे)

१० पद्महेम गीताम्

:

ढालः विलम्बं ऋद्धिं समृद्धिं मिली, ए ढालः ।
 'पद्महेम' वाचक वंदइ, ते भवियण दिन-दिन चिरनंदइ ।
 सुरतरु सम वडि गुरु कहियइ, जसु नामइ मन वैछिन लहियइ । १।१०
 'गोलवछा' वंसइ छाजइ, खरतर गछि सुरमणि जिम राजइ ।
 आगम अरथ तथा जाण, पालइ जिणवर केरी आण । २।१०
 लघुवच जे संयम लीणउ, उपसम रस भधुकर जिम पीणउ ।
 सुमति गुपति सहजइ पालइ, वलि दोष बयालिन नितु टालइ । ३।१०
 चरण करण सत्तरि मार, वलि धरइ महाव्रत ना भार ।
 ध्यान विनय सिंहाय करइ, डम असुभ करम मल दूरि हरइ । ४।१०
 (श्री) जिन वचनइ अनुसारइ, देसन करि भवियण नर तारइ ।
 निरमल जोल रयण पालइ, पूरव मुनि मारग उजवालइ । ५।१०
 युगप्रधान 'जिणचंद', गुरु, विहरइ महियलि महिमा पवरु ।
 धन ते जिण सय-हथि दिख्या, सीखावी वलि संयम सिख्या । ६।१०
 धन 'चौलग' जसु कुलि आयउ, धन धन 'चागादे' जिण जायउ ।
 'तिलककमल' गुरु धन्न जयउ, जसु पाटइ दिनकर जिम उदयउ । ७।१०
 व्रत सइंतीस वरिस जोगइ, विहरी दिन दिन वधतइ जोगइ ।
 ससि रस काय ससि वरिसइ, आया 'वालसीसर' चित हरिसइ । ८।१०
 अन्त समय जाणि नाणइ, वलि करि आराधन सुह ज्ञाणइ ।
 पहर छ अणशण पाली, माया ममता दूरइ टाली । ९।१०

पच परमेष्टि तण्डि ध्यानइ, विरुई गति सिगली करि कानइ ।
 अम्मावसि भाद्रव मासइ, मध्यानइ पहुता सुरवासइ ।१०।प०।
 भाव भगति गुरु पय पूजइ, तसु आस्था रग रली पूजइ ।
 पुत्र कलत्र धन परिवार, गुरु नामइ दिन दिन जयकार ।११।प०।
 उदय सदा वन्नति कीजइ, परतिरु दरसन भगता दीजइ ।
 महियलि महिमा विस्तारउ, सेवकनइ साहिब सभारउ ।१२।प०।
 चित्त तणी चिंता चूरउ सुग सम्पत्ति मन चितित पूरउ ।
 'सेवकसुन्दर' इम बोलइ, तुझ सेवा सुरतरु सम तोलइ ।१३।प०।
 इति श्री पदमहेम गणि वाचक गीत, म रसौ पठनार्थ ॥ शुभ भवतु ॥

चन्द्रकीर्ति कवित ।

पामीजे परमत्य अत्य पिण सयणा पावै,

पामीजे सघ सिद्धि रुद्धि पिण आफे आवे ।

पामे सोस सकज सरर सुख सेज सजाई,

पामे तेज पडूर बलि बल बुद्धि चडाई ।

कहि 'सुमतिरग' सुण प्राणिया, अदि २ गुरु गुण गाइयै,

श्री 'चन्द्रकीर्ति' सदगुरु जिमा, प्रभु इसा कद पाइने ॥१॥

सवन सतरे-सात पोष वदी पटिवा पहली ।

अणराण लेइ आप, बली उत्तम मति वहिली ॥

नगर 'विलाडे' माहि, काम गुरु अपणो कीधो ।

गीत गान गावता, सुगुरु नो अणसण सीधो ॥

शुभ व्यान ज्ञान समरण करि, सुर सुलोक जइ सचरै ।

वदै 'सुमतिरग' हियडा विचै, घडी घडी गुरु सभरै ॥२॥

विमल सिद्धि गुरुणी गीतम् ।

गुरुणी गुणवंत नमीजड रे, जिम सुख सम्पति पामीजड रे ।
 दुख दोहग दूरि गयीजड रे, परभवि मुर साथि रमीजड रे ॥१॥
 जसु जन्म हूओ 'मुलताणड' रे, प्रतिवृथा पिण तिण ठाणड रे ।
 महिमा सहु कोड वखाणड रे, दुष्कर किरिया सहिनाणड रे ॥२॥
 काकड कलिमड अवतारी रे, 'गोपो'लयुवय ध्रुवचारी रे ।
 तिणरड प्रतिबोधइ दिख्या रे, मनमांहि धरी हित सिख्या रे ॥३॥
 'विमल सिधि' वड वथरागड रे, वालक वय ऊपसम जागड रे ।
 'लावण्य सिधि' गुरुणी संगइ रे, चारित लीवड मन रंगड रे ॥४॥
 आगम नड अरथ विचारड रे, परवीण चरण गुण धारइ रे ।
 मिथ्या मत दूरि निवारइ रे, कुमती जन नइ पिण डारइ रे ॥५॥
 भद भच्छर मुंकी माया रे, जिण कीधी निरमल काया रे ।
 तप जप संजम आराधी रे, नरभव निज कारिज सावी रे ॥६॥
 अणसण करि धरि सुह झाणड रे, पहुता परभव 'वीकाणड' रे ।
 पगला अति सुन्दर सोइइ रे, थाप्या थूंभइ मन मोहड रे ॥७॥
 श्री 'ललितकीरति' उवझायइं रे, परतिष्ठ्या शुभ वेलाइं रे ।
 सुख साता परता पूरइरे, सेवक ना संकट चूरइ रे ॥८॥
 धन धन्न पिता जसु माया रे, 'जयतसी' 'जुगतादे' जाया रे ।
 'भाल्हू' वंसय सुविसाला रे, कलिकालइ चन्दनवाला रे ॥९॥
 मन झुद्धइं आवक आवी रे, वंदइ गुरुणी नइ आवी रे ।
 तसु मन्दिर दय दयकारा रे, नितु होवइ हरप अपारा रे ॥१०॥
 'विमलसिधि' गुरुणी महीयइ रे, जसु नामइ वंछित लहीयइरे ।
 दिन प्रति पूजइ नर नारी रे, 'विवेकसिद्धि' सुखकारी रे ॥११॥
 इति विमलसिद्धि गुरुणी गीतं ॥ समाप्तं ॥

(पत्र १ संग्रहमें)

द्वितीय विभागकी अनुपूर्ति ।

श्री गुणप्रभ सूरि प्रबन्ध

दुहा :—

मन धरि सरस्वती स्वामिनी, प्रणामो 'गोयम' पाय ।

गुण गाइस सहगुरु तणा, चरिय 'प्रबन्ध' उपाय ॥१॥

'वीर' जिनेसर नामने, पचम गणि 'सोहम्म' ।

'जजू अन्तिम पवली, तास पाटे अतिरम्म ॥२॥

तिण अनुभमे उचोतकर, 'श्री उद्योतन सूरि' ।

'वर्धमान' वधत गुण, चन्दो आणद पूरि ॥३॥

दाल फागनी :—

'जिनेसर' 'जिनचन्द्र' गुणागर, 'अभय' सुणीन्द ।

'जिनवद्धम' 'जिनदत्त', युगोत्तम नमे नरीन्द ॥

'श्री जिनचन्द्र' 'जिनपत्ति', 'जिनेसर' सभारि,

'जिनप्रबोध' 'जिनचन्द्र' 'कुणल गुरु', हिव सुलकार ॥४॥

श्री 'जिनपदम' विशारद, सारद करे वखाणि ।

श्री 'जिन लविय' लविय गौतम सम, अमृतवाणि ॥

'श्री जिनचन्द्र' 'जिनेसर', 'जिनरोसर' 'जिनधर्म' ।

'श्री जिनचन्द्र' गणाधिप, प्रगटित आगम मर्म ॥५॥

'श्री जिनमेरु' सूरेश्वर, सागर जेम गभीर ।

सवत पनर निहृतरे, देवगति हुओ धीर ॥६॥

ढालः अढियानी :

तव आचारिज इंद, 'श्रीजेसिंह मुणींद' हिवे विमासियो ए ।

भट्टारक पद ठामि, 'छाजेडा' कुलि काम,

बालक आपिसे ए, गुरुपद थापिस्यांए ॥ ७ ॥

श्रावक जन सुविचार, मिलिया मन्त्री उदार,

बालक जोइये ए, परिजण मोहि (ये)ए ।

'ओशवंश' शृङ्गार, 'जूठिल' साख मझार,

मन्त्री 'भोदेवरू' ऐ, तसु देदागरूए ॥ ८ ॥

तसु सुत बुद्धि निधान, मन्त्री 'नगराज' प्रधान,

सावय जिनवरू ए, धर्मधुरन्धरू ए ।

'नगराज' घरिणी नाम, 'नागलदे' अभिराम

'गणपति' साह तणी ए, पुत्रीसहु भणीए ॥ ९ ॥

तसु उरि जिस्या रतन्न, मन्त्री 'वच्छागर' धन्न,

कुमर 'भोजागरू' ए, चतुर हां सायरू ए ।

मन आपी उछाह, जाणी धरमह लाह,

संघ आगल रहे ए, 'वछराज' इम कहेए ॥१०॥

ढालः उलालानी :

महाजन सहित खमासमण, 'वछराज' करीय विमासण,

उत्तम महरत आपी, बतीस लक्ष्णो जांणी ॥११॥

'जयसिंहसूरि' उत्संगे, आप्या आपणे रंगे,

'भोज' भाई तिणवार, हरण्या स्वजन अपार ॥१२॥

ढालः—धवल एक गाहीनीः—

संवत पनर पइसठे जाण, शाके चवद इकरीस सम,
मिगासर सुदि चउथी गुरुवार, रात्री गत घटीय इयार जनम ॥१३॥
पल इयारह ऊपरे तास उतरापाढ रूप्य योग वृद्धि ।
कर्क लने गण वर्ग ग्रह योनि, जन्मपत्री तणी इसी सिद्धि ॥१४॥

ढालः—उलालानी :—

पनर पयुहतिरिषे, विहर्या मन तणे हर्ष ।
शुभदिन दीघीय दीर, सीरया गुरु नी सीर ॥१५॥
दिनदिन बाधए ताम, वीज कलानिधि जाम ।
क्रमे क्रमे विद्या अभ्यास, करेतसु सुहृगुर पास ॥१६॥
सूयो सजम पाले, मयण सुहृड मद टाले ।
रायहस गति हाले, वयणे अमृत रसाले ॥१७॥

ढालः—भमरआलीनी :—

‘योधनगर’ रलियामणो, तओ भ० राज करे ‘गगेध’ ।
‘राठोड’ वशे सिरि तिलो, तओ भ०, रिद्धि जिसो सुरदेव ॥१८॥
ठाजेड गोत्रे वसाणिने, तओभ०, गागाओत्र ‘राजसिध’ ।
‘सता’, ‘पता’ नोता गुर तओ भ०, चाथनी आणि अलघ ॥१९॥
चाचा‘देवसूर’ननु तओ भमराली० ‘सता’ पुत्र ‘दुलहण’ सहजपाल’ ।
(‘सहजपाल’ सुत गुणनिलो—तो ‘मानसिध’ प्रथिवीराज’ ।
‘सुरताण’ कसतूर दे’ तणा तो भ० सारे उत्तम काज ।
‘सुरताण’ सुत तीन भला, तो भ० ‘जेत’ ‘प्रताप’ ‘चापसीह’ ।
मात ‘लीलदेवी’ तणा, तीने सांह अवीह *)
मिली सकुटुम्ब विमासियो तो भमराली०, तीनव्यो‘गग महिपाल ॥२०॥

* किनारकी नोट ।

निपुण 'नेतागर' इम कहे तो भ०, सुणज्यो श्री नरनाह ।
 गुरुपद मह मंडिस्यां आ रे ! तो भ०, मांगाइ तुम वोल्वाह ॥२१॥
 पामी तसु आपस लो, तो भ०, चिहिदिशि मोकली लेख ।
 संघ लोक सहु आवीया तो भ०, याचक वलीय विशेष ॥२२॥
 सप्तक्षेत्र वित वावयो तो भ०, आरिम कारिम रीत ।
 कीधी विगति सोहामणी तो भ०, सुहव गावे गीत ॥२३॥
 लगन दिवस जब आवियो तो भ०, 'बडगछि' 'पुण्यप्रभसूरि' ।
 सूरि मन्त्र गुरु आपियो भ०, वाजे मंगल तूर ॥ २४ ॥
 'जिनमेरु सूरि' पाटे जयो तो भ०, 'जिनगुणप्रभुसूरि' नाम ।
 गच्छ नायक पद थापियो तो भ०, दिन-दिन अधिकी माम ॥२५॥
 संवत् (१५८२) पनरवियासीए तो भ०, फागुण मास सुचंग ।
 धवल चोथ गुरु वासरे तो भ०, थाप्या मन तणे रंग ॥२६॥
 संघ पूज करि हर्ष सुं तो भ०, मागणां दीधा दान ।
 'गंगराय' भेटण करे तो भ०, आपे ते बहुमान ॥२७॥

ढाल:- वाहणारी :

संवत् पनर पंच्यासिये ए संघसाथे शत्रुंजे सुरयात्रा करी ए ।
 'जोध नयरे' श्रोपूज भवियण वृझवेरे ॥२८॥
 चउमासा वारह क्रमें ए हुआ अतिशय गणनाथ आकारण ऊमह्याए ।
 बात करे मिली एम, 'जेसलमेरु' मन्त्री घणा ए ॥२९॥
 धन धन वत्सर मास, धन धन ते दिनुं ए ।
 चरण कमल गुरुराय तणा, जिण दिन भेटसुं ए ।
 नामे हुए नव निद्धि, भय सब मैटीसुं ए ॥३०॥
 थासे जनम सुकयत्थ, सुगुरुनी देसणा ए ।
 सुणता सूत्र विचार, नहीं कीजे मनां ए ॥३१॥

'देवपाल' 'सदारग', 'जीया' 'वस्ता' वरु ए ।

'रायमल्ल' 'श्रीरग', 'छुटा' 'भोजा' परु ए ।

इण परे लघु समवाय, साखे लेख आवियो ए ।

पठनाया 'जण पच', सुजस तिहा व्यापियो ए ॥३१॥

विधि सु वदी पाय, सुगुरु ने वीनती ए ।

करि आपी कर लेख, वदति उलसी छती ए ॥३३॥

मानसर जिम हस, पपीहा जलधरु ए ।

तिम समर तुम्ह नाम, दसण सावय हरु ए ॥३४॥

ढाल'—गीता छदनी :—

दिवे शुभ दिन रे, गच्छपति गजपति चालता,

पुर प्रामो र वादी गय मद गालना ।

मरदसे रे 'जेसलमेरु' महि मालता,

गुरु आया र, पच सुमति प्रतिपालता ॥३५॥

पालता पचाचार अनुपम, धर्म सूधो भासीए ।

आपाढ वदि तरसी गुरु दिनि, सव पनर सत्यासीण ।

परमट्टि विजय सुवल वाजिन, गीत गायति आविया

नर नारि सु मोटे मडाणे, पोपहशाले आविया ॥३६॥

नित नव नव र, सरस सधा देसण अरे,

सेवय जण र वछिय आशा पूरवे ।

राय राणा रे, तप जप चारिन गुण स्तवे,

गुरु इण परी र चन्द्र गठ कु सोभवे ॥३७॥

सोभवे पूनिमचन्द परगट, वदन नागा सुर गिरु ।

नवलड नाम प्रसिद्ध सुणिये, तेज दीप दिणयरु ।

कलिकाल लब्धि निधान गोयम, जम महिमा मदिरु ।

मोतीया थाल भरी वधावे, सूहव रभा अणु सु दरु ॥३८॥

ढाल : संवत् पनरे चउराणुंइ, 'लूणकर्ण' भूपाला रे ।

जल अभावे जन सीदता, देखी कराला रे ।३६।

संवत् पनर चउराणु ए, (भाग्यवंत भूमंडले) गच्छनायक वोलाया रे ।

कर जोडी ने वीनवे वांदी पूजजीराय (१पाया) रे । सं० ॥४०॥

श्री खरतरगच्छ राजिया, तेरो सुजस अपारु रे ।

कृपा करो सहु जीव नी, वरसाव्रो जलधारु रे । सं० ॥४१॥

मोटी वात मने भनीं, धर्मलाभ आशीसे रे ।

उपात्रये गुरु आवीने, आवक तणी जगीसे रे । सं० ॥४२॥

अट्टम तप मंत्र साधना, आसन तणे प्रकंपे रे ।

मेवमालि सुर आवीयो, करुं काज इम जंपे रे ॥४३॥

करि घट अंवर छाइयो, धरपि वरिप धन गाजे रे ।

तामे चमके वीजली, जगि जस पडहो वाजे रे । सं० ॥४४॥

सर तलाव द्रह पूरीया, नीर निवाण न माई रे ।

धर्मवृक्ष वधता हुआ, पापज घास सुकाई रे । सं० ॥४५॥

भाद्रव सित पडिवा तिथे, प्रथम पहरु सर पूर्यो रे ।

सुहगुरु इण तप जप करी, काल निशाचर चूर्यो रे । सं ॥४६॥

दया धर्म दीपाववा, राय पास मुकाये रे ।

वंदी वाणिक गुन्हे पड्यो, निगड बंध भंजावे रे । सं० ॥४७॥

भेरी नफेरी झलरी, ढोल दमामा वाजे रे ।

पंच शब्द जिन परवर्या, गयणि पटोला राजे रे । सं ॥४८॥

रूपवती सूहव नारी, धवल मंगल मिली गावे रे ।

संखनाद दिशि पूरिने, उपासरे गुरु आवे रे । सं ॥४९॥

ढालः—अग दुवालस जाण, आण माने सव, मुनिवर मोटा गजपती ए ।
 गुरुगुण धरे छोरीस, खरो क्षमा गुणे, वदन कमल वसे सरसती ए ॥५०॥
 चारित चगो देह, मोह महाभड, जे जग गंजण वस कीयओ ए ।
 चो कपाय मद अड्ड, अतर अरि दल, खडी सुगस सदा लीयो ए ॥५१॥
 'जवू' जेम सुशील, 'वयर स्वामी' बली, तिण ओपम कवियण तुले ए ।
 आठ प्रभावक सूरि, जिनशामन क(ह)या, महिमा तसु समजण कलीया ॥५२॥
 सायण डायण वीर वावन, नरपिपति, सूरि मत्र बले साधिया ए ।
 प्रगट्यो सद्गति पथ, रु धिओ दुर्गति राहू साहू, सघ बाधिया ए ॥५३॥

ढाल.—फोडी जाप एकासण तप सदा रे, करि इद्रो वश पच ।

सारणार २ सीस समापी गण मुदा र ॥५४॥

काल ज्ञान अने आगम बले रे, जाणी जीविय अत ।

रामे र २ चोरामी लाज प्राणिया र ॥५५॥

सवन सोलमे पचानने रे, राघ अष्टमि वदी (सु)र ।

वार र २ आहार त्रय अणसण निय मने रे ॥५६॥

सघ साखि पचलाण इयारसे रे, आरुही डभ्रा सथार ।

भाव रे २ भरत तणी परिभावना र ॥५७॥

पूजक निन्दक त्रिहुपरि सम मन रे, अरिहत सिद्ध सुसाव ।

ध्याइर २ पनर दिवश, जिनधर्म सलेखने रे ॥५८॥

सूत्र अरथ चिंतन चितलाइओ रे, आलोइन पडिकत ।

सुहृदु र २ कालमास, इम पचतु (त्व) पाइयो रे ॥५९॥

चस्तुः वरस नेऊ २ मास वलि पंच, पण दिन ऊपरि तिहां गणिय ।

सुदि नऊमी वैशाह मासे प्रहवि, हसीय? अमृत घटिय सोमवार ।
सुरलोक वासे जय २ कार करंति जण, गुण गावे सुर नारि ।

‘श्रीजिनगुणप्रमुखूरि’ गुरु, सयल संघ सुहकार ॥६०॥
इम गच्छ नायक कला गुणगण रयण रोहण भूधरो ।

संधार चारों तंगवारण, खंधवास म चोवरो ।

‘श्रीजिनमेरु सूरिंद्र’ पाटे, ‘जिनगुणप्रमु सूरि’ गुरो ।

तसु धवल ‘जिनेसर सूरि’ जंपे, ऋद्धि-वृद्धि शुभंकरो ॥६१॥

श्री जिन चन्द्रसूरि गीताम्

ढालः सकल भविक जिन सांभलो रे ।

‘मरुधर’ देशे मंडणो रे, श्रीपुर ‘वोकानेर’ ।

‘रूपजी शाह’वसे तिहां रे, धनकर जेम कुनेर
धनकर जेम कुनेर रे साचो, ‘रूपा दे’ तसु घरणी वाचो ।

जायो पुत्र रतन्न जिन (जा)चो, भवियण लुल लुल चरणे राचो ।
जी हो ‘जिनचंद’ जी जी हो, तूं जिन सासण सिणगारके ।
गिरुओ गच्छपती हो तूंतो संवेगी सिरदारके । सेवे सुरपतोजी ।१।

कल्पवृक्ष जिम वाधतो रे, सरव कला परवीण ।

बालक वये धर्मनी दिसा, समता रस लवलीण रे ।

समता रस लवलीण रे जाणी, मात पिता मन उल्लट आणी ।

गुरुने विहरावे शुभ वाणी, वात एह ओसंघ घणी सुहाणी ।२।

मतिसागर विहरी करी रे, ‘श्री जेसलमेर’ गिरि आया ।

‘वीरजी’ ने देखी करी, श्रीपूज्य घणुं सुहाया ।

श्री पूज्य धणुं सुहाया रे भाइ, सेंहथ चारित्र दे सुखदाइ ।

‘वीरविजय’ ओ नाम सबाइ, आपणी विद्या सयल भणाइ । ४ ।

अवसर जाणी आपियो रे, सहर्ष आपणो पाट ।

श्रीसध 'जेसलमेरु' में रे, कोधो अति गहगाट ।

कोधो अति गहगाटो रे वदो, 'श्रीजिनचन्द्रसूरि' गच्छ चदो ।

कुमति ना मत दूरे निकन्दो, मेरु तणी पर निंदो । ५ ।

सोभागी जवू जिसो रे, रूपे 'वयरकुमार' ।

शौले थूलभद्र सारियो रे, लब्धे गोयम अवतारो ।

लब्धे 'गोयम' अवतारो र ऐसो, दूणको हे केसौ ।

सूरके आगे सजुओ जेसौ, इण आगे सभ कुमती तैसो । ६ ।

'श्रीजिनेस्वर सूरि' ने र, पाट प्रगट भाण ।

'वाफगा' गौर कला निळो, गच्छ 'वेगड' सुलताण ।

गच्छ 'वेगड' सुलताण रे साचो, ओर कुमति कहावे काचो ।

'महिमसमुद्र' गुरु चरणे राचो, कवियण इम गुरुना गुण वाचो । ७ ।

न० २ राग गौडी भावननी

परम सवेगो परगडो रे, चावो जस चिहु खडो र ।

चीतार बडा छत्रपती र, नाम जपे नवखडो रे ।

कहो किम वीसरे, ते गुरु जुगपरधानो रे ।

'जिनचन्द्र सूरिजी' साधु सिरोमणि जाणो रे । १ ।

पच महानत पालता रे, करता उग्र विहार ।

भविक जीव प्रतिबोधना रे, कूड न कपट लिगारी र । २ ।

सूधो धरम सुगावता रे, अविरल वाण वलाण ।

मेवतणी पर गाजतो रे, साचा चतुर सुजाणो रे । ३ ।

सुधा सशय भाजता रे, प्रवचन वचन त्रमाण ।

कुमति मति कु खडता रे, धरना नित धर्मध्यानो रे । ४ ।

शुद्ध प्ररूपक साधुजी रे, हुता धरम जिहाज ।

गुणियोने आश्रय हुता रे, लेखता महु लजो रे । ५ ।

पंडित नां पालक वडा रे, दीनो तणा आधार ।

तेहने तुरत तेडाविया रे, कीधो सुं किरतारो रे । क । ६ ।
हंस तणी पर हालता रे, पंच सुमति प्रतिपाल ।

ते गुरु सां सइया नहीं रे, बालतणी परिकालो रे । का७ ।
चन्द्रगच्छ ना चन्द्रमा रे, गच्छ 'खरतर' सिणगार ।

वेगड विरुद्ध धरणा वडा रे, जिनशासन जयकारो रे । क । ८ ।
गच्छनायक दोसे घणा रे, पिण कुण तारा सरीख ।

तारागण सहु ए मिली रे, कहो किम सूरि सरीखो रे । क । ९ ।
धन 'रूपा दे' भावडी रे, धन 'वाफणानो 'रे' वंश ।

धन कुल 'भरत' नरोन्दनो रे, जिहां उपना गुरुराय हंसो रे । क । १० ।
सुगुरु 'जिनेश्वर सूरिजी' रे, थाप्या जिण निज पाट ।

ठाम ठाम धर्म दीपव्यो रे, वरताव्या गह गाटो रे । का११ ।
संवत् सतर तिरोतरे रे, भृगु तेरस पोष भास ।

करि अणशण स्वर्गे गया रे, धर जिन ध्यान उल्हासो रे । का१२ ।
'श्री जिनचंद्र सूरोन्द्र' ना रे, गुण गावे नर नार ।

तिण घरि रंग वधामणा रे 'महिमसमुद्र' जयकारो रे । का१३ ।

श्री जिनसमुद्रसूरि गीतम्

रागः तोडीः

आज सफल अवतार । सखीरी ।

श्री 'जिनसमुद्र' सूरिश्वरं भेट्यो 'वेगड' गच्छ सिणगार । स० । १ ।

श्री 'ओश वंश' 'श्रीमाल' प्रमुख सहु आवका सिरदार ।

आदर सहित सुगुरु आप्या, तिण श्री 'सांस 'नगर' मझार । २ ।
'श्री श्रीमाल' 'हरराज' को नंदन * जिनचन्द्रसूरि पटधार ।

'महिमा हर्ष' कहे चिर प्रतपो, जिन शासन जयकार । ३ ।

* अन्य गीतमें माताका नाम लखमादे लिखा है ।

॥ श्रीभद्र ज्ञानसार अष्टावक्र दोहा ॥



उद्वेचन्द्र सुत ऊपज्यौ, लीयो विधाता लोच ।
 दधनरायण दासनु, को अजन गति आलोच ॥ १ ॥
 अटारै इन्डोतरै, छाक मेल री छाड ।
 मात जीवण दे जनमीया, साड जात नर साड ॥ २ ॥
 वास जेगलै वैंत सु, दोवा जनम उदार ।
 वरस वार बौली गया, वारोतरै री वार ॥ ३ ॥
 श्री जिनलाम सूरिसरु भटारक भूपाल ।
 बीकानेरज वदोयै, चढती गति चौसाल ॥ ४ ॥
 सीस वडाला वडमती, वडभागी वडरीत ।
 रायचन्द्र राजा ऋषि, प्रगथ्यो पुण्य प्रवीत ॥ ५ ॥
 त्रिण पाटै इण कलि तपै, जाण्यो थो निरहेज ।
 वायै डनर वीररै, तरुण पसारै तेज ॥ ६ ॥
 प्रणमे सूरतनिह पय, मिल्यो जनम रो मीत ।
 ज्ञानसार ससारमे, आसै लोक अदीत ॥ ७ ॥
 सीस सदासुख साहरै, चलि आवे चौराज ।
 अरणे तौ मे साभलयो, आणर दीठौ आज ॥ ८ ॥
 वानाजी वायक असै, असै राठोडौ राज ।
 खरतर गुर सगला असै, रतन असै महाराज ॥ ९ ॥



काठिन शब्द-कोष

२*

अ

अकथय	९५ अकृताय, निष्पत्त	अणभिड्डिउ	०४ सामने नहीं हुआ, भिडा नहीं ।
अलिनात	२५८ चिरल्ल्यायी	अणुत्कमि	३९८ अनुत्तम ।
अलीणमह	।सि ३० वह शक्ति जिनसे मिक्षात्र सैकडा रोगोको पिलाने पर भी कम न हो जत्र तक कि रानेनार । स्वय भोजन न कर ।	अणसरहु	३६७ अनुसरण करो ।
अर्राड	११५ अलरोट	अणुसरीए	३३९ अनुसरण ।
अगनी	३३० नहीं किया हुआ, कठोर अभिग्रह ।	अत्थय	३६८ अथ अर्थ ।
अगजिउ	०४ अपराजित ।	अत्थि	३७८ अत्ति, हे ।
अधारा	९१ जो घोर (घिऋट) नहीं है ।	अनडां	२५८ अनन्न ।
अज्जवि	१ आज भी ।	अनलि(गाडिउ)	२६६ अनल राजा- का गण ।
अनुआली	३३१ उज्ज्वल ।	अनिमिप	५५ परावर, एकटक, दव ।
अड	३३ आठ ।	अनेरिय	३९३ दूनरी ।
अडगनिया	१५७ कानका जाभूषण विशेष ।	अपिनउ	१६ आप्त किया, दिया ।
अले	३५९ अल ।	अरलि न	१८ अलदीन ।
अढलक दान	३०१ प्रचुर दान ।	अउडहु	३६५ अयोध ।
अणगाए	६२, १६६ घर रहित, मुनि	जवझ	५ अज व्य, सफल ।
		अन्धारा नान	२७९ मिथ्या कलङ्क ।
		अभिग्रह	३४९ प्रतिज्ञा ।
		अभिधा	२७२ नाम ।
		अभिनरउ	९५ नया, अभिनव ।
		अभिहाण	१७९ नाम ।
		अमग्गउ	३७१ कुमाग, मिथ्यात्व
		अमलीमान	८९ निर्मल मानवाला

अमारि	१०२ अहिंसा ।
अमी	४१० अमृत ।
अमीझरउ	१७० अमृत झरनेवाले
अमूलिक	३३७ अनमोल ।
अथरावइ	३२ ऐरावत, हाथी
अथाण	४० अज्ञान, मूर्ख
अरगचा	८४ अरगजा
अरचा	१९८ पूजा
अररि	३२ अरेरे
अर्मक	२७१ बालक
अलजयो	२९४ मनोरथ
अलजो	८७ विरहलारण, ओलूंआना
अलिअ	८६ अलीक,अप्रिय, बुरा ।
अलीय	१०० अलीक,मिथ्या
अवगाहपु	६ अवगाहनकरना
अवडा	१७ अयोध्या
अवदात	१७०,२६९ गुण, चरित्र, निर्मल ।
अवधारो	२९९ स्वीकार करो
अवथरिउ	२२ अवतार लिया
अवरोह	३० अन्त-पुर,घेरा प्रतिबन्ध, रोकना ।
अवल	३३ अवला, नारी
अवहरइ	१ दूर करता है
अविहइ	१७८ अटल, अविहत
असमानो	८४ असमान

असराल	९० वक्र, जहरीला
असिणि	१८० अश्विन
असिय	३२ अशित, भक्षित
असिव	९६ अमङ्गल
अहिनाण	३४९ अभिज्ञान, पहचान, निशानी ।
अहियासने	३२९ वेदते, अनुभवते
अहिठाण	अधिष्ठान
अंग	१८३ जैन शास्त्र
अंगोल	७ पुत्र
अंबाड़ी	३४७ हाथीकी अंबारी (हौदा)
अंबापुवि	३० अम्बा देवी

आ

आउखउ	३० आयुष्य
आउखो	२९६, ४०९ आयुष्य
आएसि	३८७ आदेश
आकरा	१४८ अत्यन्त कठिन
आखडी	३१६ निषेधात्मक प्रतिज्ञा, व्रत
आखातीजइ	३९७ अक्षयतृतीया
आगर	८१ घर, निवास
आण,आणा	३७०, ३७१ आज्ञा
आणांदिणि	१ आनन्ददायक(में)
आदेशकार	१०६ आज्ञाकारी
आनुपूरवी	१९६ कर्मका एक भेद, अनुक्रम

आपे	९७ देता है
आम	४०८ इस प्रकार
आम्नाय	२७३, २८४ परम्परा, सम्प्रदाय ।
आम्बिल	११५ तपस्या, (द्विविधा) का त्यागविरोध)
आयस्य	२६ आचार्य
आरसे	१९० प्रकार
आरा	२८२ चक्र
आराधण	८८ आराधन
आरिज	१६०, ३७६ आर्य
आर००८	१६६ चण्ड
आलगिड	३९३ आरिजन
आलि	२४ व्यय
आलीजा	१०८ प्रेमी
आलय ।	३४८ आलोचन
आवतिया	१०४ आ रहे हैं
आवत्त	३०० दोना हाथ गुणक पैरापर लगा कर अपने मस्तक पर लगानेकी चन्दन मिना ।
आस नसिद्धि	२९० निक-मोक्षगामी
आसगायत	४१४ आश्रयवर्ती, आधीन
	उ
इक्कह	३३ एक एक

इलि	२५३, ३७३ पृथ्वीपर
इसडे	१९० पस
इटाल	३२९ इटासे
इदा	२८५ इद्र
	ई
इति	३२७ धान्यातिको हानि पडुवाने चालू चूहादि प्राणी ।
इया (सुमति)	२६२ विनकपूरक चलना
	उ
उइलहु	३६५ उपक्षा करना
उकेरा	३०७ उपकेरा, ओस चाल
उत्कठिड	३९२ उत्कण्ठितहुआ
उखेन	३३१ खेना
उगामणे	२८ उदय होनेपर
उच्छगि	६८, ११५, ३४४ गोद
उच्छरग	उत्साह, उत्सव
उजनाल ।	२९३ उज्ज्वल करना
उज्जोइड	१, ३६६ प्रकाशित किया
उणइ	४९ उसन
उत्तग	३३५ ऊचा
उत्थपिय	२९ उखाडा
उत्सूनाविधि	२६ उत्सूनाओरजविधि
उथपिय	४५ उखाडा

उद्वेग	४०४ उद्वेग
उद्भूतता	२९२ उदय हुए
उद्घोषणा	२८८ घोषणा, ढंढोरा
उपदिशि	९४ उपदेशकर, कहकर
उपधान	८७ तप विशेष
उपनले	११ उत्पन्न हुए
उपशम	६२, १३०, ३२०, ३२३ शान्ति
उपसमर्ण	३६७ उपसमर्ण
उपपलु	२७ उत्पल कमल
उवरन	३२ उदुम्बर
उभगउ	१६२ उद्विग्न हुआ,
उगूलिय	३९ उन्मूलित किया
उयरइ	३३३, ४०३, २२ उदरमें
उलट	१४९ हर्षोत्साह
उल्लास	३९२, ४०६ प्रसन्नता
उवज्झाय	२८, ९६, ९७ १३४, १३९, २३१, ३९९, ३४०, ४०२ उपाध्याय
उवसग	२० उपसर्ग
उसभ	२ ऋषभ
उल्सासहि	४० आनन्दित, उत्साहित
उंवर	८७ उमराव
	ऊ
ऊमाहउ	९६ लोकना, चढ़ाना
ऊनघां (थां)	२९८ उहंड

ऊनविउ	१४ उमड़ना
ऊमविय	१८ ऊंचा किया जाना
ऊमाहो	२२९ उमंग उत्साह
	ए
एकरस्त्यु	३०२ एक बार
एरिस	३७ ऐसे
एपणासुमति	२६२ एपणा समिति, निर्दोष आहार का ग्रहण।
	ऐ
ऐरावण	२६४ हाथी
	ओ
ओठीडा	३०२ ऊंट सवार
ओलगइ	८४ सेवा करता है
ओसउ	१९४ औषध
	क
कइ	१ कृत, किया
कइयइ	१९७ कब
कए	१ करनेपर
कचकडउ	११४ वस्तु विशेष
कचोल	३९१ कटोरा
कजारंभ	९ कार्यांभ
कटरि	३९८ आश्चर्य और प्रशंसा बोधक अव्यय
कटारिआ	१८८ गोत्रका नाम
कट्टु	३६९ कष्ट
कडयड	३६६ कडकडी आवाज

कणय	३८७ कनक, सोना, गेहूँ	काव्या	४१२ काटे
कायाचल	३५ कनकाचल, मेर	कामगवी	१२३, २५७ कामधेनु
कधीपानड	५३ घस्रविशेष, गुरुके चलनेके समय पर धरनके लिये घन्त्र पिजाया जाता है	कामकुमोपम	८ कामकभक्ते समान
कदाग्रही	३१६ दुराग्रही	कामित	९५, १२३ इच्छित
कप	३५३ कपना	कारवद्	३८७ कराता है
कल्पपर	४० कल्पतरु कल्पवृक्ष	कात्तस्वर	२६४ स्वर्ण ।
कपतरो	१७ " "	कित्ति	३८५ कीर्त्ति
कनम्	१ कल्प, कथा	किन	१७ कृष्ण
कमल	३५४ लक्ष्मी	किवाणि	२२ कृपाणि
कय	२१७ कृत किया	किस ।	१ कृष्ण पक्ष
कम्मपय	२६६, २७३ कम प्रकृति	किपि	३६७, ३७९ किमपि, कुछ
कर	३८ हाथीका गडब्य	किलिट्टु	३४० क्लिट
करटि	३८ हाथी	कील्ह	११३ कोली
करतड	३९७ कराता हुआ	कुगह	१६ कुप्रह, दुष्ट प्रह
कल्याणु	३७१ कल्या ।	कुञ्जि	३९१ कुक्षि
कराव	३१० कविराज	कुडि	२८४ मिथ्या
कव्य	१ काव्य	कुगति	१ कवना
कव्यट	३ कवित्त, काव्य	कृकडती	१७ कुकुम पत्रिका
कवाय	३५३ क्रोध, मान, माया लोभ (४ सत्तार वृद्धि हतु)	कुट	३११ कोने
कमथीको	१५७ जजाऊ, चित्रित	करा	१०४ राग विरोध
कहर	४०७ मोत	करड	१०४ का
कर	६४ चिन्ता, दुविधा	केसूना	३५१ केसूके फूल
काउसम्य	३२९ कापोत्सग	कोटीर	३६१ श्रेष्ठ, अप्रणी
कागल	१३३ कागज	कोड	३११ कोतक
		कोडि	८७, ९९ कोटि
		कोडीधज	४१६ करोडपति
		कोतिल	२९३ कोतल तेज घोडे
		कचूमड	१५७ कचकी

कंठीर(व)	३८४ गिठ
कंपिनइ	१२ कांपकर
कंसिण	३६७ कर्म, कृत्य
कंसाल	३,१६४ कांसीका वाद्य विशेष
क्रमि	३६९ चलकर, क्रमसे
क्रिया उधार	२७७ शुद्ध भार्गका उधार

ख

खड्दां	१६३ खड्ड
खग	३५२ "
खटण	३११ प्राप्त करना
खपाया	४११ पूरे किए, नागकिए
खमाया	२०९ क्षमा करवाया
खमाविनइ	३३० क्षमा करवाकर
खरड	३७९ सचा, खरा
खरहरथ	३६७ खरतर
खंति	३८० ध्यान
खंति कखर	३४ क्षांति, तेज
खम्भो	२९१ सहन करना
खाटीजइ	१६२ संचय करना, प्राप्त करना
खाटै	४१०, ४१९ स्थापित करना
खांत	४०८ ध्यान, क्षांति
खान	१५३ सुसलमान सरदार
खामो	२८४ कमी, त्रुटि
खिजमति	२८२ खिदमत, सेवा

गित्तवाल	४ क्षेत्रपाल
खिमण	३८७ इटना
खिवाला	१५४ खाद्य वस्तु विशेष
खोरइ	३० धीर, दुग्ध
खेतगपाल	४०९ क्षेत्रपाल
खोणि	३६ क्षोणी, पृथ्वी

ग

गउड	१०६ गौडी रागणी
गउ (उ) यइड	३७ गिडगिडाना
गउगी	१०४ गौरी
गउठ	२८६ समुदाय
गजगाठ	१६० हाथियोंकी धडा
गजगति गेलि	१५९ हाथियोंकी चालके समान चलना
गजयाट	१६८ हाथियोंका समूह
गणठरु	२ गणधर
गय	३३ गज
गयणु	२ गगन
गरड्डिउ	३३ गरिष्ठ, बड़ा
गरढी	३४३ वृद्धा स्त्री
गरीठो	२७० बड़ा
गरुयड	१७५ बड़ाभारी
गलिय	३३ गल गया
गहगहइ	३४० प्रसन्न होना
गहगहिय	४०१ ,, होकर
गहगाट	१६५, १६८, ३०१, ३१५ प्रसन्नता सूचक शोर

गहिर	३	गहरा
गहली	३३७, ३३८	गेहूँकी ढगली गुरगीत
गजजू	४९	गजनकरनेवाल
गाप्सू	३८४	गाऊ गा
गायसिए	३४०	„
गायव	८०	गलाया घिताया
गिडगिडी	१६४	वाद्यविशेष
गिरजा	२००	बडा
गुजरी	१०५	रागका नाम
गुणनिलो	९७, १४७	गुणोका आवास
गुणनिधान	३१	गुणनिधान
गुदराणी	१४२	अरज की
गुपति	११६, १७५, २९७	सयमित करना
गुसलाय	२९७	गुरके प्रसादसे
गुली	१५७	नजर नहीं लगानेके लिये बाधा जाता है
गुडिय	३८१	पताका
गुडी	१८, ३१६	„
गोइक	२४	गायओरआक
घ		
घट्टि (थट्टि)	२९	ठाठ
घातू	३८८	बहुतसे बाजे
घर्गण	१७	रहिणी

धात ।	३०१	डालना
धुराया	३०३	बजाये
धुर	३३८	बजे
घोल	१५६	कपडसे छाना हुआ दही
च		
चउपर्वी	१४३	४ पत्र तिथी
चउसठि	१८०	चोसठ
चउसाल	१००	चौसाल, चतु गाला चारोओर
चकरडी	१५८	चकरी
चक्रधरो	३८९	चक्रधर चक्र वर्ती राजा
चमकिय	३८८	चमका
चग	३७७	अच्छा
चारण	१६०	जाति
चारित	१६३	चारित्र
चियनास	४५	चैत्यवास
चूका	१६३	भृष्ट होना विचलित होना
चडापयसु	२१	चूडापतश
चूनजी	३३३	चरुत्र विशेष
चो	२५८	का
चोल	१५८, १८०	मजीठ
चोवा	८४	रुगाधित पदाथ विशेष
छ		
छछेद	१८३	आगम छेत्त सूत्र

क्षालिहि	३८८	समलता			
क्षीरता	६२	अवगाहन क रना, नहाना, गरकाव होना	डक, बुक डकारविण	१७	वाद्य विशेष
क्षुणि	३८७	ध्वनि		३६६	डका (वाद्य) के रव शब्दसे
क्षोळ	११३	क्षोली, क्षोला	डक्षण डलकती	३९४	क्षरक्षर
		ट		३३३	धीरे धीर चन्ती हुई
ट्टियड	२	स्थित	डाल	६०	रागकी रीति विशेष
		ठ			
ठेरे	२७२	ठण्डा होना	ठीक	३४५	गरीब
ठवणात्क	२८०	स्थापनादि ठ निक्षेपा	ठूकडा ठेल	२००	पहुंचे, पास
(पय) ठवणुञ्चर १, २२		पदस्थापनोत्सव		३३३	ढेलनी, मथूरी
ठविड	२	स्थापित किया	तक	१	तक
ठविज्जय	३५	स्थापित किया जाता है	ततर्वतु	३६८	तत्त्ववान
ठविय	२७	स्थापित करके	तत्य	३९०	बहा, तत्र
ठवीया	२७७	स्थापित किया	तपका	१४१	तपा गच्छीय
ठिकरि	१५४	ठीकरा	तयणु	३९५, ३९६	तत्र
		ड	तयणतरु	१६	तदनतर
डमडोलर	१६०	चचल होना	तरणि	३६६	सूय
डमर	५, १०४	उपद्रव	तरतड	१५७	तेरता हुआ
डाक डमाल	२६२	आडम्बर (क्षाकक्षमाल)	तरडन	३६७	नौका
डाण	२६०, २१४	तेज	तलीया	३१६	विस्तृत
डोकपणि	१६३	पृक्षावस्थामें	तव	३८५	तप
डोहडू	१५७	गिराना	तलपटे	२९२	उलके पाटपर
डोहका	१५४, १८०	दोहद	तह	३७१	तथा
			तहति	१५३	तथति, ठीक है ऐसा

तहु	३७१	उसके
ताणज्यो	२८९	पसारना
तिडावे	४१६	बुलाना, आमंत्रित करना
तित्थु	३६९	तीर्थ
तिथ	३९	त्रिधा, स्त्री
तियस	२९	त्रिदश, देव
तिलउ	१२, २४, २७	तिलक
तिलो	१९२	"
तिष्ठु (त्थु)	३६६	तीव्र, तीर्थ,
तिसंझ	९	त्रिसंध्या
तिहुअण	२, ६	त्रिभुवन
तिहुयणि	३८७	त्रिभुवनमें
तुंगत्तणि	३३	ऊंचाई
तुंगी	३१	रात्रि
तूठी	४०८	प्रसन्न हुई
तूंगीथा	२३९	पर्वतका नाम
तूर	३०१	बाजा
तेगदार	१९९	तलवार वाला
तेय	३८९	तेज
तोरणवार	३१६	द्वार
त्रटकी	२७६	तडककर
त्राडूकइ	२६२	दडूकता है, दहाड़ता है
त्रिकरण	९९, २९४	तीन करण (करना कराना अनुमोदन)
त्रिवली	१६४	तीन बलय वाद्य विशेष

		थ
थलवट	२९९	थली प्रदेश, मरुस्थल
थयउ	१३३	हुआ
थाकणे	३९३	ठहराव
थाप्या	३३२	स्थापित किया
थानकि	३९३	स्थानमें
थापण	१६९	स्थापण, धरोहर
थापना	८९	स्थापना
थाल	१७९	बड़ी थाली
थिवर	२२०	स्थिवर
थुइ	३७१	स्तुति करता है
थणइ	३९९, ४००	" "
थुणवि	१	स्तुति करके
थुणस्सामि	२४	स्तुति करूंगा
थुणहि	१, ३७१	स्तुति करते हैं
थुणि	३३	"
थुंभ	९७, २०७	स्तूप
थूम	३२०, ४०६	"
थोक	२९७	काम, बात
		द
ददूण	३९१	देखकर
दमणा	१९२	फूल विशेष
दरसणियां	८१	दर्शनी (दर्शन शास्त्री)
(कमल) दलावल	९	कमल दलकीपंक्ति
दग्ग	२४	द्रव्य
दसूडण	१९६	दसोटण

दगणु	४०७	जलाना
दंमण	३८८	दरान
दासनु	३२१	काहूँ
दादह	३४५	दान
दास्ता	३९	दीक्षा
दिणि	१	दिन
दिनाजड	६७	रोमा
दिनामे	१४७	दया
दिनायर	७	दिवाकर, सूय
दिवायर	२०	"
दीठली	१२	देसी हु
दीदार	३०३, ३४८	भातर, दरान
दीवमि	१	दीपर
दुष्कर	३७९	दुष्कर
दीस	४१३	दिन
दुष्करकार	१६३, १६४	दुष्कर कारक
दुगय	४०	दुगति
दुष्टद	४	दुष्कर
दुष्टनी	१५५	जदी
दुत्तरि	३६७	दुस्तर
दुवारो	१६४	दुस्तर
दुरग	१६७	किरा, दुग
दुलह	१५	दुल्भ
दुपिल्लह	३६७	दुविषय
दुसम	२६१	कठिन, उरा
दुहेलड	३७९	दुष्कर
देवाणुप्रिय	२६५, ३२३	देवानाप्रिय
देराना	११६	व्याख्यान
दसण	४९, ८९	"

दाकार	१६४	तबलकीमावा ।
दोगदक	१५१	दयताकी चाति
दोदगु	३७१	दोभाग्य
दोहिला	१६३, ३२३, ३९३	दुष्कर
द्रग	२६८	दुग
द्रू(रु)यमणि	३३	रुमि जी
ध		
धसाय	२७९	सत्ताये, जलाय,
धनदाण	५१	धन देनेवाला
धणुधर	३६५, ३६६	धनुधर
धम्ममद	३३५	धम्मति
धय	२२	ध्वजा
यवड	३६६	ध्वजप- ध्वजा
धयरावह	१५७	लजाना, प्यार करना
धवल मंगल	३६२, ३८८	मंगल भायन
धादि	७७	डाका
धौगड	३१४	माटे, जयरुस्त मजतूत, पुष्ट
धौगा	१९३	"
धुयरय	३१	धुतरज ?
धुरहि	३५	प्रथम आदिम
धूतारी	३४८	धूत स्त्री
धोक	४१३	साष्टांग प्रणाम
न		
नगीनो	३५४	जवाहिरात
नन्दी	१८३	सूत्र
नमेरी	३८४	नमस्कार करके

नयनिमल	३२	नीतिमें निर्मल	निद्धइइ	३६	परास्त करना
नयरि	१	नगर	निःमत	३३	निर्ध्रान्त
नरभव	२४	मनुष्यभव	निय	१६	निज
नरवध	२	नरपति	नियुमणि	३६७	अपने मनमें
नवगीय	२९	नव प्रेयेयक	नियमन	६२	निज मन
नव्याणु	३२६	निनानने ९९	नियरु	१	निकर, समूह
नही	१०	नहीं	निगीठो	१३	अनाशक्त
नाडसम्था	२९४	नठों आ सके	निरुत्तड	३९	निरिचत
नाडय	१	नाटक	निलउ	६, १७९	निलय, घर
नाण	१, ६, ३८९	ज्ञान	निलो	३१४, ३१६	"
नाणवत	३६६	ज्ञानी	निलवट	१८१, २९९	ललाट
नाणिहि	४९	ज्ञान रूपी	निवड	१९९	घनिष्ट
नाथणा	२९८	नाथ डालना, वरामें करना	निवंस	१७९	स्थान
नाडौ	८०	आवाज	निष्पन्न	२७१	सम्पन्न
नान्हडियड	१६३	छोटा	निसम्भे	२७६	सुनकर
नामड	१६६	नाम	निसाले	३२२	पाठशाला
नारिग	३२	नारिग, मीठा नीवू	निसियरु	३३	निशाचर, राक्षस
निकाचिय	३९६	निविड रूपसे बन्धन	निसुणवि	२१	सुनकर
निगोद	३२९	अनन्त जीवोंका एक साधारण शरीर विशेष	निसुणेवि	३९३	"
निग्रंथ	२७०	परिग्रह रहित	निठतरइ	१९६	नोतरना, आमं त्रित करना
निच्यु	३०१	नित्य	नीकड	११८	अच्छा, भला
निज्जणवि	३९, ३९	जीता	नीगमड	२४	गमादो
निज्जिण्ड	३१, ४९	जीता	नीआमता	३३०	पार पहुंचाता
निटोल	९१, १२०	व्यर्थ	नीलवण	३३०	लीलोती, हरियाली
			नीवाणो	१३०	नीचा स्थान
			नेजा	३९३	भाले
			न्यात	३११	ज्ञाति, जाति

पदनायक	१५७ नहलाता है
	प
पउम	३६७ पञ्च
पउमण्वि	१५ पञ्जादेवी
पउम पद	३० पञ्चप्रभ
पडसरह	२ प्रनराके समय
पडरिय	३२ पावरना (प्रक्षरित)
पगला	२५७, ३३२, ४०५ पादुका
पचलाण	११३, ३२६, ३५७ प्रत्याख्यान
पचरा	३३० प्रत्याख्यान किया
पचूम	२०१ पयूसण पय
पचभाचार	४९ चानाचार, चरानाचार, चरिनाचार, तपाचार, वीयाचार ।
पचगि	२४० पाच जग
पच विपय	४९ पाच इन्द्रिया क ५ विपय
पचाणगु	३३ पचानन, सिंह
पचासम	३६३ पचामवा
पचुतर	२९ पाचअनुतर पिमान विजय, घेजयत, जयत, अपराजित, ५ सवाथसिद्ध

पचयन्तु	१५ प्रत्यक्ष
पटतर	३६७ उपमा
पगोधर	१७६ पट (पद) को धारण करनवाले
पोल	५३ रेनामी वन्त्र
प लीजई	३४९ प्रतीक्षा करना
पडह	३, ३१८ पट्ट वाजा
पनाग	२२ पताका
पठिकमगड	१८२, १३३ प्रतिजन्मण
पठिनार	३२६ प्रतिकार
पठिपु न	८९ प्रतिप न, पूण
पठिधिम्य	४ प्रतिधिम्य
पठियोह	२, १९, २७, ३८८ ४०२ प्रतिबोध
पठिरथण	१८ प्रतिरथस, प्रतिघनिसे
पडीमा	२८० प्रतिमा
पडर	६८ ७७, २५९ प्रचुर ।
पणासह	२०, ३६२ नाश करता है
पणासणु	१६ प्रनारा करन- वाला
पत्त	४ प्राप्त
पतीठी	१४१ प्रतिष्ठि
पतीनड	१४१ प्रतीति हुइ
पत्ति	३३ वृक्षमे पते
पत्तु	३६९, ३१२ पट्टचा, प्राप्त किया
पत्तम	१५७ पत्तम कमल

पधरावद्	३०१	रुधापित क- रता है	परणालियां	१३०	प्रणाली, पर- नाले
पभणई	४०४	कठता है	परत	३७६	पड़ती हुई
पभणेलो	३१२	कहूंगा	परत्वी	२४	परस्त्री
पभुठ	१,११८,४०२	प्रमुख, आदि	परत्र	३६७	परलोकमें
पभुठानं	१	पभुठानां	पराली	८१	पराली, पानी भरनेवाला
पभोउ	२२	प्रभोउ	परपट	७	परिपट
पथ७	१,२,१५,३१, ५१,२१५,३६५, ४०१, प्रकट		परि,पर	४१४,४०८	भांति, तरठ
पथडिय	३१२	प्रकृति	परिकर	३३८	परिवार
पथडिहि	३५	पाडित्यसे	परिनिखवि	३६६	परिपट्टि
पथतलि	३७,६३	पदतल, पग- तली	परिग्रह	२७७	धन, वस्तु मञ्जय
पथन्ना (दप)	१८३	प्रकरण १०	परिघल	३४७	खूब
पथार	३९१,३९३	प्रकार	परिणिति	३३०	प्रवृत्ति
पथावि	३६५	प्रतापी, प्रजा- पति	परिवर्था	२९९,३३६	परिवेष्टित, परिवार सहित
पथासइ	६,३६	प्रकाशित करता है	परिठरवि	१	छोड़कर
पथासणु	३८५	प्रकाशन करनेवाला	परुपर	३६७	पररपर, अ- न्योन्य
पथासिउ	२	प्रकाशित किया	परे	४१३	भांति
पथंडु	३८५	प्रचण्ड	परयोपम	२९१ ३५६	कालका प्रमाण विशेष
परगडा९७,२९६,३६१		प्रधान, चतुर, कुशल	परहम(?)णु	३६८	परहकवि कहता है
परगच्छी	१४१	अन्यगच्छीय	परज्जंति	१६४	प्रवर्त होते है
परघल	१००	खूब	पर(य) डुरत्ति	३१	रान्निको प्रतिष्ठा
			परतणि	३३९	प्रवर्त्तिनी (पदविशेष)
			परर	३६९	प्रवर

पवरपुरि	१ प्रवर नगरी
पवग	२२ ३८८ प्रवर
प वथ	२७ पवत
पचित्तिग	१ प चित्र होकर
पसुसिजइ	१ प्रशमा को जाती है
पसाड (य)	४, १७७ प्रमान क्रम
पसायलु	३३९ प्रवादसे
पासद्ध	१ प्रसिद्ध
प्यहु	२७ प्रभु
पहाण	२४ ४०२ प्रमान
पहिलु	२७८ पवला
पहु	१ प्रभु
पहुत्तड	४० प्रभूत, पडुचा हुआ
पहुत्तगी	२१४ प्रवर्त्तिनी, पद १वशप
पहुन	४ प्रभवति, समय छाता है
पह्वि यड	२ पृथिवी प्रसिद्ध
पहुतिय	३९५ पहुवा
पासर	१६३ पलान, होदा
पासयड	१७८ सज्ज किया
पागरड	६४ ८६, ९८, १८८, ३०० ३१४ वि ११ करना
पाटू	१ ८ पट्ट छल्ल घल्ल
पाटोर	१६६, २९४ पधारक, प-का उद्धारक
पाडर	३४७ गिराता है

पाडर	१५२ पाटल
पाथरइ	५३ विछाता है
पाथू	३५३ पथिक १
पात्रग	४१५ सोघा १
पानरी १९५, १९९	३२० व-त्रविशेष
पायका	३११ पराना
पाय	६ पाप
पायरोर	२० भवानक पाप
पाह	३६ पार्वनाथ
पासेम	४१४ पार्वनाथ
पिस्त	३५५ देवी १
पिस्तहि	३६५ स्त्रे
पिस्त्रि	३५७ देवकर
पियमय	२२ प्रेशगर, दृश्य
पिरेवि	३३ खना १
पिग	४ ५ भो पर
पिम्म	३६५, ३६६ प्रम
पिम्मु	३५५ ,,
पिउन	४१५ दुष्ट
पीलीया	३२९ पी (कोलूमों पोल दये)
पुगति	१ प चित्र क ता है
पुनगळ	२८१ पन्दायामेंसपुङ्ग
पुगड	१० पूर्ण करो
पुरधिय	१९ बहुपरिवाह या पुत्र पत्ने-वालो स्त्रिय
पुरोसादागी	२६४ पुष्पाम प्रधान, प्रसिद्ध

पुलिया	४१४ चले	प्रफाटी	१३३ पौ फटी
पुत्रुकिरुड	३६५ पूर्वकृत	प्रहममि	९७ प्रभात समय
पुढपां	१७७ पुष्प	प्ररूपीयो	१४८ प्ररूपा, कदा
पुह्वि	१ पृथ्वी	प्रार्ति	३४३ प्रायः
पुओ	१४८ पीछे	प्रोल	३३५ प्रतौली, दरवाजा
पूथ	३८७ पूजा		फ
पेसारी	४१३ प्रवेश	फरहर	२९३ फहरानेवाली
पैशुन	२७९ निन्दा		पताकार्ये
पैसारे	३०४ प्रवेश कराया	फासूय	३१ फासू, प्राशुक
पोसड	१५४, १८२ पौपत्र	फडवि	३६ स्पष्ट, व्यक्त,
पो महा	११४ पापत्र		विशद ।
पोढोती	२९० पहुंचो	फेड्या	३५२ नष्ट किये ।
पौपत्रशाला	३०४ उपाश्रय	फोक	१४३, २७७ व्यर्थ
पंथीडा	३०३ पथिक, यात्री	फोकल	६७ नारियल
पंकथ	४९ पंकज		व
पंडिथ	१ पण्डित	वईठ	३४६ वैठा
प्रवल	४१६ खूब	वजडाव्या	१४६ वजवाये
प्रजालियो	३२९ जलाया	वड आरु	३२ वडका फल
प्रतहं	१५६ तरफ	वडवलती	१४६, ४१४ वडमागी
प्रतिशोधीयो	१४८ समझाया, ज्ञान दिया	वत्रीस	१५७ वत्रीस
प्रभावना	३३८ जिल कार्यके द्वारा प्रभाव पड़े	वन्नउला	३५१ वनोला
प्ररूपणा	२६५ कथन, वक्तव्य	वरास	११४ कर्पूर निर्मित सुगन्धित द्रव्य
प्रवरु	२५७ प्रवर	वरीस	३३८ वर्ष
प्रभव्यो	३२२, २७१ पैदा हुआ	वहरला	३५२ बाहूका गहना मुजबन्ध
प्रह	३२० पौ, प्रभात	वंभ	३६५ प्रहा, प्राहण
		वाकुला	१२० वाकले

याजू य घन	३५२	गइना विगेष
याटडो	३०३	घा , प्रतीक्षा, राह, माग
यासीयना	१३०	पवीहा
यासीहा	२१३	पवीहा
यालागण	३९	याल्यायाम
यालूना	१६५	(प्यार) यालू
यालूमेर	८६	प्याग
यीकाग	४१४	यीकानर
यीहना	१६३	हुगना, हवा दालना
यीदानी	३७३	यष्टिन हा गया
युफठ	१७	घाय नि ।।
युलूति	१६७	यालत हें
यूना	३३७	घपा हुइ
यकर २९४,	३३४	दाना हाय
येलाडु	२७२	दिगडा घाम का नाम
येवि	३८७	दा, दानो
योहइ	२	याधना, निक्षा, ना
याह्य तो	३९२	याघ(ज्ञान)इतुप
याहिय	७	याघ दकर
यडा	३१०	यहु, यहुत
भ		
भजावठ	८५	भडारा
भतिवतु	३६८	भतिवत
भमिऊग	३०	भ्रमग करके
भलाव्या	२७४	भराया

भलूके	३०३	घमरु
भलूहणीयो	३०३	घमका
भयणिष्टिय	१	भयनमें स्थित
भघियग	१,६७,११६,२६८	४०२
		भयिकजन, भय्य व्यक्ति
भप्रियगडु	२४,३१	, ,
भगरीय	३९३	भला
भजा	३७८	भाया
भंभी	१०५	घाघ विशय
भालसो	८१	केद, अघरी घाटरी
भाट	१६५	जाति विशेष
भाण	२९८	भानु सूय
भाभन	३०४	पागल भाली
भा ठि	१५९	कट, दुल
भाउरह	३६७	घमकता
भिठ	१	भिक्षा
भुगन २९३, ३३१, ३४४	३५२	घाघविशेष
भृगलुग	३७	भृगिनामें
भृगली	७५	घाघ विशेष
भहरवी	१०५	भेरवी रागका नाम
भक	२८९	मेंठक
भय	४०१	भद
भाजग	१६५, ३५२	भाजक जाति
भायग	३४८	भाजन
भालिम	३९३	भालापन, अज्ञानता
म		
मइडी	३४७	कमरा

सउड	३५२ मौड, मुकुट	मठञ्चय	५ महाध्वज
स	३६५ मत	मउमड	११ सुउमनड
संख	३५२ चित्रपट दिखाने कर जावन-निर्वाह करने वाला एक मिश्रुत जाति	महागसि	२० महानम रमाई
सञ्जु	३६७ मृ-यु	मदियलि	२८ महीनल पर
सडराने	३१९ मगत्रीश	महिर	४११ महिर, कृग
सगछिउ	२ मन वाछिन	महिरगग	१६७ मञ्जुड
सगप्रतु	३६९ मगुप्यत्व	महायके	९ गृध्रा तउरर
सगमगा	१५८ बालककी भापा	मडुर	३९५ मधुर
सणिमथ	९२ शिरोमणि	मउअर	४९ मधुकर
सणु	२ मन	मउय	३२ मधुक, मडुवा
सणुय	२३ मनुन	मडण	३९२ माडना, रचना करना
सदान्ति	३६ वेदान्ती, वेदान्तज्ञाता	माकंद	१५७ इन्द्र !
सदल	१४४ तबला वाद्य विज्ञाप	मागग	३८७ यावक
सञ्जुमाधवड	१०५ रागिगी	नाणिण	३६६ गर्जन
सनभितरि	२७ मनके भीतर	मांडवइ	३५१ मउपमें
सनगली	३४६ मनकी उंग आनन्दित मनसे	मांडी	१५७ ब्रजाकर
सपगळ	३७ भदगल, दाथी	माडक	१६४, ३४४ वाय विशेष
सपग	३४ मदन	मयडू	२३ मातंगड, सूर्य
सयरडगे	१६४ सञ्जुड	मारुणे	१०५ रागका नाम, मरु थको
सरुपिगा	४१५ चक्रे	मालिया	३४५ महल
सरुउपतड	१५० चरुचा हुआ	मालोवम	६५ मालोपम
सलहार	१७७ राग विशेष	मिछन	११, ७ मिछात्त्व
सलवार	१७ ,,	मितुवि	३७० मित्र भी
सहवाइण	३४० व्यय करना	मिथ्यात्वसाल्य	२८ मिथ्यात्व रुची साल्य
		मिसरु	३५५ वस्त्र विशेष

मिट्टु	२७८	मीठा	र	
मिष	३६०	मिश्र युक्त	रञ्ज	२५ राजा
मुक्तीयो	२५९	छाडा	रञ्जियेउ	३६६ प्रसन्न किया
मुक्चइलि	२९	माक्ष स्थल	रज्या	३६२ "
मुस्या	२८९	छाडे	रञ्चति	३७७ राग करते हैं
मुगद्	३०	५०१ है	रणइ	३८० धमता है
मुणिद्र	२, ३८५	मुर्ख	रणकार	३३१ आजाज विशेष
मुनिवि	३७	कक्कर	रतनागर	२८ रत्नाकर, शाह का नाम
मुनियय	७	मुनेका पद	रत्नावली	१८० रत्नाको जली (मसूह)
मुरगो	९१	मृदुअगी-छी	रत्नाल	१५५ हर्षोद्वास
मुरमइ	८	मरु मडर	रत्नरत्नइ	२४ रमण करना
मुहपति	३३	मल प्रस्त्रिका	रम्म	२२ रम्य
मठाला	३४०	मू छावाना	रजागारा	३२४ रत्नाकर
		चार	रयणायर	९ लाकर
मू	३९०	मश	रयणीह	२३ रत्न
मूकी	४१६	छाकर	रलिआता	१४७ आनन्द
मरड	१०४	मेरा	रलिय	३३, ३८८ उमग
मेलिय	३९५	मिलकर	रली	११६ ४१२ उमग इच्छा, हय
मेवः	३२१	६३ दूत	रलिआणिय	३०७ छन्दर मनोहर
मोकरू	३२२	भत्त	रलियामणउ	३, ३३२, ३३६ छ ६९, रमणीय
मोटिम, मो टम्म	८५, १८९	गोरव,	रह	६७, ३९५ रय
मोरउ	९८	मरा	राक	२७१ गरीब
मोम	२६१	गया	राइ	३४३ राधना, पकाना
म हणवलि	१०८	म हनवालो		
		दल, मनाहर उल		
मोछरेयाजी	३२	मोह रहे है।		
		य		
रानामिकु	२६४	यदाध्वी		
युगवर	१७९	युगम प्रधान		

रायस्य	३१	राजाके
रिक्षा	१६६	रक्षा
रुडी	२६३, २८४	अच्छी
रुणजगद्	४९	मंडगते हैं
रुद्धि	२८६	ऋद्धि, धन
रुलिय	३७	रुला, पड़ गया
(रु) अ	३६६	रूप
रुडउ	३७९	रुन्द, अच्छा
रुडा	१६५	"
रुडी	३४३	" अच्छी
रुडु	२६३	अच्छा
रुव	९, ३६६	रूप
रुवथं	३६६	रूपक
रुविण	३६५	रूपसे
रुसण	१५७	रोमकर
रुषिमती	१४१	तपोंका उप- नाम
रेलो	१३१	प्रवाह
रेहिणी	३९०	रोहिणी
रोद्ध	४०७	नाम
		रु
रुवणगिण	३६८	लक्ष्मणोंके ज्ञाता
रुवण	१५७	लक्ष्मण
रुवणवन्त	१५९	लक्ष्मणवन्त
रुल्लि	२९, ३६१	लक्ष्मी
रुल्लिव	३०	उत्तम लल्लिव
रुवधिवन्त	४०२	लल्लिव (शक्ति विशेष) सम्पन्न
रुवण्ड	१५४	लेवड़े, देवालीकी पपड़ी

लंख	३५२	बड़े बाँसपर खेल करनेवाली नटजाति
लाइक	३०४	लायक
लाखपसाव	३०३	एकदानविशेष
लाडकडो	२७०	प्यारा
लाडो	३०४	स्वामी
लाहिण	६४, ६८, ११५, ४१०	लंभनिका
लिगार	२५९	थोड़ा, क्लिप्त
लिद्ध	१४०	लिप्या
लुलुलुल	३०२, ३६५	झुककरे
लुंछणा	३६३	न्यौछावर ?
लेखइ	३८७	हिसाब
लोइ	२	लोग
लोकणरओ	१०४	लोकोंका
लोह न	९२	लोभ नहीं
		व
व (व) ककु	२	चक्र, मंडल
वखतवन्त	१९०	भागवान
वछ	३२३	पुत्र
वछरि	२१, २५, ३९६	वत्सर, वर्ष
वडउ	३५९	बडा
वत्थु	३५	वातु
वदात्त	९८, ४ ४	प्रसिद्ध
वद्धण	३९१	वृद्धि पाता है
वन्नारो	३५८	वृद्ध करो
वनमृद्ध	९४	वनका अंश
वनियां	१५७	आमृषण विशेष
वन्नियइ	३५	वर्णन किया जाता है।

चरचर	१६८ चतमान, चल रही हो	वाणारिम १७ बनारिस वाचक
चरनोट ह	१६६ बनोला	वाणारी(स) १ वाचनाचा
चरीय	६ धरकर, अङ्गी-कार, स्वीकार	धादना २६९ घटना करनेको
चल गिा	२९ अवलम्बनकर, पकडकर	घाङ्ग्या ३०० घटना करेंगे
चलतु	३०९ प्रत्युत्तरमें, लौटता हुआ	वादी ३७ घाद करनेवाला
चलि	१७६, ४१९ फिर, लौटकर	वादीजीत २६६ वादिया को जीतनेवाला
चली	२५७ फिर	घान ९२, १६६, ३५८ ४०६, रामा
चले	३०३ फिर	घादवा २६९ घटना करनेको
चलाखि (वि) का	३६ वैशेषिक दशत	घादम्या ३०० वदना करेंगे
चसदि	४९ चसती	चारउपग १८३ १२ उपाग (भागमसून)
चसीट्टी	१४१ दूर।	वालीनै ४१० लाकर,
चदिरमा।	३१९ विचरने वाणे महादिनेह क्षेत्र के तीथङ्कर	वावइ १३० बोना
चदिरउ	१८ चदरा हो गया	वावरइ ३४० व्यय करना, उपयोग करना
चदिल।	४१६ जलदी	वावरियउ ३६७, ४१६ व्यय किया
चदुराव्यो	२७२ चदराया, प्रदान किया	वानिय ३३ वापी
चदुरिवा	११४ लेनेको लानेको	वावु १५४ व्यय करं
चदन्ति	३७१ चलता है ?	वास १ आवा न, घर।
चाइ	१६ वादी	विगुआणा २७९ बिगोरे गये
चाइक	३१० कथन योग्य। (प्रशमात्मक काव्य)	विधत १ विधाको
चाइमछ	१४२ नाम वादिया मं मछ	विचरवउ १६३ विहार करना चलना
		वितावनीय ९ विद्याका समूह
		विजा १, ४०१ विद्या
		विट ३८ भाड
		वित्तिरुह १५ वृत्तिकता
		वित्यरि २७ विलतारसे

विनडहि	३६५ विडम्वन कगता है	वृक	३६६ वाद्य-विशेष
विनाण	३३ विज्ञान	वृन्दारक	२७१ देवता
वि-नागी	१४, १६६ विज्ञानी	वेडविय	३३ विकुर्वना को
विष्फुरइ	५ प्रगट होना, स्फुगयमान होना, स्फु टेत होना ।	वेगड़	३१३, ३१४ विरुड़ और नाम
विभूपीय	४ विभ पित	वेठ	३५५ लडाई
विमाउइ	१६८, ३९४ विमर्श करता है	वेयावच्चसार	११५ वेयावृत्त्य रूरी सेवा
विमासे	३२१ सांचकर	वेहलि	३९५ विलम्ब न करके, शीघ्र
विन्हें	३१८ दोनों		२।
विहोत	१९१ विरुडवाला	शाश्वतो	३०० शाश्वत
वित्रवपरि	३१ विवि व प्रकारसे	शीयल	६२ शील
विविह	२ वि वध	श्रवे	४१० श्रवणा, गिरना टपकना, बरसना
विबहु	२७ वि वव	श्रीकार	४१५ उत्कृष्ट, उत्तम
विवाहलु	३३९ विवाह का काव्य	श्रुतज्ञाने	२७० श्रुत (शास्त्रीय) ज्ञानसे
विश्वानर	८५ वेश्वानर		ष
विषगद	१९० कण्ड, विरोध	षट्काया	१०० छ शरीर,
विमहर	५६ विषयर	षडावश्यक	२७२ सामायकदि छ आवश्यक कार्य
विडलौ	४१५ शीघ्र		स
विहाणु	३७१ प्रभात	सइंठथ	१४६ अपने हाथसे
विहि	१ विधि	सउन्नउ	३६६ सदा उन्नत
विहिमण	३६ विधिमार्ग	सकउं	१, ३९८ सकना, शक्त
विहूणा	८४ रहित	सखर	१९५ सच्छा
वीटी	३५५ वेष्टिन किया		
वीवाहलउ	३९० विवाहलो, वद काव्य जिसमें किमी विवाह का वर्णन हो		

सखरी	४१३ अच्छी	सखरुड	२०४, ३१० सख्ताख
सखाह	१६० मिग्रपना,	सथुण्ड	५ संस्तत्र विद्या
	मित्रता, सहा-	सनाणह	२८ स ज्ञानसे
	यक	समकित	४९, १३०, २२५, २८०
सगरी	४०५ साखा		सम्भकृत्व
सगदि, मगि	४, २६ ३ स्वगम	समग	२१ समग्र
रुवेवि	५१ सनेपत	समगह	२१ भ्रमण
मंथवर	१३, १८ सत्रपत	समरणी	१५९ माला
सघातह	१४२ साथमे	समपड	५६ यादु किरा
मथाग	३०१ याज ?	समपडि	९४, १३८ समान
सजम	६ सयम	समवाय	५६ समूह
सतुत्तु	३६८ मयुक्त महित	समापे	४१२ दता है
संज्ञ	३८१ साया	समिद्ध	३६७ समृद्ध
सठविड	३८७ सन्थापित	समाभ्रम	५९ भ्रम
	किरा	समासरे	३३८ समवभर, पधारे
सठाविठ	३९५ ,,	सम्मुबह	२०४ सामने
सठिड	१ सस्थित	सपत्तु	३८५ पहुचा
सठियठ	१ ,,	संपय	२५ संप्रति
सतुठ	१ सतुष्ट	सवेग	११६ रुसा स उदा
सठ वि	३७१ छष्ट, श्रेष्ट		सीनता वैराग्य
सतर	१५४, १५६ सतरह		मोक्षाभि १५४,
सतरभेदी	२७५ ,, प्रकारकी	सगेगी	१७७, ३२५ स गवाले
सत्तु	३७० सत्र	सयल	६, १३४, ३३२, ३५८ सकल
सत्य	३६८ सार्थ सघ	सजा	२५९ शरण
सदीव	३२९ हमेशा, रुद्वैघ	सगणा	३३१, ३५२ घाघ विरोध
सदृङ्गा	११४ श्रद्धा	सगभरि	१४३ बराधरी
सद्वेहे	२०८ श्रद्धा	सि	३९४ स्वर
सदि	२ साधमे	सरे	३०९ स्वगसे
सनूर, सनूरी	६८, ८९ दीक्षमान	सलहिट	१३ प्रदासित
	छरूप, छ द		

सलहियइ ३५, ९६, ३६८, ३८६ प्रशंसा की जाती है	सामंहेले ३३८ सामेला नामक कृत्य, सामने
सवइसिद्धि २९ सर्वार्थसिद्ध (अनुत्तरविमानो)	सावथ ४, २२० श्रावक
सल्लण्डा ३९३ सलोने	सासण ८९ शासन
सवि २७७ सब	साठमीनी १५४ स्वामी वन्दुकी
सव्व ३० सर्व	साठमिय २३ स्वधार्मिक
सव्वरिय ३१ रातमें	सादिय ४ साधन किया
ससवरे ३५ शशधर, चंद्र	साहुणि ३० साधवी
सहलउ २३, ३७० छगम	सिजवाला ६८ पालखी, वीक्षण दिशेष
सहसकूट २७४ हजार शिखर- वाला मन्दिर	सिज्जइ ३० सिद्ध होजाना
सहसककर १५ सूर्य, १००० किणवाला	सिज्जत ३५ सिद्धांत, सिद्ध होना
सहिपु ९८ ठीक, निश्चय, हे सखी	सिज्ञाय ११३ वाध्याय
सदियर २९३ सखी	सिरतिलौ ५८ सिरमौर
सहुनखिया ४४ सब नष्ट हुपु	सिरि ३२ सिरमें
साचवउ १३३ सम्हालो	सिरीय ६ श्रीको (सं- जम रूपी लक्ष्मीको)
साचवी ४१६ सम्हाली	सिय १ शित, शुद्ध
साता ४११ कुशल	सिधुया १०५ सिन्धुराग
साते ११७ सातों	सीखविय १३४ सिखाया
सानिव ३४० सान्निध्य	सीझइ १७९ सिद्ध होजा है
सावू ३४८ साधुन	सीलि ३४ शील
सामाइक १६१ १८२, सामायिक	सीस, सीसि ६२, १४५ शिष्य
सामि ३६९ स्वामी	सीव, सीहो १७६, ३९७ भिद
	छई ३६५ श्रुति
	छकड ३३१ छगन्धित ध्व्य विशेष

उकटि	११४ घिमा ५ दन सुपनपर	उरगी	३३३ अच्छे रगवाली
उकनल	३७१ सार	उरदम	५१ उरदमकषपट २
उकनीजी	६७ कुनीन, कामल गाग्रवाली	उरघर	२९ उत्तम देव, इन्द्र
उकिप्र	३३ उरुत	उरसा	२६२ उत्तम
उकगीरा	१४६ उन्दर, इच्छा	उरुव	३९२ सरूप
उणय	३९२ नीतिमान्, मनाचारी	मलताण	८९ सलतान
उनिछड	१ उनिश्चित ।	मुविहिय २४,२८,४५,२६ सु विहित	
उपन	१८९ स्वन	सुईम	२ सुगमास्वामी
उपना गाय	२७० स्वनानायाय	उदिण	३५७ स्वप्न
उपरि	१ अच्छो तरह	उहु	३७२ सय
उपधिति ।	२ उपधित्र	सुगडी	१८१ मोडाई
उपसमिय	२१२ स प्रदासित	सुरपोपम	२९२ सूर्यके समान
उपमाड	२५७, ९९ उ प्रमाद, सदुपय	सुगिंतु	३ सुगिन्त्र
उप्रम ह (द)	३१० रोमन कृपासे	सूदवि	३४१ सधवा
उमति	११६ द्वयामिती आदि	सूदय ६७, ३१६ १३४ उमग सौमा व्यवती	
उमरिउजत	१ स्मरण किय गानेपर	सोगत	३६ उगत, बोद्ध
उमरेत्रि	३८४ याद करके	सोस	२६१ २६६ अकपोस, खे
उमिगड	३७८ रान	सोहन्माइवद	३० सोधम देव लोकका इन्द्र
उयदेवि	४ श्रुतनेत्री	सोहामणी	१३० उदावता
उरगत्रि	१४५ कामधेनु	सोध	३६ महल, प्रासाद
उरुरवि	१ वृहस्पतिक समान	स्तुप	२९० स्तूप, धूम
		स्त्यु	१६५ से

	ह	हीला	८१ अत्रहेला ?
हृत्सयण	३६६ हत भद्र	हिलियइ	३७० निन्दा करताहै
हृथलेवड	३९९ पाणिग्रहण संस्कार	हुग्गउ	३७९ हांगा
हयांछ, हयाछ	३७० हताशा	हुसि	९९ हौंस, अभिलाषा
हरि	९८ सूर्य	हुसेनी	१११ रागका भेद विशेष
हरिल	३९९ वर्ष	हुडा अत्र नप्पणि	३७० हुंदाचसर्पिगी, वर्तमान हीन समय
हवालइ	१४२ सुपुर्द	हुति	३७० से, की अपेक्षा
हारिक	३३ द्वार जाना	हेला	३९९ उच्च स्वर
हिव	३७२ अत्र		
हीचइ	१९७ हीडे (पर)		



विशेष नामोंकी सूची

—*—

अ		
अक्षरमाला	१८१	१८४, १९२ १९९ २१६ २२२, २२५
अकार	६१, ६२ ६३ ६४, ६९ ७०,	२३५ २४७ २४७, २६, २७४, २७५
अक्षर	७१ ७२ ७३, ७४, ० १ १, ९२,	३१४, ३५१, ३५४, ३७४, ३९८
अक्षर	९४ ९५ ९७, ९९, १ ०, १ २ १०७,	अनिरुद्ध १४२
अक्षर	१ ८, १०, १२१, १२२, १२३ १२५	अनका त (म्या. भा.) नयसताका ३११
अक्षर	१२६, १२८ १२९, १३ १३२, १३७,	अनुयागदा (सूत्र) १८३
अक्षर	१३ ३, १४४ १४ १४७ १५०,	अभयक्रमार ६१
अक्षर	१७२, १७० १८०, २३०	अन्यतिलक ३ ३१
अक्षर	३५८, ३६०	अभय घसूत्रि ११, २० २० ३१ ४१ ४५
अक्षर	४ ९, ३१९ ३४३ ३६५, ३ ६	५९, ११९ १७२ १७० २१६, २२२, २२६
अक्षर	१८८	२२७ २२९ ३१२, ३१९, ३६६, ३८४
अक्षर	२७, ३४१ ३८६	अभय घलाप ४१३
अक्षर	२२	अभयमाणिस्य १४४, १४५
अक्षर	२९७	अभयसर १८२, १८९
अक्षर	२२०	अभयविह (घितय) २४८
अक्षर	१५ १६ १७, १८ १९	अभयमी १८३, १९४
अक्षर	२६ २७ २९ ४४, ४७ ५८ ५९, ६ ६४	अभयिका (अम्ना) ३०, ४० १६७,
अक्षर	९८, १०१, १०३ ११८, ११९, १२० १३८,	१७०, १७४ २०१, २१६ ४००
		अभयार ३०२
		अभयहती २७३

अभीउ (अंडारी)	११	आणंदविमल	३६३
अभीचन्द्र	३६०	आदीनाथ (आदिम)	१८, २२, ४४,
अमीक्षणे	१७०		१०९
अमीपाल	१८५, १८८	आदीश्वर (ऋषभदेव)	११०, २६४,
अमृतधर्म	३०७	२८१, ३००, ३४१, ३४६, ३५५, ३५६,	
अयोध्या (अवडा) नगरि	१७, ५५	३५८, ३६४, ४००	
अरजन	३११	आद्यपक्षीय	३३३
अचंती सुकमाल	३४७	आनंद	१, ७७
अष्टकटीका	२८७	आपमल	५१, ४०८
अष्टसहस्री	३२१	आबू (अत्रुदगिरि)	४४, १०१,
अक्षरफालान	१७४	१०३, १५४, २१५, ३२६, ३४३, ३६२,	
अहमदपुर (अहमदनगर)	३६०, ३६१	३६३, ४०३, ४०५	
अहमदाबाद	५९, ६०, ६४, ७८, १४९,	आर्यगुप्त	२२०
१८४, १९२, १९५, १९६, २३५, २४६,		आयधर्म	४१
३७७, २८१, २८२, २८३, २८७, ३२०,		आयनागहस्ति	४१, २२१
३२६, ३५४		आर्यनंदि	४१, २०१
		आर्यमहागिरी	४१ २१९
आ		आर्यमंगू	४१, २२०
आगमसार	२७३	आर्यरक्षित	४१, २२०
आगरा	५३, ८१, ९८, १३७, १३८,	आयसमुद्र	४१, २२०
१४०, १७४, १९३, १९९, २३६, २४४,		आर्य सुहस्ति	४१, २१९, २२८,
	४१८		३८२
आचाराङ्ग	१६६	आर्यसंभूति (संभूतिविजय)	
आणंदनाम	२८२		२०, ४१, २१९, २२८
आणंदविजय	२०९		

आराधना	१०१'	उदयतिरुक्क	२४८
आराम	३३८	उदयपुर	१८८, ३०२ ३२४, ४१६
आचर्यकृतवृत्ति	२७३	उदयसिंह	५७
आसकाण	१७४, १८४ १८५ १८८ १९२, ४१७	उद्यातनसूरि	२४, ४१, ४४, १७८ २१५ २२१ २२५ २२७ २२९ ३१२, ३१९ ३६६ ४२३
आसयान	३७३	उमाल्वाति (वाचक)	४१, २२१
इ		ऋ	
इडर	३५७ ३५८ ३५९, ३६०, ३६१, ३६२	ऋषभदास	१८५, १९४
इलानंद	१४०	ऋषभदत्त	देसो आदिनाथ
इन्द्र	३३	ऋषिमत	८०, ११९, १३७, १४१ १४३
इन्द्रजो	३६०		
इन्द्रदेवा	२२८		
उ		ओ	
उग्रसेन	१९३	ओइस (ओशिया)	१८६
उग्रसेनपुर	देसो आगरा	ओसवाल (आसवश, उकेश)	१६, ५१, ५५, ६०, ८७, ८९, ९३, १३३, १५९ १९१, १९२, १९३ २०५, २३४, २६८, २९७, २९८, ३०७, ३२२, ३४१, ३४५, ३५३, ४२३
उच्चनगर	८८, ९७, १९३ १९९		
उज्जित	३० ४००		
उज्जयिणी—	देसो गिरनार		
उज्जयिणी	२, ३०, ३१ ३७६		
उज्जयिणी	५७	अ	
उज्जयिणी	१६६, २८९	अगदेश	९४
उदयकरण	१९४	अजारा	३३२
उदयचंद्र	४३३	अथड	४

अ ऋडु (गिःर डूरे (२) का वाऱा		कमरुमांड	३६०
अस्याका, नात) ३७८, ३७९, ३८०,		कमरुहर्ष	२४०
	३८१	कनीपुर	३५८
आंबड	२२	कयवन्ना	३४७
	का	करण (शान्ती)	६०
कचरमल	१९४	करण (उदयपुरके नरेश)	१७७, १८८
कचराशाह	२८६	काणादे	३०१
कच्छ	२९४, ३-७	कमवन्द (भगशाली)	५५
कटारिया (गोत्र)	८२, १८८, १९३	कम 'द (वडावत)	६०, ६१, ६६,
कनक	१३०	६७, ७२, ७४, ७५, ७६, ८०, ९४,	
कनकरुर्ष	२९९	१००, १०७, १०९, १२५, १२६	
कनकविजय	३५३, ३५४, ३५५, ३५७,	१२७, १२८, १५०, १५१, १७९	
	३५९, ३६१	कमवन्द (माड'सुजा)	२१४
कनकसिंह	२४३	कमवन्द (कोजा)	३०१
कनकनाम	७०, ९०, १४०, १४९	कमवन्द (चोगवेडीया)	३४६, ३४७,
कनागा (कन्यानाम) पुर	१४	३५०, ३५१, ३५२, ३५३	
कपूर	३२७	कमसिंह	५३
कपूरवन्द	१८५, १९४, ३४६, ३५४	कमसमी	१९३, २४०, २४७
कपूरदे	१९३	कमसमी (सुनि)	२०४, २०५,
कमप्रथ कमलरयडो	२६६, २७३	कमीशाह	२८१
कमठ (तापव)	३४१	करुणभइ	१८६
कमलगत	२३३	करुणामती	३३२
कमलविजय	३४१, ३४८, ३४९,	कल्याण (जेमलमेरके गडल)	१८६
	३५१, ३६४	कल्याण (ईडरके राजा)	३५८, ३६२

विशेष नामोकी सूची

४६५

कल्याणकमल	१००	कीलहूय	३९५
कल्याणचंद्र	५१,५२	कुतुबुद्दीन	१२,१६
कल्याणधीर	२०७	कथुनाथ	३२७
कल्याणजान	२०७	कुमुदचंद्र	२२८
कल्याणद्वय	२४७	कुमारपाल	२,७१,२८४,३७६
कलिङ्गदेवा	९४	कुलदेवा	२६४
कविरास	१७४	कुलतिलक	१३६
कवियण	२६३,२८२,२८४,२९०	कुवरा	५२
	२९१	कुसालकीर्ति (जिनकुसालसूरि)	१७
कान्तूरा	२४६	कुसालधीर	२०७
कसतूरदे	४२५	कुसालजाम	११७
कसूर	६९	कुसालविजय	३६१
काकदी	२७७	कुसाला	३२५
कालिकापाय (कालककुमर)	३०,	कुसाला (शाह)	१८६
	२९५	कुवरविजय	३५४
कालोदास (कवि)	२६५	कुमलमेल	१८८
कारो	८०	केलहठ	५१,५२,४०६,४०८,४१२
कास्मीर	७४,१२६,१२८,३८४	केसर	९७,२९८
कान्तिरत्न	४१३	केसा	३४६,३५४
किरणावली	३११	कोचशाह	५१,४०७
किरहोर	२०८,२०९,२४३	कोटडा	२३६,३४३
कीकी	२२	कोटीवाल	१४३
कीर्त्तिवर्द्धन	३३३	कोठारी	३०१,३६०
कीर्त्तिविजय	३५४,३६२	कोडा	१३६
कीर्त्तिविमल	१४०	कोडिमई	१३६
कीर्त्तिरत्नसूरि (कीर्त्तिराज)	५१	कोणिक (राजा)	६५
	५२,२०६,४०१,४०२,४०३,४०४,	कोरटा	४०७,४१०
	४०६,४०७,४०९,४१०,४११,४१३	कोसा (वश्या)	२१९,२२८
कीछाड़	३२०	कोमुदी महोत्सव	२७३

कौरव	३२९
क्षमाकल्याण	२९६, ३०६, ३०७, ३०८, ३०९
क्षेमकीर्ति	४०८
क्षेमशाखा	३३२
क्षेत्रपाल	४

ख

खड्गपति	१३८
खजानची	३०१
खरतरगण्ड	२, ७, ९, १३, २४, ३६, ४३, ४५, ४८, ४९, ५२, ५३, ५४, ५६, ५८, ५९, ६१, ६२, ६४, ६८, ८२, ८९, ९३, ९६, ९९, १०१, १०४, १०७, १०८, ११०, ११२, ११३, ११८, ११९, १२०, १२१, १२४, १२९, १३२, १३४, १३७, १३८, १४०, १४२, १४३, १४४, १४५, १४८, १७०, १७१, १७९, २१५, २२२, २२५, २२७, २२९, २३१, २९२, ३०२, ३१९, ३३२, ३६६, ३६८, ३७४, ३८६, ४०३, ४०७, ४१७, ४१८, ४२०, ४२८, ४३२

खारीया	४१५
खांडव	१८४
खीमड (कुल)	२२
खुल्यालचंद्र	३०६
खेजड़ले	४१५
खेडनगर	३८०, ३८१
खेतसर	८९

खेतसी	२६०
खेतसी (जिनराजसूरि)	१५६, १६० १६१, १६५
खेतसींह	५२
खेम (वंश)	१७१
खेमलदे	१३९, १४५
खेमराज	१३४, ४१९

देखो: क्षेमराज

खेमहर्ष	२४२,
खेमहंस	२१७
खंडिल	४१, २२१
खंधग	३२९
खंभात (खंभायत, खंभपुरि)	२६, ५९, ६०, ६३, ७६, ७८, ९३, ९५, ९९, १००, १०२, १०६, १०७, ११०, ११३, १७८, १८४, १९२, १९४, १९९, २३०, २५३, २८१, ३२६, ३२८, ३५६, ३७५, ३८६, ३८७, ३९७

ग

गजसिंह	१७४
गजसुकुमाल	३२९, १८१
गडालय	४१२, ४१३
गढमल	१४३
गणपति	४२४
गणघर (चोपड़ा) गोत्रे ४५, २४६, २४७	(देखो चोपड़ा)
गर्दभिल (गदभिल)	३०
गवरा	२०८

विशय नामोकी सूची

गारव (देसर) शहर	४१४	गोल (घ) छा	१८८,१९३,२०६,
गागाओग्र	४२०		४२०
गाधी (गोग्र)	३६०	गोविन्द	४१,२२१
गिरधर	२३८	गंगादामि	१३७, १४२
गिरनाम (ठञ्जयत)	१०१,१०३,१६४,	गंगराय	४२०,४२६
	३२६,२२७,३६६,४१०	गधहस्ति	२६०
गुजरते	२१०	गानमान	४३३
गुणागु	३८८		
गु विमय	३४३,३६६,३०९,	घ	
	३६३,३६४	घावा (भन्नागाह)	२२८
गुणधिनय	७०,७६,९३,९९,१००,	घोग्याह (गोग्र)	९७
	१२६,१७२,२३०	घवाणी १६७,१७४,१७७,१८४,१८६	
गुणसेन	१२६	च	
गुलालचद	१०४	घतमुज	३६०
गुनरात (गुजर देग)	१६,१८,२९,	चाइमउ	१८,१४२,१४२,१४४
	४४,६८,६२,८०,८१,९२,९४,११८,	चाणाइक (नीतिनास्त्र)	१६८
	१९९,२७३,२८३,२८६,२८६,३२६,	चामु जा (देवी)	१६२६,४६,२१६,
	३३७,३६२,३६६,३९०,३९१,३९७		२२९
गुण (नगर)	२९६,२९८,४१४	चारण	१६०
गेहा	२२९	चारित्रान	२९८
गोडी (पाइयनाथ)	४१०	चारित्रियय	३६१
गोतम स्वामी (गोइम, गोयम)	१६,	चिता (चितकोट)	१,१६,२०,४६,
	१६,३०,३६,४०,४८,६७ ९६,१००,		२१६,२७४
	१०९,११०,११९,१२६,१६०,२१८,	चुडा (ग्राम)	२८
	२२८,२१९,३२१,३६९,२८१,४०९	चित्तवासी	२९,४०,२२२
	४१८,४२३	चोयिया	३६०
गोप	२२६	चोपना (कृकड-गणधर)	७६,८६
गेरे			

चौलउ (जिनमागर सूरि)	१८१	छोटाखाला (लघुपाश्रय !)	
चौलग	४२०	(कोठारोखण)	२९४
चौरासी गच्छ	४३, ८१, ९२, १०१, १२७	ज	
चंद्रकीर्ति	४०६, ४२१	जगच्चंद्र सूरि	३६३
चंद्रगच्छ (कुल)	१, १६, १८, २१, २७, ३५, ४३, ४३२	जगी (श्राविका)	२५०
चंद्रनखला	४२२	जयकीर्ति	३३४, ४११, ४१२
चंद्रशेखरि	९६	जयचन्द्रजी भं०	२४८, ३६४
चंद्रभाण	१९४	जयचन्द्र (धोलकावासी)	२८४, २८५
चंद्रसूरि	२२८	जयतश्री	१७
चंपापुरी	३२७	जयतसी	४२२
चांगादे	४२०	जयतारण	६७, १९३
चांपा (चांपसी) (चोपड़ा)	७६, १२६, १२७, १२८, १२९, १३२	जयतिहुअण	१४५
चांपशी (संखवाल)	५२	जयदेवसूरि	२, ७, ९, २२९
चांपशी	१४४, ४१७	जयध्वजगणि	४०२
चांपसी (छाजेड)	४२५	जयमल	२३५, २४६
चांपसिंह (साबलीके)	३६०, ३६१	जयमाणिक्य (धमडाजी)	३१०
चांपलदे	७६, १२६, १२७, १२८, १२९, १३२	जयवल्लभ	१६
चांपानेव	६०	जयसागर	४३, ४००
छ		जयसिंह	७, ९, ३१, ३६८
छतराज	३१७	जयसिंहसुरि	४२४
छाजमल	१४३	जयसोम	७०, ७५, ११८, २३७
छाजदंड	३१४, ३२८, १३४, ४२४	जयानंद	२२९
छुटा	४२६	जएह	१३८
		जलोल !	४१५
		जशोदा	३३८
		जसू	३६०
		जहांगीर बादशाह देखो ललेम	
		जागा	३६०

जालधरा	१८७
जालधरा (देवी)	७,९,४०७
जालोर (जावालपुर, जालवर)	३, २६, ६६, १४५, १८४, १९३, १९९, ३४३, ३५१, ३८२
जायन्ताह	११५
जिनकीर्तिसूरि (खरतर)	३२०
जिनकीर्तिसूरि (तपा)	३३९
जिनकुशल सूरि	१५, १७, १९, २१, २३, २५, २६, २७, २९, ३४, ४७, ५९, ६२, ८६, ९७, १२१, १४४, १७२, १७३, १७८, २०१, २१७, २२३, २२६, २२७, २३०, २४७, २९२, ३१२, ३१९, ३२१, ३८५, ३९२, ३९५, ३९६, ४००, ४२३,
जिनकृपाचंद्रसूरि भ०	४८, २६०
जिनगुणप्रभसूरि	४२६
जिनचंद्रसूरि (१)	१५, २०, २४, ३१, ४१, ४५, १७८, २१६, २२२, २२६, २२७, २२९, ३१२, ३१९, ३६६, ४२३
जिनचंद्रसूरि (२)	२, ३, ५, ६, ७, ९, ११, १६, २०, २५, २६, ३१, ३२, ४१, ४६, १७८, २१६, २२३, २२६, २२७, २३०, ३१२, ३१९, ३७१, ३८४, ४२३,
जिनचंद्रसूरि (३)	१५, १६, १७, १९, २०, २१, २५, २६, ३४, ४७, १७८, २१६, २२३, २२६, २२७, २३०, ३१२, ३१९, ३८५, ४२३

जिनचंद्रसूरि (४)	२५, २६, २८, ४७, १७८, २१७, २२३, २२६, २२७, २३०, ३१२, ३१९, ३२०, ४५, ३९७
जिनचंद्रसूरि (५)	४८, १३४, १७८, २०७, २१८, २२३, २२६, २२७, २३०
जिनचंद्रसूरि (६)	५२, ५८, ६०, ५९, ६२, ६४, ६७, ७२, ७४, ७५, ७७, ७८, ७९, ८०, ८१, ८९, ९०, ९१, ९२, ९३, ९४, ९६, ९७, ९९, १००, १०१, १०२, १०३, १०५, १०६, १०७, १०८, १०९, ११३, ११५, ११८, ११९, १२१, १२२, १२३, १२५, १२६, १२७, १२८, १२९, १३८, १४४, १४५, १४६, १४७, १४८, १५१, १६६, १६७, १७२, १७८, १८३, १८९, १९१, २०१, २११, २२३, २२५, २२६, २२७, २३०, २९३, ३३४
जिनचंद्रसूरि (७)	२४५, २४७, २४८, २४९, २५०, २५१, २५९, २७०, २७२, ४१८ (रत्नपट्टे)
जिनचंद्रसूरि (८)	२९७, २९८ (लाभपट्टे)
जिनचंद्रसूरि (विगड शैलसूरिपट्टे)	३१३, ३१६, ४२३
जिनचंद्रसूरि (वदनपट्टे)	३२० (पीपलक)
जिनचंद्रसूरि (हृष्यपट्टे)	३२०
जिनचंद्रसूरि (सिंहसूरिपट्टे)	३२०
जिनचंद्रसूरि (आद्यपक्षीय)	३३३

जिनचन्द्रसूक्ति (धर्मपट्टे)	३३७	जिनप्रभवसूक्ति	११, १२, १३, १४, २२, २३	
मानस सूक्तियागा		जिनभक्तिसूक्ति	२०१, २०२, २०५, २०६, २०७	
जिनचन्द्रसूक्ति [युक्तिपट्टे]	३३८	जिनभक्त (धनाश्रमग)	४१, २०१, २०९	
जिनचन्द्रसूक्ति [विगड २]	४३०, ४३१, ४३२	जिनभक्त (जिनभक्त) सूक्ति	२०, २७, ३०, ३६, ३७, ३८, ४८, ५१, ११९, १२४, १७८, २०७, २१७, २२३, २२९, २३०, ४००, ४०१, ४०२, ४०६, ४०९, ४११, ४१३	
जिनचन्द्रसूक्ति	१, २, ३, ४, ५, ६, ११, १०, २०, २०, ३०, ३१, ४६, ४६, ५७, ६२, ७४, ८६, ९७, ११४, ११९, १७२, १७३, १७८, १८४, २१६, २२२, २२६, २२७, २२९, २९०, ३१२, ३१९, ३२१, ३६६, ३६७, ३६८, ३७१, ३७५, ३८४, ४२३	जिनभक्तेन्द्रसूक्ति	३०३, ३०४	
जिनदेवसूक्ति	११, १३, १४, २०	जिननागिसूक्ति	८८, ७९, ८९, ९०, ९१, ९२, ९३, ९४, ९५, ९७, १००, १०१, १०२, १०८, १०९, १२१, १२३, १३६, १७८, २०७, २१७, २२३, २२६, २२७, २३०	
जिनधर्मसूक्ति (विगड)	३६३, ४२३	जिनमेतसूक्ति (विगड)	४२३, ४२६	
जिनधर्मसूक्ति (मानससूक्ति मानस)	१९४, १९८, ३३०, ३३६, ३३७, जिनधर्मसूक्ति (पिप्पलक)	३२१, ३२२	जिनमेतसूक्ति	११, ४२
जिनपतिसूक्ति	२, ३, ६, ७, ८, ९, १०, ११, १६, २०, २०, २६, २७, ३१, ३२, ३३, ४१, ४६, ४७, १७८, २१६, २२३, २२६, २२७, २७०, ३१२, ३१९, ३७१, ३७२, ३८०, ३८१, ३८८, जिनपद्मसूक्ति	२०, २२, २३, २५, २६, ३२, ३४, ३५, ४७, १७८, २१७, २२३, २२६, २२७, २३०, ३१२, ३२०, ३८५, ४२३	जिनराजसूक्ति (१)	२५, २७, २८, ४७, ५०, २१७, २२३, २२६, २२७, २३०, ३२०, ४००
जिनप्रबोधसूक्ति	१६, २०, २५, २६, २९, ३४, ४७, १७८, २१६, २२३, २२६, २२७, २३०, ३१२, ३१९, ३८२, ३८४, ४२३	जिनराजसूक्ति (२)	१३३, १६९, १७०, १७१, १७२, १७४, १७५, १७६, १७७, १७८, १७९, १८५, १८८, २०८, २३२, २३४,	

२३५, २४१, २४२, २४३, २५९, ४१७, ४१८	जिनसिंहसूरि (जिनचंद्र पट्टे) ७५, ७६, ८४, ८६, १०६, १०९, १२५, १२६, १२७, १२८, १२९, १३०, १३१, १३२, १३३, १४८, १५१, १५९, १६१, १६६, १६८, १७०, १७२, १७३, १७४, १७६, १७९, १८१, १८३, १८२, १८४, १८९, १९१, १९२, २१४, ४१७
निलब्धिसूरि २५, २६, ३२, २५ ४७, १७८, २१७, २२३, २२६, २२७, २३०, ३१२, ३२०, ३८५ ४२३	जिनसुन्दरसूरि ३२०
जिनलामसूरि २९३, २९४, २९५, २९६, २९७, २९८, ३०७, ४१४	जिनसुखसूरि २५०, २५१, २५२
निलब्धमसूरि १, ३, ४, ११, १५, २०, २५, ३१, ४१, ४६, १०२, १७५, १७८, २१६, २२२, २२६, २२७, २२९, ३१२, ३१९, ३६६, ३६९, ३७०, ३७१, ३८४, ४००, ४२३	जिनसौभाग्यसूरि ३०१
जिनवदनसूरि ५१, ३२०, ४०३, ४०४, ४०६, ४०८, ४०९, ४११, ४१२	जितदर्पसूरि ३००, ३०१, ३०३, ३०४
जिननीलसूरि ३२०	निलवपसूरि (पिपलक) ३२०
जिननेखरसूरि ३१३, ४२३	जिनहपसूरि (आघपक्षीय) ३३३
जिनसमुद्रसूरि (१) १७८, २०७, २१७, २२३, २२६, २२७, २३० (जिनचन्द्रपट्टे)	जिनहप (कवि) २६१, २६२, २६३
जिनसमुद्रसूरि (विगड) ३१५, ३१६, ३१७, ३१८, ४३२	जिनवससूरि ५३, ५४, ५७, १७८, २०७, २१७, २२३, २२६, २२७, २३०
जिनसागरसूरि (जिनराजपट्टे) १३३, १६९, १७८, १७९, १८५, १८६, १८७, १८८, १८९, १९०, १९२, १९३, १९४, १९५, १९७, १९९, २००, २०१, २०२, २०३, ३३४, ३३६	जिनहितसूरि ४२
जिनसागरसूरि (पीपलक) ३२०	जिनेश्वरसूरि (१) ११, १५, २०, २४, २९, ३१, ४१, ४५, ११९, १३८, १७८, २१६, २२२, २२५, २२९, २२७, ३१२, ३१९, ३६६, ४२३
जिनसिंहसूरि (") २२०	जिनचरसूरि (२) २, ११, १६, २०, २५, २६, २७, ३१, ४१, ४७, १७८, २१६, २२३, २२६, २२७, २३०, ३१२, ३१९, ३७७, ३८१, ३८२, ३८३, ३८४, ४०७
जिनसिंहसूरि (छधुखरतर) ११, १४, ४२	जिनेश्वरसूरि (विगड) ३१३, ३१४, ४२३
	जिनेश्वरसूरि (विगड नं २) ४३०, ४३१, ४३२

जिनोदयसूरि	२५, २७, २८, ३५, ३८, ४०, ४७, १७८, २१७, २२३, २२६, २२७, २३०, ३२०, ३८६, ३८८, ३८९, ३९०, ३९७, ३९९
जीया	४२७
जीवणजी (यति)	३१०, ३११
जीवणदे	४३३
जीवन	२९४
जुगतादे	४२२
जुनागढ़	३२६
जुठिल	४२४
जेठाशाह	२१२, २८५, ३६०
जेठमल	१९४
जेत	४२५
जैलहा	१७
जैसलमेर	१९३, १९९, २०५, २३१, २३६, २४५, २९४, ३४३, ३७६, ३९६, २३०, ३०२, ३०७, ४०२, ४०४, ४०६, ४०८, ४०९, ४१०, ४११, ४१३, ४१४, ४१७, ४२६, ४२७, ४३०, ४३१
जैसिंगजी	३४२, ३५०, ३५१, ३५३, ३५४, ३६१, ३६४, (विजयसेनसूरि)
जैसो	३४६, ३५३
जैगलावास	४३३
जैपुर	४१५
जैतराह	११५
जीरावलिपार्श्व	३४१
जोगीनाथ	५९, ८०
जोधपुर (शक्तिपुर, योधनगर)	२५७,

६६, १९९, ३०२, ३४३, ३१५, ४०३, ४०४, ४१५, ४२५, ४२६	
जोध्या	३६२
जंगलदेस	१७९
जंबूद्वीप	२६८, १७९
जंबूस्वामी	१०, २०, ४१, ४८, १७९, २१५, २१८, २२८, २९२, ३२१, ३६३, ४२३, ४२८
	झ
झंझण	३१३, ३१५
झाबक	१८६
	ठ
ठाकुरसी (मेहता)	२८५
ठाणांग	१७०
	ड
डाकिणी	४
डीडवाणउ	१८७
डुंगरसी	५३
डोसो (बोहरो)	२८५
	ढ
ढिछी देखो दिछी	
ढुंढक	२८०, २८४, २८५, २८६
	त
तत्त्वार्थ (सूत्र)	२७३
तपागण्ड	१३७, २८२, ३४९, ३५१, ३५५, ३५९, ३६३ महावपाः ३५५
तर्करहस्यटीपिका	३११

विशेष नामों की सूची

४७३

तारामसूरि २१, २२, ३८६, ३९७ ।

तारा ३४०

तारादे २३४, २४१, २४२, २४३, २४४

(तेजछन्द) ३००, ४१८

तारग १०१, १०२

तिमरी १८६

तिलककमल ४२०

विलोकचन्द्र ३००

विश्वेशी ३१५, ३३४, २४१, २४२,

२४३, २४४, ४१८

तिलग ९४

विह्वलगिरि २

गुण्डीदास २६८

तेजपाल १६, १७, १८, १९, ३५८, ३६०,

३६१, ३६२, ३६३

तेजा १८८

तेजमी (दोसीनी) २७४, २७६

तेजमी १४१, २३५, २४६

तोला ३६०

त्रिधावती—देगो —गभात

थ

थग १९३, १९९, ४१०, नगर

थलशट (दरा) २९४

थानसिंह १८२, ३६०

थाहर १

थिरठ (शाह) ६६

थूलग (गोत्र) ३१५

थोमणदे ३२०

दमयत ३२०

दयाकलदा १२८, १३०

दयापुराल १०६

दयातिशक ४१०

दरगह १४३

दरडा १८८

दराय २४६

दरायकालिक २८०

दरायणमद्र (दमणभद्र) ३२, ३३

द्वारिका ३७३

दानगज २०५, २५७

दारासको २३२

दिल्ली (विल्ली) ११, १३, १४, १५

२२४, ३१९, ३५७

अवगाय दखो योगिनीपुर

दीपचद्र (घा०) २८२, २००

दीपचद्र (यति) ३११

दीव २८

दुपमहसूरि ३२१

दुषरि कापक्ष (पुष्य) २२१

दुलभ ११८, १३८, २१५, २२२, २२५,

२२९ (दुल्लह)

३१९, १५, २९, ३६, ४४, ४०

दुणादह ६६, १८४

दुल्लण ४२५

दुपदी ३४०

दुप्यसूरि ४१, २२१

विशेष नामाको मूची

१७१

धममी (धमपहन)	२८, २८२	गवगजपादय	४००
धामद्रा	२८८	नयद्वय (पादय)	९७
धामल, १५१, १५२, १५३, १८५,		लया	५२
१५६, १-७, १७८, १७६, १७७		धागा (उत्तननप्र)	२८४
धामलेदी २८८, ३००, २९८		गायर	२६१
धाममी	२८५	गाकोजा (पादय)	४१८
धामनगा	३५	नागजी	११८
धामनगामी	२६८	नागद्वय	३०, २१६
धारा (धाधिका)	१७१	नाग	४२४
धौघू	१२७, १४२	नागद्वय	४००
धौका	२८४	नागाजुनसुरि	४१, २२१
		नागोर	६८, १९९, ४१५
		नागोरी सराय	२७७
		नागि	९७
नागको-	४००	नायकद ३४५, ३४६, ३४८, ३४९,	
नागान	४२४		३५१, ३५२
नयमळ	२२६	नायमाग	२३०
नयमळ (नायू) ३४५, २४८, ३४९,		नारायण (कृष्ण)	१८
२५०, ३५३		नालदा दाढ	४००
नयमळ	२८७, ३११	नाहटा	२४६
नयमळ	२११	नाहर (गोत्र)	२१२
नयम	२२६	नि यलन्दर	२५५, २५७
नाय कु उमाजली	२११	नीषड	३८६
न पति	६, ८, ९	नतमी	१३८, १४३
नरपाल	४००	नतलोह	१८८
नरपाल (नाहर)	२१२	नेमविजय	२५३
नयम (राजा—नयम)	३६	नमि (सु) चन्द (मडारी) ७, ३७२,	
नरमिहसुरि	२२९	३७७, ३७८, २८०, ३८१	
नयद्वय	३५६		
नयअगावृति	१५		

नेमिचन्द्रसूरि	४१, ४४, २२१, ३१२,
	३६६
नेमिदास	१४३, १४४
नेमीदास	२३३
नेमिनाथ	१८, ११०, २६४, ३५६
नैयायक	३६
नैषधकाव्य	२७३
नीता ४२५ (नेवानगर)	४२६
नन्दीविजय	३५८
नन्दीश्वर	४४

प

पडिहारा	६८
पता	४२५
पनजी	१९४
पन्नवणा	२१९
पद्ममन्दिर	५५, ५६
पद्मराज	९७
पद्मसिंह	३६१
पद्मसी	११५, ३२२, ३२३
पद्मसुन्दर	१४१, १४२, १४३
पद्महेम	२५५, २५७, ४२०, ४२१
पद्मादे	२९३, २९५, २९६
पद्मावती (पद्मिणी देवी)	१३, १५
	४५, २१५, ३८४, ४००
पयठाणपुर	३०
परघरी	२८४
पर्वत	१४३, १४८
पर्वतशाह	७२

पर्व रत्नावली	४००
पल्ह	३६८
पहुराज	३९, ४०
पञ्चनदी	१७९
पाटण ३९८ देखो अणहिलपुर	
पामदत्त	५३
पालहणपुर (प्रल्हादेनपुर)	७, ९, १०,
	६४, ६५, १९३, २३५, ३९०, ३९१, ३९२
पाली	६७, ३७४, ४१५
पालीताणा	२८४, २८५
पावापुरी	२९७, ३२७
पारकर	३४३
पारख	२०७, १९४, २५०, ३६०, ३६३
पारस साह	१४३
पार्श्वनाथ	१८, ५४, ५५, ६८, २१८,
	२३०, २६४, ३४३, ३६५, ३६६, ४००
पालाणी	१८७
पांच पीर	९१, ९३, १०३, १७०, ३७४
(पंचनदीपती)	
पाण्डव	३४६
पिंगल (शास्त्र)	२७३
पिंडविशुद्धि	४६, २१६
पीचो	२५०
पीथह	२०६, २३०
पीपलीयो गच्छ	४०९
पुजाउत	३५८
पुण्य	३३७
पुण्यविमल	१४०
नमचन्द्र	२१

पुरसोतम (जोगी)	२८४	फलवधी	६८, ३४३, १८६, १९३
पुष्कर	३४३	फुला	३४६
पुण्यप्रधान	८३, १९२, २९२	व	
पुण्यप्रभसूरि	४२६	बडगछि	४२८
पुण्यसागर	६, ६७	बढवाण	२८६
पूणिमागछ	२७४	बनर (बधेरह) पुर	२, ७, ९, २६
पूनमगा	३७६		२१६
पूनिग	३८६, ३८७, ३८८, ३८९	बहली दश	३४२
पृथ्वीचन्द्र चरित्र	४००	बहरा	२४९, ३६०
पृथ्वीराज	७, ९	बहिरामपुर	३३२
पृथ्वीराज (छाजेड)	४२६	बाफगा	४३१, ४३२
पोकरण	१९३	मलचन्द्र	३६८
पोरवाड	१४६, १४७	मलदोपि (नाला)	२२१
पञ्चनदी	८०, १२२, १२३, ९३, १०२, १०३, १४६, १७०, १७९, २३०, ३७४	बाहडगिरि	६०
पचाह	२९३, २९६, २९६,	बाहड देवी	८
पञ्चायण	२३३, ३४६, ३६३	बाहडमेर	३४२
पडव	१६९	बाहुबलि	१०७, ०४२, ३६६
प्रताप	४२६	बीकानेर (बिक्रमपुर)	६०, ६६, ६८
प्रद्योतनसूरि	२२८	९६, १४३, १६९, १६०, १६७	
प्रबोधभूति	३८२	१७९, १८१, १८३, १८४, १८६,	
प्रभवसूरि	२, ४१, २१६, २१९, २२८, ३२१, ३६३	१८९, १९३, १९९, २११, २३६,	
प्रमेय कौल मार्तण्ड	३११	२४६, २४७, २६८, २८७, २९३,	
प्राग (वाट) षंश	३६८, ३३९	२९४, २९६, २९७, ३००, ३०१,	
प्रीतिसागर	३०७	३०२, ३०९, ३३०, ४१४, ४२२,	
			४३०, ४३२
फ		बीबीपुर	३६७
फडिआ	३६०	बीलाडा (बिनातर)	८२, ८३, ६७,

	१८८, १०३, १९३, २७२, ३३८, ४१५, ४२१
बुद्धिसागर	१३७, १४०, १४२, १४३
वेगस	२३६
बोधियरा (बोधरा)	१५१, १५२, १६३, १६५, १७६, १७७, १८०, १८९, १९१, २००, २०२, २१२, २९३, २९५, २९६
वज्रदेश (पूर्व)	९४, ११८
वंभ (ब्राह्मण)	३७४
वंभणवाढ	३४१, ३६३
भगताढे	३३३
भटनेर	१९९
भणशाली	५५, १८८, १८५, १९४, १९५, २०७, ३२७, ३३६, ४१७
भणडारी	७, ३७२, ३७७, ३७८ ३८०, २८४
भगवती (सूत्र)	२८०, ३२७
भगवंतदास (मंत्री)	१८७
भक्तिलाम	५३, ५४
भक्तोमर	२२८
भक्तड	८, ९
भद्रगुप्त	४१, २२०
भद्रवाहु	२०, ४१, २१९
भमराणी	६६
भयहर	२२८
भरत	१८, ३४२, ४३२
भरतक्षेत्र	१७९, २६८
भरम	३१५

भरही (अविका)	१३८
भागचन्द्र	३३८
भाग्यचन्द्र	६७, १६८
भाट	१६५
भाणजी	११५, ३६०, ३६१
भाणवट	१७०, ४७५
भाणुसखिनगर	२७
भाढाजी	५१, ३३३, ४०८
भामा	३६०
भारहू	१४३
भावनगर	३२८, २८०
भावप्रमसूरि (खर०)	४९, ५०
भावप्रमसूरि (पूनमीयागली)	२७४
भावप्रमोद	२५८
भावारिवारणवृत्ति	४००
भावविजय	२५९
भावहर्ष	१३५, १३६
भिनमाल	३२२
भीम (राजल)	९८, १०९, १४६, १६७ १७५, २०१, ३१३
भीमजी	३६०
भीमपल्लीपुर	६, ९, ३९२, ३९५, ३९६
भिक्षु	३२४
भुजनगर	३३२, १९३, २०६, ४१६
भूतदिग्ग	४१, २२१
भृगुकण्ठ (भरौंच)	१९९
भोज	३५२, १४३
भोजा	३६०, ४२७
भोजग	१६५

विशेष नामाकी सूची

२७६

मोजागरू	४२४	महतिभाण	१६,१८
मोदेवरू	४२४	महमद	११,१३,१४,१८
म		महादय (शाह)	२३९,२४०
मकुलखान	१३२,१३,२०२	महावीर शयो—वीर	
मलनूम	१५६,१४७	महिम	५०,१४२
मण्डोवर	६०, ०५, ४१५, ८२, १४६	महिमराज (मानसिंह जिनसिंहसूरि)	
मणुहारदास	१४६	६३, ७०, ७४, ७५, १२५, १७,	
मतिभद्र	२२४	महिमावती	५२
मदाति	१३६	महिमासमुद्र	८८, ४३१, ४२२,
मनजी	१९४, २६०	महिमादय	४२२
मनरूप (मुनि)	२७६, २८७, २८९, २८८, २९१, २९२	महिमाहम	३००
मनुअ	११८	महुर	६८
मनोरमा (ग्रथ)	२७३	महेयवा	१४३
मछयादी	२६४	महेवा	५१, ४०१ ४०२, ४०४, ४८, ४००, ४११, ४१२, ४१३, ४१५,
मरहट्टेरा	२०	महेसाणा	६४
मरकोट (मरीच)	७, १९०, १९९, ३७७, २७८	माइजी	२७३
मरदव (मरतपुत्र)	३४२	माइदास	३१८
मरदेवी	३४१, ३४२, ३६३	भाजण	२०६, ३४५, ३५०, २५३
मरुमण्डल (मारवाड मरधर)	६, ८ ९४, ११८, १७९, १९२, २३४, २७० २७५, २८६, २९७, २९८, ३२२, २२६, ३४२, २४४, ३५३, २७२, ३७४, २७७ ४३१	भाजण (भडारी)	११५
मरीच	देसो मरकोट	माडगढ	३८८
महाजन	६६, १९९	मान्ची	४१६
महादे (मिश्र)	१४२	माणक	२०४
		माणभट्ट (पक्ष)	०७, १०२, ३१९, ३७४
		माणिकमाला	१०१
		माणिकगल (जालिमी)	२८०
		माधव	३३६
		मानजी	२४०

मानबाई	१९४	मेरह (शाह)	६६
मानकुण्डसूरि	२२८	मेरुनन्दन	३९९
मानदेव (सूरि)	२२८, २२९	मेवाड़ (मेढ़पाट)	९७, १८८, १९९,
मानधाता	३४४	३३९, ३६३, ३९७, ४००, ४१९	
मानविजय	२४०	मेहाजल	३६३
मानसिंह	२३६	मेहा	६८
मानसिंह (छाजेड)	४२९	मोतीया	२८६
माना	१८६	मण्डण	३६०
माल (देव राउल)	७९		
मालजी	३६०	य	
मालपुर	१८७, १९९, २३३,	यशकुशल	१४००, १४९
मालहू	७, २८, ५०, ४२२	यशोधर	३७४
मालव (देश)	९४, ११८, १९९, ४१०	यशोभद्र	२०, ४१, २१९, २२८,
मिरगादे	१८०, १८१, १८९,		२२९, ३६३
मीमांसक	१९१, २००, २०२, ३३६	यशोवर्द्धन	६८
मुलतान	३६	यशोविजय	२७२, २८८ (जस)
	२८७, २०९, ९६, १९२,	यादववंश	९८, ११०
	१९९, ४२२, ३७४	युगप्रधान	४, ४६, ८८, ८३, ८६, ९२,
मूलजी	१९४		९४, ९५, ९६, ९७, ९८, ९९, १०३,
मूलदेव	२६९		१०८, १२२, १२१, १२९, १३२, १४८,
मृगावती	३४०		१७२, १७८, २२६, २३०, २३२, २९२
मेधजी	३६०	योगिणी	२, ४, १५, ४६, ५४
मेधदास (मेधह)	१३८, १४३, १४४	योगिनीपुर	५, १९३, ३८६
मेधसुनि	१८१	देखो दिल्ली	२०
मेडता	६७, ८२, ८३, १३२, १६८,		
	१८४, १८६, १८८, १९२, १९९,	र	
	३०२, ३४४, ३४८, ३५०, ३५१,	रणकुंजी	२८३, २८४
	३५२, ४१५, ४१७	रतनउ (रतनसीह)	३८६, ३८७
मेढमण्डलि	११	रतनचन्द	३८८, ३८९
			१३०

विशेष नामोकी सूची

४८१

रतनमी	२०७	राजप्रियत्र	२०१
रतनादे (मरुपदे)	२०९, २१०	राजप्रियत्र	२०२
रतनश (रतनसिंहनी)	२०१	राजममुद्र	१३२, १६६, १६७, १६८, १६९, १७९, २६८, २७१, २७२
रत्नाक्षरावतीरिका	२११		२७६, २९२
रत्नमण्डागी	२८२, २८३, २८४	राजमार	१९६
रत्ननिधान	७०, ७६, १०२, १२२	राजसिंह (मिरोहीनरेश)	११४
रत्नशेखर	२४०	राजसिंह	१८५
रत्नसिद्धि	२१०	राजसिंह	१८८
रत्नहय	१७१	राजसिंह (छाजे)	४२५
रत्नशालाह	६, ७	राजमो	२६२
रत्नप्रभ	२२९	राजसुन्दर	३२०
रत्नीआमा	२६२	राजमोम	१४९, १९६, ३०५
रत्नीकपामी	२८५	राजहय	२५५
राकाशालाह	११५	राजम	२३१
राका (गाग्र)	३२२	राजन्द्रचन्द्र सूरि	१७
राजकरण	३०२, ३०४	राजि	१५०
राजगृ (र) ह	४००	राजदह	३१५, ४०८, ४१२
राजनगर	६२, १०२, १८३, १९४, १९९, ३१४, ३२७, ३३२, ३३४, ३३७, ३५८, ३६०, ४०४, ४१६	राजपुर	१०१, १८६, १८८, २५१
राजपाल		राणावाच	२८४
राजुत्र	२६४	राणुनगर (सिन्ध)	२१
राजशक्ति	२०९, २४०	राधणपुर	१९९
राजशर	५०	रायच	३०६, १९४
राजशदसर	६८	रायचद (मुनी)	२८७, २८८, २९१
रामजी (मुनि)	२५५	रायचद	२९२
राम	१७, १८०, ३४६	रायमल	४२७
रामचन्द्र	१८८	रायसिंह (राजा)	६०, १५०, १५१, १७९
राजकाम	२५५, २५७	रायसिंह (शाह)	२०६, ३६०

रासल	५	लक्षमसीह	३१५
रीणीपुर	६८, १९९, २५१, २५२	लक्ष्मी	३६०
रीहड (वंश)	७७, ७९, ९२, ९३, ९५, १०१, १०२, १०७, ११९, १७८, १८८, २२६, ३३८, २१	लब्धिकल्लोल	७८, १२३
रुधनाथ	१८८, ३०४	लब्धिमुनि	३३२
रुद्रपाल	१६, १८, ३८६, ३८८, ३९० ३९१, ३९२, ३९४, ३९६	लब्धिसेखर	९८, १२१, १२२, १२३, २०६
रूपचन्द्र	२४९, २५०, २८८, २९७, २९८	ललितकीर्ति	२०७, ४०५, ४२२
रूपजी	४१७, ४३०	लाल	१९४
रूपसी	३१६, १४६, १४७, ३३०, ३३२	लकेरइ	१४८
रूपहर्ष	२४१, २४६	लक्ष्मीचन्द्र	६७, १८८
रूपादे	४३०, ४३२	लक्ष्मीतिलक (विहार)	४००
रुत्तक	२२४	लक्ष्मोधर	२२
रेखां	४२१	लक्ष्मीप्रमोद	७८
रेखाउत	१८८	लक्ष्मीलाम	२९६
रेडडं	१४३	लाडण	२०६
रेवंत	४१, २२०	लाडिमदे	२०६
रेवतीमित्र	२२१	लाधोशाह	३३२
रोलू	४०७	लालचन्द्र	१९३, २८६, ३०१
रोहीठ	६६, ४१५	लावण्यविजय	३६१, ३६२
रङ्गकुशल	१४०	लावण्यसिद्धि	२१०, २११, २१२, ४२२
रङ्गविजय	१७७	लाहोर (लाभपुर)	६१, ६३, ६६, ७३, ७४, ७६, ८०, ९२, ९६, १००, १२५, १२६, १२८, १४६, १४८, १५१, १७२, १९३, १९९, ३५०
		लांबिया	६७
लखड	५१, ४०६, ४०८	लीबडी	२८५, २८६
लखमण	३४६	लीला (दे)	१३४, ३५४, १४७
लखमादे	४३२	लीला दे	४२५
लखमिणी	३७७, ३७८, ३८०, ३८१		

स्वगण	४२८	४१, ४४, १७८, २१५, २२१, २२५, २२९	
स्वणिग (कुञ्ज)	५०	२२७, ३१२, ३१८, ३६६, ४२३	
स्वणिग्या (गोन)	२४१, २४२, २४३,	बघू (मणसाली)	१९४, १९५
	२६८ ४१८	वरकाणा	१०१, १८६, ३५१
लोकहिताचाय	२७, ३९९	वर्गसिंघा	१२
लोहचिचय (हित)	४१ २२२	वहतपांल	३११, ३८७
लोद्रवा	४१४, १८६	वस्तिग	१३९, १४५
लका	३४५,	वस्तुपा	३५२
		वस्ता (मुनि)	२९५
		वाछिग (मत्री)	४
		वागडदेश	४६
		वाधमळ	१८४
		वाळडा	१९४
		वारणपुर	१९९
		वालसीसर	४२०
		वालडो	४१९
		वाहड	१७
		वाहडमेर	२३६
		विक्रम (वीको)	१८२, १९१
		विक्रमपुर (वीकमपुर)	२, ५, ६, ८
			२६, ३७६
		विक्रमसूरि	२२९
		विक्रमादित्य	१५९
		विजयच द (मुनि)	२८८, २९२
		विजयदान सूरि	३६३
		विजयदेव सूरि	३४२, ३५४, ३५५,
			३८८ ३६२, ३६३, ३६४
		विजय सिंह	९, १६, १७, १८
वक्रतुजो (मुनि)	२८७		
वसतावर	२५५		
वठराज	४८, ३६०		
वछराज (छाजेड)	४२४		
वछा ११५, १८०, १८१, १८९, १९१			
	२००, २०२, ४१९		
वछावत ६०, १००, १७९, २९७, २९८			
वज्रयाणद	३०, ३१		
वज्र (वडर वयर) (कुमार, स्वामी)			
	४१ ४३, ४८, ९४, १०२, १७२, १७७,		
	१७९, २०५, २२०, २२८ ३८२, ४२८		
वज्रसेन	२२८		
वध (छ?) राज	१४०		
वडन ११ (वृद्धनगर)	१९९		
वळी	१८४		
वणारसी	३२६, ३४५		
वद्धमा १—देणो—बीर			
वद्धमान शाह	११५		
वद्धमानसूरि ११, २०, २३, २९, ३१,			

विजयसिंह सूरि	३४२, ३६१, ३६२, ३६३, ३६४	वीर(वर्द्धमान स्वामी)	१८, २०, २४, ३२, ४२, ५८, ९५, १०९, ११०, २१५,
विजयसिंह सूरि	देखो	जेसिंग	२१८, २२७, २६४, २६५, २७७, २७८,
विजयाणन्द	३१		२९२, ३१२, ३२१, ३४१, ३६३, ३६९,
विजयाणन्दाचार्य	३५८	वीरजी (भण्डारी)	११५,
विठ्ठलदास	१५२	वीरजी	१९४, ३६०,
विठो	३५४	वीरजी (वीर विजय)	४३०,
विधाविजय (खर०)	८८	वीरदास	१८८,
विद्याविजय (तपा)	३६४	वीरदेव	१८,
विद्याविलास	२४५	वीरपाल	८८,
विद्यासिद्धि	२१४, २४०	वीरमपुर	४०६, २३६, ५२, १९९,
विधिसङ्घ (वसतिमार्ग)	३	वीरप्रभ	३८१,
विनयकल्याण	१९१	वीरसूरि	२२८,
विबुधप्रभ सूरि	२२९	वीसलपुरि	४०८,
विमल (मन्त्री)	४४, २२९	वृद्धिविजय	२६३,
विमल कीर्ति	२०८,	वेगङ्गाञ्छ	३१६, ४३१, ४३२,
विमल गिरिन्द	६०, ४१६, देखो	वेगड (गोत्र ?)	३१४, ३१५,
	शत्रुञ्जय	वेण्ड	२३६,
विमलदास	२७३,	वेलजी	२५१,
विमलादे	३३६, १९५,	वैला	३६०,
विमलरत्न	२०८, २४४,	वैलाउल	४१६,
विमलरङ्ग	७८, २०६,	वैशेषिक	३६,
विमलसिद्धि	४२२,	वैभारगिरि	३२७,
विल्हणदे	३३९,	वोहरा	३००, ३३०, ३३२, ३३७,
विवेकविजय	२८२,		२१
विवेक समुद्र (विवेकसमुद्र)	१७,	शक्यम्भव	२८, ४१, २१५, २१९, २२८
विवेकसिद्धि	४२२,		३६३,
विसो	३५४,	शत्रुञ्जय (विमलगिरि-देखो	लो०८-
वीकराज	२१०,	गिरि)	४२, ५९, ६०, १०१, १०३,

१०४, १५४, १७०, १८४, २१३, २८१,
२८५, २८६, ३०७, ३२६, ३२७, ३२८,
३५५, ३५६, ३५८, ३६३, ४१६, ४१७,
शाकभरी ४६,
शालिभद्र २७७, १८१, ३४६, ३४७,
शालिनाहण ३०,
शान्तिनाथ २७, ३१, ७८, ८५, ८६,
९७, ११०, १४५, १९८, २६४, २८०,
३२७, ३४१, ३८०, ३८४,

शान्तिदास १९४,
शान्तिलता २२८,

शान्तिसूरि (अज्ञानान्ति) ४१ २२०,
शासनवता ११०, ३३९,

शाहजहा १७३, १७४,
शाहपुर ३४०,

शाना ८०,
शीतपुर १४७, (सिद्धपुर) १४८,

अ

श्रावकाशचना ८८,
श्रियादे ७७, ८९, ९३, ९५, ९८, १०२,
११२, २२६,

श्रीचन्द्र १४३, २०८,
श्रीधर १५१,

श्रीपूजाजी स० ५२,
श्रीमल १८६,

श्रीमाल ५३, ८७, १३३, १८२, १९८,
२०६, २३३, २७४, २३२,

श्रीवच १४३,
श्रीवत्स ७७, ८९, ९०, ९१, ९२, ९३,

९४, ९५, ९८, १०२, १०४, १०७, ११२
१२१, १२२, १२६,

श्रीसार १७१,
श्रीसदर ९१ ९४,

श्रीपुर ७४, १२६,
श्रेणिक १८, ६१, ३२२,

श्रीमवर (विहरमाण) ४५, ११०,
२१६ २१९,

श्रीरङ्ग ४२६,
श्रीश्रीमाल ४०२,

स

सकलचन्द्र १०६, १४६, १४७,
सचिन्ती (गोत्र) १३९, १४५,

सता ४२५,
सतीनास १४०,

सत्यपुर १९९, देखो साचोर
स्तम्भनपाश्व २०, ४५ ०९, १०६,
११०, १२०, १७८, २५३,

स्युनिन्द्र २०, ४०, ४१, ४८, ४९, ९८
२१०, २२८, ४३१,

सदाश ४२७
सधगे ३८६,

स देहदोलावली ४००,
सभाव २८९,

सम्मति (सूत्र) ३११,
सम्मत सिद्धर १५४, २९७, ३२६,

समाथ ३६०
समुद्रसूरि २२९

समथकला १३६,

समयनिधान	१९६,	सहजू	३६०, ३६१, ३६२,
समयप्रमोद	८६, ९६	सहसकृत	२७५, २७६,
समयसिद्धि	२४०,	सहसकणा पार्श्व	१६९, २८०,
समयसुन्दर ७०, ७५, ८८, १०६, १०७,		सहसमल (करण)	३६०, २४५, २४७
१०८, १०९, १२६, १२७, १२८, १२९,		सांउसुखा (गोत्र)	२१४
१३१, १४६, १४७, १४८, १९२ २००,		साकरशाह	२३१, २३३,
२२७,		सांख्य (मत)	३६,
समयहर्ष	२५४,	सागरचन्द्राचार्य	२७, ५०,
समरिग ३९१, ३९३, ३९४, ३९५, ३९६,		सांगानेर	१९९,
स्याणि	४८,	साचोर ३१५, ३१६, ४१५, १४६, १४७,	
स्यादनादमञ्जरी	३११		१४८,
स्यामाचार्य	२१९,	सादड़ी	३५१,
स्याहानीपोल	२७५,	सादूल	३६०,
सर (लक्षणकरणसर)	१८७, १९३,	साधुकीर्ति	४०३,
सर्वदेवसूरि सव्वएवसूरि	३,	साधुकीर्ति ९२, ९७, १३७, १३८, १३९,	
सव्वड	५०,	१४०, १४१, १४२, १४४, १४५,	
सरस्वती (साध्वी)	३०, ३९५,	साधुरंग	२९२,
सरसा	६९,	साधुसुन्दर	२०८, २०९,
सरसती	३४०, ४२३,	सामल	१८१, १८५, १९१,
सराणउ	६६,	सामल (वंश)	१८,
सरूपचन्द (सेवग)	३११,	सामीदास	१४३, २५०,
सलेम (जहांगीर) ८१, ८७, ९८, १०३,		सामन्तमद्रसूरि	२२८,
१०९, १२३, १३२, १६७, १७९, ३५५		सारमूर्ति	२०, २३,
सव्वडशाह	५०,	सालिहगु	३८८,
सहजकीर्ति	१७५, १७६,	सावल	३३७,
सहजपाल	४२५,	सावक्ति	३५७, ३६१,
सहजलदे	१९५,	सांसनगर	४३२,
सहजसिंह	१४३,	साहणशाह	४०९,
सहजीया	११५,	साहिबदे	३३७,

साहिबी	१३९,	सुन्दरदास (यति)	३११
साहु (नाभा)	४८,	सुन्दरदेवी	३०४
सिकन्दरशाह	५४,	सुमतिकछोल	९०, (८१)
सिघादे	२१२,	सुमतित्री	१९६
सि दूरदे २३१, २३३ २४५ २४६, २४७ (सुदीयारदे राजलदे)		सुमतिरक्ष	४१०, ४२१
सिद्धपुर	६४, १९०	सुमतिवल्लभ	१९६, १९७
सिद्धसेन	१६९, १७९, १८३	सुमतिविनाय	१८७
सिन्ध १०९, ११८, १४६, १४८, २१, ९४, २९९, ३७५, ३९७, ४०२, ४१०		सुमतिविमल	२५०
सिंघड (वश)	२३१, २ ३	सुमतिसमुद्र	१९८
सिवचूटा	३३९, ३४०	सुमतिसागर	२९२
सिवचम्सूरि ३२१, ३२२, ३२४, ३२५, ३२७, ३२८, ३३०, ३३१		सुमङ्गला	३५९
सिघपुरी	६९, ३४१	सुयदेवि (श्रुतदेवी)	४, २०, ५१, ५८, १०१, ३८४ ४००, नागडा, सरस्वती
सिंहगिरी	२२८, २२०	सुरताण (छाजेड)	४२५
सीता	३४०, १८०, ५१	सुरताण (सुताण)	५२ ६५, ७९, ८९, ९०, १०१, ३४९, ३५२, ३५३
सीरोही ६५, १८४, ३४१, ३५१ ३५८, ३६२, ३६३, ३६४		सुदास	२५०
सौह (राजा)	३७३	सुरपुर	१८७
सकोसल	३२९	सुयगङ्गा (वीरस्तव)	१११
सलाल	१४९	सुस्थित	२२८
सलसागर	२५३, ३४०	सुरजी	३६०, ३६१, १९४
सलानन्द	२८५	सुरत	६०, १९३, २४९, २५०, २८२, ३१७, ४१५
सन्धान	५०	सुरविजय	३५३
सधमा, सहम (नवामी) २, ४, ८ २०, २४, ४१, ५८, २१५ २१८, २२८, २९२, ३२१, ३६३, ३६९, ४२३		सुरसिंह	१०९, १७४
सुन्दर	३६०	सुहवदवी	६, ८
		सेठीया (गोत्र)	२५२
		सेरीसा	४००
		सेरु ॥	२३४, ४१८

शुद्धशुद्धि-पत्रक

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	१०	आवि	अविहि	१२	१४	ढाल	ढोल
२	२	मणच्छिउ	मणिच्छिउ	१३	३	जिणप्रभु	जिणप्रभ
२	३	दिनु	दिन्नु	१३	४	जिणत्रासण	जिणशासण
२	७	वक्कु	चक्कु	१६	११	निहि	नहि
३	१०	दिणण	दिणणु	१६	११	निहि	नहि
५	५	सद्धमि	भद्धमि	१७	१७	किन्नग	किन्न
६	९	वैशाखाह	वैशाखह	१८	१३	वार	चार
५	१६	अवंझ	अवंझ	१८	१७	जइसइ	अइसइ
५	१९	संथिणुड	संथुणुड	१९	१४	बिबिबि	बिबि
६	१२	वधाविउ	वधाविउ	१९	१८	जा	जा
६	१४	वाधइ	वाधइ	२०	६	सवणंजळ	सवणंजलि
७	२२	अन्नं	अन्न	२०	८	जिण	जण
८	१७	बधावीउ	वधावीउ	२०	११	अनुकमि	क्रमि
१०	११	०नो जनदा	०नौ जिनंवा	२०	१७	कण्ठीर	कण्ठीरव
१०	१२	क्षीरे नीरे	क्षीरैनीरैः	२१	१	संथवण	संथवण
१०	१२	स्नपयसुतरां	स्नपयतुतरां	२१	८	धत्ता	धत्ता
१०	१४	गौतमःश्रीसुधर्मा	गौतमश्रीसुधर्म	२१	१३	तिहुपति	तिहुयणि
१०	१७	कलशराध्या	कलशराज्या	२१	१९	चन्दि	वंदि
११	९	०वोहणु	०बोहणु	२१	२२	पाठ ठवण	पाठवण
११	१३	मनइ	नमइ	२१	२२	कुंकुवत्रिय	कुंकुमपत्रिय
१२	११	सासउ	सीसउ	२१	२३	वच्छरि	वित्थरि
१२	१२	कंपि	किंपि	२२	१३	धत्ता	धत्ता

पृष्ठ	पक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२३	१२	सहलउ किउ इत्थु	कलि तिह	३०	६	पख	पक्खी
			सहलउ तिहि किउ	३०	५	वहिय	विहिय
			इत्थु कलि	३०	५	पचमि(घाउ)	पचमियाओ
२३	१४	सूर	सूरि	३०	८	उज्जेण	उज्जेणी
२४	५	विसम	विस	३०	१३	जिणदत्त	जिणदत्त सूरि
२४	१३	परकरिय	परकरिय	३०	१३	सुपहु	सुपहु
२५	१०	गच्छाहवइ	गच्छाहिवइ	२०	१४	वि नाउ	विन्नाओ
२५	१७	जेता०	जिता०	३०	१८	सय	सोय
२५	१७	इग्यारह	इग्यारहसय	३०	१८	जवाइय	जु वाइय
२६	१	वइसाखरइ	वइसाखरइ	३०	२१	फुगण	फगु ।
२६	७	आसोज	आसोजवदि	३०	२२	वजयाणदो	विजयाणदो
२६	८	अनुतर	अनुतेर	३०	२२	निज्जणिय	निज्जणिय
२७	१	वत्थिरि	वित्थरि	३१	५	ता(१)उ हउ	ताउन्हउ
२७	७	लोपआयरिय	लोगह	३१	६	ति(लि) हि	लिहि
			आयरिय	३१	७	रमनरमणि	नरमणि
२७	१६	सूरि	सुर	३१	८	जिणेत(७वीं पक्तिमेंपढो)	
२८	८	झाउत छपससि—		३१	८	न दिन	नदिन
			रुदाउत छपससि	३१	९	पयह	पयह
२८	९	पनरेतिरइ	पनरोतिरइ	३१	११	अवहि	अविहि
२८	१०	रतनागारवरसि—		३१	२२	स	स हस
			रतना पुग्निग उच्छव रसि	३२		पट्टु	पहु
२९	६	सूरहि		३२	५	एने	एन
२८	१८	अठारहवो पत्तिको		३२	८	बडआरुय	बडयारुअ
			सोहद्वी पक्ति पढो	३२	१०	वव	वव
२९	१४	सुविह तह	सुविहि तह	३२	११	नसि	निसि
३०	३	तिलउ	निलउ	३२	२०	वडवि	चडवि
३०	३	लठिवर	लठिवर	३२	२०	घित्तिहि	वित्तिहि
				३३	१	गुडि	गुडिय

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३३	४	न(१ना)विय	ठाविय	४२	६	०विजय०	०विजिय०
३३	५	घड	पयड	४२	६	सूर०	सुर०
३३	५	बत्तास	बत्तोस	४२	७	पहोदय	पहोदय
३३	११	मुणिहु उहारिय	मुणिहुउ हारिय	४२	१०	कुम०	कुंभ०
३३	१२	आणग थुणि	अणेगे पुणि	४२	११	परंपरा०	परंपर०
३४	१	सऊहि	सझिहि	४२	११	०मिण जो	०मिणं जो
३४	१	वंदु	चंदु	४४	२	०जतो	०जणो
३४	६	वरण	चरण	४४	२	हंड	हउं
३४	९	एरिसउ	एरिसउ	४७	७	देरउरि	देराउरि
३४	१५	सधोस	सुधोस	४७	१८	नदेन	नवीन
३५	३	निज्जणवि	निज्जिणिवि	४८	३	गुरि	गुरो
३५	५	पट्टुद्धरणु	पट्टुद्धरणु	४८	१४	गुरूणा	गुरूणां
३५	१८	जिम	तिम	५०	१२	सुवर०	सु वर०
३५	२१	अगाइ	अगाइ	५१	६	सुरद्धम	सुरद्धम
३६	१२	ब्रजा	ब्रज	५१	९	रुपइ	रुपइ
३७	१३	नरनाह	नरनाहा	५३	७	वेची	खरची
३९	६	दुग्ग	दुग्गम	५३	९	पासदत्त	पासदत्त
३९	७	वित्तु	वित्तु	५३	२०	सव नारी	सवइ नारी
३९	१०	विन्नउं	विन्नविउं	५४	५	जाणियइ	जाणियइ
३९	२०	निवारइ	निवारउ	५९	२१	भेटता	भेटता
४०	४	तूय	तुय	६३	९	अविया	आविया
४०	५	दिज्जय	दिज्जइ	६३	१२	हर्ष	हर्ष
४०	६	०वित्ति	०चित्ति	६४	१७	घणी	धणी
४१	५	नंदि	नंदि	७०	१	गौडा	गौडी
४१	१२	लोहच्चिय	लोहिच्चय	७३	१४	ऐकज	रोकज
४१	१४	वदेहिं	वदेहं	७६	११	विधि	निधि
४२	३	तिहक्य०	तिहुय०	७७	१९	रि	सुरि
				७७	१९	लगइ	लगइ ए

पृष्ठ	पक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
९३	६	विणचन्द	निणचन्द	१३१	१७	साचा	साची
९४	१७	कलाल	कलोल	१३२	८	(क्षा ?)	(क्षा !)
९६	१	समय माद	समयप्रमोद	१३४	१०	सालतरइ	सोलीतरइ
९६	१	समुलमा	समुलमी	१३६	२१	इथ	स्थ
९६	१८	पुप्य	पुप्य	१३८	१४	आ० यउ	आ०यउ
१०४	२	गर्मित्	गर्मित	१४२	४	वाइमल	वाइमल्ल
१०६	१२	१२(२)	(४२)	१४३	९	वाचइ	वाजइ
१०८	२१	जनचन्	जिनचन्द	१४६	२	ंसुदर	सुदर
११०	८	जिणिंद	निणिंद	१४७	१८	ंसुदरा	सुदरो०
१११	८	विते	विते	१४८	७	पूडो	पूडी
११२	९	विहु	विहु	१४९	६	जिग	चिर
"	२०	आक्षा	आक्षा	१५४	१५	गिदाला	लिदाला
११२	२२	वारइ	वारइ	१५६	१२	सह	सानन सह
११३	१	करुणा	करुणा	१५९	१०	लसत०	लसण०
११५	१३	प्रमु	प्रमु	"	"	ंगेति	ंगति
११५	१५	जावड	जावड	१६१	२	सदा	सदाजी
११९	८	रिगमता	रिगमती	१६२	६	तो	ते
११९	१०	गुणधा	गुणधी	१६३	९	भोज	भाग
१२०	८	छीतर	छीलर	१६४	५	तूगो	तुगो
"	१३	उगधाडा	उगधाडा	"	६	कजगइ	कजगइ
१२१	९	दली	दाली	१७०	१०	पच	पच
१२२	७	प्रधान	प्रधान	१७१	१२	निछड	निछड
१२६	१६	चापडा	चोपडा	"	"	सूरिश्वरा	ंसूरीश्वरा०
१२७	१५	जिन	जिम	"	१३	प्रबध	प्रबन्ध
१२८	६	पच	पच	१७२	२०	शृङ्गार	शृङ्गार
"	१५	असुश	जसु जश	१७५	२१	उवणउ	उवणउ
१३०	१४	आसू आस	आसूमास	१८०	२	वित्त	वित्त
			आसा	१८१	२१	काले	काल

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१८८	१९	साचउरि	साचउरि	२२१	१७	दुरियह	दुरियह
१९०	६	दिन	दिनदिन	२२२	९	सुविहव	सुविहित
१९५	१०	सूर	सूरि	"	१३	कहो	कथो
"	११	थापना	थापना	२२७	६	नमइ	नमउ
१९७	१८	०ना	०नी	"	९	सूरिस्वर	सूरीस्वर
१९८	२२	संपूर्णभ	संपूर्णम्	२२८	८	संवति	संप्रति
१९९	५	जावालिपुरे	जावालिपुरे	"	१५	कुमद्र	कुमुद्र
"	११	स्तथा	तथा	२३०	१	श्री०	ढाल श्री०
"	१२	द्वीपे	द्वीपे	"	११	जिनरायो	जिनराजो
"	१३	पुरे	पुरे	२३६	११	साह	लाह
"	२०	प्रौढः प्र०	प्रौढ प्र०	२३७	६	हीडोलइ	होडोलइ
"	१९	नाम्ना	नाम्ना	"	७	अवसार	अवसर
२००	६	त्वां	०स्त्वां	२३९	३	बालावी	बोलावी
"	१०	सागरा	सागराः	"	८	०विचइम	०विचमइ
२०१	४	देखिने	देखिने रे	"	८	मको	भूकी
"	१०	नूर	नूर रे	२४०	६	सीहणपण	सीहणइ
२०२	६	परमात्म	परमार्थ	२४१	६	पूज्य	श्रीपूज्य
२०३	६	घणुं	घणुं	"	८	सेहरउ	सेहरउ
२०९	६	ब	वा०	२४२	४से१३	स०	सु०
२१२	५	अधिक	अधिक	२४३	१५	श्रा०	श्री०
२१८	१६	मधुर	मधुर	२४४	१६	स्वग	स्वर्ग
२१९	४	अतले	अवर	२५३	१३	जागिन	जागिनइ
"	४	ने (?) छइ	नेछइ	२५४	११	पादुका अधिक	पादुका
"	६	पद्धति	पद्धति	"	१२	घरि	अधिक घरि
"	"	जाइसर	जईसर	२५६	९	लुलि	लुलि लुलि
२२०	१६	दस	दस	२६०	७	०पाध्याय०	०पाध्याया०
२२१	१	दुर्बलिकापक्ष	दुर्बलिका	२६३	६	भावतां, रुडुंख	खभावतां, रुडुं

पृष्ठ	पक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२६५	१६	प्रसाद	प्रसाद	३००	१४	ओल०या	ओल०या
२६७	३	आनाम	आजानु	३०२	८	रजण	रजण
२७२	६	चीघडीए	चोघडीए	३०३	१५	पथीडा	पथीडा
२७३	२१	कह्यो	कह्यो	३०४	०	गच्छपति	गच्छपति
२७४	३	स्यादाद	स्यादाद	३०५	८	दशा०	दशा०
२७५	१३	शठ	शेठ	३०५	९	विनिर्मित	विनिर्मिति
२७६	११	सूलक्ष	छलक्ष	"	१३	०द्वि०	०द्वि०
२७८	२०	नडीयु	नडीयु	"	१४	गर्भित	गर्भित
२८१	३	ओगणीस	ओगणीसी	३०६	५	०बन्ध	बन्ध
२८४	४	आज्यो	आवज्यो	३०७	३	सज्ञा	सज्ञा
२८४	१०	पायो	पाये	"	५	०के०	०के०
२८८	१	व्याधि	व्याधि	"	"	कठ	कच्छ
"	१३	उपर	उपर हो	"	१६	गुरुव	गुरुव
२८९	९	हाथ	बे हाथ	३०८	९	महोक्ला	महोक्ला
२८९	२२	धम	धम	"	१४	दृष्टे	दृष्टे
२९०	२	भवे	भय हो	"	'	भवत्पर	भवत्पर
२९०	२२	गुरुतणी	गुरुतणी	"	१८	गागेय	गागेय०
२९१	१४	सह्येश	सह्येश	३०९	८	साधना	साधना
"	१४	वाग्वाद	वागवाद	'	९	जऽस्त	जऽस्त
"	१७	टरे	टरेरे	"	१२	०स्तपस्विन	०स्तपस्विन
"	२२	कीघो	कीघार	"	१८	लुनोहि	लुनोहि
२९५	८	रघा	रघा	३११	३	जैती	जती
२९६	१२	पाम्यो	पाम्यो	३१५	१	सहु	सहु
२९७	४	वदिय	वदिये	३१५	१२	जोसा (घा?)ण	जोसाण
२९७	१३	आचारज	आचारज	३१६	६	पू०	प०
२९८	७	सदगुरु	सदगुरु	३१६	११	खरतरजू	खरतर
२९८	१५	खगार	खड्गार	३२४	७	जाणो	जाणो
३००	१३	व्याचो	थम्बो	३२४	२२	रे हरे	एह रे

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३२६	६	जिणंद	जिणंद ।म०।	३६३	१५	थाप्युं	थाप्युं
३२८	२३	'जिनचंद	'शिवचंद	३६३	१५	आघाटि	आघाटिजी
३२९	११	रहा	रहा	३६५	१५	थणुहरु	धणुहरु
३२९	२१	आप्या (थप्पा)	अप्पा	३६५	१६	पम्खहि	पिम्खहि
३३२	६	थाप्या	थाप्या	३६६	१५	घणुहर	धणुहर
३३५	१४	विधि	विधि	३६७	६	पावक-रटि	पाव-करटि
३३५	१६	वूठा	वूठा	३६७	१३	को यलिय	कोवलिय
३३७	१५	अमूलिक	अमूलिक	"	१५	वेवि	वेवि
३३८	१५	निधान	निधान	३६८	१२	पधे	पधे
३३८	१८	चंद	चंद	३६९	५	तित्थुरणुद्ध	तित्थुद्धरणु
३३८	२४	हो पूज	पूज	"	१६	पतरइ	पतरइ
३३९	२०	लिलप्रन	लिओ लक्ष	३७७	९	नयभेरि	जयभेरि०
३३९	२२	आवरा	आवए	३८४	९	[त (न)यण]	तयणु
३४०	४	शवचूला	शिवचूला	३८८	१५	कप्पतरो	कप्पतरो
३४०	३	ना दि	नांदि	३९२	९	भवय	भविद्य !
३४०	२१	द्रपदि	द्रूपदि	३९४	३	०न तं	तउं
३४१	८	जे थाप्यो	जे थाप्यो	४००	२	पट्टालंकारे	पट्टालंकार०
३४१	१३	भुजिगिन्द	भुजगिन्द	"	७	०तरूण	०तरूणां
३४३	३	जूठा	जूठा	"	१०	'नागइह'	'नागाइह'
३४३	४	चिठतां	चिठतां	"	१३	'राजह'	'राजगृह'
३४४	८	निधा(ध्रा?)व०	निधाव०	"	१७	स्तवः	०स्तव०
३४४	१७	घणी	घणी	४०३	५	हलै	टलै
३५१	६	'वीझो'वा	०'वीओवा'	४०३	९	नहु	बहु
३५२	१०	खध	खिग	४०४	१८	घरे	घरे
३५३	१७	पालइ	वालइ	४०५	५	थुम	थुम
३५६	१८	पधारइ	पधारइ	४०५	२०	फोटक	फोटक
३६१	९	बोला०	बोला०	४०५	८	राजसगर	राजसभा
३६२	६८	सी र (डी)	सिरोडी	४१५	६	'जलोल'	'जसोल'
३६२	२३	जाडि	जोडी	४१७	१७	विद्य	विद्य
				४७३	२०	दुर्बलिकापक्ष	दुर्बलिकापक्ष

पृष्ठ	पक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४७३	२४	द्रगाडइ	द्रगाडइ	११	१७	प्रतिबोध	प्रतिबोध
४७६	२०	नमचन्द	पुनचन्द			कर	प्राप्तकर
४७९	२५	महकोट	मरफोट	१७	१	मंलमदन	मेरुनन्दन
४८१	१७	राजगृ(ह)इ, राजगृ(द)इ		१८	१	विद्याध्यन	विद्याध्ययन
४८२	८	लकरइ	लगरइ	१८	९	प्राप्त	प्राप्ति
४८५	२२	ध्राघर	ध्रीघर	१९	२	प०	पृ०
४८६	२५	सावक्ति	सावलि	१९	१६	लोकहिता	लोकहिता-
४८८	९	हपकुल	हपकुल			चाथ	चाय
		प्राक्स्थन-स्तानना		२२	२२	सातड	सातड
III	११	विषय	विषय	२४	१०	* * फुटनोट	पृ० २५
IV	६	अपन्नश	अपन्नश	२५	८	*	x
XVII	१	खिलजी	खिलजी	२५	१३	क	को
XVII	७	जिनदत्तसूरि	जिनहमसूरि	२५	१५	अमकरण	आसकरण
XVII	१७	१६२८	१६५८	२६	१४	बीसी	बाला०
XVIII	१४	भावसत्त	भविमयत्त	२७	११	तजसी	तजमी x
XXIII	११	मुद्रित	मुद्रित	२७	१५	शुष्का ९	शुष्का ९ x
		सूची-अनुक्रमणिका		२७	१९	धाहर	थाहर
II	७	राजसामा	राजसोम	२७	२२	x	*
II	२३	सरि	सूरि	२७	२२	तजम	तेजसी
V	१३	सरि	सूरि	२७	२२	नी	न०
V	१५	अभयतिक	अभयतिलक	२७	२२	सदामी	ससमी
VIII	१५	राजसमुद्र	राजसमुद्र	२८	२२	क्षमणा	क्षामणा
		रासमार		३०	१५	सूर	सूरि
२	२२	शातिस्तव	शातितस्तव	३१	१५	गुड	गुडा
८	१९	दहलणदे	दलहणद	३२	२२	आय	आवू
९	१४	जिनचन्द्र	जिनचन्द्र	३३	१	द्रव्य	द्रव्य व्यय
१०	६	कल्याण	कल्याण	४०	५, ७		७ औपधि

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
			निमित्त हल्दी	७१	१९	विरुद्ध	विरुद्ध
			न लेवे	७३	१०	मट्टोत्सव	पट्टोत्सव
४१	३	शिक्षा	दीक्षा	७६	२२	वर्ष	वर्ष
४९	१	लधि	लब्धि	७७	१९	हरिसागर	हीरसागर
५३	११	मेताराज	मेतारज	७९	१८	इवदन्त	द्वदन्त
५३	१३	सम्यक्त्व	सम्यक्त्व	७९	२२	सरिजी	सूरिजी
५४	१	लक्ष्मीचंद्र	लक्ष्मीचंद्र	८५	२१	जपकीर्ति	जयकीर्ति
५४	११	कुशललाभ	कुशलधीर	९०	६	चका	चूका
६४	६	सवेगेरग	सवेग रग	९१	२२	छोटा	छोटे
६६	१६	धास	सास	९२	१७	मुन्दर	मुन्दर
६८	४	शय्यंभव	शय्यंभव	१०४	६	चारित्र	चरित्र
७१	४	पट्टा	पट्ट	१०७	५	लाधशाह	लाधाशाह

हाल ही में “श्रीजिनरत्नसूरि निर्वाणरास” की एक प्रति उपलब्ध हुई है जो हमारे संग्रह (नं० ३६१०) में है। उस प्रतिके पाठान्तर यहाँ लिखे जाते हैं :

२३४	९	जुगति	जगत	२३६	गाथा ४ के बाद अतिरिक्त गाथा -
२३४	११	शोभामें	सोभागइ		“पालता पांचे सुमति, भावना
२३४	१५	वान	भाग		मन भाव रे।
२३५	१६	तेथी	तिद्धांथी		जोधपुर नौ संघ सगलौ, देव-
२३५	२१	सीठ	सेठ		क्षर घदावरे॥”
२३६	१	वांदिवि	वंदावि	२३९	गाथा ११ वीका चतुर्थपाद
२३६	४	वेणइउच्छव	उच्छवसखर		“किण हा वावी घात”
२३६	११	साह	लाह	२३८	७ बड़
२३६	१४	साबाश	जशवास	२३९	२ भूल तिका- मूल न कां-
२३७	२१	याचक	श्राचक		करी
२३७	२२	मुनि	मुखि	२३९	६ अनवइ
२३८	६	श्रीपूज्यजी	सुविध श्री	२४०	१८ विगत
			पूज्यजी	२४०	१० बखाण
					विचार
					२४० ११ आदिस्यउ उपदिस्यउ

सम्पादकोंकी साहित्य प्रगति

(प्रकाशित लेखोंकी सूची)

स्वतन्त्र ग्रन्थ	प्रकाशन स्थान	लेखक
विधवा कतव्य	अभय जैन ग्रंथमाला पुष्प ४	अ०
सती मृगाधती	” ” ” ३	अ०
युग प्रधान जिनचंद्र सूरि	” ” ” ७	अ० अ०
ऐतिहासिक जैन काव्य रसग्रह	” ” ” ८	अ० अ०
अन्य ग्रन्थोमे		
मूर्तिपूजा विचार	जिनराज भक्ति आदर्श , ६	अ०
पल्लोत्रालगच्छ पट्टावली	श्रीआत्मानन्द शताब्दी स्मारक ग्रंथ	अ०
जिन ऋषाचंद्र सूरि गहुली २२ गहुली सप्तह		अ०
जिन कृपाचंद्र सूरि	” ३ , ,	अ०
स्त्ववन ७	पूजा सप्तह अ० जै० प्र० पु २	अ०
रत्नवन ४	, ,	अ०
प्रश्नोत्तर १८ ९ ३१	सादा अनसर्ग प्रश्नोत्तर भाग २	अ०
सामयिक पत्रोमे		
वीकानेरक जैन मन्दिर, आत्मानन्द (गुजरावाला)	घष ३ अक ११, १२ अ० अ०	
” ” ”	घष ४ अक १, २ ”	
श्रीनारायणकोटतीर्थ वीनति	, , घष ४ अक १	अ०
वीकानेरके ज्ञान मन्दिर, ओसवाल नवयुवक	स० १९९० पो मा० फा०, १	अ०
महत्तियाण जाति	” ” घष ७ अक ६	अ० अ०
ओसवाल नाति भूषण भेरुसाह	” ” घष ७ अक ७	अ०
ओसवाल घस्ती पत्रक	” ” घष ७ अक ११	अ०
जैन समाजक सामयिक घतमान पत्र, ओसवाल नवयुवक	घष ८ अक १ अ०	
मन्त्रीश्वर कर्मचन्द्र (यु० जिनचंद्र सूरिस उद्धत)	” घष ८ अ० २ अ० अ०	
कलकत्तेक जैन पुस्तकालय	ओसवाल नवयुवक घष ८ अ० ३	अ०
मती प्रथा और ओसवाल समाज	” ” घष ८ अ० ५ अ० अ०	
पूर्वकालीन ओसवाल ग्रंथकार	” ” (प्रेषित)	अ० अ०
जैन साहित्यका प्रकाशन	ओसवाल सधारक घष २ अ० ३	अ०

लेखोंको हडप जानेकी गजब करामात, ओस० सुधारक वर्ष २ अं० १९ अ०			
महावीर जयन्तीकी सार्थकता	,,	वर्ष २ अं० २१ अ०	
अमात्मक इतिहास		जैन सन् १९३०	भ०
कविवर समयसुन्दर साहित्य	जैन, पुस्तक ३३ अंक २३, २५ अ,		भ०
पट्टावलियोंमें संशोधनकी आवश्यकता	जैन पु० ३३ अंक २८		अ०
अलक्ष्य ग्रन्थोंकी खोज (अपूर्ण प्र०)	जैन पु० ३३ अंक ४०		अ०
सती वाव सम्बन्धी एक गम्भीर भूल,	जैन पु० ३५ अंक		अ० भ०
वा० सो० शाहकी महत्वपूर्ण भूल	जैन १०।१२।३७		अ० भ०
आनुचन्द्र चरित्र परिचय	जैनजागृति (मासिक)		अ०
कविवर विनयचन्द्र जैनज्योति (मासिक)	सं० १९८८ अंक ९		अ० भ०
पुंजा ऋषिरास जैन ज्योति	सं० १९८८ अंक ११		अ० भ०
जैन कवियोंका हीयाली साहित्य	,, सं० १९८९ अंक ३		अ० भ०
महाराष्ट्री और पारसी भाषामें दो स्तवन,	जैनज्योति सं० १९८९ अंक ७		भ०
बाल्यकाल और धार्मिक शिक्षा,	जैनज्योति (साप्ताहिक) सं० १९९०		अ०
विचार प्रकाश	,, वर्ष १ अंक २८		अ०
स्थानक वासी इतिहास परिचय	जैनध्वज वर्ष २ अंक ८		अ०
सती चन्दनवाला आलोचना	,, वर्ष २ अंक १४		भ०
सिन्धु प्रान्त और खरतरगच्छ	जैनध्वज		अ० भ०
प्रश्नोत्तर ३०	जैनधर्मप्रकाश पुस्तक ४७ अंक ११		अ०
प्रश्नोत्तर ११, १४, १४, २६	जैनधर्म प्रकाश पुस्तक ४८ अंक ४, ५, ८		अ०
प्रश्नोत्तर २०, २१, २५	,, ४९ अंक १, ४, ६		अ०
प्रश्नोत्तर २७, २२, ११, १५, १५, २०, ८	,, ५० अं० १, २, ५ से ९		अ०
प्रश्नोत्तर १९	,, ५१ अंक ६		अ०
प्रश्नोत्तर ३१	,, ५३ अंक ८, ९		अ०
देवचन्द्रजी कृत अप्रकाशित स्तवनपद	,, ४९ अंक ४, ८		अ०
” ” ” ”	,, ५० अंक ४, ८		अ०
” ” ” ”	,, ५१ अंक ६, ७		अ०
मस्तयोगी ज्ञानसारजी कृत ४ पद	,, ४८		अ०
साधु मध्यादा पट्टक	जैन सत्य प्रकाश वर्ष २ अंक ३		अ०
श्री महावीर स्तव (कविता)	,, वर्ष २ अंक ४-५		अ०

लुप्तप्राय जैनग्रन्थोंकी सूची	चैनसत्यप्रकाश	घष २ अक १०, ११ अ०
दो एतिहासिक रासोंका सार	„	घष २ अक १२ अ०
(सौभाग्यविजय और तपा दचच ३ रासका)		
युगप्रधान जिनच ३सूरि और सभ्राट अकबर	„	घष ३ अक २-३ अ०भ०
दो खरतगच्छोष ए० रासोंका सार	„	घष ३ अक ४, ५ अ०भ०
(जिनसिंहसूरि, जिनराजसूरि रासका)		
कोचरशाहना समय निणय	„ प्रेषित	अ० भ०
दूत काव्य सन्ध धी कुड ज्ञातव्य बातें, जैन सिद्धान्तभास्कर भा०३कि०१अ०	„	भाग ३ किरण २, ३ अ०
जन पादपूति काव्य साहित्य	„	भाग ४ किरण १ अ०
लौका शास्त्र और दिगम्बर साहित्य,	„	भाग ४ किरण १ अ०
जैन ज्योतिष और वैद्यक ग्रन्थ	„	घष ४ कि० २, ३ अ०
क्या दिगम्बर सम्प्रदायमें स्वस्तरगच्छ तपागच्छ है ?	„ (प्रेषित)	
राजस्थानी भाषा और जैन कवि धमवद्धन, राजस्थान	घष २ अक २ अ०	
कविवर लक्ष्मीवल्लभ	„	अ०
अलवरक शिलालेखपर विशेष प्रकारा घीर सन्देश	घष १	अ०
जिनदत्तसूरि जयन्ती और हमारा क्त य	„	घष „ अ०
सौथ गिरिराजाक रास्ते	„	घष २ अक १ अ०
द्वि घर्षक प्रश्न	शिक्षण सन्देश	घष ३ अक २ ३, ४ अ०
बाल्यकाल और धार्मिक शिक्षा	श्रवताम्बर जैन	भाग ४ अक ३१ अ०
कविवर विनयच ३ (कृत राजुल रहनमि गीत)	„	भाग ४ अक २५ अ०
भ्रमात्मक इतिहास (जैनमें भी)	„ „	भाग ५ सान्या ३० अ०
जैन साहित्यकी घतमान दगा	„ „	भाग ६ अक १९ अ०
सिन्धी भाषामें चैन साहित्य (अपूर्ण प्र०)	„	भाग ६ अक २१ अ०
फलोधी पादव जिन स्तवन (विनयसामकृत)	„	भाग ६ स्ख्या ३० अ०
श्रवताम्बरी मिथ्यात्वो और अपात्र है ?	„	भाग ८ अक ३१ अ०
साम्प्रदायिकताका उग्र विष	„ „	भाग १० अक ११ अ०
दादाजीकी धीनती (कविता)	„ „	अ०
जैन साहित्यका महत्व (अपूर्ण प्र०)	„	अ०

और भी कई लेख जैन, जैन ज्योति, घीर, जन धम प्रकारा आदिके सम्पादकोंको भेजे हुए हैं पर च अब तक प्रकाशित नहीं हुए हैं ।

अप्रकाशित विशिष्ट निबन्धादि

सांकेतिक शब्दाङ्क कोष

जैनेतरग्रन्थोंपर जैन टीकाएं

सिन्धु प्रान्त और खरतरगच्छ (विस्तृत इतिवृत्त)

कविवर जटमल नाहर और उनके ग्रन्थ

लोकामत और उसकी मान्यताएं

बोकानेर नरेश और जैनाचार्य

श्रीजिनदत्तसूरि चरित्र

बोकानेर जैन लेख संग्रह

प्राचीन तीर्थमाला संग्रह

अभय जैन पुस्तकालयका प्रशस्ति संग्रह

खरतर विरुद् प्राप्ति

खरतरगच्छ साहित्य सूची

खरतरगच्छाचार्यादि प्रतिष्ठित लेख सूची

खरतरगच्छकी ८४ नन्दिये

भूतकालीन जैन सामयिक पत्रोंका इतिहास

जैन पूजा साहित्य, कल्पसूत्र साहित्य

सम्यक् दर्शन, मनुष्यभवकी दुर्लभता

कविवर लक्ष्मीवल्लभ और उनका साहित्य

मत्स्ययोगी ज्ञानगारजी और उनका साहित्य

कविवर समयसुन्दर और उनका साहित्य

उपाध्याय क्षमाकल्याणजी

कविवर धर्मवर्द्धन (साहित्य)

कविवर जिनहर्ष (साहित्य)

कविवर रघुपति (साहित्य)

छतीसीयें ४, स्तवन, पद, चन्द्रदूत काव्य आदि

श्रीकीर्त्तिस्तन सूरि, सागरचन्द्रमूरि आदि शाखाओंका इतिहास, अनेक भण्डारोंके सूचीपत्र और अनेकों ग्रन्थाकी प्रेस कॉपियां इत्यादि ।

अवश्य पढ़िये ।

जीत्र सररीटिय ॥

श्रीअभय जैनग्रन्थमालाको

मस्ती, सुन्दर और उपयोगी पुस्तके

१ अभयसप्तमार

अलभ्य

२ पूजा सप्रह—पृष्ठ ४६४ सजिलदका मूल्य १) मात्र ।

भिन्न भिन्न विद्वान कत्रियाक रचित १७ पूजाभाक माथ कविघर समयध दर कृत चौबीसी एव स्तवनाका सप्रह । अभी मूल्य घटाकर ॥) कर दिया है । मगानकी शीघ्रता करें ।

३ मती मृगावती—ले० भत्रराल नाहटा ।

प्रात सरणीय मती मगावतीका सरल और रोचक भाषाम मनोहर चरित्र इस पुस्तकमें प्रणी हो एरीक साथ अङ्कित है । पृ० ४० मूल्य =)

४ विषया कतय—ले० अगरच द नाहटा ।

ताडपत्रीय “विषया कुलक”का सरल विस्तृत विषयनात्मक भाषान्तरके साथ विषया व इनाक सभी उपयोगी विषया और कतायापर प्रकाश जाला गया है । विषयाभाक मागदशक ६८ पृष्ठक ग्रन्थरत्नका मूल्य =)

५ स्नात्रपूजादिसप्रह

अभ्य

६ जिनराज भक्ति आदश

अलभ्य

७ युगप्रधान श्र जनचन्द्रसूत्रि—सजिलद पृ० ४५० सचित्र मूल्य १)

यह ग्रन्थ हिन्दो जैन साहित्यमें अद्वितीय है । किसी भी जेनाचायका जीवन चरित्र अथ तरु इस शैलीत हिन्दोमें प्रकट नहीं हुआ है । इस ग्रन्थकी प्रशसा बड बडे विद्वानान मुत्तक ठत की ह । सप्रसिद्ध इतिहासज्ञ रायबहादुर महामहोपाध्याय गौराशकर हीराचन् आक्षाने इसपर सम्मति

और वकील मोहनलाल दलीचंद देसाइ बी० ए०, एलएल० बी० ने विद्वत्ता-पूर्ण विस्तृत प्रस्तावना लिखी है। इसकी उपयोगिताके विषयमें इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि अल्पकालमें ही १००० प्रतियोंमें केवल ६० प्रतियां रहो हैं और इसका संस्कृत काव्य निर्माण हानेके साथ साथ इसके आधारसे बम्बईसे ५००० गुजराती ट्रेक्ट भी प्रकाशित हो गये हैं। अनेक विद्वानों और पत्र-सम्पादकोंकी संख्याबद्ध सम्मतियोंमेंसे केवल “जैन ज्योति” के विद्वान सम्पादक शतावधानी श्रीधीरजलाल टोकरसी शाहको सम्मतिका कुछ अंश उद्धृत करते हैं

“सम्पूर्ण ग्रन्थ प्रमाण, उक्तिने आधार ग्रन्थो ना अवतरणो थो भरेलो छे। ऐतिहासिक ग्रन्थो केवी रीते रचावा जोइए तेनो आ एक नमूनो छे। एम कही सकाय। अने आ नमूनो जोतां ऐतिहासिक ग्रन्थो केटलो परिश्रम मांगे छे ते स्पष्ट तरी आवे छे × × आवे ग्रन्थ नी कीमत एक रुपियो जरूर सस्ती लेखाय।”

८ ऐतिहासिक जैन काव्यसंग्रह आपके कर-कमलोंमें विद्यमान है।

९ संवपति सोमजी शाह लेखक तेजमल बोथरा।

इसमें अहमदाबादके सेठ शिवा, सोमजीके आदर्श साहमीदच्छल व धर्म कार्योका वर्णन बहुत ही रोचक और सुन्दर शैलीसे अंकित है।

दिकट भविष्यमें ही खरतरगच्छ गुर्वावली अनुवाद एवं श्रीजिनदत्तसूरि चरित्र आदि अनेक ऐतिहासिक ग्रन्थ प्रकाशित होंगे।

